

प्रधान :

बहुन्त धीराइ साहबकेर भी ए
स्वाम्बाब मेहक
पोस्ट- स्वाम्बाब मेहक (पारमी)
पारमी [जि सूत]

*

४५१ ८८ चंद्रा १८ है ८ १९६

*

प्रधान वार

*

मुख्य :

बहुन्त धीराइ साहबकेर भी ए
मारत मुहम्मदक बाल्काब मेहक
पोस्ट- स्वाम्बाब-मेहक (पारमी)
पारमी (जि सूत)



अथर्ववेदका सुवोध भाष्य ।

उम्मीसवां काण्ड

अथर्ववेदके १८ में इनमें विदुमः या अस्त्रेति एव होनेके पदार्थकी अठारत्रै इनकी समानिक साध ही शाकिक अपर्याप्त उपाध देता है। विष्वाद शीहिता अपर्याप्तेही अठार हो आगते ही उपासि होती है। शीषवा बाहु से जागेहोके इन स्थूलोंका ही उपाध है और इशीर्वा बाहु तुङ्ग तुङ्गकर हो अपर्याप्तेही स्थूलोंका उपाध ही जागता है। शाकामें अपर्याप्त अठारत्रै बाहुते ही उपासि होता जातिहै च।

पृष्ठों बालघोरेवी शीहितमें १९ में अपाधये अन्तेति एवं हीते ही बहुरूप एवं आग सपात तुला है। ४ का अपाध अपाधेया अपर्याप्त अपाध है भार एवं परावर्याध है। १९ में अपाधतङ्ग अपराविद्या उपास होनेवर ४ में अपाधये परा रिया का वर्णी एवं शीँह ही है। परन्तु अपर्याप्तेही देता नहीं है।

अठारत्रै बाहुते आगमें सुखकम् देता है—

१ यदः २ लाप ३ आतेदाः ४ आदृतिः ५ अपके
एष्य, ६ बबृद्धि तुला: ७-८ बबृद्धिः ९-११ शामिः
१२ यदा १३ दर्शिता १४-१६ अपर्याप्त १०-१८ तुला:
१९ एवं २ तुला २१ रुद्रिति २२ यदा २३ अपर्याप्त:
२४ यदृ २५ यदा २६ हित्यवार्त्ते २७ तुला २८-
२९ अपर्याप्त ३१ अपर्याप्तेही ३२-३३ एवं, ३४-३५
दीर्घदिविः ३६ रुद्रारोमिति ३७ अपर्याप्ति ३८ बद्य
वापरे ३९ तुलवायदम् ४ देता ४१ रुदृ वर्ते भेदव
४२ अपर्याप्त ४३ यदा ४४ भेदवर्यम् ४५ अपर्याप्तम् ४६
अपर्याप्ति ४७ ५ रुदिः ५१ अपर्याप्त ५२ यदा ५३
५४ यदा ५५ रुद्रारोमिति ५६-५८ तुलवायदम्
५९ १ यद ६ अपर्याप्ति ६१ अपर्याप्त ६२ रुद्रित्यम्
६३ अपर्याप्तेही ६४ त्रिविकुलम् ६५ अपर्याप्त ६६ अपर्याप्त

६७ ६८ त्रिविकुलम् ६९ अपर्याप्त एवं ६३ अपर्याप्त
पृष्ठिः ७१ देवमाता ७२ परमप्रमा।

यह अपर्याप्तेही बाहुते बाहुमें सूलकम्प है। यह विषद्वारा
नहीं है। इसमा विषद्वारा संप्रद छित्र जाप ता एसा बनेता—
यह—

१ यदः ५८-५९ यदः ५३ त्रिविकुलः

आपः—

२ ६३ आपः

सुरसा—

१४-१६ अपर्याप्त १७-१८ १९ २ ३७ तुला

१५ अपर्याप्तम्

शामिः—

५-११ शामिः

दीर्घपुर्णिः—

११ अपर्याप्त १२ आपुर्वेही १४ त्रिविकुले १७

रुद्रित्यम् ८ अपर्याप्तः

मणिप्रारूप—

१६ हित्यवार्त्ते १८ १ अपर्याप्त १९-२१ एवं

२१ अपर्याप्तमाता २२-२५ अपर्याप्त २६ रुद्रित्यम्

देति: २८ त्रिविकुलिः, ४५ अपर्याप्तम्

देवगनामाद्यम्—

१८ अपर्याप्ते १ अपर्याप्त १-५ त्रिविकुलम्

वापरे ४४ अपर्याप्तम्

राष्ट्रम्—

४५ यदृ ४१ रुदृ एवं ४५ अपर्याप्तम् ५

५६ ५७ अपर्याप्ते ५८ अपर्याप्तिः ५५ यद रुदिः

ईतरा—

१ आदेशः ५ बगडो रात्रा ६ वर्षीयः उष्णः,

२३ ४३ व्रद्धा ५१ आरम्भा ५३ परम्परा

मेषा—

४ मेषा ३ शाम ११ रात्रि

कात्ता—

१२ रात्रा ४५ ५ शरणः ५२—४ कात्ता ५८
वर्षानि

बैद्री—

२१ बैद्री २१ अप्रैल १४ बैद्रीं रथ, ५१
बैद्रीना

रात्रेप्रियत्व—

११ रात्रेप्रियत्व

बैंगानि—

१ बैंगानि ४ वर्षानि ।

इस तरह बांगानि किसा जात तो एक तत्त्व विचारे सूच एक स्वाक्षर भिन्न रूप हो भी और एक स्वाक्षर एक विषयके सूच मिलनेमें भर्त भी ठीक तरह हो बचता है । अभ्यवन्न भी सूच में बचता है ।

यह ऐसा लोकोंमें जातके विश्वर्ण ही है ऐसी जात जहाँ पर अवधिवेदके १३ से १८ तक २ वीं धार्म वे सब अच्छ लोक दिये जाते तो वार्षिक कोकोके सूचोंमें विषयकार ही बदला जाती है । यह अल्लेह जातकस्वरूप जात है । गाढ़ हरया अविद विचार करें ॥

१९ वें काण्डके सुमापित

अमर्य

एवमुष्ट्योऽयसाकमाणा (१११४१) — इस जला
वह भैरवतक है पृथिवी है ।

विश्वे में यात्रापूर्यिती अमूर्ता— भैरव जिसे यात्रा—पूर्यिती
अस्तान भैरवेनाम हो ।

अस्तप्रवाः प्रविष्टा मे अमूर्ता— विश्वा अप्रियादं भैर
विश्वे अकुर्याद हो ।

न वै त्वा द्विष्पम्— इस देख हैर वही भर्ते ।

अमर्य वो अमूर्ता— इसार जिसे अमर हो ।

पश्च इन्द्र भयामहो ततो मो अमर्य लृपि (१११४१)—
है इन् । व्यष्टि हमें नव अस्ता है वहाँसे इसरे विश्वे
विनियता कर ।

१८ वें उत्तिमि मि द्वियो विश्वो अदि— त अस्ती
रथादे यामध्येसे इसरे देवियो भौत रात्रुर्वीजा नावदरा।
यथै अनुराधं इन्द्रं द्वयामहे (१११४१) — इस उत्त
दृष्टि गिर्दि देवतान इन्द्री सुविकर्ते हैं ।

अनुराधायाम द्विपदा घटुपदा— इस विषारी भौत
अनुपादार्थे अनुराधता प्राप्त है ।

मासः मेता अरथायपगु— अनुदर उत्ताए हारो जाप
न आ जाय ।

विश्वस्तिरिन्द्र द्रुहो विनाशय— है इव । लकुण्डवाये
आरो आरेव विष्ट वर ।

इन्द्रसात्रोत द्रुहाऽपरस्तात्रो वोत्पवा (१११४१) —
इन्द्रस्त द्रुहायाऽप लकुण्डवर्ष और भूर है ।

स रक्षिता चरमतः स मध्यतः स पश्चात् स
पुरस्ताद्यो अस्तु—४८ इसारा दृष्टे मध्ये पौरिष्ठे
जामेहे रुक्ष हा ।

ठर्दे लोकमतुवेपि विद्वास् (१११४४) — तू जाता
हुआ हमें विकल अर्द्दस्तमें ले जाता है ।

स्वर्यरूप्यातिरित्यमय स्वाक्षित— जहाँ आरम्भोति वैत
निर्मयता है ।

अप्ता त इन्द्र एविरस्य वाहू— दृष्ट अर्थवें वाहू एवे
रम हैं ।

तप सप्तेम धारणा वृहस्ता— इस देखे वहे आपदमें रहें ।
अमर्य स फरस्यात्रिरित्व (१११४१) — अस्तिर
हमें निर्मत वरे ।

अमर्य धारापूर्यिती उमे इसे— वे दोनों यात्राइन्द्री
हमें निर्मत वरे ।

अमर्य पश्चात्यमर्य पुरस्तात्रुतरादघरादमर्य नो अस्तु
पौरिष्ठ जागते असार जीवेह इसे अमर है ।

अमर्य मित्राद्यमयमित्रात् (१११४५) — विश्वे
और जनित्रे इसे अमर है ।

अमर्य धारापूर्यिती पुरोयत— जाते दृष्टे भौत वो यात्रों
हे अस्ते अमर हो ।

अमर्य लक्ष्ममयी विद्वा ता (१११४६) — यात्रीं
द्वा रित्वे अमर है ।

सर्वा यात्रा मम मित्रं मवस्तु— उष दिक्षार्द मेरे मित्र हो ।

मध्यपत्ति पुरस्तात्पद्माभ्यो भमर्य कृष्टम् (१११६१) —
भार्ये और पीढ़िसे हमें कम्हीत भमर्य ही ।

दिलो मारिया रक्षान्तु (१११६२) — पुरोषे
भारिया मेरी रक्षा हों ।

मृतहठो मे सर्वतः सत्तु यम— भूतोंचे वरागेहादे
यम भूतोंसे मेरा रक्षण होने ।

स मा रक्षासु स मा गोपायतु लक्ष्या भारमान परि
ददे (१११६३-१) — यह मेरा रक्षण हो यह

मेरा पालन हो उठाए पाप मैं अपने भाष्योंसे रेता हूँ ।
अर्थि ते पञ्चवस्तुमृद्धलग्नु ये मापायथा प्राप्त्या

विशोऽमिद्वासात् (१११६३-१) — यह
वान् भूतों दे प्राप हो जो पापी पूर्ण विशाखे हमें राप
बनाते हैं । इस यह सम दिलाकृत विश्वम है ।

सा वा शम व वर्म व पञ्चान्तु (१११६३-११) —
यह भावमें दृश्य भौति कुरुता देने ।

उप स्पृष्टुः पौरोपर्यं वद्य (१११६४) — पुरलये प्राप
होनेवाल वह यह हो ।

पूर्यासान् परिपातु मृत्योः— पूर्या हमें दृश्युते रक्षा होते ।
ताति मे वर्मायि वदुक्ताति सत्तु (१११६४-१२) — ये
वर्म मेरे लिये बहुत हों ।

इद्यो पञ्चक वर्म वद्यासाम्पातु विश्वता (१११६४-१३) —
इसने जो वर्म लिया है वह हमें चारों ओरोंसे प्रुद्धित
रहे ।

वर्म मे घातापूर्यिषी (१११६४-१४) — वाता पूर्यिषी मेरा
वर्म होने ।

मा मा प्रापत्तीचिका — सुसे लियोंगी भ्रस न हो ।
दृष्टा वा पातु वातिमि (१११६४-१५) — वक्तव्य
वक्तव्योंके वात लेनी रक्षा होते ।

गोप्यम् वस्त्ययामि ते (१११६४-१६) — भैरों लिये के
रक्षण करता हूँ ।

भा प्राप्य मारियो दृमन् (१११६४-१७) — भार्या भूतु
मेरे प्राप्त्यान् न होता ।

भायुपातु छाता भीष (१११६४-१८) — भातु परायेहालेभी
भायुते भीति रह ।

भायुपाता भीष मा सूर्या — भीष्मु होकर भीति रह
यह यह वा ।

प्रापेनारम्भतां भीष मायुर्येष्वद्गाढशम् —
भारमालाओंके प्राप्ते भीति रह यह यूपुके वर्षमें वा ।

यदिरप्य तेमायि कृपवदीर्याप्ति — जो मुर्म है उसे
यह वह बनाता है ।

यस्तपत्ति पुरस्तात्पद्माभ्यो भमर्य कृष्टम् (१११६४-१९) —
भार्योंके जीवनीके हाथोंसे इसपर लिये विश्वता रक्षा करत हो ।

यह तो यहि इरसा (१११६५-१) — उसमें अपने
तेवपु प्रुद्धित रह ।

अदिस्युमोऽस्मिया — व वर्त्य हुआ अपने लेवेषे प्रूर बन ।
उपा

अपा देवदित वाज समेत (१११६५-२) — इस उपाए
रक्षाका दित वसेवाना वह प्राप होते ।

मदेम वातिहामः सुवीरा — उत्तम वीर वनकर ही हिम
वर्म भावमें रहें ।

अपनी शक्ति

ओज आसुः प्रापेऽस्तिष्ठोऽसो भस्तु (१११६५-२) —
जान और वार प्राप हमारा विश्वतिष्ठ न हो ।

अभिन्द्रा वयमायुयो वर्षसु — इस असुप्त और तेवेषे
अविक्षय रहे ।

प्रापः वस्ताम् उपहवयताम् (१११६५-३) — प्राप हमारा
वार हो ।

उप वर्म प्रापं इवामहे — इस प्रापोंका वार होते ।
उपों गृहीत्या पूर्यिषी भमु सं वर्तेय (१११६५-४) —
ऐसे वात उसके पूर्यिषीपर उंचार होते ।

ईच्छा

उपिमसासु चेहि (१११६५-५) — भन इये हे ।
यतो मपममय तत्तो भस्तु (१११६५-६) — वृद्धि मप
है याहे इये निर्मल हो ।

इद्यो दाता वगतवर्यणोता भवि समि विपुर्कं
यदिति (१११६५-७) — जो कुछ लियेप करता

इस वृपिषीरपे है उत्तम तथा लावर बंगम सरदा इस
ही दाता है ।

सद्याचातु वृक्षाः सद्याचासः सद्याचात् । स भूमि
विभूतो वृक्षा भव्यतिष्ठद्यागुलम् (१११६५-८) —

इतरो बाहुमो भालो और पार्श्वोनाडा एवं पुरुष ह
वह त्रिभिंडे बारो जोर भाषण इसोगुड़ विषये बाहर
मी है।

पुरुष पद्येन सर्वे पश्चूतं पश्च मास्यं तत असूतत्वस्ये
श्वादा (१११५४) — जो भूतजलमें दृशा थी वह
मास कालमें है, जोर आ भविष्यते दृशा वह पुरुष
ही है वही अपालवाम भविष्यति है।

वाह्योऽस्य मुखमासीद्वाहु राज्योऽप्यवत् । मास्यं
तदस्य पश्चौपश्य । पश्चार्या धृष्टोऽज्ञायत (१११५५) —
आकल उत्तिव तैत्र और वाहु वहके लिए वाहु पेत
और पान है।

अपुरोऽहं अपुतो म भारता (१११५११) — मैं पूर्ण
हूँ, मेरा अपाल पूर्ण है।

अपुरुते मे पश्चु अपुतो मे ओर्जं — मेरे भाव और कान
पूर्ण है।

अपुतो मे पश्चो अपुतो मे द्याका — मेरा शब्द और
भवन पूर्ण है।

अपुतो मे द्यामो अपुतोऽहं सर्वे — मेरा भान पूर्ण
है मे शब्द पूर्ण हूँ।

वेद

पश्चात्कोहापुहमराम वेदे तस्मिन्नास्तरव द्यम पश्चम्
(१५७१) — विद्वन्विद्वन्वेदे इसवेदे वाहर विद्वन्वे
एष वेदोऽस लिए वहको रखत है।

इतमिदृष्टाण्यां वीर्येषं — पर्वती वीर्येषे एष जीव किम।
तेन मा वेवात्पत्तावतेह — एव तप्ते एव वेदे मेरी
रक्षा है।

ब्रह्म

ब्रह्मस्योषा संगता वीर्यामि (१५१३१) — इनके
वेपत्वे प्रदानम करके वीर्य बहती है।

ब्रह्मस्य वेदमप्य वीर्यामि द्वारमहे (१५१४१३) — वेदमें
वहार इन जीव जलते हैं।

ब्राह्म प्राणं प्रज्ञो पर्वी वीर्यं द्विषये ब्रह्मर्थं संस्थं
दद्याम वज्रत ब्रह्मलक्ष्म (१५१७११) — ब्राह्म
जग वज्रा वज्र औरि जग जागर वर्षल कुछ है
और वज्रलोही जा।

सर्वप्रियत्व

प्रियं मा हनु देवेषु प्रियं रामसु मा हनु । प्रियं सर्वे
स्य पश्यत वह शूद्र रतायें (१११५११) —
मुक्ते देवोंमें प्रिय जर, रामाजाने मुझे प्रिय जर सर्वे
मैं प्रिय पह, शूद्र और वालोंमें मैं प्रिय जर।

अंगानि

अरिषामि मे सर्वा भारतानिसूधा (१११६१२) —
मेरे जब जंग बढ़त हैं तो रा भारता अवाहनुक हो।

काम

कामलाद्ये समर्पत्तव ममसो रेता । प्रथमं पश्चासीत्
(१५१५११) — प्रारंभमें काम वत्तन दृशा वा
मनम पहिका नीर्वा जा।

त्वं काम सहस्रासि प्रतिष्ठितो विसुर्विद्यावा सक्षा
मा सक्षोप्ते (१५१५११) — है ज्ञान। है ज्ञान
धृते शब्द मनमें रहता है, है ज्ञानव विद्याली भर
मित्रवत् भावरम करके वाले शब्द मित्र जन जर
यथा है।

त्वमुप्रा पृथवाद्यु सासहि । सह मोजो पश्चामामय
येहि (१५१५१२) — है ज्ञानी दुर्दोषे जात्य
वर्तमेवाम वज्रमालके लिये शास्त्री और संपर्क है।

शास्त्रं (दुर्द)

प्रवायतिः प्रवायिद्वद्वामर्ती पुरं प्रथयामि या,
तामापिकाश वीं प्रविशाश सा या। शास्त्रं य वर्षमें
य वर्षल्लु (१५११११) — प्रवायिद्वद्वामर्ती
पान वज्रत हृशा दद्य वृक्षोंमें मृत्युके वाला है
वर्तमें जाती वर्षमें प्रवेष करी या भवत्ये दुर्द और
संपर्क लेने।

काल

कालो मूर्तिमध्यवत् (१५१११) — काले मूर्ति
वलाई है।

कलेम सर्वा तमस्म्यात्मतेन प्रवा इमा (१५१३१७)
वीर्य कल जानेपर उप व्रजा जानित हीती है।

कालो ह सर्वस्येवादा (१५१३८) — एव जल्द
काली है।

काला प्रदा असूयत (११५११)— काल प्रदाको अपह बहता है ।

नक्षत्राणि

मौरीतानि शिवानि सन्तु (११५११)— भेरे खिले वे नक्षत्र ऋताल अरेवाके हों ।

शार्द्धविद्यानि शिवानि शार्द्धानि सहयोगं मध्यमु मे (११५१२)— जलाह नक्षत्र भेरे खिले ऋतालभागी और इन हों और भेरे शार्द्ध उत्तम ऋतोप चर्चे ।

स्वल्पि वो असूय अमय वो मस्तु (११५१३)— इमारा ऋताल हो इमारा अमय हो ।

कवच

वर्मा सीध्यम्य पशुका पुष्टिः (११५१४)— अन्य पशुत और वह दीवा ।

मया पात्र देवदिति समेत (११५१५)— इष्टे देवीका दिति अर्नेवाका वह इन पात्र करे ।

कीले

पुरा छुरुण्यं माप्तीरभूष्याः (११५१६)— अन्य कोहे कोहे सुरुक लकड़ी न होनेवाके बनाको ।

मा वा सुखोक्षमसो वंडता त (११५१७)— इमारे बहुत न चूं तथाथे सुख बनाको ।

गोशाला

पर्यं छुरुण च हि वो मुणाणः (११५१८)— गोध्यमा बनाये और वह दुम्होर मानवोंम् इन भीवेष्य स्वान ही ।

जल

या अपा शिवाः (११५१९)— वह वह कम्बन अरने करता है ।

अपाऽयहम् करणीः— वह रोग दूर करेवाका है । परेष तृप्यते मयः, तात्स आ दुर्ये भेषप्रसी— भिलसे दूष रोगा दैता यह वह तुम्हे अत्यधी कर बनेवा ।

मिष्ठान्यो मिष्ठाना अपाः (११५२०)— दैरुदि लिये यह वह अविड रोग वारु अरेवाका हाता है ।

अदीवा एष (११५२१)— वह अदीव देवेवाता है । अपदीवा एष— दैरुदि लील देवेवाता वह है ।

सदीवा: एष— एमध्यमा लील देवेवाता वह है ।

जीयसाः एष— जीय लिये तुष वह है ।

जीवासं सर्वमायुर्जीव्यासम्— इम जीवे पूर्ण लायु वह जीकित रहे ।

पुष्टि

ओदुम्भरो वृत्ता मणिः स मा द्वातु पृष्ठा (११५११)— ओदुम्भर मणि बल्लाल है वह तुसे पुष्टि रहे ।

ओदुम्भरस्य लेवासा धाता पुष्टि वायामु मे (११५१२)— ओदुम्भर मणिके लेवासे धाता पुष्टि वायामु तैरे ।

पथं पशूनो इसमाप्तीनो द्वृद्धस्पतिः सविता मे ति यद्यात् (११५१३)— पशूनोते इन और जीविकोमध्य रथ ज्ञानपति उवितामे तुम्हे दिला है ।

लेवोडासि लेवो मणि धारय (११५१४)— द लेव है तुम्हें तेव धारण कर ।

रविरसि राणि मे धेहि— त वन है तुम्हें बन दे । पुष्टिरसि पुष्टा मा समर्पिष (११५१५)— द पुष्टि है तुम्हे पुष्ट कर ।

रथि च तः सर्ववीरं ति पश्यात् (११५१६)— एव और पुत्रोंके दाव घन हमे हे ।

मेषा

यमे छिद्रं ममसो पथ धाव सरखती मम्युमत अगाम (११५१७)— जो भेरे ममसे और व भीते दोन है रिया कोई पुरके धाव गती है (रथव वह दोष तुमा है) ।

तिक्षेत्येवै— सह संविदानः सं द्वातु द्वृद्धस्पतिः— एव देवोद्यो द्वायपते द्वृद्धस्पति रथ दोषमे तुम्हे ।

मा म आपो मेषी मा ब्रह्म प्रथियदत् (११५१८)— इमारी ममामे तथा जानको बस लियट न दो ।

यह सुमेषा बबसी— मै बतमुक्तिवाह और तेवसी बनू । मा जो मेषी मा जो दीहा मा जो दिसिंदृ यत्पयः (११५१९)— देरी ममा दीहा और जो रथ है बबद्य जान न हो ।

शिवा च: सम्भवायुपे शिवा भयम्यु मातहा— यह अब इमारी आयुके लिये अस्परमाही हा चा मातहर दैर्ये तुम है ।

कीर्ति आयु

सर्वमायुरशीय (१।१।१) — मैं पूर्ण आयुषे प्रस चहे ।

आयुः प्राणं प्रज्ञा वर्षय (१।१।३।१) — मेरी आयु
श और प्रज्ञा वर्षा ।

आयुरस्तासु खेदि (१।४।४) — हमें आयुष्य है ।

खीरेम शारतः शार्त (१।१।४।२) — हम सो वर्ष बहे ।

मूर्षसीः शारदः शारदा (१।१।४।८) — जी वर्षीय मी
कविक बहे ।

खीर्यास्तमही— (१।१।७।१) — मैं खीरित हूँ ।

सर्वमायुर्मीद्यासं— कर्त्त्वं यातु तद् खीरित हूँ ।

शारदायुर्मंडति यो विमर्ति (१।१।२।१) — यो
[शरीर पर मुखर्वेष] शारप करता है उषो इत्य
रसाके पश्चात् आयुष्य होता है ।

आयुष्याद् भवति यो विमर्ति (१।१।२।२) — यो
मुखर्वेष शारप करता है या लीचायुष्य होता है ।

आयुष्ये त्वा वर्षसे त्वा लोकसे च वडाय च
(१।१।२।३) — शीर्णातु, तेज शारप्य और उषो
विनो (मूलवदा) शारप करता है ।

तत् आयुर्युमुवत् तत्त्वे वर्षस्य मुवत् (१।१।२।४) —
यह मुखर्वेष तुष्ट आयु वडायाम हो देव वडायाम हो ।

इर्वं वद्यामि ते मर्यि वीर्यायुक्ताय तेवसे
(१।१।२।५) — इस मर्यिये लेहे वर्हर पर शीर्णातु
और तेवके लिये वडायता है ।

तमस्मै विश्वे त्वां देवा त्वरसे मर्त्यां यत् (१।१।२।६) —
यह देव इस तुष्टे वडायाम एक नर्त-योद्धाके लिये
होता है ।

त्वया सहस्रकार्यम् आयुः प्रवर्षयामहे (१।१।२।७) —
तात् सहस्र अवगतामेहे त्वां इन मर्यां आयु वडायते हैं ।

देवो मर्यियुष्या स द्युकाति ना (१।१।२।८) —
रिष्य मर्यि इर्वं शीर्ण आयु देवे ।

यज्ञः

इर्वं पर्वं गिरा वधयात् (१।१।२।९) — इस वडायाम
इर्वाये वानिनों पर ।

इर्वं कर्प वर्षो वयः संरम्य पन्ने परिष्वक्ते (१।१।२।१) —

यह वार वर्षके वसुवार इस वर्षपे इस मुक्तिपे
बहते हैं ।

पश्चामिं वर्तमाः प्रविद्याः वर्षयस्तु (१।१।२।२) — इस
वर्षपे जाते विष्वर्दे वडायते ।

समवा सर्वेदाः (१।१।२।३) — इस विष्वर्दाके रिष्य
मालामे बहु वहे ।

पश्चय वस्तुः प्रमुतिसुर्वक च (१।१।२।४) — वहर्य
यह वार्ष इस सुख मुख है ।

वाजा खोलेष ममसा तुहोमि — वाजी काव और मनवे
इस वर्षा है ।

इस वर्ष विष्वत् विष्वर्दमेवा (१।१।२।५) — इस
वर्षपे विष्वर्दमेवे विष्वार लिता ।

देवा पन्नु सुम्मर्यामालाः — उत्तम इस वर्ष वडायें देव
इस वर्षे पाप नाम ।

इस वर्षे सहस्रवीभिरेत्य (१।१।२।६) — इस वर्षे
प्रति शीर्णिके वाप जाती ।

त्वे व्रतपा भवति (१।१।२।७) — तु व्रतका पालन है ।

यद्यो वर्षे प्रमिलाम व्रतादि वितुर्वा (१।१।२।८) —
यदि इसमे जाप विद्यामेंके वर्ष तोहे हैं ।

मध्यिष्ठत् विष्वारा पृष्ठात् — नमि वह देव यह वर्षे ।

या दृश्यामायपि पद्यामगम्याः (१।१।२।९) — इस
देवके मार्गम या गते हैं ।

पश्चात्प्रवाप्त तद्वत् प्रशोद्गम् — यह वर्ष युए या न्य
वह मालामे जाने वडायें ।

सोऽप्यवान् स वद्यून् कस्यपाति — यह वार्षिक
क्लीघे और क्लीघे वह वडायता है ।

वद्य पश्चप तर्ये (१।१।२।१) — इस ही वर्षमे सुख
तर्य है ।

वद्योमुत्ते पर्वे मर्यीपी (१।१।२।२) — वापसे मूलामे
वडायें वर्तमा पारे हैं ।

मुत्तात्ते मुत्तपति वायुवानः — उत्तम इस वर्षेवाले
विष्वपे वर्तम हुड़ि वार्ष वर्ष है ।

सल्या सत्तु यद्यामवर्य कामाः (१।१।२।३) —
वडायामी अस्मार्थे सत्तु हो ।

श्रद्धी

मरिशासस्त वर्वि तमस्यति रात्रि पात्रमशीमहि
(१११४३२) — त विषय होते हुए इस देवते
भवेती रात्रि । इस पार होगे ।

तपिसीं अथ पापुमिः तु पाहि (१११४३५) — उन
रक्षाओं से हमारा रक्षण हो ।

रक्षा मातिका (१११४३६) — इसीरी रक्षा कर ।
मा जो अपर्णात् ईशात् — पापी हमारे लक्षण आमित्र बने ।
मा जो तुष्टीत् ईशात् — हुए और्तिका इत्यर सामित्र
ग ज्ञे ।

परतेमि परिमिः स्तेतो भाष्टु तमहरा (१११४३७) —
हे मार्त्तमि चेत् और दाह दीड़ भाष ।

परेणापापुरपत्तु — पापी हुए भाष भाष ।

त्वयि रात्रि वसायति स्वपिप्पामसि जागृहि
(१११४३८) — हे रात्रि ! ऐसे अन्तर हम रहने
चाहें तु जापती रह ।

त्वं रात्रि पाहि वा (१११४३९) — हे रात्रि ! तु हमारी
रक्षा कर ।

गोपाप जो विमावरि (१११४४०) — हे ऐसीती
रात्रि ! इसारी रक्षा कर ।

सा जो विचेऽपि जाप्रहि — वह तु हमारे जबके किंतु
जापती रह ।

अस्तीं शायस्त तर्याणि भावा (१११४४१) — हमारी
एक कर मानवोंका हित उन्हें किंतु तत्पत्र हुई है ।

भसाम सवतीता भपाम सर्वयेहसा (१११४४२) —
उन्हें कीर्तें भी उन्हें जबके मुख हम ही ।

यो अथ द्वेष भायायमापुमस्तों दिः । रात्रि तस्य
प्रतीत्य प्र गीता : प्र दिः इसमृ (१११४४३) —
या चार पापी तु भाष भा रहा हे रात्रि उपर पला
भीर लिर बाढ़ ।

प्र पाहो न विद्यायति प्र इत्ती त यद्यायिपत् ।
यो मणिमुकुपापायति सविष्ठो भपायति
(१११४४४) — जीवोंके जीवों हानोंके लोड हे जो
पापी हमारे वृत्तिप भा भाष वह जीव बाढ़ बाढ़ हो ।

रात्रि रात्रि अरिष्यमृ त्तेम तत्पा वर्य (१११४४५) —
प्रेषेक उन्होंके विनाश न होते हुए हम अन्ते जीवों
प्रवरित होंगे ।

गम्भीरमपूपा इव न तरेयुररात्रयः — गंगीर बला
वावें पापी न पार हो जेते जि । जीवाङ् [जोग पार
नहीं होते ।]

पश्चात्रात्रि प्र वातय यो भस्त्रो भव्ययायति (१११४४६) —
हे रात्रि । जो इत्यर वाता बरता है उसको मिरा हो ।

रात्रु

ऐनेम प्रद्याणस्पते परि राप्राय घरत (१११४४७) — हे
ब्रह्मस्त्वे । उस घटिये उक्तो पृष्ठके किंतु वातपक्ष ।

मायुषे महे स्त्राय घरत (१११४४८) — विर्तु
तथा वहे आपवाहके किंतु वरत होते ।

एव अरसे नर्या — इसके इत्यनस्तात्क ने बले ।

वधसेम वारामृत्युं क्षुरु वीप्मायुः (१११४४९) —
तेजेके इसके वरके पक्षात् मृत्यु जावात्, इसके वीप्मायु
होते ।

जर्तु गच्छ (१११४५०) — इत्यरत्नामे प्राप हो ।

भया पूर्णमामिश्रिकिवा उ — प्रश्नभोगे विनाश्वे
वचानेवाम होते ।

शत व वीढ़ शरदः पुरुषीः वस्त्रिधार्यि मजाति
वीयद् (१११४५१) — जहि वीर्य रेखे ती वर्ष
वीरित एव भीत्रत इत्यर जनोंको बांद ।

द्विरुद्यवर्णो भजता सुखीरो जरामृत्युः प्रसवा सं
विद्यास्व (१११४५२) — मृत्युं जैसा रगवता
बरातहित उचम वीर बहके पक्षात् मृत्युजाता होत्त
भस्त्रे प्रश्नके जाप रक्षर जातम कर ।

मद्रमिष्ठगत ज्ञरयः स्वर्विदुः तपो वीक्षामुपसे
दुरमेः । ततो दायू वष्टमोवद्य जात तद्द्वे देवा
ठप स नमस्तु त (१११४५३) — ब्रह्माण्ड अस्याम
वर्तेकी इरकः वर्तेकी अपेक्षोने परित्व तप किंतु
भीर जीवा ती । उसके एष वह भीर जोक तुमा इस
किंतु तप जीवी एव पृष्ठके जापने सुख बांद ।

भयोदाङ्गा भस्त्रुप मारिनोऽप्यस्तयः पापोदीदिमो ये
वरमित । जीवों एवयवायि इत्यसा (१११४५४)
जो अमुर जीवोंके जाप भीर जीवोंके जाप तेज उत्तर
होते हैं जनोंमें विनाश बरता है ।

सहजश्रुषिः सप्तलाम ग्रमपम्पादि यज्ञः — इत्यां
बोक्षाम्य वज यन्मुदोऽप्य मारे अत्र हमारा रुप हो ।

मानुषः पितृशाबो शूपमा त मीमो प्रकाशनः श्लोमण
श्वर्यपीताम् (११११३) — स्त्राणीम् तीक्ष्ण
देवदे उमान् भवद्वर शूपुष्टे पारेनेवाका शुभ्योद्ये
दिवानेवाका वीर है ।

संकल्पमोडमिमिप पक्षवीरः शात् सेना भद्रयत्—
कल्पलेनाक्षम् फल्है भी म उपरानेवाका अहितीव वीर
सी देवाखोदो वीरता है ।

वज्रविद्वाया स्वविदा प्रवीरा सदस्त्रान् वाक्षी सद
मास वद्ध (११११५) — अपने और शूपुष्टे दलों
वानेवाका, दुर्द्वये विवर इनवाक्षम् वदा वीर वाही
विविह उप वद्ध और शूपुष्टे प्रायम् वर्तनेवाम है ।

मध्यिकारी भग्निपत्रवा सहोवित्— विषेष वीर वल्ल
वान् वल्ल वल्ले शूपुष्टे वीरेनाक्षम् वद्ध होता है ।
इम वीरमनु शूपुष्टमसुप्रे (११११६) — इह उपवीरका
इन वाक्षी है ।

प्रायवित्ति गोवित्ति वज्रवाहु वज्रस्तमग्नम् प्रसूपस्त
मोक्षसा (११११७) — प्रायका विषेषा गोवित्ति
बोल्लेनाक्षम् वज्रवाहु विष्णवी और अपनी विद्विते शूपुष्टे
वानेवाका वीर है ।

शुश्वर्यवदः शूतलापाक्षोप्योऽस्मार्कं लेना भवतु
प्रपुरुषः (११११८) — जो दिक्षालेन विष्ये वज्रस्त
शूपुष्टाका वज्रस्तम् वर्तनेवाक्षम् विद्विते लाव दुख वरना
न उपन है वह शूपुष्टे श्वार्थे देवाक्षम् रहा जाते ।

रक्षोहामिकार्ण वज्रवाप्तमात्रा (११११९) — राक्षसोंसे
वानेवाका शूपुष्टे वावा फूटाता है ।

प्रमद्वान् उद्धर् प्रसूपस्तमिवान् भस्माक्षमेष्यविता
तन्माम् (१११११०) — शूपुष्ट वाव वज्रस्तम्
विष्णवीवद वद वर्के इयरे वारीवद रक्ष हो ।

भस्मार्कं वीरा वज्रेरे भवतु (११११११) — इसरे
वीर लंबे हो जाव ।

भस्मान् देवाक्षोऽवता इनेपु— देव शूपुष्टैं इयरी रहा जाए ।
वज्रे वा घेहि मे तन्मां सद् ओङ्को वज्रो वज्रो वज्रम्
(१११११२) — मेरे वर्तीवदे देव वज्रव्यं पराक्रम
वज्रि और वज्र वज्रन कर ।

द्वंत्वा त्वा वज्राप त्वोऽसे सदासे त्वा । भग्निपूया
य त्वा राप्रसूप्याप यूहामि उत्तरारवाय

(११११३) — इत्य एव उपर्य छाहव शुभ्य
पराक्रम शूपुष्टेवा और वीर वर्ती भावुके भिन्ने द्वारे भै
पदमा है ।

सम्य । सम्य मे पादि ये व उभ्याः समाप्ताः
(११११५) — हे सम्य ! मेरी वानाम् इन वर
वीर उभ्य समाप्त हैं वे भी समाप्त रक्षा भरे ।

रोगनाशन

त त यहमा भवत्यते (११११६) — रोग उसमे
ऐसा नहीं ।

विष्वश्वस्तस्माप्यहमा शूगा भवता इवेतते (११११७)
द्वेष्ट दूष वीर वेष्टे वाय जाते हैं द्वेषे रोग उसके मात्र
जाते हैं ।

वज्रमात्रं सुवै वाशय वर्वाक्षम् वातुप्राप्यः (११११८)
चव दीर्घोका वास वर, वावाका देवाक्षम् वाय वर ।

स-कुष्ठो विष्वमेष्यः (११११९) — वह कुष्ठ सम्
वीरवि तुष्ट है ।

प्रवा दुष्पर्य्यं सुर्वेमपिये स भयामसि (१११११०)
इह तरह एव तुष्ट वाय उपर्य वर्तनके पाप के जाते हैं ।

स मम या पापकालू विष्यते प्र हिण्मः (११११११) —
वो भ्रेमे पत है वह देव वर्तेवाक्षे पाप मेंसे है ।

भायुपोडसि प्रतरप्य (१११११२) — त शूपुष्टम्
वज्रलेनाक्षम है ।

प्राय प्रायं भायुपर्व (१११११४) — हे भाय ! भावकी
रहा वर ।

विष्णुरो विष्णुर्ष्वा वा पायोम्यो मुश्च — वे तुष्टे ! तुष्टे
विष्टे वासेषे हैं जेव ।

मुश्च त एव्यहसा (१११११५) — पापसे हैं वाक्षो ।
शशुनाशा

दर्मं सपरार्द्धमर्दं विष्वत्तत्त्वर्य हृद (१११११६) —
वह दर्मपि शूपुष्टो वानेवाक्षम् और हृद वर्तेवाक्षोंके
इहको वानेवाक्षम है ।

द्विपत्तस्ताप्यमृदा शूगौर्जा तापवाम्नः (१११११७) —
हृद वर्तेवाक्षोंके इहको वाव देता है, और शूपुष्टोंके
मनषे वराता है ।

दुर्द्विः सर्वास्त्वं दर्मं पर्म इवामि संतापयम् — इह
इवत्तावे वर शूपुष्टोंके हे दर्म ! गमीके उपान तप्त हैं ।

पर्यं इवाभितपन् दर्श द्विपतः (११२३५) — पर्यादे
समाव, हे दर्श ! द्वेष करनेवालोंको दर्श ।

इदः सपत्नामां मिथिद— बहुमोकी इवलोक्ये तोड़ ।

मिथिद दर्श सपत्नामां इद्यं द्विपती मये (११२३६) —
हे दर्शमें ! बहुमोकी और द्वेष करनेवालोंको इवल तोड़ दे ।

गिर पर्यं विषाणुय— इन बुद्धोंच्य गिर गिरा हे ।
मिथिद दर्श सपत्नामान् (११२३७) — हे दर्श ! बहु
मोकी तोड़ दे ।

मिथिद मे पृथक्यायत— मुक्तर सैम्य मेवेकासेभ्ये तोड़ दे ।

मिथिद मे सर्वान् तुहर्दिद— एव इह इवकालोंको तोड़ दे ।

मिथिद मे द्विपतो मये— हे मये ! द्वेष करनेवालोंको तोड़
दे । ऐसे ही १-१ संख्ये बाब्क हैं । ऐसे ही ११२३
मे बाब्क हैं ।

तेनेमं वर्णिणं हृत्वा सपत्नामान् अहि वाचेः (१११ ११)
एव शाखिदे इस्ये बद्धवाला करके बद्धने लोकों

बहुमा परामृत दर ।

त्वं राष्ट्रायि रक्षसि (१११ १२) — तृ राष्ट्रोऽय रक्ष
दरता है ।

मणि सप्तस्य वर्णम (१११ १३) — एव मयि धाव
तेवद्ये बदाता है ।

तनूपान् छृज्येमि तं— मै तेवे धार्याय रक्ष (इव
मैको) बदाता हूँ ।

सदपसि सहमानः भद्रमहिम सहस्रान् (१११२३८) —
तृ राष्ट्रव दुष्ट हो मै धार्य बदेवाला हूँ ।

वभौ सहस्रान्तो मूर्त्या सपत्नाम सहितीयहि— इम
दोनों बदाता होड़ बहुमोकी परामृत दरवे ।

सदस्य सो अभिमाति सहस्र्य नो पृथमायतः
(१११ १५) — इमारे बहुमा आर इमर दैम्य
बदेवासेद्य परामृत दर ।

सदस्य सर्वान् तुहर्दिद— एव इह इवकालोंका परामृत दर ।

सुदाहों मे वहूँ इपि-वत्तम इवस्याके मेरे बहुमित्र दरा ।

स मोऽय दर्शं परिपातु विभ्रतः (१११२३९) —
एव इमवाले हमारी इव आये रक्षा दर ।

तत्र साहीय पृथमाः पृथम्यतः— वृष्टे इमर भैरवे
बहुमोक तायदा परामृत दरवे ।

स मोऽय मणिः परिपातु विभ्रतः (१११२३११) —

एव यह मणि हमारी जारी भैरवे रक्षा दरे ।

तुमस्तपत्तामध्यरात्रेभ्य कुण्डल (१११२३१२) — एवु
ओंका दूर धर और उन्होंने मीठे कर ।

त्वं पुमीहि तुरिताम्यस्मत् । (१११२३१३) — तद्यम्ये
पर्याद्ये दूर करके इसे परित्र करे ।

तीस्यो रात्रा विषासही रक्षोदा विश्ववर्यमि
(१११२३४) — यह मणि बीर रात्रा राक्षसोऽा एव
बदेवाला बहुमा परामृत बदेवाला आर सर्व बहोऽा
हित रखी है ।

बोको इवामां बद्धमुपमेतत्तु ते बद्धामि जरसे लक्ष्ये
बदेवोऽका त्वं चल है इवद्ये लौटे बरीफर बोकता
हूँ । इवद्ये दू इद्यात्र यात्रक वस्त्रालं प्राप्त चरके बोकें ।

इमेण त्वं छण्यष्ट्रीपर्याणि (१११२३१५) — दर्शमित्रे
दू भनेक पराक्रम भीगा ।

तर्मं विश्वद्वामना मा व्यपिष्ठुः— दर्शमित्रा बारम
बदेवे दू जननी धार्य बदेवे क्षम दुःखी न होमे ।

सूर्य इवा मादि प्रदिशाव्यतन्मः— सर्वके समान जारी
विषाख्यामें प्रकाशित होता रहे ।

सर्वं रक्षतु अगिदः (१११२३१६) — बागदमि वृक्षी
रक्षा करे ।

अप्या भराति तृप्यामा (१११२३४८) — वैमित्रमि रायुषा
विषाप्य बरता है ।

अगिदः प्रप्य धार्यूपि तारिपत्— वैमित्रमि इमारे
रीप आमृष्य करे ।

स लंगिदस्य मदिमा परि वा पातु विभ्रतः
(१११२३५) — एव वैमित्रमित्रा माहा पर
बदेवे इमारी रक्षा दरे ।

जंगिदः परिपाता सुर्यगहः (१११२३६) — वैमित्रमि
जारी भैरवे रक्षा बदेवाला एव इवके बदेवाला है ।

अगिदः सर्वाभ्यानयक् जहि रक्षांसि बोक्ये
(१११२३७) — एव योग दूर रक्षा एव राध
दोंका जना हे दे बोकें ।

स तो रक्षतु अगिदः (१११२३८) — वैमित्रमि
इमारी रक्षा करे ।

परिपायमरातिहम्— वह बोधमयि सब प्रसरत रहा
अनेकाना तक एकुशो एकु बरेकाना है ।

परिपायोऽसि रंगिदा (१११५१)— वृंदावनमयि
एक हो ।

इत्वाये वृंदावनशयमान् रसासि लेखसा
(१११६१)— इत्वामयि वस्त्रोन आर रह
सोंका बरेक्षे बात बरता है ।

व्यसा सह मविकुण्ठामि वातम— बैडके थाप वह
मनि एक नामवाले रोगोंथे एक बरता है ।

वात वीरामवनमयत्— हो बरेक्षे बम्ब देता है ।

वातं प्रह्लादपावतम्— ऐक्षों रोगीओं एक बरता है ।

तुष्णिज्ञः सर्वानुरवाव रसासि पूरुते— उष्ण नामवाले
वह दीपोंथे वह बरेके सब रात्क्षोंथे बरता है ।

तत्त्वे वद्गामि भायुये वर्ष्यस बोहसे व वडाय वास्तु
तस्त्वामि रसात् (१११५१)— अन्तरुमयि सेरे
एकीरपर दीक्षुपु तब ओज वसके किमे बातता है,
वह तेजी रहा हो ।

मध्याम्बावेकशत वीर्यामि सद्य ग्रामा वस्त्रिभ
सद्ये (१११५१)— इस अनुदृग्मालमे ली वीर्य
हे भर इत्तर प्राण राज्योंहे ।

तुर्दाः पूरीरपि शूलाङ्गन (१११५१)— हे मन्त्र !
उष्ण इत्यागोंथे पठनियों होता ।

भाजन दिया। प्रदिया। इटकियास्ते (१११५१)—
हे भजन रिया-इटरियाएं तेरे किमे प्रभाल वर्तेवाली
था ।

सर्वादिशोः अमयासो भवत्तु (१११५१)— इस
वर्तवाले तेरे किमे वह रियाएं किया हो ।

शान्ति

शान्ता म लम्बीयार्थी (१११६१)— वह ओक्षिया
हो शान्त देवेवाली हो ।

शान्ता म अस्तु छाताहर्त (१११६१)— किंता और
न किंता वह हमें शान्त देवेवाला है ।

यैव सस्त्रे घोरं तपैव शामितरस्तु तः (१११६१)—
मिहो नक्कर परिजाम होता है वह हमें शान्त
होते ।

इद्वा मे शार्म यस्त्वत् (१११६१)— इद्वा मुखे द्वच
होते ।

प्रहा मे शार्म यस्त्वत् — वहा मुख द्वच होते ।

सर्वे मे देवाः शार्म यस्त्वत् (१११६१)— सर्वे होते
मुखे द्वच होते ।

श मे भस्तु अमये मे भस्तु (१११६१)— द्वच
होते हो, निर्मला मुखे बात हो ।

सर्वमेव शामस्तु तः (१११६१)— श मुख मुख होते
बात हो ।

शी तः पर्वत्यो भवतु प्रवान्यः (१११६१)—
इसारी प्रवाले किमे पर्वत्य मुख होते ।

शी तः सल्यस्य पतयो भवत्तु (१११६१)— पत्ते
पात्र हमें मुख देवेवाले ही ।

शूर्य पात्र स्वस्तिमिः सदा म (१११६१)— द्वम
सदा हमें क्षाय शापोंहे शुरुषित होते ।

सर्वप्रिय

प्रिय मा दर्म कुण्डु व्याहराव्याहर्यामि कूद्राय वार्याय
थ (१११६१)— हे दर्म ! कायान क्षतिव दैत्य
पौरोंहो मे प्रिय वर्द्धे देता बर ।

इत तद्व इत वाग्वामे तुमारित है । हे दर्मोंहे तुमारित
अविष्ट है । दैत्यल तुमारितके वाग्व होनेहे वर्तमेहे इत ही
वाग्व किया है । बाठड वहसि लम्ब तुमारित लम्ब होते ।

पाठ्य इत वाग्वाय लम्पी तद्व नाववन वर्के लम्ब इत्तर ।

तुमारित्तरा
भी वा सातवसकर
व वह लम्बाय मर्द्दल

अथर्ववेदका सुबोध भाष्य ।

ਤੁਮੀਸਕਹ ਫਾਣਦ ।

विषया क्रमणिका

प्रथम	१४	विषय	१५	विषय	१६
१ सूक्ष्मिका	१	१ अन्तर्वीकाः पूर्ववा-	६	११ इष्टानामप्य्	४
२ ११ में व्याख्या कुर्वन्वित	२	२ वस्त्रप्रस्त्रि	७	४ संधा	५
३ अस्त्र	३	३ वस्त्रप्रस्त्रि	८	५१ रत्न वस्त्रप्रस्त्रि	५२
४ लक्षा	४	५ शास्त्रिः	९	५२ लक्षणः	५३
६ अपरी छोडे	५	६ शास्त्रिः	१०	५३ लक्षणः	५३
७ ईश्वरः	६	७ शास्त्रिः	११	५४ लक्षणः	५४
८ देव	७	८ शास्त्रिः	१२	५५ लक्षणः	५५
९ लक्ष्य	९	९ एक्षीर्वाः	१३	५६ लक्षणः	५६
१० उपर्यिवल्ल	१०	१० अपवर्गम्	१४	५७ लक्षणः	५७
११ अपास्ति	११	११ अपवर्गम्	१५	५८ लक्षणः	५८
१२ अपास्ति	१२	१२ अपवर्गम्	१६	५९ लक्षणः	५९
१३ लक्ष्य	१३	१३ अपवर्गम्	१७	६० लक्षणः	६०
१४ लक्ष्य (प्रथ.)	१४	१४ अपवर्गम्	१८	६१ लक्षणः	६१
१५ लक्ष्य	१५	१५ अपवर्गम्	१९	६२ लक्षणः	६२
१६ लक्ष्यान्विति	१६	१६ अपवर्गम्	२०	६३ लक्षणः	६३
१७ लक्ष्य	१७	१७ अपवर्गम्	२१	६४ लक्षणः	६४
१८ लक्ष्य	१८	१८ अपवर्गम्	२२	६५ लक्षणः	६५
१९ लक्ष्यान्विति	१९	१९ अपवर्गम्	२३	६६ लक्षणः	६६
२० लक्ष्य	२०	२० अपवर्गम्	२४	६७ लक्षणः	६७
२१ लक्ष्य	२१	२१ अपवर्गम्	२५	६८ लक्षणः	६८
२२ लक्ष्य	२२	२२ अपवर्गम्	२६	६९ लक्षणः	६९
२३ लक्ष्यान्विति	२३	२३ अपवर्गम्	२७	७० लक्षणान्विति	७०
२४ लक्ष्य	२४	२४ अपवर्गम्	२८	७१ लक्षणान्विति	७१
२५ लक्ष्य	२५	२५ अपवर्गम्	२९	७२ लक्षणान्विति	७२
२६ लक्ष्य	२६	२६ अपवर्गम्	३०	७३ लक्षणान्विति	७३
२७ लक्ष्य	२७	२७ अपवर्गम्	३१	७४ लक्षणान्विति	७४
२८ लक्ष्य	२८	२८ अपवर्गम्	३२	७५ लक्षणान्विति	७५
२९ लक्ष्य	२९	२९ अपवर्गम्	३३	७६ लक्षणान्विति	७६
३० लक्ष्य	३०	३० अपवर्गम्	३४	७७ लक्षणान्विति	७७
३१ लक्ष्य	३१	३१ अपवर्गम्	३५	७८ लक्षणान्विति	७८
३२ लक्ष्य	३२	३२ अपवर्गम्	३६	७९ लक्षणान्विति	७९
३३ लक्ष्य	३३	३३ अपवर्गम्	३७	८० लक्षणान्विति	८०
३४ लक्ष्य	३४	३४ अपवर्गम्	३८	८१ लक्षणान्विति	८१
३५ लक्ष्य	३५	३५ अपवर्गम्	३९	८२ लक्षणान्विति	८२
३६ लक्ष्य	३६	३६ अपवर्गम्	३१०	८३ लक्षणान्विति	८३
३७ लक्ष्य	३७	३७ अपवर्गम्	३११	८४ लक्षणान्विति	८४
३८ लक्ष्य	३८	३८ अपवर्गम्	३१२	८५ लक्षणान्विति	८५
३९ लक्ष्य	३९	३९ अपवर्गम्	३१३	८६ लक्षणान्विति	८६
४० लक्ष्य	४०	४० अपवर्गम्	३१४	८७ लक्षणान्विति	८७
४१ लक्ष्य	४१	४१ अपवर्गम्	३१५	८८ लक्षणान्विति	८८
४२ लक्ष्य	४२	४२ अपवर्गम्	३१६	८९ लक्षणान्विति	८९
४३ लक्ष्य	४३	४३ अपवर्गम्	३१७	९० लक्षणान्विति	९०
४४ लक्ष्य	४४	४४ अपवर्गम्	३१८	९१ लक्षणान्विति	९१
४५ लक्ष्य	४५	४५ अपवर्गम्	३१९	९२ लक्षणान्विति	९२
४६ लक्ष्य	४६	४६ अपवर्गम्	३२०	९३ लक्षणान्विति	९३
४७ लक्ष्य	४७	४७ अपवर्गम्	३२१	९४ लक्षणान्विति	९४
४८ लक्ष्य	४८	४८ अपवर्गम्	३२२	९५ लक्षणान्विति	९५
४९ लक्ष्य	४९	४९ अपवर्गम्	३२३	९६ लक्षणान्विति	९६
५० लक्ष्य	५०	५० अपवर्गम्	३२४	९७ लक्षणान्विति	९७
५१ लक्ष्य	५१	५१ अपवर्गम्	३२५	९८ लक्षणान्विति	९८
५२ लक्ष्य	५२	५२ अपवर्गम्	३२६	९९ लक्षणान्विति	९९
५३ लक्ष्य	५३	५३ अपवर्गम्	३२७	१०० लक्षणान्विति	१००

—
13 APR '82



श्री व्याधार्य विनवचन्द्र द्वान् भग्नार
मात् भवत् चौहा ग्रन्था,
बप्पुर सिटी (राजस्थान)



अथर्ववेदका सुवोध भाष्य ।

एकोनर्विश काण्डम् ।

श्रीमार् बसुलालाकी त्रिमुखनदासजी
बस्यद् वासों की ओर से भेंट ।

(१) पदः ।

(अथि — वदा । देवदा — वदा । वस्त्रमात्र ।)

स स स्मृत्यु नृथैः स वातुः सं पूत्रिणैः ।

युष्मिम वर्षयता गिरः संस्त्राप्येऽग्नि हुविषा शुहोमि || १ ॥

तुम् होमा युष्ममेवत्तुम् संस्त्राप्या तुव ।

युष्मिम वर्षयता गिरः संस्त्राप्येऽग्नि हुविषा शुहोमि || २ ॥

कृपरूप वयोवयः संरम्भैन् परिं व्यजे ।

युष्मिम वर्तमः प्रदिष्ठो वर्षयन्तु संस्त्राप्येऽग्नि हुविषा शुहोमि || ३ ॥ (१)

(१) वदः ।

अथ— (नथः सं सं वस्त्रम्) वर्दिवा वही रहे (वाता : सं) वातु वहे रहे, (पतविणः सं) वही वहे रहे । (हम् यहौं गिरः वर्षयत) इस वक्त्वे हमारी वातिवा वहावे । (संस्त्राप्येऽग्नि हुविषा शुहोमि) युष्ममि व्याहित करत्वेति इविषे मैं इत्यन् वदता हू ॥ १ ॥

मयुष्माकी वातिवा वदता नव एमावदें वा रात्रें वदतावें । इसके संस्कार व्यवहार होता है । वैसा वर्दिवेष्य प्रवद्य अस्त्र वा वातु वदता रहा तो मनुजीव्य युष्म वदता है । उसी तरह वह होते रहे तो मनुजीव्य व्यवहार होता रहता है । यसमें (१) विद्वानोऽग्नि वस्त्रम् (देवदा) (२) संस्त्रिकरण वर्तमि एवता और (३) वात व्याहित विसेषी व्याहता मैं तीन वर्तमाने भाव मुहम् है । इसके राष्ट्रका व्यवहार होता है ।

हे (होमाः) वहो ! (हम् यहौं व्यवहत) इस वहो रका च्छो । हे (संस्त्राप्याः) म्माहो । (वह हम्) और इति वहो युष्मका च्छो । इमारी वातिवा इस वहो संवर्तन करे । मैं युष्ममि व्याहित करत्वेति इविषे इत्यन् वदता हू ॥ २ ॥

एव वहो मुरदा और क्वों कि वहे संस्कार व्यवहार होता है ।

(वर्त्य वयोवयः) यसेव एव और प्रसेव आत्मुके व्युष्मार (संरम्भ) वेवदर (एवं परिष्वजे) इस वह करत्वेति वहो ज्ञेत्वे सुरक्षित रहता है । (हम् यहौं वर्तमः प्रविष्ठा वर्षयन्तु) इस वहमि वाती विद्यर्थं संवित करे । मैं युष्ममि व्यवहेत्वावें इविषे इत्यन् वदता हू ॥ ३ ॥

एव और आत्मुके व्युष्मार व्यवहारमध्ये द्विस्त्रित रहता है । वातों प्रविष्ठावें इवेत्वाके ज्ञेत्वे इसका व्यवहारमें वहावें ।

(२) आप ।

(जागि — सिंसुर्दीपः । वेषता — भाषा ।)

अ तु आपो हैमवरीः श्रूते सतृत्स्याः । अंते सनिष्पदा आपः श्रूते सन्तु पूर्ण्याऽ ॥ १ ॥
 अ तु आपो धन्तुन्याऽः अंते सन्त्वनूप्याऽः । अ ते सनिष्मिता आपः अंते याः कुम्मेमिरामृताः ॥ २ ॥
 अनश्रुः खनमाना विप्रा गम्भीरे अपसः । विषगम्यो विषक्तरा आपो अच्छा वदामसि ॥ ३ ॥
 अपामहे दिव्यानामुपा स्त्रृत्स्यानाम् । अपामहे प्रणेन्द्रनङ्गाम वदथ वाकिनः ॥ ४ ॥
 ता अपः शिषा अपोऽप्यसुकरणीपः । पश्चेव दृष्ट्यते मयुस्त्रास्तु आ दृच मेपुर्णीः ॥ ५ ॥ (८)

(३) जातवेदाः ।

(जागि — मध्यर्वदिता । वेषता — भाषा ।)

हितसुखिष्याः पर्युत्तरिष्याद्वन्द्वस्तिभ्यो अप्योपचीमः ।

यवेयत्र विमृतो भावदेवास्त्वरे स्तुता ज्ञातमाणो न एहि ॥ १ ॥

(४) आपाः ।

अर्थ— (हैमवरीः आपः ते अंते) दिमवाह पर्वतसे बलप्रवाह लेरे लिये शुक्रावी हों । (वस्त्र्याः ते अंते अ सम्मु) आलोचि वहौता से बलप्रवाह लेरे लिये शुक्रावी हों (समिष्पदा आपः ते अंते) वेषये बालेशासे वयाह दृश दुष्ट वावक हों । (वर्ष्याः ते अंते अ सम्मु) वहौत आर्य बलप्रवाह लेरे लिये शुक्रावक हों ॥ १ ॥

(अप्यस्याः आपः ते अंते) मलेशासे बलप्रवाह दृष्टे बालद देनामेह हों । (मनूप्याः ते अंते सम्मु) वेषये अप्यस्यासे बलप्रवाह लेरे लिये शुक्रावी हों । (वाकिनिमिता आपः ते अंते) बोलकर प्राप लिये वज्र लेरे लिये शुक्रवरक हो । (या : अम्मेमिता आपुरुषाः अंते) ये वज्र वहौते मरप्र रहा है वह दृष्ट शुक्रवरक हो ॥ २ ॥

(अनश्रुय वाममात्रा ।) ज्ञाताप्ते विना बोहे हूए (गम्भीरे अपसः) यमीर वज्रके झाता (विप्राः) झालीवादे चमोप (आपः) बह (भिष्यत्याभिष्कृताः) वेषोंके विषक ऐगामाव होते हैं । इन वज्रोंके विषममें (मध्यादा पदामसि) इम लाम बोहते हैं ॥ ३ ॥

वज्राभिष्मिता वा बलते हैं ते वज्राभ लगवोन करते रोप दृष्ट बरते हैं । इवकिमे वज्रोंके विषमम हय तत्त्व ही बोहते हैं ।

(विष्मामो अपाः अंते) आपवाह के परप्रवेशासे वज्र (ज्ञातस्यामां अपाः) लोक्येषासे वज्रोंके विषममें (अपाः अप्येजामे) इन वज्रोंके प्रवोक्ते विषममें (अभ्याः वाकिनः अपव्य) बोहे अविक पक्षमान दृष्टे होते हैं ॥ ४ ॥

वज्रा बोह्य वज्राभ और वज्रोन करतेसे बोहे अविक पक्षमान दृष्टे हैं । मनुष वी वज्रवोगसे नीरोग और वडिप होते हैं ।

(ता : आपः शिषा) वह वज्र वज्राभ करतेवा है । (आप अव्यव्यं-अरप्तीः अपः) वह वज्र रोपोंसे दृष्ट वरतेवास है । (यदा वज्र अपः दृष्ट्यते) विष तद्व दृष्ट वज्र सक्त है । (ता : ते भेषदीः आ दृच) वे वज्र लेरे लिये दृष्ट दृष्ट्यते हैं वज्राभ बोलकर बहा ॥ ५ ॥

वज्रविषितासे रोप दृष्ट होते हैं । इवकिमे मनुष अपोंसे बोह्य भ्रोप द्वारा आरोग प्राप चरे ।

(५) जातवेदाः ।

(विष) पुष्पेष्व (पूर्णिष्या) वृष्टिर्वासे (अस्तरिद्वासात् परि) वज्ररिक्ष्ये (अस्तस्यतिभ्यः वोषविष्यः) वज्रस्तिक्ष्ये और लोषविषोष (पञ्च वज्र ज्ञातवेदाः विष्मृतः) वहो वहो अभिम भरा रहा है (तदा स्तुतः) वज्रों प्रविति देवर (त्रुपापः) सदन वज्रे बीम्य हेषर (मः एहि) इमों समीर वामे ॥ १ ॥

इन वज्र वज्रानोंमे अभि है, दुष्टेष्वे सूर्य अस्त्रीष्वमे विषुष पूर्णीप्र आपों दृष्टे वीषविषवस्यतिर्वों भगेक हपते अभि रहा है । वह दृष्ट एहमक बने ।

यस्ते भूम्पु महिमा यो वनेषु य बोपदीषु पृथुप्पस्वैन्तः ।
 अप्ते सर्वीस्त्वन्त्रुः स रमस्तु शमिन्ते पर्हि द्रविणोदा अवसः ॥ २ ॥
 यस्ते देवेषु महिमा स्वर्गो या ते तन् पितृप्त्विवेष्ट ।
 पुष्टिर्था ते मनुप्पेषु पप्रवेऽप्ते सया रुयिस्त्वामु चेहि ॥ ३ ॥
 भुत्कर्णीय कुर्ये वेष्टाप्ते वर्षीमिक्तेलव्य यामि रुतिषु ।
 यतो भूम्पमर्प्य ततो अस्त्वर्व देवानां यत्ते हेतो अप्ते ॥ ४ ॥ (१)

(४) आकृति ।

(क्रिः — अथर्वाङ्गिरा । देवता — अस्ति ।)

यामाद्विति प्रथमामर्थवी पौ ज्ञाता या हृष्यमहुजोज्ञातवेदाः ।
 ता ते एतां प्रथमो ओहवीसि ताभितुसो वैद्यु हृष्यमुपित्रप्ते न्वाहो ॥ १ ॥

अर्थ— इ वस्ते । (या ते भूम्पु महिमा) जो तैरा वर्षोंमें महिमा है, (या वनेषु) जो वनोंमें (या बोपदीषु पृथुप्पस्वैन्तः) जो जीवात्मों पहुँचों और वर्षोंमें है, (सर्वीस्त्वन्त्रुः स रमस्तु) दग्धारे दे यद लटीर चतुर दीप्तिरे एवं उत्तर उर्ध्वे (तामिः या पर्हि) उनके साथ हमारे पास जानों और हमारे विषे (द्रविणोदाः अवसः) यन देवेशका अविनाशी हो ॥ २ ॥

(या ते देवेषु अर्थात् महिमा) जो तंत्र देवोंमें ब्रह्मशासी महिमा है । (या त तन् पितृप्त्विवेष्ट) जो तैरा वर्तीर वित्तारोंमें पालड़ीमें रहा है । (या ते पुष्टिः मनुप्पेषु पप्रवेष्ट) जो तैरी पोवक चक्रि मालवीमें फैली है देवस्ते । (तथा अस्त्वामु रथि पर्हि) इससे इसारे अन्दर यन त्वापत्त दर ॥ ३ ॥

(भूत्कर्णीय कुर्ये वेष्टाप्ते) सुनेदेवता क्यन विषके हैं जो चक्रि और जानने जोख है उनके पास (वर्षीमिः वाहोः) इन्होंने और लक्ष्मीर्थे (रातिं रुपं पामि) रुप मीणता है । (यतु यथ) यहाँसे मव हाता उंसत हों (तत् सः अस्त्वय अस्तु) वहाँसे इसे अमव हो । है अस्ते । (देवानां देवः यम) इनके भ्रेवका यात्प दर ॥ ४ ॥

ध्युरक्षणम् — प्रार्थना करनेवालोंका कहना तुनना जोख है । क्रिः—जानी येद्यतः—जानने जोख । उत्तराक जनमें भावधने वाला मांगता है । यहाँसे मणी क्षमावश्वा हो वहाँसे निर्मितवा प्राप्त हो । यहाँसे मव रुप हो । ऐसीसी छोर्य जनने क्षारन द्वे ऐसा जपना जाचरण रहना चाहिये ।

(५) आकृति ।

(अथर्वा) लक्ष्मनि (या प्रथमो भाद्विति) विष प्रथम भाद्वित्य (अहृणोदा) इवन विषा (या ज्ञाता) जो जाडुदी वरी और (जातवेदाः या हृष्य अहृणोदा) जातवद न मेंवे विषका इवन विषा (ती एता प्रथमो से ओहवीसि) इवन्हे मैं पर्हिके लेरे विषे इवन वर्त्य हैं (तामिः स्तुतः अस्ति हृष्य वहन्) यनवे पर्हित दृष्टा यमि इवन विषे हुएधे के जाव ऐसे (प्रथमे स्वाहा) अभिके विष प्रथमव इवन हैं ॥ १ ॥

लक्ष्मनि प्रथम भिं उत्तर उर्ध्वे देवते प्रथम भाद्विति हो । अभिके उत्तरे पर्हिका इवन कहे इन्द्रिय विषा । यहाँसे यन उठ दृष्टा ।

अप्रिक्षिता अथर्वाया । अ. १ । १११५ । अथर्वा द्वा प्रथमो विषमस्यद्वाया । वा २ । १११२ । प्रथम्यर्था प्रथमः प्रथमस्ते । अ. १। १८३५ । लक्ष्मनि भिं प्रथम उत्तर विषा विषके रूप हुए ।

आङ्गति देवीं सुमगां पुरो दधे खितस्य माता सुहर्षा नो वस्तु ।

यामाशामेसि केवली सा मे अस्तु विदेयमेनां मनेसि प्रविदाम् ॥ २ ॥

आङ्गत्या नो पृहस्यतु आङ्गत्या न उपा रहि ।

अथो भगस्य नो खेलबो नः सुहर्षो भव ॥ ३ ॥

मृहस्यतिर्मि आङ्गतिमाहितुः प्रति आनातु याचेताम् ।

यस्य देवा देवताः समस्युः स सुप्रणीत्वाः कामो अन्तेत्यान् ॥ ४ ॥ (११)

(५) जगतो रजा ।

(इष्टिः — मध्यवालिरा । वेष्टा — इन्द्रः ।)

इन्द्रा राता वर्गत्वर्णीनामसि व्यभि विदुरूप पदस्ति ।

उतो ददाति द्वाष्टुपे वर्षनि चोद्रापु उपस्तुतविदुर्वीक् ॥ १ ॥ (१०)

अथ— (सुमगां आङ्गति देवीं) दीमाप्तवाची इच्छा देवीको (पुरा दधे) बाने वर देता है । वह (वितस्य माता) वितरी माता (नः सुहर्षा भस्तु) इमरी जिने तुष्मदाये तुकाने बोध हो । (पां मातां केवली एसि) विष विदामै है लघ अमवाची भोर जाता है (सा मे अस्तु) वह मैरी हो (पां मातां प्रविद्या विदेयं इच्छे मनम् अविद्य हूँ भास कहे ॥ ५ ॥

मनकी इच्छा वर मुख है । उससे सब अर्थ द्वाक देते हैं । इसलिये वह मनमि इच्छा मुख है उससे वित अर्थ अन्न है । विद वराम अर्थ उत्तेजी इच्छा में भरता हूँ वह विद हो जाव ।

हे इच्छाते । (आङ्गत्या आङ्गत्या नः नः उपागाहि) सब इच्छा उत्तिके जाव त् इमीं पाय जा । (अथो मणस्य नः धेहि) और माय हमे है । (अथो नः सुहर्षः भव) और द्वाष्टम उत्तिके तुकाने बोध हो ॥ १ ॥

इतिके पाप व्रक्त इच्छा हा विषसे भास्म प्राप होवा ।

(भागिरात्सः पृहस्यतिः) जागिरत इच्छा पृहस्यति (मे आङ्गति रत्ता वार्ष) देवी इच्छा इच्छावाची वालीको (प्रति आनातु) बाने । (यस्य देवा वेष्टा । चं वस्तु ।) विषेक जाव देव और देवता छठे हैं, (स सुप्रणीताः कामः) वह उत्तरीतिः प्रयोग्ये जावा जाम (वस्त्राम् वस्त्रेतु) इसरे उत्तीर जा जाने ॥ ५ ॥

त्रैव इच्छासे प्रेरित हुई जावी प्रतिकामे दोही है । उसके जाव विष विकिना छढ़ी है ऐसी इच्छा इमारी उपर होती हो ।

(५) जगतो रजा ।

(इन्द्रः) इन्द्र, भु (जागता वर्गत्वर्णीतो) नाथ, पकि जाहि वेष्टवीका भनुप्रोक्ष (अथि इष्टि विदुरूपे यद् अस्ति) दूसिनी वर जी जीव रंगवाचारे पराने हैं वन उत्तरा (राजा) एक जीतीयं राजा है । (तता द्वाष्टुपे वस्त्रमि वदाति) व्याहे वह राजाचो अनेक प्रश्नरक पर्य देता है । (उपस्तुतः विद्) वल्लं लुटि उत्तेर (मर्वाह रायः चोहात्) वह इच्छ वन भेष्टता है ॥ १ ॥

उत्तर उत्तमप्य एक जीतीयं राजा ज्ञानेश्वर ही है । जो भी जहा वस्तुमात्र है उत्तर वर्णता जीतीय है । वह उत्तमप्य वन देता है । लुटि उत्तेवाकै पर्य वह वन भेष्टता है । उसके द्वाष्टवीको जानेवेष्ट वकुप्य उप दोया है ।

(६) जगदीजः पुरुषः ।

(ध्वनिः — मारायणः । देवता — पुरुषः ।)

सहस्राद्गुः पुरुषः सहस्रासुः सहस्रपात् । न भूमि विश्वते युत्त्वात्यविष्टुशाह्युलम् ॥ १ ॥
 त्रिभिः पुक्षिर्यामिरोहुरपादस्येहामृत्युनं । तथा अय्कामिद्विष्टुशनानश्चने अतु ॥ २ ॥
 सावन्तो अस्य महिमानस्तुते च्यायाश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा मूर्त्यानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥
 पुरुष एवेद सर्वं यद्ग्रूतं यच्च भाष्यम् । उत्तमृतस्त्वं शुरो यदुन्येनामैषत्सह ॥ ४ ॥
 यस्त्वपुरुषं व्यदेषु कृतिष्वां व्यक्त्वयन् । सुखं किमेस्य किं शाहु किमूरु पादो उच्यते ॥ ५ ॥
 पादाणोऽस्य मृद्धमासीद्ग्राह रोज्वन्योऽभवत् । मस्य उद्देश्यं यद्वैश्यः पुर्यां शूद्रो अंजायत ॥ ६ ॥

(७) जगदीजः पुरुषः ।

मर्य— (सहस्र वाहुः) इतारो वाहुराश्च (सहस्र-मस्तः) इतारो भावोरासम (सहस्रपात्) इत्यो
 पात्रासम एक (पुरुषः) उत्तरे (सः भूमि विश्वतः पुरुषः) वह भूमिष्वा वारो ओरेके भैर कर (ददायुसं भस्त-
 तिष्ठुत्) एक अग्रुद विष्वां व्याप एक रहा है ॥ १ ॥

धर्मो मनुष्योऽहे शाहु जाति पात्र भारि अवश्व विष्वेके अवश्व हैं एका माहसमावस्थी विष्वां उत्तर पूरुष विष्विष्वे वारो ओर
 है । एक अत्यन्ता के एक अवश्व इसके अवश्व हैं । एक अंतुल हृष विष्वो भैरवश्व रहा है । वृत्तीक वारो भार भो मात्रासमाव
 है वह विष्ववर एक पुरुष है ।

(त्रिभिः परिद्वयोऽप्य भरोहत्) तीन भेणोंके तुलाद पर चढ़ा है भौर (अस्य पात् इह पुमः अमयत्) इसमा
 एक अंत दहो पुल पुमः देखा है । (तथा पिष्वाह मशान-भूतानि अनु व्यक्तामत्) तथा वारो भौर वारेषामे भर
 न वारेषामे वेतन भीर एक रहके वार रहा है ॥ २ ॥

इसके तीन भय वालोंको व्याप रहे हैं भार एक जहा यहा जह भौर वेतन करमें रोक रहा है । वहा वह वर्तवार
 वर्तम्य है ।

(तावस्तः अस्य महिमामः) इसके बत्तेमें परिमा है । वह (ततो उपायान् च पुरुषः) उत्तर तैर वस्तु वदा
 है । (अस्य पातः विष्वा भूतानि) इत्य एक अंत के बद भूत है भर (अस्य त्रिपात् लिकि यमूतं) इसके तीन भेण
 एकमध्ये अपर है ॥ ३ ॥

(यद् भूत यत् च भाष्य) जो वहा ह भार जो वेता (इदं सर्वं पूरुषं एव) वह एव उत्तर ही है । (उत्त-
 मृतासमस्य इत्यर्थ) भौर वह अवश्वना रहती है (यत् अमयेत मह अमयत्) वा इत्वे- वर्ते- वाप
 रहा है ॥ ४ ॥

जो भूतासमे दुष्टा भौर वा वेतनमें हाता है वह एव उत्तर ही है । वह अपरत्य भासी है जो बहों का वह रहता है ।

(यत् पुरुषं व्यदेषु) जो रित्य इस उत्तरासमन बत्तेहै बद्धमें इसी (कनिधात्पद्माव्यन्) बिन्ने व्यक्त्वाके
 वारानी ही है । (अस्य मूर्त्यं चिं) इवय सुक बन है (चिं वाहु) इसके वाहु बन है (चिं ऊह) एवं चीज है
 भर (पादा वर्षयत्) पाद जीव बहे जाते हैं ॥ ५ ॥

उत्तर एव विष्ववर विष्वा वारा है बत्तेमें पुरुष वह उत्तर भौर एव रहे हैं ।

(अस्य मूर्त्यं प्राप्यताः) इत्य उत्तरासु युक्त व द्वय वारी-है (रात्रयः वाहु अमयत्) उत्तेव इव उत्तर वाहु दूर
 है (मात्रं तत् अस्य यत् व्यदेषु) इमाता अभ्यम गे व है (पद्मर्यां दूदा यमयात) १५६ विष्वे दूद दुष्टा है ॥ ६ ॥

बद्धन विष्व वे ह भौर गर वे इव उत्तरके युक्त वाहु माहसम भर एव रहे अवीर चर एव व इव पुरुषे वार
 भवेहै ।

चुन्द्रमा मनसो चातव्येषोः दूर्यो व्याप्त इ। मुख्यादिन्द्रियाधिर्भ प्राणाङ्गायुरभायत ॥७॥
 नाम्यो आमीदुर्वर्तेषु शीर्षो धोः समेवते । पञ्चो भूमिदिवुः शेषाच्च लोकाँ ब्रह्मस्यन् ॥८॥
 विराघ्ने समेवद्विसो अष्टि पूर्णपः । स चासो अस्त्रिच्चित पुष्टाङ्गमिमपों पुरः ॥९॥
 यस्युहैष हुविषो देवा युग्मतन्वत् । युसुन्तो अस्यासीदाज्ञे ग्रीष्म दुष्मः भुरद्विः ॥१०॥
 त युद्धं प्राणपा प्रौष्ठन्पुरुषं चातमंग्रेषः । तेन देवा अयमन्त साधा वसेवम् ये ॥११॥
 वस्मादधी व्याप्त इन्द्र ये चु के चोमुपादतः । गावो इ बहिरु वस्माच्चस्माकाता वजायतः ॥१२॥
 वस्माद्युष्मासर्वद्वृतु नक्षः सामीनि बहिरे । छन्दो इ बहिरु वस्माद्युष्मस्माद्व्यायत ॥१३॥
 वस्माद्युष्मात्सर्वद्वृतुः संसृतं पृष्ठाज्ञमिः । पृष्ठेस्ताविके वायुस्यानिरुण्या ग्राम्याष्टे मे ॥१४॥

अर्थ— (मनसः चन्द्रमाः जात) एषेऽ मनसे चन्द्रमा दूषा दै (चासोः दूर्यः व्याप्त इन्द्र इन्द्र) (मनसात् इन्द्रः च अस्मि च) इव मुख्ये इन्द्र और अस्मि हुए हैं । (व्याप्तात् वायुः व्याप्त इन्द्र) इव पुलके मनों
 दृष्टु हुए ॥ ७ ॥

इव पुलके (नाम्यो अस्त्रिच्च व्यासीत्) वार्षीष अस्त्रिकं दूषा (दीर्घो धोः सं वर्तते) विरेते तुम्हें
 हुआ । (पञ्चों भूमिः) पात्रोंसे भूमि हुईं (विद्याः घोषात्) इन्द्रे विद्याएं (तथा छोकाल् ब्रह्मस्यन्) और
 इव प्रधार वायु ओरोंसे इन्द्रान्— प्रधारिते वरीरे वरोंसे— वै पूर्ण है ॥ ८ ॥

(अस्मे विद्याद् सम्प्रवृत्) प्रवत्त विद्याद् उत्तम दूषा (विद्याका भावि पूर्ण) विद्याके वर अविद्याएं दृष्ट
 हुआ । (सः जातः अति अरिच्यत) इव अवत देखे ही तें पदा (भूमि वयों पव्यात् दुष्म) प्रवत्त भूमिर्भ
 और पव्यात् वायु वरीरोंमें देख दया ॥ ९ ॥

(यत् पृष्ठवेष्य हविषो) वज्र पुष्टाङ्ग हविषे (देवा यज्ञ व्यत्ययत) देवोंने वज्र विद्या (वस्मात् व्यस्य
 आर्यं व्यासीत्) वस्म्य वज्र हविष भी वा (ग्रीष्मः इन्द्रः) वैष्य वज्र वज्र वा और (वायत् हविः) वज्र
 वज्र वा ॥ १ ॥

एषेऽ वज्रे इन अतुदीये होमेतां पदार्थं ही वज्री शापमी वा ।

(ते अम्बा जात) इव प्रवत्त वर्तम दृष्ट (पूर्वं पुरुष) वर्णीन् उत्तमे (वायुशा ग्रोक्षश्) वर्णीन् वर्णे
 विद्यन विद्या (तेष्म) इवाते (साम्या वस्तवः च ये देवाः) वायु वर्ण वर्ण को देख हैं ते (अव्यक्ततः) वज्र
 वज्र है ॥ ११ ॥

(वस्मात् व्याप्त व्याप्ततः) एषेऽ वोऽ उत्तम दृष्ट (ये च के वज्र उत्तमादतः) विद्याके देवों और वायु होते हैं ।
 (वायु अविरे वस्मात्) एषेऽ देवों वर्तम दृष्ट (वस्मात् व्याप्त व्याप्ततः वायतः) एषेऽ वर्णीवो और भैविवो वज्र
 हुई ॥ १२ ॥

(वस्मात् सर्वद्वृतः यषात्) इव वर्णसंस्थे वाहुति देवेऽ वज्रे (वज्र सामानि वाहिरे) वज्रारे और वायु वज्र
 वज्र हुए । (वस्मात् इन्द्रः इ बहिरः) इव वर्णे ऋष्य भूमि अवर्णीर वर्तम दृष्टा (वस्मात् पृष्मः व्याप्त व्याप्ततः)
 वज्र वज्रे वज्रेऽ वर्तम दृष्टा ॥ १३ ॥

(वस्मात् सर्वद्वृतः यषात्) इव वर्ण इन वर्तमे वज्रे (पृष्ठ वायस्य संसृते) वर्ण और वी वर्तम दृष्टा ।
 (वायु वायस्यान् पश्चुः) इव वायस्य पश्चुमे (वायस्या वायस्या च ये) वायस्य पश्च और वायस्य पश्च हैं वज्र
 वज्र हुई ॥ १४ ॥

सुप्पास्यांसन्परिषयुक्तिः सुप्त सुमिर्हः कृताः । देवा यथा उन्नानी अवभूत्युरुप पृष्ठम् ॥१५॥
मूर्खो देवस्यैवृतो अशर्वः सुप्त संपूर्तीः । रात्रः सोमेस्याजायन्त मात्रस्य पुरुषादिः ॥१६॥ (३)

(७) नक्षत्राणि ।

(जपि — गार्व । देवता — महात्राणि ।)

खित्राणि साक दिवि रोचनानि सरीमुपाणि सुवने लब्धानि ।

मुमिर्हं सुमित्रिष्ठमानो अहानि गीर्मिः संपूर्यामि नाक्षम् ॥ १ ॥

सुहृदमध्ये रुचिंका रोदिणी चास्तु मद्र मूर्गिंतुः श्रमाद्री ।

पुनर्विष्ट सूरुषा चारु पुष्पो मानुराश्लेषा अर्थन् पृष्ठा मे ॥ २ ॥

पुण्य पूर्वा फलसुन्यी चात्र इस्तविश्वा श्रिवा स्त्राति सुखो मे अस्तु ।

रात्रे खित्राणि सुहृदानुराचा न्येष्टा सुनक्षत्रमिरिष्ट मूलस् ॥ ३ ॥

अर्थ— (देवा यथा यथा तंत्राता) देव जो यज्ञ वर रहे हैं (अस्य सत्त परिषय आसन्) वह वर्षे घात परिषि वे (त्रि सत्त सत्तिष्ठ हृता) तीन युगा सत्त अभिवाए ची वी और (पुरुर्वं पञ्च महामृत) गरमेपास्ती पुरुषों ज्ञानहे लिये खित्राणि बाजा दा । उपर वर याव वे लगाते हैं ॥ १ ॥

(शहत्रा वृत्यस्य) वहे देवक अर्चाद् (लोमस्य रात्रा) दोम रात्राके (मृगा) खित्रे (सत्तरीः सत्त) सत्तर वार वात (अवाक्ष) किंवै (अवायस्त) वरदण दुर (जातस्य पुरुषात् अभि) वह वह उत्तरात् उत्तर दुरा ॥ २ ॥

वे दिव्य सूक्ष्म प्रवर्षामय तत्त्व है लिये वह चाही रही है । वह देव दोम रात्रा-सर्वाधार शास्त्र श्रम है । लिये वे तत्त्व प्रयत्न दाक्षर वह यहि रही है ।

वह यामन सदाचार ची इस पूर्विंशी पर चाही आर है वह सत्त यामन क्षमाच इस पुरुषात् चाही है । इसारों मुख इसारों पात्र इसारों वहर आर इसारों पात्र इस पुरुषके हैं वह वर्षन इस वरह देवता आर समरहना चाहिये ।

(८) महात्राणि ।

(खित्राणि) खित्रिष्ठिष्ठ (साक दिवि रोचनानि) शाव काव वलेक्ष्मी खित्राणि होमेकाने (सर्वीस्यपात्रि) वहा अपीड (मुखने अवाति) मुखनमि देवपात् (अ-हानि) खित्र न होमेकाने नवोदी (तुमिर्हं सुमिति इष्ठामाता) तथा अनिष्ठापात् उत्तम तुमिर्ही इष्ठा वहा दुरा मै (गीर्मिः नाके संपर्यामि) वहरी शरिकोत्त द्विष्ठर्वं नवोदी प्रहृष्टा याता है ॥ १ ॥

हे अपि ! (द्विष्ठका रोदिणी सुहृद्य य अस्तु) हठिंशा और दोहिंशे वहर भेरे लिये दुखहे यावना वहरे वारह ही । (मूर्गिंश्वा भद्र) यावति नवत्र अव्याप देवेकाम ही । (भाद्रा ही) भाद्रा नवत्र यान्ति देवेकाम ही । (पुण्य पूर्व सूरुषा) उत्तरपु नवत्र इत्तम यावतापि देवेकाम ही । (पुष्पा चाद्र) पुष्प नवत्र भेरे लिये वहत्र ही । (चासेका यानुर) यावता नवत्र पराय हेरे (मध्या म अयत) यथा नवत्र भेरे लिये यानि देवेकाम ही ॥ २ ॥

(पूर्वा फलसुन्यी पुष्प) पूर्वा चास्यावे ही नवत्र पुण्यपात्र ही (भद्र दासः खित्रा यित्रा) वहा इन ओर खित्रा अस्यावही ही । (स्त्राति म मत्ता मस्तु) लाती नवत्र मेरे लिये दुखतावी ही । (याये खित्राते) है एधे आर प्रियावे । दूष दोनों (मूर्द्या) इत्तम यावना करे योग ही । (अनुरापा अप्तुष्टा मूर्त भ-रिष्ट) अनुरापा येत्रा भेर मूर्त ये वहर खित्रा एष्ट न ही ॥ ३ ॥

अस्मि पूर्वी रासतां मे अपाहा ऊर्जे देवमुष्टिरा आ वैहन्तु ।

आभिविन्मे रासतां पुण्येषु भवेत् भविष्टाः हृष्टां सुपुटिष्म्

आ मे सुहृष्टुतमिषुवरीयं आ मे द्विषा प्रोष्टुपदा सुश्रमे ।

आ रेष्टीं चाश्मुष्मीं सर्गं मु आ मे रुयि मरेष्यु आ वैहन्तु

॥ ४ ॥

॥ ५ ॥ (१८)

(C) नक्षत्राणि ।

(लक्षणः— गार्यः । देवता— नक्षत्राणि व्रजप्रस्थिः ।)

यानि नक्षत्राणि दिव्यै न्तरिष्ये अप्यु भूमौ यानि नगेषु विसु ।

प्रकल्पयन्त्रन्त्रमा यायेति सर्वोऽनि ममेतानि खिवानि सन्तु

अद्यार्णिष्टानि खिवानि श्रुमानि सुह योर्गं ममन्तु मे ।

योग्र प्र पैषु खेमे चु खेमं प्र पैषु योर्गं च नमोऽग्रोग्राप्राप्नोमस्तु

खलित मे सुप्राप्तः सुसार्वं सुहित्रं सुमुग्रं सुशुङ्कने मे बस्तु ।

सुर्वेष्ये स्वस्त्युमस्यि ग्रुत्वा पुनराप्नामिनन्दन्

अनुद्व विरिहर्वं परिवारं परिष्वदम् । सर्वमें रिष्कुम्भान्तुरावान्तिवितः सुव ॥ ६ ॥

अर्थ— (पूर्वी अपाहा मे अर्च रासतां) पूर्वी अपाहा नक्षत्र एषे अर्च देवो । (द्वया देवी ऊर्जे अर्च आ वहन्तु) वतारा अपाहा नक्षत्र वताम एव देवो । (अमिक्षिष्म मे पुण्य रासतां पूर्व) आभिवित नक्षत्र पुष्टे पुष्टे । (अर्पणः भविष्टाः सुपुष्टे कुर्वतां) अनुष्ठ और भविष्टा मुष्टे उत्तम पुष्टे देवो ॥ ४ ॥

(महात् शतमिष्याह) वता वतमिष्म नक्षत्र (मे वरीय आ) भैरो विवेचन देवो । (द्वया प्रोष्टुपदा मे सुश्रमे आ) दोनों ग्रीउपदा वत्त्र मुष्टे उत्तम पुष्ट देवो । (रेष्टीं अश्मुष्मीं च) रेष्टीं और वत्तुम वत्तम (मे भर्गं आ) भैरो विवेचन देवो और (अर्पणः मे वरीय आ वहन्तु) अर्पणः वत्तम भैरो विवेचन देवो देवर्षे के जायें ॥ ५ ॥

(C) नक्षत्राणि ।

(वाति नक्षत्राणि) च। नक्षत्र (विविष्म अस्तरिष्में) तुष्टोद्देव अस्तरिष्में (अप्यु भूमौ) वत्तोमें मूर्मीपर (यानि तागतु विसु) के पर्वतोद्देव तत्वा विवानीमें है । (अच्छ्रुमा याति प्रकल्पयन्त्रं पृथि) वत्तमा विविष्म भौय अत्यं द्वित्वा आप है । (सर्वाणि वतावि सम विवानि सर्वतु) एव ते वत्तत्र भैरो विवानार्थी हों ॥ १ ॥

(अष्टार्णिष्टानि) अठार्णुष्मक्षत्र (विवानि श्रुमानि) वत्तमान और सुक्षदारी हों । (य सह योर्गं भवन्तु) भैरो वाय बोग वत्त अर । (योग्र प्र पैषु) वाय वाय हो (खेमं प्र पैषु) खेम वाय हा । (खेम य प्र पैषु योर्गं च) खेम और बोग प्राप्त हो । (भद्रोत्ताप्राप्नो नमः भस्तु) भैरो और रात्रीके मिमे मै नक्षत्र वत्तत्र है ॥ २ ॥

(मे सु अस्तिर्तं) भैरो विवे वत्तवात् वत्तत्र वर्तेष्यात् हो (सुप्राप्तः) प्रुवराणी प्राप्तवात् हो (सुसार्वं) वार्ष्यात् द्वित्वारी हो । (सुपुष्टिः) भैरो विवे वत्तवारी हो (सुपुष्टे) एषु प्रुवरात्रक हों (सुप्राप्तु मे भस्तु) यहीं पुष्ट वारी ही । है ज्ञे । (सुहर्यं लक्षितं) वार्ष्या वत्तवात् द्वित्वा द्वित्वा हो । (अमर्त्यं ग्राप्ता) अमर्त्यवये ग्राप होकर त् (पुष्ट अभिवत्त्वात्) पुष्ट वत्तदे प्रवत्त वत्तत्र द्वित्वा (आ अर्य) आओ ॥ २ ॥

ई (सवितः) विविष्म द्वये भैरो ! (अनुद्वप) द्वय (परिद्व व) द्वय (परिवार्द) विवा (परि द्वप) द्वय च अर्थ भावि (सर्वों मे रिक्त कुमान्) वत्तके वाय भैरो वाय (ताय वरा सुव) एव वत्तदे द्वय ॥ ३ ॥

अपपाप परिषुप्त पुर्वे मधीमहि श्वर्म् ।

क्षिका तें पापु नासिंका पुण्यग्राहाभि नैहसाम् ॥५॥

इमा या ब्रह्मास्त्रते विष्णुर्भातु ईरते । सुधीर्चीरिन्द्रु तः कुत्वा मर्त्ये विवर्तमास्तुषि ॥६॥
खुक्ति नो अस्तु नमोऽहोरात्राम्योमस्तु

॥ ७ ॥ (४५)

(९) शान्तिः ।

(क्षापि — ब्रह्मा (शान्तातिः ।) देवता — शान्तिः वाहृदैवतम् ।)

शान्ता थोः शान्ता पूर्णिष्ठि शान्तमिदमुर्वे न्तरिष्म् ।

शान्ता उदुन्वतीरापेः शान्ता नः सुन्त्वोपधीः ॥ १ ॥

शान्तानि पूर्वहृपाणि शान्तं नो अस्तु हृषाकृतम् ।

शान्तं भूतं च मर्यं च सर्वमेव शमस्तु नः ॥ २ ॥

इप्य या परमेष्टिनी बाह्येष्ठी भ्रात्संशिता । यत्पैव संसुखे घोरं तयेव शान्तिरस्तु नः ॥ ३ ॥

इप्य यत्परमेष्टिन् मनो ता भ्रात्संशितम् । येनैव संसुखे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः ॥ ४ ॥

धर्म—(अपपाप परिष्कारं) पाप और लीक दूर ही । (पुण्य इष्व मधीमहि) पुण्यप्रक जल इम महत्व छोड़े । ऐ पत । (शिक्षा पुण्यग्राहा या) ब्रह्मास्त्र करनेवाले और पुर्व मार्येव बालेवाली (से बालिका भग्नि मेहता) लेती वाक पर मूल छोड़े । तेरा अपमान छोड़ ॥ ५ ॥

शिक्षा—इस्त्राव बलेवाली भग्नि ।

हे (ब्रह्मास्त्रते) हे इनपते ! (हमा : या : विष्णुर्भीः) इन नामा विष्णुभोवे (वातः ईरते) यातु वक्ता है हे इन ! (ता : सद्गीर्चीः हृत्या) इनके बीच मार्येव बलेवाले बत्ते (मधी विवर्तमाः हृषि) भैरो जिमे त्रुक्तामी भर ॥ ६ ॥

(मः इष्टस्ति अस्तु) इमाप्य अवाप हो (मः अमर्यं अस्तु) इये विमेवता त्राप हो । (अहोरात्राम्या ममः अस्तु) दिम रात्रिके जिमे नमस्कार हो ॥ ७ ॥

(९) शान्तिः ।

(थीः शान्ता) पुरेक शान्ति हैते । (पूर्णिष्ठि शान्ता) पूर्णिष्ठि शान्ति हैते । (इव इह अस्तरिष्म शान्तः) मह एव अस्तरिष्म शान्तिराप हो । (उद्भवतीः यापः शान्ताः) उद्भवेवाले जल शान्ति हैते । (भोपधीः मः शान्ता संस्तु) जीविता इमारो जिमे शान्ति हैतेष्वी ही ॥ १ ॥

(पूर्वहृपाणि शान्ताति) दूरं उमस्के इन शान्ति हैते । (मः इत अहर्त शान्तं अस्तु) इमारो जिमे वा न जिमे वार्त इमारो जिमे शान्ति हैतेवाली ही । (भूतं मर्यं च शान्तः) भूत और मर्येव शान्तिराप हों (सप्त एव मः अस्तु) वा इमारो जिमे शान्ति हैतेवाली ही ॥ २ ॥

(इयं या परमेष्टिनी) वह जो परमस्त्रामें जित (ब्रह्मासंशिता याहृ देखी) ब्रह्मे तेवस्त्री वनी वाक देनी है (यथा घोर एव संसुखे) जित्ते मर्येव धर्म होने हैं (तथा एव मः शान्तिः अस्तु) बत्ते हमें शान्ति अप हो ॥ ३ ॥

(इव यत् परमेष्टिन्) वह जो परमस्त्रामें जित (या ब्रह्मासंशित भवतः) व्याप देनोप शमये तैवस्त्री वना मन है विद्युते और परिष्माम होत्य है वह इमारो जिमे शान्ति हैते ॥ ४ ॥

५ (अमर्यं माय अन्त ११)

इमानि वानि पञ्चनिरायि मनः पष्टानि मे हृदि प्रक्षेत्रा संक्षिप्तानि ।

पैरु सैसुखे श्रोरं तेरेष लान्तिरस्तु नः ॥ ५ ॥

षष्ठ नौ मित्रः षष्ठ वर्णः षष्ठ विष्णुः षष्ठ प्रब्राह्मिः ।

षष्ठ नु इन्द्रो गृहस्पतिः षष्ठ नौ मवत्वर्षमा ॥ ६ ॥

षष्ठ नौ मित्रः षष्ठ वर्णः षष्ठ विवस्वांलमन्तकः ।

उत्पाताः पार्थिवान्तरिस्ताः षष्ठ नौ द्विविर्चरा प्रहाः ॥ ७ ॥

षष्ठ नौ यूर्मिर्विष्यमाना श्रमुखका निर्हीर्तं षष्ठ यद् ।

षष्ठ गावो लोहितश्चिराः षष्ठ यूर्मिर्व तीर्थितीः ॥ ८ ॥

नद्यश्चमुखकाभिहीर्तं षष्ठ मस्तु नः षष्ठ नौ ऽभिच्छाराः षष्ठ स्तु उन्तु कृत्याः ।

षष्ठ नौ निखीता पुरगाः षष्ठ मुखका द्वेषोपसर्गाः षष्ठ नौ मवन्तु ॥ ९ ॥

षष्ठ नौ प्रहीषान्त्रमुसाः षष्ठ मादित्यर्थं राहुषा ।

षष्ठ नौ मृत्युर्षमर्जुः षष्ठ छ्रास्तिगमतेवसः ॥ १० ॥

षष्ठ उद्राः षष्ठ वस्त्रः षष्ठ मादित्याः षष्ठ मृत्ययः ।

षष्ठ नौ भार्ययो देवाः षष्ठ देवाः षष्ठ गृहस्पतिः ॥ ११ ॥

सर्वे— (इमादि वानि पञ्च इतिहायि) जो वे हमारे पाँच इतिहाय हैं, (मनःपष्टानि) मन विनामेष्टी है (ग्रहया संक्षिप्तानि मे हृदि) हमारे तेवती वने भेरे इतिहाय में रहते हैं । विनामे मवत्वर्षम् होते हैं जब एहे हमे वानि प्राप्त होते हैं ॥ ५ ॥

मित्र हमारे भिन्ने शुक्रानी हो वरन हमे शुक्रानक हो मित्र और प्रवातिं हमे शुक्रानी हो इत्य वाहस्यि और वर्जना हमे वानि देवताना हो ॥ ६ ॥

मित्र हमारे भिन्ने वानिं है । वरन हमे वानिं है (विवस्वान् वस्त्रातः हर्ष) विवान् हमे वानिं है और अन्त वर्जनाका ऐव हमे वानिं है । (पार्थिवा वस्त्रातिस्ताः उत्पाताः) वृत्तिया और अन्तरीक्षमें होनेवाले उत्पात वीर (दिवि वराः प्रहाः नः हर्ष) गृहीत्यमें वंचार वर्जनावे इत्य हमे वानिं है ॥ ७ ॥

(वेष्यमात्रा भूमिः नः हर्ष) भूमाप दीनेवाली भूमि हमे वानिं है (उद्धकाहर्ष) उद्धव वानिं है (यत् विहंतं) जो दृश्यवीर मित्र है वह भी वानिं भरक हो । (सोहित-सीतारा वावः हर्ष) एवके वाव इत्य देवेवाली भीजे भी हमे वानिं हैं । (वस्त्रायीर्यतो भूमिः हर्ष) वस्त्र वावेवाली भूमि भी वानिं देवेवाली हो ॥ ८ ॥

(उद्धकाभिहीर्तं नवर्षं नः हर्ष वस्त्रु) उद्धवदे ऐव वस्त्र वावहर्ष हमे वानिं है । (आयेष्वराः नः हर्ष) अनुप्य वावर्षम भी हमे वानिं देवेवाली हो । (इत्याः हर्ष वस्त्रु) अद्यव द्विवार्ह भी वानिं देवेवाली हो । (विवाताः नः हर्ष) गोहे हमारे भिन्ने वानिं है । (वष्टाः हर्ष) दिष्टके वार्ष हमे वानिं है । (देवोपसर्गाः उद्धका मः वस्त्र वस्त्रातु) ऐवम् वर्जना गृहस्पति हमे वानिं है ॥ ९ ॥

(वाद्रमसाः प्रहाः नः हर्ष) वाद्रा वादेवी वस्त्र हमे वानिं है । (राहुषा भादित्यः हर्ष) राहुके वाव वस्त्र हमे वानिं है । (घृमकेतुः गृहयुः नः हर्ष) घृमकेतु मृत्यु हमे वानिं देवेवाला हो । (तित्वमतेजसः उद्राः हर्ष) तित्वमतेजस वस्त्र हमे वानिं है ॥ १० ॥

(उद्राः हर्ष) उद्र हमे वानिं है । (वस्त्रः हर्ष) वस्त्र हमे वानिं है । (भादित्याः हर्ष) भादित्य हमे वानिं है । (वष्टाः हर्ष) भष्ट हमे वानिं है । (वस्त्राः महर्ययः न शर्ष) ऐव और महर्यय हमे वानिं है । (देवाः हर्ष) ऐव हमे वानिं है । (पूर्वस्पतिः हर्ष) पूर्वस्पति हमे वानिं है ॥ ११ ॥

ग्रहे प्रमापं विद्युता लोका देवाः सप्तशुपयोऽप्यर्थः ।

वैर्मे कृत स्वस्त्रयन्तु मिन्द्रो मे शर्मे यच्छतु मृशा मे शर्मे यच्छतु ।

विश्वे मे देवाः शर्मे पच्छन्तु सर्वे मे देवाः शर्मे यच्छन्तु ॥ १२ ॥

यानि कानि चिष्ठान्तानि लोके सप्तशुपयो विदुः ।

सर्वाणि द्व गवन्तु मे द्व मे त्रुस्त्रमय मे अस्तु ॥ १३ ॥

पृथिवी शान्तिरुन्तरित्यु शान्तिर्यौः शान्तिरापुः शान्तिरोपयुः शान्तिरुन्स्परयः

शान्तिर्विश्वे मे देवाः शान्तिः सर्वे मे देवाः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिर्मिः ।

शामिः शान्तिर्मिः सर्वशान्तिर्मिः श्रमयामोऽह यदिह घोरं यदिह क्रूरं

यदिह पाप सच्छान्तं तुष्टिव सर्वमेव श्रमस्तु नः ॥ १४ ॥ (५१)

० इति प्रथमोऽनुवाकः ॥ १ ॥

अर्थ— ब्रह्म, प्रब्रह्मति, भावा (लोका) तत्र लोक (देवा) ज्ञानेव सहर्वेद शामर्वेद और अवर्वेद वे चार देव एव ज्ञान अभिं (सु : मे स्वस्त्रयम् हत) इन ज्ञने मेरा कारणानन अवश्य मुख्यावक्त याप दिशा है । (इन्द्रः मे अर्म यच्छतु) इन सुषे प्रश्न देने । (ब्रह्मा मे अर्म यच्छतु) ब्रह्मा सुषे प्रश्न देने । (विश्वे देवाः मे अर्म यच्छतु) उव देव सुषे प्रश्न देने ॥ १३ ॥

(यानि कानि चिष्ठा शास्त्रानि) वा कुछ शान्तिरापक है ऐसा (जोके सतत्राययः विदुः) मेंमें उस ज्ञानी आनन्द है (सर्वाणि मे द्व गवन्तु) वे तत्र मेरे लिये मुख्याभिरापक हैं (मे द्व गवन्तु) मेरे लिये ज्ञानिय हो (मे अस्तु) मेरे लिये ज्ञानिय हो ॥ १४ ॥

जूरिनी शान्तिं एव अमात्रत्य शान्तिं एवे पुराक शान्तिं एव (भावा) बल शान्तिं एवे (भोवधया वनस्पतयः) अभिष-वदन्तानां शान्तिः । एवे एव देव शान्तिं एव (सर्वे देवाः म शान्तिः) सर्व देव मेरे लिये शान्तिं एवे । (शान्तिः शान्तिः शान्तिर्मिः) शान्तिर्वोर्द शाप शान्तिं एवी शान्तिं हा । (तामिः शान्तिर्मिः सप्त शान्तिर्मिः भादृ दा अयाम) इन शान्तिं पूर्ण एव चर्त-तदोहे इन शान्तिर्दो प्रत हो । (यद् इह घोरं) जो वहा चर ह (यद् इह परं) जो वहा भर हे (यत् इह पापं) जो यहा पापमव हे (तत् शास्त्रं) एव यापत हे (तत् शिवं) एव वर्षाय चरी ह । (यः सर्वे एव द्व गवन्तु) एवे एव शान्तिरापक ह ॥ १४ ॥

० यद्वा प्रथम अनुवाक समाप्त ॥

(१०) शान्तिः ।

(कथि — वसिष्ठः । देवता — वृद्धैवत्यम् ।)

शं नै इद्वामी मंवसुमवोमि शं नै इन्द्रावरुणा रातहृष्या ।

शमिन्द्रासोमा सुविशायु ष योः ष नै इन्द्रापूपया वाक्साती ल ॥ १ ॥

शं नौ भग्नः षष्ठु नुः षंसो अस्तु ष नैः पुरीषः षष्ठु सन्तु रायेः ।

शं नैः सुस्पस्य सुयमेस्य शंसुः ष नौ भर्तुमा तुरुज्ञातो अस्तु ल ॥ २ ॥

ष नौ धाता षष्ठु षर्ता नौ अस्तु ष नै उठची मंवतु स्वधामिः ।

ष रोदसी भृत्यी ष नौ अद्विः ष नौ देवानां मृद्धानि सन्तु ल ॥ ३ ॥

ष नौ अपिज्येतिरनीको अस्तु ष नौ प्रिश्रावरुणाहृषिनु षष्ठु ।

ष नैः सुखतौ सुकृतानि सन्तु ष नै इपिरो अभि चातु शातेः ॥ ४ ॥

ष नौ पार्वापूर्णिमी पूर्वहृषी षमन्तरिष्ट दृष्टये नौ भस्तु ।

ष नै ओषधीर्धिनिनौ मधन्तु ष नौ रज्जुस्पतिरस्तु मिष्टुः ॥ ५ ॥

(१०) शान्तिः ।

भर्तु— (इन्द्र—समी अवोमिः नः दा मधता॑) इन्द्र और भर्तु द्वारे रक्षणे धारणोंके दाव हमारे लिये आनितरात्र हो । (रात—इप्या इन्द्र—पदमा मः श्च) अबका बाल करतेवाले इन्द्र और वश द्वारे लिये आनितरात्र हो । (इन्द्रा—सोमा सुविशाय ष योः) इन्द्र और वोम द्वारे लिये हमें जागेते हो और भयमें छुकते । (इन्द्रा—पूपया वाक्साती मः श्च) इन्द्र और दूधा द्वारे दमदम हमें आमित हो ॥ १ ॥

(यदा नः श्च) भग्न देव हमें जागित हो (शोसा नः श्च उ भस्तु) प्रवेष्टिव देव हमें जागित हो । (पुरोऽप्या नः दा) विषाव तुष्टि हमें जानित हो । (रायः श्च उ भस्तु) ऐपर्व देव हमें जानितरात्र हो । (सुयमस्य सतयस्य शंसा नः श्च) ब्रह्म निष्ठवुल उक्तवा प्रवेष्टिव दम जागित हो । (पुरुज्ञाता॑ भयमा मः श्च भस्तु) वृष्ट त्रिष्टु जर्मेण हमें जानित हो ॥ २ ॥

(धाता॑ न श्च) व रक्षता॑ देव हमें जामित हो । (धर्तीमः श्च उ भस्तु) जाभ्रदशा॑ हमें जानित हो । (इष्यामिः वर्षभी नः श्च मधन्तु) भर्तु देव वार्ष उतितोंके लाव वह जैतो हुईं पृथिवी हमें जामित देवतानी हो । (शूरता॑ रात्रसी श्च) वही पुर भर्तु अस्तरिष्ट दमोरे लिये जागत हो । (भद्रि मः दा) पदाह दमोरे लिये जामित हो । (देवानो सुद्धानिः नः दा मधन्तु) देवोंकी वार्षवार्द हमें तुक्तरात्र हो ॥ ३ ॥

(अयोति॑ अवीक्षो ममिः मः श्च भस्तु) तपस्वी वर्तीत सुवराता॑ भर्तु हमें जानित देवताना हो । (मिश्रा—पदमा नः श्च) विष वार वर्ष हमें पुष्यमार्ती हो (माभ्रमा नः) जायनी हमें जानित हो । (चुहता॑ सुहनानि नः दा) वर्ष वर वरतानोंके भर्तु दम दमार लिये तुगरारी हो (इपिर पाता॑ मः श्च भर्तु पातु) भर्तिगान चातु दमोरे लिये आनितरात्र हो ॥ ४ ॥

(तृष्णनो पायापूर्णिमी नः श्च) रथम शर्वगामें पु और पृथिवी हमें जामित देवतानी हो । (अस्तरिष्ट मः दादाय श्च भस्तु) अस्तरिष्ट दमारे दमोरे लिये आनितरात्र हो । (पवित्रा॑ भारतीया॑ नः दा मधन्तु) वेतन वर्तेव भग्न दमार दमार लिये गौमीतरात्र हो । (विष्टु इत्तरः पवित्रा॑ नः श्च भस्तु) वर्षलील रांगतारामा॑ जातह दमारे लिये दमारे दमेताना॑ ॥ ५ ॥

ष न् इन्द्रो वसुमिर्द्युषो अस्तु शमाकित्येमिर्द्युषः सुशस्तः ।
 ष नौ लुद्रो लुद्रेमिर्बलौषः ष नुस्त्वया शमिरिद्युष्ट्रिष्ठोवु
 ॥ ६ ॥
 ष नुः सोमो मध्यतु ग्रह्य ष नः ष नो ग्रावोणः ष मु सन्तु युद्धाः ।
 ॥ ७ ॥
 ष नुः स्वरूणो मित्रयो मध्यन्तु ध्यं नैः प्रस्त्वः ष मवस्तु वेदिः
 ष नः धर्ये उलुष्या उद्देतु ष नौ मध्यन्तु प्रदिष्मवर्तसः ।
 ॥ ८ ॥
 ष नुः पर्वेता वृष्टयो मध्यन्तु ष नुः सिन्धवः ष मु सुन्त्वापे
 ॥ ९ ॥
 ष नो मादिविर्मिषतु प्रतेमिः ष नौ मध्यन्तु मुरुतः स्फक्ताः ।
 ॥ १० ॥
 ष नो विष्णुः ष मु पूषा नौ अस्तु ष नौ मुविर्वं ष मवस्तु ग्रायुः
 ॥ ११ ॥
 ष नौ देवः संहिता ग्रावेमाणुः ष नौ मध्यन्तुपुसो विभातीः ।
 ॥ १२ ॥
 ष नैः पूर्वन्यो मध्यतु प्रज्ञाम्युः ष नुः क्षेत्रस्य परिवर्तस्तु प्रस्तु
 ॥ १३ ॥ (११)

मर्य— (षष्ठ्यमिः देवः इष्टः नः श्च मस्तु) षष्ठ्यमेष्ट वाच इन्द्र देव इमारे लिये शान्तिहाता हो । (मादित्येमिः
 मुशीसः वदयः श्च) मादित्योंके वाच प्रवृत्तियोग वस्ता हमें शान्ति देवे । (लुद्रेमिः जडापः उद्धः नः श्च) लुद्रों
 वाच उलुष्यी यद्य हमें शान्ति देवे । (ग्रामि त्वया इह नः श्च शृण्यातु) उद्दितोंके वाच तथा वहाँ हमें शान्तिहे
 देवे ॥ १ ॥

(ऊमः नः श्च मस्तु) ऊम इमारे लिये शान्तिहात्मक हो । (ग्रहः नः श्च) ग्रह इमारे लिये शान्तिहेवे (ग्रावाणः
 नः श्च) पत्तर इमारे लिये शान्ति हो । (यद्वाः नः श्च सम्मु) वाच इमारे लिये शान्ति हो । (वृष्टयो मित्रयः नः
 श्च) वृष्टोंके स्थितिना इमारे लिये शान्ति हो । (प्रस्त्वः नः श्च) वृष्टव देवतासे परार्थ इव्ये शान्ति हो । (येदि श्च मस्तु
 हेवे हमें शान्ति हेवे ॥ २ ॥

(उलुष्याः शूपः नः श्च उद्देतु) विषेष प्रकाशवत्तम स्तु इमारे लिये शान्ति वाच दृष्टा वरित हो । (उलुष्याः
 महिषाः नः श्च मस्तु) वारों रिधाए इमारे लिये उलुष्याविनी हो । (वदयः पर्वताः नः श्च मस्तु) विर वर्षत हमें
 शान्ति हो । (सिन्धवः नः श्च) मरिदो हमें उलुष्यावी हो (ग्रापः उ श्च सम्मु) वाच इमारे लिये शान्ति
 हेवे ॥ ३ ॥

(मादितिः प्रतेमिः नः श्च मस्तु) इनिनी अनेक वर्णोंहेहमें शान्तिहेवेत्तम्य हो । (स्फक्ताः महतः नः
 श्च मस्तु) उत्तम वरितले वातु इमारे लिये शान्ति हो । (विष्णुः नः श्च) विष्णु हमें शान्ति हेवे (पूर्णा नः श्च मस्तु)
 पूर्णा हमें शान्ति हेवे । (मविर्वं नः श्च मस्तु) उत्तरति स्वान हमें शान्तिहेवेत्तम्य हो । (वायुः श्च उ मस्तु) वायु शान्ति
 हेवेत्तम्य हो ॥ ४ ॥

(ग्रायमापः संहिता दद्वः नः श्च) रक्षण करनेवाचा शंहिता दद्व हमें शान्ति हेवे । (पिमातीः उपसः नः श्च
 मस्तु) तैवसी वचार्य हमें शान्तिहात्मक हो । (पञ्चम्यः नः ग्रावाम्यः श्च मस्तु) पञ्चम्य इमारोंके लिये शान्ति
 हेवेत्तम्य हो । (अंगुष्ठा सेत्रस्य पति । मः श्च मस्तु) मुखशापक वेत्रचय पति हमें शान्तिहेवेत्तम्य हो ॥ ५ ॥

(११) शानिता ।

(फलिया — बहिष्ठा । देयता — बहुदैवत्यम् ।)

ष नौः सुत्यस्य पर्तयो मवन्तु श नौ अर्थेन्तः श्वमु सन्तु मार्चः ।

ष नौ भ्रमवः सुरुचिः सुहस्त्राः ष नौ मवन्तु पितरो हर्षेषु ॥ १ ॥

ष नौ देवा विश्वदेवा भवन्तु ष सरस्वती सुह श्विमिरस्तु ।

प्रभमिषाचुः श्वमु रातिवाचुः ष नौ द्विष्वाः पार्विवाः ष नौ अप्याः ॥ २ ॥

ष नौ अज एकपादेषो अस्तु श्वमिष्विष्वाः ष संमुद्रः ।

ष नौ ज्वां प्रवासो नपात्प्रेरलस्तु ष नौ पृथिमेषु देवगोपा ॥ ३ ॥

आदित्या छुडा वसेषो शुपन्त्वामिद शश क्रियमार्चु नवीयः ।

शूचन्तु नौ द्विष्वाः पार्विवासो गात्रोदा उत्त ये शुक्लियासः ॥ ४ ॥

ये दुवानोमूर्तिवार्ता शुक्लियासो भगोर्यज्ञेषा अमृतो अतुक्षाः ।

ते नौ रासन्तामुख्यामुख्य शूय पात्र खुस्तिमिः सदा नः ॥ ५ ॥

तदस्तु मित्रावरुणा तदेषु ष योरस्म्यमिदमस्तु श्वस्तम् ।

शुक्लीमहि ग्राम्यमुत्र प्रतिष्ठानमो द्विषे शूहते सादनाय ॥ ६ ॥ (७५)

(११) आर्यिता ।

(अर्थ — (सत्यस्य पर्तयो मः श्व मवन्तु) समझे पास्त इवे शानित देवतानां हो । (अर्थस्तः मः श्व) देहे इवे शानित हैं (गाय श्व उ सम्मु) गोवे शानितवाक हो । (सुहातुः सुहस्त्राः भ्रमवः मः श्व) डाताम जाम अर्थमेष्ट इवाच कर्त्तव्य है इवे शानितवाक हो । (पितर द्वर्षेषु मः श्व मवन्तु) शिष्ठ प्रार्थनाके समझ इमें शानित देवतानां हो ॥ १ ॥

(विष्वदेवा : देवा । मः श्व मवन्तु) वर्त देव इवे शानित देवतानां हो । (धीमि : सह सरलती इव मस्तु) शुक्लियोंके द्वाय दर्शकी इवे शानित देवतानां हो । (भ्रमियाचाः श्व) चारों ओरसें भ्रमियांके शुक्लवाक हो । (रातिवाचाः श्व उ) बात देवेष्ट लिये भ्रमियांके शानितवाक हो । (द्विष्वाः मः श्व) पुरोर्धवे देवतानांके इवे शानित हैं (पार्विवाः अप्याः त श्व) इविवार होनेवाले देवतावे हीने शानित देवतानां हो ॥ २ ॥

(अर्थ एकपाद देयः मः श्व मस्तु) अवश्या एकपाद देव इवे शानित देवे । (शुप्त्या श्वहि श्व) वर्त देव देवतानां अदि शानित देवे । (समुद्र श्व) घटव शानित देवे (देव अपी मवन्तु मः श्व मस्तु) इवाचिये वार दर्शनेवाय अप्येषो न विदेवताना देव इवे शानित देवे । (देवगाया शुक्लियाः मः श्व मवन्तु) देवेष्ट दारा शुक्लियां शुक्लियां इवे शानित देवतानां हो ॥ ३ ॥

(वर्त नवीय क्रियमाणं प्राप्त) वह नवीन दिये द्वेष्ट भावित्य दर्श और वगु देवत वर्त । (विष्वाः पार्विवासाः) या दुवानो देवे द्वर्षेष्ट प्राप्त (गायताता) भो द्वेष्ट दर्शन भीर (उत्त ये द्विष्वाः) भो वर्त देवेष्ट देवतावे हैं देव (मः श्वस्तम्) दापां प्रार्थनां मने ॥ ४ ॥

(ये देवानां पर्विवासाः श्वरित्याः) या द्वेष्ट देवेष्ट दाव दर्शन है (मनोः श्वस्तम् जनकाः यजमानाः) वर्त नवीय दर्शन दर्शन दर्शन दर्शन है (ते अप्य म दर्शनाय रासन्ताः) भे भाव इवे शिष्ठ दापेष्ट हैं । (शूर्यस्तिमि भद्राः म यत) शूर्य वर्षनांके दाव दर्शन दर्शन दर्शन है ॥ ५ ॥

देविय भर दर्शन । देव अप्य (तात् मस्तु) वह वर्त इवे शानितवाक हो । (रात् या अस्त्रप इव दासी अस्तु) शुक्ल यात भार दुल इ होना वह वर्त दर्शन देवेष्ट दाव दर्शन हो । (गाय उत्त प्रतिष्ठां भवीयमहि) देवन भार दर्शनावे देव दाव ॥ ६ ॥ (दूदत साश्रवाय दिये मव) वह भावव भावनाव शुक्लिये देवेष्ट दाव दर्शन हो ॥ ७ ॥

(१२) शानित ।

(पूर्विः — घसिष्ठः । देवता — उपा ।)

उपा अप् स्वसुस्तुपः सं वर्तयति वर्तनि सुमातता ।

अपा वार्जे देवहित सनेम् मदेम् श्रुतहिमाः सुवीराः

॥ १ ॥ (७६)

(१३) एकघीरः ।

(नविः — मपतिरथः । देवता — इग्न्द्र ।)

इन्द्रस्य वाहु स्वर्विरौ वृपाणी चिक्रा इमा वृपमो पारमिष्ण् ।

तौ योषे प्रथमो योग आगते याम्यां चित्रमधुराणा स्वर्यैषु

॥ १ ॥

आम्बः चिष्ठानो वृपमो न मीमो वनाष्ठनः शोभणर्थणीनाम् ।

॥ २ ॥

सुकृन्दनोऽनिमिष्य एकघीरः श्रुत सेना अब्दयस्तुकमिन्द्रः

सुकृन्दनेनानिमिषेण दिष्णुनाऽयोज्येन दुष्ट्यपुनेन वृष्णुना ।

॥ ३ ॥

वदिन्द्रेण व्यप्तु तत्सौहर्षं वृषो नरु इपूहस्तेन वृष्णा

(१४) उपा ।

अर्थ— (उपा) उपा (सुमातता) उत्तम रीतिपूर्वक अरथ (वर्तनि सं वर्तयति) मर्यादे उम्भू उत्तिरे एवादि है भीर (स्वसु उत्तम अप) अपनी वहित राजीवे अव्याकरणे शुरु करती है । (अपा देवहित वार्जे सनेम) इस रक्षाये इम देवोंके मिथे दिवतारक वज्र ग्रात करते । (सुवीरा श्रुतहिमाः मदेम) उत्तम भीर उत्तरांशे तु उच्च देवता वीरमध्यमतक लानश्च मध्य रहते ।

(१५) एकघीरः ।

(इन्द्रस्य वाहु) इन्द्रके वाहु (स्वर्विरौ वृपाणी) चिक्रा भार वलवाद् (चिक्रा इमा वृपमो) विन्दन वथ तु वृष्णीं पार वलवामे (योगे आगते) उम्भू अपेपर (प्रथमः तौ योषे) पदिष्ठे मैं वनये देवता हूँ । (याम्यां चित्रं वय अद्य-राम्या उपा) चित्रमें वायामे बौद्ध चिना वी ग्राव अर्थग वलवाममग वी लर्पे ह ॥ १ ॥

एव (आम्बः) शीत्र वार्जे वलवामा (विद्युतामः) तीव्र (वृपमो न मीमाः) वैत्ते उत्तम भर्त्यर (भना अत) वृषुदो मालेवामा (चर्यवीरीसो सोमध्य) मुख्योद्य इन्द्रके वलवामा (सुकृन्दनः अमिमिष्य) वलवामेवाम भीर वार्जीये वलके भी न संक्षेपामा वर्तादि वत्तत वर्तकर्ता (एकघीरः इग्न्द्रः) नविरीय भीर इग्न्द्रे (साङ्क शार्त सेषमा अव्यप्त) उपा वृष्ट्यो वायुसेनाद्य वीट चिना ॥ २ ॥

(सुकृन्दनेते) वलवामेवामे (अमिमिष्य पूर्णिमाम) भिन्नरूपत वलवाम (अयोध्येम) तु उच्च अपेक्षे मिथे विद्वांस उपावस्तव है, (तुष्ट्यपूर्वमेन वृष्णुमा) वलवाप्रत वर्तेके मिथे अव्याक भीर वृषुदोष्य पर्वत वर्ते गते (तुष्ट्यस्तेन वृष्णा) उपा उपामें वलवामे वलवामा (इग्न्द्रेण) इग्न्द्री सुमाततये है (तुष्पः नरा) तु उच्च वलवाम भीर वैत्तांशो ! (तत् उपावत) उप अविक्षिवद्यो भीता । (तत् सहृदर्थ) उप वृषुदो पात्र वर्ती ॥ ३ ॥

स इरुहस्तैः न नियुक्तिभित्तिसी सत्त्वेष्टा स युधे इन्द्रो गुणेन ।

संसूट्युकित्सीमुपा धौकुष्मद्युप्रवर्षन्वा प्रतिहितामिरस्ता

॥ ४ ॥

वृलिङ्गायः स्वविरः प्रधीरः सहस्रान्वाकी सहेषान् तुग्रः ।

॥ ५ ॥

अभिवीरो अभिपत्त्वा सहुविद्विविन्दु रथुमा तिष्ठ गोविदेष्

इम वीरमनु इर्ष्यमग्निन्द्रै सखायो अनु स रमध्यम् ।

॥ ६ ॥

प्रामधिरं गोवितु वज्रपातु वर्यन्तुमन्त्रे प्रमृणन्तुमोर्बद्धा

युभि गोप्राणि सहस्रा गाहमानोऽड्युप तुग्रः प्रत्यमन्त्युरिन्द्रः ।

॥ ७ ॥

दुष्प्रवृत्तः पृतनापाद्योऽध्योऽमाकु सेनो वज्रतु प्रयुस्तु

शहस्यते परिदीप्ता रथेन रथोऽभिवीर्णी अपवाहमानः ।

॥ ८ ॥

प्रमुक्तं लक्ष्मीन्द्रमूलमुभिप्रानुस्माकेमद्यविता तुन्नोप्

इन्द्रै परो नेता वृहस्पतिर्दिंशिणा भुहः पुर एतु सोमः ।

॥ ९ ॥

त्रेवसेनानामिमाञ्जीतीना वर्यन्तीना भुल्लो यन्तु मध्ये

॥ १० ॥

धर्म— (स इतु हस्तैः) यह वाच हातमें वरवेशाके धौरेणि धाव (स) नियाङ्गिभिः) यह तर्कवाके धौरेणि धाव रहनेवाका (वाही) वस्त्रमें रहनेवाका (युधा उत्तराया स) कुदोषे वरवेशाका (गवेन इन्द्रः) धूरेणि धाव वह इन्द्र (धंश्वप्रवित्) खेनामै वीरनेवाका (सामपा) दीपरह वरवेशाका (वाहुराघी) वाहुप्रवेषु पुक (उपमस्त्रा) वर्णव वक्त्रम वरवेशाका (प्रतिहिताभिः वाहा) हतुषेनाके भेदे लक्ष्मीको तिता विद्व वरवेशाका धौर है ॥ ४ ॥

(वर्णविद्वायाः) यहाँ भीर लक्ष्मी वरवेशाका वाननेवाका (स्थविरा) दुर्दमें विर रहनेवाका (प्रधीरा) वत्तम वीर (सहस्रान्) वक्त्राद् (वाही) लक्ष्मील (सहस्रान्) तुग्रः वक्तुप्रेषे रहनेवाका लम वीर (अभिवीरा) विवेद वाही वीर वीर रहते हैं (धर्म-साक्षा) वाही वीर वक्त्राद् वीरेणि दुष्प (सहोवित्) वर्यवे लक्ष्मी वीरनेवाका दूर है । हे इन् । हे (गो विद्व) भूमिषे वर्णमें वरवेशाके धौर । (वीरे एत्य वा तिष्ठ) विकारी धर्म वेठ ॥ ५ ॥

हे (सत्त्वाया) भिरो । (इर्ष्य लम वीर इन्द्रः) हर लमीर इन्द्रवे (वानु इर्ष्यच) वानवित वीर भीर (वानु स रमध्य) इनके लक्ष्मीक प्रवत्त फूरे । यह (प्रामवित) वक्तुप्रेषे वामोषे वीरनेवाका (गोविते) वीरोषे वीरनेवाका (वर्षवाहा) वक्ते उत्तराव वाहुप्रवाका (वर्षम वर्यन्त) मुह वीरनेवाका (वोद्वासा प्रमृणस्त्र) वीरनेवाके लक्ष्मीके उपवेशाका है ॥ ६ ॥

(पोत्राणि सहस्रा अभिप्राहमाना) पोत्रक वाहीको वर्णमें लक्ष्मी वरवेशाका (व-ह-य-ः) वाहुपर वहा व कर्त्ते वाका; (वर्षम वातमस्त्रु) लक्त्वम वैष्णवो वरवेशाके पुक (तुरुष्यवाका) वाननेवाक वर्णमें विवे लक्त्वम (पृतवा पाह) लक्ष्मीवाक वरवेशाक वरवेशाक (वयोऽप्य इन्द्रः) विवेदे वाच युध वर्ता वल्लम है ऐसा यह इन्द्र (पुरुष असार्क लेवा) प्रयुस्तु पुरेणि इर्ष्यी उत्तराव वाहीको रक्ष भेदे ॥ ७ ॥

हे शहस्रे ! (अभिवान् अपवाहमासा) लक्ष्मीओंदे वाचा पृष्ठावेशाक (रथो वा) राक्षोऽप्य वाच करता वृका (एत्य परि वीरा) रथेन सकुर्ये भेर । (शुक्रु अपमहाद्) लक्ष्मीओं इक्षवक्ता वृका और (अभिवान् अपसूक्ष्म) अभिवीरा वाप भरता वृका और (असार्क लन्नूर्मा अविता) वीरी लक्त्वीक एष्य करता वृका (पर्वि) वापे वह ॥ ८ ॥

(इन्द्रः एत्य भेदा) इन्द्र इन्द्रम वेता है, (वृहस्पतिः वासिष्या) वृहस्पति इक्षिण इवधी भीर है (पद्मः सोमः पुरुषत्व) वक्त्रीव लोम वाचा चके । (धर्मि माञ्जीतीयो) लक्ष्मी लक्ष्मीवाकी (जयत्वीयो) वीरनेवाकी (देववेशानामां) वेष्वेग्नेवि (माये) वर्णये (महता अभिप्राहनु) पर्वत वापे वहै ॥ ९ ॥

इन्द्रसु वृष्णो पर्णस्य राष्ट्र आदित्यानां मङ्गुष्ठा शर्वं उग्रम् ।

महामनसां सुवनस्यानां घोपे देवाना वर्णतुमुद्दित्यात्

असाक्षिनिदृः समृतेषु च्छुवेषु स्मारुं या इपेषु स्ता वृथन्तु ।

असाक्षां वीरा उच्चे मवन्स्वसान्देशासोऽवतु इतेषु

॥१०॥

॥११॥ (८०)

अथ— (वृष्णः इन्द्रस्य) एवमाद् इत्यथ (वरुणस्य राष्ट्रः) एवम् देवाना (आदित्यानां मरुर्ता) अविद्येः आर मरुर्तोऽपि (उप्र शार्वः) प्रवद्य उपर्य प्रवद्य हा रहा है । (महा-मनसां) वृहे मनसाम् (सुवनस्यानां देवानां) मुख्योऽपि इतिमेवाते देवोऽपि (शर्वतां) वृक्षोऽपि इत्यतः (घोपः उद्दित्यात्) जापया एवम् इत्यर उठ रहा है ॥ १ ॥ ५

(समृतेषु च्छुवेषु) अथ इद्यु शंतेष्वर (असाक्षां इन्द्रः) इमाद् इत्य विवद द्वे । (असाक्षां पा इपदः ता शर्वमन्तु) इमाद् जो बल है व जीते । (असाक्षां वीरा उच्चे उत्तरे मवन्तु) इमाद् वीरा उच्चे हैं । (हेषेषु असाक्षां वैष्णासः अवद) मुदोंमें इसे एव द्वुरक्षित रख ॥ ११ ॥

इह शुक्ले विवद पातेके लिये एवा करता चाहीय वह उत्तर है । इद्यके समाम वा वर्गों है विवद प्राप्त इतेषु । इह इत्येषु इह शुक्ले इद्यके गुणोऽपि जो वर्णन जाता है वह मनसपूर्वक देवते योग है—

१ वाहु स्पृष्टिविरा बुपाणी— वाहु सुरार्थ और मनसाम् हों ।

२ वृपमो पारायण्— शोषक समाम विडि आरुज्ञवे मुहुर्वेमें समय ।

३ असुराणी स्त्री सिंहं— अनुरोधा सर्वत्र जीता । प्राप्त शान दक्षसर्वाद्योऽपि शोष देवेशाना तथा प्राप्त किया ।

४ भाष्मु गिरावत्— तराप वार्ष देवेशाम और तंस्य कामन होना

५ मीमा ग्रामाधार— मर्यादर आप्तते करु एतुष्य नाप देवेशाम

६ अपर्णीमी स्तोमणः— शानबोद्धी योभ्युरक इत्यथ देवेशाम

७ सहस्रन् भवित्यिप एकवर्ति— गर्वता देवेशाना आवदी पर्मदे न स्त्रादेवेशा आदीतीव वीर

८ सात्र धात्र सना भवत्यत्— एक धात्र ओं सनाध वीठेशाम,

९ गिष्णु अयोध्या तुरुष्यवनः वृष्ण— विवदी विवद धात्र बुद्ध इत्या अवाद्य ह विषये साक्षत् अद्य करता वर्णित है भार ओं यत्रये वहन करता है ।

१० इपुरस्ता वृष्णः— वाप हात्ये करेशामा करताद् वीर

११ शयत सहस्रं— विवद वय चकुडा परामृत घोषे ।

१२ निपद्वा यथा— करवतादी तद्यानां तद्या वयमें एवेशामा

१ (अपर्द भाष्म वात्त ११)

१३ युधा स्त्रयाण— मुदोंधे पर्मद् रीतिषे दरेशामा,

१४ संस्थानित् बाहुशर्धी— मुद जीठेशामा बाहुशर्ध लियो विषये है

१५ उपर्यन्ता अस्त्रा— एम चतुर्म दरेशामा एतुस वात देवेशामा

१६ वस्त्रविवायः स्पृष्टिर प्रवीटीह— अथे और चापुद वस्त्रे वयावत् जानेशामा, मुदमें विष एवेशामा लियो वीर ।

१७ सहस्राद् वार्षी सहस्रातः उप्रः— एतुष्य परामृत दरेशामा वयावत् जानेशाम, उप्रीही

१८ अमितीर अभिस-सत्वा सहादित्— वीठीके धात्र इतेशामा वयस्यादी भासे वहते एतुष्य वीठेशाम्य

१९ सेत्र एवं व्या लिष्टु— विवदी एवर वह ।

२० वीर अनु इर्वद्य— वीरा उत्ताप वयामो ।

२१ एम मतु सं एमर्वं— एम वीरये शोत्रशत्रू दो ।

२२ प्रामजितं गोजितं— प्राप्तये जीठेशामा, गोमोंये वीठेशामा

२३ वस्त्रवाद्यु त्यस्तं— वहके समान बाहुशामा, विवदी वीर,

२४ गोऽक्षसा प्रसूणस्त— वहके चकुडा वह एवेशामे

२५ गोऽक्षाणि सहसा गापमामाः— गोठावद् इत्या वयमें प्राप्त एवेशामा

२६ चातमस्यु— वहकी ज्वाले चकुर वीर दरेशामा

२७ तुरुष्यवनः वृत्तानापाद् अयोध्या— इत्यमप्रह वयावत् निये ज्वाले यद्युक्तेशामे जीठेशामा । एवं वह मुद वर्णा अवेशाम है ।

(१४) अभयम् ।

(कथि — अवर्षा । देवता — शायाश्रिती ।)

इदमुख्योऽवसानमागा लिखे मे शायापृथिवी अभूताम् ।

असुपुक्षाः प्रदिशो मे भवन्तु न वै त्वा द्विष्मो अमयं नो अस्तु

॥ १ ॥ (८८)

(१५) अभयम् ।

(कथि — अवर्षा । देवता — इन्द्रः मन्त्राक्षा ।)

यते इन्तु मयोमहे ततो ना अमयं हृषि ।

मध्ये चुरिभि तम् स्व ने ऊरिमिवि द्विषो वि मुषो जहि

॥ २ ॥

इन्द्रे बुधमैसुरायं ईशामुदेऽनु राज्यास्म द्विषद्वा चतुर्पदा ।

मा न सना अरलुपीरुप गुर्विपूचिरिन्द्र द्वुहो वि नाश्रय

॥ ३ ॥

१८ युरुष्म अस्माकं सेमा अवतु — दुर्वोग्य इमारी सना —
कोष्ठ रक्ष दरे ।१९ रक्षादा अभिकार् अपवाधमासाः — रक्षाद्युभ्य
नाक्ष चतुर्भोग्य बाहा पृष्ठादेवाता ।२० शाश्वत् प्रमधम् शामजात् प्रमूर्यद — चतुर्भोग्य
नाय कर्ते दुर्वादे दुर्वादेवाता

२१ अस्माकं तनूनी अविता — इमारी लारीका रक्ष

२२ अभिमञ्जीतीना अपठीमा देवसंमार्ता — चतुर्भ
विनात चर्क वद वानेवाका देववता ।१३ महाममसां मुखनक्ष्यवासां अपतो देवावी घोषः
इदस्यात् — एव मन्त्रात् मुखोऽव दिवस्यवाच
बय दर्शेवाके देवोऽभ ववाच हो द्वा है ।

१४ अस्माकं इपव अपतु — इमो वाच बव त्रय दरे ।

१५ अस्माकं वीरा लक्षरे मयण्टु — इमो वीर लक्ष्य हो ।

१६ अस्माकं देवासाः इवेषु अवत — इमे वेष मुखोग्य

मुग्धित वा । ने ववत विवारेभ्येष पता बय उक्ता है कि दिव
त्रुपत बव होता है । इमेष विष्म दुर्वादे वरामन होता है ।

(१६) अभयम् ।

अर्थ — (इव भ्रेयः अवसाने उत् अगाम) इव भवत कृततः मै पृथिव वा है । (शाया पृथिवी म लिखे
ममूतो) दुर्वोग्य और ग्रन्थेभ दरे लिखे मुख देवेवत हो । (प्रदिशा मे असपत्नाः यक्षसु) लिखें मर लिखे चतुर्वित
हो । (त्वा त द्विष्मा वे) तेषा इप देव नहीं करते । (ना अमयं अस्तु) इमो लिखे अस्त हो ॥ १ ॥स वे त्वा द्विष्म — इम त्वा देव नहीं करते । वह ववत मुख है । इम त्वा अस्तिष्म देव नहीं करें । पर दुष्मे
देव चर वद से इम अन्ते । इमे नहीं देव कोकि कारो दिवाभोग्ये विवक्ता और काम्य स्वापन करता है ।

(१७) अभयम् ।

(दे इन्द्र) दे इन्द्र । (यतः मयोमहे) वहाव हमे मय होता है (तता) वहास (ना अमयं हृषि) इमे
लिखेव वर इ (सपवन्) इत् । (त्वं शारिय) देषा अस्त्वे तु अमयं है । (त्वं तव ऋतिपिः) तु अस्ते इक्ष
सामाचोग्ये (द्विष्मः पि सहि) देव वर्नेवाकी जीत और (सुष वि लहि) हिष्मेष वाक कर ॥ २ ॥(वर्यं अनुरार्थं एवं द्वामाद) इम अनुराक लिखि कावेवामे इपवे सुति दरते हैं । (द्विषद्वा चतुर्पदा ममु
राज्यासाः) यो शोक्षामे और चार पात्रामोग्ये इप अनुराक लिखि काम दरे । हे इन्द्र । (अरलुपी सेमा : ना अप
यु) अनुराक ईवादै इमे पात्र न आ बात । (विपूर्यीः द्वुहः वि लाश्रय) सर दीर्घिवी देवाभोग्य वाय कर ॥ ३ ॥

इन्द्रियावोत वृत्रहा परस्पानो घरेष्यः ।

स रेखिता घरमतः स मंच्युतः स पुष्मान्स पुरस्तामा अस्तु
दुर्कु नो लोकभनु नेषि विद्वान्त्स्वीर्यज्ञ्योतिरमेय स्यस्ति ।

उग्रा ते इन्द्र स्वरितस शाह उपै क्षेम श्रुणा पृहन्ता
अमेय नः करत्पुन्तरिष्ममय यावौपृथिवी उमे इमे ।

अमेय पुष्मादमेय पुरस्तादुत्तरादप्रादमेय नो अस्तु
अमेय मित्रादमेयमित्रादमेय शातादमेय परो यः ।

अमेय नक्तममेव दिवा नुः सर्वा आशा मर्म मित्र मंषन्मु
॥ ३ ॥ (१४)

(१५) अमयम् ।

(पृष्ठि — अमर्या । वृषता — मध्योक्ता ।)

असप्तम पुरस्तात्पुष्मानो अमेय कृतम् । सुविता मो दधिष्णत उसुरान्मा श्चीपतिः ॥ १ ॥
दिवो मोदित्या रेष्मनु भृम्या रथन्त्वप्रयैः ।

इन्द्रापी रेष्मा मा पुरस्तादुविष्णायुमितुः शमं यच्छताम् ।
तिरषीनृप्या रेष्मतु ज्ञातर्थेदा भूतुकुर्वो म सुर्वतः सन्तु यमे
॥ २ ॥ (१५)

मथ — (इन्द्रः वाता) इष्ट रथम् दे (उत्त वृत्रहा) भीर वृह गुमान्मह दे । वा (परस्पानः यद्यप्य)
यद्यानाथ भार वृह भेष्य दे । (सः) वा (घरमतः स मध्यतः) अस्तु मध्यम (स पश्यात स पुरस्तात्)
मित्रेष भार भोष्ये (मः रात्रिता अस्तु) इमारा रथम् दे ॥ १ ॥

तु विद्वाहा इविष्मेत् ग (इये लाक न भनु नये) इवे विश्वत व्येष्मे लता । (यन् स्युत्यानिः) वा (गुमान्मय
पश्यनि इव भर (अमेय म्यात्ता) इमार विष्मेत विमला भार वृह दे । इव इदं । (त स्यविस्म्य याहु इपा) ते तु रुद्ये
निर इवेकन्तश्च रेणो मुवारे वा वृह भेष्य (पृष्ठमा यात्ता उपै क्षेम) इम ते वृह आध्यात्मयमेव इप्य व ॥ २ ॥

(प्रस्तरिष्म त अमेये करति अस्तु त इवे निमिष वर । (उम इम यावौपृथिया अमेय) व नो व ए भार
इविष्मो इवे निमिष वरे । (यात्ता अमेये पुरस्तात् अमेय) वात्तेष भीर वात्तव अमेय दा (उत्तात् अधरात् त अमेये अस्तु) ऊरच भीर विष्मे इवे अमेय हा ॥ ३ ॥

(विद्वात् अमेय यामतात् अमेय) मध्यम भीर यन् इवे अमेय दा (यात्ता अमेय या युह अमेय)
यान तुरेष अमेय हा । वा भाग द उक्तं अमेय हा । (वा अमेय नन्ते मध्यम दिष्मा) यात्तव भर विष्मे इव निष्म
अमेय हा । (सर्वो यात्ता मम मित्रं परात्तु) वृह विद्वार्द इमारा वृह वृह ॥ ३ ॥

(१६) अमयम् ।

(पुरस्तात् अमेयत) भागम वृह वृह । न यात्तात् अमेय हन् । (अविष्मा मा
इविष्मातः) विष्मा युहे वात्त न भाग (यात्तीयतः मा उत्तात्) विष्मा मन्त्या इव वृह ॥ ३ ॥

(अविष्मा इद्या मा रक्षात्) भागत्व युह इवे रेषा वृहे भृत्याय रक्षात् नृप्य अम इपा
दे । (इद्यापां पुरस्तात् मा रक्षात्) इष्ट भार भोष्ये वात्तव रथम् वृहे (अविष्मा अविष्मा यात्ता यात्तव)
अमेय भागरत्व मुक्त दे । (अमेय विरात्तीद रक्षात्) वी विद्वात् ता वृहे । (भृत्यात् ज्ञातवदा) भृत्यात् वृह
दे वात्तवे वृह (मध्यम यम संगतु) वृह एव भाग वृह वृह ॥ ३ ॥

(१७) सुरभा ।

(वाचिः — अथर्वा । देवता — सम्बोधका ।)

अथिमी पातु इसुमिः पुरस्त्राचस्मिन्कमे तस्मिन्द्वये तां पुरं प्रैमि ।

स मा रथतु स मा गोपायतु रस्मा आस्मान् परि ददु स्वाहा ॥ १ ॥

आपुर्मन्तरिष्ठेष्टेतस्या दिशः पातु तस्मिन्कमे तस्मिन्द्वये तां पुरं प्रैमि ।

स मा रथतु स मा गोपायतु रस्मा आस्मान् परि ददु स्वाहा ॥ २ ॥

सोमो मा लूर्देष्ठिवाया दिशः पातु तस्मिन्कमे तस्मिन्द्वये तां पुरं प्रैमि ।

स मा रथतु स मा गोपायतु रस्मा आस्मान् परि ददु स्वाहा ॥ ३ ॥

षर्णो मादित्येरेतस्या दिशः पातु तस्मिन्कमे तस्मिन्द्वये तां पुरं प्रैमि ।

स मा रथतु स मा गोपायतु रस्मा आस्मान् परि ददु स्वाहा ॥ ४ ॥

धूर्णो मा धावोपूषित्वीम्यां प्रतीच्या दिशः पातु तस्मिन्कमे तस्मिन्द्वये तां पुरं प्रैमि ।

स मा रथतु स मा गोपायतु रस्मा आस्मान् परि ददु स्वाहा ॥ ५ ॥

जापो मौर्पौषीमतीरेतस्का दिशः पातु वासु क्रमे वासु भ्रये तां पुरं प्रैमि ।

ता मा रथन्तु ता मा गोपायन्तु वास्ये आस्मान् परि ददु स्वाहा ॥ ६ ॥

विश्वकर्मा मा सप्तशुषिष्ठदीन्या दिशः पातु तस्मिन्कमे तस्मिन्द्वये तां पुरं प्रैमि ।

स मा रथतु स मा गोपायतु रस्मा आस्मान् परि ददु स्वाहा ॥ ७ ॥

(१८) सुरसा ।

अर्थ— (वाचिः पुरस्त्रात्) वसुओंके साथ जामेषे (असिः मा पातु) असि मेरी रक्षा दरे । (तस्मिन् वर्णे) वर्णमें वस्त्रा है । (तस्मिन् अर्थ) उसमें जाप्त भेषा है । (तां पुरं प्रैमि) वह वर्णमें है जात है । (स मा रथतु) वह मेरी रक्षा दरे । (स मा गोपायतु) वह सुषे वास्त्रे । (तस्म आस्मान् परि ददे) वहके दिवे में जाते जास्त्रो देव है । (साहा) मैं जम्पन बरता हूँ ॥ १ ॥

(वाचुः मा अस्तरिष्ठेण) वातु सुषे अस्तरिष्ठे (पतस्या दिशः पातु) वह रिक्षावे मुराहित रखे । (वाचे पूर्वकर्म) ॥ २ ॥

(सोमः मा रद्वे तस्मिन्नाया दिशः पातु) जाव सुते घटिं जाव एक्षिन रिक्षावे मुराहित रखे ॥ ३ ॥

(वद्व भा वादित्यै । पतस्या दिशः पातु) वद्व सुते भादित्यैकं जाव एक्षिन रिक्षावे मुराहित रखे ॥ ४ ॥

(धूर्णो मा धावोपूषित्वीम्यां प्रतीच्या दिशः पातु) धूर्ण सुते तुलेक भैर त्रिक्षी लोक्य विवेद रिक्षावे मुराहित रखे ॥ ५ ॥

(वापा भावपिमर्मा । पतस्या दिशः मा पातु) वह भेषवि मुख मुह एक्षिन रिक्षावे मुराहित रखे ॥ ६ ॥

(पिभवकर्मा सप्तशुषिष्ठदीन्या दिशः पातु) पिभवकर्मा भावपिमर्माके जाव मह वात रिक्षावे मुराहित (५ ॥ ६ ॥)

इन्द्रो मा मुख्योनेत्रसा दिशः पातु रस्मि-क्रमे तस्मिन्द्युये ता पुर व्रैमि ।

स मा रथतु स मा गोपायतु तस्मा आस्मान् परि ददे स्वाहा ॥ ८ ॥

प्रब्राह्मिर्मा प्रब्रह्मनवान्तसु प्रविष्टाया ध्रुवाया दिशः पातु रस्मि-क्रमे तस्मिन्द्युये ता पुर व्रैमि ।

स मा रथतु स मा गोपायतु तस्मा आस्मान् परि ददे स्वाहा ॥ ९ ॥

पृहस्तरिंश्च विशेषंस्तुच्चाया दिशः पातु रस्मि-क्रमे तस्मिन्द्युये ता पुर व्रैमि ।

स मा रथतु स मा गोपायतु तस्मा आस्मान् परि ददे स्वाहा ॥ १० ॥ (१०)

(१८) सुरक्षा ।

(क्रिया — भयाण । देवता — मन्त्राक्षा ।)

अग्नि ते वसुवन्तमृष्टन्तु । ये माध्यायवः प्राच्यो दिशोऽभिदासीत् ॥ १ ॥

धायु ते वैनारिथवन्तमृष्टन्तु । ये माध्यायव एतस्या दिशोऽभिदासीत् ॥ २ ॥

सोम् ते सुद्धवन्तमृष्टन्तु । य माध्यायवो दधिणाया दिशोऽभिदासीत् ॥ ३ ॥

वरुण ते अदित्यवन्तमृष्टन्तु । य माध्यायव एतस्या दिशोऽभिदासीत् ॥ ४ ॥

सूर्य ते धायापृथिवीवन्तमृष्टन्तु । ये माध्यायवे प्रवीच्या दिशोऽभिदासीत् ॥ ५ ॥

अपस्त्र ओर्पीमर्तीक्रष्टन्तु । य माध्यायवे एतस्या दिशोऽभिदासीत् ॥ ६ ॥

पिशकर्मण ते संसम्प्रिवन्तमृष्टन्तु । य माध्यायव उदीच्या दिशोऽभिदासीत् ॥ ७ ॥

भय — (इदः भयायाम् मा एतस्या दिशः पातु) एव यदोहे वाव मुम इय दिशामे मुरुहिन रथे ॥ १ ॥

(प्रजापति: प्रजननयान् प्रतिष्ठाया सद भुवाया: दिशः मा पातु) एवत्तते वस्त्रवदाच्च और अनिकाम तु एव रितावे सुमे नुहेत्त रथे ॥ २ ॥

(पृहस्तरि विभः देवः मा कर्त्तव्या दिशः पातु) एवत्तते वाव मुमे कर्त्त दिशावे मुरुहिन रथे ॥ ३ ॥

(१९) सुरक्षा ।

(य भयायव) या पती (मा) मुते (माच्या दिशः मविदासात्) एव रितावे भाव वाय ववावा वाहते हैं (त यत्पृथिवी भवित्वात्) वे यत्तम वे वाव भवित्वा वाय ही ॥ १ ॥

या पती (एतस्या दिशः) एव रितावे भाव वाय वाहता वाहते हैं वे (मन्त्रतिस्पत्नं वाय) भवित्वाये एवे वने एवते (प्रस्तुतात्) भावी हो ॥ २ ॥

या पती एवत्त रितावे भाव मुम वाव ववावा वाहते हैं व (द्वादशम सोम्य प्रस्तुतात्) यत्तमुष वावे भावी हो ॥ ३ ॥

या पती एव रितावे भाव मुम वाव ववावा वाहते हैं वे (मादित्यवस्तं यदर्थं क्रष्टन्तु) भावेव तु एव ववावे ही ॥ ४ ॥

या पती एवत्त रितावे भाव वसे एव ववावा वाहते हैं वे (चालापृथिवीवस्तं वृत्तं) एवत्तते तु एव एवे होत रहे ॥ ५ ॥

या पती एव रितावे भाव ववाव ववावा वाहते हैं वे (क्षेत्रीयावा वावः) भावाय तु एव वव वे एवते ही ॥ ६ ॥

या पती वाव रितावे भाव वव वव ववा । वाहते हैं वे (संसक्रिवन्तं विभवामीत्वं) या एव तु एव ववते ववते ही ॥ ७ ॥

इन्द्र ते मुक्तवन्तमृच्छन्तु	। ये माध्यपद्म एतस्या दिशोऽभिदासांत्	॥ ८ ॥
प्रशापति ते प्रबन्ननम् वपुच्छन्तु	। य माध्यपद्म ध्रुवाया दिशोऽभिदासांत्	॥ ९ ॥
मृहस्तांति ते विश्वदेववन्तमृच्छन्तु	। ये माध्यपद्म कुर्वाया दिशोऽभिदासांत्	॥ १०॥ (११)

(पृष्ठि — अपर्वा ! देवता — अनुमा मन्त्रोक्ताम् ।)

पित्रः पूर्णिष्ठो दृक्कामचारौ पुरे प्र पूर्णामि चः ।

सामा धिन्द्रव वां म धिन्द्रव वा यः अर्मै च अर्मै च यज्ञत

धारा विधि से देखा जाए। पर मैं आपसि

ਗਾਮੀ ਵਿਦਤ ਦਾ ਪ੍ਰ ਵਿਸ਼ਵੁ ਸਾ ਪ੍ਰਾ ਬਨ
ਹੋਏ ਵਿਦਤ ਵਾਲੇ ਪਾ ਕ ਪੈਂਧਾਂਹਿ ॥

सुन् हृषीकेश तु प्रज्याम वा ।

तर्मा विद्युत् सा त्र विद्युत् मा षुः रमा ॥

च द्रमा नष्टव्रुद्धकामता पूर प्र अयाम षः ।

तामा विश्वत् ता प्रविश्वत् सा वृः श्रमं च यम्

सोम ओपशीभुद्दकामुर्चा पुरं प्र प्यामि षः ।

रामा विश्वत् रां प्र विश्वत् सा घः घर्मे च घर्मे

युधा दधिणाभिरुदकापुर्वो पुर ग्र व्यामि षः ।

तामा विश्वतु तां प्र विश्वत सा वः शर्मे च शर्मे

सुपर्णा नदीमिरुद्धकामृता पुर प्र षंयामि वः ।

तामा विश्वरु ती प्र विश्वरु सा वः पर्मे च वर्म च यच्छ्रु

अथ या गारी इन दिनाम बाहर दूसरा दाम वर्षामा आतेहै ते (प्रदूषकार्य दृष्टि) मध्यम दृष्टि के वर्षाम दाकर होते

अथ आपारी इन्हिं समाजावर मुसलमानों का होते हैं तो (मस्लिम इम्रू) मस्लिम इम्रू के बड़े हाथर होते हैं। १४
आपारी भ्रष्ट दिया से बाकि मझे दाढ़ बनाना काहते हैं तो (प्रबलनयम् प्रज्ञापति) प्रबलन तापर्यसे तुक्त व्रात-
वसने हैं रुठ होते हैं ॥ १५ ॥

(१९) शाम ।

(पिपा परिषद्या उद्देश्यम्) पिपा दूषित रूप वहा । (यः ती पुरं प्र प्रयामि) आत्मे वह किमेये हैं वहां है । (ती वा विद्वान्) तवमेवामे (ती प्र विद्वात्) तदम विविष्ट होओ (सा वा शम पर वर्णं प्र पश्चात्) एव दुष्टे सूक्ष्म भृत्यां वाचेऽपि ॥ १ ॥

(पातुः अतिरिक्तम् इदम् प्राप्तं) पातु भासाध्यम् अर वहा ॥ १३ ॥

(मय दिवा उद्धामस्) मय यत्त्वय आर चक्रा ॥ ५३ ॥

(यमुना मध्य पूर्व काशीमण्ड) वा पालघर इस देश काशी थाः ॥ ४ ॥

(साम यारयामः उक्तमत्) सम भावापयोऽसाम द्वार चक्र ॥ ४५ ॥

(एवं वास्तविकता) यह दोषप्राप्ति का एक वर्णन है ॥ १५ ॥

(समुद्रा नदीाधारा द्वैराम्बन्) बहुर वात्यानं वात्यर वाता ॥ ४५८ ॥

प्राह ग्रद्यत्वारिमिल्दकामुच्चां पुर प्र गंयामि वः ।

तामा विश्वतु तां प्र विश्वतु सा वः शर्मे च वर्मे च यस्तु
इद्वा वीर्येऽगोदकामुच्चां पुरं प्र गंयामि वः ।

तामा विश्वतु तां प्र विश्वतु सा वः शर्मे च वर्मे च यस्तु
वेचा अमृतनोदकामुच्चां पुरं प्र गंयामि वः ।

तामा विश्वतु तां प्र विश्वतु सा वः शर्मे च वर्मे च यस्तु
प्रजापतिः प्रजामिल्दकामुच्चां पुरं प्र गंयामि वः ।

तामा विश्वतु तां प्र विश्वतु सा वः शर्मे च वर्मे च यस्तु

(२०) सुरक्षा ।

(ऋषि — अथवा । देवता — नामा देवताः ।)

अप् न्यधुः वीर्येष्व वर्षं पर्मिन्नाधी धाता सविता पृहस्यतिः ।
सोमो राजा वर्णो अधिनो यमः पूपास्मापरि पातु मृत्योः ॥ १ ॥

यानि चक्षार भूवनस्य पस्तिः प्रजापतिर्मुत्रिशा प्रजाप्यः ।
प्रदिष्ठो यानि वसुरे दिष्ट्य यानि मे वर्माणि वदुलानि सन्तु ॥ २ ॥

यत् तृन्त्वन्तसन्त दुषा दुरुबयो देहिनः । इद्वा पश्चक वर्षं तदुस्मान्पत्तु विश्वर्तः ॥ ३ ॥
वर्षे मे यावाश्चिद्वा वर्माद्वर्वम् वर्षम् । वर्षे मे विश्वे दुषा कुल्मा मा प्राप्तप्रणीतिका ॥ ४ ॥ (१३)

॥ इति छित्रोपोडन्नवाचः ॥ ५ ॥

अथ— (प्राह ग्रद्यत्वारिमिल्दकामत्) इति विद्याविमाके साप उत्तरात् हुआ ॥ ५ ६ ॥

(इत्थः वीर्येष्व उदकामत्) इति वीर्येष्व उत्तर चक्ष ॥ ५ ७ ॥

(देवा अमृतेष्व उदकामत्) इति अमृतात् दाव उत्तर चक्ष ॥ ५ ८ ॥

(प्रजापतिः प्रजामिः उदकामत्) प्रजापतिः प्रजामोऽदाव उत्तर चक्ष ॥ ५ ९ ॥

(२०) सुरक्षा ।

(य वौरयेष्व वर्षे अप नि व्युतुः) विश्व उत्तरे चेष्टे घट्य दूर रक्ष है । इति अमि याता सविता पृहस्यति
सोम एवा वर्ष अदिनी वर्ष दूषा व वर्ष (अस्माप् मृत्योः परि पातु) इति यातुरे पूर्विं दूर रक्ष है ॥ १ ॥

(मुवनस्याः यः पतिः) मुवनस्यै पति वर्मानि वातुने (प्रजापत्य यान अकार) प्रवार्षोऽनिवार्यं वर्ष चित्य
(प्रदिष्ठः विद्याः वा यानि वसुरे) विद्या उत्तरिण्यादेव वा वर्ष वर्षते हैं (यानि वर्माणि म वदुमानि सन्तु) वे
वर्ष ये देखे पृहुत हो ॥ २ ॥

(से तन्त्रु) हे शरीरीमें (वाटिमा याराङ्ग्रयः देवता) देहपती तद्वनी वर्ष (यत् ग्रन्थामन्) वो याक यारण
वर्ष है, (इत्थः यत् वर्ष वर्षम्) इत्तरे वा वर्ष वर्षा (तत् विष्वतः ग्रन्थामन् पातु) वर्ष वर्ष आप्त दावारी दावा
है ॥ ३ ॥

(यावा वृथिकी म वर्षम्) दुषाह भर पृहुती मरा वर्ष है, (मदः यम) हित मरा वर्ष हा (मूर्यः यम)
मूर्य देवा वर्ष है, (विभव देवा) म वर्षे वर्षन् देखे वर्ष वर्ष है (प्रगीयका मा मा प्राप्तन्) विरोधी
मूर्य वर्ष म है ॥ ४ ॥

० यहाँ छित्रीय अनुवाद समाप्त ॥

(२६) अथर्वाणः ।

(ज्ञापि — अथर्वा । देवता — मन्त्रोक्ता । वस्त्रमाला ।)

अथर्वणानीं परुष्येभ्यः स्वाहा ॥१॥	पञ्चर्थेभ्यः स्वाहा	॥ २ ॥
पञ्चर्थेभ्यः स्वाहा ॥ ३ ॥	सप्तर्थेभ्यः स्वाहा	॥ ४ ॥
अष्टर्थेभ्यः स्वाहा ॥ ५ ॥	नवर्थेभ्यः स्वाहा	॥ ६ ॥
दशर्थेभ्यः स्वाहा ॥ ७ ॥	एकादशर्थेभ्यः स्वाहा	॥ ८ ॥
द्वादशर्थेभ्यः स्वाहा ॥ ९ ॥	त्रयोदशर्थेभ्यः स्वाहा	॥ १० ॥
चतुर्दशर्थेभ्यः स्वाहा ॥ ११ ॥	पञ्चदशर्थेभ्यः स्वाहा	॥ १२ ॥
पोदशर्थेभ्यः स्वाहा ॥ १३ ॥	सप्तदशर्थेभ्यः स्वाहा	॥ १४ ॥
बहुदशर्थेभ्यः स्वाहा ॥ १५ ॥	एकोनविंशतिः स्वाहा	॥ १६ ॥
विष्वितिः स्वाहा ॥ १७ ॥	महस्काप्त्याय स्वाहा	॥ १८ ॥
त्रृष्णर्थेभ्यः स्वाहा ॥ १९ ॥	एकर्थेभ्यः स्वाहा	॥ २० ॥
चूष्णर्थेभ्यः स्वाहा ॥ २१ ॥	एकानुर्थेभ्यः स्वाहा	॥ २२ ॥
रोहितर्थेभ्यः स्वाहा ॥ २३ ॥	सूर्याम्या स्वाहा	॥ २४ ॥
ग्रास्याम्या स्वाहा ॥ २५ ॥	ग्रास्याप्रस्याम्या स्वाहा	॥ २६ ॥
विष्वासुर्ये स्वाहा ॥ २७ ॥	मुख्याखिकर्थेभ्यः स्वाहा	॥ २८ ॥
ब्रह्मण्येष्टु संसुर्ता शीर्युषिः प्रसादे न्येष्टु दिव्यमा तंत्रान् ।		
मूरानीं प्रुषा प्रत्यपोते षष्ठे तेनार्दिति ब्रह्मां प्रथमितु कः		॥ ३० ॥ (१८)

(१५) अथर्वाणः ।

अर्थ— १ वस्त्रलेने वार लक्ष्यावाङ्कि दिवे २ पाच लक्ष्यावाङ्कि दिवे ३ छः लक्ष्यावाङ्कि दिवे ४ सात लक्ष्यावाङ्कि दिवे ५ चाष लक्ष्यावाङ्कि दिवे ६ षो लक्ष्यावाङ्कि दिवे ७ एट लक्ष्यावाङ्कि दिवे ८ यात्राह लक्ष्यावाङ्कि दिवे ९ यात्र लक्ष्यावाङ्कि दिवे १ तेरह लक्ष्यावाङ्कि दिवे ११ चौदह लक्ष्यावाङ्कि दिवे १२ चैदह लक्ष्यावाङ्कि दिवे १३ ओम्प्र लक्ष्यावाङ्कि दिवे १४ चतुर्दह लक्ष्यावाङ्कि दिवे १५ पञ्चादह लक्ष्यावाङ्कि दिवे १६ षष्ठीय लक्ष्यावाङ्कि दिवे १७ वीर्य लक्ष्यावाङ्कि दिवे १८ चाष्टीय लक्ष्यावाङ्कि दिवे १९ लौन लक्ष्यावाङ्कि दिवे २ एक लक्ष्यावाङ्कि दिवे २१ चूष्णिः दिवे २२ एक चाष्टीय विष्वित लक्ष्या वर्णी लक्ष्या वाता वस्त्रे दिवे २३ होहिः दिवे २४ षो दूषिः दिवे २५ लालिः दिवे २६ वात वस्त्रोऽहे दिवे २७ विष्वासुर्यः दिवे २८ मैखिकर्थः दिवे २९ वस्त्रः दिवे इम अर्थानि कहते हैं ।

१ वै वंशव्य वर्षं पूर्वं स्वात्मे ३१३१ में दिया है ।

महावर्ष वा संषेत्र १ वै वंशव्य है वार पाच लक्ष्यावाये इन अर्थोंमें वर्णित है कि विष्वेष्टु एक इष्टा वंशव्य के दर्शने हैं । योग्य वा १११५ में इस विष्वेष्टु दैवते वोग्य है । चूष्णिः वहुवेद वर्षविष्वेष्टु वा व्याय है एकनुष्वध वर्ण लक्ष्या मंत्र रोहित लक्ष्यावाक्य वास्त्र रोहित वर्ण विष्वासुर्यः १७ वा वात इस तरह वोग्य हाता है ।

४ (अर्थ वाच्य वस्त्र १५)

(२४) राष्ट्रम् ।

(व्युतिः — मध्यवा॑ । देवता — ब्रह्मपस्पतिः मासा देवता ।)

येन द्वेरं संवितारं परि दुवा अधारयन् । तेनेम ब्रह्मपस्पते परि ग्राह्यार्थं घचन ॥ १ ॥
परीमभिन्नमायुषे मुहे खप्रार्थं घचन । यथैन ऊरसे नर्या व्योक्तुप्रेऽर्थिं जागरत् ॥ २ ॥
परीम सामुमायुषे मुहे भोग्रार्थं घचन । यथैन ऊरसे नर्या व्योक्तुप्रेऽर्थिं जागरत् ॥ ३ ॥

परि घच घुच नो वर्चेरोम ज्ञारामृत्यु रुचुर द्वीपमायुः ।

मृद्दस्पतिः प्राप्तच्छृङ्खारं पुरस्तोमार्यं राष्ट्रे परिवातुमा ठ ॥ ४ ॥

मूरा सु गृष्णु परि घस्त्व वासो मवा गद्यनामैभिन्नस्तिपा ठ ।

घुच च भीवं श्ररदः पुरुषी राष्ट्रम् पोष्मुपुस्त्वप्यमल ॥ ५ ॥

परीदं वासो अभिधा । स्वस्त्रेऽभूर्वीनामभिन्नस्तिपा ठ ।

घुतं च भीवं श्ररदः पुरुषीर्विष्णुनि चासुर्वि भैश्वासि भीवं ॥ ६ ॥

यामेयोगे तुष्टस्तर्तं वामेवामे इवामहे । सखायै इन्द्रमूरुमे ॥ ७ ॥

हिरण्यवर्णो अजरः सुवीरो ज्ञारामृत्यु प्रुव्रया सं विश्वस ।

तदुपिराहु वहु सोमे भादु वृद्दस्पतिः सविता वदिन्द्रः ॥ ८ ॥ (११)

(१५) राष्ट्रम् ।

अर्थ— (येन) वो देवता (सवितारं देव) विता देवधे (देवः परि अधारयन्) देवते पहला वा है ब्रह्मपस्पति । (तस्म इर्षं) उस्य इषु पुष्पमो (राष्ट्राय परि घचन) राष्ट्रे किंचे परिवात ज्ञाते ॥ १ ॥

(इर्षं इर्षं) इषु इर्षो (भायुषे) रीढ़मुके किंचे और (महे ज्ञाताय) वहे शास्त्रतेके किंच (परि अधारयन्) यह वह पहला वा । (यथा एत ज्ञातसे नर्या) किंचे यह वह इषुमे तुष्टापद किंच से जाव (ज्ञाते व्योक्तुप्रेऽर्थिभिन्नस्तिपा ठ ।) और वह कात्रकर्ममे देवतक जागत ॥ २ ॥

(इर्षं सातम) इषु वैमधे (भायुषे महे भोग्रार्थं) लीर्यापु भीर माहन् ज्ञातापदके किंच वह वह (परि अधारयन्) पहला वा (यथा एवं ज्ञातसे नर्या) ज्ञातसे इषुमे तुष्टापद किंच से जाव और (ज्ञाते व्योक्तुप्रेऽर्थिभिन्नस्तिपा ठ ।) जान ज्ञातिक किंच वह सत्त्व जावता रहे ॥ ३ ॥

(परि घच) वह पहला वो (मः इर्षं पर्वत्वा घच) इर्षो इषुमे तेवक याव रका (ज्ञाता सुत्यु लीर्यापु भायुषे रुचुर) इषु वर्षताके पवत इषुमे मृतु भाव और लीर्यापु प्राप्त हो । (वृद्दस्पतिः इर्षं सातमाय परिव्याप्तिः ठ) रात्रा यामध वरिधार्य कर्त्रिके किंचे (परिवत् यासः प्राप्तच्छत्) यह वह रिया है ॥ ४ ॥

(चारी चु गच्छ) तुष्टापेका ज्ञाते रक्षार प्राप्त हो । (यासः परि घचस्य) वह पहलो । (शूर्यीता भमिरालिपि-या व मत्व) ज्ञाताका ज्ञाताके वचनेवास्त हो । (ज्ञात च ज्ञात यारदः पुरुषीर्वि) रीढ़ ही वह भीवित वह (भायुषे व पात्र उपस्त्वयद्यत्व) यह और तुष्टापु याव हो ॥ ५ ॥

(स्वलये इषु वासः परि अभिधा) ज्ञाते वस्त्रतदे किंचे वह वह तृषु पहला है । (ज्ञायीता भमिरालिपि-या व मत्व) ज्ञायीमा वा ज्ञायोदा ज्ञानाकृष्ट ववात् ज्ञानेवामा तृषु याव हो । (तुष्टस्तीर्वि यारदः यात च भीवि) लीर्यापु वैमधे इर्षं ज्ञाते ॥ ६ ॥

(यातायोगे) लीर्यापु तापायमे (वायवामे) वह लीर्यापु युद्योमे (सक्षायाम) इषु घच किंच इर्षं देवत (तस्म लातं इर्षं ज्ञाते वायामहे) देवतान् इर्षो भायी तुष्टापु किंचे तुकाते हैं ॥ ७ ॥

(द्वितीयवर्षं) उपर्यं वये रैमसा (च ज्ञातः पुष्टापेक रातिः पुष्टीर्वा॒) वहम वीर्योपे तुष्ट (ज्ञात-भायुषे) वरावरताके पवत् मृतु याव वर्तनामा । (प्रज्ञया सं विश्वास्त) ज्ञाती प्रज्ञार्थे जाव इषुर ज्ञाताम वर । (तत् भायी-याहु॑) वह ज्ञाते याव । (तत् च सोम भादु॑) वह ज्ञाते याव । (तत् तुष्टस्पतिः सविता इर्षा॑) वह वहस्तीर्वि ज्ञाते और इर्षते वहा है ॥ ८ ॥

(२५) अस्त्र ।

(क्षयिः — पोपया । वेयता — पार्वी ।)

अभीन्तस्म त्वा मनसा युनजिम प्रथमस्य च । उत्कूलमृष्टो भंगेदृष्टु प्रति घाषतात् ॥१॥ (१५)

(२६) हिरण्यघारणम् ।

(क्षयिः — अथर्वा । वेयता — भस्त्रि । हिरण्य च)

अस्त्रः प्रबातु परि यदिरेष्यमुमूर्ते दुधे अष्टि मर्त्येषु ।

य एनदेहु स इदेनमर्हति चुरामृत्युर्मर्त्यिः यो चिमर्ति ॥ १ ॥

यदिरूप्य धर्मेण सुवर्णी प्रजावन्तो मनवः पूर्वे ईषिरे ।

तथा चुन्द्र वर्चेसा स सूचुत्यायुष्मा मर्ति या चिमर्ति ॥ २ ॥

मायुषे त्वा वर्चेसे स्वैर्ज्ञे च घलाय च ।

यथा हिरण्यवेदसा विमासांसि जन्मो अनु ॥ ३ ॥

यद्गुरु रात्रा पर्णो वेदे देवो भृत्यस्पतिः ।

इन्द्रो यद्गृह्रदा वेदु तत्त्वे आयुष्यर्थं भृत्यस्पते वर्षस्य भृत्य ॥ ४ ॥ (१६)

॥ इति दक्षियोऽनुपातः ॥ ५ ॥

(१५) अस्त्र ।

अर्थ— (अभास्तस्य प्रथमस्य च) न पर्वेशस और प्रब्रह्म आनेशालीके (यत्तसा रथा युत्तरिम) प्रवक्ते सात्र दुष्टे दुष्ट रहता है । (वर्त्तक्त्वं उद्गतो भव) जिनरेपरस वर्त्ती के कोनेशस हो (युत्तर) ऊरे आवर (प्रति प्रावतात्) किं वाक्यस दीह वा ॥ १ ॥

(१६) हिरण्यघारणम् ।

(यथा प्रजाते) अनिष्टे वर्त्तम दुधा (यत् हिरण्यर्थ) वो लोका द वृ (मर्त्येषु अमूर्ते परि दुधे) मानवोंर अपूर्व रहता है । (प एनत् खेद) मौ यह अनता है (न इत् एवं मर्हति) वही निष्पर्णे इम मुवर्ण वारक्ष निषे भाव देत्त है ॥ १ ॥ य चिमर्ति भरामायु भयति) वो इवाच वारक रहता है उत्तरो वृद्धवस्त्राके वर्ष द दुष्ट देत्त है ॥ २ ॥

(यत् हिरण्य सुदृढे) जिम वर्त्तम रवाच लोभेण (प्रजायामत् पूर्वे मनवा सूर्योऽप्य हरिते) प्रवानोंके लम्हा देत्ते पशुओं सूर्यके लाका (तत् त्या) वा दुम (वर्त्त यवसा ल युक्तति) वर्त्तमा दुधा तत्त्व दुष्ट रहता है (या पिमर्ति) वा इत्ये वारक रहता ह वृ (मायुष्मान् भयति) आयुष्मान् दाशा है ॥ ३ ॥

(मायुषे त्या) भ दुष्टके सिदे दुम (वर्षस रथा) तत्त्व जिम दुमे, (मोक्षसे च प्रलय च) सर्वि भृत्य दुष्टके लिये दुमे वै दुमता है (यथा) इमही वारक वृक्षे (जन्मो भनु) मानोमे (हिरण्यतङ्गसा विमासांसे) वानद तेवर त वर्षदाता ॥ ४ ॥ ५ ॥

(यथा वर्त्तम यत् खेद) वाचा वर्त्तम जिनक वर्त्तमात् (दवा युद्धस्यानेः खेद) द वर्त्तति न वही जात्या है (युपदाः इम्दाः पन् पद) दुष्टम द वर्त्तमाता दव आ वर्त्तमात् (तत् त मायुषे सुष्टव) वृ दुम तीर्था आयुषो दुष्टि वर्त्तमाता द वृ (तत् ते वर्षस युपत्) वृ तरा तव वर्त्तमाता द वृ ॥ ६ ॥

॥ यद्गौ दक्षिय अनुपात वसान ॥

(२७) सुरक्षा ।

(लक्षणः — सुखद्विरा । देवता — अहूर् बन्धमात्र ।

गामिङ्गा पात्पुपमो वृत्ति त्वा पातु वाचिभिः । वायुहा ग्रहणा प्रतिनिस्त्वा प्रतिनिधिये ॥ १ ॥
घार्मस्त्वा प्रस्त्रीभीमिनस्त्रीः पातु धर्ये । मात्रामस्त्वा चुन्द्रा वृत्रहा वार्ता प्राप्तेन रथतु ॥ २ ॥

तिसो दिवात्सिद्धः पृष्ठिकीच्छिपुन्तरिशाखि चुरुः सपुद्रात् ।

त्रिवृत् स्वामि त्रिवृत् आप्त आदुस्तास्त्वा रथन्तु त्रिवृता त्रिवृद्धिः ॥ ३ ॥

श्रीमात्रारुद्रीन्स्त्रमुद्रास्त्रीन्द्रियोन्मूलक्षयामि ते ॥ ४ ॥

सूर्येन त्वा सप्तस्त्रम्भन् आज्येन वृष्टेन । अप्रश्नन्द्रस्त्र सूर्येन्स्य मा प्राणं मामिनो दमन् ॥ ५ ॥

मा वैः प्राणं मा दोऽपान मा हरीं मायिनो इमन् । आवन्ता विश्वेद्यो देवा देव्यैन घाषत ॥ ६ ॥

प्राणनाथि स सृजति वार्ता; प्राप्तेन सर्विः । प्राप्तेन विश्वेद्यो देवा वैज्ञनयन् ॥ ७ ॥

आपुषापुः इति वीषायुध्मान्तरी भीव मा मृषाः । प्राप्तेनात्यन्वतां भीव मा मृष्योऽहर्गा वर्षम् ॥ ८ ॥

(१७) सुरक्षा ।

अर्थ— (वृत्तम् त्वा गामिः पातु) ते एव रथ गतोऽस तद्दे । (वृषा वाचिभिः त्वा पातु) ते य
गतोऽस तद्दे तद्दे रथ रथ चर । (वायुः ग्रहणा त्वा पातु) वातु वातोऽस तद्दे ते रथ चर । (इहा इंद्रियैः त्वा पातु)
तद्दे इतियोऽस तद्दे रथ चर चर ॥ १ ॥

(सोमः वोक्तीभिः त्वा पातु) सोम सोमोऽस तद्दे रथ चर । (तूर्णः मसुदैः पातु) सूर्यं मसुदैः
साव इहर तद्दे रथ चर । (अस्त्रः चुन्द्रास मात्राम् त्वा) चुन्द्रो मात्रेन्ता चुन्द्र महिनोऽस तद्दे रथ चर । (वाता
प्राप्तेन चुन्द्रु) चुन्द्र प्राप्तेन चाव तद्दे रथ ॥ २ ॥

(तिथा दिवा) तीन चुपोऽ (तिथा पृष्ठिभिः) तीन भूविशो (भीकि अस्तरिशाखा) तीन इन्द्रियैः
(चुन्द्रुः चुन्द्राम्) चार चुन्द्रु (त्रिवृत् त्वाम्) तीन चुन्द्र चोम (त्रिवृतः आपा वायुः) तीन चुन्द्र चोम है तेजा
चरत ॥ (त्रिवृद्धिः त्रिवृताः ताः त्वा रथन्तु) तीन चुन्द्र तीन चुन्द्र चोम ते लेणी रथा चर ॥ ३ ॥

(वीत नाकाम्) तीन चोमोऽ (वीत चुन्द्राम्) तीन चुन्द्रोऽस (वीत चुन्द्राम्) तीन चोम (वीत
चपराम्) तीन विश्वेद्य लक्ष्मेनाहें चाचोऽस (वीत चुन्द्राम्) तीन चुन्द्रोऽस (वीत सूर्याम्) तीन चुन्द्रोऽस (व
गोप्तम् चपरामि) तीन चुन्द्रा चुपेन्द्रोऽस चाचाता ॥ ४ ॥

(धूतेन त्वा समुद्धामि) तापे धूपे तिथवत्त है ॥ ५ ॥ चरी । (आप्तव चर्येन्द्र) तापे धूपे वहात्य है । (वायो
वंशस्त्र सूर्यस्त्र) भूमिके, चम्भके और दृष्टि (प्राप्तव) आप्तव (मायिनः मा दमद्) भूमी ओप व वार्ता ॥ ५ ॥

(मायिनः) अपी वात (वा प्राप्त मा) तुम्हासे प्राप्तवो (वा प्राप्तव मा) तुम्हासे व्याप्तवर्त वात (वात)
वाता (मा दमद्) न वाता । (विश्वेद्यसः इत्याः) ताप वस्तवाते ते (वीतवत्ता) वस्तवो धूरे (हैत्यत वावत)
वावतो विश्व वावते चाव धूमहरे वहात्यार्ह हैं ॥ ६ ॥

(प्राप्तव भूमि व भवति) भूमिके धूपुल चरता है । (वातः प्राप्तव संसाहतः) वातु वातके चाव चाव
हुए है । (वेयाः) चर रेवने (विश्वेद्योऽस चूर्णे) चाची ओर सुकामके दृष्टो (प्राप्तव भूमिन्द्रवत्) प्राप्तवे चाव
वावत चिका है ॥ ७ ॥

' वायुः चुन्द्र वायुपाता भीव) वायु चन्तिशालोऽस चुन्द्रे त भीकित रह । त (वायुपाता भीव) दीर्घ
दीर्घ भीकित रह (मा सूर्या) मत वर चा । (आवन्ता प्राप्तव भीव) आवन्तालोऽस प्राप्तव भीकित रह । (मूर्त्या
प्राप्तव मा उद्वगा) प्राप्तवे वहात्ये न चा ॥ ८ ॥

दुवाना निहित निर्भिं यमिन्द्रोऽन्वर्विन्दत्पुषिमिर्देव्यानैः ।

आपो हिरण्य शुगुप्तिवृद्धिस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्धि ॥ ९ ॥

प्रवर्णित्वदेवतालीणि च वीर्याणि प्रियायमाणा शुगुप्तप्लुन्तः ।

अस्मिन्द्रे अधि पदिरेण्य रेनाय छणवद्वीर्याणि ॥ १० ॥

ये देवा दिव्येकादश स्य ते देवासो त्रिविरिद ज्ञपञ्चम् ॥ ११ ॥

ये देवा अतिरिक्त एकादश स्य ते देवासो त्रिविरिद ज्ञपञ्चम् ॥ १२ ॥

ये देवा पृथिव्यामेकादश स्य ते देवासो त्रिविरिद ज्ञपञ्चम् ॥ १३ ॥

असप्तम पुरस्तात्पवान्नो अभयं कृतम् । सविता मा दक्षिणात ठसुरान्मा स्वच्छिपतिः ॥ १४ ॥

दिवो मोदित्या रक्षन्तु भूम्पा रक्षन्त्वप्रयैः । इन्द्रामी रक्षता मा पुरस्त्रिविनावृमितुः शर्मे यज्ञताम् ।

तिरमीनाम्या रक्षतु ब्रातवेदा भूतहतो मे सुर्वर्तुः सन्तु वर्ते ॥ १५ ॥ ११)

(२८) दर्ममणिः ।

(व्युतिः — इष्टा (सप्तत्स्थापकाम) , देवता — दर्ममणिः मंत्राकार्य ।)

तुम वेष्माभि से मुर्णि दीर्घायुत्वाय रेवसे । तुर्म संपत्तदम्भन द्विप्रत्वपत्न इदृशः ॥ १ ॥

मर्य— (वेष्मानो निहित निर्भिः) रेवसे पुरुष वाग्मेष्ये (पं इष्टः) विसर्चे इन्द्रने (दवयामैः परियिः) रेवता मानोदि (अन्वर्विन्दत्पुषित्वा) इव विष्मवा वहा (मापः त्रिवृद्धिः हिरण्य शुगुप्तुः) वक्तोन लौल शुक्रोऽशाव मुकुर्मर्य रक्षा की (रक्षा) वे रक्ष (विष्मता विष्मृद्धिः) लील शुक्रा लाल शुक्रोऽशाव (रक्षा रक्षन्तु) हेठी रक्षा करे ॥ १ ॥

(व्युतिः विष्मत् देवता) लौलीव देवतामाने रक्षा (श्रीणे वीर्याणि) लौल लौलाने, अस्तु भूम्पा प्रियायमाणाः) मर्येद अमर्त्य पारस (शुगुप्तुः) इस्ती रक्षा की । (अस्मिन्द्र वर्णद्वे मधिप यत् हिरण्य) इव अमज्जाल मधिपर की सुर्वर्त है, (तुम अर्य वीर्यायि कृष्णवर्त) वर्णेद प्रमारस यह तुरुर लीलके वर्ते वर तु ॥ १ ॥

(विष्मिये एक इष्टा देवा स्य) पुरुषेष्ये या वराद रेव है (भूम्पतिस ये एकादश इष्टा स्य) अन्व-रिक्षमे यो वाराद तर है और (पृथिव्याय एकादश देवा स्य) पुरिवीर वा व्याराद रेव है (ते वेष्मासः) वे इव (इद इष्टिः शुगुप्तं) इव इष्मेष्य माप कर ॥ १ ॥ १ ॥

(पुरस्तात् नः असपत्न) अभेदे इष्मेष्ये लिये ब्रह्मा मय न है (पुरस्तात् वा अमर्य हर्तुः) वाहे इमारे लिये अमर दिला है । (सविता दक्षिणाः मा) वसिता दक्षिण विलाप मेरी रक्षा कर और (दावीपतिः उत्तरात् मा) इव वर्णर रिक्षमे देही रक्षा करे ॥ १ ॥

(आविष्याः मा दिवः रक्षन्तु) आविष्य मेरी तुकादेहे रक्षा करे, (मापयः भूम्पाः रक्षन्तु) वसि मुकुर्मर लौल रक्षा करे । (इम्भामी पुरस्तात् म्य रक्षनां) इव लोर अभि आदहे मेरी रक्षा करे । (प्रियिमी भवितः ताम पच्छनां) अधिरामी भूली वातो भवेद भावन दें । (तिरस्तीन् भूम्पाः रक्षन्तु) पुष्मोभी रक्षा वा करे । (मूलहतः वातवदाः मे सवतः वर्म सक्षन्तु) मूलीवे वसानेवावे लमि वर्म वातव भाव वर्म वर्म ॥ १५ ॥

(२९) दर्ममणिः ।

(वीर्यायुपाय तत्त्वात्) वीर्यायुदी प्राति और लेवलिकारे लिय (इम मर्यित वस्मामिः) इव वातवा वेरे अठिरर वारप्ता हू । (इम सप्तत्स्थापकाम) वह दर्ममणि वातवा वाप वर्ता है भर (द्विपत्नः इदृशः तपर्व) देवसे इव वेष्मत वस्मव वर्तेवाता है ॥ १ ॥ १ ॥

(२७) सुरक्षा ।

(प्रथमः — सूभृतिरात् । देवस्ता — ऋष्टत् अन्त्रमात्र ।

गामिष्ठा पास्युपमो शूचो त्वा पातु शाबिष्ठिः । वायुष्ठा प्रद्वेषा प्रत्यन्द्रेस्त्वा प्रत्यन्द्रियेः ॥ १ ॥
सामस्त्वा प्रत्योर्जीभिनष्टिः पातु शूर्येः । मात्रास्त्वा चुन्द्रा वृश्वा वातेः प्राप्तेन रथतु ॥ २ ॥

त्रिष्ठा दिवस्तिक्षः पृथिवीस्त्रीण्यन्तरिक्षाणि चुतुरः समुद्रात् ।

त्रिवृत् स्वामे त्रिवृत् आपे आहुस्त्वास्त्वा रथन्तु त्रिवृता त्रिवृद्धिः ॥ ३ ॥

श्रीमाकाशोन्तर्सुदार्थी प्रसांख्यत्वेत्पान् । श्रीन्मोत्तरिष्ठन्दीन्द्रव्ययोन्यो मूर्क्षल्पयामि ते ॥ ४ ॥

पृतेन त्वा सम्पूर्णमग्न आप्तेन वृष्टेयन् । अप्यशन्द्रस्य शूर्येन्द्र्य मा प्राण मायिनो दमन् ॥ ५ ॥

मा वैः प्राण मा बोड्पान मा हरी मायिनो दमन् । आवेन्ता त्रिष्ठवेदसो देवा देव्येन भावत ॥ ६ ॥

प्राप्तनायि संसृति वातः प्राप्तेन सहितः । प्राप्तेन त्रिष्ठवेष्टु शूर्यें देवा वृजनयन् ॥ ७ ॥

आयुषापुङ्कुर्वो जीवायुम्भान्तीषु मा मृत्वाः । प्राप्तेनात्मनवौ जीव मा मृत्योरुद्गता वर्धम् ॥ ८ ॥

(२८) सुरक्षा ।

अर्थ— (वृत्तमः त्वा गामिः पातु) देव तेता रथम् चक्रेति ताप करे । (वृष्टा शाबिष्ठिः त्वा पातु) देव
त्रिवृतेके साम तेता रथम् करे । (वायुषा प्रद्वेषा त्वा पातु) वातु वातेतेरा रथम् करे । (इन्द्रः प्रत्यन्द्रियः त्वा पातु)
इव इतिवृतेके साम तता रथम् कर ॥ १ ॥

(वृत्तम् बोधयीभिः त्वा पातु) ताप भे बोधवृत्तेके साम तेती त्वा कर । (शूर्यः लघुवृत्तः पातु) शूर्य लघुवृत्तेके
ताप रथम् तीरा करे । (अस्त्रः वृश्वा मात्रात्पाता त्वा) वृश्वे मात्रेषामा चक्र वृश्ववृत्तेके साम तेता रथम् करे । (वाता
प्राप्तेन रथातु) वातु प्राप्तेके ताप तीरी त्वा करे ॥ २ ॥

(त्रिष्ठा दिवा) तीन वृक्षोऽ (त्रिष्ठा पृथिवीः) तीन सूर्यिका (श्रीष्ठि मन्त्ररिक्षाय) तीव वस्तीर्णक
(अतुर्पत्ति समुद्रात्) चार उम्रु (त्रिवृत् लाम) तीन गुण लीम (त्रिष्ठुष्टु वाया आहु) तीन गुण चक्र हेता
पद्धते ॥ (त्रिवृद्धिः त्रिवृतात्पाता त्वा रथमन्) तीन गुण तीव प्रश्वत होतर भेती त्वा करे ॥ ३ ॥

(जीनू माकाश्) तीन जौते (जीनू समुद्रान्) तीव सुरुदेषे (जीनू मात्रान्) तीन तेजोभ (जीनू
वृष्टपान्) तीन तेजेव तपनवृत्तेके बोक्षेषे (जीनू मात्रारथवत्) तीन वातुष्टोदी (जीनू सूर्यन्) तीन शूर्वेषे (उ
गोप्यूरु छम्पयामि) तीरी सक्षम वर्षेषावं वनाता ॥ ४ ॥

(पृतम् त्वा समुद्रायामि) वापे तुष्ट त्रिष्ठव्या तीरी त्वा करे । (वात्येन वर्षेयन्) वापे तुष्ट वदाता त्वा । (वृष्टो
वद्रस्य शूर्येन्) असिंहे चक्रके बोक्षेषे (वार्या) अक्षेषे (मायिका मा दमन्) असी वेष व दग्धे ॥ ५ ॥

(मायिका) असी वाव (वा वायन मा) दग्धे व शग्धे (वा वायनर्म मा) दग्धरो वद्यानव्य वाव (वाव)
वावा (मा दमन्) व दग्धे । (विभवेष्टसः वृश्वा) वृश्व वायनसे वेष (आवाप्तु) अमद्धते तुष्टे (देव्यत वायन)
वायनी विष्व वर्षेषे ताप तुष्टारे वद्याप्तारे तीरे ॥ ६ ॥

(प्राप्तेन वर्षिः स समति) वायन वर्षिके सुवृत्त करता है । (वावाः प्राप्तेन संताहतः) वातु वावके ताप उत्ता
तुष्टा है । (वेषाः) वृश्व इवेने (त्रिष्ठलोमुष्टु शूर्यें) वाती बोक्षे सुरुदाले शूरुदो (प्राप्तेन वर्षेयन्) अक्षेषे वाय
वद्याव विष्वा है ॥ ७ ॥

' वायुषा वृत्तो वायुषा जीव) वातु वायेषामीदे वातुवे तु वीक्षित रह । तु (वायुष्मात् जीव) रीव्यू
दीर्घ वीक्षित रह (वा वृयाः) मह वर वा । (मात्रामन्द्रता वायेष जीव) व्यव्याप्ताक्षित वाय वीक्षित रह । (मृत्योः
वद्या मा इवामा) वायुषेष वस्त्रे व वा ॥ ८ ॥

मृष्ट दर्म सुपत्नीन्मे मृष्ट मे पृथनायुतः । मृष्ट मे सर्वीन्दुर्दीर्घे मृष्ट मे द्विपुतो मंये ॥४॥
 मन्त्र दर्म सुपत्नीन्मे म॑र्थ मे पृथनायुतः । म॑र्थ मे सर्वीन्दुर्दीर्घे म॑र्थ मे द्विपुतो मंये ॥५॥
 पिण्डि दर्म सुपत्नीन्मे पिण्डि मे पृथनायुतः । पिण्डि मे सर्वीन्दुर्दीर्घे पिण्डि मे द्विपुतो मंये ॥६॥
 ओर्पे दर्म सुपत्नीन्मे ओर्पे मे पृथनायुतः । ओर्पे मे सर्वीन्दुर्दीर्घे ओर्पे मे द्विपुतो मंये ॥७॥
 दह दर्म सुपत्नीन्मे दह मे पृथनायुतः । दह मे सर्वीन्दुर्दीर्घे दह मे द्विपुतो मंये ॥८॥
 ब्रह्म दर्म सुपत्नीन्मे ब्रह्म मे पृथनायुतः । ब्रह्म मे सर्वीन्दुर्दीर्घे ब्रह्म मे द्विपुतो मंये ॥९॥ (२३०)

(१०) दर्ममणिः ।

(ऋषि— पृथा । वेचता — दममणिः)

यत्ते दर्म भूरामृत्युः प्रात् षमिसु षमि ते । वेनेम भूर्मिणे कृत्वा सुपत्नी अहि प्रीर्येः ॥ १ ॥
 प्रात् त दर्म षमिणि सुइत्त वीर्याणि ते । तुमस्मै विश्व त्वा दुषा भूरेत् मर्त्या अदुः ॥ २ ॥
 स्वामिन्द्रेद्वर्षम् त्वा दर्म व्रश्वास्यपतिष्ठ । स्वामिन्द्रेस्याहुर्वर्षम् त्व राष्ट्राणि रक्षसि ॥ ३ ॥
 सुपत्नुष्टयं दर्म द्विपुठस्तपैन इदः । मृष्टि भूत्रस्य षधन तनूपाने कृणोमि ते ॥ ४ ॥
 यत्तमुद्ग्रो अम्यक्लन्दस्त्वर्वन्यो विषुवी सुह । ततो हिरण्ययो विन्दुस्ततो दुर्भो अंजायत ॥ ५ ॥ (२३५)

(मे पत्नायतः) दृष्टपर देव्य मध्येताऽतो (मे सवान् दुर्दीर्घः) एव तु इत्यत्तमोऽथ (मे द्विपतः) तेऽपि इत्येताऽल्पः ॥ १-१ ॥

सर्व मेत्र सवान् पवत्ताने है इत्यात्मेये एव मंत्रोऽपि भाव इच्छा रिता है ।

(१०) दममणिः ।

अर्थ— हे दर्म ! (पत्न त उरामृत्युः) मे तुमस्मै पवान् सृष्टु अनेही शक्ति है तथा (त शास्त्र षमस्तु षम)
 या तेऽपि देव्यो वरदोंमे उत्तम वरद है (तत इसं यमिन्द्र हस्त्वा) इस्मे इक्षो वरदाऽपि वरद (वीर्ये सपत्नान्
 अहि) अप्ते वरदाऽप्ते द्वन्द्वोऽप्ते मार ॥ १ ॥

हे दर्म ! (से शास्त्र षमीण) ते सो वरद है (से सहस्र वीर्याणि) ते इत्यो वीर्य है (निष्ठ देव्यः) एव
 देव्ये (वीर्य वस्त्रे वारसे मर्त्ये) तुम्हे इस्मे इदापत्त्वाऽपि शक्ति हातेक लिङ्मे जीर्ण मात्रवेदाके लिङ्म (घटुः) रिता है ॥ २ ॥

(त्वा देवदर्म मादुः) दृष्ट रेतोऽपि वरद वहते हैं हे दर्म ! (त्वा ब्रह्मस्यति) तुम तुर्पतात वहते हैं (त्वा
 राष्ट्रस्य षम भादुः) तुम्हे इम्यदा वरद वहत है । (त्व राष्ट्राणि रमाति) त राष्ट्रोऽपि वरद वहत है ॥ ३ ॥

हे दर्म ! (सपत्न छृष्टय) पात्रानाश (द्विपतः एव तपैन) है इत्येताऽल्पे हरदोऽपि वरद इत्येताना
 (सवत्स्य षधन) सात्रेत्वा षंख्य वरदाता (त तनूपाने मृष्टि हृणामि) एव मृष्टि रक्षद इव मृष्टिये मे
 वरद है ॥ ४ ॥

(पत्न नमुद्रा अम्यक्लन्दत) या वस्त्र षवता वरदा रहा (षिष्यता सह पत्नाय) विवर्तीते वाव षेष वरदा
 वरदा रहा (ततः द्विरक्षय षिष्यु) वदोष षुष्टवा विन्दु वरद दुषा (ततः दर्मः षवतायत) षधने इत्यमणि रमाता
 दुषा है ॥ ५ ॥

(११) औदुम्परमणि ।

(ऋषि - सविता (पुष्टिकामा) , देवता — औदुम्परमणि : ।)

औदुम्परेण मुणिना पुष्टिकामाय देवसा । पश्चात् सर्वेषां स्फुरिं गोष्ठे मैं सविता करत् ॥ १ ॥
 यो नो अमिर्गाहैपत्यः पश्चात्मधिपा असंत् । औदुम्परो वृषो मुणिः स मा सूबहु पुष्टा ॥ २ ॥
 कुरीपिष्ठीं फलेवरीं सुधामिरीं च नो गृह । औदुम्परस्तु तेजसा भ्राता पुष्टि द्वचातु म ॥ ३ ॥
 पद् द्विपात् चतुर्पात् यामभानि ये रसा । गृहेऽह स्वेषां भूमानं विभ्रुदीदुम्पर मुणिष् ॥ ४ ॥

पुष्टि पैशूना परि जग्माह चतुर्पदा द्विपात् यस्त्वं भान्यसि ।

पवः पश्चात् रसमोपवीनो युहस्तरिः सविता मे नि यच्छात् ॥ ५ ॥

अहं पश्चान्मधिपा असानि मणि पुष्टि पुष्टुपतिर्द्वचातु ।

मध्यमौदुम्परो मुणिर्द्रविणानि नि यच्छतु ॥ ६ ॥

उप मौदुम्परो मुणिः प्रुदया च अनेन च ।

इन्द्रण विनिःसो मुणिरा मांगन्सु इवंसा ॥ ७ ॥

(११) औदुम्परमणि ।

धर्म— (पश्चात्) जावने (औदुम्परेण मणिना) औदुम्पर मणिये (पुष्टिकामाय) पुष्टि चक्रतेवक्ते लिए प्रवाप किया । विश्वे (सविता) सविता (मे गोष्ठे) में पौष्टा कामे (सर्वेषां पश्चात् स्फुरिं) यह पृथग्नोदी रहि (करत्) हो ॥ १ ॥

(यः नः गाहैपत्य मणि) जो इमारा जार्हमत्व लियि (पश्चात् मधिपा वसत्) पश्चान्मां विविति है (औदुम्परः वृषा मणि) जग्माह औदुम्परमणि (मा पुष्टा स एवतु) पुष्टे पुष्टिक वात् तुक रहे ॥ २ ॥

(कुरीपिष्ठीं) जोवके वाहसे मत्पूर चरमेवादी वीं (फलेवरीं) देवताके मुख होत्तर (मः गृहे द्वचात् इति) इमार चर्वे जह भी रेव मत्पूर रहे । (औदुम्परस्तु तेजसा) लैसुम्पर मणिके देवसे (भ्राता मे पुष्टि द्वचात्) वात् मुख पुष्टि रहे ॥ ३ ॥

(औदुम्परं मणिं विभृत्) औदुम्पर मणिः वात् चर्वके (वह) मैं (यत् द्विपात् च चतुर्पात् च) जो द्विपात् और चतुर्पात् भीर (पाति भ्रातामि ये रसा) यह भ्रात् भीर ॥ ४ ॥ (पर्यामा भूमान गृह) इन्द्र विभृतमें ग्रात् चर्वता हु ॥ ५ ॥

(पश्चात् पुष्टि वह परि अप्रम) तत् विभृती तुष्टि देवे भी है (चतुर्पदा द्विपात् यत् च धार्म्य) चर्व चर्वके द्विपात् भीर चर्व भीर (पश्चात् पवः) पश्चान्मोहे दृष्ट्य भीर (मापयोती रस) भ्रातविवेकि रहये (पृथग्नति सविता म नि यच्छात्) युहस्ति लवित्र तुष्टि रहे ॥ ६ ॥

(भर्त् पश्चात् विभिपा भ्रातानि) मैं पृथग्नीय भ्रातानां होऊँ । (पुष्टपतिः मणि पुष्टि द्वचात्) पुष्टा रहि तुष्टि पुष्टि रह ॥ ७ ॥ (औदुम्परः मणिः मटी द्रविष्यामि नि यद्यहनु) औदुम्पर माज भेरे भिन्न चत् रहे ॥ ८ ॥

(औदुम्परो मणिः) औदुम्पर मणि (प्रश्नया च धर्मन च) प्रश्ना ॥ ८ ॥ ३ तत् ॥ (हम्मेष विभियतो मणिः) १२५ रेव तुष्टा ॥ ९ ॥ भनि (पर्यामा सह मा गम्) तत्त्वे वात् भेरे उपीत भ्राता है ॥ १० ॥

દેબો મુણિઃ સેપન્નાહ બનુસા ભનેસાતયે । પુષ્ટોરસ્થસ મૂસાનુ ગર્વો સ્ફુર્તિ નિ યંચ્છતુ ॥ ૮ ॥
 યથાસ્તે ત્વ બનેસ્તે પુષ્ટા સુહ ક્ષણિયે । એવા ભનેસ્તે મે સ્ફુર્તિમા દેખાવુ સરેખસી ॥ ૯ ॥
 આ મે બનુ સરેખસી પદેસ્ફાર્તિ ચ શાન્યમ્ભુ । સિનીધ્વારસુપો વદાદુય બૌદુમરો મુણિઃ ॥ ૧૦ ॥

ત્વ મંષીનામંખિપા ચૂપાસિ ત્વાયિ પુષ્ટે પુષ્ટાર્તિર્બબાન ।
 ત્વથીમે વાચા દ્રવિણાનિ સંધીબૌદુમરઃ સ ત્વમુસસ્તારાદરાખિમંદિ સુર્ખ ચ ॥ ૧૧ ॥
 પ્રામણીરથિ પ્રામણીરુત્થાશ્રામિપિચ્છોડમિ મો સિંગુ પર્બેસા ।

દેબોડસિ દેબો મયિ બારાયાચિ રૂપિરથિ રૂપિ મે બેહિ
 પુરીરથિ પુષ્ટા સા સર્મણુંઘિ ગૃહમેદી ગૃહાર્તિ મા રૂણ ।
 બૌદુમરઃ સ ત્વમુસમાસુ બેહિ રૂપિ ચ્છ નુઃ સર્વેદીરું નિ યંચ્છ
 રાયસ્પોર્ય પ્રતિ બુદે ઝુંદે ઝુંદે લ્લાદુ
 અયમૈબૌદુમરો મણિબીરો બીરાય પદ્યતે ।
 સ નુઃ સુનિ મધુમરી રૂપોતુ રૂપિ ચ્છ નુઃ સર્વેદીરું નિ યંચ્છાત ॥ ૧૨ ॥ (૧૪૦)

અર્થ— (સપન્નાહ દેબ: મણિ:) રાતુલોયે તુ કરદેખાઓ વહ લિખ મણિ (ઘરસા) જનીઓ બીજેદોલ હોઈ (ઘરસાતયે) બનદી પ્રાણે સિંગે [ચારન કિંદા હૈ :] વહ (પણો: ઘરસ્ય મૂસાર્ણ) પણ બોર અધી ચદરિ તાજ (ગર્વો સ્ફૂર્તિ નિ યંચ્છતુ) વીઠોયે હેઠે કુદી રેલે ॥ ૮ ॥

હે ત્વમ્ભે ! (યથા માયે ત્વ) બેદે વાદે તુ (પુષ્ટા સહ જાહિયે) પુષ્ટિદે યાચ લાલ હું (વદા સરલતી)
 મેદી હી ચારસી (મે ઘરસ્ય સ્ફૂર્તિ આ વદાતુ) મેરે મિલે વદદી પુષ્ટે રેલે ॥ ૯ ॥

ચારસી વિનિનાલી બોર (અર્થ બૌદુમરદો મણિ:) વહ બૌદુમર મણિ (મે) મેરે પાછ (ઘરે પદેસ્ફાર્તિ ચ
 યાર્ય) વહ ચાચ બોર હુંદી ચદરિ (આ વદાતુ) કરે ત ॥ ૧ ॥

(રાય પુષ્ટા મણિ) ત લાલાન હૈ (મણીનો મણિયા:) મણિદોઢ જનિપણ હૈ (પુષ્ટાર્તિ: રાય પુષ્ટે જ્ઞાતાન)
 પુષ્ટાર્તિને તુસ્તે કુદી લાલ ચી હૈ : (ત્વયિ હેઠે ચાદા) તુસ્તે મે વહ હૈ (સર્વા દ્રવિણાનિ) વહ વહ તુસ્તે હૈ :
 (સા: રાય બૌદુમરા) વહ તુ બૌદુમર મણિ (ઘરસા ઘરાર્તિ સુર્ખ ચ) હસે બીજી નિર્દુલતા વદા કુલાદો
 (સાદત) એ હઠ હૈ ॥ ૧ ॥

(ઘરસ્યાનિ: મણિ) ત લાલાન હેઠા હૈ (ઘરસ્યાનિ: વદાયા) ઘરસ્યા નેતા હોઈ કઠદર (મણિપિલા) તુ
 અધીરિષ હા (વર્ષસા મા મણિપિલા) તેદે સુર્ખ અધીરિષ હર (તેદા: મણિ) તુ તેદ હૈ (મણિ તાજ: પારાય)
 મુસ્તે રેલ ચારન વહ (રાય: મણિ) તુ વહ હૈ (મે રાય: મણિ ઘરસ્યા) મુસ્તે વનધ વાલ હર ॥ ૧૨ ॥

(પુષ્ટિ: મણિ મા પુષ્ટા સમેરિય) તુ પુષ્ટિ હે સુસે પુષેદે કુદી વર, (ગૃહમેદી) તુ મુલેની હોઈ (મા ગૃહ
 પર્તિ હુણુ) મુસે ગૃહની વર । (સા: બૌદુમરા) વહ તુ બૌદુમર મણિ હે (ત્વ ઘરસાસુ રાય મણિદી) તુ ઇદે વહ
 વદાન વર । (ના: સર્વેદીર્ય ચ લિખયાછ) હસે સુર્ખ પુષ્ટે જીવાલ પણ રે । (મહી રાય) મે તુહે (રાય: પોરાય
 પ્રતિ સુર્ખ) બની પુષેદે સિંગે વાલાન ॥ ૧ ॥

(અર્થ બૌદુમરા મણિ) વહ બૌદુમરની (બીરા બીરાય વદયતે) હાર હે વહ બીરદો વાચા વાજા ॥ (સા:
 સ: મા યશુમતિ સર્વિ હુણોતુ) વહ દેવે નાગાલાદે વાચ નામને કંદુજ બેર । (સપદીર્ય ચ ન નિ પદ્ધાન) મો
 મીઠે સુર્ખ વહ દેવે ॥ ૧ ॥

૫ (અર્થ માય વાજ ૧૧)

(३२) वर्म ।

(क्रपिः — सुग्री (आयुष्कामः) । देवता — दमः ॥)

सुदर्शनकृष्णो दुष्प्रयुक्तः सुहस्तपर्णं उत्तिरः । दुर्मो य उप्र ओरेष्विस्तं ते भगवान्पुरि ॥ १ ॥
 नासु केष्वाम् वरन्ति नोरेष्वि ताहमा मरे । यस्मा अद्विष्टपर्णेन दुर्मेष्वं इमे यच्छति ॥ २ ॥
 द्विष्वि से लूलमोपये शृण्वन्मामेसि निष्टिरुः । स्वया सुहस्तक्षण्डेनायुः प्र वर्षयामहे ॥ ३ ॥
 तिक्ष्वो द्विवो अस्यतृष्णतिक्ष्व इमाः पृथिवीलुत । स्वयाई दुर्दार्दीं गिरां नि तुजसि चर्चासि ॥ ४ ॥
 स्वमेसि सहेमानोऽहमेसि सहेस्तान् । दुर्मो सहेस्तन्वो भूत्या सुप्रशान्तिसहितिः ॥ ५ ॥
 सहेस्त नो अभिमाति सहेस्त प्रतनायुतः । सहेस्त सर्वान्दुर्दार्दीः सुहादीं मे बुहन्त्विः ॥ ६ ॥
 दुर्मेष्वं देष्ववरिन द्विवि एम्मेनु शशुदित् । तेनाई घर्षते चनों अस्तुन सनेषानि च ॥ ७ ॥
 प्रिय मा ईर्म रुषु प्रशराज्ञन्याम्या शृद्रायु चार्यैय च ।
 पर्वै च कामयोमहे सर्वैस्मै च विष्पश्वते ॥ ८ ॥

(११)

अर्थ— (शातकालः सुभृत्यवदः) दो काव्योंमध्ये इत्यना विवरण कठिन है (सहस्रपर्वः) इयां पर्वोंसम्म (उत्तिरा) अस्ति जावेषामा (अर्थः पदः उपासः ओपयिति) दर्शन कर एक उप जीवनि है (त ते भाषुये वज्ञामि) इसमें
दूसी जाति एकोंसे जिन्हें बोलता है ॥ १ ॥

(मराठ वेदाधार न प्रवापन्ति) इपके वार्षिकी अवधी नहीं (न उत्तरसिं तार्थं पा ग्रामे) न काटीको वीजे उत्तरसिं (पक्षी) विश्व (भूमित्वं पर्वतं वर्त्सुप) न एके वर्णावाहे उत्तरसे ज्ञ (शार्मं युक्त्यति) इष्ट रेता है ॥ १ ॥

हे लालो ! (ते तुङ्ह विधि) तेरी चोटी जाग्यामै है (पूर्णिया जस्ति लिहिउ) प्रकृतिमै तू सिर है। (लवा सहजकालेन) तुम उस प्रकाराकोडे हाता (भाषुः प्र वर्षयामह) तुम अपनी कानुषो बधाये हैं ॥ ३ ॥

(तिक्तो विषः अस्यादपत्) तु तीव्र आम्बोदे और, (तिक्ता इमा शूपिणीः रुद्र) तीव्र इन हृषिकेशोंमें भी चीर पक्षा है। (त्वया अहं) ऐसे इस में (तुर्हादि विहारो) तुर्ह एकलसेवी विहारे तथा (वचासिं गि तुर्पिणी) दध्वंशोंमें भीर वस्त्रमा ॥ ४ ॥

(तथा सहायता : असि) तू विषयी है, (मर्ही सहायता का अधिक) मैं प्रवाना हूँ। (बड़ी सहायता को मुक्ता) ऐसे दोनों वचनान् होताएँ (सप्तत्वाकां संज्ञिकीयमिति) कठुनोंपै रखा रहे ॥ ५ ॥

(न) अभियांत्रि सहाय) द्वारा चुनी गयी (पूरमापद्धति सहाय) द्वारा हमव उत्तेजको पारामूर्ख कर (सर्वांग युद्धांश्च सहाय) तर तु इसलक्ष्मी परम्परा कर (मे सुरांगः बहुम छापि) भै तिने उत्तम इसलक्ष्मी विन परह ८५ ॥ ६ ॥

(देवदारोत्तम दर्मेन) रेखिं अस्य दूरं दर्मेन (शाभत् इति दिवि परम्परा) परा शुक्रीयं बाधेत्वात् (तेजः
महा) इव दर्मसिंहे मैं (शास्त्रात् जाग्र भस्त्रं) सरा लोकोऽप्येषं चिंता है और (शत्राणि च) लीर्णा भी ॥ ५ ॥

हे राम ! (प्रस्तावनापाठ्य) शारदा प्रतिष्ठो और (शुद्धारप चार्याप च) यहों और जानेंह लिखे (यही च चारमपाठ्य) लिखको इस बाहते हैं और (सर्वस्मै पश्यते च) एव देखतेहाँके लिखे (मा गिर्य छुगु) मुझे लिखना ॥ ५ ॥

यो भावमानः पूर्णिमैद्युपो अस्त्रभादुन्तरिष्ठं दिव्यं च ।
 प विश्वर्तं नुत्रु प्राप्ता विशेषु स नोऽय दुर्मो वर्णो द्विषा क्षः ॥ ९ ॥
सप्तसहा स्त्रूपकाण्डः स हस्तानोपचीर्णा प्रथमः सं वैभव ।
 स नोऽय दुर्मः परि पात्रु विश्वतस्तेन साधीय पुरुना: पुरन्युतः ॥ १० ॥ (१५१)

(३४) वर्म ।

(कृपि — सप्ता । देवता — एस्ट ।)

सहस्रार्थः प्रतिष्ठाप्तः पर्यानुपामपिर्वक्षी राजस्थैम् ।
 स तोऽयं दुर्भैः परि पातु विश्वतो देशो मुक्तिरायुगा स सुमाति नः ॥ १ ॥
 षुदादुख्यमो मधुमान्यथेखा भूमिराह्युतव्यापयिष्णु ।
 नदन्सपत्नानचरीष कृष्णनदर्मा रोह महावार्मिन्द्रियेण
 त्व भूमिकथेष्योद्धर्मा त्व वेद्यां सीहस्रे चार्कम्बरे ।
 स्वा प्रविश्वमूर्योऽमरन्तु त्व दुनीहि दरित्वान्यसत् ॥ ३ ॥

धर्म— (यः आयमासः) विद्यने अन्यते ही (पृथिवीं महाशात्) इविविच्छे इह किमा (यः भागवतिर्थं दिवध
मस्तान्नात्) विद्यने अमारितं और पुणोऽक्षे स्त्रिय किमा (ये किञ्चन्नं) विद्यके पर्यन्तेवालेहो (पाप्या म तु विषेद्) पापी
नहीं पाप कर सकता। (सः धर्म धर्म) एव वह एमस्ति (यद्युपः) एतम्-भृत्य वनकर (दिवाका) प्रश्नष्ट थे १५०

(सपत्नीहा) बुझो मात्रेवका (शतकार्षः) तो याहोवाम (सहस्राम्) बहिमार् (ओपर्टीमार् प्रथमः सं चूम्ब) जीविकोमि परिणा हुआ है । (सः यथ इमा) वर यह इर्मनि (विद्वतः का परि पात्रु) हह भेत्रे रामा रुद्र थे । (तेऽ) उधेरे मैं (प्रत्ययतः पुत्रामा) धेनाकारेश्वरे देवायं (साक्षीय) जीर्णा म । ॥

(४३) वर्मः ।

(सहस्र-भ्रम) वहाँ प्रधारे मृत्युनाम (शतकाष्टः) सौ दशहेतुला (पर्यहवान्) इसे परिदृश्य (भ्रमी भ्रमी) बड़ोंमें रहनेवाला भ्रमि (चोदयां राज्ञस्यं) भौतिकोद्ध राहस्य वह बैठा (सः भयं इमः) यह वह इर्मन्तिरि (ना विश्वासः परि पातु) इसे चारों ओरें सुखिया रहे । (देखः मणिः मः आयुषा सं संसारिः) यह दिव्य मणि इसे जापुके साथ संतुष्ट छरो ॥ १ ॥

(पृथिवी उम्मुक्ति) योगे सीधा दूषा (मधुमान पपस्याद्) एवं भीर इष्टो मह (भूमि-नूहा) भूमिये रह अत्येकात्म (अद्युतः) न विनेशात्म (दयाविष्णुः) अनुभोदे विनेशात्म (सप्तमान नूहन) पशुओंदे रु अत्येकात्म (मधुमान षष्ठी कृष्णम्) अनुष्ठाने योगे अत्येकात्म दूषे इव। (मदर्ता हित्रियेष मा रोह) वर्णोंदे विनेशे स्तरीत्पर बाहु दो ॥ १ ॥

(त्वं स्मितोऽसामायोप) तू भविष्ये अर्थे एतदेह स्पृष्ट वरु काम है (त्वं अधिक पदो याद संकल्पि) तू वहाँ रेखांमें सु-हर रंगिने बैठा है । (अहरया रही परिवृत्ति भवति शृणुत) उन्हीने हमे वित्र जान दए थिए (त्वं अस्मात् द्वारात्माने पुनर्नादि) तू दृष्टि पावाये तू इसे हमे वित्र वहा पाए ॥

तीर्थो रावौ विपासुही रङ्गोहा विश्वर्वणिः ।
 आओ दुषानां पठेषु प्रमेत्वं ते विष्णामि बुरसे खुस्तये ॥ ४ ॥
 दुर्भेण स्वं कृष्णप्रीर्यांगि दुर्भं विष्णेतुत्मना मा व्यविष्टः ।
 अतिष्ठाया वर्षसाशून्यानस्यै दुषा माहि प्रदिष्टुमरुतः ॥ ५ ॥ (११४)
 ॥ इति अद्युपोऽनुवाकः ॥ २ ॥

(१४) जहिंडमणि ।

(जहिंड — भजिरातः । देवता — वसस्पति, छिंगोक्तः ।)

जहिंडांगिसि सहिंडो रवितासि जहिंडः । द्विपावर्त्प्यादुसाकु चर्वि रक्षतु जहिंडः ॥ १ ॥
 या गृत्येत्पिष्ठादीः शुष्टु छेष्ट्याहतेषु ये । सर्वीत्विनक्षु देवेसोऽनुसां जहिंडस्त्वरु ॥ २ ॥
 अर्सं कूत्रिमे नादमरुताः सुस्तु विष्णुमः । येषु तो धृक्षिंडामतिष्ठियुपस्त्वेव द्वारय ॥ ३ ॥
 कृस्यादपेण प्रवायमयो भरातिदूपेण । अश्वो सहस्रां जहिंडः प्र न् आर्यैषि वारिष्टत् ॥ ४ ॥

अर्थ— (लौकिक राजा) और राज्य (विपासाहि) द्वारुद्धे कामतूल वरतेवका (देवादा) एवं सोंको मानवेनाम
 (विश्वर्वणिः) यदि सावर्णोऽनामी (देवाता भोग्यः) द्वारा यह लाभर्प है (प्रतात् दृग्म वर्षम्) यह उपर्याप्त है
 (तं त) वर्षों से भीट पर (जरसे स्वस्तये विष्णामि) द्वारमवाप्ति जापिते जिने भीट द्वाराके जिने वीचता है ॥ १ ॥
 (त्वं इमेव वर्षायिति हृष्ट्यवृत्) त इर्मनिषिद्ध पराक्षम वर (वर्षं विभ्रत्) इर्मनिषिद्ध वारन वरके (भारतमा
 मा व्यविष्टः) तर्युं द्विष्ट य ही । (अपि भास्याद् वर्षसा अतिष्ठाय) अब दूसरोंवे तरके वरन वरम् द्वेर
 (मर्य इव) सर्वेष उपाय (अतिष्ठाय भा भाविष्ट) वर्षों दिक्षाद्योंप्रकाशिष्ट ही ॥ ५ ॥

॥ यद्यो यत्तुप्य अनुवाक समाप्त ॥

(१५) जहिंडमणि ।

अथ— (जहिंडा भसि) त् जहिंड इ (जहिंडः दसिता भसि) त् जहिंड भवति रक्षत् है । (वससाके
 द्विपावर्त्प्याद् सर्वं जहिंडः रक्षत्) दसारा दी पांसालाय भर वर पांसाला भी है उप सद्य यह जहिंडमणि रक्ष
 है ॥ १ ॥

(या गृत्यस्य विष्ठादीः) यो हिंडकृत तीव्र तुषा वराव है जोर (याते हृत्याहताः य ये) जो यो हिंडकृत
 वरमेवाने है (सर्वात् लेस्ससः विष्ट्यतु) दस वरसी यह तेजसे ऐ ऐरे वर (जहिंडः भरसान् करत्) जहिंडमणि
 वरमेवी है ॥ २ ॥

(अरसं हृतिम नाई) वरमरी लम्हद्ये भैन्यम वरावे (सत विष्णसा भरसा) यात व्याहृत्ये नौरू वरावे
 इ वरिष्ट । (इता भसाति अथ) वराव दुर्दिवेत्वादी दूर वर (भरसा इत्यु इव शातय) वर देवेवका वैका वाचो
 वैका है यव दूर दूर वर ॥ ३ ॥

(अर्थे हृत्याहृत्याः वर) यह दिवद हृतेवा वाचह है (मर्य त भरातिकृपण) यह दूरुष दिवायह है ।
 (भरसा जहिंडः सहस्राद्) भैर वर वैदेवति भरसर्वेत्वाद् है वर (मा भार्यैषि भ्रातारिष्टत्) इमे जातुप्य
 वाचेष ॥

स ब्रह्मिदस्त महिमा परिं पः पातु विशतः । विष्फलं येन साप्तु सस्कन्धमोऽ ओच्चसा ॥ ५ ॥
 विष्ट्री देवा अनन्यभिष्टिरु भूष्यामधि । उमु त्वाहिंगा हति आशूणाः पूर्वा विदुः ॥ ६ ॥
 न स्वा पूर्वा ओपद्ययो न त्वा तर्तु या नवोः । विष्वाप उग्रो अहिंडः परिपाणः सुमुहङ्गः ॥ ७ ॥
 अयोपदान मग्ने अहिंडामितवीर्य । पूरा ते उग्रा ग्रंथु उपेनद्रो वीर्यं इदौ ॥ ८ ॥
 उग्र इत्ये भनस्तु इन्द्रे ओच्चानुमा दंष्टौ । अर्मीवाः सर्वैश्चातय अहि रक्षास्योपदे ॥ ९ ॥
 आशूरीकु विष्ट्रीक बुलासैं पृष्ठामुपम् । उक्मार्ण विष्वारदमरुसा अहिंडस्तरत् ॥ १० ॥ (१०४)

(३५) जस्तिनादः ।

(कथि — अस्तिराः । देवता — वत्सपति ।

इन्द्रसु नामे गुह्यन्तु भ्रष्टयो अहिंडे दंदुः । बुधा य चक्रभैपुवमग्रे विष्फः प्रदूषणम् ॥ १ ॥
 ए नौ रक्षतु अहिंडो चेनपालो भनेव । देवा यं चक्रमीद्वाजाः परिपाणमरातिहम् ॥ २ ॥

बर्द— (अहिंडस्य सः महिमा) अहिंडस्मिता यह महिमा है (सः विश्वतः परि पातु) कि वह इष्टारी यज्ञ बोरखे रहा थे । (येन विष्वारदं सात्सहे) विष्ट्रे हम देखके दृष्ट अते हैं (ओज्जसा चंस्कर्ष योद्धा) जन्मे वक्षे वस्त्रम् ऐपके भी दृष्ट करते हैं ॥ ५ ॥

(देवा : स्वा क्षिप्ति अद्वयपद्) देखते हुए तीन वाच वर्तम विना (भूम्या अधिष्ठितु) सूर्यपर तु रित्व है ।
 (पूर्वाः प्राशूणाः) पूर्वं कामके व्राद्यन (ते त स्वा अहिंडा हति विदुः) वह दुष्टे अहिंडा अर्द्धे जानते हैं ॥ ६ ॥

(दूर्वा भोपद्ययः न त्वा) उत्तरी वाविनो दुष्टे जानती नहीं (या नवाः स्वा न तरपति) जो नवीन जीव
 विद्या है वे भी जानती नहीं । (विष्वापः उग्रः अहिंडः) देखके विनेव वाच । वृहृष्णवेदाका वर्ण वह अद्वितमनि है वह
 (परिपाणः सुमगदः) उत्तरक और वर्तम वैग्रह अद्वेदाका है ॥ ७ ॥

(अप उपदान भगवा : अहिंड) हे दान देवेशादै सम्बान अहिंड । हे (अमितवीर्य) अपरिमित चक्षितादे ।
 (पुण्य ते तप्ता अस्तत) कम कमु दृष्टे पाप करनेके दृष्ट (इन्द्रः वीर्यं वप ददृष्ट) इन्मे दृष्टमें बीर्य रक्षा है ॥ ८ ॥

हे वक्षते । (ते दृष्ट उग्रः इन्द्रः) हेते उग्र वर इन्मे (आक्मार्ण मा वृष्टी) वृष्टी राखि रक्षा है (चर्वाः
 समीक्षा चातवद्) दूसर एवं हृष्ट अर्द्धे है थोक्षे । (रक्षातिं अहि) रक्षसोंकी मार ॥ ९ ॥

(आशूरीक विष्ट्रीक) तीव्रेदाका दुष्टे करेवाम (वद्वारत्स) जाती (पूर्वामयं) वीठयी नीमारी (तक
 मान विष्व शारद) वर जनुमें हीनेवक्षम उत्तर नारिको (अहिंडः वरसान् वरत्) अहिंडमनि विष्वत्व बरत्व है ॥ १ ॥

(३६) अहिंडः ।

(इन्द्रस्य नाम शृङ्खलः) प्रभुओ वाम देखे हुए (अपद्ययः) अधिकोने (अहिंड दंदुः) अहिंडमनि
 दिना है । (अप्रे वदा) वाममें देखते (व विष्फलपूर्वं देयवं चक्रुः) जो देय दृष्ट देवेदाका जीव एक
 किमा वा ॥ १ ॥

(अपपाद घमा इव) वरपाद जामी देवा वरोध रक्षन करता है वह तरह (सः अहिंडः यः इस्तु) वह
 अहिंड इष्टारी रक्षा थे । (यं देवा : आशूणाः) विष्ट्रे देखो और वाममनोनि (परिपाणं ज्वरातिं चक्रुः) एक और
 अपुरावक विना है ॥ २ ॥

दुर्विः सर्वैः चष्टुः पापहस्तानमागमम् ।

तास्त्वं संहस्रचक्षो प्रतीक्षेन नाशय परिपाणोऽसि अङ्गिहः ॥ ३ ॥

परि मा द्विवः परि मा पृष्ठिष्याः पर्युन्तरिष्यास्परि मा श्रीकृष्णः ।

परि मा भूतात्परि म्रोत मध्यादिष्वोदिष्वो अङ्गिहः पात्प्राकान् ॥ ४ ॥

य श्रुण्णांको देवहठगा य तुतो वृक्षेऽन्यः । सर्वांकान्निष्मेष्वबोद्रसां अङ्गिहस्करत् ॥ ५ ॥ (१८)

(३५) शतवारो मणिः ।

(श्रद्धा — ब्रह्मा । वेष्टना — शतवारा ।)

श्रुतवारो अनीनष्टप्रसादस्त्वासि लेखसा । आरोहन्वेत्सा सह मुण्डीणीमुचात्मनः ॥ १ ॥

मृक्षान्म्या रथो तुहते मूलेन यातुभान्त्यः । मध्येन यहम् वाष्टु नैनं प्राप्माति तत्रति ॥ २ ॥

ये यस्मांसो अर्मका महान्तो ये च श्रुद्विनेः । सर्वी दुर्जमहा मणिः श्रुतवारो अनीनश्वत् ॥ ३ ॥

म्रुत वीरानेवनयन्त्रुत यस्मानपावपत् । दुर्णाम्भः सर्वीन्द्रवान् रसांसि घृतुते ॥ ४ ॥

अर्थ— (उदाहरण) तु इह इरसतके (संघोर चष्टु) कूर नैवेष्ट और (पापहस्तान आगम) पाप लम्ब अर्थे अपे त्रृप्ते (तात्र त्वं सहस्रवास) अन्ये तु हे वस्त्र वाक्याते । (प्रतिक्षेपन आशय) शतवारवद्वेष्ट विद्वर (परिपाणाः असिंहिहः) तु संरक्षण वर्तमान अविद्यानि है ॥ १ ॥

(द्विवा मा परि पात्रु) पुण्डेष्टे भेदा इत्य वरे (पृष्ठिष्याः मा परि) इविष्टे करत् (अस्तरिक्षात् परि अस्तरिष्टे (वीरद्वया मा परि) अतिविष्टे (मा भूतात् परि) मूर्णोष्टे (भूद्वयात् मा परि) होमेष्टे (विद्व विद्वा अविग्रहः अस्तान् पात्रु) विद्वा विकानीष्टे पद वाहिष्टविद्वि इय एव यवका एवत् वरे ॥ २ ॥

(ये देवहठगा लक्षणाः प्राप्त्याः) तो देवोष्टे भेदे विचह छम्भ हैं (य चतु त्र पृष्ठुतेऽन्यः) वा कोइ इत्ये विद्व (सर्वांक तात्र) तन वस्त्रे (विद्वमेष्टः अविग्रहः) एव भीविष्टुम्भाका अविद्यविद्वि (अस्तान् करत् विद्वद वराते ॥ ५ ॥)

(३६) शतवारो मणिः ।

(शतवारा मणिः) यवार मणि (यवसा सह भायोहन) वेष्टके तात्र वरीर पर वावा दुष्टा (दुर्जम आत्मनः) तु य नावाते रोतीष्टे एव वरता दुष्टा (तज्जसा यवसान् रसांसि अनीनश्वत्) अन्ये लेखसे अन्ये द्वाप्त वार रोमम्भुतो [राष्ट्रीयो] वा नाय वरता है ॥ १ ॥

(श्रुताम्भो रथ तुहते) वीष्टोष्टे राष्ट्रोष्टे एव वरता है (मूलेन यातुभान्यः) एवते वातना देवेष्टोष्टे एव वरता है (मध्येन यहम् वापने) वर्षसे राष्ट्रोष्टे एव वरता है (पाप्मा एवं न मणि तत्रति) वारी देव इत्ये वा नहीं वरता है ॥ २ ॥

(ये यस्मात् अर्मकाः) वी रोपवीष्ट सूर्य है (ये च महाम्भः अविद्यः) वा वहे यस्म वर्तेष्टोष्टे रोप है (सर्वांक दुर्जम दा शतवारा मणि अवीक्षणात्) इव वर्षसे तु य नावाते रोतीष्ट वाय वर्तेष्टम् शतवारा वर्ष वाय वरता है ॥ ३ ॥

(शर्त वैतान् अव्याप्तय) वी रोतीष्ट अव रहा है (शर्त यवार अपावपत्) वेष्टसे रोतीष्टे एव वरता है (सर्वांक दुर्जाम्भः दरवा) इह नावान् वर रोतीष्टे कार वर (रसांसि अवपूरुत) वर राष्ट्रों रोतीष्टों—वी देव है ॥ ४ ॥

हिरण्यशङ्क अपुमः शोतुरारो अथ मुणिः । दुर्णीमनः सर्वौस्तुद्दावृ रक्षास्त्रकमीत् ॥ ५ ॥
प्रुतमुह दुर्णीम्नीनां गन्धर्वाप्सुरसा॒ प्रुतम् । शुर्वं द्युष्मीनां भृत्यारेण चारये ॥ ६ ॥ (१०५)

(७) पलशासि ।

(कथिः — अथर्वा । देवता — मग्नि ।)

इदं वचो॑ अ॒पिना॒ तु॒ष्मा॒गा॒मगो॒ यजुः॑ सह॑ ओऽगो॒ चयो॒ पल॑म् ।

अ॒पै॒स्त्रियु॒ष्मा॒नि॑ च वीर्यु॑मि॒ तान्यु॑मि॒ प्र॒दैदातु॒ मे ॥ १ ॥

व॒र्चु॑ आ॒ पै॒हि॑ मे॒ सुन्वाँ॑ह॒ सह॑ ओऽगो॒ चयो॒ पल॑म् ।

तु॒न्द्रिया॒य॑ स्वा॒ कर्मणि॑ वीर्यु॑पि॒ प्रति॒ शुद्धामि॒ शुत्यारदाय ॥ २ ॥

तु॒र्जे॑ स्वा॒ पल॑य॒ त्वौ॒क्षेसु॑ सहैस॒ स्वा॒ । अ॒भिमू॒यो॑य॒ स्वा॒ रात्र॒मू॒स्या॒य॑ पै॒द्य॒हामि॒ शुत्यारदाय ॥ ३ ॥
अ॒तु॒म्प॒द्यात्तु॒वेम्पो॑ मात्रः॑ सं॒त्सुरेम्प्यः॑ । धात्रे॑ विष्णा॒ये॑ सुम॒धे॑ मू॒त्सु॑ पर्वते॑ यज्ञ ॥ ४ ॥ (१०६)

(८) यहमनाशनम् ।

(कथिः — अथर्वा । देवता — शुल्कात्रुः ।)

न त यहमा॑ अ॒रु॒धतु॑ नैव॑ शुप्तयो॑ अश्नुते॑ । य॑ मै॒पु॒द्वस्य॑ शुस्तु॒लो॑ सूर्यमिर्तु॑ चा॒ अ॒श्नुते॑ ॥ १ ॥

— अथ — (हिरण्यश्टुतः॑ श्लोकः॑) वाहके॑ शीताक्ष वत्ताक्ष (अथ शतावार मग्नि॑) वह शतावार मग्नि॑ है ।

(तु॒र्णो॑ज्ञ स॒प्तो॑म् त॒द्या॑) एव तु॒र्ण स॒प्तो॑ते॑ रोगो॑मि॒ मात्र॑ (रात्रि॑स्त्रि॑ अ॒प्यत्यंगमित्) रात्रि॑सीढी॑ इदा॑ दाता॑ है ॥ ५ ॥

(अ॒र्द्धे॑ तु॒र्णो॑म्नीनो॑ शत॑) मै॒पु॒र्व वामवत्त उ॒क्षेत्रे॑ रोगो॑ते॑ (गण्धर्वाप्सुरसा॑ शत॑) उ॒क्षेत्रे॑ ओ॒र अ॒प्यर॒ वामवत्त उ॒क्षेत्रो॑ रोगो॑ते॑ (शत्यातीनो॑ शत॑) इत्यो॑क्षे॑ वाम॑ इ॒क्षेत्र॑ दै॒द्यो॑ रै॒गो॑दा॑ (शत्याक्षोरेण यातये॑) ५५ शतावार मग्नि॑ है॑ इ॒दा॑ है॑ ॥ ५ ॥

शतावार वह शतावार ५ का॑ स्वा॑ इ॒क्षा॑ दिक्षार॑ दै॒प वहे॑ ।

(९) वलशासि ।

(इ॒र्वं॑ प॒र्वः॑) व॒ह॑ तत्र॑ (अ॒मिना॑ इ॒त्त आ॒गाम्॑) अ॒मिने॑ दिवा॑ आ॒वा॑ दे॑ वह॑ यगः॑ यशः॑) तेव॑ वा॑
(सहा॑ मोऽगः॑) वा॒त॑ ओ॑र वा॒त॑र्य॑ (अ॒प्य॑ य॒क्षं॑) य॒क्षे॑ ओ॑र वह॑ देता॑ है॑ । (यानि॑ त्रय॑त्यित्तात्॑ वीर्याप्यिं॑) वा॑
तेव॑व॑ य॒दि॑ दे॑ (ताति॑ अ॒मिति॑ मे॑ प॑ दृश्यातु॑) व॒द्य॑ अ॒मि॑ मु॒ते॑ दे॑ता॑ ॥ १ ॥(प॑ तम्यो॑) मा॑ च॒र्यो॑मि॑ (व॒द्यः॑ सहा॑) तेव॑ वा॒त॑प॑ (ओऽगः॑ यगः॑ व॒क्षं॑) वा॑ य॒क्षि॑ ओ॑र वह॑ (मा॑ घटि॑)
स्वाम॑ वह॑ । (हिरण्याप्याय॑) श॒त्रिव॑ वा॒त॑त्वे॑ निवे॑ (वा॒त॑मे॑ वीर्याप्याय॑) वा॒त॑त्वे॑ वा॑ य॒क्षि॑ निवे॑ (शत्यारदाय॑)
मी॑ वीर्यो॑ लातु॑दै॑ निवे॑ (या॑ प्रति॑ शुद्धामि॑) व॒द्य॑ नै॑ वा॒त॑ वहता॑ ॥ ५ ॥(इ॒र्वं॑ वा॑ वा॒त॑य॑ या॑) वा॒त॑ निव॑ व॒द्य॑ निवे॑ (ओऽग्न॑ स॒दृश॑ स॒दृश॑ या॑) वा॒त॑र्य॑ वा॑ वा॒त॑र्य॑ निवे॑
(अ॒मिमू॒यो॑य॑ या॑ वा॒त॑मू॒त्या॑य॑) व॒द्य॑ वा॒त॑म॒र्त्त॑ निवे॑ व॒द्य॑ वा॒त॑त्वे॑ निवे॑ या॑ (शत्यारदाय॑ पै॒द्य॒हामि॑) य॑
प॑र्व॑ अ॒तु॑दै॑ निवे॑ दृश्य॑ व॑ वहता॑ ॥ ५ ॥(अ॒तु॑दै॑ या॑ वा॒त॑त्वे॑ या॑) अ॒तु॑दै॑ निवे॑ अ॒तु॑दै॑ व॒द्य॑ व॒द्य॑ निवे॑ (मा॑ य॒द्य॑ ल॒क्ष्मा॑म॒र्त्त॑य॑) व॒द्य॑ नै॑ व॑
व॒द्य॑त्वे॑ निवे॑ (या॑ य॒द्य॑ य॒द्य॑त्वे॑) वा॑ वा॑ वा॑ निव॑त्वे॑ निवे॑ (स॒य॑य॑ भ॒त्य॑ व॒द्य॑ व॒द्य॑) व॒द्य॑त्वे॑ निवे॑ तता॑ व॒द्य॑
निवे॑ निवे॑ वहता॑ ॥ ५ ॥

(१०) यहमनाशनम् ।

(यहमा॑ त व अ॒द्यन्पने॑) व॒द्य॑ इ॒क्षा॑ दै॒प्ता॑ व॑ (दै॒प्ता॑ व॒द्य॑ न मै॒श्नुते॑) या॑ ५ दे॑ व॒द्य॑ शु॒त्या॑
व॑ (व॑) निवे॑ वह॑ (मे॒त्र॑त्य॑ शु॒स्तु॑मि॑ शु॒रामि॑ या॑य॑) ओ॑र वह॑ दै॒प्ता॑ व॑ व॒द्य॑ दै॒प्ता॑ (व॒द्य॑तु॑न) व॑
दै॒प्ता॑ ॥ १ ॥

विष्वंअस्तम्याधस्मौ मूगा अस्मौ इवरते । यद्गुरुस्तु ईन्द्रिय पश्चाप्यासि समुद्रिपैष् ॥ २ ॥
दृमयोराग्नि नामासा विशिष्टातये ॥ ३ ॥ (१५)

(१५) कुष्ठनाशनम् ।

(उपि — सूर्यगिरा । हेतु — कुष्ठ ।)

ऐतु देवज्ञायेमातुः इष्टोऽहिमवत्स्यर्ते । तुक्षमान् सर्वे नाशयु सर्वीष्य यातुभान्युः ॥ १ ॥
त्रीणि त कुष्ठ नामानि नयमारा नयारिपः । नयायं पुरुषो रिष्ट ।
यस्मै परिग्रीष्मि त्वा सुप्रातुरयो दिवा ॥ २ ॥
जीवला नामै वे मुराजीवन्दो नामै स पिता । नयायं पुरुषो रिष्ट ।
यस्मै परिग्रीष्मि त्वा सुप्रातुरयो दिवा ॥ ३ ॥
तुलमो अस्त्रेपथीनामनुदूत्तु खरातुरामिव व्याघ्रं वरदामिव । नयायं पुरुषो रिष्ट ।
यस्मै परिग्रीष्मि त्वा सुप्रातुरयो दिवा ॥ ४ ॥
त्रिः शास्त्रुम्यो विहितेभ्युद्दिरादित्येभ्युस्यर्ते । त्रिक्षांशो विश्वदेविभ्यः ।
त कुष्ठो विश्वमेष्टवः । सुक्ष सोमेन तिष्ठति ।
तुक्षमान् सर्वे नाशयु सर्वीष्य यातुभान्युः ॥ ५ ॥

धर्म—(तस्मात् पश्यता । विष्वंया ।) एवं सर्व रोप तु मातोते हैं (मूगा । अस्मा । इव इतरते) ऐसे मूल और अश ही बताए हैं । (पश्च गुरुस्तु सौम्यत ।) जो तु गुरुपूर्व वीरें प्रात् दूषा हा (पश्च । पा अपि समुद्रियं असि) अब ता तु बहुरहे प्रात् दूषा हो ॥ १ ॥

(दृमयो । नाम समर्थ ।) ऐसे दोनोंष्य नाम किता है (यस्मै विशिष्टातये) इवम् भीरोन्तरहे जाये ॥ २ ॥

(१५) कुष्ठनाशनम् ।

(जायमायः वेदः कुष्ठ) एवं कर्मेनाका दिव्य पुण्युप इति वक्तव्ये (दिमवत्स्यर्ते तेतु) दिव्यान् त्वंतरहे जाये । (सर्वे तुक्षमाने नाशय) एव इतक वक्तव्यो यह वर (सर्वाः यातुभास्मौ) जोर सर वाला देनेवाहे रोमो वर वर ॥ १ ॥

ते उठ । (ते भीषिं नामानि) ऐसे तीन नाम हैं (नयमारा) व नामेनाका (नयारिपः) व हानि पूर्वाने वाला (नयायं पुरुषा दिव्यत्) हानि व पूर्वाने वह पुरुष । (यस्मै त्वा सार्वं प्रातः अयो दिवा परिग्रीष्मि) विष्टुते यिहे तेरों मै तामधे, व्यातुक्षात्मा और दिव्यम वर्षवा करता है ॥ २ ॥

(त माता भीयसा नाम) ऐसी माता भीरु वालेकाली है (भीयस्तः नाम ते पिता) भीय देवेनाका ऐसा विना ॥ ३ ॥

(अोपर्धीर्वा वर्तमः वसि) भीलविदोंव व वर्तम है (अवक्षात् वागतां इष्य) ऐसा वैक अस्त्रेवालीम् भर्त् (अवर्ही व्यायाः) वालरोंव भाग होता है ॥ ४ ॥

(दाकुतुष्यो विहितेभ्युद्दिरादिः) विहित दूषेतत्त्व शास्त्रुवीष्य दीन वार (वादिव्यव्या वरि विः) अरि व्यावीष्य दीन वार (विभव्येषेययः विः ज्ञातः) विष्टु दीन वार वर्षवा दूषा । (स । कुष्ठ । विश्वमेष्टवः) एव इति वर रोमोंव भागाव है । वा (सामन साक्षं तिष्ठति) तेजः वाप रहता है । दूष वर अरोदा वाप वर जोर वाला देने वाले वर रोमीवा वाप वर ॥ ५ ॥

अथस्यो देवसदनम् तु शीर्षस्यामिना उभि । तत्रामृतस्य पर्यन् ततः इष्टा प्रजापत ।
ग इष्टा उिष्मैपञ्चः सुक्ष मार्गन तिष्ठति ।

तुक्षमानु गर्वं नार्यप् सर्वीष यातुष्णायृः ॥ ६ ॥

हिष्मैपयी नार्यन् दिष्मैपयं पना त्रिपि । तत्रामृतस्य पर्यन् ततः इष्टा प्रजापत ।
ग इष्टा उिष्मैपञ्चः सुक्ष मार्गन तिष्ठति ।

तुक्षमानु गर्वं नार्यप् सर्वीष यातुष्णायृः ॥ ७ ॥

पय् नार्यप्रथम् ततु यत्रे हिष्मैतुः त्रिपि । तत्रामृतस्य पर्यन् ततः इष्टा प्रजापत ।

ग इष्टा उिष्मैपञ्चः सुक्ष मार्गन तिष्ठति ।

तुक्षमानु गर्वं नार्यप् सर्वीष यातुष्णायृः ॥ ८ ॥

प रथ् पद् पूर्व इत्यासा य योग्या इष्ट इष्टयृः । य या यमा यमाग्न्युत्तमाति उिष्मैपञ्चः ॥ ९ ॥
प्रिष्माव तुक्षविर्वं पदुदिष्मै इत्यनः । तुक्षमान उिष्मैपर्यायप्रगाध्यं पर्व तुक्ष ॥ १० ॥ (१०)

(४०) मणा ।

(ऋवि — वक्षा इष्टा — इत्यरतिः उिष्मैपयः ।)

य वं उिष्मैपर्यायप्रगाध्यं पर्व तुक्षविर्वं पर्यायः ।

प्रिष्माव तुक्षविर्वं पर्यायप्रगाध्यं पर्व तुक्ष ॥ ११ ॥

मा न् ब्राह्मी मेर्था मा अस् प्र प्रविष्टन ।

सुप्यदा युय स्वन्दस्युपृष्ठोऽहं सुमेघा वर्षस्वी ॥ २ ॥

मा मौ मेर्था मा नौ द्रीर्था मा नौ हिसिटुं यत्पवः ।

क्षिवा नुः ष सुन्त्वायुपे क्षिवा भवन्तु प्रापर्तः ॥ ३ ॥

पा नुः पीपरुषिना व्योर्तिप्पत्री दमस्तिरः । तामुस्मे रासत्रामिष्ट् ॥ ४ ॥ (३०)

(४१) राष्ट्रे पलमोजस्य ।

(क्षणि — प्रक्षाप । वेचता — तप ।)

मद्ग्रुमिष्ठन्तु ऋषयः स्वर्विदुस्तपी द्रीक्षामुपुनिवेदुरव्रें ।

वर्षो राष्ट्र वलमोजस्य छार्व वदम्भे द्रुवा रेपुसन्मन्तु ॥ १ ॥ (३१)

(४२) प्रथायशः ।

(क्षणि — व्रक्षा । वेचता — व्रह ।)

प्रस् होता व्रह युहा प्राह्मणा स्वरवो मिताः । अप्यर्वर्यश्चणो आतो प्रस्त्रणोऽन्तर्दितं द्विः ॥ १ ॥

प्रस् सुतो पुत्रवीर्वलभा वेतुर्लक्षिता ।

प्रहु युहस्य तर्वे प्रात्मिको ये इविष्ठतः । व्रमिताय स्वाहा ॥ २ ॥

मर्त्य — हे (व्राप ।) क्षणे । (ना मंडो मा व्र प्रथिष्ठम) इमारी उत्तिष्ठमेतन न क्षणे (मा व्रह) इयसे इत्या न वीच क्षणे (चु-ब्रापा यूय अ॒ व॒ व॒) इयाप्र प्राप्त हुए हुम पहरे प्राप । (वप्पहुता भाई) शर्वित तुला मैं (सुमेघ वर्षस्वी) उत्तम तुलिताव और तेजस्वी क्षणे ॥ १ ॥

(ना मेधा अ॒ विसिटुं) इमारी भेषाभे वानि व वर्षस्वाक्षो । (मा वीर्था मा) इमारी दीक्षाभे वानि न वर्षस्वाक्षो (वत् मा तप ।) वा इमारा एत है (मा विसिटुं) वर्षस्व वात न क्षणे (मा भायुये यावा सम्नु) इमारी नन्ति इने वर्षस्वस्त्री हों (मातारा विवा : मच्चन्तु) यातार्व-वर्षस्वारपे इमार इने वर्षस्व वर्षस्वस्त्री हो ॥ २ ॥

हे वर्षस्वी ! (वा व्योर्तिप्पत्री ना पीपरत्) वो प्रथावलभी हैं एवं एवं करती हैं और (तमः तिरा) वर्षस्व भर करती हैं, (ती एवं वसो रासता) वह वर्षस्व हैं दो ॥ ३ ॥

(४३) राष्ट्रे वलमोजस्य ।

(मद्ग्रु हृष्टक्षतः वर्षस्वयः) वर्षस्वमी हृष्टा वर्षस्वते वर्षस्वस्त्री वर्षस्व (व्योर्ति तपः वीर्था वर्षस्वेतुः प्रात्मेत्य तप और वर्षस्व वर्षस्व भरते हैं । (तता राष्ट्रे वर्ष वोद्धा व वासते) वर्षस्वे एहु हुला और वर्षस्व भी वर्षस्व हुला । (तत् वसी) वर्षस्वे वायोगे (वेता : तप सं सम्नु) वानी पुरुष विवम ही ॥ १ ॥

वर्षस्वोक्ते प्रस्त्रमधे यात् वा है प्रस्त्रिने वानी लोग एहुके समाने विवम होपर एक भेता क्षणे ॥

(४४) व्राप्यशः ।

(प्रहु होता) व्रह देख हुला है । (व्राप्य प्रापा) व्रह ही व्रह हुए हैं । (वरवा व्राप्यामा मिताः) सह व्रह पासे हैं । (व्राप्यामा व्राप्युः आता) प्रस्त्रमेव वर्षस्व हुला है, (व्राप्यामा इविः वान्तर्दित) वान्तर्दित वर्षस्व ही वर्षस्व हुला है ॥ १ ॥

(पुत्रवतीः व्राप्यामा व्राप्य) वैष्ण मरी वर्षस्व व्या है, (व्राप्यामा वेदिः वर्षस्विता) वर्षस्वे वैष्ण वैराग्य वर्षस्व वर्षस्व है । (ये इविष्ठतः वामिता) वी इसि तैवार वर्षस्वाक्षी वर्षस्व है । (वामिता व्यावा) वाम्नु वो है वर्षस्वे इने वर्षस्व ही ॥ २ ॥

अंहोमुचे प्र भरे मनीषामा सुप्राप्ये सुमरिमावृजानः ।

इदमिन्दु प्रति हृष्य गुमाय सुत्याः संनु यद्बानस्य कामाः ॥ ३ ॥

अंहोमुचे वृपर्म युश्चिपानो विराखन्त प्रथममन्तुराणीय् ।

अपां नपातमुधिनो हुये विष्य इन्द्रिये ए हनिरुय देहुमोदेः ॥ ४ ॥ (१११)

(४३) प्रह्ला ।

(क्रापिः — प्रह्ला । देवता — वह वहो देवता ।)

यत्र ग्रामविदु यान्ति दीक्षया तपसा सुह ।

अभिर्मा तत्र नयत्वमिर्मेवां देहातु मे । अमये स्वाहा ॥ १ ॥

यत्र ग्रामविदु यान्ति दीक्षया तपसा सुह ।

पायुर्मा तत्र नयतु वायुः प्राप्तान्देहातु मे । पायत्रे स्वाहा ॥ २ ॥

यत्र ग्रामविदु यान्ति दीक्षया तपसा सुह ।

पूर्यो मा तत्र नयतु चधुः पूर्यो देहातु मे । सूर्योप स्वाहा ॥ ३ ॥

यत्र ग्रामविदु यान्ति दीक्षया तपसा सुह ।

चन्द्रो मा तत्र नयतु मनेष्वद्रो देहातु मे । चन्द्राय स्वाहा ॥ ४ ॥

यत्र ग्रामविदु यान्ति दीक्षया तपसा सुह ।

सोमो मा तत्र नयतु पयुः सोमो देहातु मे । सोमाय स्वाहा ॥ ५ ॥

धर्म—(अंहोमुचे मनीषी प्र भरे) पापसे छुटानेकालेके लिये धर्मणा गावा है। (सुप्राप्ये सुमरिमावृजानः) वत्तम इत्यन वर्तेनालेके लिये इत्तम मरि देल है। हे इत्य । (इत्य हृष्ये प्रति गमाय) पाप हरि स्तीकार कर । (वहमात्मय कामा सत्याः सम्मु) पवनापर्वते इत्तर उत्तर हो दै ॥

(अंहो—सुर्व) पापसे छुटानेकामे (विद्यियामां तृपत्ते) पूर्वनीतेके बन्दर वापर्यवाद् (वापर्यावौ प्रथमे विष्यात्मत्तं) वहोंसे प्रथम विराज्यन (अपाय म—पात्र) वत्तमें न गिरावैकमेवी और (अभिन्ना दृष्टे) अभिन्नी रेसोद्य विष्या बरता है सुरे (विद्या) कुरिको (ओत्रः) वापर्य और (इग्नियेष्य इग्निय) इग्निय एकिसे हरिव दे ॥ ४ ॥

(४३) प्रह्ला ।

(दीक्षया तपसा सुह) वायु और तपके विष्य (यत्र ग्रामविदु यान्ति) वहो व्रहानी जाते हैं । (अद्वितीया मा तत्र नयतु) अभिर्मा मुह वहो के वाय और (अद्वितीया म भेदां देहातु) जाम मुहे भेदा तुष्टि देते । अभिर्मिते वत्तम हो ॥ १ ॥

॥ १ ॥ (वायुः मा तत्र नयतु) वाय मुहे वहो के वाय (वायुः प्राप्तान्द्र मे देहातु) वाय भरे बन्दर अबोद्ये वापर दे ॥ १ ॥

॥ १ ॥ (सूर्यः मा तत्र नयतु) सूर्य मुहे वहो के वाय (सूर्यः मे वस्तुः देहातु) सूर्य मुहये वाय विष्य ॥ २ ॥

॥ २ ॥ (चन्द्रोः मा तत्र नयतु) चन्द्र मुहे वहो के वाय और (चन्द्रः मे मनः देहातु) चन्द्र मुहये मन विष्यत हो ॥ २ ॥

॥ २ ॥ (सोमः मा तत्र नयतु) चोम मुहे वहो के वाय भार (सोमः मे वयः देहातु) चोम मुह विष्य ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

पत्रे प्रश्नविदु यान्ति द्वीक्षया तर्पसा सुह ।

इन्द्रो मा तत्र नयतु चलमिन्द्रो दधातु मे । इन्द्रायु स्वाहा ॥ ६ ॥

पत्रे प्रश्नविदु यान्ति द्वीक्षया तर्पसा सुह ।

आपो मा तत्र नयन्त्वमृतं मोर्च तिष्ठतु । अङ्गः स्वाहा ॥ ७ ॥

यत्रे प्रश्नविदु यान्ति द्वीक्षया तर्पसा सुह ।

प्रूपा मा तत्र नयतु चुक्ता प्रथं दधातु मे । प्रूपाये स्वाहा ॥ ८ ॥ (११)

(४४) भैषज्यम् ।

(ऋषि — भृगु । वेदाः — मात्रनम्, वर्णम् ।)

आयुषाऽसि प्रतरेण विम्रे मेपुच्छमुष्यस । उद्दीक्षात् त्वं श्रीताते शमापो अमर्यं कृषम् ॥ १ ॥

यो हरिमा ज्ञाया यौड़मेदो विसर्पकः । सर्वे ते यस्यमहेभ्यो वृहिनीहृन्त्वाऽनेनम् ॥ २ ॥

आङ्गान पूर्विष्यां ज्ञातं मुद्रं पुष्टुष्मीवनम् । कूमोत्थप्रेमायुक्तं रवज्ञिमनागस्य ॥ ३ ॥

प्राणं प्राणं प्रायस्कासो जसवे मुहु । निश्चिते निश्चित्या नुः पासेभ्यो मुहु ॥ ४ ॥

सिद्धोर्गमीडसि विषुलां पुष्पम् । वातः प्राणः सूर्यमधुष्मिष्टस्यर्थः ॥ ५ ॥

अर्थ— ॥ १ ॥ (इन्द्रः मा तत्र नयतु) इन्द्र मुखे वहा के बाव और (इन्द्रः मे वर्ळं दधातु) इन्द्र मुखे वहा के बाव और ॥ १ ॥

॥ २ ॥ (वापः मा तत्र नयतु) वलभवाह मुखे वहा के बाव और (असूतं मा तप तिष्ठतु) असूत मुखे प्रल दे वाव ॥ २ ॥

॥ ३ ॥ (प्रूपा मा तत्र नयतु) प्रूपा मुखे वहा के बाव और (ज्ञाया मे वृह दधातु) प्रूपा मुखे वाव देवे ॥ ३ ॥
(४४) भैषज्यम् ।

(आयुषः प्रतरव्यं भसि) एव आनुष्ठ वदावेदाता है, (विम्रे मेपुच्छ उच्यते) एव विलेष स्फूर्तिवाका वीचन व्यथा है। (तत् आवाह । त्वं दीक्षाते) थे हे वाव । त शान्ति वदावेदाता है (माया) जसे । (अमर्यं धां कृतं) भे विम्रेवता और सुख धर्ये ॥ १ ॥

(या हरिमा) वे वापुरोग है (ज्ञायाया) वो जीके होवेवाक्ष रोग है, (वृग्मेवः) वृग्मेवो तोवेवाक्ष रर्ह है (विसर्पकः) विसर्पकं कुण्डीया रोग है वे (सर्वं यद्यम ते भंगोरुपः) सर्वं रोग भे भंगोरुपे (वृद्धम वहा मिदंग्नु) वह वाव वारेर विलाके ॥ २ ॥

(मात्रनं पूर्विष्यां ज्ञातं) वह वाव पुष्टिपर वाव वहा है। यद (मद्रं पुरुषमीवनं) वावानम्भरी वोर पनुभ्योंके वीवन देवेवाक्ष है, वह मुखे (वदामायुक्तं हृषोति) मरनहित वाव है (रथज्ञृति) और वहे वाव देवेवाक्ष और (अमावास्ये) वापुरीत वावाता है ॥ ३ ॥

हे (प्राणः) वाव ! (प्रायस्कासो वायत्वं) वेर वस्त्रं प्राणकी रक्षा वार, हे (असो) वाव ! (असते मृदु) ग्रामी शुभी वार, हे (विभीते) तुर्पते ! (विहृत्याः पादेवयः वा मुख्यः) दुष्टिके वाक्ष हैं शुभा ॥ ४ ॥

(सिद्धोः गमीः भसि) त विष्टुष्टा वसे ॥ (विषुलां पुष्पे) विषाक्षीवा एव धूत है (वातः प्रायः) वहे प्राय वाव है (वर्षः वासुः) पूर्वं वह है (दिवः प्रयः) पुरोक वीष्टिक रह है ॥ ५ ॥

वरीकंदी विषाक्षी और विषुल्प हैव तुम्हरे अमर है ।

देवाज्ञन् ब्रैक्कुषु परि मा पाहि विश्वतः । न स्वो तरन्त्योपेषयो वाणीः पर्वतीया उत ॥ ६ ॥
 धीरुद मम्ममवासुपद्रष्टोहामीवाचारुनः । अमीयाः सर्वाद्यावर्यज्ञाश्वर्यदमिमा इतः ॥ ७ ॥
 पूर्वीरुद रावन्वरुणानुतमाहु पूरुपः । रसात्सहस्रवीर्य मुञ्च नः पर्यहसः ॥ ८ ॥
 यदायौ अव्यन्ना इति यथुपेति यदृचिम । रसात्सहस्रवीर्य मुञ्च नः पर्यहसः ॥ ९ ॥
 मित्रवद्य स्या वर्णयानुप्रेप्तुराकान । तौ त्वानुगत्य दूर मोगाय पुनरोहतु ॥ १० ॥ (१५०)

(४१) आशुवनम् ।

(क्षणिः — संग्रह । वरता — वास्तवम् मन्त्रोक्तवेष्टा ।)

अमाहृणमिव सुमयेन्कृत्यां कृत्याहर्तो ग्रहम् । चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्दीदिः पूरीरवि चृणाङ्गन ॥ १ ॥
 पदुसासु दुष्प्रभ्यं पद्मोपु यव्य नो गृहे । अनीमग्रस्त च दुर्दीदिः प्रियः प्रति मुञ्चताम् ॥ २ ॥
 युपामर्थ ओक्तसो वानुधानमेष्वात्मविं जातिर्वेदसः ।
 चतुर्वीर पर्वतीय यदाज्ञानु दिशः प्रदिशः करुदिष्ठिल्लिखास्ते ॥ ३ ॥

अथ— दे (देवाज्ञन) विष्य वरत । तु (कै-कक्षुरु) वीत केलोंमें भेड है । (मा विश्वतः परि पाहि) मेरी पव लोरेत रक्त कर । (वाणीः वत पयतीयाः) वाणी और पवतर देवेशाली (भोवधयः स्या न तरणित) जीविया दुसरे पद्मर नहीं होती ॥ १ ॥

(एकोहा ममीकवातनः) रक्षाओंच मारेशाली और रोमोंके इत्यवेशम वा । (इवं मर्य वि अवाद्युपत्) इव मन्त्रवनमें लाला है [इमरे पास वरतरक लाला है] वर (सर्वाः अविवाः वातपत्) परं पर्योक्ते दूर वरता है और (इतः ममि मा माशायत्) पहासे वास्तव रेतीच वात वरता ॥ २ ॥

(दे वरज राम्य) वरन रामा । (पुरुष वहु इव भद्रतं भाव) उस वहा पहुत भरत वरत देवता है दे (सद्यर्वीर्य) इतो वक्तिर्वेदि तुष । (तस्यात् भंहस नः परि मुञ्च) उष पापसे इमे कृषानो ॥ ४ ॥

दे (माया) कलो । हे (मर्यादा) न मरने वेत । हे वरत । (इति पूर्व ऋचिम) देषा वो इन्हे वहा दे इमरे वक्तिरु । तु इस पापसे हमे कृषानो ॥ ५ ॥

हे वातन ! मित्र और वरन (त्वा भद्रु पेपतु) तेरे लोके वात है (तौ त्वा दूरं भद्रपत्य) वे रोनों तेरे लोके द्युष्म वात (मोगाय पुनः भोहतु) मोक्षे दिये पिर दुसे लाने ॥ ६ ॥

(४१) माशुवनम् ।

हे वरत ! (व्यापात् लक्षणे संवयन् इव) जातवे वक्तव वरनके समान (रुद्याहतः गुह छत्या) रुद्य अम वरेताहेके पर वहाके विशुद्ध कर्मये वर्ता रहते हैं । (वक्तुः मवस्य दुर्दीदिः) वातके इशोंसे इन्हे वरेताले दुष दिरवाहेती (पुषीः अपि धूण) वक्तिवा तीव ॥ १ ॥

(पृष्ठ भस्यासु दुष्प्रभ्ये) वो इमरे भवतर दूर वर है (पृष्ठ गोपु) वो गोमोंमें और (पृष्ठ अ मः गृहे) वे इमरे वरमें हैं (मित्रः दुर्दीदिः अ-वाम-न्या) विष दूर हरवताय वरयाली (तं प्रति मुञ्चतां) वरसे वातप वी— [दुखे वात वर वर वर वर] ॥ २ ॥

(अर्प ऋक्ष) वक्तोदी वाकि और (भोहताः वानुधानः) वरमर्थे वरेताला (जातवेदसः वर्ते मपित्रात्) वाक्तवे वक्तिरे वरतव दूरा (चतुर्वीरं पवतीय पव वाज्ञाने) वात वीरोदी वक्तिवाल जो पर्वतर दूरा वरत है (दिशः प्रदिशः ते विवाः वरत् इत्) दिशा वेर वरारेसा वेर मिये वरताल वरेताली रहे ॥ ३ ॥

चतुर्विंशति चतुर्विंशति आङ्गने से सर्वा दिशो अमयास्ते भवन्तु ।

भृष्टस्तिष्ठासि सवितेषु चार्मे दुमा दिशो अुमि हरन्तु ते बुलिम् ॥ ४ ॥

आश्वेषे मुनिमेहे कृष्णुष्म स्नायकेना पिवेकमेपाम् ।

चतुर्विंशति नैऋतेस्यभृतुम्यो प्राणो पुर्वेम्यः परि पात्वसान् ॥ ५ ॥

अधिर्माधिनीष्ठु प्राणायोपानायायुषे वर्षेषु ओर्बेषु तेजेषु सुस्तये सुमूर्तये स्वाहा ॥ ६ ॥

इन्द्रो मेन्द्रियेणोवतु प्राणायोपानायायुषे वर्षेषु ओर्बेषु तेजेषु सुस्तये सुमूर्तये स्वाहा ॥ ७ ॥

सोमो मा सौम्येनावतु प्राणायोपानायायुषे वर्षेषु ओर्बेषु तेजेषु सुस्तये सुमूर्तये स्वाहा ॥ ८ ॥

मयो मा भयेनावतु प्राणायोपानायायुषे वर्षेषु ओर्बेषु तेजेषु सुस्तये सुमूर्तये स्वाहा ॥ ९ ॥

मुख्यो मा गुणैरवतु प्राणायोपानायायुषे वर्षेषु ओर्बेषु तेजेषु सुस्तये सुमूर्तये स्वाहा ॥ १० ॥ (१११)

३ इति पञ्चमोऽनुवाकः ॥ ५ ॥

मर्य— (चतुर्विंशति भाजने से चतुर्विंशति) चार वीरोंकी शक्तिकाल भवन तेरे शरीरपर बांधा जाता है इससे (ते सर्वादि दिशोः भवयाः भवन्तु) तेरे भिन्ने सब दिशाएं दर्शन हों । (सविता इव भार्यैः अ भवाः विष्णुसि) एवितोंके समान सभा भार्या कलकर अपने स्वामपर दिश हो । (इवाऽपिश्च ते वर्षिं भग्नि इतरन्तु) ते सब प्रशार्दे तेरे भिन्ने भवन अन्त द्वे ॥ १ ॥

(एक भक्तु) एक्षेष्व भावमें (एक मर्यि भा कृष्णुष्म) एक्षेष्व मर्यि वदा (एकेव स्माहि) एक्षेष्व भाव स्वाम अर्, (एकौ एकौ पिता) एक्षेष्व एक्षेष्व भाव (चतुर्विंशति) चार वीरोंकी वज्राका भवन (चतुर्विंशति नैऋतेस्यः वर्षेम्यः) चार राष्ट्रोंकी वज्राको तदा (प्राणो) वज्रवेनाके रोपये (असाम् परि पात्) इयापि एक अर्थे ॥ ५ ॥

इस भवते ओ ग्रुप हात बहा है उत्तर व्यवेदन करना चाहिये ।

(असिता अग्निः मा भवन्तु) असिते भाव अग्नि संही रक्षा द्वे । (प्राणाय भवामाय) भावके लिये असाम्ये दिशे (भायुष्मे वर्षेषु) भावुष्मे दिशे तेजेषु लिये (भावेषु तेजेषु) भावर्षीके लिये अवितोंके लिये (भास्तये सुमूर्तये भावा) भवाम्यके लिये उत्तम देशर्वके लिये परमर्य बरते हैं ॥ ६ ॥

(इवाऽपिश्च भवतु) इव इन्द्रविद्वे भैरो रक्षा द्वे ॥ ७ ॥

(सोमः मा सौम्येष्म भवतु) दीप दीपकी भक्तिये भैरो रक्षा द्वे ॥ ८ ॥

(मगः मा मगोम भवतु) सप्त भैरो रेषवेषु रक्षा द्वे ॥ ९ ॥

(मरुतो मा पर्यैः भवतु) मरुत मेरी पर्योदि रक्षा द्वे ॥ १ ॥

४ पद्मा पञ्चम अनुवाक समाप्त ॥

(४६) अस्तृतमणि ।

(कथि । — प्राणापति । देवता — भस्तृतमणि ।)

प्रभापतिष्ठा भग्नात्प्रयममस्तृत वीर्याप्ति कम् ।

वर्ते भग्नाम्भायुषे वर्षेसु ओङ्कसे च लौप्य घास्तृतस्त्वामि रेष्टु ॥ १ ॥

कुर्भस्तिष्ठतु रख्नप्रभाकुमस्तृतेम मा स्ता इमन्युणयो यातुधानोः ।

इन्द्रे इत्य दस्यूनव्य षूनुष्य पूरन्पृतः सर्वाङ्गप्रान्ति पैहस्वास्तृतस्त्वामि रेष्टु ॥ २ ॥

श्रवं च न प्रार्दन्तो निभन्तो न तस्तिष्ठे ।

तस्मिन्निन्द्रः पर्यदस्त्वं चक्षुः प्राणमयो बलमस्तृतस्त्वामि रेष्टु ॥ ३ ॥

इन्द्रस्य स्ता वर्णेणा परि घापयामो यो देवानामधिराजो षुभूते ।

पुनस्त्वा देवाः प्र पर्यन्तु सर्वेऽस्तृतस्त्वामि रेष्टु ॥ ४ ॥

अभिसुणावेकश्च वीर्याप्ति सुहस्ते प्राणा अस्तिमस्तृते ।

स्याग्रः षष्ठ्यन्तमि तिष्ठु सर्वान्यस्त्वा पूर्वापादधरः सो अस्त्वास्तृतस्त्वामि रेष्टु ॥ ५ ॥

षट्पादुल्लिङ्गो मधुमान्यवस्वानसुहस्तप्राणः षुतयोनिर्वयोऽवाः ।

षुभूते मयोभूषोर्जीस्त्वाम् पर्यस्त्वामास्तृतस्त्वामि रेष्टु ॥ ६ ॥

(४७) भस्तृतमणि ।

मथ— (प्राणापति स्त्वा) प्राणापतिने दुष्टे (प्रथम क भस्तृत वीर्याप्ति भवान्तात्) पातिले दुष्टपानी भस्तृत मनिहो वर्ते किंच वाचा वा । (तत् ते वायुषे) वह ऐरे वर्ताराव लाकुके किंचे (वर्षेसे ओङ्कसे) रेष्टके किंचे वापर्यके किंचे (वस्त्राप च) वर्तके किंचे वाचा वा । (भस्तृतः त्वा भमि रेष्टु) भस्तृत मनि हेती रका वरे ॥ १ ॥

(भस्तृत अप्रमार्द इत्य रेष्टु) भस्तृत मणि प्राणार न करता इत्या इस्ता रक्षन रक्षेके किंचे (उद्धर्वः तिष्ठतु) अवर रित्य रेते । (यातुधानः पर्ययः त्वा मा वमन्) वात्ताना देवेशावे पर्य दुष्टे हर्षिते न पृष्ठावे । (इन्द्र इत्य इस्त्यन् पर्य षूनुष्य) इन्द्रके वरान लकुलिंगके विका रेते । (पूरन्पृतः सर्वान् शाश्वत यि सहस्र) वरान्ये इमका वर्नेशावे सर्व षुभूतोंके परम्पर वर । (भस्तृतः त्वा भमि रेष्टु) वलुत मनि लेता रक्षन वरे ॥ २ ॥

(शात च प्रहरन्तः न) प्राहर वर्तेशावे थी और (निग्रस्ता न तस्तिष्ठे) मार्नेशावे भी इस्ते शातमे ठहर नहीं रक्षे । (तस्मिन् इस्त्वा) इस्ते इत्यने (अस्तुः प्राप्तं वर्यो यज्ञे पर्यदत्त) यही प्राप्त और वर विका । अप्यत वरि लेते एव रक्षन रेते ॥ ३ ॥

(इन्द्रप्रथम स्ता वमना परिपापयामः) इन्द्रके अप्यते दुष्टे इत्य दोषेते हैं । (यः देवामां भविराजः षमूप) ये देवोप्य अविहय इत्या है । (पुन स्ता सर्वे देवाः प्र पर्यन्तु) ये दुष्टे थीं देव भैरव इत्ये अस्तृत मनि हेता रक्षन वरे ॥ ४ ॥

(अस्मिन् मनो) इस मनिये (एक शात वीर्याप्ति) एक थीं कीर्ते हैं (अस्मिन् भस्तृते सहस्रं प्राणाः) । इस भस्तृत मनिये इवार वाची वर्षियाँ हैं । (स्याग्रः सर्वान् शाश्वत यि तिष्ठु) स्याग्र वर्षाव वर षुभूतोंके परामृत वर । (यः स्ता पूरन्पृतः) यो ऐरे अवर वर्षेश्वरे अक्षय वरे (सा अधरा भस्तु) वह नहीं गिरे । अल्पामयि हेता रक्षन वरे ॥ ५ ॥

(षुतात उस्तुतः) थीं विक्षय इत्या (मधुमालू पर्यक्षालू) मधुये नरा इत्य एव (साहस्रपाप्तः शातपोमिः) अवर प्राप्तप्रियिका इसक वाह है थी इत्यति स्ताव है (वर्योधाः द्याम्) अबुदा वारन वर्तेशावा इस्तान वर्नेशावा (मधाम् यः उक्तस्त्वान् च) कुछ रेनेशावा वर्षियाम (पर्यस्त्वाव च) इत्ये एव वह मनि है । वह अल्पात मनि हेता रक्षन वरे ॥ ६ ॥

यथा स्वमुच्चरोऽसौ असपुत्रः संपत्तिः ।

समावानां मसद्वधी तथा स्वा सविता करुदस्त्वैतस्त्वाभि रघु

॥ ७ ॥ (४९)

(४७) रागिं ।

(जगिः — गोपय । देवता — रागिः ।)

आ रांग्रि पार्थिषु रघुः पितृरप्रायि भासमिः ।

त्रिवः सदीसि बृहती वि तिष्ठु आ स्वेष वर्षेणु तमः ॥ १ ॥

न यसां पुरं दर्शे न योगुवदिश्चभूमां नि विष्टु यदेष्टि ।

अरिष्टासस्त उवि तमस्त्वतु रात्रि पारमंशीमहि मद्रै पारमंशीमहि ॥ २ ॥

ये हे रात्रि नूचध्वंसो द्रुष्टार्ता नवतिर्नवे । उष्मीतिः सन्त्यष्टा उतो हे सुप्त संस्तिः ॥ ३ ॥

पुष्टिभ्य पद् च रेवति पञ्चाश्वस्य द्व सुमयि । त्रुत्वार्थस्तारिष्ट्यु ग्रयस्तिष्ट्य वाक्षिनि ॥ ४ ॥

द्वौ च ते विष्टु तिष्ट्य ते राघ्येष्ट्वदशावुमाः । लेभिन्नो अथ पापुभिर्नु पाहि दुहितादिवः ॥ ५ ॥

रघु माकिन्नो अभृत्युस ईष्टु मा नोऽदुःखसे ईष्टु । मा नो अथ गतो स्वेनो माकिन्नो वृक्षे ईष्टु ॥ ६ ॥

वर्ष— (यथा त्वं उत्तरः भसा ।) देवा त् उत्तर हे भोर (असपत्नः सपत्नाः) ब्रह्मवेद और द्वितीय मात्रेवाना हे त्या (समावानां वसी असत्) एवादीयोंके बहर्ये करनेवाला हे (यथा स्वा सविता करत्) देवा द्वये चरित्वाने किया है । असूत्र मनि लेणी रक्षा करे ॥ ७ ॥

(४७) रागिं ।

हे रात्रि ! द्वये (पितृः भासमिः) पुरी विकारे स्वां वेष्ट (पार्थिष्ट इतः) दृष्टिमें प्रदेशोन्मे (आ अप्नायि) भर रिका है । त् (बृहतीः रघीः विष्टि) पुरीके रक्षांये (वि विष्टु से) भरत रघी है । (त्वेष्ट तमः मा यत्तु) तेवसी भीरा पुरः वा राह है ॥ १ ॥

(यथाः पारं न दृष्टो) विकारा पार दिकारं नहीं देता । (न योगुवत्) विकारे न कुछ अथव असम ग्रीष्म होता है, (विष्ट्य अस्यो वि विष्टाते) यथा इत्येष भासम भरते हैं, (यत् पवति) वी वलता है [यह द्वये विकार भरता है] हे (उवि तमस्यति रात्रि) वसी अव्यक्तातारी रात्रि । (अ-रिष्टासः) न विकार देते हुए हम (ह पारं अभृत्युमहि) लेणे गत वृक्षिणी (मद्रै ! पारं अभृत्युमहि) है अस्मान करनेवाली । लेणे गत हम जावेहै ॥ २ ॥

हे रात्रि ! (दे से दृष्टस्याः) जो लेणे युक्तोद्या निरीक्षण करनेवाले भीर (द्रष्टारा) देवोपाये रक्षा है (अवर्तीः नय) वर्षे भार वी (अशीतिः नयाः सतिः) वसी और भार (उत ते सत ससतिः) भीर भार और वर्ष है ॥ ३ ॥

(पितृः व पद) भार भार च रे (रेपति) अवकालि रात्रि । (वैष्टायत् पञ्च) वैष्टाय और पांच हे (सुप्तयि) द्वय देवेत्यात्म रात्रि । (वैष्टायत् वैष्टारिष्ट्यु च) भार भीर वालीय है (याक्षिनि) विकारी रात्रि । (अया विष्ट्यु च) भीर तेवात् है ॥ ४ ॥

(द्वौ व ते विष्टाति च ते) वा भार वीं रे रात्रि । (अवर्ता प्रकाशा) अवर्तेयम व्यात रक्षा है । हे (दिवः वुदिता) पुष्टाकी वृक्षी । (लेभि पापुभि) वन राघ्येष्ट्व (अथ वा तु पाहि) आव द्वारी रक्षा ॥ ५ ॥

(रक्ष माकिन्नो) एकी रक्षा कर । (अप्यशीसः मा ता इष्टात) वारी इष्टर इषामी व रो (मावः दुर्व्यास ईष्टात) न इष्टर दुर वींवितावा ईष्टिय दे । (अथ गया लेन वा मा) आव नीबोद्या भीर न इष्टर अपिष्टर वर्षे (मध्यीमी दृष्ट मा वा ईषात) भीरोद्यि भट्टिये इम वर्षमें करे ॥ ६ ॥

माश्चोनां मद्रे उस्करो मा नुणा पातुषान्यः ।

परमेश्वरः पश्यभि स्तुना धौत्रु दस्करः । परेण दुर्बती रक्षः परेणाधायुर्पर्षतु ॥ ७ ॥

अर्थ राशि तृष्णुममशीर्षाणुमहि रुण । एन एक्स बन्मवास्तेन त द्रुपदे वहि ॥ ८ ॥

स्वप्नि रात्रि दसामसि स्वपित्यामसि चागुहि । गोम्यौ न चुम्हे मच्छार्द्येभ्यः पुरुषेभ्यः ॥१॥ (१५५,

(४८) रात्रिः ।

(स्मृतिः — योग्यः । द्वेषका — सम्भिः ।)

अथो यानि च यस्मौ ह यानि चान्तः परिषम्भिः । यानि ते परं दयसि ॥ १ ॥

रात्रि मातृरुपसे नः परिं दृष्टि । उपा नो अह परि दद्वास्वदस्तुम्पे भिमाशरि ॥ २ ॥

यस्ति चेद् पूर्वति यस्ति चेद् सरीमुपम् । यस्ति च पूर्वतायासस्तु वस्मारं राशि पाहि नः ॥ ३ ॥

सा पश्चास्थाहि सा पुरः सोच्चराद्बुद्धव । गोपाय नो विमावरि स्वेवारस्त इह स्मैति ॥ ४ ॥

ये रात्रिमनुष्टिष्ठन्ति ये वर्ष मृतेषु जाग्रति ।

पूर्वोन्दे सर्वानुषिद्धं ते न आत्मसु ज्ञाप्यति ते नः पश्चात् ज्ञाप्यति

अर्थ— हे (भट्टे) कृष्णाय देनेवाली रसी । (अन्नाहारी तस्करा मा) बोहोध चोर और (नुणी पातुपाणी मा) मनुष्योंके दृष्टि देनेवाले इमें कष्ट न हों : (स्ट्रेंग तस्करा) चोर और बाल (परमेश्वि परिष्मिः पावतु) एके मारपे भाग चाँच । (दृष्टवीर रक्षुः परेष्य) दांतवासी रसी [शब्द] (परेष्य भावापुः अर्थतु) एके मारपे पांची मास बाप ॥ ५ ॥

“हे राजा ! (व्यापक) भोर (उपर्युक्त) गुप्त कालेश्वर (महिं) सांख्ये (व्यशीर्ण्य) विषये हील कर । (बृक्षम् इन् कामय) मेहिंवेदे वस्त्रेष्वीषं (लैग त्रृपत्ये वस्त्रि) उपर्युक्ते तु चौचक्रम् पात ॥ ५ ॥

ऐ याह ! (त्यथि वसामसि) भैरव अन्न इम रहते हैं ऐसे बालवधि (स्वपित्यामसि) इम थोड़े (बालशुद्धि) पूर्ण था । (स गोमध्यः शर्म पच्छ) इमारे गोमेंके लिये मुख दे जीर (अग्नेभ्यः पुरुषेभ्यः) थोड़ेकि लिये और पुरुष-भित्रि लिये प्रस्तु दे ॥ १ ॥

(४८) रामि ।

(यात्रा या विद्युत् या सूर्यो इति) जो इस बाबत है (यात्रा या परीणामि यस्तः) जो संदृश्य है (तानि ते परि दृष्ट्यसि) वे सब लेख किए अर्थात् सही हैं ॥ 11 ॥

(रात्रि मात्रा) है रात्रि मात्रे । (मा वरप्से परिं देहिं) त इवं वरप्से वरीति पर । (वरप्सा का भाषु परिं दहानु) वरप्से विवेत् लभान् ते । ३ (विवाहसंग्रह) वरप्सिणी वरीति । (वरप्सा वराम) विवाहसंग्रहे लभान् ते ॥ ३ ॥

(पत्र किंवदं पत्तयति) जो इष्ट वाहा लकड़ा है (पत्र किंवदं इष्ट सरीसुरै) वह इष्ट वाहा लकड़ा है, (पत्र

(सा पश्चात् पाहि) वह दू पीछे हमारी ओर कर (सा पुरा) अलैसे (सा उत्तरात् पश्चात् उठ) वह दू उत्तरपे और जीवेहे हमारी ओर कर। हे (विमावरि) तेवरिकी रत्नी ! (सा गोपाल) हमें दृष्टिपत रह। (से इह स्पृहातः स्मृति) लेरे इम वहा लोगबद्ध है ॥ ४ ॥

(ये तांत्रिक भवित्वात्) या सामैंमें अद्वाल करते हैं (ये च मूलेषु ज्ञापति) जो प्रारिद्धीमें जाते हैं (ये सर्वान् पश्चन् रक्षसित्) जो इन पश्चिमी रूपा करते हैं (ते त ज्ञातमसु ज्ञापति) जे इसरों कोर्में जायते हैं (देवा पशुषु ज्ञापति) जे इसार पश्चिमोंमें जायते हरहते हैं ४५ ॥

ਦੇਡੁ ਬੇ ਰਾਤਿ ਹੇ ਨਾਮੈ ਪੁਰਾਖੀ ਨਾਮੁ ਥਾ ਭੱਖਿ ।
ਤਾਂ ਤਵੀ ਮੁਰਦਾਚੀ ਪਦੁ ਥਾ ਨੋ ਕਿਚੇਡਖਿ ਕਾਗਲਿ
(੪੩) ਰਾਤਿ

II 8 II (352)

(कृष्ण — गोपया मरणामव। देवता — राजि।)

इपिरा योपां पुष्पिर्दमूना रात्रीं देवस्त्रं सवित्तर्मगोत्स् ।

अस्त्रभासा सहित अश्रीरा पंशुं पापांशुयिवी महित्वा

अति विश्वान्यरुद्रहन्मीरो वर्णिप्रमरुद्रन्स धर्विष्टः ।

उशीरा राज्यनु सा भद्राभि तिष्ठते भिन्नै इव स्वधार्मिः
वर्णे बन्दे सुमग्नि सुखोत आज्ञेगधार्मि समना इव सोम

બૃહાસ્કાયસ્ત નર્યોભિ માંદા અવો યાનિ ગાંધીનિ પુટણ
સિંહસ્ત રાષ્ટ્રેશ્વરી પીપસ્યે ઘ્યાપ્રસ્થે દ્વીપિના વર્ષ આ દર્દે

अर्थस्य प्रमुखं पूरुषस्य मायुं पुरु रूपाणि हयुपे विमाती

सिंहा रात्रिमनुष्यी च हिमस्थ्य मावा सुखो नो अस्तु ।

अस्य स्वोमर्स्य सुभगे नि वौघ येन स्ता पदे विश्वासु दिग्

मैं नहीं बोलता। (के लिए जो भी) तो यह जो बात है। (उसकी)

सर्वे— हे तांत्रि ! (ते नाम वेद मे) तेरा नाम हम बाजते हैं। (धूतार्थी नाम मे सहित) तू भी वेदवाक्योंहै। त्वा मरद्यामः वेद) एव दुष्प्रभो मरद्याम बाजता है (सा वा विचेषं सम्बिधानप्रति) वह तू इयरे बनपर नामवीक्षणः॥

(४१) रामिः ।

(इतिरा) इसके पाले बोय (पोया पुरुषति) उसकी दैसी (दम्मूला) जहाने अधीन अपना मन रखनेवाली (संवित्ति भगवत् वृचत्वा) साक्षिता भग देवदेवी (रात्री) वह रात्रि (मध्य-महस मा) किंव देवदेव वरदेवास्त्रे प्रशक्तित (चु-हवा) सुखेप्रार्थना जहाने बोय (ज्ञान-सूत भीरा) इस्त्री बोमालाकी वह रात्री (महित्वा धारा पूर्णिमी वा पर्वी) जहाने महात्म्ये तुडी और मूर्खात्म्ये मर देती है ॥ ॥

(गम्भीर विकास के मति भवान्) पहरा अनेपे सद जगतकर का पक्ष है। (अविद्या धर्मिते भद्रहन्त) वही विकास की एक कंठे आपकर चढ़ी है। (सद्यती रात्रि) इसक अर्थमें एको भी (सा भद्रा अधि तिष्ठते) यह अस्तु अलेहकी राती उम्रुक लाती है (सिंशः सज्जामिति इष्ट) सिंश जैसा भजनी विकिष्टे पात्र लाता है ॥ ३ ॥

(वर्णे) परम अनें बोम (कम्भे) पश्चिम अनें पोम (मुमग्मे) वायम अवशायी (मृ-जाते) वायम अवशायी हे रति । तू (वा जग्न) वा असी हे (मुमग्मा इह वायम्) वा वायम मनसकी हो । (अस्त्रात् वायप्त्व) इमारी एषा पर । (वर्षायामि दाता) महुधोके रित्के लिये वा वर्षम ईर्ष है (मयो) और (पाति गच्छाति पुष्पया) वी घर्जनोद्यो उत्ति वर्तेनार्थी है इव प्रथमी रक्षा पर ॥ १ ॥

(राहती राती) इस परमेश्वरी राती (सिद्धय) लिके (पिंपड) हरिनाई, (व्याघ्रव) चन्दके (द्वीपिका)
देखि (वर्ष मा दर्दे) टैबडो भेडी है। (मध्यम बाम) लोहोके गोले (पुरुषवास मायु) पुस्तके राजस्थी भेडी है
जौर (विमर्शी) अमरकल दुर्दी राती (पुरुष करपाणि करुणे) पुरुष कर्मोंको दिका करती है। ४ ४ ५

(शिर्वा राज्ञि) अमान करनेवाली राजी (अनुसर्ये) उत्तरे तोहे (हिमव माता) उर्ध्वंषी वा माता (वा सुखावा भस्तु) हमारे चिने छाते खुहि करने बैम हो । हे (सुभगे) इत्तम भागवतावी । (वस्त्र घोमस्य) एवं स्थेष्ये (लि बोध) बांगे (ऐव विभाषाप्ति विद्यु वा बन्दे) विद्युते तै एवं विभाषेवि लेणी कल्पना करता है ॥ ५ ॥

स्तोमस्य नो विमावरि रात्रि रात्रेव ज्ञापसे ।

ब्रह्माम् सर्ववीरा मवाम् सर्ववेदसो शुभ्लन्तीरनपुर्सः ॥ ६ ॥

शुम्यो तु नाम दधिष्ठे मम् दिप्तसन्ति भे भनो ।

रात्रीहि वानसुतुपा य स्तेनो न विद्यते यत्पुनर्न विद्यते ॥ ७ ॥

मद्राविं रात्रि चमुसो न विद्ये विष्णु गोरुपं पुष्टिर्मिमर्यि ।

चमुप्मर्यि मे उशुर्ती वर्षपि प्रति स्वं द्विम्या न धामसुकथाः ॥ ८ ॥

यो भूय स्तेन आयेष्यथायुर्मस्यो रिपुः । रात्री वस्य प्रतीत्य प्रभीकाः प्र विरो हनव् ॥ ९ ॥

प्र पादु न पथार्यति प्र इस्ती न पथार्यिपद् । यो मेलिम्लुपार्यति स सर्पिष्ठे अपायति ।

अपार्यति स्वपायसि द्वुक्षे स्थाणावर्पायति ॥ १० ॥ (१०)

(५०) रात्रि ।

(ऋग्वे — गोपणः । देवता — रात्रि ।)

अथ रात्रि तुष्टैममष्टीर्णुमहि कुणु । अष्टी पृक्षस्य निवैद्वास्तेन त द्वृपदे वृहि ॥ १ ॥

मथ — हे (पिमावरि) प्रकाशदाता एति । (मः स्तोमस्य) इमारे स्तोत्रेष्व त (रात्रा हय जापसे) रात्रे
प्रवान घार बरती है (शुभ्लन्तीः इपसः) एकलेवाली उत्तमोमि (सवपीरा भस्ताम) घारे वीर तुम्हें धार हम
हीं भैर (सद्य-नेत्रतः ग्रामाम) सद बोडें धार हो ॥ १ ॥

(शम्या ह साम दधिष्ठे) भाराम द्वेतत्ती इव वर्षदा नाय तू यम्भन अरती है । (ये भम भवा भिप्ममिन)
जो भैर भवोंडा हालि पृक्षक्षते हैं (ताम् भस्तुतुपा रात्री हहि) उनके शाकोच्च ताप पृक्षलेवाली तू रात्री ही । (ये
स्तेनो म विद्यते) जो जोर है वह न रहे (यत् पुणः म विद्यते) वह विर मी न हा ॥ २ ॥

हे रात्रि । तु (मद्राम भसि) उत्तम उत्तेवाली है । (अमसा म विष्णु) ऐसा एका दूधा जाप होता है ।
(पुर्यति) विष्वद गाढ़त विष्मिति तू पृक्षती हार बारी भोज बोदा हय भार अरती है । (म उत्ताती चमुप्मर्यि
पर्षपि) तुम्हें हट्टी हुई त न नशें तुष्ट भारन भावद्याक यीर दिवना । (तव विष्या म, तू भाष्टाते नक्षत्रें के धवान
(सो वर्ति भस्तुकथा) भूविरीत्वा भी द्वृपूष्ट भर त ॥

(यः भूय स्तेन भायति) जो भाड बार जात है य (भग्यामुः मत्य रिद्वा) पाती मत्य छत्र ॥ (रात्री
वस्य प्रतीत्य) यात्री बहुदे वह त्रात त्रिद्वा (भीक्षा य चिरा म द्वन्द्व) गाय भीर विर बह बहे ॥ ३ ॥

हे रात्रि । (यात्री प्र) बहुदे गोदा बाट जन (न यथा भायति) विष्मेव वह द्वित न आ उहे । (हस्ती प्र)
दाय लोह हे (यथा न भविष्यत्) विष्मेव वह इप्ते न पतुका उहे (य भस्तिमनु दय भायात) भा बाती भाना हे
एर (संविष्ट भपायति) बीका दूधा बग जाय । (मपायति सु भपायति) वह बता दय भव्यी गह बग जाय
(भुख्ते स्थाप्ते भपायति) सुन बरे पर जाय जाय ॥ १ ॥

(५०) रात्रि ।

हे ऋग्वे । (दृष्टपूर्म भट्टि) दृष्टा द्वार द्वर्णन विष्वन उ राये (भूय भर्तीपाल हणु) विष्म इन इन
(पृक्षस्य भस्ती निवारा ॥) भेद्ये भोज भं विष्म दै । (तव दय द्वृपदे भट्टि) दृष्टे तू द्वरा द्वृपद भावदार ॥ १ ॥

पे ते राम्यन्दृहस्तीस्पृशृङ्गः स्वाश्वरैः । तेमिनो अथ पौरुषाति दुर्गाविं विष्वाहा ॥ २ ॥
 रात्रिरात्रिपरिष्पन्तुस्तरैम् तुन्याऽधृयम् । ग्रन्थीरमष्टवा इति न विरेत्पुररोतयः ॥ ३ ॥
 यथो श्राम्याकः प्रुपत्तेष्पुवासानुविघ्नते । एषा रात्रि प्र पौरुषं या अस्ती अभ्यधायति ॥ ४ ॥
 अथ स्तुत्वा वासा गोअुष्मृष्ट तस्फैरम् । यथो यो अवतुः श्विरोऽभिष्वायु निनीपति ॥ ५ ॥
 यदुषा रात्रि सुभगे विभृन्त्यप्येषु वसुः । पद्मेत्पुस्मा मौवयु यथेदुन्यानानुपायसि ॥ ६ ॥
 उपसेनः परि देहि सवाश्वार्यनागसः । उषा नो अहे भा भैवादहस्तुम्यं विभावरि ॥ ७ ॥ (१०)

अथ— हे रात्रि ! (ये त तीक्ष्णदीपाम्) यो ठेरे लोके शीक्षणे (स्वाश्वरा) करे तेज (भग्नादाः) भैवे,
 (तेभिः न अथ) उनके शाव ही बाब (विष्वाहा दुर्गाविं अवति पारय) उषा उष्ट्रोके पार पृष्ठा दे ॥ १ ॥

(वयं तस्मा भरिष्प्यस्तः) इम बटोरेष इति न उठाते द्वृए (रात्रि रात्रि तरेम) भैवे तरीमे पार हा बाब ।
 (भरातय अमूला: इव) यजु यो भा रविवाहे वमान (न वरेषु) पार न हो ॥ २ ॥

(यथा श्राम्याकः) वेशा शोकावा वाना (प्र पतन्) उषा दुषा (भपवान् न अनुविघ्नते) इडेनेत्र भिष्म
 वही हे रात्रि ! (एवा) इष उष (प्र पातय) उषो रक्षा हे (यः वसान् अभ्यधायति) वी इमसे पापचर
 वरता दे ॥ ३ ॥

(वासः स्त्रेन अय) उषोदै चोरक्षे द्यु अ (गो अम उठ तस्फैर) योनोके के वानेवालेष्ये उषा उष्ट्रोके द्यु
 अर । (यथो यो अर्वतः शिरा) और यो जोडेके विक्षी (अभिष्वाय मिनीपति) बांकर के बाबा है उषभो मी द्यु
 अर ॥ ४ ॥

हे रात्रि ! (अवाप्तः सवान्त्र न) विष्वाप इम उषम्भे (इषसे परि देहि) उषाके भिन्ने हे दी । (उषा नः
 भैवे भा भवान्) उषा इषे विष्वे भिन्ने हे हे (विभावरि) यवायाकी । (महा तुम्ये) इन दुमारे वाह द्यु
 दोरे द ॥ ५ ॥

चार रात्री सूक्त

इहा वेषव शक्तिके चार दृष्टि वर्णनहे हैं । इनमे
 एक लीक्षा दृष्ट वराहाक्षर मी लक्षी वेषव और भरहाव
 इह दोनोंका है । इनमे यो रात्रीय वर्णन है एव विषेष विवर
 पूर्ण रैख्ये वरमन है ।

* वि मा-वर्ति— विषेष उषवस्ती ॥ १३; ४३; ४५ ॥
 ५ ॥ ४४;

* संवृत धी— इषही दुर्ग शोकावायी ॥ ४५ ॥

* विपाती— विष्व उषवस्ती ॥ ५५ ॥

४ च्युष्मान्ती— विष्व वभवेषवस्ती ॥ ५५ ॥

विवर वम्भवाकी विष्व पवरके प्रकाक्षे दुर्ग वर
 रात्री है । इमाती इष रैख्ये यो रात्री होती है उषमे विषेष

प्रभवोका दर्शन नहीं होत इषलेप वह वर्णत इमारे देख्ये
 देखनामै रात्रीका नहीं हागा देखा भ्रीत होता है । तथा—

१ लेमिको लघ वारपतिवि दुर्गाविं विष्वाहा ॥ ५ ॥

२ रात्रि भरिष्प्यत्वास्तरेम तन्वा वयम् ॥ ५ ॥

३ भरिष्वासस्त छर्विं तमस्वति रात्री पारम
 दीपिति । मद्वे पारमदीपिति ॥ ५५ ॥

४ इहे उष उष्ट्रविं पार व आती है । ५ इष उषम्भे इष
 विष्वे कर्त्तृके शाव विष्व व देखे दुर्ग पार बालने । ६ विष्व
 व दास्त वही लंबवासव रात्रीके पार बालना है व्यवाप
 वर्णवाकी रात्री । इह पार हो जाती है ।

रात्रीमै दुर्गित गर होने हैं वह इषन आवद्ये १३ वर्णनमै
 रात्रिके विष्वमें नहीं है व्यवाप इष रात्रिके पार इष अवै

(५१) आत्मा ।

(ऋषिः— प्रह्लादे वेदवान् — भास्त्रा सविता च ।)

अयुर्गोऽहमयुग्मो म आत्मायुत मे चक्षुर्युत म शोश्रुमयुतो मे प्राणोऽयुतो
मेऽपानोऽयुतो मे अपानोऽयुतोऽहं सर्वैः
दुषस्य स्वा सवितुः प्रसुभेऽस्मिन्नोर्जुरुण्यो पूण्यो इस्ताम्या प्रसृत आ रमे ॥ २ ॥ (१८०)

(५२) कामः ।

(ऋषिः— प्रह्लादे वेदवान् — कामः ।)

कामस्तद्यु समर्वतु मनस्तो रेतः प्रथम यदाक्षीत् ।
स कौमु कामैन षुष्टुता सयोनी ग्रायस्योपु यक्षमानाय चेदि

॥ १ ॥

वह इतने अमाई अमुख भी अलगता है । अतिरिक्त अमुख
आवाय है और इसे दिव बढ़ाव पार होता ही है । इसमिं यह
आर्यवा (ऊर्ध्वा तमस्तरी रात्रा) वह अन्दरात्मानी विद्याक
रत्तीयी ही होती । वह रात्रि ४३ वार रहती है अब्दा
५ वार इत्येवं प्रुष्ट आव रहती है । उस रात्रीकी वह प्रार्थना
होती । ५००५ वीरप्रधान तक वह रात्रि रहती है इससिंहे
आर्यवाई आर्यवता वही ही लकड़ी है । इस रात्रीका विद्याक
रेतिः—

१ पृष्ठती (४८१) — वही ।

२ प्रस्त्रा पार व ददाते । (४८१) — विद्या पार
वीक्षण नहीं इन्हीं वह रात्रि वीरप्रधान रिक्तनदाती है ।३ प्र से रात्रि दृष्टवस्तो द्रष्टारा मपतिर्मत ।
(४१) — रात्रि । ते अवर वहात्मार मनुष्योऽा
निरित्वं वर्तेदात ११ है ।४ ये भूतेषु जाप्रति । (४८५) — वा अमुखोऽे
रक्षार्थ आयते हैं ।वे वा आमदा पहारा करता है वह भूते र्हीर्व रात्रिके निम्ने
ही हो रहता है । इसके बह रात्रि अनेक महिले रहनेवाली
वर्तायं प्रुष्टके पार हीनेवाली रात्रि होती ।विद्या उपर्युक्त वीर रात्रि हाती है उपर उपर्युक्तोंसे
मर होता है विद्या उपर इन मंत्रोंमें हे वह शाहू सुरेणोऽा
मर होता है वह इन मंत्रोंमें है । प्रुष्टोऽी चोरी भी है ।
इसारी छोटी रात्रि में भी वे अप होते हैं वह विद्या उपर इन
मंत्रोंमें होता नहीं होता । इन मंत्रोंमें वर्तन द्विया अप
आव रात्रीमें ही हो रहता है । प्रुष्टती उर्ध्वा अदिवर
वह रात्रीहे रहता है । इसिंहे विद्या वह देखि वह मर
वार्त रात्रीय वर्तन वीर रात्रीहा है ।

(५३) आत्मा ।

प्रथ— १ अहं अमुतः मे पृष्ठ हूँ (मे भास्त्रा अमुतः) मेरा भक्ता तृप्त है (मे प्रसुः अमुतः) मेरा भेद
एव है (मे भोज अमुतः) वेर वार पृष्ठ है (म प्रथमः अमुतः) मेरा भगव
एव है (म प्रथमः अमुतः) मेरा वार पृष्ठ है (मह अपः अमुतः) मेरा वृष्ट हूँ १० १ ॥

(सवितुः दृष्टव्यं प्रसये) विद्या रेती वर्तवे (भवित्वोः वाहूर्वाः) अभिवेदि वाहूर्वोऽप वर (पूर्णः
इस्ताम्याः) प्रसाद इत्येवे (प्रसुतः) देता दुष्टा वे (भा रम) वह उपरा वर्तत वर्ता १० २ ५

(५४) वामः ।

(प्रथ वाम समवत्तत) भास्त्रमें वाम इत्याद्युम । (तत् भवत्ता रतः प्रथम्य यत् भास्त्रात्) १५ वर्ता
१५ वर्त वा वीर वा १६ वाय । (पृष्ठता वामेव समाई सः) वह वर्तवाय वर्तत वर्तवाय वर्त वर (प्रथ
मप्राप्त रायप्राप्त चहि) वर्तवाय विदे वर्तवी वुये देव १६ ५

त र्कम् सहस्रासि प्रतिष्ठितो विशुर्भिर्मत्या सद्य आ संसीयुते ।

त्वमुग्रः पूर्वनामु सासुहिः सह ओजो यज्ञमानाय चेहि ॥ २ ॥

दूरार्थकम् नाय प्रतिपाकायाद्ये । आमा भवुष्णुकाशाः कोमेनावनयुन्त्स्तुः ॥ ३ ॥

कोमेन मा कम् आगुहृष्टाद्यं वरि । यदुमीषोमुदो मनुस्तदैतूप् मामिह ॥ ४ ॥

यस्कोम स्त्रमर्यमाना इदं कृष्णमिति ते हुविः ।

तस्मः सर्वे समृद्ध्यतामर्युतसे हुविषो वीहि स्त्राहा ॥ ५ ॥ (१८)

(५३) काण्ड ।

(क्रायि— सुगु ॥ देवता— काण्ड ॥)

कालो अस्तो वहवि सुस्तरेतिः सहस्राषो अज्ञरो भूरिताः ।

तमा रोहन्ति कमयो विपुष्मितुस्तस्वं त्रुक्ता सुर्वनानि विश्वा ॥ १ ॥

सुस चुक्कान्वहवि क्षुलं एष सुसाख्य नामीरमृतु नवर्षः ।

स इमा विश्वा सुर्वनान्यञ्जास्त्वालः स ईर्यते प्रथुमो त्वं द्रेषः ॥ २ ॥

वर्ण— हे बाम ! (त्व) दृ (सहस्रा प्रतिष्ठितः आसि) धामपके छाव रहता है । दृ (विश्वा विमावा) व्याप्त तता लेकरी और (सर्वीपते सहा) भित्रके धमान बर्लेकर्लेके छाव दृ भित्र धमान रहता है । (ईर्य उप्रः) दृ उप्रै (पूर्वनामु सासुहिः) वैष्णवीम विवर करनेवाला (धमानाय सह ओजो आ चेहि) धमानके भित्र वैष्णव और उप्र दृ है ॥ २ ॥

(वृत्तात् चक्रमामाय) इसे कामना करनेवाले (प्रतिपाकाय मक्षये) प्रति एकत्रे इन्द्रिय वर्तने मिले (अस्ते आशा यमण्डव) इस अस्तये लक्ष विकारे द्वितीय है कि (कोमेन स्त्रा वज्ञनयन्) इस अस्ते विक्ष द्वितीय मिला है ॥ ३ ॥

(कामेन मा कम् आगम्) अस्ते वेरी और अस्त आ पक्ष है । (इदं इहि कृष्णसि) इससे इदं वर्तने और मी कम आ गता है । (पद् अमीषो वह भवति) वा उक्ता वह मन है (तत मा इदं उप यतु) वह भेरे वास वह अस्ते ॥ ४ ॥

हे बाम ! (यत् कामपमावादा) विलक्षी इच्छा करते हुए (ते इदं इहि कृष्णसि) ते मिले वह हरि अस्ते है (तत् ता सर्वे समृद्ध्यर्ता) वह उप इमरे मिले विद हो जात । (अथ पद्मस्य इविषा वीहि) और एष इमरे ए स्वेच्छर वर् (स्त्राहा) द्वाहो मिले समर्पण हो ॥ ५ ॥

बाम का वर्ण इष्टक बालोका है । यही सब संहिते वह वहे वर्ण कर रहा है । संहि उपर वर्तनेवे अस्ता फर्मेवारी वी और द्वितीय वाली । युक्त भी नाला प्रदानी अस्तार्द बर्लाह है और ज्ञेन छडे वहे वर्ण करता है । इस द्वितीय देखा वह एष अस्तम उप्य ही सब स्त्राहोपर है । वह देखा आहिने ।

(५४) काण्ड ।

(काण्डा धम्बः) अक्षसी ओजा (वहवि) विषसी वर्षये वीचता है । (सत् रहिमः) इसके छाव भित्र है (सहस्र-सहा) इवार आह है वह (अ-उत्तर) वरारेति वी (मूरि-रेताः) यहूत वीक्षाव है (हे विषपिती) कवया आ रोहन्ति) उपर इसी द्वि वहते हैं (तस्य वाक्या विश्वा सुवमानि) उसके वह उप सुवर हैं ॥ १ ॥

(एष काण्डा सत् वाकाद् वहवि) वह उप वात वर्षये वीचता है । (मस्य सत् वामीः) इष्टी उप वामिना है (वसु सु अमूर्ते) इच्छा वह भक्त है । (स इमा विश्वा सुवमानि अस्त्वत्) वह इन उप सुवमाने मिल बर्ल है । (स प्रथमा देवा काण्डा ईर्यते) वह अस्त परिका है । और वह इच्छा एक है ॥ २ ॥

पूर्णः कुम्मोऽविं काल आहित्यस्ते वै पश्यामो बहुधा तु सुन्दत् ।

स इमा विश्वा सुवेनानि प्रत्यक्षाल समाहुः परमे व्योमिन् ॥ ३ ॥

स पूर्व स सुवेनान्यामरत्स्म एव स सुवेनानि वैरेत् ।

पिता सर्वमवस्थुत्र एवां तस्मादै नान्यत्परमस्तु रेतेः ॥ ४ ॥

कालोऽमृदिवेभवनयक्तुल इमाः पूर्णिकृत । काले हैं मूर भव्ये चेतिष्ठ इ वि विष्टुते ॥ ५ ॥

कालो मूरिमेसूजठ काले तपति पूर्णे । काले इ विश्वा मूरानि काले चक्षुर्विं पूर्णयति ॥ ६ ॥

काले मनः काले प्राणः काल नामे सुमाहितम् । कालेन सर्वी नन्दुन्नस्यागतेन प्रज्ञा इमाः ॥ ७ ॥

काल तपैः काले ज्येष्ठे काले ब्रह्म सुमाहितम् । कालो हु सर्वैस्मेश्वरो यः पिता सीत्युद्वापते ॥ ८ ॥

तेऽपित रेतेन आत्म तदु तस्मिन्प्रातिष्ठितम् । कालो हु मक्ष मूर्त्या विमर्ति परमेष्ठिनम् ॥ ९ ॥

कालः प्रवा असृष्टत कालो अप्रेऽप्रबापतिम् । स्त्रयभूः कुशयैः कालात्मवैः कालाद्वनापत ॥ १० ॥ (११५)

अर्थ— (पूर्णः कुम्मा काळ भवित्वा आहितः) मरा बहुधा वशा [मह विष] अल्पके झार रहा है । (त वै पश्यामा बहुधा तु सन्त) रुचेष्ठे हम देखते हैं जो अल्प प्रकारके होता है । (स इमा विश्वा सुवेनानि प्रस्तुत) वह अस इव वह सुनीलों द्वारा है (परेष्ठे व्योमन् त काले भागुः) परम आवश्यके उक्तेष्ठे वाम करते हैं ॥ ३ ॥

(सः एव मुक्तनानि सं आमरत्) वह ही सब मुक्तोऽमा मरणगत्वा वरता है (सः एव मुवेनानि सं पौर्णैः) यी एव मुक्तोऽमे वारता है । (पिता सन्) वह विता होता हुवा (एवां पुरुष वस्त्रवत्) इवा पुरुष हुवा है । (तस्मात् वै पर तेऽमा आम्यत् व्यस्ति) उपर विविक देख दोइ नहीं ह ॥ ४ ॥

(कालः अमृदिवेभवनयत्) अल्पमे ही इव युक्तोऽमे वनावा है । (तत् कालः इमाः पूर्णिकृतः) और अल्पमे ही एव मूरिको वनावी है (काले हु मूर भव्ये च) अल्पमे जो भूत्याक्षर्ये हुवा और विमर्त्यमे होगा वह वह रहा है तता अल्पमे (एपित इ विष्टुते) जो भैरित हाता है वह सब रहा है ॥ ५ ॥

(कालः सूर्णि भवनयत्) अल्पमे सूर्णि वनावा है । (सूर्णे काले तपति) सूर्ण अल्पमे ही वनावा है । (काले इ विश्वा सुवानि) अल्पमे ही वह मूर योहे (काले वासु विषद्यति) अल्पमे भाव विषेन (विष्ठ देखता है ॥ ६ ॥

(काले मनः) अल्पमे मन (काल माणः) अल्पमे प्राण और (काले भास भासिते) अल्पमे नाम रहा है । (अदेहम वागतेन) अल भवित्व (इमाः सर्वाः प्रसादाः) वै सब व्राहं (वस्त्रवित्) जहरित होता है ॥ ७ ॥

(काल तपः) अलमे तप होता है (काले यमांसु) अलमे तपेत रहा है (काले वाय लभाहित) अलमे इमा इदा हुप्ते (कालः ह सर्वैस्य ईभवत्) काल ही उत्तम देपत ह (यः प्रकापते पिता सासीत्) जो प्रकापतिवा वा ॥ ८ ॥

(तेऽपि इवित) उपर भैरित लेता है (तेन जात) उपर उत्तम हुवा है (तत् त तस्मिन्प्रतिष्ठित) वह विस्तीर्ण उभे रहा है । (कालः ह व्रद्ध मूर्त्या) अल ति विदेह व्रद्ध वस्त्र (परमेष्ठिविष्यति) परेष्ठोऽमे वाम रहा है ॥ ९ ॥

(कालः प्रज्ञा भवनयत्) अलमे प्रज्ञाते विमोग ची है (कालः अमे प्रज्ञापति) अलमे विमोग प्रज्ञापति वनावा है, (स्पर्यंसूः कर्मणः कामाण्) स्वर्वभूतव वामके वना है (कामाण् तपः अज्ञापत) अलमे तप वना है ॥ १ ॥

प्रज्ञेष्ठे वह दुष्क वना है । वाम ही उत्तम वाम है । यह विषार दर्के वामना वोगत है ॥

(५४) काल ।

(व्याख्या — सुगुण । देवता — काल ।)

कालादायः समसन्कालाद्य तपो दिवः । कालेनोदैति सूर्यः काले नि विश्वते पुनः ॥ १ ॥
 कालेन वार्तः परते कालेन शशिवी मही । योर्मही काल आहिता ॥ २ ॥
 कालो हूँ मूर मध्ये च पुरो अवनयत्पुरा । कालाद्युः समसन्यासः कालाद्यायत ॥ ३ ॥
 कालो पुष समैरयत्प्रेष्यो भागमधित्प्रथा । काल गं घर्वाप्सुरसः काले लोकाः प्रतिष्ठिताः ॥ ४ ॥

कालेऽयमज्ञिता द्वेषोऽवर्षा चार्थि दिष्टुतः ।
 तुम च लोक परमं च छोक पुण्याय लोकान्विष्टुतीच पुण्याः ।
 सर्वीक्षोकानेत्तुवित्स्य ग्रहणा कलः स ईशते परमो तु देवः ॥ ५ ॥ (१००)

० इति पष्ठोऽनुवाकः ॥ ५ ॥

(५५) कालः ।

सूर्य— (कालात् यापः समसन्यास) काले वह वत्तव हुए हैं (कालात् वत्तव तपः दिवः) जबके तत्त्व और दिवाएं वत्तव हुए हैं । (क्षेत्रेत् सूर्यः वरेति) वत्तवे एव वत्तवे प्रात् होता है (पुनः काले वि विष्टुते) पुनः वह सूर्य काले ही प्रविष्ट होता है ॥ १ ॥

(कालेन वार्तः परते) काले गतु वर्य है (कालात् पुण्यिवी मही) अब्दे ही शूलिवी नहीं हुए हैं । (काले योः मही आहिता) अब्दे ही रही यी रही है ॥ २ ॥

(पुरा कालः हूँ भूर्म समय च) उत्त अब्दे ही मूर और मविष्व (पुरा वत्तपत्) परिष्वे बनाने हैं (कालात् यापः समसन्यास) अब्दे वत्ताएं वत्तव हुए हैं और (कालात् यापः भागायत्) अब्दे वह वत्तव हुआ है ॥ ३ ॥

(कालः) अब्दे ही (अद्वितीयके भागी) वत्तव वडवाग्नी (वेदेऽयः समैरयत्) देवोंके लिये वेत्रित किया है । (काले गत्प्रवै-मृत्युरसः) अब्दे ही पन्धव और अस्तारे हुए हैं । (काले लोकाः प्रतिष्ठिताः) जबके तत्त्व ऐसे हैं ॥ ४ ॥

(काले अय मविष्टा देवः) जबके वह अविष्टा देव भार (अद्वितीय अधितिष्ठिताः) और भवनी लविष्टाः होवत रहा है । (हमे च छोके परमं च छोके) इस छोकभे और परम छोकभे रहा (पुण्यात् छोकात् च) वह पुण्य लोकेही और (पुण्याः विष्टुती च) उत्त मवीरामी तपा (सर्वात् लोक्यन् अभिवित्य) सारे लोकोंभे बीत्ता (परमा देवः कालः) भर्मदेव काल (व्रह्मणा सः दृष्टये) व्रद्य-हात—के ताप उत्तेज राता है ॥ ५ ॥

० यदा पष्ठ पनुवाक समाप्त ॥

(५६) रायस्पोपग्राहि ।

(कवि — भगुण । देवता — मात्रा ।)

रामिराक्षिमप्रयाते भरन्तोऽधीयेत् तिष्ठते धासमस्तै ।
 ग्रायस्पोपेषु समिपा मदन्तो मा से अप्ते प्रतिवेशा रिपाम
 या से वसुवात् इपुः सा ते पुषा तथा नो मृढ । ॥ १ ॥
 ग्रायस्पोपेषु समिपा मदन्तो मा से अप्ते प्रतिवेशा रिपाम
 सायसार्यं गृहैविनो अृषिः ग्रात् प्रातः सौमनुसस्य दाता । ॥ २ ॥
 वसोर्विसोर्वसुदाने पश्चि वृष्ट खेन्द्रानास्तन्व् युपेम
 ग्रातः प्रातर्गृहैविनो अृषिः ग्रायसार्यं सौमनुसस्य दाता । ॥ ३ ॥
 वसोर्विसोर्वसुदाने एवी वृष्टानास्त्वा ग्रुद्विमा अपेम
 अपेषा दुर्घास्तस्य भूयासम् । अृष्णदायास्तपतये लुक्रायु नमो अपेम ॥ ४ ॥
 सुभ्यः सुमा मे पाहि ये च सुम्याः सुमासदः ॥ ५ ॥

स्तमिन्द्रा पुरुहृत् विष्णुमायुर्भृत्वत् । भद्ररहुलिमित्ते रुन्तोऽधीयेत् तिष्ठते धासमवे ॥ ६ ॥ (८०३)

(५५) रायस्पोपग्राहि ।

बर्त्त— (रामि रामि अप्रयाते) पठ रातमें जड़े हुए वर्षी भी न जानेवाले (अज्ञे तिष्ठते अप्राप्त) इह अरे इह जोरेष्ये (भास इह भरन्ता) यात देते हैं, उप तात जमिके छिने हुए हरि भजेवाले इम उप (रायस्पोपेष्य इपा सं महात्मा) जन और उड़िके तात जबके जाव आमन्द फरते हुए (ते प्रातवेशा) तेत वजेवी इम हे असे ! (मा रिपाम) अ न जोरे ॥ १ ॥

(या ते बसोः वातः इपुः) जो द्रुष्ट दसावेषेष्य वानुरुप जन है (सा ते एषा) वह लेता ही वह जन है (तपा न शृङ्) वसप इसे हुप दे ॥ २ ॥

(सार्यं साय) प्रेषेष्य वायव्य (अृषिः नः गृहैपतिः) जमि इमाया प्राप्तिं शेष रहता है । वह (प्रातः प्रातः सौमनुसस्य दाता) प्रेषेष्य वायव्यमें उत्तम मनक दाता होता है । वह (बसोः बसोः वसुदानां पर्यि) इसे प्रेषेष्य वसुदान वसुक जान देतेवाजा हो (त्वा इन्द्रानामां वर्ये) दुष्टे प्रैषेष्य करतेवाय इम (तन्म युपेम) जन्मे वर्षीयो इह दें ॥ ३ ॥

(प्रातः प्रातः) शेषेष्य वायव्यमें (अृषिः नः गृहैपतिः) असु इमाया वाहपति हुआ है । वह (सायं सार्यं सौमनुसस्य दाता) प्रेषेष्य वायव्यमें उत्तम मनक दायत है । वह (बसोः बसोः वसुदानां पर्यि) इसे प्रेषेष्य वसुदान देतेवाजा हो (त्वा इन्द्रानामाः शर्वते हिमाः वायेम) हुह प्रैषेष्य करतेवाये इम थीं वर्षी वसुद देते रोंग ॥ ४ ॥

(वृष्णास्तप्य व—प्राप्त भूयासं) जके वरदानके विंधे मैं व दोंधे । (अभावाय वभृपतये) वरदान वीकार फरतेवाके जके फी (रुद्राय भायेये नमः) जर्हली जपिये छिने मैं नमरकार करत हूँ । (सुभ्या मे समां पाहि) उपयोके दोंधे तू है येरो समाची रका जर । (ये च सुम्याः सुमासदः) जो सामाये बेठेवाके प्रामावर है वे भी समाची यो ज्ञे ॥ ५ ॥

हे इच ! (वृष्टे पुरुहृत) त वृष्टें हाता भावना फरते जोर दो । (विष्ण भायु व्याशुहृत) भेष वरदान वारी जातु जोरे । (परा भद्रा वर्षी इत् ते इरुतः) प्रेषेष्य द्रुष्टे वर्षी जाते हुए इम है जमे । (तिष्ठते अप्राप्त अप्राप्त जासं इच) अरे जोरेवाय वाय रहे हैं वह लहर दुष्टे इम हरि देते हैं ॥ ६ ॥

८ (वर्षी जासं इच ॥६॥)

(५६) शुद्धमनाशमम् ।

(नाचि । — यमः । देवता । — शुद्धमनाशमम् ।)

युमस्य लोकादप्या षष्ठ्यविषु प्रमदुरा मत्याप्र युनश्चि घीरः ।
 एकाकिनो सर्वे यासि विद्वान्तस्मै मिमान्तो असुरस्य योनीं
 शुद्धस्त्वात्रै विश्वचया अपदमत्पुरा राम्या जनितोरेके अहि । ॥ १ ॥
 एतुः स्वेदमध्या षष्ठ्यविष्य मिष्टान्यौ रूपमेग्हामानः
 शुद्धावासुरेभ्योऽधिं देवानुपावर्तत महिमानेभिष्ठन् ।
 एस्मु खमाप इपुराविष्पत्य त्रयखिलासुः स्वरिनशाना
 नैरा विदुः पितरा नात देवा येषा वस्तिष्ठत्वन्तरेदम् ।
 पिते स्वप्नमद्वुराप्त्ये नर आदिस्यासो वर्णेनानुशिष्याः
 यस्य कूरममेवन्त दुष्कृताऽस्वन्तेन सुकृतः पुण्यमायुः ।
 स्वमिदसि परमेण पुञ्चुना तुप्यमानस्य भनुसोऽधिं जीविष्ये ॥ ५ ॥

(५७) शुद्धमनाशमम् ।

मर्त्य— (यमस्य सोकात) बद्धे लोके (भयया षष्ठ्यविष्य) त् इतर जाता है । (घीरा प्रमदा मत्याप्र युनश्चि) त् पुदितान् इतरो मनुष्योऽस इतरो षष्ठ्यविष्य इतरो है । (मसुरस्य योनी) इतरो इपदेवतेक स्वात्मये (स्वमिमानः) इतरो इतरा हुआ (विद्वान्) जाता हुआ (पक्षाकिना सर्वे यासि) त् अकेके जात इतर इतर जात है ॥ १ ॥

(विष्यवया वयः) एवं जातान्मे वस्त्वते (रात्र्या जनितोः पुरा) एवीत वरद दीनेके वृद्ध (एके लहि इष्ट दिन (त्वा अप्ने अपदयन) दुबे प्रथम देखा था । हे (सप्तम) तत्प । (ततः इव भयया षष्ठ्यविष्य) इतरे इतर जाता है (पितरमयः इव अपगृहयाम ।) और वैष्णों अपने स्वयो तु दिग्यात्म है ॥ २ ॥

शुद्धावा महिमाने इष्टहृष्ट वर्ती वैरोद्वल्य वप्तवा महत चाहता हुआ सप्तम (मसुटेष्यः देवाशूर अर्थ उपायतन) अभूतत वर्णोद वात जाता है । (स्वा भावशाना अयतिविशासा) इतरामें इतरानां लैरीष दीनेमें (हां सप्तमय माधिपराय दयुः) उत्तमप्तेद तिवे अविभास दिका है ॥ ३ ॥

(पितर एतो म विदुः) निटर इम सप्तमा जात नहीं (उत्तम देवाः) और देव मी इय इतरो जातो नहीं (यतो जडिग्न इह अन्तरा वर्तति) जिनका वार्त्यताव इष्ट इष्ट-नके अभूत चक्रता है । (पठेष्ये अनुशिष्या जामि स्यास तता) इतरान दिभिन दिते वर्त्यत भार मनुष्य (स्वप्नं याप्त्ये वित अद्भुतः) इतरो इतरे पुर वितमें इव है । (या तु त्र इतरो इतरा इतर होता है ऐसा याचते हैं ।) ॥ ४ ॥

(यद्यपि शूर तुष्टुत अपद्यन्त) इति इतरो शूर अप्नो तुष्टुते इतरान जातयम बोलते हैं और (सुहृत अपद्यन्त पूर्वयोग्य) उत्तम इतरानां इतरा न जानेपे तुष्टुत अपद्यन्त आत्मो जातते हैं । (पठेष्ये अनुशिष्या स्वा मसुटिं दाव तुष्टुत अन्तरा इतर इतर त्वयुक्ता जातग्रह दिका है । त् इतर (तप्यमानस्य मनसः अप्य जडिग्न) तां जातह त् जेत्यात् इतर है ॥ ५ ॥

विष ते सथाः परिज्ञाः पुरस्त्रियं व्यज्ञ यो अधिष्ठा इहा त ।

युग्मिनो ना यद्यमेह पात्पाराद् द्विषेभिर्वर्ते याहि दूरम् ॥ ६ ॥ (५१)

(५७) दुर्घटनाशमम् ।

(लक्षणः — यमः । देवता — दुर्घटनाशमम् ।

पथो कुलो पथो श्रुक् यथुण सुनर्यन्ति । एवा दुर्घट्यु सर्वमन्तिर्यु स नैयासमि ॥ १ ॥

स राजीनो अग्नः समृणार्थगुः स कृष्णा भैर्गुः स कृता अग्नुः ।

ममुष्माम् यदुर्घट्ये निर्दिष्टते दुर्घट्ये मुवाम ॥ २ ॥

दणीनो वर्षीनो गर्भु यमेस करु यो भृदा व्यज्ञ ।

म मम् या प्रापस्तद् द्विष्टते प्र हिष्मः । मा सूटानीमसि कृष्णश्चुनम्भय् ॥ ३ ॥

त रथी व्यज्ञ तथा स विष स त्वं मूल्यार्थं इव सायमर्थं इव नीनादेष् ।

अनास्माक् देवपीपु विषीर्ह वयु पदुम्भाम् दुर्घट्यु यद्योपु पथो ना गृह ॥ ४ ॥

मध्य — द वर्ष । त सथाः पुरस्त्रियं परिज्ञाः । विष तद् यद् यादी पात्पाराद् य गमते । (यः इति अधिष्ठा विष) ता ददा य अधिष्ठा द वर्ष गमते । मः यद्यमितः । इति ददा वर्षोदी (इति भारत् पात्पारा पाहि) ददा द वर्षे वर्षाद् ददा द द (अधिष्ठा दूर भय वाहि) पदुम्भोदेदाव द वर्ष याहि ॥ ५ ॥

एवं दुर्घट्ये वर्षान्वयाद् वह नहि देवा वाऽदेवा इति दह मगत वर्षते । अ । मनुष दुर्घट्ये वर्षे भाव अवश्य वर्षते ।

अनास्माकस्तरेवपीयुः पियारुनिष्कर्मित् प्रति शुचवाय ।

नवारुद्दीनप्रमया असाहु ततुः परि । दुष्वद्यु सर्वे द्विपुत्रे निर्देयामसि ॥ ५ ॥ (४३)

(५८) पद्म ।

(क्षिपा — ब्रह्मा । देवता — वहः वहो देवताम् ।)

पूरुष्य मूर्तिः समना सर्वेषा सतत्सुर हुविर्वा वृष्टगैन्ती ।

भोश्च चसुः प्रायोऽचिष्ठो नो अस्त्वचिष्ठा वृयमायुषो वर्णेषः ॥ १ ॥

उपाकान्प्राणो वृयतामुर्वं वृय प्राणं इवामहे ।

वर्णेष्व चप्राह पृष्ठिष्वृन्तरिष्व वर्णः सोमो वृहस्पतिविष्वचा ॥ २ ॥

वर्णेष्वो धावापूर्णिमी सुग्राहपी वृभृष्टवर्णो गृहीत्वा पृष्ठिर्विमनु सं चरेम ।

युश्च स गामो गोपतिमुर्वं विष्टुन्त्यायुर्वीर्यसो गृहीत्वा पृष्ठिर्विमनु स चरेम ॥ ३ ॥

वृवं हृषुभ्यु स हि वो नूपाणो वर्णो सीम्यन्व वृहुला पृष्टनि ।

पुरः हृषुभ्युमायसीरपृष्टा मा वैः सुमोष्मुसो हृहु तम् ॥ ४ ॥

पृहस्य चसुः प्रमृतिमुर्वं च वाया भोवेष्व मनेषा सुहोमि ।

इम शुद्धे विष्टुत विष्टकर्मणा देवा चन्तु सुमनुस्मानाः ॥ ५ ॥

वर्ण— (यतास्माक देवपीयुः पियारा) जो इमारा नहीं जो देवोत्ता विरह है तो वृष्ट है वह (तद विष्ट एव प्रति शुचता) वह जलस्त्रो द्वारे उत्तरान पड़े । (यद—मात्रत्वेष्व अपमयाः) जो इम ऐ द्वारे इव वह (असाहु ततुः परि) इमरे दुर लक्ष वहसे वेर वान । (चर्वे तुष्टव्यं द्विपुत्रे निर्देयामसि) वह दुर स्वान इम वहस जाने है जो इमारा देव वहता है ॥ ५ ॥

(५८) पद्म ।

(समना सदवा) यन वज्राक देवी वरिष्ठोदे वाम (पृत्य शृ॒ति) वर्णो विष्टित्वा परि (इविषा संवासरं वर्णयती) इविष वृक्षद्वका वहती है । (म । आव चसुः प्राया विष्ठितः वस्तु) इमारी यन वाक और लक्ष वे विषिवा वृक्षाक्षर है (यामुप वर्णेषः वर्णं भोविष्ठाः) जामु और तेवरे इम विषित्वा हो ॥ १ ॥

(प्रायः अस्माक वप्तव्यतां) यन इम तुमारे (वर्णं प्रायं वप्तव्यामह) इम प्रायमे तुमारे । (पृष्ठिर्वी वचः अमाह) वृष्टिवान तेव प्रथ विजा है । यस्तरिष्वं वर्णः) वस्तरिष्वे तेव प्रथ विजा है (सामा वृहस्पति विष्टता) सोम वाऽपृथिवीतेर वाच वहते है ॥ २ ॥

(यावापूर्णिमी) वृ और पृष्ठिर्वी (वर्णेष सप्रद्वका वृमृष्टयु) वशका चप्रह वर्णेषाम तुर है । (वर्णः पृष्ठी इवा पृष्ठिर्वी भनु संवरेम) तर्ही तेव इम पृष्ठिर्वीर वंवार वहते । (यशां गोपति यावाः वप्तिवृष्टित) वहती गौह इवानों वाष वाही वहते है । (यशः एहीत्वा भावती) वह तेव जानदाओ वीरोंम (एहीत्वा) तेव इम (पृष्ठिर्वी भनु संवरेम) वृष्टिर्वीर वहते है ॥ ३ ॥

(यश एहुर्वं) भावाम्य वनामो (म । हि य तुपाय) वही तुपार जानवीर्य इव वीरेय जाव हो । (यमी वीरेयर्य) इव जीर तेवा वही (वदुसा पृष्टयि) वहन हो और वहे भी हो । (यपृष्टा पुरा भावती) इव इव (रात्रु भावान त हायाने रिषों वप्त वहते ववहो । (वा वामाः प्रा सुज्ञोत्) तुष्टरी प्राय न भुते (त देहत) इविष तुर वन वा ॥ ४ ॥

(यदम्य चसुः मुखं प्रभातः वा) वहती इहे और वृष ववहो यस्त वोचन वर्णेषाम है । (यावा भावती मवसा सुज्ञामि) वामे वामों व वहते हैं आतुरि वहते ववहो ववहो है । (विष्ट वामाः इम वित्त वर्णः) विष्टवर्णे प्राय तुर इव वहते ववह (तुष्टव्यामाना इवा यग्नु) ववह ववहाके देव वामे ॥ ५ ॥

ये देवानामृतसिद्धो ये च युक्तिया येष्यो हृष्य कियते माणस्यम् ।

इम युक्ति सुह पर्वतमिरेत्य यावन्तो दुवास्त्रविपा मादयन्ताम् ॥ ६ ॥ (४३)

(५०) यज्ञा ।

(पूर्णिः — ब्रह्मा । देवता — भूतिः ।)

स्वपर्म व्रतपा असि देव आ मत्त्येष्वा । एव युक्तेष्वीत्यः ॥ १ ॥

यद्वौ युप प्रभिनाम युतानि विद्युपौ देवा भविदुपरासः ।

अधिष्ठिदिवादा पृणातु विद्वान्तसोमेत्य यो ग्राह्याणां ग्राविषेषं ॥ २ ॥

आ देवानामपि पर्यामगम् यच्छुक्रवैष्म उद्युप्रवैष्मद्युपम् ।

अधिविद्वान्तस यंग्रास्त इदोत्तु चोऽप्युरान्तस ग्रात्मकल्पयाति ॥ ३ ॥ (४४)

(५०) अह्नानि ।

(पूर्णिः — ब्रह्मा । देवता — वाह भवनि च ।)

पात्र आसम्भुतोः प्राणश्चुरुष्योः भोव्यु कर्णयोः ।

अपसितुः कदा अस्त्रेण इत्तो युक्तु वाहोर्वल्पम् ॥ १ ॥

कुर्विरामो जद्घयोर्विषः पादमोः । प्रुतिष्ठा अरिदानि मु सर्वात्मानिभृष्टः ॥ २ ॥ (४५)

मर्य— (ये द्वनानां ज्ञातिव्याप्ति) जो दोहे लैवित हैं (य य यज्ञिया) आ दृष्टीव है (येष्यः माणसेय इत्य वियोग) विनष्ट जिसे लौकिक बते वरत इत्य विद्या जता है (इस्य यथ पर्यामिः सद एव) एव वट्या पर्यामियोंके साथ आवर (यावस्त इवा) विनष्टे एव हैं विद्या (विद्या मादयन्तां) इत्य विद्या है ॥ १ ॥

(५१) यज्ञः ।

इ ज्ञाते । देव इव । (य य मर्येषु मरतपा भूति) दृ वल्मीये द्वारे वल्मीकि इष्ट है । (यद्युप य इत्य) दृ वल्मीये भूतिरे द्वारा है ॥ १ ॥

हे (देवा) देवो । (यत् यत्य विद्युतां व मतानि प्रभिनाम) विद्य इमन आप विद्यानीदे चाँ भूत तारे हैं (पूर्णिविदुपरास) व जानेते हुए तारे होते (तत् पिभादा भूतिः) ता वल्मी एव जानेकाला भूत (पृणातु) एवं ॥ (सोमप्य य विद्वान् प्राणव्याप्त व्याविषया) सोमप्य जानेकाला जो व्रात्यम में जाहर वेठा है ॥ २ ॥ एव द्वारा दृष्टि विद्या है ॥ २ ॥

(द्वयानो पर्याम भूति आ भवनम्) इव देवोंहे जावर आ गते हैं । (यन् शास्त्रवाम) वारे इव तत्त्वं हुए हीं (तत् पन् प्रसादु) वरह आग ते जानेके लिये गत बते हैं । (स विद्वान् भूतिः) १८ भूती भूति (स वजात्) १८ इत्य च (स इत्य वजाता) वह नि विद्य इत्य वजता है (स वस्त्रवाम) १८ द्वर च भूती स वजात् वस्त्र पाति) वह वनुओंसे वास्त्रदाय वजता है ॥ २ ॥ ०

(५०) अह्नानि ।

(म वासन वाच) भूते मुखमेव वत्य वाच यात्र है (मस्त यात्रा) भूते वाचमेव वाच है (वजातो वप्तु) भूते वाच मेव वन्नम इव है (वस्त्राय भावं) भूते वात वन्नम भवन मात्र है (वजाता भवनसिताः) भूते वाच वन्न है (वजाता वजाताः) भूते वात विवर वन्न है विवर वात (वातोः वन्न वन्न) भूते वात्मेव वरा वव च (वातो वातः) भूते वात्मेव वात्मेव है (जंघयोः जयः) भूते विनाशेव वव है (वातयोः प्रतिष्ठा) भूते वात्मेव विवर वन्न है विवर वन्न है (म यथा भवनिष्ठान मरेव वव वव वव) (वाया ववनिष्ठृह) मया ववन ववन वव वव वव वव वव ॥ १ ॥ ०

(६१) पूर्णीयुः ।

(कथि — ग्रहा — देवता — ब्रह्मणस्पतिः ।)

तुन्मुन्नार्जुने मे सहे तुरः सर्वमाप्तुरक्षीय । स्योन मे सीद पुरुः पूर्वस्त्र पर्वमानः स्तुगे ॥ १ ॥ (४७)

(६२) सर्वप्रियस्त्वम् ।

(काण्ठ — ग्रहा — देवता — ब्रह्मणस्पतिः ।)

प्रियं मा कृषु दुर्यु प्रियं राज्ञसु मा कृषु । प्रियं सर्वस्य पश्यत तुर शूद्र तुरार्थे ॥ २ ॥ (४८)

(६३) आयुर्वर्णनम् ।

(कथि — ग्रहा — देवता — ब्रह्मणस्पतिः ।)

उर्पिष्ट ब्रह्मणस्पते देवान्युद्देन वाप्तम । आर्युः प्रार्थं प्रार्थो पूर्वस्त्रीर्थं यमेमाने च वर्षय ॥ ३ ॥ (४९)

(६४) वीर्यायुष्टम् ।

(कथि — ग्रहा — देवता — घटिः ।)

अर्थं सुमिषुमाहार्ये शूद्रे आत्मेदसे । स मे अर्द्धो च मुची च आत्मेदाः प्र यम्भुतु ॥ ३ ॥

दुष्मेन त्वा आत्मेदः सुमिषी वर्षयामसि । तथा त्वमुक्तान्वर्षयं प्रुष्यां च घनेन च ॥ ३ ॥

यद्युप्य यानि कानि खिदा तु दासैषि दुष्मसि । सर्वे तदस्तु मे क्षिरे तज्ज्ञेपत्ता विष्टय ॥ ३ ॥

एतास्ते अप्य सुमिषुस्त्रामिदः सुमिष्ट्रूप । आयुरमासु चेष्टस्तुत्समाचार्यार्थ्य ॥ ४ ॥ (५०)

(६५) पूर्णीयुः ।

अर्थ— (मे तन् तथा) मेरा छोर मोटा ताक हो (ततः सहे) अनुबोध मे परामव कर्मा मुझे एवमेवामे मे अप्ये वामप्ये एव वर्ता है । (सर्वे भासु भवतीय) मैं पूर्ण भासु भास कर्मा (मे स्वोम सीष) मेरे प्रभुस्त्रे त्वामपर वैठ (पुरुः पूर्वस्त्र) भर्ते भारते परिष्ठे वर, (पवमायः भर्ते) परिष देहा हुआ द्विवर्ष त्वामपे रहा ॥ ५ ॥

(५०) सर्वप्रियस्त्वम् ।

(देवेषु मा प्रियं कृषु) देवोमे मुख प्रिय का (राज्ञसु मा प्रियं कृषु) राजाओमे मुख प्रिय वर (सर्वेष प्रियता प्रिय) तत देवनेके लक्षे मैं प्रिय वद् (वत शोषे वद भावे) वहे वह शूर हो वहे भावे हो ॥ ५ ॥

(५१) आयुर्वर्णनम् ।

हे (ब्रह्मणस्पते) शामके कामिन् (उचिष्ट) अठ, (पर्वेन त्वाम् वोषय) वहते हेमेषे चमका हो । वत प्राप्त भ्रा पृष्ठ व्यतिरिक्त ताक वक्षमलये (वर्षय) वदानो ॥ ५ ॥

(५२) वीर्यायुष्टम् ।

हे असे ! (वृहते आत्मेदसे) वहे आत्मेदे भिषे (समिष्य माहार्ये) भमिषा आका है (चा आत्मेदा) वह भातेदा (मे भद्रो च मेषो च प्रयक्ष्यु) मुझे भदा लोट भेदा है ॥ ५ ॥

आत्मेदा— भिषे वहे दुर । वरमाका अमि ।

हे भातेद ! (उच्येन तामिषा त्वा वर्षयामि) भवेदाकी भमिषाहे मैं दुसे वदाता हू । (तथा त्वं भमाम्) देवा दृहमे (प्रजाया वा य त वयय) प्रजा भी भन्ते वदा ॥ ५ ॥

हे भाप (याकि कामि) 'यो भोर् (दाक्षयि) भमिषो (से भा द्वमसि) मेरे विद इम लाल शामे के (वयिष्टय तत् त्वपत्त) २ ' दद्याका देवेन वर । (तद् भर्ते मे विष भस्तु) वह एव भिषे वदामारी हो ॥ ५ ॥

हे असे ! (वता त समिष्य) भविषात्मे (त्वं त्वः) दृष्टीत हीकर (समिष्य भय) ठिर्वे (भावार्याय भस्तुताये) भावामें भिषे वदामन दे ॥ ५ ॥

(६७) अवनम् ।

(कायि: — ब्रह्मा । वेष्टा — जातयेदा स्वयम् ।

इरिः सुपुणों दिष्मारुदोऽर्थिषु ये स्वा दिप्सन्ति दिवमुखर्तनम् ।

अत तां चंडि इरसा जातवेदोऽर्थिष्मदुग्रोऽर्थिषु दिष्मा रोह धर्य

॥ १ ॥ (४१६)

(६८) असुरस्तथाणम् ।

(कायि: — प्रह्ला । धयता — जातयेदा स्वयो यज्ञम् ।

अयोध्याला असुरा मायिनोऽप्यस्मैः पात्यैरुद्दिनो य चरन्ति ।

ठास्ते रघुशामि इरसा जातयेदा सुहस्त्राकाएः सुप्रस्त्राप्रसूषन्न्याहि वर्तः ॥ १ ॥ (४१७)

(६९) दीर्घायुत्यम् ।

(कायि: — प्रह्ला । वेष्टा — स्वय ।)

पश्येम शुरदः सुवम्	॥ १ ॥	बीर्वेम शुरदः सुवम्	॥ २ ॥
पुर्वेम शुरदः शुवम्	॥ ३ ॥	रोहेम शुरदः शुवम्	॥ ४ ॥
पूर्वेम शुरदः शुवम्	॥ ५ ॥	मर्वेम शुरदः शुवम्	॥ ६ ॥
भूर्येम शुरदः शुवम्	॥ ७ ॥	भूर्येम शुरदः शुवात्	॥ ८ ॥ (४४९)

(६८) वेदोक्त कर्म ।

(कायि: — प्रह्ला । वेष्टा — कर्म ।)

अध्यस्तु अच्छस्तु विलुप्ति विष्मयि मायप्या । ताम्पासुदृत्युवेदुमयु कर्माणि कृष्णहे ॥ १ ॥ (४४१)

(७०) अवनम् ।

भर्य— (हीरि चूपर्यः) पुरुषो इत्यप्तेषामात्माम विद्यवत्त्वा एव (विष्मयाकृष्ण) पुलोऽपि वाप्त्वा है । (विष्मयात्पत्त्वा त्वा) पुलोऽपि वाप्त्वा एव (ये विष्मयिनि) जो हालनि पृष्ठाते हैं, है (जातयेदा) भर्ये । (ताम् इरसा अत जाहि) वाप्त्वे भर्यन जाताक्षे मार मिह ॥ १ ॥ है धर्य । (अविष्मयत्) व वरता हुआ (इमः) एव होम् (अर्थिष्पा विष्मया दोह) देवदेव पुलोऽपि वाप्त्वा ॥ २ ॥

(७१) असुरस्तथाणम् ।

(अयोध्यालाः) लोहिया जात तत्र भो ज्ञते हैं (मायेनः असुराः) जो वारी अमृ (अप्यमयैः पात्यैः अद्विष्मय य चरन्ति) लोहिये पात्यात्मामें लक्ष वक्तन है । है (जातयेद्) धर्य । (ताम् इरसा रघुशामि) इन्होंहै लोहिये विनाश करता हूँ । तृतीय-कृष्ण-वर्ता) इत्यमात्माम वह एव ॥ २ ॥ (सप्तमाम् प्रमूर्खम् पारि) अनुभोदा नाम-वरता हुआ इमरी रक्षा ॥ २ ॥ १ ॥

(७२) दीर्घायुत्यम् ।

एव या धर्य देवे ॥ १ ॥ इम दी धर्य भीरि ॥ २ ॥ इम दी धर्य वाप्त्वा एव ॥ ३ ॥ इम दी धर्य वाप्त्वा एव ॥ ४ ॥ इम दी धर्य वाप्त्वा एव ॥ ५ ॥ इम दी धर्य वाप्त्वा एव ॥ ६ ॥ इम दी धर्य वाप्त्वा एव ॥ ७ ॥ इम दी धर्य वाप्त्वा एव ॥ ८ ॥

(७३) वदाक्त कर्म ।

(अप्यसः च) अध्यात्म भीरि (अप्यसः च) अप्याद (विष्मयामि) विष्मये इत्यात्मामें वक्ता है । (ताम्पये धर्य उद्दात्य) इम दीर्घायुत्यम वरता वक्तर (अप्य विष्मयि इत्यम्) इत्योऽपि इम वर्तने ॥ १ ॥

१८ वर वर्ते दृदोऽपि वारी वेव वक्ता हूँ । तृतीय विद्यवत्त्वा हूँ । वर वेदा इत्यात्म इव वर्तने ॥ २ ॥

(६२) आप ।

(कथि — व्रजा । देवता — आप ।)

मीषा एं श्रीम्यासु सर्वमायुर्बीम्यासम् ॥१॥ सुप्रसीढा स्वोषं श्रीम्यासुं सर्वमायुर्बीम्यासम् ॥२॥
सुबीषा स्युं म श्रीम्यासुं सर्वमायुर्बीम्यासम् ॥३॥ जीवला स्वं श्रीम्यासु सर्वमायुर्बीम्यासम् ॥४॥

(७०) पूर्णपु ।

(८५०)

(कथि — व्रजा । देवता — इन्द्रसूर्पदिवः ।)

इन्द्र जीव स्युं श्रीवं देवा श्रीषो श्रीम्यासुमहम् । सर्वमायुर्बीम्यासम् ॥ १ ॥ (८५१)

(७१) वेदमाता ।

(कथि — व्रजा । देवता — शायत्री ।)

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्ता पावसानी त्रिमानाम् ।

आपुः प्राण प्रुद्धां पुश्य कीर्ति द्रविण प्रसवर्तुसम् । मर्द तुरवा व्रेषु वसलोकम् ॥ १ ॥ (८५२)

(७२) परमात्मा ।

(कथि — भागविंशति व्रजा । देवता — परमात्मा वेषाम् ।)

यस्मारकाशादुदभेराम वेदुं तस्मिन्नन्तरवै दम्प एनम् ।

कूरमिदं अद्यणो श्रीर्घेणु लेनं मा देवास्तुपसाकतेर् ॥ १ ॥ (८५३)

॥ इति सप्तमोऽनुष्ठानः ॥ ७० ॥

॥ इत्येकोक्तविद्वां काष्ठं समाप्तम् ॥

(७३) आप ।

अथ— (जीवा स्य) तुम वीवशाल हैं (श्रीम्यासं सर्वं श्रायुं श्रीम्यासं) मैं जीवैं मैं सर आकुलं श्रीम् ॥१॥ (वपञ्चिकाः स्य) तुम वीवशाल हैं (वपञ्च श्रीम्यास) मैं जीवैं वर आकुलं श्रीम् ॥२॥ (संजीवा स्य) तुम वीवशाल हैं (मैं वीवशाल हैं सर आकुलं श्रीम् ॥३॥ (श्रीम्याः स्य) तुम वीवशाल हैं मैं जीवैं सर आकुलं श्रीम् ॥४॥

(७३) पूर्णपु ।

हे इव ! (जीव) वीतो ! हे इवं (जीव) वीतो ! (वपञ्चः श्रीमाः) हे रेतो ! वीतो इतो ! (महं श्रीम्यासं) मैं जीवैं ! (सरं श्रायुं श्रीम्यासं) वर आकुलं वीतित इ ॥ १ ॥ ३

(७४) वेदमाता ।

(मया वरदा वरमाता वरुता) मैं वेदमाता वरुती वी वर वेदमाता (त्रिवामी प्र वादयती) विष्णो वेदमाता वेदमाता वर (पावसानी) विष्ण वरवेदमाता है वरु वर वरा वपु वाति वर वर वेद (महा वस्ता) उपै वेद (व्रजासाम वर्णत) विष्णोवप्य वातो ॥ १ ॥

(७५) परमात्मा ।

(परमात्मा वादात्) विष्ण वेदव (वर वरमाता) वेदमा इत्येव विष्णाम (तस्मिन् वरमा) वरीव (वर्ण वरदम्प) इव वेदवै इव वरु वरवै हैं । (व्रजामः वीर्येण वर्ष्य हर्ते) वावेव वरीव गो वर्ण वरमा वा वर विष्ण । (तेव वरमा वर वातो (वर्णा) इव वरवै) वेद वरो इतावी रथा वरे ॥ १ ॥

॥ वरो सप्तमं भनुशाकं समाप्तम् ॥

॥ वरो १० वी काण्ड सप्तमं त्रुञ्जा ॥



अथर्ववेद

३।

मुषोद मात्प

विंशं काण्डम् ।

३७८

ते वीर्यं हाय ११ गान्धारा
गान्धारा गान्धारा गान्धारा गान्धारा गान्धारा

स्था स्था प - स पट म, पार शी

३७९ ३८० ३८१

प्रधानक ।

वर्षमात्र शीराद सातवेंकर वी. ए.

स्वाम्यात्र मैदान

पोस्ट- स्वाम्यात्र मैदान (पारदी)'

पारदी [वि. शुरु]

*

मंग १९६३ दिन ३ १५ ह ८. ११

★

प्रथम बार

-

*

शुरु :

वर्षमात्र शीफ़ह आठवेंकर वी. ए.

आराव सुदूराक्षय स्वाम्यात्र-मैदान

पोस्ट- स्वाम्यात्र-मैदान (पारदी)

पारदी [वि. शुरु]

-



अथर्ववेदका स्वाध्याय ।

सिंहासन १

अथर्ववेदमें इन्द्र देवताका वर्णन

બર્સેરમણે હતું પેણાને પણ એ લય હોય —

प्रथम काण्ड	संख्या	मैत्री
१	अवर्द्धी	१
२	आत्मा	१
३	अवर्द्धी	१
४	आत्मा	१
५	प्रद्युम्ना	१
६	अवर्द्धी	१
७	आत्मा	१
८	प्रद्युम्ना	१
९	अवर्द्धी	१
१०	प्रद्युम्ना	१
११	अवर्द्धी	१
१२	प्रद्युम्ना	१
१३	प्रद्युम्ना	१
१४	प्रद्युम्ना	१
१५	प्रद्युम्ना	१
१६	अवर्द्धी	१

ਵਿਖੀਏ ਜਾਂਦੇ

५ सुग्रीवर्जन
१२ महावाच
२० अपिवता
२२ अवर्ती
३४ पठिलेश्वर

पर्वीय रूप

१ अपर्याप्त
२ अपर्याप्त
३ अपर्याप्त
४ अपर्याप्त
५ अपर्याप्त

पंच काश

५	वर्षा	१
११	मातिप्रसन्न	३
४	वर्षा	७
५८	वर्षा	३

१५	अवर्द्धा	१	१	प्रविष्टः	१
१६	अवर्द्धा	१	१२	जपतिरुचः	११
१७	अवर्द्धा	१	१३	अवर्द्धा	१
१८	कम्पना	१	१४	वदा	१
१९	भय	१	१५	विश्वामित्रः	१
२०	वर्द्धा	१	१६	पूरुषः	१
२१	अवर्द्धा	१	१७	विश्वामित्रः १	१
२२	अवर्द्धा	१	१८	पूरुषः २	१
२३	अवर्द्धा	१	१९	विश्वामित्रः १	१
२४	उल्लेखनः	१	२०	विश्वामित्रः २	१
२५	प्रस्तुत्वः	१	२१	पूरुषः ३	१
प्रस्तुतम् काण्ड		११	२२	विश्वामित्रः ३	१
२६	शोषणः	१	२३	वार्द्धाः १ इत्यतः १	१
२७	वदा	१	२४	विश्वामित्रः १	१
२८	वर्द्धिता	१	२५	वोषाः २, मेष्वामित्रिः २	१
२९	प्रत्यक्षः	१	२६	विश्वामित्रः	१
३०	विषिद्धा	१	२७	विश्वामित्रः १	१
३१	अविष्टा	१	२८	वार्द्धाः १ वोषाः १ कुरुषः १	१
३२	विषिद्धा	१	२९	विश्वामित्रः १	१
३३	वर्द्धा	१	३०	हीमिति	१
३४	वर्द्धा	१	३१	पोषणः	१
३५	वर्द्धा	१	३२	इत्यः ११ प्रविष्टः १	१२
३६	वर्द्धा	१	३३	मेष्वामित्रिः विश्वामित्रः १	१
३७	वदा	१	३४	प्रविष्टः ३	१
३८	वर्द्धा	१	३५	विश्वामित्रः	१
३९	वर्द्धा	१	३६	विश्वामित्रः ४ पूरुषः ३	१
४०	वर्द्धा	१	३७	वदा	११
४१	वर्द्धा	१	३८	विश्वामित्रः १ विश्वेषः १	१
४२	वर्द्धा	१	३९-४४	विश्वामित्रः	१५
४३	वर्द्धा	१	४५	वोषाः १ वाह्याः १	१
४४	वर्द्धा	१	४६	पूरुषः ३ मुख्यात्मा ३	१
४५	वदा	१	४७-५५	वोषामध्यवृक्षिनी	१५
४६	वर्द्धा	१	५६-५९	वदा उल्लेखने	११
४७	वर्द्धा	१	५१	वाह्याः	१
४८	वर्द्धा	१	५२	पूरुषः	१५
४९	वर्द्धा	१	५३	वोषा (वाह्याः)	११
५०	वर्द्धा	१	५४	वाह्याः	११
५१	वर्द्धा	१	५५	विषिद्धः	११

वर्द्धा वर्द्धने वाह्यात्मक वर्द्धने वर्द्धने हैं।

एकोत्तरिणा काण्ड

५ अवर्द्धामित्रः

१	इरिमिथि १, मुख्यमन्त्रा १	६	७६	वस्त्राः	६
२५	मुख्यमन्त्रा १		७७	वामदेवा	६
	पातूलमध्यशक्तिनी ४	७	७८	संतुः	३
४	मुख्यमन्त्रा १	१	७९	विश्वः सक्षिप्ता	३
४१	योग्या	१	८०	संतुः	३
४२	कुस्तुष्टिः	१	८१	पुरुषमा	३
४३	विश्वोऽहा	१	८२	विश्वः	३
४४	इरिमिथि	१	८३	संतुः	३
४५	स्त्रै-सेवो देवता:	१	८४	मुख्यमन्त्रा १	३
४६	इरिमिथि	१	८५	प्रणाला ३, मेष्यातिथि १	४
४७	एष्ट्रा १, इरिमिथि १		८६	विश्वामित्रः	१
	मुख्यमन्त्रा १	११	८७	विश्वः	७
५	मेष्यातिथि	१	८८	कृप्या:	११
५१	प्रस्त्रमा ३, पुष्टिः १	४	८९	प्रियेष्यः १३, पुरुषमा ९	११
५२-५३	मेष्यातिथि:	१	९०	प्रणाल ३, देवतामन्त्रा ५	८
५४-५५	रेता	१	९१	कृप्या:	११
५६	यात्रा	१	९२	पूरुषमन्त्रा १, शुदा: वेष्टना १	४
५७	मुख्यमन्त्रा १, विश्वामित्र ४		९३	पूरुषः	५
	पूरुषमन्त्रा १, मेष्यातिथि १	११	९४	कृष्णः	३
५८	नृमेष्यः ३, वस्त्रमित्रः ३	४	९५	संतुः	३
५९	मेष्यातिथि: ३, विश्वः ३	४	९६	मेष्यातिथि:	३
६०	स्त्रैक्षण्डा ३, विश्वात्मा ३	१	९७	नृमेष्यः	३
६१	मेष्यातिथि ३, विश्वः ३	१	९८	मेष्यातिथि:	३
६२	पातूलमध्यशक्तिनी ४	१	९९	प्रत्याशिष्ये ३, नृमेष्या १	४
६३	प्रस्त्रमा ३, नृमेष्यः ३	१	१००	पूरुषः ३, पुरुषमा ९	८
६४	विश्वः ३, विश्वमित्रः ३	१	१०१	प्रियेष्यः ३, विश्वामित्रः ३	३
६५	विश्वः ३, विश्वमित्रः ३	१	१०२	प्रणाल ३, देवतामन्त्रा ५	८
६६	विश्वः ३, विश्वमित्रः ३	१	१०३	कृप्या:	११
६७	विश्वः ३, विश्वमित्रः ३	१	१०४	पूरुषमन्त्रा १, शुदा: वेष्टना १	४
६८-६९	विश्वमन्त्रा	१	१०५	पूरुषः	५
६०	विश्वमन्त्रा ३, पूरुषमन्त्रा ४	४	१०६	पूरुषः	३
६१-६२	मुख्यमन्त्रा	१	१०७	प्रत्याशिष्ये ३, विश्वः ३	३
६३	विश्वमन्त्रा ३	१	१०८	प्रत्याशिष्ये ३, विश्वमित्रः ३	३
६४	विश्वमन्त्रा ३	१	१०९	प्रत्याशिष्ये ३, विश्वमित्रः ३	३
६५	विश्वमन्त्रा ३	१	११०	प्रत्याशिष्ये ३, विश्वमित्रः ३	३
६६	विश्वमन्त्रा ३	१	१११	प्रत्याशिष्ये ३, विश्वमित्रः ३	३
६७	विश्वमन्त्रा ३	१	११२	प्रत्याशिष्ये ३, विश्वमित्रः ३	३
६८-६९	मुख्यमन्त्रा	१	११३	प्रत्याशिष्ये ३, विश्वमित्रः ३	३
७०	विश्वमन्त्रा	१	११४	प्रावर्त	३
७१	विश्वमन्त्रा ३	१	११५	प्रावर्त	३
७२	विश्वमन्त्रा ३	१	११६	मेष्यातिथि:	३
७३	विश्वमन्त्रा	१	११७	विश्वः	३

११६	मर्दी ३ भेष्यारिकि २	४
११७	आगु १ मुहिगु १	५
१२	देवतिकि:	६
१२१	विहितः	७
१२२	पुष्टदेवा	८
१२४	प्रादेवा ३ मुखः २	९
१२५	क्षम्भीति	१०
१२६	एषाच्छिरित्वाचो च	११
१२७	कुरु १ तिर्त्यरिति रुदी ५	१२
	कुरुत्वो चा कुरुत्वा ३	१३
१२८	प्रस	१४
		<u>१४०</u>

बरेष्य कर्त्त लभिनी देवताका है अतः लभिनी देवताके मंत्रोन्मयी विचार इस इमरुके मंत्रोन्मयी विचारके साथ करना चाहिए । इसी तरह यह वेद मी तुद देव ही है । लडा कल वर्ते इमरुके देवा है । इस वाह यह लडा चाहिए देवताओंका भी विचार कुरुत्वेन्मयी कर्त्त वर्तेवाके इमरुके मंत्रोन्मयी वाह हीना चाहिए । इस तरह विचार करनेपर देवता कुरुत्वेन्मयी विचार कर्त्तव्यता हो जाता है ।

इस वाह देवता इमरुके मंत्रोन्मयी विचार अवश्य चाहते हैं और वह विचारके वाहना चाहते हैं कि इस देवता देवेन्मयी कुरुत्वे चाहते हैं ।

जब इमरुके हैं कि इस इमरुका वर्त्त विचार अधिकृति चिह्न है—

अधिकृति वाम	मंत्रसंख्या
१ अवर्दा	१८
२ व्युष्माणः	१५
३ विष्प्रमाणः	११
४ विहितः	१३
५ विष्मूक्ष्मद्युक्तिकी	५९
६ विष्मितः	८१
७ वर्णविग्राहः	१८
८ व्युष्माणः	१५
९ विष्मृतः	१४
१० वेष्यारिकि:	११
११ इम्बः	११
१२ वातनः	१७
१३ एषाच्छिरित्वाचो च	१३
१४ इरिमितिः	११
१५ तुमेवा	११
१६ वीष्माणः	१८
१७ विष्मेवा	१८
१८ तुमुः वास्तवेवा	११
१९ वातःविष्माणः	११
२० व्युष्मा	१३
२१ वाताणः	१३
२२ वातेवित्ती	१३
२३ वाताणः	१३
२४ तुम्बः	११
२५ वाता	११
२६ तुम्बिः	११

इसमें इमरुके वर्त्तके ने दीत है—

प्रथम अवर्द्ये	११ मंत्र
द्वितीय अवर्द्ये	११ मंत्र
तृतीय अवर्द्ये	१४ मंत्र
चतुर्थ अवर्द्ये	१० मंत्र
पंचम अवर्द्ये	१४ मंत्र
षष्ठी अवर्द्ये	१६ मंत्र
सप्तम अवर्द्ये	४१ मंत्र
अष्टम अवर्द्ये	४१ मंत्र
	<u>१४८</u>

इसमें दीत आठ वार्ताओंमें है । नवम वार्ता वास्तवे वास्तवामें

प्रथमतद इमरुके मंत्र नहीं हैं ।

वाचाप्तैः वाचामे	३ मंत्र है ।
वीष्मै वाचामे	१०७ मंत्र है ।
अवर्द्य वास्तवात्म	११८ मंत्र है ।
	<u>११८</u>

अष्टमवर्द्ये तुमुः वास्तवात्मा ११८ दे इतम् १५ मंत्रोन्मयी इमरुका वर्त्त है । तुमुः मंत्रोन्मयी वह छठी वाहना है । इत इतना वर्त्तके तुमुः वास्तवात्म वास्तवात्मी देवता है । इष्ट देवताके मंत्रमें दीत ही है । इष्ट देवताके मंत्रमें वाह तुदिवित् मात्रात् वायता है । इत इतनाके मंत्र मी १५ इमरुका विचार दर्शनमें वास्तवात्मी वास्तवात्मी वास्तवात्मी दर्शनमें दीत ही है । वे तो तुमुः वास्तवात्ममें दीत ही है । वास्तवी वास्तवात्मी दीत वास्तवात्मी वास्तवात्मी

१७	वामदेवः	११
२८	वर्षतिरुपः	११
१९	विमिरः	११
२	विषुकः	११
२१	वाप्तः	११
१२	वीमरि	१०
२३	वस्ता	१
१४	विशुः	१
२६	वुक्षेषः	१
३१	यमुः	८
१७	यमाचः	८
१८	यमारः	८
१९	यिलोकः	८
४	यर्तुः	८
२१	युष्म	८
२२	युक्षमः	८
२३	यैमः	८
२४	यूपः	९
२५	युक्षितिः	९
२६	येष्वामयः	९
२७	यितिरागिरु-	९
२८	यर्वः	९
२९	युच	९
१	यहुकः	९
२१	येषांतिरिः	९
२२	युद्धः यैवद्वः	९
२३	यमः	९
२४	यस्त्वः	९
२५	यस्त्वाम	९
२६	यादिकावः	९
२७	युस्तुतिः	९
२८	यवंतः	९
२९	यस्मि	९
१	युष्मल	९
२१	यव्युक्षमः	९
२२	यैसामे	९
२३	यमद्विः	९
२४	यैषामी	९
२५	यैषामिः	९
२६	यृशुः	९

१६	युविषुः	१
१७	युषः	१
१८	यैवनदः	१
१९	यतिवेषनः	१
२	यामुः	१
२१	यत्रिः	१
२२	यविदः	१

इन्हें अधियोक्ते में इनका वर्णन यह होते हैं । यह यह वर्णन कहा है यह देखिये—

इन्द्रकी मूलिया

इन वीर हैं इनमें इनकी मूलिया अच्छी रोमांच वह सामाजिक ही है देखिये—

इटि-इमस्ताका इटि-केशः । अ २ १३१३ (१५)

यीथे यूक्षितोक्षका और यीके देशोक्षका इन हैं । और इनमें—

इन्द्रः यस्त्वाम् इरितावि लक्षो यामि पुण्युते ।

अ २ १४३८ (४६५)

इन अपने यीके देशे मूक्षियोंके वस्त्रपैर पानी लगाता है । इन वर्षोंसे पदा लम्हा है जि इनके बाक मूक्षियोंके लाले लाला खिरके (इटि इरित्) लाले रंगके व ।

इन्द्रका गाला

इनका लक्षा युक्षि-प्रीविः (१५) वहा वा । मुक्षीय वितनी योद्धार्ह होती है उससे लक्षा वहा हाना चाहिये । अपने अपनी लाला गाला दो लक्ष्य मन्त्रात होता चाहिये । लेवा याव इष्ट एवा इन्द्रका वा । देखिये—

युक्षियीको यपोइटा सुबाहुः अन्यप्सो मदे ।

इन्द्रो युक्षामि तिग्रते ॥ अ २ १५१२ (१५)

इन (युक्षि प्रीविः) वीर वर्षोक्षका (यपा-उद्दर) यो वेष्यला (सुबाहुः) लक्ष्य याक्षका (अन्यप्सो मदे) लोकारप्ते वस्त्रारप्ते (युक्षामि तिग्रते) लाले मारता है ।

इनका यो (यपा-उद्दर) पुष्ट वा येवर वर्षी थी । ऐसा इष येवरे लीकता है । यह उक्षी वर्षम यातिर लक्ष्य है ।

इन्द्रकी दो शिराए थी

इन्द्री या यिक्षार्ह वी ऐसा वहा है । देखिये—

यस्य दिव्यसो सुहस्ताङ्ग दायार राहसी ।

अ २ १६१९ (४६६)

प्रभारका कारणम् प्रभाव उत्पन्न होता है अतः यह वैष्णवों
युक्त रीढ़ता है । अच्छे लेखस्त्री पुस्तक प्रभावशास्त्री होते ही हैं
जैसा इन भी मी प्रभावी है ।

इन्द्र विद्वान् है

इन्द्रके वर्णनमें बहुतके विद्यार्थ होनेका सी वर्णन है । यह
लेखा वक्ताम् धूर है जैसा यह विद्वान् भी है देखिये—

विद्यवस्थ्य विद्वाम् (१०)— इन्द्र एव विद्यालोक्य
स्थाना है विद्यमें जो वासने बोग्य है उपर्युक्त विद्यालोक्य
एवंत्यो वासना है । विद्यमें वासने बोग्य कीर्ति विद्या उपर्युक्ते
नहीं आती ऐसा मही है । एव विद्यालोक्य वासन प्रकारसे यह
होता है ।

दृढ़ते विद्याय वर्महृते विपक्षिते वास्तव्ये
साम गायत् । अ ३ १११५ (१८)

(दृढ़ते) वर्ते (विद्याय) जाती गाय (वर्महृते)
वर्मके वरुणक वर्म वर्मके (विपक्षिते) विद्वान् (एव
स्थये) स्थान इन्द्रके विद्वे सामवाक्य गणते । स्थान
स्थैर्य गणते ।

इस वर्णनमें दिये एव विद्येवम् विद्वान् इन्द्रके शुभमालोक्य
वर्णन करते हैं । वे एव विद्येवम् उच्ची विद्येव विद्याता दर्शते हैं ।

जरासहित तरुण इन्द्र

इन्द्र हासा सामर्थ्याद् वक्ताम् व्रभाम् विद्वाम् है जैसा
यह वरारहित वक्ता भी है । वक्ताम् वासु विद्यमी भी हूर्दे होती
ही भी यह अ-जूर्यः (२४)— वरारहित है वरारह
यह युक्ता (११)— वक्ता है । वासु विद्यमी भी हूर्दे होती
विद्येव विद्वार तरुण है यह इन्द्र होनेपर तरुण ही है । ऐसा
तरुण विद्यातीते युक्त वक्तव्यी रक्षा आदित्य । तरुण विद्वार विद्येव
है यह दृढ़ते भी वृष्टि नहीं होता । अठ वक्ता विद्यार्था
वक्तव्य वर्पने मनमें वर्षये रक्षा चौम्ब है ।

सेजस्त्री इन्द्र

इन्द्रके वर्णनमें तुमुलतमः (११)— वर्णेत्तु वेष्टसी
हैर है । त्वेष-सं-इन्द्र (१४)— कानिमाल् रेतीव्य
माल् रीढ़वेषाम् इन्द्र है । ऐसे एव वक्ता लेखस्त्री होना
होते हैं । इन्द्र वक्तव्य विरेतेव विद्यातीते वक्तव्यीन् सामर्थ्य
हीन नहीं होता यह वक्ता वेत्तु विद्यातीते वक्तव्यीन् वक्तव्य
माल् रीढ़व है । ऐसा ही वीरोंमें होता आदित्ये । यह तुम्ह
देखे ही होने आदित्ये ।

१ (अवधि सा चान् २)

आनन्दी स्वमावदाला इन्द्र

इन्द्र वक्ताही तथा वक्ताम् वक्ता है अतः उपर्युक्त
वक्तामें ही रहता है । देखिये— मन्दसाक्षः (११६)—
वक्तव्यी वक्ताम् वक्ताम् इन्द्र है । मवाय मायात् (५१)
वार्तावक्ता वक्तुवम् वर्मेव विद्वे इन्द्र वक्ता आहो । वे वर्णन
उपर्युक्ते वक्तव्यी वक्तामें वर्तते हैं । यद्य पक्ता वर्व व्रेम
सदित्यक यह वक्तव्ये सामर्थ्येव वक्तिमान आवंद अति
स्त्रोम् वीरं वीरवं वीरवं वेत्तु विद्यसे वक्ताह वक्ता है ।

इन्द्रके वाहू

इन्द्रके वर्णनमें उपर्युक्ते वाहूमोक्ष वक्तव्य इस तरह हुआ है—
सुवाहूः (१६)— इन्द्रके वाहू वक्तव्य है अवाद्
सुवीक वक्त वर्मिते है ।

सुवाहूः (५१)— वैता वक्त वामर्थ्याद् वोता है
एव वक्तव्य इन्द्रके वाहू वामर्थ्याद् है ।

वाहूदामः (वाहू-मोक्षा) (११)— वाहूमोक्षे
विद्यप वक्त्ये इन्द्र वक्ताम् हुआ है ।

इन्द्रके वाहू ऐसे वक्तावाहू है इस वक्तव्य वह तुम्हें तुमुमोक्ष
पूर्व वर्णनम् वक्त वक्तव्य है । वीरोंमें व्यायाम आदित्य वर्मणे
वाहू ऐसे वक्ताम् वर्मवं वाहिने ।

मुषिषुद्धा करनेवाला इन्द्र

मुषिषुद्धात्पाया वृत्ता मिक्षपथामीहै (५१)—
मुषिषुद्धे इन्द्रोऽस्तु यत् रहता है मुषिषुद्ध वर्मेव इत्योऽप्य परा
वक्त वक्तव्य है । ऐसे वर्णनमें पक्ता वक्तव्य है कि इन्द्र मुषिषुद्ध
वर्मेव भी वक्तव्य वा और मुषिषुद्ध कर्ते इत्यादि तुमुमोक्षोंको
परम्परा वक्तव्य वा ।

पहुत अन्नसे पुक्त इन्द्र

इन्द्र वामर्थ्याद् वै वक्तव्य लटीत्य प्रेतेव वक्तव्य इन्द्रुप
है ऐसे वर्णन देखनेले वक्ता वक्तव्य है कि यह वीरिक वक्त
भी वर्णात्त प्रभावमी वर्मणे पाव रक्षाता होना वर्म वक्तव्य वक्तव्य
में वीर वर्षये वक्तव्य होता । नहीं यो वरीर इन्द्रुप रोमेदी
वक्तव्याता ही नहीं होती । इस विद्येव प्रभाव वक्त देखिये—

पुरु-मोक्षा : (१८)— पहुत वीरव वर्मेवाक्ता वक्तु
वक्तव्यामी वर्मणे पाव रक्षेवाक्ता वीरिक वक्त वर्णात्त प्रभा
वमी वर्मणे वाप रक्षेवाक्ता ।

पुरु-सुः (११४)— पहुत वक्त्ये तुम्ह वर्मेव प्रभा
वे वीरिक वक्त वर्मणे पाव रक्षेवाक्ता ।

सु-मरण (१)— अब जनसंख्या के बारे में जाप रखनेवाला अपेक्षा प्रश्नार्थी पुष्टिकारक, वर्जनरैक तथा उत्तम नहीं जाप ऐसे जनों का इन पर्याप्त प्रश्नार्थी रखता था । इस कारण वह सही जापर्याप्तात्मा रहता था ।

इन्द्र महान् है

जब एक वर्जन देखते हैं तब ही जाप है कि इन एक वर्जन यात्रा और उत्तम है । जैविके इन इनकी महाता ज्ञाने के बारे में बताते—

पृथग् (११)— इन्द्रधन यथा संविकासम् है महात् है
मैदिष्ठः (११)— इन विचार है ।

इन्द्रः महात् परा य (५३)— इन यथा जोर
में है इसमें इनकी जैवी महाता वर्जन हुए हैं जबीं तरह
उसमें भेदभाव ज्ञाना ज्ञाना महाता भी विकार होती है ।

चौः न प्रथिमा यावः (५३)— पुरुषोंके समाज
वस्त्रम् यथा भैरव है । पुरुषोंके वैद्य विस्तीर्ण हैं जैव वस्त्रम्
प्रथम्ये मी अवैत यथा विस्तुत है । उसके जापर्याप्तीय वरास्ती
पुष्टा भैरव नहीं प्रथा ऐसा यथा वर्जनियम् जापर्याप्तात्मा है ।

विजिये महित्वं मस्तु (५१)— वर्जनार्थी इनके
किमे महत्व है । उनके द्वारा यह यथा वरुणोंके वह करता है
इनकिमे उपर्युक्त वस्त्रम् यथा है ।

प्रोत्साहा महात् भूमिष्ठः (५४)— इन जापर्याप्तीये
यथा ही जोर उच्च गुणोंकी इस देखेवाला वज्रस्ती भीर है ।
उसके प्राप्तार्थ दूषण जौंडी जापर्याप्ताकी नहीं है जो इन इन्द्रार्थी
वर्जनार्थी जरु सके ।

शुभिः पृथग् इन्द्रः यावदेष महाय बाकृष्णे (५५)—
जीरोंके जाप रखकर इनकी जापेवाला इन जापर्याप्तीय और
उत्तमार्थके किमे प्रशंसित होता है । इन इनकी जापर्याप्तीय है इन
जापर्याप्तीय यथा है इनके वर्जन वर्जनेवे प्रवापुशी दोती
है, जापर्याप्तीय और उत्तम इनमें होते हैं । इन जापर्याप्तीय
किमे जब और उत्तम इन्द्रधन वर्जन घरते हैं और उनके वर्जन वर्जन
गुणपात्र घरते हैं ।

न गिरेवाला इन्द्र

इन न गिरेवाला है अपने जैविके वह कमी फलित वही
होता है इनकिमे जापर्याप्त महत्व जारी भाव भैरव है जैविके—

म-पात् (१)— न गिरेवाला यथा गिरेवाला
हार है ।

प्र-म-पात् (१)— विशेष दीर्घिते न गिरेवाला
या व गिरेवाला हार है । वह जनों कर्मान्वये इसी विशेष
नहीं होता ।

इन्द्र-याप (५)— विशेष प्रथमि गिरेवाला
हार है ।

वे वह लघुके गिरेवालाके वर्जन हैं । वरिष्ठे ऐसा है
होना जाहिने ।

कृष्णाण करनेवाला मिथ इन्द्र है

शिवः सक्ता इन्द्रः (१२)— इन लक्ष्य ज्ञानात्
गिरेवाला विज्ञ है । इन सहा इन्द्रोंका वित भरता है इन
भरता है, ज्ञान भरता है । इनका यह ज्ञान है, मिथ है,
ध्याद है । वहीं विद्योध वृषा वर्जनेका विचार भी उसके जैव
नहीं ज्ञान है । वहुका हुरा भरता है । पर वह जनरातिम् है ।
जनुष्ठ नार विने विना जनकान्द्र वित हो वहीं वहीं उत्तम हा
भरत वह एक सत्योध्य जाप भरता है वह ज्ञानसंक ही है ।

इन्द्रका मन

इन्द्रका यथा सत्योध्यी सहायता करनेके कार्यमें तत्त्व यथा
है इनकिमे वह सु-मरणः (५५)— सत्योध्यी इन्द्र
पूर्व इनकेमें विचारा मन सहा ज्ञान है मानवोंके विज्ञेवे अने
अनेकों जो अपना मन प्रेरित भरता है । यथा—

यथाः शुभिः सुमताः (५५)— इन वेविकी
जापर्याप्तीये तेवली ज्ञान मन है विद्यम् देख तेवली मनकाम
है ।

मवस्त्रास्त्रप्रथमः देवः (५५)— छात तथा वस्त्र
किमे कुछ यथा विविका देव है ।

जार्या (५)— ज्ञान गुणोंके वह कुछ है और
जागि पृथग्नाः (५) — वर्जिमार्थ जीव जे
विद्या पृथग्न घरते हैं देखा इन उत्तम वर्जने वाला वर्जनार्थी
विजिये कुछ है ।

आर्योंका इक्षण

इन आर्योंका रखन करता है इन कारण उनके जागोध्य
ज्ञान वर्जना जापस्त्रक होता है । जैविके—

आर्य वर्जने प्राप्तवत् (५)— इन आर्योंकी विलेप
दूषण करता है । आर्योंका रखन वर्जना और ज्ञानार्थी
ज्ञान वर्जना वै इनके अवैत ज्ञानार्थक पर्याप्त ही है । आर्य-

(१३)— ये उस होता है। यद्यपी ये पुलांक संरक्षण करता और युद्धार्थी पर्युक्तोंका पुरावर हो सकता है तो इन्द्र सुवार करता नहीं तो वह युद्धार्थिओंको पुरावर भी पुर्योग्य राममें कर्त्त्व ही होता है।

‘दासानि भार्याप्यि करः’ (१४) — इन शब्दोंके बार्य करता है। राम इनका बाम है का युद्धार्थी युद्ध होते हैं। इनमें इन साकारात्मक परमात्मा कर्त्त्वके लिये वाचित करता है और इनकी उचित करके इनको भार्य बनाता है। यद्यपी यहा परक फरके इनका नाम करता है ऐसा वही भूषु उचित प्रश्नेत्रम् अवसर देता है। वे पुरों तो वे आदोंमें जामीं होते हैं वहको आदोंके अधिकार उक्तके द्वय अम होते हैं। व मुखरे तो उचिते युद्ध किया जाता है। जगा दोंको आदे बनानेका वह विषय इन्द्रका था ।

या वास वर्णं अथर्व गुहा का— (२ १)— वह इन वास वर्णये—भर्याद वास अंतोद्ये—नीच स्वावर्म—पुरामें—रक्षा है। आदोंके स्वावर्मे पृथक् त्वानमें वाप रहे हैं। लंबे स्वावर आर्य हैं और नीचके स्वावर वाप रहे हैं ऐसा स्वर्मे अवस्थाम् जानत है। यद्यपी जो अचा स्वाम हो वही वाप वाप जावार्य वजना नीनाकार बरनेवाले जो वह इन ऐसी स्वस्था द्वय करता था ।

आर्य एवं व्योतिः समन्वे विद्वत् (१) — वाप वर्णमें वार्यम् आर्य तेव पुष्पको प्राप्त हो। इन वाह आर्य-त्वके प्रवारके लिये इन प्रकार करता है ।

पुरुषार्थके कर्म करनेवाला इन्द्र

इन स्वावर हैं, विद्वत् है आदोंकी रक्षा करता है आदि इनमें अनेक पुष्प वजालक देते हैं। वे सब उत्तम पुरामेंके गुण हैं। पुरावार्य प्रश्नेत्रम् बनानेवाला इन्द्र है इन विषयमें वहके अन्त्यमें केवल याव प्रकट होता है लिये—

शतकम् (१५) — वैद्यको प्रवारके पुरुषार्थके प्रकल्प बनानेवाला इन्द्र है। अनेक कर्त्त्व वह बनानेवें द्वित वर्णके लिये करता रहता है ।

पुरुषकृत् (१६) — वाप वर्णं वर्णेवाला इन्द्र है ।

त्रुयि कृमिः (२१) — वर्णंत अर्मोंका वर्णेवाला इन्द्र है ।

मध्यमाति वाद्य (१७) — वापुष्य प्रथम वर्णके लिये जो भी करता योग्य रक्षा वासावद है वह वह इन्द्र करता है ।

विनं युगे युगे नव्यम् (४१२) — इन्द्रका कर्म प्रेषेक पुर्यमें पदा मया मया होता है। तुमके अवधार परिसिंहिति बदलेके बो वर्म जैसे घर्मे जाहिने के अर्म हैं दरका है, इन कारण इनके कर्मसे बदलावा हित होता है ।

पौस्यै वर्णा नर्वा (५ १) — पौस्यके जैसेक कर्म परमेक अरज इन्द्र (वर्णी) बनानाम हित वर्णेवाल तुष्ट है ।

कर्त् तु स्वस्य इन्द्रस्य पौस्यं व्यहर्तुं भस्ति (५१३) — वौनासा पौस्यका बनावके हित वर्णेवाला कर्म इनमें नहीं किया है। वर्णात् स्वस्य हित वर्णेके लिये जो कर्म भासास्मक है वे पर कर्म इन्द्र सदा करता रहता है। वह त्वयि हित हो प्रवादनोंमें बदलति हो एतदर्थं वह सदा प्रवाद शीघ्र होता है ।

तादि पौस्या समा मा भूवर् (५११) — आपके वे पौस्यके कर्म तुराने वही हुए हैं। वे सदा तामे वैसे हैं। वर्णात् इन सदा तामोत्तम कर्म बनावके हितके लिये अच्छा रहता है ।

ठतु पुष्पानि मा जारिप्युः (५१२) — इनके तेज वीज नहीं हुए हैं। वहले तेज सदा अमर्त्ये रहते हैं। वह इन कमी सी वक्ता नहीं आन्त वही होता सदा वर्णाही रहत है और जाग्रत्त ज्ञेयकर बनावके प्रश्नामें लिये अद्वन कर्म वित्तने वर्णे पर्व करता ही रहता है ।

स्वस्य कामं विषयतः व योपति (५११) — इन इनके अवधुक्त वो वर्य करते हैं लापर वह बदानि इन वही होता है। इसी इन्द्र बनानाम हित वर्णेके देखते हैं वह वर्ण इन बदु रहता है और उनका मया वह करता है ।

इव वाह इन्द्र बनावके हित वर्णेके वार्य सद करता है। और वो द्वारा वैष्णव कर्म करते हैं उनके जी वाहन होता है ।

लोगोंके लिये प्रथमन करनेवाला

इन लोंदोंकी उचितिके लिये वहा प्रथमन करता है इनमें वहे लोक-इन्द्र (५४) — लोगोंके लिये कुप्रसादार्थक प्रथमन करके सबल बनानेवाला इन्द्र अर्मदर्ता बदलते हैं ।

स्थिर नीतिवाला

विद्वा (११) — इन विद्व है। इनमें वर्ण है कि उक्ती वीति बनानाम हित वर्णेके विषयमें विद्व रहती है। इनमें जमी अनुत्ता वही होती है। मुख वेदामें वहके वार्यकम वक्ता रहत हुआविद्व रहते हैं। जाव एवं, वह द्वारा अद्य दीवाना देखा वही होता है। बनानाम हित विषयमें

होणे देखे ही कर्व वह बोला इस उद्देश्में उत्तमे लिख नहीं रखती है।

लोगोंकी साक्षी

बोय मी कर्वत है कि इन्होंना ना बुझ पाति (११५)
इन हम सबके मुक्त देता है। वह वह बानवाय बनुमत है।

इन्हें अपूर्व है

अ-पूर्वः (१५) — इन जन्मत हैं। इन्हें पहिले
देखा बनवाया हित बनवेवाल थेर्वे नहीं हुआ वा और इसीसे
इस प्रते है कि अमे मी देख गोई नहीं होता। इस अरम
इसके लालेव अह (१६) — यित अर्के प्रते हैं।
परम्परे कह जन्मत लिख हुआ है।

आगे बढ़नेवाला

इन एवं इन्हें अर्के किये जाने बनवाय है। वह
अभी अम्भम प्रश्नव अर्के सम्म पीछे नहीं होता। इस अरम
इसके अधिन्-गु (१७) — आगे बढ़नेवाल प्रते हैं।

पुरा देवि (१८) — जामे वह बनुपर आम्भम अर
इम्भम कर भूम्भाया प्र विगाति (१९) — देखेव
बनुपर इम्भा करता है।

वह इम्भा जामे बढ़ना बनुपर अर्केव बढ़ते कर्वते प्रम्भका
है। यह वीर अम्भी उपाये बनुपर बार्वा प्रते हैं जैसी बार्वा
अर्केमें इन विधेव बढ़ता बदाता है।

म गिरनेवालेको गिरनेवाला

इन पुरिवर बनुपर लक्ष्मन्म यह बढ़नेवाल है। जामे
इसके या अ-भूम्भ-स्मुतः (२०) — म गिरनेवाले
बनुपर विरनेवाल बदते हैं। वह इन जामे अर्के लक्ष्मन्म
विर देखा और बनुदो लक्ष्मन्म अर्केवाल है। पुरिवर
प्रम्भ बनुपर भी अर्के लक्ष्मन्म विरन्म यह बढ़नेवाल है।
न विधनेवालेवे समूच बढ़कर देखनेवाला इन है।

गुप्त न रहनेवाला

इन इन तद्देव अर्व बर्ता एव्व है इकिमे वह लिखा
अ-गोदा (२१) — वह इन विस्मर न देखेवाल
है। अर्के प्रम्भ वामपे वह उक्ते किये सुन हुआ है।

सदा-विता (२२) — देखन्मे याम रहन बनुपर बनुपरे
बीतनेवाला है। वह लिख विवरी होको अरम वह सन भी
भी विप्रवर नहीं यह प्रक्ता।

सार्वदानिक हितके कार्य करता है

इन एवं सार्वदानिक दिल्के कर्व बर्ता है इस अरम

बर्तो भय। — नरोंका हित अर्केमें लरर रक्षाव
क्षा है।

मर्यापस्ते (मर्य-मरपस) (२३) — सर्वदीन
दिल्के कर्व उत्ता भरत है।

पुराणि मर्या वधानः (२४) — सार्वदानिक दिल्के
प्रतुत कर्व बर्तनाव।

'मर्यर मर्य' इन्हेस्य पुराणि छुड़ता मर्यानि कर्म
(२५) — इस प्रते इन्हें अर्वत परमेव वहे मर्यान्म
वार्ताविनिष्ठ हितके किये होते हैं। वह जो कर्व बर्ता है वे उन
सुवर्तनावे हितके भी कर्व होते हैं।

इस अरम इसके कर्वन वर्ता होती है।

त्वरासे कार्य करनेवाला

इन जो कर्व अर्का आहा है वह अस्त्र बर्ता है जो
वर्तम्परे बर्तम रीतिपे उत्तम और सुख भरता है। अर्के
वीच्ये असूरी अवस्थामें बोहता नहीं। इपिके वर्तमे—

तुरा (२५) — त्वरासे कर्व बर्तमें कुल्य।

तुरुणिः (२६) — त्वरासे कर्व बर्तम कर्वन अर्केव
वर्ता।

तुरुजामः (२७) — प्रकेव कर्व अतिर्यक एवा
त्वरम अर्केमें कुल्य।

या असौंया तुरुजामः तुरुणिमन् (२८) —
वी त्वरासे कर्वने ही शोप्रत्येवे कर्व उमात अर्केमें इन्हें
भेत बर्ताव है।

तुरुजामः (२९) — त्वरासे कर्वमें बनुपरे वर्तिव
भरता है।

य तामन्ये इन्हाँ हैं। इस अरम इन्हें सामर्यादी अर्क
प्रक्ता होती है।

इनका सामर्द्ध

शकः (२३) — सामर्यादार इन,

शक्ती-या (२४) — विकास इन है, वर्तम
कर्व भक्ति है।

सत्य-गुप्ता (२५) — या सामर्ये विच्छ
वात है।

उदा वावसत्यति (२६) — वरम्भ वह अर्के
एव है।

स्व-यावा (२७) — वर्ती वात विक्षे पुर्व
इत है।

महाम् भोवसा चरसि (११) — वहे सामर्थ्ये
चाप इन बदला है ।

कुम् वया इथे (१११) — किंच प्रश्नार्थी अनुग्रह
कर्ति इन्हें है ।

विवि ओपर्यु अकाणः (१०१) — पुण्ड्रमें
सामर्थ्य अनुग्रह करता है ।

म् पुराणः न नृतमः अस्य ते वीर्यं म अनुशासन्
(११) — ऐसे जीवन जन्मा ऐसे जीवनीन शर्ते तेरा परा
कर्मणा एवार्थी नहीं कर पकड़ा है । ऐसा इनका सामर्थ्य
अनुग्रह है ।

त्या न किं या भियमन् (११) — इसे ऐसे
ऐसे नहीं पकड़ा । ऐसे जीति अनुष्ठित है ।

भासिष्ठां दिवरा रणाप संस्कृतः (११) —
इन कली नींडे नहीं इस्ता पुराणमें दिवर रहा है और
उद्देखे किंच उसा दैनार रहा है ।

वधः सज्जा दार्ढीसि दधानः (११५) — उम-
और इन है चाप ताप ऐसे शामर्थ्योंसे वापर उत्तेजना
ही है ।

षड्गी चः विद्वा सुप्रया हृजेतु (११५) —
वज्रायां इन वप्ते सामर्थ्ये इसारे किंच उस शार्यं उत्तम
दुष्कर करता है ।

इस वरह इन सामर्थ्यमें है इस वस्त्र वर्णन उक्ती
जर्जना भावी बाती है ।

प्रश्नसित इन्द्र

स्त्रीय वर्णना उप करते हैं, इस विषयमें देखिये—

पुरु-पुरुषः (११) — जूतों द्वारा पर्याप्ति इन है ।

महा (४४) — सुरुच महीन ।

परीयम् (४१) — विद्वांस उप स्तुति करते हैं ।

महौ (११) — मर्वीनीव दृवनीन ।

गृह-भवाः (११) — विद्वा वय वायं और
किंच है ।

स्तोतूपां मद्रकृत् (१००) — उत्तिव उत्तेजनमें
प्राप्त रहा है ।

धुमिक्षासं वर्णीनां वहुलं वप्तस्तुति (४९) —
मानवों हारा प्रवृत्ति वापर विद्वा इनका स्तुति कर ।

दानोक्षसः (११) — इन वापर वर ही है
उत्तर दाया है ।

इस वरह इनकी उप लोप उवा प्रशंसा करते हैं । इस
स्तुतिवे गुरुति उत्तेजनमें दित होता है । वह इन वक्तावा-
है यह है उम्में कुप्रय इसादि उपके गुण स्तुतिमें उन्नत
किंच जाते हैं । गुरुति उत्तेजनाके उपमें ऐसा उत्तम है यह
मात्र उम जाता है और इन गुणोंसे उत्तेजनमें वापर उत्तेजन
प्रवृत्ति इनका स्तुतिवे उत्तेजनमें उत्तम होता है । महि वे
गुण विविध उत्तेजनमें वापर किंच तो वह उत्तम है । इस
प्रवृत्ति गुण होता है और इस वरह उपर्यु उत्तर्वा होती है ।
स्तुतिवे यह जाम है ।

इन्द्रकी गोवें

इनके पाप जाप गौवे होती है । वह उन्ने इन लोप है
जग्मे देखियोंसे इन पत्तिके दिवे देता है तथा योगम अनुवोद्ये
गौवे देता है । इन गोदा उत्तम स्तुतिसे पापन करता है अतः
उसके पापीय गौवे उत्तमोत्तम होती है ।

गोमात् (११) — गोबोदो उपने पाप उत्तेजनामा
गोपतिः (१११) — गोबोदी यापना करतेजन

शाकि-गुः (११) — स्तुतिवी गोबोदा नियमित
करतेजन, हास्युप गोबोदो उपने पाप उत्तेजनाम

अ-गो-रुपः (४१) — गोबोदो न रोदेजनामा
उत्तमी उत्तिवे वापा न उत्तेजनाम, गोबोदी उत्तिवे उत्तेज-
नाम ।

गार्भ पुरस्कृत् (७१५) — गोबोद उत्तरक
गविष्प (४१) — गोबोदी इनके अनुसार उत्तिवे
करतेजन

पुरुमोजसे गा उत्तम (६१) — वहूत अन
उत्तेजनामी याका इन वप्त करता है । यस वहूत इप देती है
ऐसी गौबोदी इन उपने पाप उत्तम है ।

यः वस्त्रस्य वप्तया गा उत्तम् (१) —
विषेदे उपमे उत्तर रखी गोबोद उत्तर विद्वाम ।

दायापायो देवाः भाविः वह्योत् (४५) —
रात्रीमें बहुते विषावी पावे इनमें प्रवृत्ति जाती । बहुते
प्रपत्ति उक्ते उपके वापरी गौवे व्याप्ति वार्तन उपके रखी ।

भंगिरोद्यो गुहास्तरीः गा: भाविष्यहृष्टयः उत्त आ
मद्रकृत् (१०४) — भंगिरा जीवितेके दिवे गौवे गो दिवीन
उत्तर रखी ती उपके वापर विद्वा और उनका उप उन
स्तुतियोंके दिवे विषा ।

गव्य वद्यस्य द्यत उत्तिवे (१४) — उक्तो याम
ओर जीवे इन वापमें देता है ।

सब प्रकाशक शमर्पे इनमें रहता है इधिने बहुत मात्र गोदावित होता है।

सप्तलः असपदमुतः (५८८) — वह वस्त्रात् है जो उसमें न विवेचात् है। जपने वसते वह उच्चतर होता रहता है।

शूष्पश्च सुरी धीमहि (४०८) इसके अन्त द्वंद्व अभ्यासमें इस कहते हैं।

या तिग्रमूर्गो शूष्पमो न मीमा एका कृद्योऽ
प्रदयावधयति (४४३) — वह इन लीं की सीमाओं से छोड़े
छान याहामन्तर है वह असेका ही सब जनुसन्धि स्वाम
भ्रातृ भरता है जिनक रथ्य है। असेका ही अन्ते वह है
अन्त सब लुभुओऽप्त वरावित भरता है।

न महिमाते न वीर्ये न रायः इदं महानुष्ठित (४४२) — खोई थीर लें महिमा देता वीरे लें भूते भगवती नहीं कर रहता।

रमोदाः (४४३) — इदं वह देवेशात् है।

अनूर्ध्वी वासी यमः (४४) — वीरा दीर्घ वक्षान्
विष्यक दोता है।

ते वीर्यस्य विहितः वर्कित् (४५१) — ते परा
स्त्रीयो भूर्ति इस्तिप्य इस्ति दर्शेतावें पर्वत है।

पूरुषः ते वस्य वीर्यस्य वित्तुः (४५६) — वीर ऐसे
इस प्रायस्य वास्त्र उत्तर जाते हैं।

चिकित्सुपे वसुर्याय मम्म (५१) — जो हासी वा
वक्षान् दोता है तद्यथा वात्र यवा जाता है।

शब्दसे दाये वस्त्रा (४४३) — वहके वार वस्त्र
मिथे दंसित हैं वास्त्रसंक्षय जर्मन्त है।

विष्वा वासासा वस्त्राय महिमा वा प्राया (५११) —
तो एक और वास्त्रस्य महिमाने मर रिता है असंत वहा
विष्वि और वास्त्रस्य है जहाँ महिमा वह जाती है।

ते वक्षात् सहस्रः महिमातः (५१४) — ते वक्ष
वार वाहके करत प्रिय दृश्य है।

ते वृक्षयादि वर्षीयम् (५१) — तेरे वर्षीय वर्षीय
भ्रवे इन वर्षीय वर्षों हैं।

वृक्षिग्रूप्यः महिमा (५१३) — इदं यहा वस्त्रस्य
वार और भूर्ति के वास्त्र वक्षान् है।

महावृक्षः सरायः देवा इन्द्रा (५११) — वही
महिमावाय वह देव इन्द्र है।

इन्द्रः शूष्पं पर्ये (५७) — इदं प्रवान् वह वास्त्र
कहा है।

शूष्पर्य दाया (५११) — इहाँ महिमा वह भैरव है।
महिमामां बोद्धा (५११) — इस इन्द्रज वर्षीय
वास्त्रस्य है।

वर्षारेण महाता शूष्पयेव विष्वा महीसि वर्षि
प्रत्यक्षाणः (५१३) — वर्षारेण महा वास्त्रसे वसे इन
वास्त्रसोंमें वह असि दीप्त वर्णात् है।

मूर्तिः प्राप्त वस्याद् वृद्धं व्यष्टं दूपसे (५१)
मात्रायी द्वारा पूर्ण विष्वि वर्षीय इतर विष्वाओंमें वास्त्रसे
पूरुषात् वाता है।

इदं तद्द इसके प्रवान् वास्त्रव्यवह वक्षम दद कर रहा है।
इस वर्षीये वर्षोंमें वसन्ते सामर्थ्य वडाना चाहिते वह ददीं
सुर्ति वर्षेवालोंमें वर्षव देती है जो यात्रोंमें वर्षाति के
वर्षेत वास्त्रवक्ष है।

किलेमें रहनेवाला इन्द्र

मद्दि-यः (५१५) — यहाँ विक्षेपे इदं वर्ष
है। यह इस वीरीये वर्षावित्तोंके मिथे यहाँ विक्षेपे वर्ष
है। विक्षेपे रहनेवे वर्षीये वसन्ते सामर्थ्य वडाना चाहिते वह ददीं
सुर्ति वर्षेवालोंमें वर्षव देती है जो यात्रोंमें वर्षाति के
वर्षेत वास्त्रवक्ष है।

शूष्पुके किले इन्द्र तोहता है

इदं वह वर्षतरके विक्षेपे रहता है। शूष्पे इष्ट व
विक्षेपे वर्षेत वास्त्रा है। यह वर्षे इदं वर्षुके विक्षेपे वर्ष
है वर्षमें व्रेत्य वर्ष है तथा वर्षमें वसन्ते वर्षमें वर्षेवालोंके वर्ष
है। शूष्पुके वर्षाये इतरता है और वर्षमें वास्त्रे वर्षेवालोंके वर्षाये
है। इदूरे वर्षेवाले वे वर्षमें वृष्ट है वर्षमें वे वे वर्षेवाले—

पूर्मित् (५१-मित्) (५१) — शूष्पुके वर्षोंके विक्षेपे
वीरेवाला इन्द्र है।

पुरा दूर्मा (५१) — शूष्पुके वर्षीयोंके लोडेवाल
वर्षे वोक्षासा पुरा विमित्ति (५११) — यह इस
वर्षों वर्षमें शूष्पुके वर्षीयोंके विक्षेपोंके वर्षाता है।

वर्षतीर्त्ता पुरा इन्द्र वर्षि (५१) — यह इन्द्रे
वर्षों विक्षेपे तोहता है।

वारवीः पुरा वासावानः मवातिरा (५१५) —
वार वस्त्रमें रहनेवे विक्षेपे वारवी इन्द्रुके विक्षेपे वास्त्रमें
तोहता है।

इदं पुरा वोक्षासा संहसि (५१५) — इदं विक्षेपे व
वर्षमें वर्षों तोहता है।

वाक्षोक्षासा वह ववति पुरा विमेव (५१) — वर्षों
वर्षमें वर्षोंके विमावाले विक्षेपे वोर दिये।

नवनवाति पुरा सदा (१४७) — निम्नानने लिखते हैं तोड़ दिवा ।

पश्चिमवता परिपूर्णा अनानुदः वृंगदस्य शाला
पुरा अमिवत् (१५१) — अविष्टके द्वाय देहि हुई कृष्ण
हींगकी दी वर्णितोभे दूषे लोड दिवा ।

अवस्थुला स्तुभवसा उपकृत्युपा एतान् द्विषय
जसयद्या पर्चि सहस्रा नवति नव हुपद्या रथ्या
चक्रेण ति अवधृ (१५३) — जिन इन्हने भेते हुए
अहें मुझमें हम्बा लिये हए इन दोस बनावाओंको तका
ज्ञाने वाठ हवार निम्नानने लेखियोंको नवद्य रखकरे मार
बाला । वाठ हवार जीवियोंका परम भरनेके लिये विलाना
मन आहिये बला इन्हके बाब बल वा वह इवया मार है ।

स्वं अर्जु महे यूने राहे कृष्ण अविष्टिग्यं मामु
अवरद्यया (१५४) — ऐसे इष्ट दस्म राकाम्य हिं इरेने
लिये कृष्ण अविष्ट और आयुष्म भारा ।

लिखेहाने शत्रुतमा अविषेयीः शूर्य अहन् (१५०) —
इरेने लिये तूने लोंगे लिखें प्रवेश किना वह तमय तूने
इतको मार दिवा ।

कृत ममुष्मि अहन् (१५७) — और अमुषियों मी
मारा ।

इष्ट तद युक्ते लिये शाहनेका वर्ण देखें हैं । वाठ वाठ
हवार एतु अविष्टिग्य वह दिया इष्ट अर्जुके लिये इत्युक्त देख
किना होगा इष्टी अनना पाठक हों । किनोंने इत्यर लक्ष्मे
दावेहि भाव बोदा देव बुजा तो वह बक्षता है । पर अर्जुके
लिये लोहाना अवेहि रहे अवुक्षीया भाव अना अना अन बाल
हवार एतुके अविष्टिग्या भाव अना आहि अवं इरेने के लिये
अर्जुके हैम्बदी अवेहा तीन तुका हो फैज्ज अहन् ही आहिये ।
अना इन्हें बाब वा वह इष्ट वर्णमें लिह होता है ।

इन्द्रका सरक्षण सामर्थ्य

इन इष्ट अवद निम्नानने लिये लक्ष्मे हैं और नोर
लिखें भावर रहता है इष्ट इत्या युद्ध अवेहा भावव्य
किना बाता है वह इष्ट होता है । युद्ध बरेहा अविष्टिग्य
भावव्य होता है । इष्ट अमान्येहि वर्णेहि अवुक्षोहि सरक्षण
किना बाता है और आमान्यिक अपरदावियोंकी दीरक्षण
होता है । इत्यन्ते इष्ट उक्तुका उत्तर बरेहा रे ज्ञान
प्या है—

अविता (१) — इष्ट इष्ट अवेहा है ।

सत्यता (१) — इत्यम भावन अवेहाव्य है ।

१ (वर्ण सा वाच ३)

कृष्णपात्या (२) — वर्णके कृपाका उत्तर । आर्य
वह भरते हैं और अनाम यज्ञ नाम बरतते हैं । इत्यन्ते वर्णके
कृपाप्य इन बरेहा अर्थ भाव बातिसा इन्ह भरता है ।

स्वं सम्राट् यर्म असि (१४) — तु भेरा वहा
भरत है । वेरे बरव इन बरता है वेरे तु भेरा इन
भरत है ।

इन्द्रः सर्वाम्यः आदाम्यः परि अमर्यं करत्
(१५) — इन्द्र सब दियोमेंस जीवाले लक्ष्मे लिये
यदाय लिमाय भरता है ।

सक्षाया ! यागे योगे वासे यावे तायस्तरं इन्द्र
स्वर्णे इवायहे (११) — हे मित्र ! इम घट निम्न
एतुके साथ उत्तर बोनेपर प्रशेष युद्धमें बलामी इन्होंका अर्पण
मुराहा भरेहो लिये तुक्षते हैं ।

सक्षा इन्द्रः पुरस्तात् तत् मध्यतः सत्यम्
वरिष्ठः कृष्णात् (१७) — इमारा मित्र इन आपदे और
मध्ये इमारे विक्षिक लिये भेतु उत्तराप्त होने, अपरा बन देते ।

यने हिते पेन आविष्य (१९) — मुद छुर होनेपर
जपनी उत्तिष्ठे तु इमारा उत्तर बरता है । वह अन
नाम युद्ध है कृष्णिक युद्धमें दिवत्र शश होनेपर युद्ध बन
धर्मे अर्थात् होता है ।

साधकिषीमिः अवितिः आवेदिः नः इव उपा
गमत् (११३) — इवारो उत्तर बोनालों और आपम्भोंसे
इमारे पाल वह इन आता है और इमारा उत्तरण बाला है ।

हे इन्द्र ! यातुपामस्य यित्ता यत्तानि त्रियुपः
ले अर्ति यातुपीमहे (१३) — हे इन्द्र ! तु तु अप
वर्णेहासे और जनोंया औलेवाले वीठे बरक्षणम् इम बाहीने
हैं । तीरी अविष्टे इमारा उत्तरण होता है ।

नः अमुकेमिः यस्त्वै ब्रायम्य (१४१) — इमारा
उत्तर भरत बालोंहि बर । उनमें बरत ब्रायं भरनेवी
आपदाता न है ।

तत्त्वा द्वती वायुप्रस्व (२५) — अर्जे उत्तरण
जपनी उत्तर अविष्ट बाला

स यावेतु न प्रायिपत् (११८) — वह इन् युद्धमें
इमारा उत्तरण बरता है ।

न अविता मय— (१४१) — तु इमारा उत्तरण है ।

सुरपात्यु द्वती युद्धमिति (१४४) — इत्यम तु तु तु
त्यम बालेवाले इत्यप्ते इम जपनी बुलाहे लिये तुक्षते हैं ।

मापते दायुषं ते यिमृत्यं द्वतप (२१) —
वह बडे बालहे लिये तीरी यिमृत्यों उत्तरण होती है ।

रेवता महा गोदाः (१४५) — परमात्मा इमान्
पूर्णे द्युम्हे देवेष्वान् हे।

इस लकड़े बदन भटा रहे हैं कि इस गोलीओं सताम परिक्षा करता है। अधिक दूरस्थी वज्र भेजवानी घैरुं ठेवार फूल है और उनमें एवं शिरोंके किसी भूला है।

एन्ड्र चोस्टोकी पालना करता है

इन ऐसी बताय मौजूदी पालना करता है उसी तरह वह सभी ऐसी पालना समेवन्य सी है। ऐसिये—

हयंशः (हरि-शः) (५) — शब्द या पीढ़े
पेड़ोंसे रखनेवाला हूँ तू।

हरि-प्रिया (१२) — जोड़े विष्णु का संत भिल
के देशा इन्हूं है।

हरि-पा (११४) — शाक नीहे अपवे पास रक्ते
पाता हन्द है :

हरीषा स्याता रम्भः १ (४-१) — चेन्नेद्वये शास्त्र
देनेष्वाता रम्भ है ।

महाराष्ट्र पारा (७१५) — शासन लक्ष्य करना चाहा दृष्ट है।

प्रायोगी (१) — इसके साथ रख्ये तुलनात्मक रूप से यहाँ पर्याप्त होते हैं।

प्रेसिया ब्राह्मणा हरी ला मावताप् (१) —
वडे वालोंकाके इतारेहे शुद्ध वालेयाके रो वडे तुम्है-मन्दो
चांडा के भावे ।

इन्द्र विष्णुर् सप्ताह (५) — इन् ब्रह्मोम्भ
गोदोम्भे तेवार भरत है। ब्रह्मोम्भे वीतनेकके गोदे इन्द्र
तेवार भरत है। गोदोम्भे ऐसी किंवा वह देता है किसके उन
दैर्घ्यमें अन्दे गोदे वीतो हैं।

पश्चोपुदामा संमिन्स्य इप्पों सका (१५) —
हमरे इसरे के दाव एवं तात्पुरता के गोड़ों परीक्षा है
है अपार्ट ऐसे उत्तम जिल्हे पर रहते हैं, ऐसा इन हैं

ਤੇ ਹਰੀ ਸੁਪਮਾ (੧੧) — ਭੈ ਲੋਗੀ ਕੀਵੇਂ ਬਚਪਨ
(ਉਠੇ ਜਾਂਦੇ ਅੰਦਰੋਂ ਆਏ ਹੋਏ)।

त्या सरवर्ति नदी बुनेपु वर्णता काळामु हसामो
(१४४) — तद इम वीप दुष्क लेसे वर्णय पक्ष इसमे
हुन्हेकि चिर कालेपर— तदा तुल्यीउडे मैसानाम— दुष्कतो है
प्राप्त्यामु दुकाटे है ।

रम्यदा सप्तया आ वहन्तु (१२) — रम्यी रामे-
पामे बोह दृष्टे वहा के आमे ।

अरुणीः हरयोः पा सप्तमिरे (११४)— यह ऐसे
इसरों वाले बाहु बोरे हैं ।

मध्यम हरिम्पा जायाहि (१११) — के ए
बोहोदे बाबो ।

महामृत नारे मा सुसुका (१४) — इसके लिए यह अपने बोडीये न होवे ।

गर्वपर्यं रथे इतिवा पुजे (५) — यतापि हैं
वादे रथें मैं तो खोलेंगे बोल्या है।

काशिमा पूरुषस्त्री हरी रथ तथा बद्राजा यज्ञो
(१२५) — ऐसे वार्षिकों की विनाके स्टीर्ट्स चूत है व
शीलन है रेसे देखती ही यो रथयें द्वाहे इमरे परम हैं
वार्षे। इसमें प्रधान-स्त्री नह है। वी भैंशा परार्व विनाके
पारिए द्वयक्षय है। अब इन्हे इनके वार्षिकों के विकल्पों में

हरिम्मी डप धाहि (१५६) — देखते वहा वालो
दो लोडे लक्ष्ये लक्ष्ये लोडम्भ, इस रखमे लैठार नहीं लागे।
लाक्ष्ये रखनो दो लोडे लोडे लागे हैं, पर इस दर्शनमध्ये नहीं।

बोधिवा दती दत्त चक्रवर्ती (१५८) — जो बाले
गाड़े दो जैसे उत्तमों के नाथे हैं।

सिंहाय द्वारी तुरा दिस्कर (१४) — दुर्में सिंह
दक्ष दुर्म द्वारा के इनमें से कोई नहीं पड़ता है।

इप्पता हरी विधियां मंगिलं इन्द्रे रथे बहु
 (१८७) — त्रिष्णु हो जोडे वज्राणी आवृत्ति इन्द्रे रथे
 हो आते हैं।

धर्म रथे विपस्त्रा शोणा पूर्ण मुकाबला काम्या हारी तुलसि (१५) — इह रथमें देखी जैसे लाल (पंचे रो भिन कोडे धर्मीर इनमें के चरममें छिन देखे गये हैं।

तथा उत्तिष्ठि सुप्राची। मर्या अव्वावती गाय
प्रधमा गच्छति (१५) — लेरी द्वयमें सुरक्षित हैं

सर्वत्रया दृशी दद्य विमुच्च (११०) — उप एवं

मध्यपुत्र द्वारा प्रस्तुत (१४)—मर विद्येशी द्वे
स्त्री द्वारा दीया।

परमस्पृष्ट दृष्टि हरी वहता : (४४) — विश्वामित्र दृष्टि
दृष्टि से वाहन लोडे वहते हैं ।

स्या अवता लक्षासः सि इवामहै (४५) —
ऐपे रेखाएँ बोलेंदि मुखित हुए इन प्रकृते रोक उठते हैं ।

अथङ्गः हरिमिः यः जोप इयते (१८) — रेप-
वाते बोलेंदि वह इन्हें बोलते कीज चाहा है । इष मैत्रमें

हरिमिः अनेक शब्दोंके बाव इष अर्थमें प्रयोग है ।
भन्न इरी दो बोडे ऐसा ही प्रयोग है ।

वापासः विविधासः इण्डियाः सप्तमाहः एन
सूर्यति दर्श वक्षामार्तुं प्रत्यवसर्त्त सूर्यदृश्यमें हैं भूस्मवा
या वाहमृ (१४) — उप वक्षामें इन्हें बोले उप उप
और मुखिति पालक बदले बमान वाहुधृशे वक्षान् उप
समर्थनके इष इन्हें इन्हें उप ते बोडे ।

इन्द्रका रथ

वर्णके वर्णके वर्णम इन्हें रथम भी वर्णन आवा है ।
इन बोलेपर बेत्ता नहीं वह रथ रथमें ही बेल्ता है । अतः
च्छा है ।

रथे-काः (११) — इष रथमें बेल्ता है ।

ते रथः सुखाम (११) — तेरा इष रथम रीतिरे
दिक है, इष बहुत है ।

इन्हुनी रथे वर्षोपुजा इन्द्रियाहा इरी पुद्रिति
(१५) — औह वर्षोंके रथम रथमें इन्हें भी कुर
वर्णमें इन्हें भी कुर रफे बोडे बोले जाते हैं ।

मानिमामः सुखाम (१६) — अपार महिमाम
और पुरुष रथाम इन्हैं हैं । वह इन्द्र रथ (पुरुष) उत्तम
वर्णमाम है । बेल्ते वह चाहा है और अन्तर बेल्तोंके
उप मी च्छ नहीं होता । यहा उच्च उत्तम रथ है ।

प्रमेकः कुमारकः लर्य रथ अपितिष्ठन् (५४) —
केवा उच्च स्तं न ते रथपर बहर बैठा । इष रथ वह धर
और बेल्तों पुष्ट ही है । कुमारनके उप इन्हें वह
पुष्टा सप्तामें प्रकृत हो रही है ।

इन प्रधार बोडे और रथम वर्णन इन्द्र विषयमें बेरमें
आवा हुआ है । इन रथमें बेल्तर ही इन्हर बहर जाता है ।
उच्च संते धर्द है वे उनिहें बैठक किये वाममें आते
होंगे । भौमि इन्हें रथमें भी ही बोडे जीते जाते हैं ।

इन्द्रका अतुल सामर्थ्य

इनके व्युत्त वामर्थमें विषयमें बेल्तोंमें बहुत ही उच्च
है, उच्च वह बोलाना विवरणमें बहरा है—

भीमः (७) — इन्ह भासमवेत है इष व्युत्ते बैठा
रीता है वह माल इष उच्च बारा प्रकृत हुआ है ।

तदम (११) — इन्द्रक वामर्थ निलेव है ।

पुरुषाकः (३८) — व्युत्त वर्णितमी है ।

मोमिष्ठा (२८०) — इष व्युत्त भावमी है महा
वक्षान है ।

सहस्रावाम् (२४) — बाहुधी वर्णिष्ठे वह तुल
है । व्युत्त परावन कर्त्तव्य उपर्य वामर्थ विषय नविष्ठ है ।

शधस्सपतिः (१५) — वह उत्तमा लायी है ।

व्याप्तिमाल लोकः (११) — इषम व्याप्तिष्ठ वामर्थ्य
है । उक्तके समान व्युत्ते विषयका भी वह नहीं है ।

ते वीर्यं भूरि (७) — इन्द्र वरावर्म व्युत्त यह है ।

विष्वाणु श्यामसे व्याप्तुल (११) — उर्वर व्याप्तुर्वत
वह रथमें विष्वे प्रविष्ट है । उक्त व्याप्तुर्वत वह रथमें दोलेवाल
वर्ण बहरा रहता है ।

विष्वे केवल सह सत्ता विष्वे (७) — यह
प्रवर्त्तय उर्वर वामर्थ दृ-इन्द्र- वाम बहरा है । उक्तमें वो
वामर्थ बहर है वह उप इन्हें है ।

पृथमः पृथ्यावान् सत्यः सत्त्वा पृथमायः सह
स्वाम् पृथ्यते (१३) — वक्षार वामर्थपुल सत्ता सत्त
वाम बोडे क्षेत्रों कुषक्षतास बहरेवाना व्युत्त परावन
व्यवेक्षा वो इन दे उपर्य लालिहोती है । वह इष पुरु
माया है । इष वर्षम वह बोडे क्षेत्रे कुषक्षतासे
क्षेत्रे कुषक्षतास बोडे क्षेत्रे विष्वे भी व्युत्त बोलेमें
स्त्रीज ऐसा होता है । माया वह वर्षे कुषक्षता तथा
वर्ष प्राय ऐसा दोगों प्रकारप्राय है । वह इष पृथ्येवाममें
व्युत्त परावन करता है तथा भाद्रक्षता दोलेपर इन्द्र बहैव
बहरे भी व्युत्त नहीं करता है । वे दोगों वह उत्तमें
विष्वित हैं ।

या वासासा विष्वामि भाततान (५४) — वो इन्द्र
वर्णमें वर्षे वह व्युत्तोंमें बैठकर मारता है । उपु एविष्ठ
होने नहीं होता, उनको भैयता है और वह भ्रष्ट भरता है ।

वसदाम व्युत्तिः पर्वतेषु व्याप्तोपश्याच शाविष्ठे तं
मतिष्ठिः अपि — (१३) — व्युत्ते इवावेदाम सर्व
वीर्य तरन बहरेवाना पर्वतपरके विष्वें इवावेदाम शोहीर्वत
भावन बहरेवाम वसदाम है इवावेदाम व्युत्तिविष्ठे भरते हैं ।

ततुरि वह वर्षे लराते वह प्रात बहरेवाम वीक्षयम
व्युत्त वाप बहरेवाना है । पर्वतपरके इन्द्र रथम
वीर्यतिव वाम बहरा है भावमें उपर्य वाम बहरेवाम
प्रकृत हीये है भावन वर्षमें विष वर्णमें ऐसा वर्षम होता है ।

कर प्रधारण शामर्थ इसमें रहता है। इसलिये बस्तु शामर्थ
गोपनीय रहता है।

स्वप्नः अनपर्युतः (३८८ — यह अव्याहृत है और
यही न प्रियमेणात्मक है। अपने बड़े से यह उच्चतर हीता रखा है।

शूष्पस्य भूरि वीमदि (७५८) सनके भारप्य द्वासे अप-
सानमें इम रहते हैं।

या तिथ्यमध्यूगो कृपमो न मीमा एक। कृष्ण
प्रद्यमावधि (१४३) — वह इन दीवे सीमाके लैंडके
समाज महामंडर है वह ज्ञेय ही एवं कृष्णके साथ
भ्रष्ट होता है विष्णु भ्रष्ट है। असेहा ही वप्पे वहसे
भ्रष्ट सह कृष्णोऽथ पराविष्ट होता है।

म महिमावं स वीर्यं त्र रापः उह महाकुरुति
 (४५३— एवं वीर लेखी महिमा देवा वीरं लेख वनवी
 षणारी नहीं कर पात्ता ।

रमादाः (२१९) — इन पक्ष देवेशाम है ।

अनूपी कासी परमः (४५) — पीड़ा रहित वस्त्राल्
दिक्षामुक्त होया है :

ते योप्यस्य उद्दिष्टः अर्थात् (४३) — ते पा-
क्षयोहि वीर्यं उत्तिष्ठे इष्ट्या करनेवाचोत्त वार्ता है।

पूरवा से वस्त्र वीर्यस्प दितुः (४१५)— थेग लेहे
इस वार्षिकमध्ये वस्त्रा ताहु बानहो है ।

विकिरुपे भस्त्रायि मम (५ १) — जो इनी वा
स्त्रायरं इति हे बहुध खात्र गया थाता है।

श्रावसे राधे सपा (१४२) — बहुके आर चदम
लिये संकरित होतेहो लालसद्य जलत हे ।

विभाग साक्षरता प्रयोग महिला वा पर्याप्त (५१)।
जो वह अब शाकपूरी महिलाएँ मर दिया है वहसंदेश
प्रक्रिये और शाकपूरी है वह महिला वह भी है।

त्य वसात् सहस्र अमिकातः (५१४) — त वस
धर वादेष्व वास अमिद इति ।

ते वृष्टयानि वर्षाम् (१) — ते वर्षोऽस्य वर्षम्
कर्तुं इप्स वर्षम् वार्ताते ।

तुषिगुप्तः सहितः (११) — इन यहा शास्त्र-
वाद और मंत्रों के बाबत वरदान है।

**प्रदान् द्वारा संस्था द्वारा इन्होंने (११) — वहीं
महिलाओं का एक देश बना है**

(ग्रन्थालय दृष्टि) — इस विषय का वर्तमान
प्राप्ति है।

ब्रूपर्द्ध शासः (७११) — इसका प्रमाणी एक ऐति-
अप्रतिमान शोषणः (१११) — इस इसका वर्णन
 करता है।

**महाराज महारा बुधवरे यित्ता महाराज अंति
प्रत्यक्षापाप (१३) — महाराज महा बुधवरे करने वा
सामग्रीदो वह अंति ठीक्स बनात है।**

मुमिं प्राण भपाइ इदृश स्थान हृपसे (१३)-
मानवी हारा पूर्व बधिम बहिन, इतर विकाशोंमि लहरपन
त् त्रृप्त्या भावा है।

इष वरह इनके प्रवाप शामर्थ्य कर्त्ता देह दर रहे ।
इष वर्षतांशे भवेत्ते असामे सामर्थ्य वदाना वदहीते कर रहे
सुनि अलेकामें वृत्त देत्यि है जो मानवोंमें उत्तिके
अद्वित व्यवस्था ।

किलेमे पुनेवाला इन्हे

महिं-वा : (११६) — पाहाड़ी फिर्में इस रथ
दे । नह इस थोड़ी मुराखिलतके लिये पाहाड़ी फिर्में प्रव
दे । फिर्में रातेसे अपनी मुराखिलता निवापत होती है । अ
बद कलुजाकि फिर्मे लोटावा है रेविदे—

शास्त्रके किले इनम् सोबता है

इस बारे पर्याप्त जिक्रों द्वारा है। सबुदे इस जन
जिक्रों अनेक बाबायां हैं। एक बारे इस बाबुदे जिक्र द्वारा
है उनमें द्वेष कराया है तबा बाबाये अन्ये संस्कृती भेद
हैं। अन्ये बाबाये इसमें हैं और अन्ये जाते जोपरी द्वारा

१०। इनके बारे में यह कहा जाता है कि भारत की सभ्यता विश्वासी है। इनके वर्णनों में वर्षा वृष्टि है वर्षा वृष्टि वर्षा वृष्टि—
पूर्विन् (पूर्व-मिन्) (११) — छतुके गवर्णर्स के लिये विश्वासी विश्वासी विश्वासी हैं।

पुर्ण दृश्य (११) — एकुण श्रीरामकी दोषविकला
समय गोदावरी पुरा लिपिमति (१२१) — यह दृश्य
अपने वक्तव्य समझी बगीचों के चिह्नों को दीर्घकाल है।

धार्यतीर्थ तुरं दर्शा भसि (४१) — न वा
लो विकीर्णी दीक्षा है।

पारदीः पुरा सासहानः अवातिरा (११) ।—
परद कदम्बे रहवाल सिंहे वनाव शत्रुके हिंसे लाहौरे देखे

इर्द पुरे भारता संहसि (११६) — इर विलोपे ५

बादोजसा अप मवति पुरां विमेष (१) — अपे
बाहुद पन्ने प्रत्येक विभाग इसे लाभ हिसे ।

वदवदति पुरा सदा (१४७) — विन्यासदे किंवद्दे
तोऽहं दिवा ।

क्षुभिष्मना परिष्वता व्यानुदः सुगदस्य शता:
पुरा अविष्ट (११६) — अविष्टसे शता तेरी हुई अंग
वृष्टिर्ही ती वर्णितोऽहे तुमे लेड दिवा ।

वदवदुमा सुभवसा उपदग्नुपः एतान् द्विद्यु
सदवदः पर्थि सदस्ता वदति मधु दुष्पदा इत्या
कलेण नि अचूपः (१२३) — विना वदाम तेरे हुए
भैले द्विलोहे इत्या किंवे हुए हव तीत वदरामार्गोंके तवा
ज्ञके बाठ हवार विन्यासदे किंविको अल्प इत्याप्ये मार
वद्य । बाठ हवार ऐतिहाय परामर भरनेके किंवे वितना
वद आहिवे वदना इत्यके पाच बाब वा वद इत्यावाच हे ।

त्वं भस्मे मोऽप्ते राहे कुरुत अविधिर्व भाषु
भद्रयदः (११४) — तुमे इत तद्व रामाम दित भरनेके
किंवे इत्य अविधिर्व और वामुदो मारा ।

निवेद्यामे वदवदमा अविकेशी वृद्ध व्याह (१४५) —
एतेके किंवे तुमे तीवे किंविमे प्रेष्व किंवा वद एत्यम तुमे
इत्येष्व मार दिवा ।

वद भसुष्मि व्याह (१४६) — और वसुष्मिको नी
मारा ।

इत तद्व बनुके किंवे तोदेवा वर्जन तेर्वे हे । बाठ घाठ
हवार बनु अविकेश वद किंवा इत वायेके किंवे इत्याप्ये वैम
किंवा होवा इत्यामी वदना पाठ तेरे । किंविमे इत्यर वदनेके
पाच वोदा क्षेत्र वृद्धा तो वड इत्या हे । पर बनुके
किंवे वोदना ज्ञमे रहे लक्ष्मीवाम वाच वदना बाहि वर्जन भरनेके किंवे
बनुके वेन्यो जरेया तीव्र वृद्धा तो केवल वदवद्य ही आहिवे ।
वदना इत्येष्व वाच वा वद इत्य वर्जनसे किंवद्दो तोहा हे ।

इन्द्रका सरक्षण सामर्थ्य

इत एत एत्यम विन्यासदे किंवे बनुके तेवा हे और सोवे
किंविदे वाचर रहाता हे इत्ये इत्यका तुद भरनेका वाचर्व
वितना वाच हे यह तद्व होता हे । तुद भरनेका अविकेश
वदवद्य होता हे । इत वायेष्वे वीरेके बनुकेविंहे संरक्षण
किंवा वाच हे और वाम्पीर्व वदवदारीविंहे भी संरक्षण
होता हे । इत्यन्मे इत तद्वमुख दंडकम भरनेका हे ज्ञा
भा हे—

अविता (११) — इत रक्ष भरनेका हे ।

सत्यति (१४) — वदम वाचन भरनेका हे ।

१ (वर्ष सा कांत २)

कुप्पद्याप्या (२) — वदके कुप्पद्य दंडक । वार्ते
वह भरते हे और वतार्व वदवद नाश भरते हे । इत्येके यहके
इत्यका रक्ष करनेका वर्ज वार्ते वातिध्य इत्य भरता हे ।

त्वं सत्याः वर्म अस्ति (१४) — तुमेरा वर्म
वदवद हे । वेदे वदव रक्ष भरता हे वेदे तु मेरा रक्ष
भरता हे ।

इत्यः सत्याः वाशाम्यः परि वामर्य भरत्
(११८) — इत तद्व विद्याम्येवे वामेवाल रामुकेवे विमे
वदवद्य विरामिक भरता हे ।

सत्याः ! येतो पोगे वावे वावे तद्वत्तरं इत्य
उत्तरेय इत्यामहे (११) — हे मित्रो ! इत तद्व मिळकूर
तनुके साव संरक्ष होवेप्र प्रस्त्रे कुद्यामे वदवाली इत्यकी वर्जनी
वदवा भरनेके किंवे तुमर्हे हे ।

सत्या इत्यः पुरस्तात् वद भव्यतः सत्यिमः
विरिदः इत्योग्नु (१७) — इत्यारा मित्र इत भावेहे और
मध्ये इत्यारे मित्रिके किंवे भेद दंडकम हेवे, वापता वद हेवे ।

घरे हिते पेत वाविद्य (११) — तुद तुद होवेप्र
वापती अविक्षे तु इत्यारा दंडक भरता हे । वही वद
नाम तुदवद्य हे अविक्षे तुम्हारे विवव प्रश्व होवेप्र वामुख वन
वप्ते वावीवी हीता हे ।

सद्विविज्ञिमः अवितिमः वावेमिः नः इत उपा
वामत् (१२) — इवार्वो दंडक वेवनार्गो और वामप्येषि
हमारे पाच वह इत वाचा हे और इत्यारा दंडक भरता हे ।

हे इत्यः वामुष्मानस्य विवा व्यामि विवयाः
ते ऋष्टि वामुष्मीमहे (१४३) — हे इत । तुस वेद
वदनेकमे और वाम्पीर्व वीलेवाके वीरके दंडकमहे इत वाचते
हे । देवी वावेष्व इत्यारा दंडक होता हे ।

ता अचूकेमिः वदवद्यै वायव्य (१५३) — इत्यारा
वदवद्य तद्व वावेमिहे वद । तद्वमे भरत वर्याय भरनेके
वदवद्य वदता व रहे ।

तद्वा ऋषी वामुष्मस्व (१५५) — वदमे वर्तते
वर्जनी दंडक वीरिके वदामा ।

स वावेष्व म वामिष्ट (१३८) — वह वद मुक्तमे
इत्यारा दंडक भरता हे ।

न अविता भव्य — (१४३) — तु इत्यारा वदवद्य हा ।

धुरुपहर्तु ऋषये जुह्यमसि (१४४) — इत्यारा वदवद्य
वह वदनेकमे इत्यन्मे हम वर्जनी धुरुपाके किंवे तुदते हे ।

मावते वामुखे किंवे वीरी विमृतेवा दंडक हाती हे ।

ब्रह्मायि क्षतिक्षिप्त साहस्रपथमेषु नः वद (४५)–
वप्त वारताके उर्ध्वगों सावधानेहे सहस्रो प्रश्नरके वन विश्वमें
मिलते हैं ऐसे तुदोंमें इमारी रक्षा वर । सहस्र-प्र-पथम
यह तुदका वाप है । सहस्र सामन वर्षमें तुदके उहसीं
प्रकारके वन देखनी गौरवे प्राप्त होते हैं ।

इन्द्र वर्ण महा वने इन्द्र भर्त्ये इवामदे (४६)–
इन्द्रो हम वेष वर्णे तुदोंमें सहस्रार्थ तुदोंमें है वर्णे ओढ़
पुरोंमें भी तुदते हैं ।

अस्मिन् वामने वा विद्व (५१)– इष चर्यार्थमें
हमें वाव भारेण व (कि हम अपनी विद्यारी कैसी करे ?)

वडाता तृज्ञाना तुदाप्यः विदिवासः वा मा वद
क्षमुः (५२)– वडात, क्षमी तु उष अष्टम तुदु इम्ब
वाक्यम न भरे ।

सुपा वृषभ्यः वरिका वचर्य (५३)– तुदों वेषादि
विद्वे वन व्रात विद्वा है ।

सुमि! पुत्र लभिष्यत्या । त भावि त्यया सौम
वस्तु वयेष (५४)– वार्तिवे विद्व तुला दृपुद वर्षा
दे वर तुदमे हम लेणे वाव एव वर्षम वस्तु राष्ट्रिवे वार्तिवे ।

वार्तिवी! माया अविदिष्ट (५५)– अप्तुदोंके वर्ष
वार्तेवे परामृत विद्वा ।

वडा समस्तपु सतत्यावाः समीक रथा विद्यपत्त
(५५)– वैर वेष पुरमें वडे एवपर तुदी वाववार्द
दृष्ट तुदते हैं ।

सुदुष्टन् स्वपूर्व वृष्ट्यू नि पुवति तुत्र इन्दिय
(५६)– वर्षम उत्तानोदाक वर्षम सत्यावाहावे वतुदोंवा
वर इन द्वा डला है भीर वरमे मारला है ।

अस्य वाव भारात् विद्व भयता (५७)– इष
इनक तुदु दृष्टे भी उषवे वर्ष रहते हैं ।

अस्मै वाम्या दमना लि नमस्तो (५८)– इषवे
सामने वद वामनी वेषली भीर विनम वैष्ठ रहते हैं ।

श्रावुं भारात् तूर्त वा उप्रा वाम्या लेन अपवापस्य
(५९)– अपुदा वावदे भीर दृष्टे भी वै वम वम है
वर्षवे वावा तुदामो ।

श्रावुः इन्द्रः विद्वा विद्वा विद्वा भविष्ये वोहरे (६०)–
वापर्यवाद इन वर तुदोंवे वर वर्षा है ।

अस्मीदे संगे स्वोकहण (६१)– वर्षादे तुदमें
वैरीद विद्वे वाम्या देवावा इन है ।

वर्दि वर्षावायः भद्र (६२)– अदि वामक तुदुको
मारक नामे विद्वा ।

समीक इन्द्र इवामदे (६३)– तुदमें वाम्यार्थ
इप इन्द्रे तुदते हैं ।

इन्द्रके तुदविवरक समर्पण वह वन है । इसे वाव
वर वर्षा है कि इन्द्री तुदमें प्रवीक्षा विद्वी है । इसीविदे
इम इन्द्रम तुदमें वैरीद है । वाठ भी इन वर्षमें तुद
वैरीद तुद देव वर्षे हैं ।

श्रुत्वा परामव करनेवाला इन्द्र

तुदक वामव इमसा इन्द्र वर्षा है । इष विद्वमें इन्द्रके
वन वहने वेष हैं वर्षमें तुद वेषावे—

श्रावुः अदि (६४)– वाम्यादो वरपूर्व वर
दृष्ट्यू तृज्ञानो (६५)– वाम्यावाय इन वर्षेवाला
वर्षा (६६)– इन वर्षत तम वीर है ।

श्रावुः वेता (६६)– वाम्योदो वर वर्षेवाला ।

वस्त्योः इमता (६७)– वाम्योदो वर वर्षेवाला ।

श्रावुः विष्वप्यमान इन्द्र (६८)– वाम्योदो वर वर्षेवा
ला इन है ।

अद्वैः वास अविरत्— (६९) वरमे वेषादे इन
वर्षने तुदुवे वार वर्षता है ।

वर्ष विमेद (७०)– वर वामक तुदुदी इन्द्रमे वार ।
विवादः तुदुद (७१)– विद्व वाम्य वर्षेवालो वै
एव विद्वा ।

वर्षिक्षत्वा विमिता वर्षवत् (७२)– वाविदेवे
वारो वर्षेवाला इन है ।

प्रे वावसाती तृतमः (७३)– तुदमें वरा अवरात
वर्षेवे वर्ष इन वर वर्षेवालो विदेव है ।

श्रुप्यद (७४)– वर्षव वर्षा तुदता है ।
समस्तु तृतये (७५)– तुदोंमें राष्ट्र वर्षमें विदे
इन वर्षम वैरी है ।

वर्षवी-सहा (७६)– वाम्येवाय वर्षव इन
वर्षा है ।

यः वस्योः इमता (७७)– वाम्योदो वर वर्षेवाला
इन है ।

य वर्षपु विष्वत वर्षवर्त यः वाम्यावाले भद्रि
श्रावुः दानु ज्याम (७८)– विद इन वर्षमें वर्षपु
वर्षेवाले वैरीदे वर्षाव वाहिदे भीर विभाम वर्षवाले
तुदुवे वार ।

या क्षमिति शब्दर्थ पर्याप्त (२१) — जिसे परामृत किया और आधुनिक बातेवाले कहुन्होंने भी कहा।

या आरोहणशुल्क रीढ़िप्र मस्तुकर्त्त (२१) — आधुनिक बातेवाले रीढ़िको इन्हें कहा।

या मुकुर्लि प्र मरामि (२१०) — एक्स्ट्रो बाता पहुंचनेके लिये यह उत्तम स्तेचर में बोलता है।

ये कात्या अदिष्ट आमुर्त उत्तम लोकिष्ट तदस तर्त्तिम (२११) — ऐसा एक बातेवाले उत्तम वरिष्ठ एक्स्ट्रो मात्रे काते उप, बहान, सामर्थ्याद् बातों इन्होंने हम इन्हें है।

प्रह्लादः आजसा ज्ञातेमि। खद्ये (२१२) — नियमोंके अनुसार बनेवाला हम उन्हें बताएं तबा काकड़हे साथवाले उत्तम रीढ़िके बारे बताता है।

मिमिस्ति (२१३) — एक्स्ट्रो परामर बनेवाला है।

स्यातासः यथै यता वज्ञ माददीमादि तुष्टि स्पृष्टः संज्ञेयम् (२१४) — हम इस तेजे द्वारा बताएं तबा काकड़हे हुए हम काक वज्ञ बतायें बताएं हैं और बताएं उन्हें तर्त्ता बनेवाले हम एक्स्ट्रो इन्हें भीतते हैं।

यथ मस्तुमिः द्वैरीयः इत्याप्ता पुत्रापूरम्यादृः सास द्वाम (२१५) — हम इस उत्तमताके द्वारा बताएं बात बता करें याम इक्स्ट्रो बतेवाले इत्याप्ता बताएं बताएं।

स्यातासः इक्स्ट्रो पूरताः इत्यामन् (२१६) — अपनी नियमाचित्रे उत्तम दूना इन्हें बनेवालों बीतता है।

दृष्टवासु रथ बातिति (२१७) — दुर्दिम रखते हैं आर दुर्द बर।

पिम्पा मुष्टवा मिमिस्ति (२१८) — मैरैं एक्स्ट्रो बनेवाला परामर है।

अक्षी-गाहः (२१९) — एक्स्ट्रो बनेवाला है।

मिमिस्तिः उन्निमिः पूत्राता विगाय (२२०) — हम कार्या बीती बता इक्स्ट्रो बनेवालोंके इक्स्ट्रो बीत लिया।

इक्स्ट्रो दुर्द वृत्ता आपितेश (२२१) — इत्यातामि बनेवाले दुर्द ता।

सशामादा (२२२) — हम इस द्वारा इस एक्स्ट्रो बनेवाला है।

यत्त्वय (२२३) — हम इस द्वारा है।

गदा-ना (२२४) — हम इस बनेवाला है।

य पूर्णियो इत यो साताय (२२५) — जिसे हम दूरी बनेवाले इस द्वारा बनेवाले दुर्द ता।

परामृत किया और आधुनिक बातेवाले कहुन्होंने भी कहा।

त्वया युक्ता प्रति श्रुये (२२६) — हमें बात घोरें-इन्हें बताएं तबा रहते हैं एक्स्ट्रो बोल्म बताते हैं हम।

विक्षा द्वियः अपमितिष (२२७) — हम एक्स्ट्रो बात बर बनामें दूर बाब बनाया मर्तिक व हो रेता वर।

मायामिः डिसिस्त्वपत् दस्त्वपूर्व अवपूरुषाः (२२८) — इत्येवं इत्यात्मा बनेवालोंके इन्हें नीते विद्या।

यायः सूष्यः परिज्ञाहि (२२९) — बाता बनेवाले एक्स्ट्रो बनेवाला बर।

सूष्योऽपृथक् (२३०) — हम एक्स्ट्रो बर्तन घोरेवाले हम। तू बनुध बरन बरेवाला है।

भूरि परा बहिः (२३१) — तू बनुध एक्स्ट्रो एक बरता है।

पूर्वतः (२३२) — एक्स्ट्रो बरण बरेवाला हम है।

तुष्टि प्रामा (२३३) — हम बनुध एक्स्ट्रो एक बर बरता है।

त दिया त हमन्ति (२३४) — हम एक्स्ट्रो एक बर बरते।

मिमूर्छा ति स्वापय अकुर्यमाते चल्ली (२३५) — मिया आधुनिके लिया जो बैतमाल बताएं हैं बताएं दुक्कों ने ब बातों दूर बताएं ही रहे। एक्स्ट्रो जिसे दूर बर बर एक दुर्द तीरी ही है।

अया देवहित बाहं समेम (२३६) — इत्येवाय दित बनेवाला बत बाह बतें।

द्वियः अपयत्ति (२३७) — हम एक्स्ट्रो एक बरता है।

मधुतः याकी साहसा तिवासति (२३८) — एक्स्ट्रो जिसे बनेवाला हम इस एक्स्ट्रो बनेवालोंके बत बरता है।

कुट्टपात्या दूरै पकाति (२३९) — उदित एक्स्ट्रो बत बताते हैं।

मर्व परिक्षेप्ता बहिः (२४०) — बत आपेक्ष बरे बत दूर एक्स्ट्रो बनेवाला बरत।

हृष्टार्थं लंगप (२४१) — जिसके द्वारा बरेवाले बाता बीत बत।

उत्रं यपलीसंह त्वां दृम्यहे (२४२) — इत्यीर उत्रं उपर्युक्तेवाले जिसके द्वारा उत्रं दृम्यहे हम बातात्म बुझते हैं।

मविताम् दृम्यात् दृमि (२४३) — एक्स्ट्रो दृम्यहे हम।

प्र । अवृत ऐसा कर कि उनके हमसे बड़े कष्टवारी न हों ।
हमसे हम सहमतिये तु कर उड़े ऐसा हम हमसे बड़ा हो ।

मयकली मनुरा (५३) — उनुभ तु करनेवाला
इन चरणोंमें है वह उत्तम ही है ।

संबन्ध-अमर्यकरा इमयार्थी (५४) — भेदोंमें
साक्षात् करनेवाला इन दोनों पक्षोंमें मिलाता है । वो पक्ष
मिलेपर पक्ष बढ़ती है ।

विश्वासी गुरुतामी तदता (५५) — वह उनकी
प्रेमतो इन चरणोंमें बढ़ता है ।

गुरुहा व्येषा गुणे (५५) — इनको मारनेवाला इन
उनकुप भेद है देसी उच्ची सुधि होती है ।

प्राहृष्टिप्राप्ति व्यव द्वितीय (५६) — इनका हेतु वहने
वाले वह उनको प्राप्तिप्राप्ति कर ।

मराप्रसादा पर्याप्त ददा विवापल (५७) — इन
वे देवताओं विवेदोंमें वाला पहुँचाता ।

शत्रुघ्ने वर्ण व्यक्ता ज्ञाति (५८) — उनुरा तु इन
चरण वर करता है ।

या मा विपर्यासिति (५९) — वो इमारा वह चरण
है वह इमारा चतुरु ।

मवानुविद्या व्यवाप्रिया इति (६०) — विदीकेव
प्रदेश भी इन चारके हेतु करनेवालोंमें मारगा है ।

सं तदाप्यता तूर्य (६१) — तु वह उनको चेता ।
ते मम्यवे विश्वा सूर्या भूयाप्यत (६२) — भेर
भोक्ते वामने वह उनु जीवे पहले हैं ।

वय गम्यवे विश्वा विश्वा इन्द्राः कृपयाः सं मम्यते
(६३) — इन इनके जीवदे सामने उनुके वह खेतिका
एव प्राप्तवद भव होते हैं ।

प्राप्ति व्यापादा उद्विद्या व्यप्रादाका व्य मित्रान् व्यप
गुदस्य (६४) — पूर्व पवित्र वत्तर इतिन रितिव एव
कुरुतोंमें तु इत्यो ।

सर्वे इन्द्रस्य शत्रुहो ददाः (६५) — इनके वह
चतुरु पारे थे ।

संस्म्या शत्रुत्या शत्रुः अमवा (६६) — चाल
प्रधारके उनको व्यत तु चर है । पराती अपारोही इस्ताएःी
र्ती, चन्द्रर, अस्तीरत्यर, परादी ऐसा व्यत्र प्रधारके उनु
हीते हैं । इन वह उनको वा परात्व इन वरता है एव वाम
इन वहा दिविती है ।

र्यु गुप्यस्य व्यप्रे व्याप्ति व्याप्ति (६७) — दूसे
प्राप्तों उप्रोक्ते वाला है ।

इन्द्र ! अद्यामु ज़किये (६८) — हे इन्द्र ! तु उनु
रहित व्यत तुमा है ।

अद्यात्यप्य, अ-ना : अम्-मापि (६९) — हेरे
जिमे चेह उनु वही चेह उपर नेत्य नहीं, चेह जिन वही ।
दूसी अपना मर्त्य नेता और मित्र है । वही चर्वर्त्र जर्त्र
वीर है ।

मुषा इन् आपित्य इन्द्रसे (७०) — उनके ही तु
मित्रता करनेवी इष्या करता है । उनक उनको तु करता
है वा उनसे है वे तुम्हारे प्रिय होकर एव सहते हैं ।

इन दारा इन् करन्त्रोंके साप तु तु वरता है, उनकोंको तु
वरता है प्राप्ता संस्कृत वरता है । तु तु चतुरा और मानवोंका
वरत्यन वरता है इनके मुख्य जार्य हैं । इन वरत इन इन
इनके मुख्यत्रों व्यता संस्कृत मंत्रों वह सहते हैं ।

इन्द्र अनेक राज्योंमें मारा है । उनमेंके इन्द्र आदके
देशोंमें संस्कृत रक्तनाम्भे हैं ऐसा दीक्षाता है । असुर वे
जातीरित्व दीक्षाते हैं इससूत्र राज्यस में रहितन प्रतीत
होते हैं अहि वे व्यप्यमित्रान्-भृतिप्रसादानके होते
चल वे उत्तीर्ण होते तृष्ण वे स्वर्य तरुण मातृ है
वहां होते हैं । इन दारा वे इनके उनु वे । वे उपात्रोंमें ।
इनके नाम दिले हैं । उनको इन्द्रने दोहा और जरने अनुया-
मित्रों द्वारके जिमे वे नाम दिले ।

वाहतुक वा वेष्वदत दिमेहै उत्तर इनके दीक्षा दिप्यामी
दिव्यकुप वी नहीं । वे वरत इन्हे सह हैं वे कलके पदमें
इन् तु तु करनेवाला, उनुभ व्यावद करनेवाला जानी प्राप्ताका
इन वरनेवाला है ऐसा इन प्रतीत होता है ।

वालोंदणा (६१) — उनके दुष्टे करनेवाला इन है ।
पूतनापाद (६२) — उनुपेतावा पराप्रद करनेवाला ।
योनुपु उदाप्यग्र्यस्य व्यद्यम् (६३) — उनको व्यवने
वामेव तत वही अतीतामै उनुपे वाला ।

व्यम्या संवया परायति व्यवित्य ममुर्यि मि वर्द्यः
(६४) — उनुपे व्यवनेवाले मित्रों वाप इन्द्र एव एने
वाम वर्णी नमुनिती इत्येव वाला ।

व्यतिप्रियम्य वत्तनी करत्वं उत पर्वत्य रथ तेजितु
या व्यर्था (६५) — व्यतिप्रियम्य वामेव वाकर मित्रों
वामेवाले वर्ण वी वरपद्ये त्ये तेव वरके वाला ।

उनुत्तुर्याय एहतो अमूग्रा संपत्ति इवत्ति मा-
या मर (६६) — उनुपे व्यवनेवाले जिमे वही उत्तमेव इने
वाली व्यवाप करनेवी व्यवहरिति होते मर हैं ।

एष ब्रह्म इत्येतोंके वर्णन देखने चीज़ है। अब इष्टके इत्युक्त विषयमें बोधाशा देखिये—

ब्रह्म वध

ब्रह्म-दा (१)— इत्या पारमेवाप्य इत्य है।

ब्रह्माणि विग्रहते (२)— इत्येतोंपे स्वर मारता है।

ब्रह्माणि यज्ञि (३)— इत्येतोंपे वर्त।

ब्रह्माणि इत्य (४)— इत्येतोंपे पारमेवाप्य इत्य है।

ब्रह्मा यज्ञि वस्त्रवीत् (५)— इत्यत्र वस्त्रेवाप्य इत्येतोंको मारता है।

इत्यदा ब्रह्माणि वस्त्रति वाप्तवाप्य (६)— इत्येतोंका वस्त्रवर्णं (सिंहे) मार दिया।

वार्षिक्यत्व (७)— इत्यत्र वर्तवेद्य कर्म।

दशस्त्राक्षराणि ब्रह्माणि वस्त्रति विवर्णयः (८)— एष इत्यत्र इत्योंको वस्त्रतिव्य रीठिये इत्येतोंपाय।

वर्षं वस्त्रांश्च तुमुदे (९)— वर्ष अप्सरोंको वीच दियाता।

मसुके: शिरा अप्य फेलेन उद्धरतेयः (१०)— नमुकि राहस्यका द्विर वातोंके फेले रुदा दिया।

दिव्यादा सूर्या वदायः (११)— एष इत्युक्तोंभी त।

आपसः इरिदिप्राया यज्ञि तुदत् (१२)— औत्र-देवं वस्त्र तुग्नाति वातेष्ये वारमेवाप्य इत्येतों यज्ञि वाप्त चतुर्थे मारा।

यज्ञि इत्या सत तिष्ठून् वरिपात् (१३)— अत्रियों मारत्व वात नरिनोंको बहाना।

किषेण्याः इत्यादः येन तुवता तुवद् ब्रह्मस्य ममं विद्यत् (१४)— अत्रेषु मृत्युनोंमें एवेवाप्य एष इत्येतों वज्र वेद्योंके वस्त्र इत्यत्र मर्त्यस्त्राप्य च्छा है वह आता। इत्युक्ते मर्त्य स्वाक्षर्ये जापकर लौटी स्वाक्षर्य लाप्तात् वज्रा बोल देते।

यज्ञि भक्ता वराहं तिरो विष्परह (१५)— इत्येतों अप्सर फेलेवाप्य इत्येतोंको वीचमें लौटा।

वस्त्र दावसा वज्रेण्य तुपस्तु यज्ञि इत्यत् (१६)— वर्षने वज्रे वज्रेण वर्ते हृष्टे इत्येतों द्वारे वज्र दाते।

देवतांश्चीति ईश्वरि यज्ञि मूर्तिभिर्ब्रह्माणि ईस्ति (१७)— इत्येतों तु ईश्वरिके द्वय इत्यत्र वृष्ट इत्योंको मारता है।

ब्रह्माण्ये यिवा मूर्ति (१८)— इत्यत्र वज्र वज्रेवाप्य इत्यत्र वृष्ट दावसा वस्त्राप्य वर्तेवाप्य है।

दस्युदा मप्रया (१९)— दस्युनोंके मार्तेवाप्य तु हुमा है।

दासुपे ब्रह्माणि इन्ति (२०)— इत्यादेहिनोंविने इत्युक्तोंका तु मारता है।

एष ब्रह्माणि विग्रहे (२१)— तु वज्रेवाप्य इत्योंको मारता है।

ब्रह्मदा दस्युा परि (२२)— वस्त्रेवाप्य है इत्युक्तोंको मारता है।

वयः विक्षिष्ठं बूङं परा इत् (२३)— वज्रेवाप्य ऐतेवाप्य बूङ्ये इत्येतोंपाय।

वयतिक्षुरुता इत्यदा वृष्टीको वस्त्रियमि नवर्तीता तद ब्रह्माणि वाप्तवाप्य (२४)— वर्तणित इत्येतों वृष्टी-वीची वस्त्रियोंसि वज्रादेव वज्रेवाप्य विम्बात्रेवे इत्योंको मारा।

दोषात् ब्रह्मव्य यिवा तुष्णिमा शतपर्वता वज्रेव विष्मेह (२५)— दोषेवाक्ते ब्रह्मव्य यिवा तुष्णिमा शतपर्वता वज्रेव विष्मेह देता।

इन्द्रके शाकाश्च

इत्येतों वज्रालोक्ये वज्र मुक्त है। यद वैवर्यत्वं वज्र है। अतेक लील वाताए इत्येतों होती है और लालाने वज्र वैवर्य देता है। इत्येतों वायरत्वे इत्येतों पर वज्र वज्र दाते हैं और इत्येतों विवर्णये होता है ऐसा वह वज्र है। वह इत्यादेव पक्षा वज्रा है और लकुर देता वज्रा है। इत्येतों विषयमें इत्येतों वज्र वर्त्तन देखिये—

इन्द्रस्य विरप्ययः इर्यतः वज्रः (१)— इत्यत्र वज्रेव वैवर्य वज्री वज्र है। यद वायरत्वे वैवर्यवाप्य होता है तर वज्र वृक्षरुदी वज्री होती है।

तर्वं मर्हा उर्वं पर्वतं पर्वतः वज्रित्य (२)— उर्वे— इत्येतों माहात् वर्वत्वे वज्रेव द्वारे दिये।

वज्रः इर्यतः रंडा म विष्पवत् (३)— यद वज्रेव वज्र वज्रेवे द्वय द्वय है।

इर्यं मरा चहस्त्राणोक्ता अमवत् (४)— इत्येतों मरा वज्र वज्र दातों दीक्षिवैवाप्य है गता है।

वज्रास्त्रप (५)— इत्य वज्रादेव वज्र देता है।

सा भस्य वज्रा इरितः य भायसः इरि विक्षम्भ इरिः या गमस्यो तुष्णीत्युष्णिः इरिमस्युष्णायक्षम् इत्येतों इरिता वज्रा विमिमिहिरे (६)— यद इत्यत्र वज्र वज्रेव वैवर्यत्वं है वज्र वज्र इत्येवाप्य वज्र इत्येवाप्य विष्मेह है वज्र वज्र अनुकृते ग्राम इत्येवाप्य वज्र वज्रेवाप्य वज्र

इत्येहामें पक्षिता है, जब तेष्टसी उपमा ताप्ति वीषेवासम्
इत्य सनुभे प्राप्त इत्य करनेवाले औपरे में बोलेवाले वाचको
वाचन करता है उच्च इनमें सभी मुन्दर रूप मिलते हैं ।

इत्य वचनमें यहा है कि यह इनका वज्र कौतूहल है अतः
योगा है अनुपर तुलादी नक्षी है । इत्य इसको ऐसों हाथोंही
किसी उपम करने वाले करते और किसी उपम कीवे वाले सभीसे पक्षिता
है यह इत्य सनुभे मारेके किसे (साप्ताख्य) वाच भी
करता है ।

अस्मै रथाय त्वदा स्वर्ये स्वप्नम् यज्ञं तप्तम्
(१११)— इत्य इन्द्रे किसे मुख अनेके हेतुसे दिव्य तत्त्वा
उपम यज्ञं कर्त्तेवाम वज्र तप्तामें किर्त्तन अर्थे दिवा । तप्ता
यह अधीक्ष दे जो वज्र वाग् एव जागि वगाता है ।

यज्ञं वर्ण्य तिरस्ता वर्णं प्र भर (११७)— वर्ण-
मार्गोऽप्य भ्रातृहि वोनेके किसे इत्य वचने तिरस्ता भर ।

दक्षिण इत्ये वर्णं चीर्ण (१४)— शाहिने वाचमें
पक्षिते वाचन भर ।

दक्षिण वज्रः इत्याय प्रति धार्यि (५१)— दक्ष-
वीन वज्र इनमें किसा है ।

ओवस्ता वर्णं दिव्याय (१)— त् अपने वर्णों
पक्षिते वाचन वना ।

सज्जोवस्त यज्ञं वाहोः दिव्यर्थि (१)— त् अपने
कर्त्तेवाम वैवसी वज्रों वाहुभेदे वर्तन करता है ।

यमस्तो वाचा मिस्त्यस्त (१३)— हाथोंमें वज्र वर्ण-
वज्र है ।

विष्व एवाहस्त अत्रिवा: (१४५)— आश्वर्णाराम वज्र
सभमें वर्ण वक्तेवाम वहाँ किसें रुपेवाका इत्य ।

यस्ता (१)— वनुपर वज्र फैलेमें कुक्षम् इत्य है ।
ते र्घुरुणा दीर्घ्यः यस्ता (१०)— लेता लंकुल वज्र
हो ।

इत्यस्य मही तुपरा भस्मियः यातानीका तेत्या:
(११५)— इत्य इन्द्रे वही तुपर उपम इत्यादै है और
ऐसी गोकोवाले उसके पाप वज्र है ।

इत्य वज्र इन्द्रके वज्रोंमें वर्ण है : लंगिंदो गोको भी वज्र
वर्ण वा देवा वज्रके मैत्रिकि प्रतीत होता है—

चीर्णे म इन्द्रः प्राप्यस्त्वं तदैर्य पातुवातवम् ।
तत् ११११२

इन्द्रे मुखे लंग (लंगिंदो गोको) ही है देवि वज्र
चीर्णे वाचना देवोवाले तुप वज्रोंमें तुप वर्णेवाका है ।

इदं विष्वकूप सहस्रे इदं वाचते व्यजितः ।
अतेव विश्वासहे या जातानि दिव्याद्याः ।

तत् ११११३

यह यीया सञ्चो परामृत करता है वज्र वज्रोंमें यह
एव वर्तता है । यो (पिण्डाद्याः) इत्य वीरेवाकी वार्तिका
है वह यातिका इत्य सीझेसे परामृत होती है ।

यदि तो यो गां हृसि वचाहवं वादि पूर्णम् ।
तु त्वा सीखेन विष्वामो या तो भस्ते वर्वीद्या ।

तत् ११११४

यदि त् इमरी मौके मारेया यदि भावेभे मारेया यदि
यजुवशे मारेया तो उस तुलादे है लीरेते वीर्खणा विष्वेभे
इमरोमें वैर्धे वीरेभे मारेवाक्म नहीं रोया ।

यहा सीखेन विष्वामा: सीखेसे वीरेते हैं ऐसा वज्रा
है यह सीखेतो वीर्खणा ही होय एव वृद्धम् वज्र
वेसे पापी मिल । तो यह सीखेसे वीर्खणा विष्व वज्र होय है
इत्य वोज पाठक छैटे । परन्तु यहा विष्वामा वीरेभे
वज्र सह है । वज्र मी तुप्ते केंद्र वाचना वा वाच भी वृद्धे
कहे वारे ऐं सीखेते वीर्खणा भी रुद्धे ही होय वा ।

सैन्य वज्र

इन्द्रे पाप मस्तोंभ देव्य सदा तेवार इत्या वा ।

पर्या अस्तीर्ण वाचसा प दिव्युतद् (१)— इत्य
सेव्य वज्रे वज्रस्ता इत्या है ।

वातिनीवाच्युः (१११)— देवोंके वज्र एवेवाम इत्य
है । इन्द्रे वज्र वीरोंके देवा तेवार इत्या है ।

यातावीका (१११)— देवोंके देविन इन्द्रे के वज्र
हैं ।

दे वीर ! सेव्यः भसि (१११)— दे वीर इत्य । य
देवोंके वज्र इत्या है त् देवोंके वज्र वर्णं वर्तता है देवाय
वज्रस्ता दृ वर्तता है ।

इन्द्र वीर है

इत्य वीर है, इन्द्रिये वज्र मुख वर्तता है और विष्व वर्ण
वर्तता है । नहीं व्याह है—

मृतमः (११४)— वेदाख्योंमें भेद वीर इत्य है ।

सदावृष्टः वीरा (४२) वज्र एवेवाम वीर इत्य है ।

शूः वज्र विष्वाया वज्र (१५८)— इत्य वज्र है और
वज्रमें वज्रने स्पन्दमें विष्व इत्या है भाग नहीं वाच वज्र
वज्र मी वज्र होता ।

प्रवर्णीरा (१५४)— इत्य वज्र वीरेते वज्र एवेवाम
वज्र वीर वेता है ।

उपा (११)— वज्र उपरीर है ।

वीरपुः भसि (११८)— वीरेते देव्य स्वामें वीरवा
पूर्ण वज्रेवाम इत्य है ।

विश्वा मातामि भोजसा अभिमृगु भस्ति (१ १)—
ए सब ब्रह्मोद्योग अपने प्राप्तव्यं विषय वरेशाला है ।

वही तथा अन्य अतेक स्वामिये जनावरों राखा ।
हिंसीवारा वृत्तमः । पश्चिमितीलां इरक्ष्यति अति
प्रस्त्रेष्व इन्द्रो भास्त्रो भास्त्र राखा रहा है । यह संत्रष्ट भी
भास्त्रोद्योग ही करता है । याहु श्वासेव उसके भास्त्री रहाके
किंवद्दुष्टाते हैं उसके प्राप्तव्याते वह उनके पास जाता है
अप्य एवं करता है । तब भास्त्रोद्योग प्रस्त्राता करता है । इस
एवं इदं पश्च मानवोद्योग विषय करता रहता है ।

स्वस्तिदा विश्वा पतिः बृष्टहा विश्वो वशी ।
पृथा इन्द्रां पुरुष्टु नः सोमपा अमर्य-करा ॥ १ ॥
विश्व इन्द्रं सूर्यो ब्रह्मी भीका वच्छु पृत्यन्तः ।
अधर्मं पश्या तमो यो अस्त्री अभिदासति ॥ २ ॥
विश्वो विश्वो विश्वो विश्वस्य इन् दम ।
विश्वामिन्द्रं बृष्टहृष्टं अभिवस्य अभिदासति ॥ ३ ॥
अपेक्ष्य विश्वो मासोऽप विश्वासतो वच्छम् ।
विश्वम्भुर्मं वच्छु वरीयो पाशया वच्छम् ॥ ४ ॥

ब्रह्म १११

(विश्वपतिः स्वस्तिदा) वासुदीका पाशक राखा करनाव
परेवावध हो (बृष्टहा) ब्रह्मो भास्त्रेशाला (विश्वः वशी)
विश्व विश्वोद्योग वक्तव्ये भास्त्रेशाला (सोमपा) दोमपाव अपने
पाश (अमर्य-करा) और त्रिको अस्त्र भास्त्रेशाला है ॥ १ ॥
हे इन् । (यः सूर्यः विश्वहि) इसारे ब्रह्मोद्योगे भास
वच्छु (पृत्यन्तः भीका वच्छु) देना वाहु इमपर इमका
भास्त्रेशालोद्योग देने रहो । (यः समात्र अभिदासति) जो
इदं वाप वक्तव्ये इन्द्र उत्तरा है उपर्ये (अधर्म वच्छम
वच्छम्) हीव वंशदर्शके पृथ्वालो ॥ २ ॥

(इसः सूर्यः विश्वहि) वासुदीकी वाप विश्वोद्योगे भास
वच्छम् (पृथ्वस्य इन् दम) इनके वर्णोद्योगे लोक है । हे
(बृष्टहृष्टं इन्द्र) इनकाव इन् (अभिदासति) अभि
वस्य मास्त्रुं विश्व (विश्वासतो इमारा नाश करनेशाली द्वाकुके घोषकमे
पोष है ॥ ३ ॥

हे इन् । (विश्वतः मम् वच्छम्) दौरीष्य यत् वक्तव्ये
(विश्वासतो वर्ण वच्छम्) भासुदा वाप भास्त्रेशालो दूष वच्छम्
(मात्रु वापं विश्वस्य) इने वाप दूष है (वर्ण वरीयो
पाशय) वक्तव्य इमपे दूष है ॥ ४ ॥

इम्न वक्तव्य इव क्षेत्रिय देखने लोम है ।

इम्न सुप्रवाणिक्षो बृहृष्टं यो वापाव वर्णीर्ण ।
विमेष वक्तव्य भृष्टं ससाहे पाश्चम् ॥ ५ ॥

५ (अपरे तथा अन्य १)

मस्त्वेष्व मध्ये रणाय ०४ ०

ब्रह्महिं पर्वते विश्विपाणं त्वद्वास्मै वज्र त्वर्य
तत्त्वं ०५ ०

(पर्वती च) नल वक्तव्येष्वे तुरस्के एमाव (यः तुरा
पाद् मित्रा इम्नां) विष त्वरसे द्वयुपर इम्नम वक्तव्येष्वे
मित्र इन्द्रने (बृहृष्टं वापाव) इनके भारा (वक्तव्ये विमेष)
वक्तव्य भास द्विना और (द्वादश् ससाहे) ब्रह्मोद्योग परापर
द्विना ॥ ६ ॥

(इदं) वही (मध्ये रणाय मस्त्व) वक्तव्ये कुदके किंवे
वामेवित हो ०४ ०

(पर्वते विश्विपाणं) पर्वतके भास्त्रवेद द्वयेष्वे (वर्णिं
महापुर) अविष्वे भासा । (मध्ये त्वद्वा वज्रं वज्र तत्त्वं)
एव इन्द्रके किंवे त्वाने विष वज्र तेवार वक्तव्ये द्विना पा ॥ ७ ॥

वज्र द्वेषाणि सहस्रायमिन्द्र ।

कृष्णानो भृष्टाकृ भृष्टरान् सपत्नाकृ ।

ब्रह्म १२११३

(सहस्रा) अपने वक्तव्ये (द्वेषाणि वज्रम्) देवोद्या
वीक्षा है और (भृष्टाकृ सपत्नाकृ भृष्टरान् कृष्णाकृ)
द्वुये ब्रह्मोद्योगे वीक्षा देता है ।

अभिवक्षेत्रा भृष्टवन् भृष्टाकृ द्वृष्टपर्णीमिति ।

युवं तामिन्द्रं बृत्तहृष्टं भृष्टिव दहर्तं मति ॥

ब्रह्म १११३

हे (भृष्टवन्) इन् । इयारे वाप द्वयुता वक्तव्येष्वे वी
ब्रह्मोद्योगे देना इमपर बाक्षम वक्तव्येष्वे किंवे भा रही है (ताम्)
वक्तव्युद्योगे देनावहे हे इनके भास्त्रेशाले इन् और भासि ! तुम
दोनो मिलकर वक्तव्ये देने वक्तव्या हो ।

प्रते वाप भृष्टवन् पृष्ठु द्वादश् ।

सहि प्रतीको भृष्टाकृ परावः ॥ वज्र १११४

देवा वक्तव्ये ब्रह्मोद्योगे भासत् द्वुया भासे वहै । वक्तव्ये देखने
वक्तव्ये वाप वक्तव्ये और भासे होनेशाले द्वयुते भास वाप ।

इन् देवां मोहाय अभिवाप्याम् ।

ताम् विष्वदो विकाशय ॥ वज्र १११५

हे इन् । द्वयुते देवां वेदित कर और उनको वापों
ओरवे दिनाकर ।

इन् देवां मोहायतु मरुतो ग्रन्थु भोजसा ।

वर्णुपि भस्ति भावहृष्टं पुमेरेतु पराविता ॥

वज्र १११५

इव द्वयुते देवां वेदित करे, देवित वक्तव्ये देखने मारे
अभि वक्तव्ये भासे वीक्षा और भासे होनेशाले वाप ।

यो विश्वामित् विश्वासूत् विहवहर्मा ॥ (ब्र. ४११५) वो उत्तमे वीतुनेवाका उत्तम मत्तम प्रवेशाका और उत्तम कर्मे वर्तेशाका है ।

यो द्वात्मकान् एवं भावरेत् । (ब्र. ४११६) — वी द्वार्मित् कर्मे लेता है ।

यः सप्तामात्रायति सं युजे वशी ॥ (ब्र. ४११७) — वा द्वात्मन इतेवाच तुम्हारे प्रहि ते बाता है ।

समामित् नो अधरवद्ममित्वं स बहुरात् ।

इन्द्रानामित् नः पञ्चात् अममित्वं पुरुष्ट्वयि ॥ ब्र. ४११८

है इन् । तीव्रे उत्तरे पाठेये और जागेये हैं वे उत्तु रहित थे ।

इन्द्रानामित् प्रथम नैर्देश असुरेन्द्रय ॥ (ब्र. ४११९) इन्होंने प्रथम असुरों को लिखे विहावाय वर्वात् विष्वलय किया । इन्होंने असुर परामृष्ट हुए ।

मिर्देस्तः शाश्रुः अमित्वासप्तस्तु ये सेनामित्युं प्रभायस्यस्मान् । समर्पयेत् यहात् विष्वलय विष्विदा ॥ १ ॥

मात्रात्मकान् आयप्तस्तोऽस्यस्तो ये वा वाचय ।

निर्देशाः शाव रस्त इन्द्रोऽय पराशरीत् ॥ २ ॥

निर्देशा सम्मु शाश्रयोऽहौपी गङ्गापामसि ।

यथेष्टी इन्द्र वेदात्मि शावतो वि मज्जामहे ॥ ३ ॥ ब्र. ४११९

(ना अमित्वासन शाश्रुः विहस्तः अस्तु) इन्हें इन्हें वर्तेशाका उत्तरादित हो । (ये सेनामित् अस्मान् युधे आपसित) वा येव उत्तर इत्यां शाव उत्तु उत्तरे लिखे जाते हैं है इन् । (महाता वयेन समर्पय) उत्तरे हैं उत्तरे शाव मत् शाव । (एषीं अप्ताहरो विष्विदः श्रावु) इनका चर्ची वीर विद् देवता भाष वात् ॥ १ ॥

है (शावयः) उत्तुओ ! (ये आत्मवाका) वो तुम उत्तुष तत्त्वद्व (आयवद्वातः अस्यस्ता वा आपय) चीचत् हुए और वा घोषित हुए जैसे ही द्रुम (विहस्ताः स्यग्न) इन्हें दिन हो जाओ (इन्द्रः अय वा पराशरीत्) इन् जात ही द्रुम होता रहते हो ॥ २ ॥

(शावयः विहस्ताः सम्मु) वा उत्तु इन्द्रादित हो जाव (एषीं अग्ना स्यापायामसि) इन्हे लंगोंपे इन निरव वया देते हैं । है इन् । (एषीं लंगोंसि) इन उत्तु जीवे लंगों (आत्मा वि मज्जामहे) तैर् ते प्रवारेष शाव देते हैं ॥ ३ ॥

इन उत्तुपे वय जाता है दि उत्तुषे परावित परहे उत्तुपे जाव पर जात्वा वृंद लेते हैं ।

परि वर्तमानि सर्वतः इन्द्रः पूरा वा सर्वतः । मुद्दान्तव्यामूर्ति लेना अमित्वान्नो वरस्तप्तम् ॥ ब्र. ४१२०

इन् और पूरा (सर्वतः वर्तमानि परि सर्वतः) वा मायेन प्रवल कर्ते लिखे (अमित्वान्नो लेना) अत्यन्ते लेना (परस्तात् मुद्दामूर्ति) उत्तर येहित ही जाव ।

इस्ते पता जाता है कि इन्हें शाव पूरा वी उत्तुमे व्यट व विरुद्धं मुद्द भोक्ता संपत्तो या पूर्वत्वयि ।

मैवायेन इविवेन्द्र एवं पराशरीत् ॥ १ ॥

परमो त परावर्त इन्होंने मुद्दामूर्ति उत्तु ।

यतो य पुलारायति शाश्रतीम्यः समाप्त्यः ॥ २ ॥ ब्र. ४१२१

(या सपत्ना पूर्वत्वयि) वो उत्तु उत्तराता जाव दरता है (अस्तु भोक्ता लिंग नुह) उत्तो उत्ते लिप्ता वाव (एवं लिवायिते इविवा) इह उत्तुभे वाचवी उत्तरसे (इन्द्रः पराशरीत) इन् जार जाते ॥ १ ॥

(नुहाद इन्द्रः) इन्द्रावद इन् (ते परमो परा एवं मुद्दात्) ये उत्तुषे हुए हुके लाक्षको वय हैं (यहा शाश्रतीम्यः समाप्त्यः) लिखे शाश्रत अप्तय (पुरुः व आपति) लिंग नहीं वा उत्ते ॥ २ ॥

इव उत्तु उत्तु अप्तम हुए ही इन्हें उत्तर लिखे जाते हैं । इन्होंने उत्तरति म परावायाता अधिराजो राजसु राजायाति । उत्तुस्य ईद्यो वयवोपसद्यो तत्स्यो भवेत् ॥ ३ ॥

त्वमिन्द्रायिताऽऽवस्युस्तर्वं मृ अमित्वृति-सेनामान् । त्वं देवीर्विद्या इमा वि राजापुण्य त्वस्य अवर्त ते अस्तु ॥ ४ ॥

प्राप्त्या विश्वस्त्वमित्वासि राजोत्तेवीम्या विद्यो बृहस्पतिवासि । यद्य यत्ति लोत्या स्तवित ते वक्षितो बृहपति विद्या ॥ ५ ॥ ब्र. ४१२२

(इन्द्रः जयाति) इन्द्री वय हीती दे (व पराम यासि) एषीं अप्तव नहीं होती । (राजात् अधिराजो राजायाति) उत्तरोंमि वो उत्तरे भेद अप्तिवा होता है उत्तरी जीवा वहती है । है इन् है याम (इव उत्तुस्य ईद्यो) वहा उत्तुष जाव उत्तरे जाव सुठिते बोमहुत्य है (यद्यः उत्तराया समस्त्यः भवत्) उत्तीव वय वये वीम्य और उत्तराव वरें जीव हो ॥ ६ ॥

है इन् । (त्वं अधिराजः) व राजाविताव है (अस्तुपुः) वीतिवाप्त है (त्वं जातान्नी अमित्वृति नुह) द्रव्यवत्तोऽवयवितादि है (त्वं इमा देवीं विद्या विराज)

८. इन विषय प्रश्नोंवार विवाक्यान हो (ठे आपुप्त्
सुर्य अर्थ अस्तु) विरा दीर्घतु युक्त वापरेव अररतिः
ते ॥ १ ॥

(इति ॥ स्वं प्राप्याऽविश्वा राजा भसि) हेतु ।

९. इन विषय पर्याय है है (वृद्धान्) इनमे मारेवांड ।
(वत उद्दीप्या विश्वा राजा भसि) और तु उत्तर
विवादे वृद्धोंका नाम करनेवाल है (यज्ञ ज्ञात्या पर्याय)
वहांत नविना जाती है वृद्धोंके व्रेवांडों (तद् ते जिर्तं)
ते वृद्धि विना है तथा (पृष्ठायः अध्यः विसिनिः पर्याय)
वृद्धान् और जात्यां उक्तावे मोग्य वृद्धर विविष्ट विवादमें ए
पर्याय है ॥ २ ॥

इस तरह इनमे पराक्ष्योऽप्य वर्तम वर्तमेव है ।

इन्द्रोतिष्ठिर्यृद्धाभिनो भय यावच्छेष्टाभिमं
पवद शूर विश्वा । यो नां इत्यप्यपरा उत्पदीप
यमु त्रिभस्तमु प्राणो ज्ञातु ॥ १ ३ ॥ अथ ॥ २ १ ॥

हे इति ! (यावद् त्रेष्वामि यज्ञाद्यामि यज्ञामि) अति जेह विविष्ट प्रकारके वर्णवांडों (भय मः विश्वा)
मात्र हमें बोलित रहा है (मध्यपद शूर) अवान्दश्वा तीर।
(यः वा द्युष्टि) वो हमारा हेतु अरता है (सः व्यधः
पर्याय) वह बोले फिर बात है (ये उ त्रिप्यमः) विचका
एम पर हेतु अरत है (तं त प्राणः ज्ञातु) इनमे माल
मेह होते ॥ १ ॥

इनके रूपके बाये वृद्ध है इस विषयमें ऐसे क्रमिं थे
पर्याय है यह ऐसे मर्मांडे देखा जा करता है ।

इन्द्रो मर्याद्यु मन्त्यता द्युष्ट्यु शूरु पूर्वद्वारा ।

यथा इषाम सेना भमिकाणो लद्वाप्ताः ॥ १ ॥ अथ ॥ १ ४ ॥

(पूर्वद्वारा) वृद्ध विनोंके तीव्रवाका शूर वृद्धान्
(मैतिरा इत्याः) मन्त्र उत्तेवाका शूर (मध्यपु) वृद्धी
वेष्टाम सम्म थे (यथा भमिकाणो लद्वाप्ताः सेना)।
विव विषेषे वृद्धवांडे इन्होंने देखियोंको (इत्याम) इस थे ।

वृद्ध व्याह वृहत् इति शूर सद्व्याप्त्य शृणु
वीर्यक । तेव वातं सद्व्याप्त व्यवृद्ध व्यापान
व्याको इत्यूर्वां भमिकाणो सेनाया ॥ ० ७ ॥

हे शूर शूर ! (सद्व्याप्त्य शृणुवीर्यप्य शृहतः ते)
व्याकोण्यु पूर्वित जेहों व्याप्त्योंवाले वे तु वृद्ध व्यप्त्य (वृद्ध
व्याप्त्य) वाय वाय है । (तत् व्यमिकाण) वृद्ध व्याप्त
व्यप्त्य तथा (सेनाया) व्याको जेहों शृणु (व्याप्त्य) ताम
पूर्व इति (इत्यूर्वां वातं व्यापान) वृद्धवांडे जेहों
(व्याप्ती व्याको और व्युरुणे क्षेत्रवांडे सरता है) ॥ ० ८ ॥

वाता हवाएं लक्षों वृद्धवांडे मरतेव ज्ञेव है । अर्थात्
वेही वाता व्यापान स्त्र ज्ञेव है, इस वर्ण स्त्रत्य है ।

इन्द्रकी कपटनीति

इति इह वृद्धवांडे कपटनीति सी बलता वा इस विषयमें
पर्याय है ।

व्यमिभूति-सोवा: मापामि । इत्यूर्व (४८)—
वृद्धवांडे पराम वरेवके सामधेषु पृष्ठ इन्हें अर व्योगोंसे
सी वृद्धवांडे मारा है । अपार्व व्यायी वृद्धवांडे यह इन
कपटम प्रबोध भी करता वा ।

वृद्धवेत वृद्धवान् लं विषेषा (४८)— कपटवे कप-
दिवोऽन उत्त इन्हें पीछ रख ।

वो वृद्ध अप्त भरते है वृद्धमे कपटस वह मारता वा ।

वर्णनीति: मापिर्यां प्र व्यमिनात् (४९)— कपट
वीरिये इन्हें वृद्ध व्यायी वृद्धवांडों मारता है (वर्तं वर्णत्)-
कपट, वृद्धवांडा मारा । इनका उपयोग करक इन वृद्धोंसे
इन्हां वा । वर्तं मीति: (४९)— कपटनीतिये इन्हें
वीर ।

व्यार्थनीति: (४९)— इनके इनोंसे व्यवेष्टी वीरि
विषयमे उत्तम है । ऐनके स्थोऽन इत्यम वरदोन वडे वृद्धवांडे
वर्णनेव वाम व्यार्थनीति है ।

मानवोंपर व्यपा

इति मानवोंपर व्या करता है इस विषयमें—

व्याह वेदवाक्यां मताद्वृ वृपसे (५०) वेदोऽन इति व्येता
ही मध्यपीपर व्या करता है ।

मधोः वृष्टा (५१)— वृद्धवांडे व्यवेष्टाका इति है ।

मध्यपाक व्यवाक्यां वर्णेवे किंवे इति व्या व्या व्या है ।

मध्यवा विश्वा विश्वो वर्णेष्वापत् (५१)— व्यवान
इति प्रबोध व्यवाक्यां वेदवाक्यां करता है ।

वृष्टा ज्ञातां तेना व्यवाक्यापत् (५१)— व्यवान
इति व्येष्टी व्याको वृष्टा वृष्टा है व्यवाक्य वृष्टा इति है जोर
वर्ण विलक्षण कर्त्ते व्या करता है ।

इन्द्रकी व्याप्त्य

इति व्या व्यादि देता है इस विषयमें वे वर्तन है—

व्यवाक्य गोः व्यवाक्य व्यसु वा वृष्टा व्यसि (५१)-
तेव, नेत्रे वी व्यो व्या व्यवेष्टाका इति है ।

व्यवाक्यामि: व्यादुमिः व्य व्याति व्यापि (५१)-
व्य व्यान व्यवेष्टाक्षेत्रे व्य व्या व्या व्या है ।

वृष्टो व्यायी व्यवान व्यवायी व्यवायी व्यवायी व्यवायी
इस भृत्य इन्हें व्या व्या व्या है ।

संप्रभुता मध्यमा इन्द्रोऽस्ति रथि विशिष्टिः या विशिष्टिः (१४) — विकल्प दाता। चन्द्रवाद् इव अनिनेते चाच वैठाता है।

वरातयः सत्त्वा रातयः बोधस्तु (१५) — इन्द्रसे भी जात दाती जागते रहे।

वसु प्रयच्छसि (१६) — दूषन देता है।

वस्त्रावद् योग्यत् वयमत् उक्तप्रस्ता इव दोहसे (१७) — ऐसे दीर्घ वीढ़े तुष्ट वय वही वाहते देता है।

सुशास्तु (१८) — उत्तम दाता इन्द्र है।

विश्वसुः (१९) — वहम दाता करनेवाल इव है।

भूरिवाता (२०) — वय दाता।

वस्य तुष्टं रातः (२१) — विश्वा वप्रतिम वात है।

प्रभूतसः (२२) — वृहत् वनवाद वात।

घनवायः (२३) — युद्धसे वीतेवाय वनमे वीठेवाय।

संग्रह्य वा मर (२४) — वस्ता ईंग एक वात है।

मरेपु वातवासातये इन्द्र्य उपगुणे (२५) — तुष्टेव वय वा वयवाद वात वर्णेते विष्णे इव इन्द्रो तुष्टते हैं।

उष इर्द वसुः ममिता वेदिते (२६) — ईष वय वन वारी ओर वाहते फैलता है।

त भवीषसा वसुवा पूर्णसि (२७) — दूषनसे व्यक्ति वनसे मर देता है।

तुषितायः (२८) — वृहत् वन वेनेवाय इन्द्र है।

ममया (२९) — वनवाद इन्द्र

पूर्वदिः (३०) — वृहत् वयी इन्द्र है।

पुरुषसुः (३१) — वृहत् वनवाद

मध्यवा वरवः उष ईश्वाते (३२) — इव वनवाद है वह विवाह वनवाद वाती है।

वसुमा इम्प्रवितः (३३) — इव वनवाद वाती है।

म-काम-कृद्यनः (३४) — वस्ता एव वर्णेवाय इव है।

यथा स्य वर्हा वस्तः एका ईश्वाय (३५) — वैषा गृ वयवाद वाती है वैषा वै वस्ता वेनेवा वाती है वैषा वै वस्ता वाती है।

मनीषिणो दिवसेये (३६) — वावीष्ये वस्ता वात वह।

म वैषा न वर्तः ते रायसे वर्ता वर्तिः (३७) — न देव वा न वायव वैर्द वीर्दे इव देवमे विरोध वर्णेवाय वर्ती है। तृष्णव वर्तता है इवमे विरोध विराप वर्ती हो वर्ता।

भूता मय (३८) — विष्वी वनवान् होमेव विषे वर्णित है।

एती उद्दली (३९) — इव वैष्यो वीर इन्द्रो वर्णवाद वर्णेते तुष्ट है।

हिरण्यं भोगं ससाम (४०) — इवर्द वा वैष्य परावे वा वसु वर्तता है।

प्रदातां संवितः (४१) — वर्णेते वीतेवाय इन्द्र है।

स्वाहे वसु वा मर (४२) — स्वाहावं वन वर्णवाद वर्ण है।

कार्यं वसु सहस्रेष मंदाते (४३) — वा वा वा वर्णाव्युष्य देता है।

पिश्वागर्वं गोमन्तं मधु रेमहे (४४) — वीर रामवाद वनवाद वृहत् वर्ण वीर वीर वर्ण है एवा वाहते हैं।

त्वा तुष्टवसुं विष्ण (४५) — दूषुष्ट वर्णवाद वा इव वाहते हैं।

बलर्हारातिं वसुर्हा उपस्तुदि (४६) — वीरव वर्णेवाय विष्णव वात है देवे वनवाद इन्द्रव्य वाती है।

इन्द्रस्य रातयः मदाः (४७) — इवर्द वा वर्णवाद वर्णेवाद है।

मनः वाताय वोद्यम् (४८) — वायवे वनवो इन्द्र वैमेव वर्णवाद है।

वस्य वैष्णा वटिक्ष्यते (४९) — इव वर्णवाद वर्णवा ही एष्या है।

विष्वुषा वर्ण (५०) — विष्वी वीरव वन देता है।

तुष्टीमया (५१) — वैषे वयवाद इन्द्र है।

वस्य रातः य एवेत्वे (५२) — इस्ते वर्णे वाती वाही वाही वाती ही वाती है।

सुशास्त्राय वासुर्व वर्णि वदाति (५३) — वा वर्णेवायी इव वृहत् वन देता है।

सातासि सधिस्वामं सदासाहं वर्तिष्ट रवि वर्णेवा मा मर (५४) — वानकारी विष्णी वृहुत्ये वीतेवाये वीर वनवो ही वानी तृष्णा वर्णेते विषे वर्णवर्ण मर हो।

विष्वे वर्णेवाये रातः मवाद् दीप्तोद्वाव ले विषु वर्णु वस्तु (५५) — विष्णव भेद वन इवर्द वाही वाह वैष्ये वैष्ण वाह देते वाह वृहत् है।

त्रिविष्णु इन्द्रः। इमलतः वयवाद वस्त्राय वृहुत्योद्य (५६) — देवेवासी इन्द्र। वर्णव वर्णेवादे वीर वर्णवी वने इमहो वन वात वर्णेते विषे वाताप वीरिते वीरित इव।

रात्रसु (५७) — वयवाद वात इन्द्र है।

विष्वे वाये तुष्टिसि (५८) — इव वर्णवादे वर्णवी वर्णवा है।

मस्ते शहर पुष्प अवा गोमति वायावदि विभाया।
मस्तिं देहि (४५८) — इसे वहा विस्तृत मस्ती गौमति
वै व वज्रे उपर्युक्त वायावदि द्विभाया भन हे।

पालमपालम पुर्ण शहद अच्छ: एथिकी: इव:
कस्मे देहि (४५) — वहाँ प्रकाश व्यावह देखाओ
तेवसी वह नशाका बग भार रखे दाव एवेषां अब हमें
वारा दो।

पोखु बर्खेपु सहजेपु शुभिपु त आर्हसय
(४८) — पोखी तोवी तवा सहजे तेवसी बनावे तु
मै त।

एष व्याह एव्याहे वारी होने और वस्त्र वाप भरनेहें विषयमें देखतीजीमें वर्णन है।

सत्यकी मेरासा करनेवाला जि

पः एवम् क्रमस्य व्याप्तिः लाप्तमासस्य विदि-
तोदिता (३१) — तो हनु लाप्तमेष्टे इत्यमेहानी
व्याप्तमेष्टे लाप्तमेष्टे तिते तत्त्वं देवान् देवान् ते-

परम्परा अनुसार विद्यालय बहाने के लिये उत्तम संस्कृत देखा जाता है। परम्परा अनुसार विद्यालय बहाने के लिये उत्तम संस्कृत देखा जाता है।

पस्य भग्नितालि धीर्यौ (४०)—इह इमें वही
मित्र पराक्रम हैं इसमें वह उत्तम भ्रेता सभ भव्योंके क्रष्ण
हैं और उनमें वही व्यक्ति समझे सकते होते हैं ।

विषयरूपिः (१४) — विशेष रुपिसे देवनेताना विचार
सूक्ष्म देवताना अवेष्यना इष्टव्रत वरनेताना चरण, अर्द्ध-
चंद्रपात्रे अमृतमेष्टे चतुर इति ।

भवान्धाः कप्रा पूतवासु सामहि (५१) —
दिवी बल्लोट् दूसीं शत्रु एतनिष्ठ्य हन्ते ।

अयाजकोंका वस्त्र करता है

मसुमां संसर्द विष्णु व्यामाशयः सोमपा
हत्तर मध्य (११) — यह न कलेशकोटी उत्तराये
विष्णु वर्ते बदलो पह बरता है और यह कलेशकोटी
बदल बनाता है।

ये अधिकारी नावं मारुदं च शेषः ते केष्यः हर्मः
एष स्वयंविभस्त (१०) — ये वाही लोकप्र च वही
पश्यते ते पश्यते ती पश्यते ।

प्राप्ति दूर करनेवाला इन्हे

लिंगायतीना परिवृक्ष देस्य (४१) — जापणिकोंचे
एक उत्तमेत्य उपाख्यान कर्माचार छत्र बापता है। इस अवृक्ष
जापणिका उपाख्यान सही संपत्ती ।

देवा: मुम्पास्त इष्टप्रियं लभयाय न रूढपरित
 (१)— देव यज्ञ करनेवामेको चाहते द मुस्त मास्तुको
 पीडी चाहते ।

अतम् प्रभावं परित् (११)— अप्यत्प्रोदनेषादे
ही निर्वेष अस्तु अप्येष्य प्रस्तु होते हैं ।

म-दायुषीय बेदः अस्तुः करः हि लेपो लेदः पा-
या भर (३१) — चंद्रस मासीय वन अन्दरते हैं
पितृक ऐप वास्तव वन रहे थाक्कर हैं।

मिहे बलवे भरावे ना मा रामेष (१३) —
निष्ठ, अर्थ बलवावेष के सुसे लालीव हमे न घ.
लालीव लालीव लालीव हो ।

प्रतिष्ठोदेष उपुति: स दावयते (११) — यह का दाल कराताओंके लिये दिना बोझ नहीं है। कम दाताओंवी प्रतिष्ठ नहीं दिया जाता है।

111

वाप
वर्ष वा पश्चात् न विद्यत् (११०) — तत् हमरे
द्वितीय वर्ष :

म यापत्ताय रासीय (५२१) — मास असेहे किंवा
कृषी !

घमडियोंका नाशक इन्सु

पा: द्वार्पा द्वार्पा: महि पवः कृपालान् यमयम
लान् यमयम् (१०) — ये शब्द इन हैं यह कहा जाए
करनेवाले जोह बारेवार छहनेवाले भी न कहनेवाले हैं इनमें
जानेवाले हैं।

यह शार्पे शूल्यो च अनुदवाति (१०) — जो
एह वर्षीय चर्म नहीं उड़ा भरा ।

महात्मा गांधीजी को योग्य (५३०) — अपने वापरे बहुत बड़ा धारोंवाले को बढ़ावा देकर में बुद्धि वाले।

शास्त्रानाम् वाहूदिः साहाम् (५१०)— इन
पर्वती सुगमोदय हम राह तुरपे वाहाम रहें।
मपको दूर कल्पेषाला इन्द्र

देव मणि अमीषाद सप्तश्च

ਇਹ ਬੇਚੇ ਬੇਚੇ ਕਾਰਨਾਂ ਪਾਇਆ ਹੋਵੇਗਾ ਜੁ ਮਲਿਆ ਹੈ।

महिमपुषा इन्द्रेष संजगमासः (११५) विर्भव त्रये का समर्पण परिपूर्व नव हमें भरत है।
पश्च त् मिलकर जाता है। इस वरच त् विर्भव होता है।

सगटन करनेवाला इन्द्र

यहा महात्मुद्गत्वा वात् इत् समूहाति (० ५)—
वर है हम। त् यत्कल वर्त्य है वर्त्य त् समूह वर्त्य है।
इन्हें मात्रमें उपचल करनेकी कठिन होती है।

लोगोंको बसानेवाला इम्न्

बाहु (११७)— यथार्थे बसानेवाला इम्न है। वह
इम् अर्थात् वस्ती करनेकी कुम्भकसा वर्त्य है।

इन्द्र घर रहनेके लिये वेता है

विश्वात् विवरयं स्वतिष्ठत् वार्ष्य छिदिः मात्रं
मध्यवृक्षः व एवत्तु वर्त्यः दिषु पात्रय (५५)—
तीन लक्ष्योंपि वता तीन लक्ष्योंपि वसानकाही वास्त्र
भरने वोत्प वर मुसे देखे हो तबा देखे पर वसानोंपि सी मिले
ऐवा वर और इन्ह एव उत्तुकोंपि घृत कर। वसाने वहा
घृतके वर मात्रतोका वर्त्य हो सके।

उत्तम मार्ग

सुपथा शीर्ष वर्धाव याहि (१ १)— उत्तम मार्गे
शीर्ष इमारे वर जाती है। वे वाग् एवके मार्ग हैं। ऐसे एवके
मार्ग उत्तम हीन जाती है। इत्य उत्तम मार्ग निर्माण करता है।

दुर्ल वेनेवालोंको वृण्ड

व्याकाहातः वास्तवाति (१ १)— इत्य वेनेवाले तुष्ट
वर्तुलोंपि त् लोप्य इत्य देता है। इत्ये प्रवावन आवश्यम् एव
चक्षते हैं।

देवकी सहायता

देवयु वेवासः प्राप्ते प्रणयस्ति (१५)— देवत
यत् वेनेवालोंके देव जापे वर्तते हैं। देवकी तुलीको देवतर
एव तुलीको वर्तने अन्तर वस्त्र वर्तने देवत यत् होता है।
ऐसे देवत व्रत वेनेवालोंके देव इत्यप्यर्थे व्यावता वर्तते हैं।

व्रद्धमित्य यता इत् योपयस्ते (१५५)— वाम
विषये विद् है, जो शान पात वर्ता है, उत्तम देव भेद
उपर्युक्त व्यावत करनेके वसान वस्त्रम् वर्तते हैं।

इन्द्रका महारम्य

इत्यस्य यातन् यामयिः महायामसि (१ ५)—
इत्यस्य मात्र वर्तके उड़ीकों लाकोंते वर्तित होता है। इत्यस्य
महात् इत्या वर्ता है।

महिता (११६)— इत्य वर्तुष्ट महारम्ये तुष्ट है।

पश्च हमें प्राप्त हो

म्यष्ट भोगिष्ठ पुरुषिभव। वा वर (११६)— भव

समर्पणम् परिपूर्व नव हमें भरत है।

इन्द्र सदा है

एवम् सदा है वह कभी वसानापि घृत वही व्यष्ट। इ
वरच व्या है—

सत्य (५ ५)— इत्य वस है। सदा है कभी वस्त्र
मालेव जाता नहीं।

सत्यस्य भूमि (१११)— इत्य वस्त्र प्रवर्तत है। इत्य
वस मात्रम् जानेके बास होता है वह वसने वालावस्त्रे वस्त्रे
व्यष्ट है।

पुद्मसे लूट

मधुरम्यः मुखा वा वर (१११)— वसुर्विव
वर है। अमुरोपि परामर वरके उनके बन जारि पवार्व भरत
प्रमाणमें प्राप्त वर। अमुरोपि वरपर देखे तत्पर जपना वस्त्र
दिला हो वसुसि येन्द्रम् लूट वरके विवदी वर्तोंपि वर वरेन
प्रमाणमें जात होता है। देखा वह इन्हके वाप जाता व्यष्ट है।
विवद प्राप्त वर्तेवाके वरिये देखा वह मिलता ही है।

इन्द्रके वर्णन

इत्य समरकल इमने इन्हें वर्तने देते। देवतावस्त्रे देव
वर्तके वहा वर्त वर्त दिले हैं। वह वर्तांपि विदेव विवारण
वर्तके वरिय वीष्म-दिप्यनी नहीं वही है। वर्तीक इन वर्तां-
पर वरिय वीष्म-दिप्यनी वर्तेवी वर्तेवी वर्त वस्त्र ही नहीं है।
इन्हे वे वर्तन सहा है।

इत्य वर्तांपि वसनयं इन्हें वस्त्रम् वद्य वाठेवो वर्त
प्रक्षता है। इत्य वर्तेवं वर्तन वर्तता है लक्ष्यते तुव
वर्तके वसन वरामर वर्तके वाहरके लक्ष्यते घृत वर्तता है।
वस्त्रते और वाहरते वर्तन वर्तके व्रातो लक्ष्यता वर्तता
देखा है इत्य वर्तेवं वस्त्र वर्तता है। इत्यित्ये इत्य वस्त्रे इत्य
पुद्मसंत्री वसना लंद्रहस्तमवी वर्त वर्तते हैं। इन्हे
वस्त्र वहा इत्य विवारण दिये हैं। वस्त्र विवार वस्त्र वर्त
और तुलसीवाले वर्तम् वना है, इत्य विवारे वेष्या वस्त्र वना
है वह वाठक देखे और वस्त्र वस्त्र वर्त विवार वर्ते वि
वारेवं तुलसीवाले देखे हीने जातिये।

वस्त्रवेदके वरेव जातेवे वस्त्रवेद यी इत्य वस है।
वह वात वर्तवेदस्त्री इत्यिते विवा है वि इत्ये इन्हें वर्त
वर्तेवे वस्त्र ही वरिय वस्त्राये हैं। इत्य वर्तके वर्तोंपि
वर्त ही इत्य वेदों वर्तनेर वर्ता है।

वाठक इत्य वस्त्रवेदा वरिय विवार वर्तके वातवस्त्र
वेदवे वोत जात वी और इत्य वेदवे वृद्धव वस्त्रिये वातव
वना है।

अथर्ववेदका सुबोध भाष्य

विस्तृत काण्ड ।

विपयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	ग्रन्थ	देवता	पृष्ठ
१ अवर्देहं इति वरदाम वरम् १		१४ इत्येषोऽपि	१२	१ इति: मस्तु अस्मि:		१
इत्येषी द्युषिष्य	७	१५ इति चोर्द्युषी पाप्ना करता है १४		२ इति:	प्रियोदामा	१
३ इत्यत्प वरा	७	१६ इत्यका रथ	१५	३ इति:		३
४ इत्यकी दो विवाह	७	१७ इत्यका वातुक वामर्ये	१५	४ इति:		४
५ इत्यस्त्रोप पीता	८	१८ उद्येषे रामेशाका इति	१६	५ इति:		५
६ इत्यका वाप्ति	८	१९ ब्रह्मोद्येषे इति लोहता है १६	१६	६ इति:		६
७ इत्यकी देवात्मा	८	२० इत्यका वीरेश वामर्ये	१७	७ इति:		७
८ इति वरोरेषं वरा	८	२१ तुषु कर्मेशाका इति	१८	८ इति:		८
९ इति वैक वेदा व्यव्याख्या	८	२२ ब्रह्मुका पापात्म कर्मेशाका इति १९	१९	९ इति:		९
१ इत्यका सीतावर्ण	८	२३ इत्यवर	१९	१ इति:		१
११ इति विद्युत् है	९	२४ इत्यके वराकाम	२२	११ इति:		११
१२ वरारिष्ट उत्तम इति	९	२५ देव्य वर्ष	२३	१२ इति:		१२
१३ देवस्ती इति	९	२६ इति गीर है	२३	१३ इति:		१३
१४ जात्यन्ती जात्यावात्म इति	९	२७ प्रदायम वापक इति	२४	१४ इत्युपर्याप्ती मस्तु अस्मि:		१४
१५ इत्यके वाहु	९	२८ इत्यकी कमट वीति	२०	१५ इति:		१५
१६ मुष्टि तुषु कर्मेशाका इति	९	२९ मात्योपर वरा	२०	१६ इति:		१६
१७ चुकुत वर्षाये तुषु इति	९	३० ५ इत्यका वातुल	२०	१७ इत्युपर्याप्ति		१७
१८ इति महात् है	१	३१ चात्यन्ती त्रिरका कर्मेशाका इति २१	२१	१८ इति:		१८
१९ न विकेशाम इति	१	३२ ब्रह्मावृक्षोद्य इत्यत्प करता है २१	२१	१९ इति:		१९
२० जात्यावात्म कर्मेशाका वित्र इति है १		३३ वापति दुषु कर्मेशाका इति २१	२१	२० इति:		२०
२१ इत्यत्प वरा	१	३४ वाप	२१	२१ इति:		२१
२२ जात्यावाका इति	१	३५ चमनिदिव्योद्य वापक इति	२१	२२ इति:		२२
२३ चुकुतावेषे कम कर्मेशाम इति २१		३६ मन्त्रो तुषु कर्मेशाम इति २१	२१	२३ इति:		२३
२४ विवर वीरियाका	११	३७ देव्यजन कर्मेशाम इति २१	२१	२४ इति:		२४
२५ लोकोंकी साक्षी	१२	३८ लोकोंकी जात्येशाम इति २१	२१	२५ इति:		२५
२६ इति अन्तर्मूल है	१२	३९ इति वर रहनेके लिए रेता है २	२	२६ इति:		२६
२७ लोको वर्षावात्म	१	४ जात्यम वाप	२	२७ इति:		२७
२८ न विरोक्तिकी विरोक्तिका इति	१२	४१ तुषु विवेशलोको इति	२	२८ इति:		२८
२९ तुषु न रहनेवात्म	१२	४२ देवती वाक्ता	२	२९ इति:		२९
३० पार्वतिक वित्रो वार्णं वरा है १२		४३ इत्यका महास्म	२	३० इति:		३०
३१ त्वराये वर्णं वर्षेशाका	१२	४४ वप्य इत्येष त्रस्त हो	२	३१ इति:		३१
३२ इत्यत्प सामर्ये	१२	४५ इति वर्षा है	२	३२ इति: हरि:		३२
३३ मर्त्यित इति	१२	४६ तुषु वर्ष	२	३३ इति: हरि		३३
		४७ इत्यके वर्षं	२	३४ इति:		३४



अथर्ववेदका सुबोध भाष्य ।

विश्व काण्डम् ।

[सूक्ष १]

(नृषि) — १ विश्वामित्रः २ गोतमः ३ विष्णुः ४ देवता — ५ इग्न्यः ६ महतः ७ अस्त्रिः ।
 इन्द्रे स्था वृप्तम् पृथ शुते सोमे इवामहे । स पांहि मन्त्रो वाचसः ॥ १ ॥
 मरुतो यस्य हि श्वर्ये पापा द्वितीय विमहसः । स सुगोपार्तम् बन्ते ॥ २ ॥
 उद्धाशाय वृश्चाशाय सोमपृष्ठात् वेष्टते । स्तेमितिवेष्टापृथ्ये ॥ ३ ॥ १३

[सूक्ष २]

(नृषि) — [पूरसम्बो मध्यातिरिहाऽपि ।] वेष्टता — १ महतः २ अस्त्रिः ३ इग्न्यः ४ द्रविणोदा ॥ १ ॥
 मरुतः पूत्रास्तुष्टुमः स्वर्काङ्गुतना सोमे पिष्टु ॥ १ ॥
 अप्तिरामींघ्रात्सुष्टुमः स्वर्काङ्गुतना सोमे पिष्टु ॥ २ ॥

(सूक्ष ३)

(हे इग्न्य) हे इग्न्य ! (वेष्ट सोमे शुते) इम वेष्टता विष्णवानेपर (वृप्तम् श्वा) तत्त्वानको (इवामहे) इवामहे है, देवी पार्वता बरते हैं (मध्यो मध्यसः पाहि) इह मनुष्यसत्ता पात कर ॥ १ ॥ (अ० १४ ११)

(विष्व : विमहसः महतः) १ इवामहे तत्त्व वेष्टता पश्च वीर । (वृथ श्वर्ये) विष्टके घर, विष्टके वृथदृष्टैः (पाप) दृष्ट रक्षा करते हैं (सः ज्ञातः सुगोपात्तमः) इह पृथ्य वृष्ट्यात् तत्त्व इग्न्य होता है ॥ २ ॥ (अ० १४ ११)

(उद्धाशाय वृश्चाशाय वेष्टता सोमे आप्त विष्णव वृथ है गोपे वृथ दृष्ट वीर विष्ट वृथ है (सोमपृष्ठाय वेष्टते) सोमवा इग्न्य विष्टवर हाता है वृथवानी (अप्तये) अप्तिवे (लामी विष्टेम) लामीवे इम तत्त्वात् बरते हैं ॥ ३ ॥ (अ० १४ ११)

वृप्तम् इवामह— वृथामहो इम सुष्टुपि बरते हैं ।

मध्यो मध्यसः पाहि— पूत्रास्तुष्टुपि वृथ वीर ।

द्विवा विष्टहसः महतः वृथ श्वर्ये पाप लाज्ञात् सुगोपात्तमः— पृथ्यामहे तत्त्व विष्ट वेष्टता वीर वृथिवे १ (वर्ष २, सत्त्व अंग १)

विष्टके घर वृथ वीरे वा रक्षण बरते हैं वह सुष्टुपि वृथम् इग्न्य होता है ।

वेष्टते सोमैः विष्टेम— लामीवा तत्त्वात् इम लामी वृथ बरते हैं ।

उद्धाश्य— वृथवी लामीवे तत्त्व वृथ वामे लीव वृथ ।

वृश्चाश्य— गोपे वृथ दृष्ट वीर वीर छात वामे वृथ वृथ ।

सोमपृष्ठाः— लामी इग्न्य वृथ वीरे ।

वृथात्— लामी कृष्टवृथात् ।

सु-गोपा तत्त्व— वृथेत् वृथम् रक्षण विष्टवर वीर वीरे ।

(सूक्ष ४)

(महत् पौत्रात्) पश्च वीर वेष्टते वायत (सुपृथः वृक्षात्) लोमवा लाप्र वृथ तत्त्व मृष्ट वृथ (लामुवा लोम विष्टतु) लामे लामुवार लोमवर वीरे ॥ १ ॥

(अस्त्रिः लामीप्रात्) लामी लामी प्रीति विष्टवर वायत वृथ वृथ लामुवा लामुवा लोमवर वीरे ॥ २ ॥

इन्द्रौ ब्रह्मा प्राण्यास्तुषुमः स्वर्काद्गुणा सोमे पितृतु
देवो द्रविणोदाः पोत्रास्तुषुमः स्वर्काद्गुणा सोमे पितृतु

॥ ३ ॥

ना ४ ॥ (५)

[सूक्त ३]

(कथिः — इतिहासिः । वेचता — हात्रा ।)

आ याहि सुपुमा हि तु इन्द्र सामु पितृ तुमश् । एद ब्रह्मि संदो मर्य ॥ १ ॥
आ त्वा भृषुभा हरी पर्वतामिन्द्र कुशिनो । उप भृषाणि नः मृषु ॥ २ ॥
ब्रह्मार्जस्वा त्रय युजा सोमुपामिन्द्र सोमिनः । सुवार्षन्तो हवामहे ॥ ३ ॥ (१०)

(इन्द्रः ब्रह्मा) इन तत्त्वा (ब्रह्मापात्) वराके पात्रे
उत्तम काश्रु तुष भीर वराम मत्र तुष कल्पुके वरुषार लोमरुष
पर्ये ॥ १ ॥

(द्रविणोदाः देवा) वरामाय देव (पोत्रात्) लोम
उपसे परित्र कर्त्तेवालोके पापाय उत्तम तुषे तुष भार उत्तम
मत्र तुष कल्पुके वरुषार लोमरुष पर्ये ॥ २ ॥

भृषुभा सोमे पितृतु— भृषुभे भृषुभूत (उपरात द्वे)
विष भृषुभे विठु। वाम लीना हात्र भृषामिके लोके भृषुभ
है वराता ही उप भृषुभे पितृ भृषिक न पर्ये । उप वाम
वाम कल्पुके वरुषार ही होना आहिने ।

पोता— उपर्य परित्र भृषुभे विठोन तो वराता है ।

भृषामिक— भृषिके प्रदीप भृषेवाला ।

ब्रह्मा— वरामा सुषम भृषम । वह वर्षमेंही होना
आहिने ।

द्रविणोदाः— वर देवताला (द्रविण—) वराम
(दा) दाता ।

सु— सुषुम— उत्तम काश्रोपि विषये पर्येवा होता है ।

सु—मर्य— उत्तम मत्र विषके वाप वापे जाते ह ।

इन एकम श्लोक १५ १७ के लेखात है ।

(सूक्त ३)

इ इय ! (आ याहि) भाग्यो (त सुषुम हि) दृष्टारो
लिये इप्ते वर १५ दैवार विळा है (इमे सोमे पितृ) उप
सोमरुषा वर वरो (मम इव ब्रह्मि आ सहः) भीर
भृषे विष इव भृषामार वेष्टो ॥ १ ॥ (अ. ८१ । १)

है इय । (कथिता भृषुभा द्वारी) भृषे वर्षमें वर
वाके लाव सुष भृषेवाले वारे (त्वा भा बहाता) द्वे
वही ले वारे । (त्रिभृषाणि नः उप भृषु) इमोर वर्षमें
सर्वात्मे सुषो ॥ २ ॥ (अ. ८१ । २)

है इय । (वर्ष सोमिनः) इम वेसवाम वर्षमें
(भृषामः) भृषो लेष (भृषामत्ता) लोमरुष लेष
पर्ये सोमर्या रवा (लोम लीनेवाले दृष्टों (भृषा) वे
पाप रुषेवाले वरके वाप (भृषामहे) तुषते है ॥ ३ ॥
(अ. ८१ । ३)

भातिष्य सत्कार— मम इव ब्रह्मि आ सहा ।
मैरे विषे इप भृषामार वठ । भी भृषिके वर भृषाम लाभ्ये
इप रीतिसे उम्मानपूर्वक वेठेवे विषे भृषाम देवा आहिने ।

सोमे पितृ— लोम इस लीवे ऐता भृषकर तत भृषिके
भ भृषारहे वेष १५ देवा आहिने ।

केतिमी भृषुभूती द्वारी त्वा भावहाता— लंद इय
विळे वर्षमें है भी लोके इसरुष भृषारे लंदकामाक्षे लंदे
वाप वर वर्षि है एवे लोक विषित होते आहिने । इयमे
ऐते लोके वह वरामार है वारे ।

वा भृषाणि त शृषु— इवरे येत्र उपीम वैष्वर वराम
वर ।

वर्ष भृषाम्य त्वा इवामहे— इप भृषाम है
हुतते है ।

युजा— वाप (लेखाते वरके वाप वही वाज्यो । वर्ष
विषवर वरावे विषे रापाप आ वाय तो उप वराम वराम
वाप भर देवा वही विषवाम विषित विळा वाया है ।

[मूल ४]

(शानि — इरिमिहाठि । देवता — हस्त ॥)

आ नो याहि सुवावस्त्राऽसार्क सुपृथिरूप ।	पिंडा सु शिविष्मचर्चसः	॥ १ ॥
आ तैं सिजामि कृष्णोरनु गाथा नि बावतु ।	गृमाय विहया मधु	॥ २ ॥
स्वादुटे अस्तु सुसुदे मधुमान्तुन्देउ तर्व ।	सोमः प्रमेस्तु ते दुदे	॥ ३ ॥ (११)

[मूल ५]

(शानि — इरिमिहाठि । देवता — हस्त ॥)

अपृष्ट स्ता विचर्पये ज्ञनरिवाभि सर्वतः ।	प्र सोमे इन्द्र सर्पतु	॥ १ ॥
तुविशीर्णे बुवोदरः सुवाहुरन्वसो मदे ।	इन्द्रो बृशाणि विमते	॥ २ ॥
इन्द्र प्रेति पुरस्त्व विश्वस्यस्तान् ओमसा ।	बृशाणि बुश्रहं जहि	॥ ३ ॥

(मूल ४)

३ (शुशिमिन्) उत्तम सात्त्व वारप वरनकामे हस्त ।
(दुष्टावत नः पा याहि) सोमसे दैवत इत्तेवामहामारे
पाप मात्रो (मकाक सुपुर्णी उप) इमारी उत्तम स्तुति-
मोक्षो पापसे परम वर । वार (अप्यतः सु पित्र) इस
एकमें कर्म ॥ १ ॥ (क. ४१४४)

(त कृष्णोः) तरी गार्वामे (पा मिश्चामि) मै इष
रवध विषय क त्वं हूँ । वह इस तरे (गात्रा मधु वि
पावतु) गार्वामे अवश्वसनसे दीव जाव (विहया मधु
एमाय) अहसे इष मधुरवधा आकार प्राप्त वर ॥ २ ॥
(क. ४१४५)

(सत्तुद से १ उत्तम सात्त्व एम तर मिमे वह (लादु
मधु) वीरा क्षेत्रे (तप्त तम्ये मधुमाल) ठर सर्विरे
क्षिमे मधु उप । वह (सोमः त हृदे पा मधुतु) शेमरण
हैर इरवह मिमे शान्ति देवतामा हो ॥ ३ ॥ (क. ४१४६)

सु शिविन्— उत्तम सात्त्व विषय वीववस्ता उत्तम
दुष्टावा ।

अप्यतः सु पित्र— इवा उत्तम विषय वाव वा
मधु प्र— विषये प्राप्त वह यारामे वक्तव्य है वह क्षिर
एस शामार रन ।

गात्रा मनुषि पापतु— धेष वर्तमये मूर्त्युमये इ
प्रेते खंडमें स्तुति इत्यत्र या वर्तमये विषये धेष
वाराह अता दे ।

विहया मधु गृमाय— विहय भुत्तावा आकार
में हुए रघुगाम कर्मा च हिमे । समरवने गौप्त इष और
मध मित्रामा काता है । इसे वह मीठा ववता है ।

सामा त हृदे री मधुतु— वीम इरवके लिमे शान्ति
क्षेत्र है ।

मधु मधुमान् म्यादु री— वे पद वामरसामीढा
पन वत्त इष है । इहर उसमें दामत है वह वत्त नषु मधु
मान् इन पदोंसे स्वत री रही है ।

(मूल ५)

४ (विषयण इन्द्र) विषय च वदे कुषल हस्त । (यदि
मिमि सत्तुतः सोम) वह गोमुखसे विवाहा द्वारा मामरव
(तवा मं सप्ततु) मो वात ववता भाव (जर्मी इव)
जरी विहया विमें प्राप्त वारी है ॥ १ ॥ (क. ४१४७)

(तुविशीर्ण पावहरा) वीरा यदनकाम व्योमन वेद
पाता (सु लादु) वदन ववताव वहामा (इन्द्रः) ॥ २ ॥
(अप्यतः मधे) विषयदे वामादे (तुवाणि जग्मत)
जरीवा मारा है ॥ ३ ॥ (क. ४१४८)

(इन्द्र) ४ इव । (तुवा वेद) भाव ४३ (यदि
ओक्षसा विषभाय इवामा) तु जारी यन्त्रम विषय
मधी है । है (तुवदम) इवां वदनान् ॥ ४ ॥ (मृशाणि
जहि) विमे वा पर ॥ ५ ॥ (क. ४१४९)

दुरीपस्ते अस्तवद्गुष्ठो येन् । वसु प्रयुच्छति । यस्मानाप सुन्वते	॥ ४ ॥
अप सं इन् सोमो निर्षुणो अथि उहिंयि । एहीमुस्प द्रवा विर्द्ध	॥ ५ ॥
शाचिंगो श्वाचिंपूजनाय रणाप ते सुरः । आखण्डलु प्र हृष्टसे	॥ ६ ॥
यस्ते शूक्रभूपो नपास्त्रण्णपास्कुण्डपार्यः । न्युमिन्दध्व आ मनः	॥ ७ ॥ (१०)

(त भृकुषः दीपः भास्तु) तेऽप लंकुष तंत्रा हो
(यम) विवरे (सुमते यज्ञमात्राय) सामया करमया
प्रसामनके लिये ८ (वसु प्र अण्डनि) वस रेता है ॥ ४ ॥

(अ. ११५ १)

हे इन ! (अप सोमा ले) वह सोमरथ लेरे लिये
(लिपूत वर्हिंयि मधि) अवधर आपनपर रखा है
(एहि) जामा (हे द्रव) इसके पाप होवधर जामा और
(पित्र) वीरो ॥ ५ ॥

(अ. ११५ १)

हे (शाचिंगो) लक्ष्मिं गांधोशये हे (शाचि
पूजन) लाक्ष्मानोंसे पूर्वित । हे (मालापद्म) कुण्ड
कर्षण परमेशामे इन । (ते रणाप सुता) लेरे जातेके
लिये वह एव ऐराव दिना है और (प्र हृष्टसे) वह वृक्षावा
भाष्य है ॥ ६ ॥

(अ. ११५ १२)

(या त शूक्रघृष्णः) यह को रेता दीक्षाको देन लेता
वह है (व पात) व पीठ होवेशाका शामर्थ्य है तथा यो
(प न पात) लिपेतः न विरेव स रहते और (कुण्ड
पार्यः) जामा अपेक्षा ते देवकुला शामर्थ्य है (लक्ष्मि
मनः जा द्रव) वह समर्थ्येमे अपने मनों लिंग बरता
है ॥ ७ ॥

(अ. ११५ १२)

इसके लियेन विवर—

१ विवर्यिति — विवेष वयमें कुरुत जनोका लियेव
रित परमेशाका विवके वशुकृत अंत रहत है ।

२ तुष्टि भीक्षा — यही वर्दन विवरी है मध्यूत पक्ष-
जामा प्रव वस्त्र या राई वारीक रहती है, इसके ज्वालाम
वरके अपनी पर्यग स्त्रीलाल यो भी ।

३ वपोदर — (यम) वर्ती (द्रव) वदरपर
लिप्तके है । वह वेदवाका ।

४ सुवादुः — वहे वसवाय वाहुमामा, लिपके वाहु इन-
पुष्ट करकाय है ।

५ भोजसा विभवय ईशावा — अपनी जाक्षिये
लिपका जामी बना है ।

६ शाचिंगु — इष्टपुष्ट वीरे विवरो है वह वह लोकों
पूज रहा है ।

७ शाचि शूक्रम — जपती शूक्रा शाचिंगा वृक्ष बरते हैं
जपती शाचिंगाको लिये वीरो शूक्रमाय है ।

८ मालापद्म — कुण्डे वाह वस्त्र बरतेवाका । कुण्ड
रिनाल वाहेवाका ।

९ शूक्र-कृष्ण — सीवशाके देवके सपाव यो कर्मारह ।

१० म-पात — यो गिरावा वही और वाही सर्वे वर
पीठ रहता है ।

११ म-न पात — लियेव सीविते यो विरेव पिरता ली ।

१२ कुण्ड-पार्य — (कुण्ड-इहि वीरे इने व)
एक और वाह कुण्ड वृक्ष वाह वरके यो जना संरक्ष
करता है ।

१३ इनके वीरे युध है । वीर इन वीरोंके युध संघे
जाहिं वह लोक वही मिलता है ।

१४ जनी इव — लियो विव अह वीरोंके पाप जाती है
लियो अपने पतिक वाह रहे वह वनम वर्तम है ।

१५ शूक्र शूक्राचि विवामे — इन दोनोंसे मारता है । वही
इन दो युतियमें है और इन पर नवीकरण लियमें है । वर्दुक्ष
लियाए उक्ती विविध हीता वर्तम है । वीर इन शाचिंगाने
कुण्डे मारता है ।

१६ वृक्षहन — शूक्राचि वाह — हे वृक्षके वरमेशाका वीर ।
ए इनोंसे मार । वहमे वीरके अनका वह वह ।

१७ वृक्ष — वरमेशाका वृक्ष वीरके वारी लोके
स्त्रय है मर वह अमृत ।

१८ वसु प्रयवस्ति — वृक्ष देता है ।

१९ वृक्षादिता (म ५) लमि संभृतः (म १)—
वेमरय विवामे जला यका और इनके वाह लियावा है ।
इसके परम् (वेव) लिया जाता है । वह मरका उत्तर
वदावेशाका देव है ।

[সংক্ষিপ্ত]

(अस्मि । — विश्वामित्रः । देवता ॥ इति ॥)

इन्द्र त्वा वृपुम धूम सुते सोमे इचामह	। स पौडि मस्तो अर्घसः	॥ १ ॥
इन्द्र क्रतुविदै सुत सोमे इर्यु पुष्टुरु	। पिता वृषस्त् ताहृपिम	॥ २ ॥
इन्द्र प्रणो चितावान् युज्ञ विश्वेभिर्देवेभिः । तिर स्वधान विष्टपते	॥ ३ ॥	
इन्द्र सोमाः सुवा दुमे तथु प्रयन्ति सत्पते । श्वये चन्द्रासु इन्द्रवः	॥ ४ ॥	
दुष्मिष्या लठरे सुरं सोममिन्द्र वरेण्यम् । तथु पुष्टासु इन्द्रवः	॥ ५ ॥	
गिर्वैणः पुहि नेः सुत मधोर्षीराभिरञ्जसे । इन्द्र त्वावातुभिष्यसः	॥ ६ ॥	
मुमि पुष्टानि वनिन् इन्द्रे मचन्ते अविक्षा । पूर्वी सोमस्स वावृषे	॥ ७ ॥	
अर्घवतो न आ गौहि परावर्तम वृश्वहन् । दुमा शुपस्त् नो गिरिः	॥ ८ ॥	
यदेन्तुरा परावर्तमर्घवते च दृष्टे । इन्द्रुह तथु आ गौहि	॥ ९ ॥	(११)

(च४)

ऐ स्त्र ! (सुते सोम) थोपरख ठेमार भरगैपर (वर्ष
भूषण इवा) इम दुष्ट यज्ञिमानको (हतामहे) हुनाले है
(सा मध्यः भन्नसः पाहि) ४८ द. काङ्कश सक्षम पी ॥ १५
(लक्ष्मी ३ १३ १५ १४ १५)

१ (पुरुष इन्द्र) पूर्णे हाथ मवित इन् ! (कहा
विह) वर्षा करता वर्षा करता (सुनें सोम हर्य) वीर
एवं तु चाह और (तात्परि पित) असंत दृश वर्षा करते
इन रक्षों दी और (सुषुप्त) वर्षाकान बन ॥ १ ॥

१२४ (क) ए (सत्वान) सुनि किंव पये (वायपत इन्द्र) प्रश्ना
पलद इन्द्र । (नः घिटाकारं पर्वं) हमे प्रश्ने समद इन्द्र
कर्मे (विश्वेषिं द्वयेषिं प तिरं) संर्वं रित्युपासी
या देहोंके लाल भास्त रहा दी ० १ ॥ (क) १२५ ॥

१० (सत्यते इन्द्र) समर्थोऽपावृष्ट इति । (इमे सुधाराम
चम्पासः इन्द्रः सोमा :) ते निष्ठो हृषे चम्पार्थो भावेत्
सदावेष्टे देवप्रण (तद इयं परमिति) ते वासनमेवात्मा
हि ॥४॥ (क ३४ ५)

१५। (वरेण्यं सुत सोम) स्त्रीबाल परने याम्ब
इप सोमरक्ष के अपने (अठडे इधीष) परम वारव अर
(पुस्तास इन्द्रदा तथ) पुकर्क में रहेको हो जानेसक
ले भिन्न हो १५। (४ शत १५)

दे (सिर्वपाणीश्वर) स्थानिके देव इत् । (न् सुख पाहि) इमरे द्वारा तवार जिसे इस रक्षणीयी । (मध्यो धारामि अम्बस्ते) इस मध्य रक्षणी व धारोंसे त् उचार करता है । (पश्चः त्वावात् इत्) इमरा वाप जिसप्रैर लेती ही देव है ॥१॥

(वसित वसिता पुस्तकालि) तुमरे मध्य कड़म
पत (हाथौं मसि सचम्प, हाथौं थोर बातेहै)। (सोम
स्य पीसी बाहुमे) खोमखो पीनेवाला बाह होता है ॥
(॥ १४ ॥)

४ (पृष्ठांत) इसके मानवके हर। (मर्वादिता पराक्रम) पासेया सुधे(मा या गहि) इनरे पास का जलो भीर (इमा मा गिरा सुखल) इन हमारी रुपिणींथा स्थिर करो ॥ ८ ॥ (कृ. १४ १५)

हे सर ! (अर्बाहत) पर्याप्ते (परामर्श) हरके (परा-
मर्शदार) पर्याप्ते भी (हृष्टप्रसंग) हरके हरके हरके हैं । (ततः
इह आगाहि) वहांपरे यहां भाषा ॥ १० (क ३ ४ १५)
इस सुखमें इसके विलभव दर्जिने । वे वीरोंके गुरु वका-
ने ॥

‘भूमध्य— वैकल्प समाज वस्त्रात् प्रवाहताच्च इष्टे
करनेषाणा।

२ पुष्ट-सुना।— पूर्ण शार अवधित को रक्षण करता है उपर्याप्ति सुनि सब करते ही यह है।

[सूक्त ७]

(क्राचि — १ २ सुक्तसा ४ विश्वामित्रा । देवता — इष्टदः ।)

उद्गेबुमि भुतामेष तृप्तम् नर्मीपसम्	। अस्तीरमेपि सूर्य	॥ १ ॥
नव् या नंत्रविं पुरो विमेदं शास्त्रोऽवसा	। वाहि ष वृश्चावधीत्	॥ २ ॥
स तु इत्रः विषः सखायाप्नोमुपर्वमत्	। उक्तवरिव दोहते	॥ ३ ॥
इन्द्रं कवुविदं सूत सोमे इर्य पुरुषु	। पिता वृपस्तु शार्दुपिम्	॥ ४ ॥ (१)

१ साक्षात् — सूक्तिके वैयम्

४ विष्व-पाति— प्रवासोऽका वयाव एव रीतिः परम
परमेवात्

५ मत्पतिः— सज्जनीष्य प इति परमेवात्

६ गिर-वतः— विष्वेष्य प्रशसा हैति है देवा वीर

७ भूत्र-इन्— इत्येष्य सारमेवात् भूत्रा सरमेवात्
परमेवात् सत्रुका वाय परमेवात् । ये वीरके युग्म इति सूक्तम्
होते हैं ।८ सोमरके विष्वमें इति सूक्तमें यो अवा । है यह नव वेदिके
१ मधु भाष्या— मधुर देव इति९ कवुविद्— वर्तमानमेष्य भाष्य देवात्मा विष्वके
पीठस वृषभमध्येष्य वाव होता है ।

१० तात्त्विणि— तुषि परमेवात्

११ सोमाः सूता वचाद्वासः इत्यवः— ये सोमरक
परमेवात् हैं चमकीले रहते हैं । अमरेष्ये चमकते हैं ।१२ दुष्टासास इत्यवः— दुष्टेष्ये रहनेवाले ये वास हैं ।
दिमाक्षरमें तौल्यात् वर्ण एव ॥ १ ॥ दुष्टपर यह सोम
वर्णस्थिति वाली है इत्यन्ते इत्योऽप्युक्त वहा है ।
स्वमें दुष्टोऽस्मी हड़का विष्वात् है ।१३ तात्त्विणि विष्व भूयस्व— तुषि परमेवात् इति इत्येष्य
वीर वर्तमान वत् । यह इति फौन्देष्ये लामप्ये वहता है ।१४ विष्वेष्यि देवेष्यि यद्युप निर— यद्य देवोऽप्य विष्व
कोषि इति यद्युपे दूर्य वर । यद्य देवोऽप्य विष्व कहते तत्
होती है ।१५ सोमरक चमकत है इत्येष्ये इत्येष्ये वच्छ्र इत्युक्त
नाम है । भवति इति योमेष्ये वृत्तमध्य रहता है विष्वके वाय
इति इत्येष्ये चमकत होती है । इसी वाय वह वर्तमान वहाता है
वक्त वहाता है ।

(सूक्त ७)

१६ एव । (सुक्तमप्य वृपस्तु) प्रसिद्ध ऐष्वर्वात् तेष्ये
वेता वर्तमान (मर्य-मपस्तु) मात्रोऽपि विष्वे वै
कर्मेवाते (अस्तार्दि) एव तेष्येष्ये दुष्टक इत्येष्ये विष्वेष्ये
विष्वे ही (अमि उत्त एवि ष इति) द उत्तव वीत्वै ॥ १ ॥
(अ ८१११)(या वाहू-सोद्वसा) वो जाने वायप्यम्ये दुष्टु (तद
मर्यस्ति पुरा) न्याये तुरियोध (विष्वेष्य) विष्वमित्य
प्रता है (य वृश्चाव वृश्चावधीत्) वीर इत्येष्ये कर्मे
वालेन लक्ष्येष्ये मी वारा ॥ २ ॥ (अ ८११२)(सा या इत्यापि विष्व भवात्) यह इत्यापि इति इत्यात्मा
परमेवात् विष्वे है । यह इत्येष्ये (अस्तार्दि गोमत् यवमत्)
योद्यो औद्यो औद्यो वैष्वर्य वय (इत्यापाराइति दोहते)
वही वाय एव इति इत्येवात्मा योद्यो यवाव व्रशन वर्णे ॥ १ ॥
(अ ८११३)१७ इत्यद्य कवुविद् इति सेवय वर्ण वर्णे ॥ १ ॥ १७ १८
(इति ५ वर) विष्वेष्ये । (अ ८१४ १९)

१८ इत्येष्ये विष्वेवात् इति सूक्तमे विष्वेष्ये—

१९ द्युता-याष्या— प्रसिद्ध ऐष्वर्वात् विष्वेष्ये ऐष्वर्वात्
वार्ती और वर्तमान वाली है ।२० द्युष्टम्— वैष्येष्ये वर्तमान इति यत्ती युष्मि
परमेवात् चामर्येवात्२१ लव्याप्यस— (मर्य-मपस्तु) मात्रोऽपि विष्वेष्ये
कर्मेवात्

२२ भवात्— भवुपर यद्य तेष्येष्ये दुष्टम्

२३ विष्वः भवात्— दिष्टव विष्व

२४ वाहू-सोद्वसा या य वर्तमानि पुरा विष्वेष्य— या
वप्येष्ये वाहू-सोद्वसे वायप्येष्ये वायप्येष्ये वायप्येष्ये विष्व विष्व

[सूक्ष ८]

(जागि) — १ मरद्वाहा २ कुत्सा ३ विश्वामित्रः । वेषता — (रुद्रः)

पुरा पादि प्रुत्या भन्देतु स्वा भुवि प्रस्त वावृषस्वोत गीर्भिः ।

आधिः सूर्ये रुपुहि पीपिहीयों सुहि रुप्त्रमिं गा ईद्र रुषि ॥ १ ॥

अर्द्धाक्षेहि सोमेकामं स्वातुरय सुरुत्तरस्य पित्रा मदोय ।

उरुभूषा बुठर मा वृपस्व पित्रेष नः षुषुहि इयमानः ॥ २ ॥

आपृष्णो अस्म कुलशः स्वाहा सेकेतु कोर्जे तितिस्तु पित्रेषै ।

समृ प्रिया आवृत्त्र मदोय प्रदक्षिणितुमि सोमासु ईड्रम् ॥ ३ ॥ (१५)

परता है । पुरा वे एकी पुरिया तितिस्तु होती है । वे दोनों वहा पौख्या बर्तने हैं । यह एक परता है ।

७ चुम्हा भद्वि अवधीत्— चुम्होंगे भावेनावत्ते जलिये मारा । अहीं एम व हेमेवता सतु । तिसी लूपि वहरी रहती है एका चतु । भद्वि गण-स्वात यह वाम

अचाराविसान का था । सर्व गण स्वात का इम-
न्न स्वात हुआ तिसम अष्ट-मायि-स्वात हुआ देखा
हई मारते हैं । भद्वि एका उर्ज वहिते मुख्य कांडोंके छतुमे ।

८ चत्र अव्यावत गोमत् यवमत् चत्र तीव्र
तीव्र वके स्वम या ।

९ साम पिय पृष्ठस्व— सोम वी और वक्षाद चत्र ।
इसमे रुद्र विदित है ता है छि से मरस फैसेस विनेवामेक चत्र
पृष्ठ वह जाता है ।

(सूक्ष ८)

(एका प्रान्तया पादि) एय प्रकार पूर्वके समान साम
एक्षे ली । (एका मदमु) दुमे यह एक आवृद्ध देखे (प्रद्यु
भिः) एमे मंत्र पाठका सुव (उत गीर्भिः वावृषहह)
धेर इमोरे तुतिसीषे बड वा । (सूर्ये माधिः इयुहि)
एक्षेमे प्रकट वा । (एयः पिपिहि) भावीष्म पुष्टिष्म पुष्ट वर
(शब्दम् वहि) ततुबोंगो मार है इद्र । (गा भवि
दविष्म) विवेषो डेरद वार विक्षम ॥ १ ॥

(क ११६१३)

(वक्षादि पहि) वक्ष वा (एका सोमकाम साहु)
दुमे से मरस वाहेवाम वहत है । (अप सुत) यह एम

तैवाहै (तस्य मदाय पिव) इसमा आवृद्ध देखे
जिये ली । (उठ-म्पवा अठरे भा चृपस्व) वह वक्षाद्
ए वप्ने वटमे वाक (हुयमान) हुमाना हुमा (पिता इव
नः षुषुहि) विताने समान इमरीं प्रावता मुन ॥ २ ॥

(क ११६१५)

(भस्य कलाशा आर्गृन) इसम एक्ष भर दिवा
है । (स्वाहा) वह उतम रीतिमे दुमे समर्पित है । (सेत्ता
इव कोश) भावेनावता तेत्ता भावाम भट्टा हैत्ता (पिताम्भे
सिसिष्म) लैवें जिये वह वात मर रहा है । १ (पिया
सोमासः) विव दोम (मदाय) आवृद्धे जिये (अपि
प्रदक्षिणित) भारी भारदे (इन्द्र ल मावृत्त्र उ)
इसको डेरद तीव्रा जावे है ॥ ३ ॥

इत्ता वर्तन इय सूक्षमे देखिये—

१ व्रह्य भृषि— देवद मंत्रोद्य भवन कर ।

२ गीर्भि वावृषस्व— सुतिसोम लैवी व्याहि वहती
चाय ।

३ वावृत् वहि— ततुबोंगा मार ।

४ गा भवि तुतिष्म— [ततुब लवीग रही] वीरोंके
जिये लोहवर वाहर वा । ततु योलोंग तुतावर भावे त्वरेमे
त्वर है इस वम वावरमें तीव्रत लीकींग वाहर जाता है ।
इस तरह सूर्य विवेषों वाहर त वा और प्रकाशमें दैवता है ।

अपि प्रदक्षिणित्— विवेषों भावे लैवे हावष्मे
दक्षिणी वार वक्ष वह वेवामवी डेरद रीति है । स्वयं
वत्तरी लैर वामा भार अविविता इवामी लैवे रुद्रा ।

[सूक्त ९]

(क्रदि) — १-२ नोंपा ३-४ मेत्पातिथि । वेष्टा — इत्यः ।)

त वों दुस्मूर्तीपह वसीर्मन्द्रानमर्चस ।

अभि बुस न स्वस्त्रेषु भेन्नु इन्द्रे गीर्भिनैवामहे ॥ १ ॥

बुश सुदानुं तविशीभिरावृतं गिरि न पुरुमोवेसम् ।

सुमन्त्र वाऽमृतिन चहुस्त्रिं मधु गोमन्त्रशीमहे ॥ २ ॥

तस्मा यामि सुवीपे वद्वस्त्र पर्वित्वित्वे ।

येना यतिभ्यो भूमिषु भने द्विरे येन प्रस्त्रेषु मार्तिष्य ॥ ३ ॥

येना समुद्रमसुंबो महीरपत्तरिन्द्र वृष्टिं ते शर्वः ।

सुधः सो अस्य महिमा न सुनस्त्रे य खोजीरुपकुदे ॥ ४ ॥ (१०)

(सूक्त १)

(त वा इस्तं) अपाके रुप दर्शनीय (जटीयहे) वनु
बोजा समुद्र भरेवाले (वस्तो) अग्न्यसा अग्न्याने) सद्वे
निश्चित वत्ते वालान्तिष्ठ दोषेवात् (इष्टं) दर्शनीय हम
(पीमी जवामहे) वीरोषे दर्शना पाते हैं । वेणी (घोड़ा)
ज्ञासेत्यु वर्त्त यमि न) गोंवे वार्डमे रे अपाके रुपके
(विष्णु इस्तरी है) ॥ १ ॥ (क्र. १५८१)

कहे) विष्णु वर्त्त एव महुम वर रहहे ॥ ४ ॥

(क्र. १५८१)

इव एत्येष्व वीरु तुल दे व्ये हे—

१ दम— दर्शनीय दुमर दुम्प

२ जटी-शर्व— दुर्मीठा वत्त भरेवाला इति वी
वनिवालोंके दूर भरेवाला

३ वसो: अग्न्यसा महार्त्त— विष्णुपे प्रतिवेष्य विष्णु
होता है विष्णुपे प्रतिवेष्य वर्त्त दोष इव व्रह व्रहके वर्त्ते
वालन्तिष्ठ दोषेवात्

४ धृष्टा— धुमेकमे रुलेवाला

५ दु दानु— दान भेन्नेवाला

६ वतिशीभिः भाजुता— भाजा उक्तिमोहु पुरु

७ पुरुमोवेवासः— भरेव प्रधारके वर वरने एव
रक्तेवाला

८ द्वृपाम— वर वर रुलेवाला

९ गोमाव— वीरु वाव रुलेवाला

१० वेण हिने वाविष्य— तुल तुल दोषेवाला वर्त्त
वर्त्ता है ।

११ वृष्टिं वावा— वर वरेवाला वावार्त्ते विष्णुहै ।

१२ वृं सोषीः भमुक्तहे— विष्णु वर वर्त्त वर्त्त
वर्त्ते हैं ।

१३ वेण समुद्रं भमुक्तः यही वरा— विष्णु वर्त्त
वर्त्ते वही वराह वर्त्त विष्णु ।

१४ अस्य महिमा न लंगहे— इव वर्त्त महिमा कृ
त्ती होता ।

१५ युव इवके वीरके हैं । वीरमे देष्य युव इवे वाविष्य ।

(तथ सुवीप वर्त्त) वर वीरो वाम उत्तिष्ठे वाने

वाने वानमे (पूर्व-विष्णुपे) वरम विष्णु वरेवके विष्णु

(त्वा वामि) भेरे व पृष्ठे मानता है । वर (धर्मे विष्णु)

पुरु धृष्ट दृष्टा वर (वर) विष्णु वास्तुषे (पूर्विष्य

भूमावे) वरिवेषे विष्णु मानुषे विष्णु वास्तुषे वारी (यंव

प्रदक्षिण वाविष्य) विष्णु वरिवेषे प्रस्त्रमयी वास्तुषे ॥ १ ॥

(क्र. १५८१)

(वेण समुद्रं भमुक्तः) विष्णु वामपूर्वे द्वचुक्ते इव

वर्त्त विष्णु वारी (वाही वरा) वर वरेवाला विष्णु विष्णु

इव इव (से वृष्टिं वर्त्त) वर इवाही वृष्टिवरेवाला विष्णु

ही वर है । (स अस्य महिमा वर्त्त न लंगहे) वर

इव वर्त्त महिमा वर्त्ती वर वही होता (व व्योमी वर्त्त

इन्द्रो मृत्रमधूषोऽच्छर्वेनीतिः प्र मायिनोभविनाद्विजीतिः ।	॥ ३ ॥
अहुन्त्युसिमुखघुग्वनेष्वाविर्वेना अद्गोद्राम्याशाम्	
इन्द्रः स्वर्णं स्त्रयुभाहानि खिगायोखिग्मिः पूर्वना अभिदिः ।	॥ ४ ॥
प्रारोच्युन्मनेषे क्लेतुमहामविन्दुन्योर्तिर्बुते रणाम	
इन्द्रसुखो युर्वका आ विवेद नूबदधानो नयों पुस्तिं ।	॥ ५ ॥
अचेतपुदिये इमा चरित्रे प्रेम वर्णमविरच्छुकमोसाम्	
मुहो मुहानि पनयन्त्यस्येन्तस्य कर्म सुहृत्वा पुस्तिं ।	॥ ६ ॥
पूजनेन चुम्भिनान्त्स विषेष सायाभिर्दस्यैरभिर्भूत्योद्या:	
युकेन्द्रो मुहा वरिवशकार द्वेष्यः सत्सविष्वर्षभिप्राः ।	॥ ७ ॥
विषस्तुः सदने भस्य तानि विष्रा उक्षेभिः कुर्वयो गृणन्ति	
सप्रापात् वरेष्य सहोदां संसुधांसु स्त्रिपर्य द्वेषीः ।	॥ ८ ॥
सुसान् षः वृष्टिर्वी धामवेमामिन्द्रे महुन्त्यन् चरिकासः	

(राधाकृष्णनीति-इत्याद्) एकोपे परमेश्वरसे इन्होंने (त्रिपू
ष्टुपूजोत्) इत्यन्ध भैरविना । (चर्य-कृतिः मार्गिनां प्र
भास्मिनात्) नामा इसोंको लेनेवासे इन्हने कर्त्ता बहुवीक्षणे
सिंहपूर्णिते वह निका । (यमोत्तु तदशयम् चर्यसं भास्मः)
योगीको चर्यण स्वसं वक्तव्येनावस्थामें चर्य-बृहूत्तेजावासे बहु-वी
मा दिवा भार (रात्माकाली येना आदिः अध्यच्छोत्)
त्रायीमें लिङायी बोलीकै खिर्वासे मक्त निका । उन्मुखे लिङायी
बोलीकै वहर निकाला ॥ ३ ॥

(स्पर्य इन्द्र) सर्वे ब्रह्मणो इत्येऽपि (महाति ब्रह्म पशु) रिक्षोऽपि ज्वलनं चिन्म् (ममिष्टि) अवश्य असीष्ट प्राण कर्त्तव्यात्मे इत्येऽपि (कृष्णिष्टि)। अतये प्राणिवैष्टि शास्त्र एवज् (द्वारका किलाय) भूत्युक्तात्मो चैतुर्विष्टि। (मन्त्रो) मनुष्यानामेऽहितके चिन्म् (बहु फेनु प्रातोर्कथयत्) रिक्षके वृष्टिष्टि-सूक्ष्मोऽपि अवश्यिष्टि चिन्म् ब्रह्म (इदं ते राजाय) एवी दमीस्तात्मे चिन्म् (स्पौति अविष्टुत) मकारात्मे वास्त्र चिन्म् ॥४॥

(इदं) एत (दुष्टा) तपाते (वर्षाया वा पित्रेण)
समुद्रेनामै चुप्तं गता । यह (प्रूपत्) नेत्रामै ब्रह्मात (पुरुषजि-
तर्या इथात्) वृष्टि धीरे भवं ब्रह्मा है । (वरिसे इत्या-
पिपुः सम्बोधत्) एवम ब्रह्मी स्फुरि इत्येताहेनै निर्विल-

ऐ दुर्दिनो संभेद भी और (आसो हमें शुरू करें) इन
पालनेवाले इन रक्षण प्रवासियों (प्रभातिरत्) मध्येह करने
की। ५।

(धर्म साह इन्द्रस्य) इव महात् इत्येके (पुराणे
भूताना महाभिक्षम्) वारुण प्रकृतेके बड़े वर्तम् है जिनमें
कैवल्य (परमयमिति) कृति करत है । (तृज्ञानेत् तृज्ञानात्
सं प्रियेष) कर्मसौ व्यक्तिमाली उद्देशं पीय चाल । (व्यक्तिमा-
लीति-ओऽत्मा) कुरुक्षु प्रदायत् वर्तेके लापर्यास्ते एवं
(मायाभिम् इस्त्यून्) अपनी वक्तिमें सुहोम एवं
निष्ठा ॥ १ ॥

(सत्पति : वर्यविद्या : इन्द्रा) इन्होंके बाल्मीय
पात्रस्त्री फौलुक परिवृक्ष वर्तेवक्ते इन्हें (महा शुभ्र)
बननी महिमाएँ और कुद रक्ते (वेवेभ्यः वरिव वर्यवा)
होनें किन्तु भैषज्य निर्माण की । (विवरतः सर्वे)
निरसाकृतके रूपमें (विद्या : वर्यवा) इनी किंवि (वस्त्र-
वानि उक्तप्रिया : गृष्णवित्) इध इन्हें उच्च रूपोंवासीविनि
गान करते हैं ॥ १ ॥

(सत्तासाह) साव रहकर बीठेगावे (बोरेपर्य) भेद
विवरी (सहेजा) अधृप्रव एव भैसावे (एव देवी
भयः ए सप्तपुर्ण) कश्यप भार दिल बक्के बीठे

सुसानात्यौ चतुर सूर्ये सप्तानेन्द्रः सप्तान पुरुषोद्धर्श गायु ।

हिरण्ययमत्मोर्णं सप्तान हुस्य दस्यून्प्रायुं वर्षीमाप्त्

॥ ९ ॥

इन्द्रं भोपैश्चिरसनोदहानि वनुस्पतिरसनोदुन्तरिष्ठम् ।

विभेदं वुलं दुनुदे विष्वाचोडयोमवहसिताभिक्तुनाम्

॥ १० ॥

शुनं हुवेम सुषवानुभिन्द्रमसिन्मरे नृतम् वास्त्रसाती ।

पूर्वन्तपुरुषमूर्तये सप्तसु भृत्यं पुत्राणि सुवितु वर्णानाम्

॥ ११ ॥ (१)

पाठे (इष्ट) इष्टके घाव (घोरत्पासः अनुमतिमित) उद्दितान शारीरो वाय वानन्द मनोर्थे हैं (या पूर्णिमी चतुर इमार्ग सप्तान) विष्वने पूर्णिमी भूरे इष्ट पुरुषोद्धर्श भूता है ॥ १ ॥

(इष्टः मध्यम् सप्तान) इष्टके घोरे भूतोर्थे हैं ॥ (चतुर सूर्ये सप्तान) और सूर्यो भूता है (पुरुषोद्धर्श गाय सप्तान) चतुर अज्ञ देवेष्ठी वावको भूता है (हिरण्य चतुर भोपैश्चिरसात्म) पुरुषोद्धर्श और भोगोद्धर्श भूता है, (दस्यून्प्रायु) विष्वने दस्यून्प्राये मारवर (माये वर्णं प्राप्त) वर्णे दस्यून्प्राये रक्षा द्यो है ॥ १ ॥

(इष्टः योपधीः भावानि वसनोद्) इष्टने ज्वेष विष्वो और दिवोंओं भूता (वसस्पतीन् भस्त्रतिष्ठ वस मोत्) वसस्पतीओं वार भस्त्रतिष्ठये भूता (वस्तुविष्वेद) इष्ट वायुक दुकुदे योद विष्वा (विष्वाचा पुनुदे) विष्व वस्त्रेष्वाम्बद्धे दूर विष्वा और (अथ भस्त्रित्वत्वा दमिता भस्त्रवत्) और वहके विरोधियोंक इष्टन करवेतामा है। यका है ॥ १ ॥

(शुर्मं मध्यवात्) वतम पुरुषाले वरवत् (मासेन् मरे वाचसाती) इष्ट पुरुषे योर्थे भूतोर्थे हिं (नृ वर्म) भूतोता वर्म (भूतवस्तु वर्म) वरवा पुरुषाले वर्मोर (सप्तसु ऊर्मय) पुरुषों एकार्ण (पुत्राणि प्रस्तु) इष्टोंओं मारवेष्वाके (वायामा वर्णित) वर्णोंओं वीलेष्वाके (इष्ट दुष्येम) इष्टके इष्ट पुरुषों ॥ १ ॥

इष्ट सूर्ये दस्यून्प्राये दुन देखिवे—

१ पूर्णिमद्— दुकुदे विष्वे वावेष्वाका दुकुदे पुरिवोपर अवान विष्वाच वामेष्वाका

२ वासं यक्षो— वावित्वत्— वाव वायुक दुकुदी वाहोंवे मा०

३ विद्वस्तु— वनवा वाव वरवेष्वाका

४ दामूर् विद्यप्रमात्— दामूरो वाव वरवेष्वाका

५

५ व्रह्म शूता— शावसे भैरव देवेष्वाका

६ तावा वातुपात्— भौतरसे वाव वसवान् चतुरवाका

७ भूरिदात्रा— चतुर वाव वेष्वाका

८ वृष्णे योद्दसी वापूपात्— दोतो भोक्तो देवसे वरवेष्वाका

९ तुवियं— चक्षवा

१० मध्या— दृष्टीवा

११ भस्त्रताप्य मूर्यम्— वसस्पते किमे वेष्वामूर्य वरवे वावा

१२ मानुषीयों सितीनां दैवीवा विद्यां पूषयावा—
मायी और दैवी प्रवालोक्य अर्पे तेता

१३ पार्वतीति— विष्वी वाति वक्ते वावके वामवेष्वाके वर्मती है

१४ वृत्रं विष्वेष्वात्— विष्वे इष्टये वैता वा

१५ वर्णतीति— मायिना प्रभमित्वात्— व्येष्ट इष्ट वायु वरवेष्वाके इष्टने वर्णदिवोंका वरामव दिवा ।

१६ वर्वे नीतिः— व्येष्ट इष्ट वायु वरेष्वाक्य इष्टहै ।

१७ व्यसं वहनत्— व्यक्तो मारा

१८ वावायु— प्रवर्णित वीवेष्वाका देवस्ती;

१९ इवर्या— प्रवर्णयुक्त

२० भस्त्रिये दृष्टिरिमा पृष्ठामा। विगाय— इष्ट वर्म करवेष्वाके अवानी दृष्टिकोंसे दृष्टिवेनाओंसे वीत दिवा ।

२१ भूदते रण्याय य्योति। भस्त्रित्व— वर्म वामवेष्वाके विष्वे प्रवर्ण वर्म दिवा ।

२२ इष्टः तुवा वर्द्धाया वाविवेष्वा— इष्ट वायुं वर्म वरवेष्वाक्य देवसे दृष्टिवेनमें वृष्ण वर्म ।

२३ भूत— तेता दृष्टा ।

२४ पुरुषियं मया वधाम— वर्म वीर्यं वर्म है ।

२५ इमा यिष्वः वसनेवत्— वे दृष्टिवान्वेत वर्णदेव ।

२६ भस्य मध्य इष्टस्य महाविं पुरुषिये भूहता

[सूक्त १२]

(अलिपि — १-३ वसिष्ठुः उ अदिः । देवता — इष्टः ।)

(क ७२३१२-३)

उद्गु प्रशार्णयेरव भवस्येन्द्रं समये महाया वसिष्ठ ।

आ यो विशान्ति शब्देता तुवानोपभ्रोता मु ईर्वतो वचासि ल ॥ १ ॥

अथामि धोष इन्द्र बुववामिरिक्षयन्तु मच्छुरुषो विशाखि ।

तुहि स्वमार्युषिक्तिव वरेषु वानीदहोस्यति एर्युमान् ल ॥ २ ॥

मुवे रथं गुवेषणं इरिम्यासुप्र ब्रह्मिषि सुशुप्तामस्यु ।

विवाचिष्ट स्य रोदसी माहुत्वेन्द्री बुवाप्रभुती ब्रह्मन्वान् ल ॥ ३ ॥

प्रथमस्ति — इस पटे इन्द्रके अनेक उक्तमोद्दी सब ढोक लगते थे ।

१७ ब्रुवतेन शृङ्खिनाम् सं पियेष— ब्रह्मव ब्रह्मिनोको पर्याय वाना ।

१८ अभिमृत्योऽवा: मायायि वस्त्रू— भक्तयक वस्त्रामें इन्द्रने अप्याचि सत्रुभीको पर्याय ।

१९ सत्पतिः वर्तीयिष्याः इन्द्र महा युधा देवेष्य वर्तिः वकार— अन्तिको वरह वानोंके इकु इन्द्रने नहि तुहुते देवोंके लिए घेतु रक्षा वाना ।

२० विषा कवय भवय तासि रक्षयेमि गुप्तस्ति— आनी कान इन्द्रेव इन फोक्ष्य इर्जन गाते हैं ।

२१ सत्त्वसाह— साप राहर विवर करतेवाना

२२ वरेष्य — भेद

२३ सत्त्वोदाह— स्व देवेवाना

२४ सत्त्ववाह— विवरी

२५ य यूपिष्ठं रुष रथं भस्मान्— विवरे विविधर भाव तुहुतामें विवर किया है ।

२६ भीरुप्योऽसः इर्गु अमुमवस्ति— इन्द्रियान काय इन्द्रे इर्गते वानीद नहाते हैं ।

२७ भस्माय पुक्षमोक्षसं गो दिवर्यं मोरो चसाम गो तुपार वन लोगा और गो इस्ते जाते ।

२८ इस्त्वा दत्ती भावें वर्जं प्रावत्— भवुते मार वर भाव रसेवी दत्ती थे ।

२९ वक्तं विमेद— वक्तव्य प्रावत विदा

३० विवाय तुहुते— विवर करतेवानोंहो इस किया ।

३१ अभिमृत्युनी विमिता वस्त्रवत्— यह विवेकीये इन्द्रियाना तुहुता है ।

४१ द्वृग्न मध्यवामं इर्गु ब्रेम— व्याव भवत्वत् इन्द्रसे इम तुहुते हैं ।

४२ अक्षिन् भरे बाह्यसातो चुतम— इव तुहुते वनवातिके वस्त्र वह भेद नहि है ।

४४ समाप्तं इतये वर्यं ग्रुववर्णं— इस्ते रक्षामें उपरी इन्द्रके भी वक्तव्य श्रवते हैं लहजे तुहुते हैं ।

४५ बृहायि इर्गत्त— दुर्वोद्दे मारेवाका

४६ भवतामी चिह्नित— दुर्वोद्दे वानीदेवाम वह नहीं है । वे इन्द्रके वाराणे युग इस शुक्ष्मे वर्ण स्त्रिये हैं ।

(सूक्त १२)

(अत्यधा) यद्यदी इत्यते (ब्रह्मायि इदं परते ३) स्त्रीये इत्यते, देव अनिः । (समये इर्गु महाय) तुहुते इन्द्रकी महिमाका वान कर (या द्यावता विश्वामि वात ताम) विवेद अन्ये इन्द्रे लव विश्वाये वैक्षणा है । (इन्द्रता में वचालि उपभ्रोता) मति इन्द्रेवाके भेरे इन्द्रोंको वह दुर्वोद्दे ॥ १ ॥

दे इन ! (वेष-आयि घोषा व्यायमि) देवेवी वाव अनुकूल इन्द्रेवाकी विवर हो तुहुते हैं (विवक्षि यह तुहुतवस्त्रं इर्गत्यात) विवेदी वैक्षणी दोहरी इन्द्रेवाके वर्ण प्रकृत हाते हैं । (अनेपु स्वं भावुः त इव विवित) मतुभायि वानी भावुभा बाहि गती वानवाना । (तामि वैदीयि इत) व पर (वस्माद भवति परि) इवते एह कर ॥ २ ॥

(यदेवर्यं इव इटिक्का तुहुते) गोवोंको तुहुतेवाके द्वे इन्द्रा वा लोगे मै वालात है । (ब्रह्मायि तुहुतायां उप वस्त्रु) इमरे लोग भवत वानेवाते इन्द्रके पाप पात्ते हैं । (स्वं महित्वा) वह इव अन्ये महित्वे (दोहरी विवायिष) तुहुता और सूक्ष्मीका वाना है । (इस्त्रे)

आर्यमितिप्यु स्तुयोऽु न गावो न वृष्ट्वा वृत्तिरारस्त इत्र ।
 पाहि वायुन नियुतो नो अच्छा त्वं हि वृमिर्दियेसे वि वाज्ञान् ॥ ४ ॥
 ते स्वा मदा इन्द्र मादयन्तु श्रमिणे तुविराघस वृत्तिरे ।
 एको देवता दयेम् हि मरीनस्मिन्दूर सर्वने मादयस्व ॥ ५ ॥
 एवेदिन्दू वृष्टिं वज्रभादु वसिष्ठासो अम्यर्चिन्त्यकः ।
 स ने स्तुतो वीरवदातु गोमध्य पात स्वस्तिमिः मदा नः ॥ ६ ॥
 शुज्जीवी वृश्ची वृपुमस्तुरापाद्रूप्मी राजा वृथा सोमपावा ।
 युक्त्वा इरिष्यामुप यासुदुर्बलम्भेदिने सर्वने मत्सुदिन्दूः ॥ ७ ॥ (५०)

वृष्टिर्थ मप्रती जगत्वाद्) इन्द्रने वृत्तिरे अशालम रीतिरे
 पापह ॥ ३ ॥
 (स्तुयः वायुः न) वैष्णोऽसे समल (वापः पियतुः
 वित्) वज्रवाह उप वृप है । दे इत् । (ते जरितारा
 न्तन वस्तु) तेरी स्तुते वरेवाक सब वृद्ध वात होते
 है । (वा वज्राता वियुत वा वापहि) द इमो वाप वीपा
 जोरीवे वा वावो (वायुः न) वैष्णा वायु वाता है । (इव
 हि वापिं वाज्ञान् विद्यपत) द अनेक वृद्धुक र्मोरि
 वावो और वृद्धेवे बोटाहा है ॥ ४ ॥

दे इत् । (ते मदा) ये मैंदृशमक सोपरत (जरित
 वृष्टिराघसे श्रमिण्य तथा) स्तोताके विवे पर्वत वन देने
 वाम विश्व विज्ञानं वृद्ध (मादयस्तु) मानवित होते ।
 द (एक) वज्रेवा ही (वेदभा) वैष्णोर्वे (मत्सुन्
 दयस्त हि) वामोपर दवा बोटा है । द इत् । (विष्णिन्
 सर्वने मादयस्त) द वीमपावामी भास्तित हो ॥ ५ ॥

(वज्रवादु वृष्टिप्य इत्यै) वज्र वज्रुत वारन वरेवाके
 वज्रान वज्री (वसिष्ठास एव इत् भक्ते) विभेद इत
 एव स्तोतोके (मादयर्चिति) एक बोटहै । (ते स्तुत
 सः) इमेव रुद्गे दिवा वदा वह इत् (वीरवत् गोमात्
 वायु) वीर वृश्ची वृह गीरोर्वे वाय इमेवेने ।
 (वृप सदा व वृष्टिर्थि पात) दुम वदा इमरी
 वस्तावेक वाव इत् ॥ ६ ॥

(वृश्चीवी) दोमपाव वरेवाका (वस्ती) वह वाप
 वरेवाक (वृपम) वृहव वस्ताव वरेवाक (तुरापाद्)
 सरामे वृश्चीवी इमेवात्प (वृप्मी) वरेवाक (राजा)
 वापव (वृपदा) वृपत्रे मप्रतीवाका (सोमपावा) वाम
 वरेवाक (इरिष्यापी वृप्मवा) दे वृद्धोर्वे वृद्धर

(मर्वाङ वप वास्तु) इमो वाप भावे (इन्द्रः माद्य
 विवे सवन मत्सत्) इत् मत्सुदिनके इत्यावके सम
 भास्तित हा वाव ॥ ७ ॥

इत् स्तुते वृद्धे वृक्षम वे व्ये है—
 र इन्द्र समर्थे महाय— संप्राप्तमें इत्यावी विद्यमा वावेः ।
 श यः वृष्टिर्था विद्यामि भास्तितात्— वह वपते वज्रे
 विद्यवे वैष्णवा है ।
 द इत्यतः मे वृष्टिर्थि उपधेता— शर्वता वरेवाके
 वेरा वापण वह सुनता है ।

४ हे इन्द्र ! देववामि चोदा भयामि— दे इत् । द
 वैष्णव वन्दु है देवा वाप मुनते है ।

५ विष्णिवि शुरुधः पद् इत्यस्त— विद्य वैवेने
 वातोरी व वीपे वृद्धो विद्यव वरेवाके वृद्ध होते है ।

६ वायपत वर्त्य हरिष्यापी युक्ते— वैष्णोर्वे इमेवेने
 वरेवो मै वा वा वाव वावता है ।

७ वृष्टिर्थि लुगुपाप वप वस्तु— स्वात्र वृद्ध
 वरेवाक्षेषे वाप पहुँचे है ।

८ स्त्र महिष्या रोदसा वि विष्णिप— वह वपते
 मादयव दोनो लोरीरो भरता है ।

९ इन्द्रः वृष्टिर्थि भवती जगत्वाद्— इत् भवतिम
 रीतिरे वृश्चीवी मारता है ।

१० सः वृद्ध वियुतु वापादि— इमो वाप वैष्णोर्वे
 वावा ।

११ इव द्वि वीमि वरेवाक विद्यते— द अने
 वृद्धुक वैवेने है वह देता है ।

१२ वृप्मी— वरेवाक

१३ तुविराधा— वृत्त वस्तावा

[सूक् १३]

(लघिः — १ वामदेवः २ गोतमः ३ कुरुतः ४ विश्वामित्रः ।

देवता — १ इश्वरायैहस्तपती २ मरुतः ३-४ अग्निः ।)

इन्द्रेषु सोमे पितृतं इहस्तेऽभिन्युषे मैन्दसाना भूपञ्चम् ।

मा वौ विश्वतिविन्दिवः स्वासुषोऽस्मे रुपि सर्वेषीर् नि यच्छतम् ॥ १ ॥

मा वौ वहन्तु सप्तयो रथुपद्यो रथुपत्स्वानुः प्र विंगात् ब्राह्मिः ।

सीदुता इर्हितु वृः सदस्कृत मादयेष्वं मरुतः मन्त्रो वृष्टेः ॥ २ ॥

इम स्तोममृद्दैते ज्ञातवेदसे रथमिषु स महेमा मनीपयो ।

भूद्रा हि नुः प्रमतिरस सुस्थिरे सुरुपे मा रिपामा वृथ तव ॥ ३ ॥

ऐभिरप्ये पुरये पाद्यावाह नानारुप वा विमवो यथाः ।

पत्नीपतिरस्तु श्रीवृ देवानंतुप्रभमा वृह मादयेष्व ॥ ४ ॥ (५)

॥ इति प्रथमोऽनुष्ठानः ॥ ५ ॥

१४ देवता एका मरुत् वर्षसे — देवोंमे अधेष्ठा त्
मात्रवेदर वा करता है ।

१५ मवा त्वा मादयम्भु—वे दीमस्तुषे वाक्यद दर्शे ।

१६ हृष्टि विश्व चतुर्वे मादयस — हृष्टि । इ
प्रथममे भावनम् वता ।

१७ वामदाहु भूपयः — वज्रे उमान् अठेन वाह
वता और वस्त्रान् ।

१८ स्तः वृहितवत् गोतम् घातु — वह इसे वृह
उत्रों और दोसों साथ इवेवाम यम देते ।

१९ वृहिती— भोमरु पीतेवाम

२० यज्ञी— वज्र वर्तेवामा

२१ तुरायाह— तवरैषे चतुर्भु परामत कर्तेवाम

२२ रात्रा— यात्रक

२३ तुरवा— इत्ये मार्तेवामा

२४ सोमवामा— भोमरु पीतेवामा

२५ इरित्या पुक्षवा— वृह गोदोंके वीक्षण ।

(सूक् १३)

हे परस्ते ! त और इव (मम्भसाना भूपञ्चम्)
वाक्य मनाते हुए, वता तीका निराप देवेवाह तुम दोनों
(भूमिम् यहे) इव वहमे (सोमे पितृत) भोमरु
दीक्षो । (सु-मामुवा इम्बवा) उत्तम दीक्षिते यिष्व हुए मे
दीमरु (वृह वा विश्वानु) द्वाहारे वान्द्र वता । (मम्भे

सर्वेषीर् रथिं यि पञ्चस्तं) इमसे वृह तुमीं बोडे उप
वत है वौ ॥ १ ॥ (क. ४५ ॥)

(रुदु व्यवहा सत्या वा वा वहन्तु) सीम वन्मे
वाते देवे वाप्येह इव के अन्मे । (रुदु-प्रथमवा वाहुपि
प्र विंगात) सुशब्देषे सीत्र उठते हुए वार्गे व्यो । (वर्ती
सीदुत) भावनपर देखो (वा तद सह इति) इमारे
विष विस्तुत त्वान चिना है । हे मलो ! (भव्या भव्यसा
मादयस्व) महु इसे भावनित हो जाओ ॥ २ ॥ (क. ४५ ॥)

(रथं इव) एवे उठाते हैं उप तद (इम स्तामे)
इव स्तीक्ष्ये (वृहोंसे सातमेवासे) वृय वातवेद वर्म
क विषे (मात्रीपया सं मोहम) तुदिसे उठाते हैं । (मम्भ
संस्कृत) इवहे उप वृहोंसे (तः मत्रा प्रमति) इवही
भव्यालक्षणिर्विद्विदि विद्वित होती है । हे व्यो ! (तद सम्बन्धे
वयं मा रिवाम) लौ मित्रवायें इम वाहि म बहुमे ॥ ३ ॥

हे व्यो ! (विषि सर्वं भव्याव वा याहि) इव
देवोंसे उप एक लक्ष वृहवर देवहर वा । अत्ता (मात्रा रथं
वा) अनेक लोकर विठ्ठ्यवर के ला । (हि वामा विमवो)
स्तीक्ष्यि वाहोंके देवे वृहवंत्र हैं । (पत्नीपतित) लौ
विषि उप (विंगात भविन् वा वृवाम) लौव और दीक्ष
दीक्षिते (वर्तु-स्वर्व वा वह) उन्होंने वातवाहिकि

[सूक्त १४]

(प्रथिः — १-४ सीमरिः । देवता — इम्नः ।)

पृथम् त्वामैषूर्यं स्युर न कश्चिद्ग्रन्तोऽवृत्सर्वः । वर्णे चिरं हवामहे ॥ १ ॥

उर्वं स्त्रा कर्मस्तुये स नो मुषोऽग्रधकाम् यो षुषद् ।

त्वामिद्यैश्चित्वारे षवुमहे ससाय इन्द्र सानुसिम् ॥ २ ॥

यो ने इदमिदं पुरा प्र वस्त्रं आनिनायु उम्भु च स्तुपे । ससाय इन्द्रमूर्ये ॥ ३ ॥

हर्यंशं सत्यति चर्यणीसह स हि प्ला यो अमन्दत् ।

आ तु नुः स वेयति गण्पुमञ्च्ये स्त्रोदृम्यो मधरा श्रुतम् ॥ ४ ॥ (५१)

भगवृष्ट रथस्त वहा के भा भीर (मात्रप्रस्त्र) उपके प्रस्त्र

कर ॥ ४ ॥

(अ ४११)

इसमें इन्द्र वृहस्तिं मधरा भीर भगवत्प्रस्त्र वर्तम है । इनके
प्राप्त भैर हैं—

१ मन्दसाही— भानमित्र रथोत्तमे

२ वृष्टप्रस्त्र— वर्ण वर्णोत्तमा वर्ण वर्णने पाप रथोत्तमे ।

३ सर्वदीर्घ रथि मि वर्षाहन— वीर पुत्रोंके दान रहने
पापा बन जो । उत्तरीन विसुके वर्ण हैं ऐसा जन चाहिये ।
पुरीन बन जही चाहिये ।४ रघुप्रदः रघुप्रसामः सप्तपः— लोके वसनी
रोदनके चाहिये ।

५ मातृ-चेष्टा— वेद विचारं दुप, इत्यप्रमाणक

६ मध्य संसद् नः मद्रा प्रमतिः— इष्टके वाप इह
भैर वर्णवाप वर्णोत्तमी तुष्टि द्वारा हारी है ।७ तद सप्तये मा रियाम— देही विकल्पमें हमें इनि म
पूर्वे ।८ पर्मि। सर्वय वा नामार्थं वा याहि— इन
देहोंके वाप एक रथमें वा नामा रथीमें ठिक्कर भावा । रथमें
ठिक्कर देव भाव है । अभिके वाप देव भाव है ।९ वस्त्रा विमय— वेतो गामर्याद है देवरकान् है
भैरवी है ।१० परमीयत विद्युते त्री॒ च देवान् भग्नप्रये
वा वह— वर्णोंके गवेत् ११ रथोत्तमे भावा । उपके भो
व्य चाहिये वह ही ।११ मात्रप्रस्त्र— जनोः भानमेत्त रथ । उप भान-
प्रस्त्र है ।

१२ यदो प्रथम भनुयाक समाप्तः ॥

(सूक्त १४)

१ (अ-पूर्यं) अर्पैन्दनः । (काशित् स्यूरं स भरणः)
देह विवेद भग भावने पाप न रथेनेके परंतु (भगवत्प्रस्त्र)
भवती मुषका वाहनेकाहे (वर्ण) इम (विचारं स्त्री) भानप्र
मय तुष्टि (वापे व हवामहे) तुष्टमें सापार्य तुलाते
हैं ॥ १ ॥ (अ ४११)(कम्भम् ऋतये त्वा) तुष्टके वर्णमें रथाके विवेद तुष्टमें
तुष्टकते हैं । (सः यः) वह द (तुष्टा) रथम् (इमः) वर्ण
वीर (तुष्टत) तुष्टवा परावत् वर्णेका सापार्य वाप वर्ण
वर्ण (त रथ वाक्याम) इमारे गमीर जा । (त्वा इत्
हि विचारं वज्रमहे) तुष्टं ही रथक वर्णे इम स्त्रीप्र
वर्ण है । देव इत् । (ससायः सामसि) उप भावी दृष्ट
वहे दृष्टीके इम भावा रथक वर्ण है ॥ २ ॥ (अ ४११)(यः मा इदं इदं वस्त्रः) विस्त्रे विवे पाप वा इम
वर्णवा वन (पुरा म भानिनाय) वर्णेके भावा है
(ससायः) विस्त्रो । (त इदं त) उपी इन्द्रधी (यः
कर्तये स्तुपे) दृष्टारी रथाके विवेद तुष्टि वर्णा है ॥ ३ ॥
(अ ४११)(इर्यंभं) भाल वर्णोत्तमे (सत्यति) वर्णोत्तमा पापम
वर्णेवाल (चर्यणी-सह) एतु विवेद भावेनेके इन्द्री
मैं तुष्टि करता है । (सः दि यः वसम्भृत जा) वही ही वे
वर्णवा भवता है । (स मध्या तु) वही वर्णवान् इत्
(त सोदृष्टम्) इम स्त्रातार्देवो । (गण्प अर्पयं दान
वर्णति) वही वीके भीर वे जोड़ मध्य भास्तर है । देव ॥

(अ ४११)

१३ भूष्मै वीर इतके जा तुष्ट वर्ण है वे भैर है—

[सूक्त १५]

(अधिः — १-६ गीतमः । वेष्टना — इन्द्रः ।)
(अ १५३१-२)

प्र महिष्ठाय मृते शुद्धये सुस्पृष्ट्याय तवसे मृति भेरे ।
अपामैव प्रवृणे यस्य दृष्टेरं राघो विश्वायु शवसु अपावृतम् ॥ १ ॥
अधे ते विश्वमनु हासपुष्टेय आपो निष्ठेव सवेना हृष्ट्येतः ।
यस्येते न समशीत हर्युत इन्द्रस्य वस्त्रः अथिता हिरण्यप्यः ॥ २ ॥
असे भीमायु नमस्तु समन्वर उपये न द्वंस्तु आ भरा पनीपसे ।
यस्य घाम् अवसे नामेन्द्रिय व्योतिरक्तारि हृतिव नायसे ॥ ३ ॥
इमे ते इन्द्रे ते वृय पुरुषात् ये स्वारभ्यु चरीमसि प्रभूतसो ।
नुहि स्वदुन्यो गिरुः सघरस्थोणीरिव प्रविं नो हर्ये सहचैः ॥ ४ ॥

- १ अपृष्ट्ये— इसे यामने पृष्ठा और नहीं हुआ ।
२ वामे विश्व— तुदमे आवर्दकाक वीरता वा विकाता है ।
३ मुवा— सदा तद्व व्यु वही होनपर मी वक्त देखा
कार्य करेनाम ।
४ रमः— वर्ण शूलीर
५ शूलत— शूलका परामर्श करेनामा परेनाम ।
६ कर्मम् ऊतय— प्रवेष्टे पुरुषे वर्णमें रक्षा करेनामा
७ अविता— दंडवत् करेनामा
८ सामसि— निषेव इति देनेनामा

९ पा न हर्य वस्य मालिन्याय— जो इसरे पाय इस
परहम चन बाया है । वस्य चन वह है कि आ मालिनी
बघेनाम है ।

१० हर्यन्ता— लास वैहीकाता
११ सत्यपतिः— सत्योदा रक्षक
१२ वर्णप्यी सहा— याकु वीर मालवीय परामर्श
करेनामा

१३ मयवा गम्य भर्वये धार्त वयति— इति वेष्टों
बीजों भोर वैरोंके यदृत दता है ।

(सूक्त १५)

(मंडिष्ठाय) वो महान् (पृष्ठे) तस्ये भेद (वृह
त्रये) वो वनवाकं (सत्यसृष्ट्याय) तसे वक्तावे
(तवसे) वामपर्वताली इन्द्रे विने (माति प्र मरे) स्तोत्र
पाण है । (यस द्वयेर् राघा) विषय असमीक चर
दान (प्रवेषे अप्य इव) वदर्त्तने जनके पूरके व्याप

(विद्व-मायु) चर मालवोंके लिये भोर (शवसे)
स्तुति विने (भवावृत) प्रविद् है ॥ १ ॥

(अथ विश्वे ते इपये ह मनु असत) अथ एव
विष तरी हर्ये—रे वक्त के लिये व्युष्ट रहता है । (माया
तिमाहा इव) वक्तप्रदद वीकार्द्धे भोर चत है वह दद्य
(हृष्ट्येत शवता) हृतिरक्तोऽहम लैते वाप बात ।
(इम्ब्रहस्य हिरण्यप्यः हर्यतः वक्ता) इत्यम् व्युष्ट्यम्
तेवली कल (पवते वल् स समशीत) पर्वतर ये
भेदमें ही नहीं प्रविति वापा पर्वत वा (अथिता) स्वर्ये
पूर्व करेनै समर्थ इता है ॥ २ ॥

(अथै भीमाय पवीत्यसे) इति मवकर वक्ता सुलिये
भोव्य इसके लिये (वक्तः न) उक्तों समाव प्रविदित
(नमसा शूले व्यापरे से भा भर) वामवार्तौं
द्वय व्यापरे हसि लालक मर है । (वस्य आम लाम अवसे)
विषय स्वात और आम वक्तों विने वक्ता (हृष्ट्येत्यप्येति
व्यक्तिरि) हृतिरक्ते व्येति प्रवदहे लिये वक्तै परी है
(हृतिर न अवसे) वेते लैते वक्तिके लिये है ॥ ३ ॥

४ (पुरुषुत इन्द्र) वृहों हाया पक्षेष्ट इति । दे
(प्रभूतसा) प्रभूत वनवाते । (इमे ते ले वक्त्य) दे ते
इमे ले ही है । (ये वक्ता आवभ्य भरामसि) जो लेप
वामान भर विनहे है । है (गिर्वापः) सुतिके स्वामिर् ।
(त्वद् भाष्य) लैते विषय वीर द्वया (गिराः सहि
सप्तव्) इमारी सुतिसेवे स्वीकार कर वही उक्ता ।
(सोवती इव) वक्तव्याकावेषा रामा (वक्तः तद् वक्ता
प्रति द्वय) वेता इसरे इति वक्तव्य स्वीकार कर ॥ ४ ॥

मूरि त इन्द्र वीर्यि । तव सास्यस्य स्तोतुर्मैषबुन्कामुमा पृण ।

अनु ते द्यौर्षृहती वीर्यि मम इप च ते पृयिष्ठी नैम ओब्से

॥ ५ ॥

स्वं तमिन्द्रु पर्वत मुहामुरु वज्रेण वज्रिन्यवृशुष्वकर्तिष ।

अवासृज्ञो निवृग्नाः सर्वाश अपः सुत्रा विश्वे दधिये क्लेष्ट सहः

॥ ६ ॥ (७४)

हे इन्द्र (ते वीर्यं मूरि) देह पात्रम् वदा है । (तव स्मिति) इम भी भेदे ही है । ह (भवतम्) वनवाद् इन्द्र ! (भवत्य स्तोत्रुः कामं भा पृण) इस श्लोकाती इन्द्रा एवं इर । (मृदुहती द्यो ते वीर्यं भनु) वीर्यं भासे पात्रम् वदा अनुवान भराती है । (इर्यं च वृष्टिष्ठी) और वह विष्ठी भी (त मात्राम् भेदे) लेही उक्तिके साथेने मुर्ख है ॥ ५ ॥

हे (वज्रिन् इन्द्र) वनवादी इन्द्र । (तव सं महा इरं पवत) तुमे वह महान् विवाह वर्षान्ते—मेष्टे— (वज्रय पवत्ता वज्रिन्यिष) वसु द्वारे द्वारे कर जाते । और (भपः) अदीये भो (विष्ठुताः) इके वशाह से उत्तम् (सरवा भवाशुमा) वामेषे भिये छोर दिया । (विष्व केषम् सहा लत्रा दधिये) शैर्ल उक्तिका तु वाह वाह वाह इत्तम् है ॥ ६ ॥

इष सूख्ये भा भीरुके गुप वतावे हे ते ते है—

१ मदिष्ठुः— महाय् भेद

२ वृहद्— वदा

३ वृद्धद्यिः— वदुत च विक्तेवाह है ।

४ सरय तुमा— तवा वस विक्तेवे पद दे भरने रक्षण भा नि त्रेते भरन कर्त्तव्य इत्तम् ही इत्ता है ।

५ तवत्म— सातिवाद्

६ यस्य तुर्यं राया— विष्व तुर्यं वरम् वावर्यं ते विदि भास वलेष वावर्यं विष्वे भवत् है ।

७ विष्व भायु— तव वामेषे दितोऽस्मि भा वार्य वता है

८ राया— वामेषे वत

९ ते इष्वे विष्व भवु वसत् द भेदे इष्व वामेषे भिये वत वता इत्तम् है ।

१० (भवत्य वस्य वामा ।)

१० इन्द्रस्य हिरण्ययः इर्यतः वज्रः भविता—
इन्द्राव तवती वज्र वस्या पृष्ठं इर वस्यत्वा है ।

११ भीमा— भवेत्

१२ यस्य भाव नाम इग्निर्यं व्योति । भवत्से
भक्तादि— विष्व भाव और नाम इन्द्रके वामर्यं भी ज्ञोति
वदेषे भिये भवत्त वता है ।

१३ वुलपुता— वहुतो वारा प्रवृत्तिः

१४ प्रभू-सद्गु— वहुत वनवाद्

१५ वर्यं त्वा भारत्य वरामसि— इम भेद भाजात्व
वदेषे है ।

१६ नदि त्वद्वम्यः गिरा लघवत— भेदे विदाय इत्ता
तेहै इमारी रुद्धिर्योग्य त्वीकर कर नहीं वता ।

१७ गिर्यणा— प्रवृत्त वैत्तम् ।

१८ हे इन्द्र ! त वीर्यं मूरि— इ इन्द्र । त्वा वामव
वदा है ।

१९ तव स्मिति— इम भेदे है ।

२० हे वयवन् ! स्तोत्रुः कामं भा पृण— इ इन्द्र ।
स्तोत्रार्थी इत्ता वृक्ष वत ।

२१ वृहती द्योः त वीर्यं भनु— वद वही दी भेदे
वामर्यं भा वता वर्ती है ।

२२ इष पृयिष्ठी त मात्राम् भेदे— वर इषिषी ते
वामर्यं भा वामेने वतनी है ।

२३ हे वज्रिन् ! इन्द्र ! इष त महा इरं पवत्त
वामव पवत्ता वज्रिन्यिष— इ वनवादी इन्द्र । त्वे इव
वेदे प्रहृष्ट वस्य-भेदेषे विष्वे तुर्य तुर्य दिय ।

२४ विष्वे भेदेष्वे सदा लत्रा दधिये— तव वत
वामर्यं तु वत वाम वामेवे भवत्व वता है ।

[सूक् १६]

(क्रान्ति — १ १३ वर्षास्य । वेष्टना — एहस्यति ।)
(अ १०५८-१-१३)

उद्ग्रुतो न वयो रथमाणा वावदता अभियंसेऽ घोपाः ।
गिरिम्रिका नोर्मया मदन्तो वृहस्पतिमृष्युर्का भनावन्
स गामिराङ्गिर्सो नर्थमाणो भग्न त्रुवेद्युमर्य निनाय ।
बने पित्रा न दम्पती अनकि वृहस्पते वाचयाश्वरिवाजी
साम्यां भतिभिनीरिपिरा स्पाहा ॥ सुषणो अनवृथरूपाः ।
वृहस्पतिः पर्वतम्यो वितृष्णी निर्गा ऊप्रे यद्विव द्विविम्यः
आप्नोपाय मधुन मृतस्य योनिमवस्थिपश्चक्त उरकामिव घोः ।
वृहस्पतिरुद्गुरभस्मनो गा भूम्या उद्ग्रेऽ वि त्वचे विमेद
अप व्यातिपा वमो अन्तरिक्षादुद्रुः शीपोलमिव वात आवत् ।
मृहस्पतिरनुमृष्या वृलसाप्रमिव वात आ चक्र आ गा ।
मृदा वृलस्य पीयन्ते चमु मेद्वृहस्पतिरपितपोभिरुक्तः ।
दुर्दिन विहा परिविष्टमादुद्गाविनिर्वीरक्षणाम् ॥ ६ ॥

(सूक् १३)

(उद्ग्रुतः वय न) वर्षमें लेखनामे परिवोची तदा
(रथमाणा) अपरी रथा वर्ते हृष (वावदतः अभि
यस्य घोपा हृष) पर्वतेवत्त भौतिको वर्षानोंके समाव और
(गिरि भूम्यः मदन्तः नर्मयः न) पर्वतेवत्ते पिरेवत्तामे
जाननेवत्त वर्षानामी समाव (अर्हा ॥ वृहस्पति अभि
यस्यावद्) इमों सोन वृहस्पतिर्स्तुति वर्तते ॥ १ ॥

(मौगिरसः गोभिः सं लसामाणः) विग्रह विचारमें
जाननेवत्त भौतिको तदा इव्य है । (मागः इव अप्यमय
हृष मिवाय) मध्ये— लेपवर्णान्ते तमान वर्द्यमाणोः— भेद
मनवान्ते इमों पास काण है । (जने विषः न) जननेवत्त
इमें मित्री तदा (दंपती भवति) वति पत्नी समाव
प्रधानते है । (मात्रो भासून् हृष) कुर्मो शोषे समान
हे वृहस्पते ॥ (वाचय) इमे वस्तव वाता ॥ २ ॥

(सापु—मार्पी) उभ्योंके पास इत्येवाची (अभि
यिनी) भतिविह वास के जाने वास (इपिरा) हृष
ही वय दनवासी (स्पाहा) हृष करो लोग (सुदर्पा)
हृषम (वर्षामी) अववृथक्षया । अभियनीव वृत्त वसापापी

(गा: पर्वतेवत्त वितृष्णे) नोबोधो पर्वतेवत्त अवर (विं
कर्ते) वेकर्ते है (द्विविम्यः पव इव) वेडिवेसे अवर
वी के देशा फैलते है ॥ ३ ॥

(अर्होऽक्षय योनि मधुमा अवस्थिपद्) दूर
दैशा वहके स्वानके मधुमे मरता है, (धोः वस्का हृष)
मुकामे वलवाको नीते उड़ता है दैशा वृहस्पति (वामु
पापन) दीक्षा है, (वृहस्पति : भवद्याः गा : उद्ग्रुतः)
वृहस्पति वृहस्पते भौतिको अवर बताता है (भूम्यः वर्ष
वृहा हृष विमेद) भूमिकी लभाको बक्क यमान दीक्षा है
[विसुद्धे पर्वति वात वस्तव होता है ।] ॥ ४ ॥

(क्षेत्रिता तम अस्त्रिक्षात् अप भावत्)
प्रदान्ते अवभ्रको अन्तरिक्षे इवाता है (वस्तः वृहा
शीपांशु हृष) वातु दैशा पवीसे दीक्षा देव इवाता है (पृह
स्पति : भवद्याः वस्तव हृष गा : आ अवर) वेदा वृहस्पति
विचत वर्ते वक्ती यैवोंके अवर वेकाता है (वातः अभि
हृष) वातु दैशा वेषमे लेकाता है ॥ ५ ॥

(पश्च) वय (अभियतपोभि भौतोः) भौतिके वास
वात अवेवाके लज्जासे भौतोंसे (पीपतु : वस्तव हृष)

पृहस्पतिरभूत हि स्यदासा नामे स्वरीणा सदने गुहा यत् ।

आश्वेष मित्रा शंकुलस्य गर्भमुद्भियाः पर्वतस्य तमनावत्
अभापिनद् मधु पर्यपद्मनमस्य न दीन उदनि खियन्तरंप् ।

॥ ७ ॥

निष्टमार घमसं न वृषाहृस्यातिर्विरुद्येणा विहस्ये

॥ ८ ॥

सोपामैविन्दुत्स स्त्रैः सा अग्निं सो अर्क्षु पि वैषापे तमोसि ।

पृहस्पतिर्गोविपुषो तुलस्य निर्मातान् न पर्वेणो भग्मार

॥ ९ ॥

विमेष पुर्णा मुपिता वनानि वृहस्पतिनाहपयद्वालो गाः ।

अनानक्षत्यमेपुनश्चकार वायुष्योमासा मिथु तुष्वातः

॥ १० ॥

अग्नि इयाव न कुवनेमिरधु नधत्रेमिः पित्रो धामपिंश्चन् ।

राय्या तमो अर्द्धचूर्णोतिरुन्वस्यातिर्मिनदद्रि विद्वाः

॥ ११ ॥

पृहस्पतिर्कर्म नमो अभियाय यः पूर्णीरन्वानोनवीति ।

पृहस्पतिः स हि गोभिः सो भैरविः स नृमिनो वयो घात् ॥ १२ ॥ (३)

मेत्) वडेशाके वडके वडबो वौष रिवा तव (वदिः परिविष्टे विद्वा आवृत्) वसोषे ववापे तु ए भवत्ये विहा वार्ता है वव तव (उत्तिवाणो मित्री । आविः भद्रुपोत्) यौवोके विविवो (जो वसके वार्तान जे उनको एव जोको है इतार्थ) प्रवट रिवा ॥ ६ ॥

(पृहस्पति वासा स्वरीणा) पृहस्पतिवे वव इन इत्यत्र वर्तनेवानी गांगोत्रा (भाम भवत) भाम-पत्ता-वव रिवा (यत् सदने गुहा) जो गुह उत्तनमे वा (पर्वतस्य रमसा रविधा तव आवृत्) भर्तवी गुहमेवे वव यौवोषे गार विद्वान वेता (शकुलस्य माणवा मित्रा गमे) पविष्टे भवत्येवे तद्वक्त ववा जावे बाहर जाता है ॥ ७ ॥

(भवता विनदा मधु) भवत्य वडे तु ए मधुष्ये-विडेम वद वौषे- (पर्यपद्मत्) पृहस्पतिवे वैदा रंवा (वैषो लद्यमि तिव्यत्यं मरस्य न) जोडे वस्ये रहेवोके मरस्यो फैडे रेकते है । (वृहस्पति : विरेवेष विहृत्य) पृहस्पतिवे विषेष वाम वर्तनेवामे वत्तव- वव विको- लोकवर (वृषाहृत् भमस्य न) रुष्ये वमष वनते है वव तव वव विषेषे (तत् विः जग्मार) वव युक्तो-यौवोदो-बाहर विद्वान जाता ॥ ८ ॥

(स वर्या अविनद्) वव पृहस्पतिवे ववत्ये प्रव रिवा (सः सः) उसे प्रावडो जोर (सः अग्निः)

ठवते जमिष्ये प्राप रिवा पवात् (सः अक्षेष तमासि विव ववापे) उपने दूर्षेष वज्रेवो विवष रिवा । (वृष्ट स्पति :) पृहस्पतिवे (वृष्टस्य गोपयुवा) वडे योग्य वायु वर्तनेवामे वर्तवे (पर्वताः स) बोर्वेषे ववा मिथु छोडे है रेषे (भवान निर्माता) वर्तवे विद्वान रिवा [भवति वसके वाता ।] ॥ ९ ॥

(दिमा इय) दिमप्रथमे (पर्वत मुपिता ववामि) वाम विर प्ये इय वार्त वन [तु वी वीवो है वव तव] (पृहस्पतिवा) पृहस्पतिवे वीनी वर्ष (गा वडः कृष यत्) यौवोके विव वव त वी हुवा । (भवानुवृत्य मधुः आवृत्) विद्व वेष अवृत्य वव वर वड जो विव होवे वाक वव्ये देवा वव कर्म हुवा । (यत् सुख्यामासत विद्या उत्तवाता ।) सर्व भौर भव विवाक वव वावात वव्याप करते है [देवा वव कर्म हुवा है ।] ॥ १० ॥

(कृष्णमिः द्याव आव आव न) भामूनोवे व्याम पवेवो उपाते है रेषे (वितरः मस्वेभिः यो भविष्यत्वान्) वितरी वकजोषे वुषेको ववावा । (राय्या तम भव द्युषु) राय्यो भवत्याव वार (भवत् यजोत्ति) विववे प्रवद्यतो ववा । (पृहस्पति : भविष्यति भविष्यति) पृहस्पतिवे पर्वतवो वैषा जेव (गा विद्वृ) गोई प्राप वी ॥ ११ ॥

(इय भविष्यताय वमः भवत्य) वव इमने वेषो वौषे

वामे [वृहस्पति] के बिने नमस्कर भित्रा या पूर्णी
मन्त्रावोत्तमीति) जो पूर्खे नवम्बरमें लगेक रक्ता है
(स वृहस्पति) वह वृहस्पति (गोभिः सः वरदा)
बोलों और चौड़ी तका (सः वरिमिः सः नूभिः) वह
बीचुओं और लेताभोंक साथ (सः वयः घात्) इस दोष-
मात्रा है ॥ १२ ॥

इस सूक्ष्मे जो धीरताके पर्याप्त विवेद आवा है वे धीर
ताके कर्म वृद्धतिने बिले हैं। वह वृद्धति इमरुक समान ही
वन्धम प्रयोग करता है। इसके समान ही वहके पर्याप्त हैं
धीर जिसमें दंड रही औरोंको सूख करता है।

१ हे दृष्टस्ते ! वाहो भाश्यक् इव वाचय— दे
नप्रस्ते ! पुरुषे जीवेषी अह इमे कलान् पर ।

१ पर्वतेन्य गाः शुद्धस्पतिः नि। हये— पर्वतकी शुद्धस्ते
शुद्धस्पतिः शोषे शुद्धार्द्दे ।

४ साष्टपर्यः प्रतिधिनी इविरा। ज्ञाहीः सुषष्टपर्या
अवपद्धया— सउपर्योहे वाह रहे योग प्रतिधिके योग
इषाह सूष्टपर्य वर्षम् (योगकी सुर फलात्मा) ने गौण
भी । ऐ वस्त्रे सुष्टपर्य की उन्हें परदही पुछमें रखा था, परदधि
दृश्यतिमें दृश्यता ।

४ ब्रह्मस्थिति भवत्यमावा गाः इवारम्— प्राणस्थितिवै परम्परो द्वे गुरुमेष्टे पौरीं कृष्णाची ।

५ शहस्रांति अनुमत्य बद्धस्य गा। आ ज्ञाने—
शहस्रांति विचार ज्ञाने वक्तव्य नवीनतासे पौरीये बृहादा।

५ पूर्वस्थिति भग्निसेमि यर्हेः वस्त्रस्य पीपता
वाद्यु मंत्— पूर्वस्थिति भग्निके दमान भग्नोते वक्ते वाक्यात्
मेव किम् ।

७ दक्षिणां निधीः भासि अहोत्— पौरोऽनिधिये प्रस्तु चिना । यतीकौ बाहर निध्यना ।

८ पृहस्पतिः लाटीणां आसां सदने युहो पत्
लाम स्यां भवत्— पृहस्पतिः इतात् कर्त्तव्याम् वीक्षेष
स्याम वर्तमधी प्राप्तं है यह बात मिला।

९ गणिता पर्वतस्य दम्भा अग्न— दीर्घं पर्वतशो
पुराणे लवं बाहर आ पर्ये।

१० अद्या पिनर्द मधु पर्यपश्यत् बृहस्पति
विरेव विहाय तत् निः ज्ञामार— वासरे मधु वा

ऐ पुराने गीतों वैद है यह ब्रह्मलिंग देखा जिसके लक्ष्य वसेधारों
पाठों वस्त्रों वस्त्र यात्रों सोना और यौवनों का धार लिभाय।

११ शुहस्यतिः गोकपुषः। वस्त्रस्य मरुतान् पश्चिमा
नि दमार— शुहस्यतिमे गोकपुषस्ती एवं भजा विश्व
मिष्टकी लोर पर्व देहं दिवे।

१२ युहस्यतिना गाः वस्तः अहपयत्— पूरस्यैव
गीरोद्ये युना क्षिणा हस्ये वस्तम्भे वदा कुः युना ।

१३ मासानुहास्यं विपुलं वक्ष्यात् पात् सूर्यमासा
पिण्ड उद्देश्यात् ।— यदि इस्म बो वृत्तिर्थे दिव्य वन्दन
प्रेम अनुदर्शन कर गयी सुष्ठान त तोई दिव देखा कर वन्दन
वे दृष्टि वृत्ति वृद्धि और बन्दू वार्ताए वरते हैं ।

१४ दूरस्थिति वर्णित मिहन् या॥ विहर— ११
स्थितिमेव पर्वतये तोला भैरव योगे प्रस ची ।

१५ इह मन्त्रियाप समा अस्मी— वह इस बम्भे
स्थित पुरुषत्वात्मक वस्त्राकर चर्टे हैं।

१६ गुहापति पोक्ता अस्ते। दीरेमा पूमि का
यपो घात—गुहापति गैलो लैंगो वैरुत्रो जीर भेळ-
भोंगे पाव रुप्त नाव हो।

इस सूचीमें दूरसंचारिये वह प्रत्येकनाम रख्ये हैं जो देशा पर्याप्त है। यह दूरसंचारिये वह वर्तमान है, जिसे लोगोंका वे बहुतधे प्रयोग है और गोपीनाथोंको बुलवा करता है। ऐसे ही इनके कई व्यापक वेदान्तोंमें वर्णन है। दूरसंचारिये अधिक १३ वे वेदान्तमें वर्णन है। उनमें रामेश्वराका सून्दर देखा है। रिष्युष भी येहांके रहता है।

वह तथा ऐसे वर्णन के सूक्ष्म वाक्याघटिक वर्णन के माने जाते हैं। वह भेद है जिसका नाम है सूर्य विद्युत वोल्टेज है। उपर्युक्त पूर्ण में सूर्यविद्युत इयं गोली वर्तमान वर्णने विद्युत वेद चीज़ी है। वह धूमप्रसारणी जौली और शराब विद्युती है।

स इवा मर्विदृत् स इवा सः अस्मि स अर्केष
पश्चात्सिंहि विवाहे (पत्र १ — यद्य पूर्वपतिमे इन्द्र
एवा ववाह प्रथम अस्मि और पवाह शुर्व वाहा भार लभ
करेते तु चिना । इच्छ मंडेते रहा है विवाही कल्पेते
देवोत्तमिष्ठाणी विवाहा वा । शुर्व जलेते वह वह रामायण
पवा और भासी किरणे स्त्रेष्ठा विवाह करते रही ।

वह सूख तका ऐसे पर्याप्त वरमेहने लाय दूख ही जर्म
भरके पर्याप्त तरमहने थोरव है।

[सूक्त १७]

(क्रिया — १-१८ हृष्णः १२ परिचारा । वेष्टा — इन्द्रा ।)

(अ १०४४१-११)

अच्छा मृहर्द्रै मृतये स्वविदिः सुधीचीर्विश्वा उशुतीर्नपूत ।
 परि ज्वज्ञते जनयो यथा पति मयु न चुर्ष्यु मुषवान्मृतये
 न धी स्वदिगवं वेति मे मनुस्त्वे इक्कामै पुरुष विभय ।
 रामेष दस्म नि पुहाऽविं चूहिष्पमिन्सु सेमेचुपानेमस्तु ते
 विपूषदिन्द्रो भमित्तु शुधः स इत्रायो मुषवा वस्ते ईश्वरे ।
 उखेदिम प्रवृणे सुस सिंचनो वयो वर्षनितु वृपुमस्य द्विप्रिणः
 वयो न वृष्टि सुपलाशपासेदुन्त्सोमासु इन्द्रै मुनिनेषमूपदः ।
 ग्रेषुमनीकै शब्दांशा दविष्पुत्रिदित्स्वर्मनेवे व्योतिरायेम्
 कृत न स्मी यि विनोति देवन सुवर्णं यामुषवा वृष्टे जर्यन् ।
 न उच्चे अन्यो अनु शीर्षु शकुम पुरुणो भैषवुक्षोर नृतनः ॥ ५ ॥

(सूक्त १८)

(म मतयः) मेरी विष्पृष्ठ की हुई लुहिणा (इष्विद्
 सधीचीर्विश्वा) भावमानसे कुप लीयो (विश्वा । उशीती)
 एव वयता पुरुष (अच्छा इन्द्रै या मनुपूत) भर्ती तद्
 इष्टये जाता हाता है वे शुभियो (मध्याने ऊतये) वहो
 अनी इक्के विष्पृष्ठ गत वेदी बनी है (शुभम्पुत्र
 मय पति) वर्षण विष्पृष्ठ मानव पठेता (यथा वययः
 परि व्यप्त्यगते) वेदा ज्ञान भासिगत हाता है ॥ १ ॥

२ (पुरुषद्वात उक्ते इत्या विष्पृष्ठी हुति हो १ है एम
 एम । (म मम ग्राहिष्म) देवा नन रने पाव वार्द (म
 एव वयवेति) वातव हो १८ ता (व्येत्तु वामेगिभ्य)
 वे उक्त रामे अनी वामवा रक्षा है । हे (दस्म) एम
 १८ । (राजा इप वर्हिषि भाष्य विष्पृष्ठः) वामः
 वाम (प्रभाववर वठः) (गतिन लाम ते तु वय
 पामे व्यव्युत्तु) इत लाम ० तदा वाम पान हा १८ ॥

(वयता वत्तमूष्या) दुष्टि कृ भूष्या (इत्त्रा
 वित्तुर्तु) एव वत्तमूष्या वाम वर्षवा वर्षवा हा है । (मा
 र्तु वयवा वल राय इत्त्रा) वा॒१८ विष्पृष्ठ विष्पृ-

ष्ठ वयता आमी है । (इम सम मिष्पृष्ठ) वे उत्त
 वरिणा (प्रवृण) नोवर मानमे वहीं हु (तद्य वृपुमस्य
 वृपिष्पृष्ठ इत्तु) उत्त वयता व्यर वहीं वीरेषे (यथा
 वर्षनिति) विष्पृष्ठ वारीं है ॥ २ ॥

(सुपसादा पुक्ष यथा वासदम् न) वाम वत्तेवात
 इत्तप वृष्टि वटेहै इत वर्द (विदिनः व्यमूषदा
 नोवातः इत्त्रु) भानव वामेवाते वृष्टेव एव वयव
 इत्ता भावव वत्ते है । (एवो भानव वायसा प्रदायि
 व्यत्तु) लाम वैष्य वत्ते व्यव्युत्ता हा भैरौ भायेस्या
 उपेनिः ममय विद्यत् वामवाम वृष्ट आव तेव वृपुष्ठे
 विष्पृष्ठ हुत्त ॥ ३ ॥

(वेवन अग्रा इत म विष्पृष्ठवति) वर्षमे उत्ता
 वत्तमूष्या वीवनवन वामध वेदा इत्तुर्तु इत्ता वर्षवर
 (वन्तु लेषपा सूर्ये मध्यवा ज्यव्य) वयता विष्पृष्ठेवन
 सूर्या इत्तव वय । (मध्यवन) इत्तर ! (म तुहाया
 म उत नृत्वा) उत्तावा व वया (वयवा त तत् वैष्पृष्ठ
 व्यव्युत्तवर) एव वया ते १८ व वहीं । (एव वयवा

विश्वमिष्ठ मुषवा पर्येशायत् अनान्तं भेनो अष्टचाक्षमृपा ।
यस्याई श्रुकः सर्वनेत्रु रूप्यति स तीव्रः सोमैः सहस्रे पृथ्व्यतः ॥ ६ ॥

आपो न सिद्धुमभिः सम्मध्यरुन्त्सोमामु इन्द्रे कुश्या ईव इदम् ।
वर्धन्ति विप्रा महो अस्य सादने यथु न पूर्णिष्ठिन्द्रेन दानुना ॥ ७ ॥

युपा न कुद्रः परप्रदम्भः सा यो अर्थपत्तीरकणोदिमा अपः ।
स सुन्वते मुषवा जीरदोन्तवेऽविन्द्योतिर्मनवे इविष्ठते ॥ ८ ॥

उज्जोपतां परमुम्भोतिपा सह मूया ऋतस्य सुदूषा पुराणवत् ।
विरोचतामष्टो भानुता शुचिः स्त्रीर्गं शुक्रं शुशुचीत् सत्यतिः ॥ ९ ॥

गोमिष्ठेमामति द्वेरवां यवेनु शुचे पुरुष विशाम् ।
यथ रात्रिमि प्रथमा घनान्त्यमाकेन पूर्वनेना वयेम ॥ १० ॥

यूहस्यतिर्नः परिं पातु पुष्मादुतोचरस्मादधरादध्यापोः ।
इन्द्रः पुरस्तद्वत् मन्त्र्युपो नः सखा सर्विम्भो वरिः कुणोतु ॥ ११ ॥

(मषवा विश्व विश्वं पवशायत) इव मध्येह प्रवा
पवशेह प्रवा भेना है (दूषा अतान्त भेना अवचाकशात्)
एव विक्षिनान् इव लोकोंमध्ये आर्थिक दृश्यता है । (यथ अह
सर्वते पुराणः इवयति) विलक्षे दोषमयामये सर्वं इव
आवश्यक मवाता है (सः तीव्रैः सोमैः पूर्णम्पतः सहत)
एव तीव्रे वीमर्त्तवेद दृष्टुपाता वीर भेना है ॥ १० ॥

(आपाः न सिद्धुमभिः) ऐव वलप्रवाद वीर्ये थोर
वाते हैं भोर (कुश्या इव इव) ऐके नाके वालके पाप
वाते हैं वेष (लोमासः इन्द्र समस्तरन्) वामपाद इव दे
वाप्त वहते हैं । (सादने विप्रा अस्य महा वर्धयति)
वद्वाम्भे वामपाद इव इवके वालके वाते हैं, वैषी
(विष्ठेन दानुता शुष्मि यवेन) वाकाक्षे वालकप
आर्थी शुष्मि जीवी वाती है ॥ ११ ॥

(कुद्रः शूपा न) कुद्र हृष वाक्षे वामपाद (इव सु
मा पवतयत्) वारे लक्ष्मोमें वै शुचता है (या इमा
आपाः अर्थात् अवलोक्त) विक्षेह इव वलप्रवाहोम्भे
आर्थोंमध्ये लक्ष्मि कम वामपादः - लावेन्द्र सदाचार वामपाद (सः
मषवा) वधु इव देने (शूपायते वीरवामवे इविष्ठते
पवशेह) वोदवाम परवेदोक्त इव वेषेवै इव वपव

विलेवामे मधुमके विष्ठे (ज्योतिः अविश्वात्) इवम् ।
विष्ठा ॥ १२ ॥

(ज्योतिपा सह परस्तु उत्तापतां) ज्योतिः
वक्त इव वहे विवद प्रवाद थे; (अवश्य सुदूषाः पुरा
यत् भूयाः) वहती दृश्यते जीवे दुराली देसी- वीरी
वैषी हैंते । (मषवा शुचिः भानुता विष्ठेवाता) एं
वीरी जनमे वक्त वेषेह प्रवशेह; वैषी लद (सत्यतिः)
व शुक्र शुशुचीत् एवमोक्ष वाक्त इव तुर्वेदा
वक्त विष्ठेवे वमेह ॥ १२ ॥

वे (पुरुषात्) वृद्धीं द्वारा व्रह्मित इव । (वर्यं भोर
पुरोर्वा अमति तरेम) इव वेषेवै दुर्विति भोर विष्ठिष्ठ
एव वैषी (विष्ठां सुष्म पवेन) एव दूषये वैषी
वैषी (यथ रात्रिमि) इव वक्तव्योक्त वाम (प्रवाम
कुविषा वेभर (अवाक्षेव वृद्धेन विवानि वर्ये
वपेह विव वहते वैषीं वैतेह ॥ १३ ॥

(वृहस्यति । नः व्यपायोः) वृहस्यति इवं नः
(अवात् उत्तरस्तात् अवश्वात्) वैषीं वृद्धेवै
वामेवै (परि वातु) वृद्धेवै । (नः सद्या इवद्) इव
विव इव (पुरकात् उत्त मध्यतः) इवं वामेवै ।

पूर्वस्पते युवमिन्द्रिय वस्तो द्विष्टस्वेषाये उत्त पार्थिवस्य ।

पृष्ठ सुर्यं स्तुते कीर्त्ये चित्रय पाति स्तुतिमिः सदा नः ॥ १२ ॥ (क्र ७०३१०) (१०)

॥ इति द्वितीयोऽनुषासः ॥ १२ ॥

मध्ये वस्ते जार (सखिन्यः यतिरिक्ता छणातु) इमारे
मित्रोऽस्मि यत्ते यत्ते ॥ ११ ॥

४ हृषस्ते । (पुष्प इम्बुः अ) ए और इन देखो
(द्विष्टस्य उत्त पार्थिवस्य वस्तः) द्विष्ट और पार्थिव
पगडे (इष्टाये) स्तानी हैं । इच्छिव (स्तुपते कीर्त्ये
किंतु एवं पात) स्तुपते अरेको शान्ति देखि यत्ते यत्ते ।

जार (सदा न) यूर्यं स्तुतिमिः पात) यत्ता इमारि
द्विष्ट वस्त्रोऽस्मि यत्ते यत्ते ॥ ११ ॥ (अ. ७०३१०) ।

इस तर्फे वृहस्ति और स्त्रधे मध्य बरके जो लोहके
युक्त हों हैं वे हैं—

५ मध्यर्थिदः स्त्रभीषीः विद्वा इष्टातीः मतयः
इन्द्रं अष्टु अनूपत— अरथात् उक्त प्रतीका उक्त
यत्त प्रत्यक्तीसामि मेरी रुद्धियो इन्हीं ही होती है ।

६ यथा यतयः तुम्हयु मर्ये पर्ति परि अज्ञस्त—
मेरी विद्वा हृष यात्रा परिदी ही आकिंदन होती है । उस
उद्देशे रुद्धियो इसी ही द्विष्ट बरती है ।

७ मध्यवान् ऊतये— इन्हीं लुटि इस यत्तनी इष्टाक
मिय बहुत है ।

८ है हृषहृषत् । ऐ इत् मे यत्ता कामे यित्रय, न
या स्त्रद्विग् अपवेणि— इवहुती हारा प्रवृत्तिं इम् ।
हेरे फरामे यत्त यदेष्व आप्य बरता है और ए फरेषे
याँ नींहे इष्टा नहीं ।

९ है इसम् । इष्टा इव बाह्यिं अषि निष्पर—
है इष्टाम् । इष्टाके यत्तन त् इव बासन वर वृढ़ि ।

१० इष्ट्रः यमतः उत्त सुप्ता । विष्टवृ— इव एव
जार और नूपये इव बरत है ।

११ स्ता मध्या वस्तः यापा इष्टाते— यह यत्तनाम इम्
यत्ताके यत्तनामे पर्वोदा इष्टानी है ।

१२ इस सत्ता सित्यवः प्रवये वृषभस्य शुभिम्यः
तस्य या वप्यति— व तत्त नविद्यो देवी भीरुष स्तानी
होती है । उव उव इव यत्तनाम तमसे इष्टावत बदानी है ।

१३ एषी यमनीर्दे यापसा इष्टियुतत्— इष्टा एव
यत्तने बरता ।

१० मध्ये आर्ये स्वः उपोतिः विष्ट— यात्रवक
मित्रोऽस्मि यत्ते यत्ते ॥ ११ ॥

११ मध्या सूर्यं ज्यत्— इन्द्रेन सूर्येन प्रस दिता ।

१२ न पुराणा व दत्त नूतनः यम्याते तत् योर्ये
न अनुश्वरत्— पुराणा वा नूता वा वार्ड इसपा दो वीर्वद्य
अनुश्वर नहीं वह बरता ।

१३ विश्वंविशा मध्यवा प्रयशायत— ग्रेक मनु
वर्ये इन्द्र बरता है ।

१४ यत्तामाँ येना तृष्णा अवश्याकशात्— यात्रोदा
यत्तना यत्तना इस प्रताना है ।

१५ स पृष्टम् तत्त यत्ते— यह यत्ता यत्तव आमेशाने
स्तुत्य परामार्द करता है ।

१६ साहने यिष्टा महा यथाति— बरमे जारी
इष्टम् मात्रव बरते हैं ।

१७ उद्देश तृष्णा म इव तु या पतयत्— वीरित देवदी
दरह यह उष यत्तामे याता है ।

१८ स मध्या यीद्वानवे मनवे उपोति अवि
विष्ट— यह यत्तनाम इस वार्ड मानवों के यत्ते यत्ते देखि प्रश्न रहता है ।

१९ परामुः स्त्रोतिपा सह उत्त्वायताम्— एष
त्रये विश्वी हो ।

२० अवस्थ्य सुकुषा भूषा— बरदी यत्ते यत्ते ।

२१ यम्यि यानुवा अर्यः यिरोत्ताम्— पुद
बरने तत्प बरके ।

२२ सत्यविः यापा न इष्टा इष्टार्थीत— यत्तनोदा
यत्तन आरम्भयतिनि यत्तन विष्टह उनिमे प्रधाणा १६ ।

२३ योविः तुर्यो अमति तत्तेम— योविय दरि
यत्तना व उद्दीप्तयत्ता इव देखो ।

२४ यषेन लिष्ट्यो भूष पतेम— योव यह विष्टवी
भूषयो इव देखो ।

२५ वर्ये राज्यिः प्रथमा यस्तादेव वृषभव
प्रानानि यत्तेम— इव उत्तिवाद याव इद॑ विष्टह इ॒१८
दारो व्रत यत्तव यत्तीये देखो ।

२६ वृहस्तानि: यमायाः यः परि यातु याता व
यत्तीय इसी इष्टा यत्ते ।

[सूक्त १८]

(अथि) — १-३ मध्यान्तिः प्रियमेष्टव्यः ४ ५ पसिष्ठ। देयता — इष्टः ।

पृथम् स्वा तुदिद्युर्ग इन्द्रं स्वायन्तुः ससीयः ।	कण्ठो लुकयेमिर्जरन्ते ॥ १ ॥
न चेसुन्धदा पंपनु धमिन्नपस्ता नविष्टा ।	१ उष्टु स्तोमे षिकेत ॥ २ ॥
मृग्निं द्रेषा । सुन्वतु न स्वमाप्य स्थृदयति ।	यन्ति प्रमादुमर्तन्द्राः ॥ ३ ॥
पृथमिद्र त्याप्त्वोऽभिप्र णोनुमो पृष्ठन् ।	१ विदी त्वं प्रस्त नी वसो ॥ ४ ॥
मा नो निदे षु पक्षेतुडयो रुधीराण्यो ।	१ त्वे अपि कर्तुमस्त ॥ ५ ॥
त्वं समाप्ति सुप्रथं पुरायुभव्यं पृथवहन् ।	१ त्वया प्रति मुवे युजा ॥ ६ ॥ (१०)

१० इष्टः स सदा सलिल्या यतिः इष्टान्तु—
इष्ट इया प्रिय इम मिरोऽनिव यत यत इष्टे ।

११ इष्टस्त युर्य इष्टः य दिव्यस्य उत पार्यि
पस्त यस्या इष्टाय— १२१११ । तु भार इष्ट फिर्हर
दुष रामा रिष्ट भार पार्यि पतन रामी हो । यसु विष्टे
मनुष्य दृष्टे द्रुक्षे वन वद । दे वद यत ।

१२ इनुपर्ये वीरय रथि धर्म— लुनि यत्ताने
मनिरो यत ता ।

१३ यूर्यं सदा सः इष्टस्तिभि पार्य— दृष्ट यसा
इष्ट इया १२५ । यत वीरो ।

१४ यहा छिनीय अनुयाक्ष समाप्त ॥

(सूक्त १८)

१५ इष्ट । (यूर्य उत्तु-१५१ स्वयो) इष्ट इया उपर्यो
विष्ट इये इयाविष्ट इयाविष्ट १५ (यायातः सदाया)
१६ इष्ट इयो इयो ते विष्ट इयो । इया इया १६
मनुष्य । (उपर्योऽया इया इयात) । १७ इयो
१८ इयाविष्ट १५ । (अभिष्ट) १९ (यायातः सदाया) ।

२० इष्टिष्ट । २१ (यायातः सदाया) । २२ इया उपर्यो
विष्ट इये (विष्ट इया उपर्यो) २३ या उपर्यो २४
२५ यीरो तय इया उपर्यो विष्ट) २६ । २७
याया इयो इयो २८ । (अभिष्ट) २९ ।

३० इया उपर्यो इयाविष्ट । ३१ इया । ३२ इयो
(सदाया उपर्यो) ३३ या उपर्यो यार । ३४
(याया उपर्यो) इयाविष्ट ३५ इयो ३६ इयाविष्ट
३७ इयो ३८ यार । ३९ इयो ४० इयो ४१ इयो ४२

४३ इष्टाद (बृष्टन्) शिक्षाद् । (यूर्य इयाया) ४४
४५ यात भावेशाम तीर (अभिप्र यातुवा) ४६ । ४७
यात है । ४८ (वसो) वावेशामेन । (मा भ्रव तु विष्टि)
इयाविष्ट इये वाव यत ४९ । (अ ४१११)

(अयो) दूषेत है इष्टिष्ट (विष्ट इयो) विष्ट ।
५० युर्य मावेशाम वीर (अ रामा) इष्टवह (वामा
रामी) अर्पन इये यत इय (यम स्तुतु) वीर
वीरा—मरा वीर ते विष्ट हो है ५५ । (अ भ०१११)

(यूर्य सप्ताय) यम भीसि) दूषेत या इय ५६ । ५७
(युर्यवह) इये मावेशाम इय । तु (पुरा-योगाचा)
ओ वावह युर्य इयाविष्ट है । (यवया युजा प्रति इये)
ते वाव इयाविष्ट में वायर्मो इत्तर इत्ता ५८ । ५९
(अ भ०१११)

६० युर्य वीरावाम इयन है ६१—

६२ यायिन्— वावावाम । ६३—

६४ युर्य— वावावाम

६५ युर्य— वावेशाम वावाम भावाम

६६ यूर्य सप्ताय यम भ्रमि— इयाया विष्ट इया

६७ युर्यवह— इया भ्रववाम

६८ यायोया— भ्रवेहाव युर्य युर्य इयाविष्ट है

६९ यायोया इयाविष्ट युर्य युर्य युर्य युर्य युर्य

७० यायोया इयाविष्ट युर्य युर्य युर्य युर्य

७१ यायोया इयाविष्ट युर्य युर्य युर्य युर्य

७२ यायोया इयाविष्ट युर्य युर्य युर्य युर्य

७३ यायोया इयाविष्ट युर्य युर्य युर्य युर्य

७४ यायोया इयाविष्ट युर्य युर्य युर्य युर्य

[संक्ष १९]

(अधिः — १-७ विश्वामित्रः । देवता — इन्द्रः ।)

(क्र ४ शैला-३)

वार्षीहस्यापु श्वसे पृथनापाण्डाय च	। इन्द्र त्वा वर्षीयामसि	॥ १ ॥
मर्वीषीन् सु ते मन तु च चमुः शतकतो	। इन्द्रे कूणन्तु चापतः	॥ २ ॥
नामानि ते शतकतो विश्वामित्रमित्रीमहे	। इन्द्राभिमातिपादे	॥ ३ ॥
पुरुषुतस्य धार्मिभिः प्रतेन महायामसि	। इन्द्रस्य चर्षणीधुर्तः	॥ ४ ॥
इन्द्रे बृशापु हन्तये पुरुषुतस्य श्रुते	। मरेषु वार्षसातये	॥ ५ ॥
वाकेषु सासुभिर्मेषु व्यामीमहे शतकतो	। इन्द्रे बृशापु हन्तये	॥ ६ ॥
युजेषु पृथनान्यै पृथुदृष्टु भवतु सु च	। इन्द्रे वास्त्रामित्रातिषु	॥ ७ ॥ (१११)

४ तद स्तोमं विकल्प— ऐरा ख्येत ही इन वार्ताएँ हैं ।

५ वर्षे स्वायामः अभिप्र लोकुमः— इन ते प्रथम वर्षे और दूसरे हा प्रथम वर्षे हैं ।

६ मः अस्य विद्यि— इनमें इस स्तोत्रके दू वान ।

७ मम ब्रह्म स्वं भवि— देवा ब्रह्मेषु भिवे ही है ।

८ इच्छगति दवा— सुम्बवस्तु— देव ब्रह्मतांसि चातरेहे ।

९ लक्ष्माय स सूदृष्टयित्वा— देव द्वुष्टुको चाप्ते लही ।

१० महान्द्राः प्रभार्षी योग्यत— देवोऽग्निदेव भावमन्द्रेये प्रथम वर्षे हैं ।

११ निर्व वक्तये भरात्येसः प्रभार्षी— निर्वक इष्ट मार्षी तरी कंशुके वर्णन इष्टे देवर इमरा नारा न वर ।

(संक्ष १९)

(पार्षी-हस्याय) चतुर्भौमे मार्गेषु भिवे (श्वसे) यम शार्णिके भिवे (पृथनापाण्डाय) चतुर्भौमीष्ठे वीत भेदे भिवे हे इन । (त्वा या वर्षीयामसि) दूसे इम अपनी भाव दीक्षाते हैं ॥ १ ॥

हे (शतकतो इन्द्र) भैरवो लक्ष्मीवासे इन । (वायुष्ठु) ऐरे वायुष्ठ (ते मन तु च चमुः) ते मनये और चतुर्भौम (वर्षीषीन् सु कूणयतु) इच्छये और वर्षम दीक्षात्य दे ॥ २ ॥

हे (शतकतो इन्द्र) देवोऽप्येषोवामे इन । (अभिमानि पायो) चतुर्भौमेष विकल्प वर्षे भेदे भिवे (विश्वामित्रमित्रीमित्रीमहे) सर वर्षिकोंहे (ते नामानि इमह) ते नामोऽप्य इम क्षेत्रे हैं ॥ ३ ॥

४ (अर्थव भाव वान ३)

(पुरुषुतस्य) चतुर्भौमी द्वारा प्रतिषिद्ध (वर्षीषी-पृथुत) मतुभौमी द्वारा प्रतिषिद्ध (इन्द्रस्य) इच्छ (शत्रम व्यामित्रीमहे) तो स्वानी या चाम्भोंसे (महायामसि) चतुर्भौमी महिमा गाये हैं ॥ ४ ॥

(पुरुषुतस्य) चतुर्भौमी द्वारा प्रतिषिद्ध इच्छे (बृशाय इच्छते) यतु च यारेके भिवे जीर (मरेषु वार्षसातये) पुरुषोंमें यम प्रथम वर्षे भेदे भिवे (यम द्वुष्टे) द्वुष्टाते हैं ॥ ५ ॥

ते (शतकतो इन्द्र) वैराणी कर्म भरेवाके इन । (चाम्भेषु सासुधिः सव) ते द्वुष्टाते चतुर्भौमी भीतयेवाका हो । (बृशाय इच्छते) इच्छे मारेके भिवे (त्वा इमहे) दूसे द्वुष्टाते हैं ॥ ६ ॥

(यज्ञेषु) यम प्राप्त करेते (पृथनास्ये) देवते चाम द्वुष्ट वर्षेके उमव (पृथुत दृष्टुं) उमाभौमा दीप्र पराम्ब वर्षेके उमव (अवातु च) यम प्राप्तिके उमव (अभिमातिषु) उमाभौमा उमाना करेके उमव हे इन । (चाम्भ) इमारे चाम रह ॥ ७ ॥

८ वर्षे औरताके भिवेते हैं—

१ पार्षी-हस्य— चतुर्भौमी मरा

२ शाव— चव

३ पृथना-सादा— चतुर्भेदाका प्राप्तव चरण

४ शतकतु— देवोऽप्येषोवामे

५ अभिमातिषु-सादा— चतुर्भौमेष प्राप्तव चरण

६ वर्षीषी-पृथु— मतुभौमी भावार

७ बृशाय इच्छते— इव चतुर्भौमी भावार

[सूक्त २०]

(जपिः — १-४ विश्वामित्रः ५-७ पृतसमदः । देवता — इन्द्रः ।)

द्विभिन्नतम् न कुरुये द्विभिन्नं पाहि चारुविष् । इन्द्रु सोर्यं शतकतो ॥ १ ॥
 द्विन्द्रियार्थं शतकतो पाहि से द्वन्द्वे पुरुषु । इन्द्रु तानि तु आ धूल ॥ २ ॥
 वर्गभिन्नु भवो वृद्ध द्विष्ट द्विष्ट द्विष्ट । उत्ते द्विष्ट तिरामसि ॥ ३ ॥
 अवोपतो नु भा गुणयो वक्ष परापरतः । उलोको यस्ते विद्विष्ट इन्द्रेह ततु आ गेहि ॥ ४ ॥
 इन्द्रो वृद्ध महाद्वयमुगी पदपं चुम्पवत् । च हि स्तुरो विचर्वयिः ॥ ५ ॥
 इन्द्रियं मूलयाति नो न नः पुष्टादुष्ट नैष्ठव् । भूत्र मैवाति नः पुरा ॥ ६ ॥
 इन्द्रु आश्राम्युपस्थिति सर्वोम्यो अमैय फलत् । उत्तु द्विविचर्वयिः ॥ ७ ॥ (११)

८ मरेषु वाक्सातये— द्विष्टे वन वस इत्या

९ लोकेषु सासदिः— द्विष्टे विषयो

१० पृतादास्यं— द्विष्टे वामाम

११ पृतु द्विष्ट— लोके परामत इत्येके विष्टे

१२ अभिमाति— द्विष्टी वीठाना ।

भक्ति— १ ते यतः चामुः भर्तुचीन द्विष्टम्—
तेरा मन और जांब इमरी जोर जारित हो

२ ते लामामि इमहो— तेरा जाम ऐहो है ।

३ द्वातन घामसि— महायामसि— सहजी लागोके
देरी माझा गाते हैं ।

४ त्यां इमहो— तरी भार्ता करते हैं ।

५ साक्ष— इमारे नाम इह ।

(सूक्त २०)

दे (शतकतो इन्द्र) दे देवो वामप्येषार इव ।
(मा ऊतये) इमरी एक इत्येके विष्टे (द्विभिन्नतम्)
वह वामामत (द्विष्टम्) वरदीते तेलती (आशुवि
सोर्यं) वरामत इत्येकाम तोमापरते (पाहि) पी ॥ १ ॥
(क. ३१४.१४)दे इत्येके इव । (पदपं चेत्यु) वाव श्वरके वर्णेषु
(पात इत्रियाति) जो देरी शिखो है (तनि त
आ धूले) इवर्यु तुम्ह प वस इत्या है ॥ २ ॥
(क. ३१४.१५)दे इव । (द्विष्ट भयः भगव्) दूरे वह वह वस
दिया है । (दुर्दृष्ट द्वय द्विष्ट) दुर्दृष्ट तेजो वारत कर ।
(तु तुम उद्ग निरामसि) जे इत्येको इव वृत वडते
है ॥ ३ ॥ (क. ३१४.१६)दे (वाक) उम्मव्येषार । (भवीततः मा आ गहि)
पाषणे इत्ये याप आ (अप ड परायत) भार इत्ये जी
जा ॥ ४ ॥ (मद्रिवः इन्द्र) वहाँ जिमें रहनेवाले इव ।
(यः ते व सोका) जो देरा लान ही (तता इव य
गहि) वहाँ पहा जा ॥ ५ ॥ (क. ३१५.१)दे (वींग) विष । (इन्द्रः महात् भये) इव वे
नक्के (भयी-पूर्) याव मुकामा इत्या है और इन्द्रे
(अप चुम्पवत्) इव मनाता है (हिसा विष्टा विष
र्यिः) नक्के वह विष है और उक्त देवनेवाका है ॥ ६ ॥
(क. ३१५.२)(इन्द्रः ज ज सुष्टयाति) दे इव दुखी इत्या
इत्यिते (अप यः पव्यात् म नद्यात्) याप इत्ये जी
जो जन्म और (भद्रे मा वुरा यायाति) वस्तव इत्या
कम्बु देवा ॥ ७ ॥ (क. ३१५.३)(इन्द्रः सवित्या भावाम्या वरि) इव ज्ञ विष्ट
जीते (असप इत्या) विषका करता है ज्ञात यह
(द्विष्ट देवा विष्टयिः) दमुमोदा जीतेवाला आ
वदया विषेण इत्रिव रेवामत इत्येकाम है ॥ ८ ॥
(क. ३१५.४)

इव दृष्टे जी इत्येके तुम के वर्ण दिये हैं—

१ शतकतु— वहो विषवाला देवो इत्येके वी

२ इन्द्र— (इन्द्रः द्वः) दमुमा विषरत इत्येकाम

३ शास— यामप्येषार,

४ भग— विष

५ ना ऊतये— इमरी एक इत्येके विषे वह यह

[सूक्त २१]

(कायि) — १-११ स्तव्यः । देवता — इन्द्रः ॥)

(अ १५४।१-११)

न्यूदुपु शाष्ट्र प्र मुहे मरामहे गिरु इन्द्राय सदने विवस्वतः ।

न् चिदि रत्नं ससुतापिण्डार्बिनु दुषुर्लिङ्गिष्ठोदेवु शासते ॥ १ ॥

दुरो वधेत्स दुरु इन्द्रु गोरसि दुरो यवेत्स वस्तुन इनस्पतिः ।

विष्णानरः प्रदिव्यो अक्षामकर्षनः सख्त्वा सखिभ्युस्तमिद गृणीमसि ॥ २ ॥

शर्वीष इन्द्र पुरुषस्थमचमु तवेदिदमुमित्वेकिते पसुः ।

अर्थः सुगृम्याभिमृतु आ मेरु मा त्वामुतो अरितुः कार्यमूनयीः ॥ ३ ॥

५ पश्चसु सनेपु से इत्रियापि आ पृथे— पञ्च
मनमें बो लेही सक्षिमाँ है बलको मैं भास करता हूँ ।

६ पश्चत् अवा भगव्य— तुम्हारा मत बदा है ।

७ पुष्टरु पुष्ट वधीष्य— तुम्हारे तेज पात्र इत्य है ।

८ ते भूष्यं वृत्त तिरामसि— तेरे वृत्त इष वृत्त
पर्वन एके बातहै है ।

९० भद्रिया— वज्रपाती किमें रेतेवाका

११ महात् मय अमीष्यत् अप शुद्धयवद्— एके
मन्त्रमुद्धारणा एके इस्त्रे तु इत्य है ।१२ सः हि विष्णार विष्वर्णिणः— एक रित्र यता है
और एक प्रवाहा किमें निर्धारण करता है ।

१३ इन्द्रः न मूल्याति— इन इये द्विती करता है ।

१४ अप ता पव्यात् त मशत्— इष अप्य यत
एमारा चीज़ नहीं बरता ।१५ मश्र भवानि स तुरा— अभ्यान इपरे तामने
एता है ।१६ इन्द्रः सर्वाद्य माशाभ्यः अमर्य करत्—
एक एक रितानीहै निमयत करता है ।१७ शश्मू तेता विवर्यज्ञि— एक इन अनुरोधी
बीमानाका और एक प्रवाहनीय देवतान करत है ।

विवर्य इत्य—

१८ दुष्मित्यम्— एक व्यानवाना

१९ पुष्टो— चमडीवा तवही भेषेवै चमडेवाना

२० समृद्धिः— आदर एतेवाना सुरथे आने व रेते
वाना । चामरवृक्ष पीतके मे ताम हाते हैं ।

(सूक्त ११)

(महे यार्थ नि सु प्र मरामहे) महात् इन्द्रके लिये इष
उत्तम स्तुति द्वाये । (विवस्वत सदने इन्द्राय गिरा)
विवस्वतने स्वामी इन्द्रके लिये स्तुतिये होती रहती हैं ।
(सत्तती इव) वेमेवाक्ये एव लेही बोरु तुम्हारा है उष
पात्र (न् चिदि हि रत्नं भविष्यत्) धीर ती उष मन्त्रे
एल इन्द्रसे इत्य किया । (दुष्मित्यः द्रुष्टिष्ठेवु न शास्यते)
विमां भनका दान करमेवाक्ये लिये बोर्य नहीं हाती ॥ १ ॥हे इन ! (अभ्यस्य दुरु) तु लोहोदा दान करता है
(गोः तुरु असि) तु लोहीध रात्र है (यदस्य दुरु)
तु बक्षा दाना है (पद्मुवः इन पतिः) तु भनय द्वामी
ज्ञेर रक्ष है (विष्णानरः भ्रदियः) तु पुरी अप्यहे
मात्रोदा व्याहर है (भ काम-कृदीवः) यद्योरी
अमरानींशे द्वृत्य एतेवाका त् (सीधिष्यः सक्ता) विमेऽ
लिये लित्र है अत (त इदं एणीमनि) विवर्य यह
स्तुति इम यात है ॥ २ ॥हे (शर्वीष पुरुषात् शुमलम् इन्द्र) विवस्व
वहुत द्वायी एतेवान तेवस्ती इत् । (तव इत् इत् पातु
नमितः लिकिने) देवा ही या तव भन ह आ चारों भोर
ज्ञात होता है । हे (अभ्यमृते) वस्ते वामृत वालवा ।
(अत संगृद्य मा भर) इत्यत्र इव व्याना इन्द्रा वर्त
मारा । (त्वायता अरितुः कामे मा उमर्यो) ती
अति एतेवाने एताती चमडामें लूकना न दृ ॥ ३ ॥

पुमिर्षुमिः रामना एभिरिन्दुमिनिर्व्यानो अर्पति गोमिरुषिना ।

एद्वेषु दस्यु दुरयन्तु इन्दुमिर्षुतदेषुः समिशा रेमेहि || ४ ||

समिन्द्र राया समिशा रेमेहि स वार्जेमिः पुरुषुन्द्रेरुमिर्षुमिः ।

स देव्या प्रसेत्या वीरस्त्रूप्यशु गोर्बग्रुपाश्चावस्या रेमेहि || ५ ||

ते स्या भद्रा अमदुन्नानि वृष्या वे सोमासो वृश्वस्तेषु सत्पते ।

पत्कारवे दश्च वृत्राऽप्यप्रति पुर्विष्मेति नि सुहस्तिं वृद्यैः || ६ ||

पुष्टा पुष्टुषु धर्देषि धृष्युया पुरा पुर समिद् तुस्योद्देशा ।

नम्या यदिन्द्रु सर्व्या परावति निर्वृहयो नमुषिं नार्व मायिनम् || ७ ||

त्वं कर्तज्ञपुत्र पुर्णयै वधीस्तनिहयानिविगवस्य वर्तुनी ।

स्व पुष्टा वृहृदस्यामिनुप्तुरोऽनानुः परिपूरा ऋजिवत्ता || ८ ||

स्वमेता चेनुराङ्गो द्विर्द्वाष्टुभुना सुभवसीपुष्टुमुवः ।

पुष्टि सुहस्ता नवं भुतो नि चक्रेण इत्या तुष्पदावृष्टह || ९ ||

(पर्मिः शुमिः सुमना) इन ऐतोंसे वत्तम सत्प शील हो । (पर्मिः इत्युमिः) इन थोपत्तोंसे प्रथमिष्य हो (गोमिः अदिवता अमर्ति निरुद्यानाः) पर्मो और चोड़के वाय इमारी निर्दृष्ट्यस्त वीक्षणाचे विलिप्त वर । (इत्युमिः वृष्टुः) थोपत्तोंसे वत्तमे वृष्टुये (इत्योप्य) इत्यती सावतानामे (दृश्यता) वाय हैं (युत-वेष्याः इया स रमेहि) और लकुमोंसे दृ वर्के मचके वाय इम उपुष होते ॥ ५ ॥

ऐ इय ! (राया सं) इम वन्द तुष है (इया सं रमेहि) लकुमे तुष हो (अभिषुमिः पुरुषावृष्टैः पार्वेमिः सं) तेवती आसादावाय भाँतोंके पाय इम तुष ही त्वा (गो-मप्रया अद्यावस्या वीरस्त्रूप्यमया) थोड़ी-व्य प्रथावता और चोड़त तुष त्वा चाँड़े व्यते प्रमात्री (इम्या प्रसेत्या सं रमेहि) शावतवद्यो विष्पत्तिकिए इम उपुष हो ॥ ५ ॥

ऐ (सत्पते) भजनोंके लकारी । (तृष्णावेषु) इत्येके मार्गेण लकारी (त लकारी) त सामासा । या अमदम्) इन अमददशक लैप्रात्मके तुम अमदम् दिवा भार (तानि तुष्यया) इन वीष्य वन्नार्जीय तत्वा इनके (वर्षि सहस्रा वयति तत्व) छाठ इया विनानवे वेनदोषी (तुष्या इया वयति तत्व) वर्षि वेष्य (तुष्या वयति तत्व) विनानवे तुमन (ति भव्यत्त) भार भार । वेनके (भुत) दुम्हारी वयति तुष्य ॥ ६ ॥

विवहयः) वर्षिम रीतिं मार वाय ॥ ६ ॥

त (पुष्टा पुष्टुषु धृष्युया) तुष फ्लेके व्यसाहे कुटे प्रति अनुको वर्षय व्यतेको वैवरीते (य इत् इप पर्यि) वाया है । (पुष्टा इत् पुर्ण ओहसा सं हंसि) वर्षे विष्यसे समुके इव विष्येषे वर्षने वन्दके तोहता है । ऐ इत् । (वृष्ट नम्या सवता) धृष्टुये नवावेष के विष्ये वाय (परावति) इत् यदेवाके (नमुषिं माम मायिनी) वायारी नमुषिये (ति वर्षीय) वाय ॥ ६ ॥

(मतिविगवस्य वर्तनी) वर्तियो । वेनावेने व्यती वायेवे (कर्त्तव इत् पर्यव्य) वर्षावी और लौरये (वर्ष वेनियुपा वर्षी) इते लेव वाय हो मार वाय । (ऋजिवत्ता परिपूरा) वर्ष थाने वेनी तुष्य (भवतुरुष वंगृहस्य) वर्षावाय वृष्टके (शाता पुर) वो विष्ये (वर्ष अविनात) इते वोह दिवे ॥ ६ ॥

(अभस्तुषा सुभवसा इपस्तामुपः) विना वर्ष वर्षे तुष्यामे इमाता विष्य तुर (विताव् द्विः इया अन राष्ट्रः) इव वीष्य वन्नार्जीय तत्वा इनके (वर्षि सहस्रा वयति तत्व) छाठ इया विनानवे वेनदोषी (तुष्या इया वयति तत्व) वर्षि वेष्य (भुत) दुम्हारी वयति तुष्य ॥ ६ ॥

तवामिथ सुभवेत् तवोतिगिस्तवृ श्रामिरिन्दु तवेयाणम् ।

स्वमस्ये कुत्संमतिगिवमायु महे रात्रे युनै अरचनायः

॥ १० ॥

य उरचीन्द्र देवगोपाः सद्योपस्ते विवरमा अमीम ।

स्वा स्तोषाम् स्वयां सुवीरा द्राघीयु आयुः प्रशुर दधीनाः

॥ ११ ॥ (११)

(तथ लक्षितिभिः) त अपनी राहापत्रोत्ते (सु अवल भाविष्य) उपमार्थं रक्षा की बीर है इन् । (तथ शामिभिः तृष्ण्याप्ते) त्वं अपनी राहापत्रे तृष्ण्याप्ते रक्षा की । (स्वं भस्मे महे यून रात्रे) त्वं इस महात्म तस्म राहाका हित दरक्षेक चिन्हे (कुरुते अतिगिवं भायुः) कुप्त अतिगिवं भायुः (अरचनायः) इत्यमें किंवा ॥ १ ॥

हे इन् ! (उद्दिष्य) देवंक्रो गात्रे (य वदगोपाः) इष्ट देवंक्रो इत्याप्ति तृष्ण्याप्ते तु ज्ञाने । (ते स्तोषामाः) ऐसे प्रिय इन हैं (शिवायमाः असाम) वक्तव्य अप्यते तु ज्ञाने । (त्वा स्तोषायामा) इन तीर्ति स्तुति नहरहे । (तथाया द्वाधीयाः) त्वं साव रहेते उत्तम वीर प्रुणोत्रेष्ये तु ज्ञ दोष इन (द्वाधीयः भायुः प्रत्यं दधामाः) वीर भायुमे अविक वंशी वामावर भास्म दरक्षेवान् हा ॥ ११ ॥

इस सूर्खमे वीरताका वर्णन करतेवाले ये मंत्रमाय है—

१ अस्तस्य दुरा गोः दुरा लसि यस्य दुरावहे गों भी बीर जोका तु देवेताका है ।

२ वज्रान् इनस्पतिः— वज्रा तु भासी है ।

३ शिवान्नरः प्रदिवः शक्तामहत्यान् — उत्तम मान योग्य दरक्षाव भीर इनके वायामोन्मै तृष्णे दरक्षेवास है ।

४ संक्षिप्य सक्ता— मिश्रो दृष्टिप्रिय है ।

५ दाधीय इन् ! पुरुष्ण् यमस्म— दे लक्षितान् वैस्त्री इन् ! अरेक फौंके छाँड़ा तु हो ।

६ तत् इत् इत् भमित यसु जकिने— यह आ जारो भार यत है वह ताकी है ऐता सब जानते हैं ।

७ भ्रुः संगृह्य हे भमिभूत ! आ मर— इमिवे अपा इसे दीर्घा । इसे यत लाल रस है ।

८ रायापता झरितुः काम माऊपी— तो आप समे भावे दरपात्री रूपमै भूत न हा ।

९ एमि एमि द्विमा— इन वक्तव्ये विचारेण वदम भवत्वा हो ।

१० भमिति गोमि निष्ठाम— दीर्घिक्षे वीरमे भमिविष्ट ४८ ।

११ दस्यु इत्यत्त— एन्द्रो इम चावते हैं ।

१२ युनदेपसा इया संरमेमहि— देवियोंका इय वक्तव्य तस्म तस्म चोरे ।

१३ राया स इया स रमेमहि— यम भार वक्तव्ये इम पुष्ट हों ।

१४ भमियुमि पुरुषम्भ्रीः वाक्तमि सं रमेमहि— रिष्य देवतानी वक्ति दाय इम तु ज्ञ हो ।

१५ गो अप्रय भव्यायत्वा भीरुप्रमपा वेद्या प्रमस्या स रमेमहि— गाई चित्तमे भवत्वाम रक्षी है बोक्षेति जो तु ज्ञ है वक्ति कष्टे तु ज्ञ रिष्य तुहिमे इम संपाद हो ।

१६ हे सत्यते ! तृष्णदेवेयु तानि ते तृष्ण्या ते व्यवदन्— ५ एवज्ञोंहै पक्षहै इत्योंहै मारतेके समव ऐरे योग रम्भ द्वेष आविर्दित करते हैं ।

१७ पक्षारब वहिष्मत ददा सद्याग्नि तृष्णायि भमिति ति वर्द्याय— आ तृष्णे यक्षर्त्ती वक्ति हित दरक्षे चिन्हे इस इवा इति एवज्ञोंका भमितिम रिष्ये माप ।

१८ युषा युष पृष्ण्युषा रप परिप— एक तुद्वे इसे तुद्वे प्रति तु भवेष जाता है ।

१९ पुरा इवं पुरं भोजसा स इसि— एक चित्तेषे इसे चित्तेषे वक्तव्य तीक्ष्णा है ।

२० इहन्द्र ! सद्या मम्या परावति मायिन वमुर्यि ति यद्याय— मित्र याव यु है मारामी-जायी कमुकेदी दन मारा ।

२१ त्वं इर्व इत पर्यं तमिद्या वयी— देवे कर्त्तव भीर पर्यक्षो नेवत्ती इत्तवे माप ।

२२ इव ददस्य क्षमिभ्याम परिपूता यता पूर्ण भमिन्दत— त वैरप्यो दरक्षिवाने भेदी हुई या नवेरोदाह ही ।

२३ त्वं ददान् ज्ञराहः द्विः ददा भव्यायुमा यु भवत्वा ददावत्याप्य परिप सद्या भवति मय रक्त्या यक्षण दुर्यादात भावृणक— द्वे इत व क बन रात्रा ओंहे आ भीते तुप्रको वाय तद इते ददा इव

[सूक्त २२]

(क्रिया) — १-३ विशेषः ४ व प्रियमेषः । देवता — इन्द्रः ।)

अभि त्वा वृपमा सुरे सुर सृचामि पीतमे ।	सृम्पा अर्णशुद्धी मदम् ॥ १ ॥
मा त्वा मूरा अविष्पत्तो मोपहस्तान् आ दमन् ।	मार्की ब्रह्मदिवी वनः ॥ २ ॥
इह स्वा गोपीरीणसा मुदे मन्दन्तु राख्ये ।	सरो गौरो यथा पित् ॥ ३ ॥
मुभि प्र गोपति गिरेन्द्रमध्यं यथा विद् ।	सूरु सूखसु सत्यविम् ॥ ४ ॥
आ हरयः ससृष्टेरडरीरविं बहिर्वि ।	यश्रुमि सुनवामदे ॥ ५ ॥
इन्द्रोपु गाव आक्षिर इतुइ वृग्निं मदु ।	यस्तीमुपद्वे विदत् ॥ ६ ॥ (११५)

पठ इतर निवासे केनिकाङ्गे भवते इव चक्रे मारते मार वाता ।

२४ एवं सुधवस्ते त्वोतिमिः वाविष्य— दैते वरणी रक्षा वाहनोंसे सुभावी रक्षा दी ।

२५ एवं वाममिः तृत्यावर्त— देव इवा वाहनोंसे तृत्य वाहनी रक्षा दी ।

२६ एवं कुरुत अतिरिक्तं वारुं वस्ते महे युने राजे वरण्यपः— दैते कुरुत अतिरिक्तं और वामुको इव वडे वाहन रक्षाके लिने वारा ।

२७ दे इन्द्र ! देवयोगा त सत्याय । विष्वतमा असाम— दे इन्द्र । देवोंसे वृश्छित इह इम वर्तम वस्तालके उपर्योगी ।

२८ त्वया सुर्विरा व्रातीय वायु । प्रतरे वधावा— दुष्मारी वाहनातम इव वर्तम वौरु त्रैरीविष्य मुक्त होइर वाहनी कीव वायुध अविद दीर्घं वर्तम वर्तम करेते ।

इवं वीत्वके लिन्देष्य पाठक देवे ।

(सूक्त २३)

१ (वृपम) रामिष्यत ! (भवि द्वाते) वावत निवासे वर (पीतमे) वीत्वके लिये (वा सुर वृक्षामि) देव वाव इत इवा भवते ही । (त्वय) इवे दृष्टे हो (मदे वृष्टद्विदि) वर्तेवावक इव इवो वी ॥ १ ॥

(क. ४३ ११)

(वावप्यय मूरा) वावता वीत्य वावेनामे दृष्टे (वा मा दमन) दृष्टे वत इवरे । (वृपद्वामाता मा वा दमन) वावाव वर्तेनामे दृष्टे व इवामे । (ब्रह्मदिवि

मार्की वनः) वावता दैते वर्तेनामे दृष्टे न वाव वर वडे ॥ १ ॥

(क. ४३ ११)

दे इन्द्र । (इवा) वावा (गोपीरीजसा त्वा) वृक्षामे विष्यत सोमरक्षे दृष्टे (महे राधसे मदम्) वरे वाव वातिके लिये प्रवर्त रखे । (गौरो यथा राजा) यथा वैदा वाहनपर वारा है वैदा तु इव रखो (पित्) वी ॥ २ ॥

(क. ४३ १२)

(गोपति) गौलोके पाठक (सत्यस्य मूरुं) वर्तम वर्तम (सत्यति) वर्तमामे पाठक (इन्द्र) इन्द्री (पिता वभि प्र अर्थं) वावी वामीसे सुप्ति वर (यथा विदे) वैदी वावहै है ॥ ३ ॥

(क. ४३ १३)

(वावीः इवयः वा सृष्टिरे) वाव वैदे वर्तमे वा रहे है । (वहिर्वि वभि) वह वाव वाहनपर वैदा है । (यथा वभि संतवामहे) वावा इम विलक्ष्य वर्तमे यदि गाठे है ॥ ४ ॥

(क. ४३ १४)

(यक्षिये इन्द्राय) वर्तवारी इवके लिये (याव मधु वायिर तुदुहे) गौरे वायुरदृश तुदुहे है । (यत्व सी उपदात विदत्) वी वर्तमा वीत्यामे वाया ॥ ५ ॥

(क. ४३ १५)

इव इवं वीत्वका वर्तम वर्त है—

१ पृष्ठमः— दैत वैदा वृक्षामात् इव ।

२ गोपति— वामीवाव पाठक ।

३ सत्यस्य मूरु— वावता वर्तम

४ सत्यति— वावता वर्तमामी वाव

५ वावी इन्द्र— वर्तवारी इव

६ पिति इन्द्राय यथा मधु वायिर तुदुहे— वर्तवारी इवके लिये वीदा वृप रही है ।

[सूक्त २३]

(ऋषि — १-९ विश्वामित्र । वेष्टा — इन्द्र ।)
(अ. १४१-१-९)

आ तृ ने इन्द्र मुश्यग्निकानः सोमपीतये	। इरिम्या पाण्डित्रिषः	॥ १ ॥
सुचो होता न आविष्यर्पतिस्तिरे पूर्हिरानुपक् । अपुञ्जन्मावात्रद्विषः	॥ २ ॥	
तुमा ग्रहं ग्रहवाहः क्रियन्तु आ पूर्हिः सीद । वीहि शूरं पुरोलाक्ष्मय	॥ ३ ॥	
रारचि सवनेषु ण पुष्ट स्तोमेषु पूर्वाहन । उक्षेष्विन्द गिर्वणः	॥ ४ ॥	
मुरव्यः सोमुपामुरु रिहन्ति शवेसुस्पतिषु । इन्द्रै वृत्तं न मातरैः	॥ ५ ॥	
स मन्दस्या शाच्चसो राखसे तुन्वार्य महे । न स्थोवारं निदं करः	॥ ६ ॥	
वृषभिन्द्र स्यायवै हुषिष्मन्तो भरामहे	॥ ७ ॥	
मारे असदि मुमुक्षो इरिप्रियार्वाहै पूर्हि	॥ ८ ॥	
अर्वार्वं त्वा सुखे रथे वृद्धवामिन्द्र केषिना । पूरुस्ने पूर्हितासदे	॥ ९ ॥ (१४४)	

(भूल १)

दे (मद्रिषः इन्द्र) वस्त्रायी इन्द्र । (अ. सोमपीतये इवामः) इसरे सोमपानके लिये तुलसा दूषा ए (मध्यमः) मेरे पाप (इरिम्या आ पाहि) चोरोंसे आ बाढ़ा ॥ १ ॥

(म. क्षतिवयः इताता) इमारा इरिष्क शेष (सत्त्व) पठ गया है (पर्हिः भानुपक् तिस्तिरे) आपन कोन लिये इवाया है, (प्रातः अद्रयः अयुज्वन्) भातप्रसाद वीर पत्र [संप्रसर निष्ठकोने लिय] बांटे गये है ॥ २ ॥

दे (प्रश्नायाह) मर्जोंके भारड ! (इमा प्रश्न किम्पत्ते) मेर मन पठ लिये जाते हैं (पर्हिः भा सीद) भातप्रसाद वीर है दे इन्द्र ! (तुराळाहा वीहि) इन भवत्ये वा ॥ ३ ॥

दे (तुराळद) तुरोमारवेषार्थं (गिर्वणः इन्द्र) एषिते पैत्य द्वन्द्व ! (अ. पशु) इनो इन (सवनेषु स्तोमेषु उक्षेषु) सद्यो वाऽन्नो भौर गीर्वयं (रायीष्य) क्षम्य ग्राम वर ॥ ४ ॥

(मातरा यस्त्वं म) मताय वक्षेदी पात्र वर्ती है अपतर (सोमपां गोपात्प वीनेवते (वर्य शायसस्पति) निष्ठक वक्षे भाती इश्वर (मतया रिहन्ति) रुद्रवं वर्ण वर्ती है । पात्र वर्तो है ॥ ५ ॥

(सा भग्यसः प्रस्तुत्व दि) इन्द्र इव वृद्धवामिन्द्र भान

निरु हो (तम्या मद्वे यथसे) शरीरसे वह बनके लिये वस्त्राव बन । (सोलातार निदं करः) इति वृद्धवामिन्द्र निभा ही ऐसा ब कर ॥ ६ ॥

दे इन्द्र ! (यथ त्वायवः हविष्मस्तः जरामोह) इम देहा भायद वर्के एवि भैरवे देही स्तुते वर्ते हैं । दे (वेष्टा) वसानेवते । (वत त्वं अस्मयुः) त इमारा वातवद हो ॥ ७ ॥

दे (इरिष्यिषः) चोरोंसे पार करनेवस । (मा भारे अस्मद् मुमुक्षुः) उन्हो इमे ए न छोड (वर्पाह वीहि) पाप आ । दे (स्वधाय इन्द्र) अपनी पाप लिये रक्ष इन्द्र । (इव मस्त्व) यहा जाननित हो ॥ ८ ॥

दे इन्द्र ! (वैष्णवा पूर्णस्तु) वह वसोदामे भी ऐसा लियके दृष्टिप इस सत्त्व है ऐसे वडे (वर्हिः भासदे) भासन पर भैरवन् लिये (सुखे दये) तुराळाह इवमे (त्वा वसीकृ यवाता) दुसे इन्द्र तामे ॥ ९ ॥

१. मद्रिषः— वृद्धवामी भवता पदार्थी लियेवे इतेवामी

२. शूर— शरीर

३. तुराळद— तुराळी भवतेवामी

४. शायसा पतिः— वृद्धवामी

५. पशु— वसानेवामा

६. दत्तिप्रियः— वैष्णव भैरवनेवामा

७. त्वं धा-य— निष शर्वी दुष ।

[सूक्त २४]

(ज्ञायि । — १-१ विश्वामित्रः । देवता — इन्द्रः ।)
(ज्ञ ३५२।६ १)

उपै नः सुरमा गैहि सोमसिन्दु गवाच्छिरम् । हरिम्या यत्ते अस्मयुः ॥ १ ॥
तमिन्दु मदुमा गैहि वृहिष्ठा ग्रावयिः सुवम् । कुविक्षुप्य तुष्यवैः ॥ २ ॥
इन्द्रसिंखा गिरो ममाच्छागुरुपिता इतः । आवृते सोमपीतये ॥ ३ ॥
इन्द्र सोमस्य पीतये स्तोमैरिह इवामहे । उक्षेयिः कुविदुगमत् ॥ ४ ॥
इन्द्र सोमाः सुवा इमे चान्दविष्व चतुक्षयो । चुटे वाजिनीवसो ॥ ५ ॥
विद्या हि स्वा चन्द्रम वाङ्मेषु दधुष कंवे । अष्टा ते सुम्भामीमहे ॥ ६ ॥
इन्द्रसिन्दु गवाच्छिरं यवाच्छिरं च नः पिष । आगस्या वुर्येयिः सुवम् ॥ ७ ॥
तुम्भेदिन्द्रु स्व ओक्षेषु सोमै चोदायि पीतये । एष रारन्तु त हुदि ॥ ८ ॥
स्वा सुरस्य पीतये प्रश्नमिन्द्र इवामहे । कुविक्षासौ अवस्थयवैः ॥ ९ ॥ (११)

(सूक्त २४)

हे इन् । (न सुरे गवाच्छिरं साम्यं) इवारे निकारे
एव मित्रावं चोमरण्डे समीक्षा (हरिम्यावं) दुमरे ले वे जोडे
याव (उपै ना गहि) आभो (यः ते समायुः) वा
तेरा इवारे वाव आनन्दा तमाव है ॥ १ ॥

हे इन् (वृहिष्ठा ग्रावयिः सुवत्) वामपर इव
सर्वस्ते दृढे (ते महं ना गहि) वष आवन्दशावद सोम
रक्षके दृष्टये आभो । (कुवित् तु समस्य तुष्यवैः) इच्छे
गुरु देवताम बृहुत है ॥ २ ॥

(इवा इपिता मम गिरा) वषादे भेदो मेरी सुतिवा
(इवाया इन्द्रं चक्षु भगुः) इव लद्द इन्द्रके वाय सीधी
पर्युषी है (आवृते सोमपीतये) बहुदे इवर तामे व्याव
वाय कंठे लिप ॥ ३ ॥

(इन्द्रं सामस्य पीतय) स्त्रधं संमोक्ष पीतये लिपे
(श्वोयिः इह इवामहे) भोक्षोष वहा इम तुकाते है ।
(उक्षेयिः कुवित् आगमत्) रात्रेवि तुकातेर इह
बृहुत वाय वाया है ॥ ४ ॥

हे (शतक्ता याजिनीवसो इन्द्र) ऐसी वर्ष दरम
वामे देवाः इम नेत्रे दर । (इमे सोमाः सुवाः) ये
वामे इव नेत्र है । (ताप जटे दृष्यिष्व) वरयो
ऐसे भास ॥ ५ ॥

हे (क्षेये) वानी । (त्वा घनज्ञये) इसे हम वर्षे
वीतेवस्ता लोर (यामेषु दधुर्व) दुमामे बुद्धे साम्य
पर्येवामा (विद्या) आनते है । (मध्या ते सुम्भ ईमहे)
इच्छमे दुम्भे दृष्ट योष्टे दृष्ट ॥ ६ ॥

हे इन् । (इमं न गवाच्छिरं यवाच्छिरं च) इव
इवारे आवृत्य मित्रावं चतु भित्रावं (कुवित् सुवत्)
सम्भानोने निकारे सोम रक्षये (आगमय पिष) आभं
हो ॥ ७ ॥

हे इन् । (स्वे ओक्षये) आरे इवामये (वीतये)
वीतेवे क्षिते (तुष्य इव सोमै चोदायि) ऐसे क्षिते वायी
भरा है । (ते हुदि एष रारन्तु) वह तेरे हुदमें आभं
हो ॥ ८ ॥

(ममस्ययः कुविक्षासः) आभी द्वारा आदरेते
कुवित् वानी हम (सुतस्य पीतये) लिपां चोमरण्डे
वीतेवे क्षिते हे इन् । (मध्ये त्याँ इमहे) दृष्ट उत्तरं
वीतये हम तुकाते है ॥ ९ ॥

हे इन् मीने क्षिते वाय वीतये—
१ शतप्रत्यु— देवते इम देवताम वीं
२ वाजिनीवस्तु— देवाः वामवामा सम्भी इव
वायवा वर्णवामा देवाः संवाम दर्शनवामा ।
३ घर्मज्ञया— वरयो वीतये वन व्यवेक्षामा

[सूत्र २५]

(अविः — ३५ प्रत्ययः, ७ अष्टकः। दृष्टा — दृष्टः ।)
 (अ १८४०-६)

अस्मैवति प्रथमो गायु गच्छति सुप्रापीर्निद् मर्त्यस्तवेति भिः ।	
तमित्यूणं खि वर्तुना मर्त्येष्मा सिद्धुमाप्ता प्रथमितो विचेतमः	॥ १ ॥
आपा न देवाहर्व यन्त्रि हात्रियेत्सुकः पौशनितु रितिर्तु प्रथा रजः ।	
प्राचेन्दुषासुः प्रथमिति दक्षुयु भ्रद्रप्रिप वोषपन्ते धुरा इप	॥ २ ॥
अधि डप्तोदधा उक्तयैः पचो युत्युषा मिथुना या संपूर्षिः ।	
अभयतो धुर तेऽप्ति दुप्तिति सुटा प्रक्षिपद्वेषानाय सु-उत	॥ ३ ॥
आदद्विराः प्रथम दृष्टिर वर्ष इद्वाप्तयैः शम्पा य सुकृत्यपा ।	
सर्वे पूर्णः सर्वेविन्दन्त शोवेनमस्याशन्त गामैन्तमा पर्यु नरः	॥ ४ ॥

५ पाजप दप्तर— दुर्दामे पद्धति

५ विधि — दृष्टदीप्ति व ग्रन्थाभासी एवं मरिष्यमें
दशा व रक्षा प्रबोधनम् आवेदयात्।

६ प्रथमः— गुरुत्वं दात्रम् चामुद अनुभवी ।

શાસ્ત્ર રસ નાણ ક્રમાંકી રીત—

१. गतान्त्रिः— पाठ्य रूप असरात्मेभित्तिदा जाता वा ॥

१० मद्दा— आर इसारी उ पाठ वडानगामा

१ प्रायमि एवः— एवम् २ १८

१५ जन्म विप्रवास — बटम खाले वा. ८।

(四二四)

१८। (तथा उत्तिपि) चीड़ वार । । अवार्ति
माया । २ । १८। इन्हें बहुप (अद्यावृत्त मोक्ष-
प्रयास गत्तिपि) जारी करे । अब वे चीड़ वार
करे । ३ । इन् प्रयोगिकाएँ वृत्तिपि इन्हों
ने वृत्ति वार वा १८ । (प्रयोगिमिश्रुत आमने विन-
शिष्ट आद) । ४। इन्हें वृत्ति विनशिष्ट
वृत्ति वार दी जाए ॥ १८ ॥

(दूसरी बायावान) इन्हें बहुत हासी कर रही
हैं तो इसके बायावान का इसका उत्तर दें।

बली है। (यदा रज वितत) जग अवाहन राह
इप दुमा है यह बह टी (यदा पद्यति) राह
रामध बास भो दिनी हम इनो है। (इपु द्यावा
प्राये म लयेति) रख जा रखनाता दह जग
इनो है। (बद्धप्रियं परा इप आपयत) इप
विकावि विव है बाहा दरो गवाव वह दह बहन इनो
है। ३३

(महिलाः आदू प्रथम दया इधिर) ५८ ३
उत्तर भवते वसुपूर्ण वाचम् १८८ (व इत्यादिव)
तेऽपि वर्षाय वर्षीय १८९ (एकाशयो वाचम्) वाच
तेऽपि वर्षाय वर्षीय १९० (वर) ४ ५ ६ वाच
तेऽपि वर्षाय वर्षीय संख्या वाचम् १९१ ५ ६ वाच
वर्षाय वर्षीय १९२ वर्षीय १९३ (वर वाचाविद्या)
तेऽपि वर्षाय वर्षीय १९४

यद्युरपूर्वा प्रथमः पञ्चस्तुते ततः स्थूलो ब्रह्मपा वेन जावनि ।

ਆ ਗਾ ਬੀਬਦਖ਼ਨੀ ਕਾਵਿ: ਸਚਾ ਧਮਸਤ੍ਯ ਜਾਰਮਸਰੈ ਪਕਾਮਦੇ || ੫ ||

એવી ભર્તાપસ્થાયે બજ્જટફોં થા સોકમાઘોપતે વિધિ ।

ग्रावा यत्र बद्धति काष्ठलक्ष्यं स्तुस्वेदिन्मौ अभिपिस्वेषं रण्यति ॥ ६ ॥

प्रोग्रामी वृत्ति वृष्णि इयमि सुत्पर्या प्रयै सुशस्ये हर्यस्य सुभ्येषु ।
इन्द्र चेनाभिरिह मादपस्य धीभिर्विश्वामिः सुत्पर्या गणानः ॥ ७ ॥ (प. १०।१०४।५) (१०)

(मर्यादी पढ़े। प्रथमः पदा तते) मनवनि पहिले
प्रोत्साहनी फैलाना। (ततः प्रतिपादा वेळा सूर्यः भाजनि)
पश्चात् ग्रन्थाङ्क तेवसी सूर्यं प्रकट बुझा। (काम्यः दण्डवा)
स्वर्णा शोः भर भाजन्) किमुत्र उठानि इह बहुके साथ
यौवेष्टि बासाया। इह दण्ड (प्रमाण्य जाते भूमुक पञ्चामष्ट) किम्बार्थे कार्यं परमेष्ठ बत्तच हुए अस्तरहरी यह कर्म इम
करते हैं ४५॥

(यत् वर्द्धि स्वप्रसाप्य शूक्रते) यत् कुहा। उत्तम
वर्षे वर्णेते लिमे काप्रते हैं (मर्क्षः चा स्नोक विविध
व्याघ्रायते) वप सूक्ष्म वोक्तेवादे अन्तेस मृत्युशो सुन्मोहर्यै
वापिन वर्तते (यज्ञ कादः रुक्षपदः प्राचा यदस्ति)
वहा किमुल स्नाता भेत्ता पात्वर [शोक्ष शूक्रतेषु] जग्न वरता
है (इत्यः तस्य भग्निपित्तेषु) इत्य उक्ते समीप रहमे-
भ (रुचयति) चान्तः स्नात्य ॥ ५६ ॥

ऐ (हयंस्य) सान पाणीके इन । (धूपो मुम्पे)
वल्लान् दुष्ट (सत्यो डमो योरि) उत्रे वास्तव वर्षक
दोष पानके नाम (प्रथ म इवारि) बाके विष में प्रति
दरण ह । ऐ इन । (भेषामि इद माह्यस्य) शुद्धि-
दोष वटी वानप्रिण दो (विभामि धीमि) उत्री
तु दोष वटी (शास्त्रा गुणान) एविषे उत्र द्रुष्टारी
स्तुति दाती ह ॥ ॥

इस सूचीमें दार्शन वीरता के इनमें हैं—

^३ द इन्द्र ! तथ उत्तिः सुपारीः सत्यः पराया
यति गाय प्रयमः गायत्रि— दे इन्द्र ! तेऽपि तुष्टाम्भ
गुर्वा न दुष्टा ब्रह्मप याता भैर यातोवात्मेषं पक्षिता दास
कामा दे

८ दद्य भर्वायमा यसुना युणसि— ला नुभदा
त वर्ती बन्हे अद रता दे ।

३ प्रितत अथ पद्यमिति— तसा १८८ शास्त्रम् चर्वो होता है

बोरे फैल रहा है यह सब देखते हैं। चारों ओरसे दूर तम
एक चरख है यह सब बाजते हैं।

४ दधासः देवपुरा ग्राम्ये: प्र पदमित— देव रक्षा
प्रस फलेकी इच्छावालेभ सौभे मानोंके लाप के बाते हैं।

५ प्राप्तिर्थ शोषणम्— शान परंप्रेम रक्षणात्मक विवरण है।

४ असंयत। ये बत सात पुस्तकों—वा वर्ष
दिल है वह भेज निम्नमें रखा है और पुष्ट होता है।

उम्मदा जाका पड़मानाप—पड़मान
इकेसाली बाँध प्राप्त होती है।

१ ऐ इद्याप्रयः सुकृत्यया इन्द्रियाः— वो असि प्रदैव
परके पढ़ रहे हैं वे भासे तुम रसेव शामिल इद्याप्र रहे ॥

१० नवा पद्मे अस्त्रास्तं गोमस्तं पशु सर्वे भोजवर्षे
समविष्टस्तु— शीर मंता धार परिके बोगों धारों और बड़े
आरिए इक मोप मौजन व्याहि अपने कहरों में करते हैं। अभियोग
में मोप अधिसूचि शारतोंपुर इस जिले।

१५ अथवा पद्मः प्रथमा पद्मा ततो— वसनि
पहोंसु वसनत् मार्गं देशम् । सो वैकल्प वसना मार्गं वसना ।

१२ काण्डः उद्धारा सच्च याः प्रा भास्तु— एव
पुन वहनाने लाप येद्देहं भी अनादि ।

१४ देवमूल प्रयामद्वा— भरत देवम् हम यह
देहे।

१५ देवमूल इन्द्र। सरायो सुतस्य इमां पीति
पृथ्वी तस्य इवमिं— देवो नैव त्वं इति। तत्त्वं संग्रहणा-

१५ संस्कारात्मक— यह संस्कारात्मक है ऐसी एक

[सूक्त २६]

(कार्यि — १-३ गुनाशेषाः ४-५ मधुषकुम्हा । देवता — इन्द्रः ।)

(अ १५०७-१)

योगीयोगे तुवस्तरु वाजेषावे हवामहे । सखाय इन्द्रेमूर्खे ॥ १ ॥
 आ घो गम्यद्वि अवैतसद्विशिर्णिभिरुतिभिः । वाजेभिरुर्घ ना हवेष् ॥ २ ॥
 अनु प्रस्त्रौक्षो द्वे तुविप्रति नरम् । य ते पूर्णे पिता हुय ॥ ३ ॥
 युज्ञन्ते युज्ञमृत्य चर्तन्तु परि तु सुशुप्तः । रोचन्ते रोचना दिवि ॥ ४ ॥ (अ १५०१-१)
 युज्ञन्त्यस्य काम्या हरी विवेष्या रथे । शाणा धूप्ण नुषाहसा ॥ ५ ॥
 कुतु कुण्डकुत्सु वेष्टो मयो अपेक्षांसे । समुपद्धिरजायथा ॥ ६ ॥ (१५६)

[सूक्त २७]

(कार्यि — १-६ गोपूर्वक्यवस्थितिः । देवता — इन्द्रः ।)

(अ १५०८-३)

यदिन्द्राह यथा स्वमीर्त्यु वसु एक इत् । स्त्रोता मे गोर्खसा सात् ॥ १ ॥

(सूक्त २८)

(सखाय) इम यत् मित्रविलक्षण (योग याग) प्रसेव
 उत्तेष्यमे (वाऽव वाऽव) प्रसेव संपादये (तवस्तर) अविष
 विकाळ (इन्द्र) इन्द्रः (उत्तर इवामद) इमार्ती रता
 वर्तमे तिर तुक्ताते है ॥ १ ॥(यदि अवश्य) वरि वह इमर्ती शावना द्वितीया तथा वह
 (सहस्रिणीभिः ऋतिभिः) इवागी संहारन समयक्षे भौर
 (वाजेभिः) वतोऽह साय (वा हुये उप भा गमत्प्रथ)
 इमर्ती शावनादे यज वर वह ते वैदेह भा शावन्य ॥ २ ॥(प्रत्यन्तम् योगतः) पुराने परिवित देवे भौर वर्ते यापु
 (तुष्णि प्रति नरं मनु दुव) वृत्तेष्य शावना वर्तेषांते
 तेन इन्द्रा मै तुक्ताते है (यते) पिता तुष्णि (पिता)
 भौर वित्ते (धूव द्वे) वित्ते तुक्ताते वा ॥ ३ ॥(तात्पुर्या परिवर्तन) तात्पुर्य वाऽह भौर पूर्ववेत्तन
 वित्त (भौर्य इव तुक्ताति) तवस्ती तुर्विद्य भौर वाऽहै ।
 (तेवता तिविदोवत) वेतिष्ठवत इत्य तात्पुर्य ॥ ४ ॥(मध्य रथ विषयम्) तात्पुर्य वाऽह भौर
 (योग्या धूप्ण दूष्यादूसा काम्या हृषा युज्ञति तात्पुर्य
 वित्ते या वैदेह से वेत्तने दो योग वित्तन ॥ ५ ॥(भौर्यप वर्तु इवपद्) भौर्याद इत्य भौर (भौर
 यस वा) विवेष्या एव वस्त इत्य है (मध्याः)
 वाऽह । (उपाद्धासे सज्जायया) वाऽहो वाऽह मूर्ख
 वर्तम देवा है ॥ ६ ॥

इम सूक्तम् वीरलाङ्ग मंदिराम व है—

१ सखायः योगे योग वाऽव वाज्ञे ऋतये तपस्तरं
 इन्द्र इवामहे— इम यत् एक विवाहे मौग एक स्वामपर
 विलक्षण प्रसेव संपादये तथा प्रसेव धम्भ व्रतेष्यम् इमार्ती
 वृत्तेष्य तिर विकाळान् इमर्ती यावतात् तुक्ताते है ।२ यदि अवश्य सहस्राणामिः ऋतिभिः यात्मिः
 मः हुवे एव उप भा गमत्— याद वह इमर्ती प्रवक्षा
 तुक्ताते तो इवागी युरहा शावनोऽह साय भौर वतोऽह वाय वर
 इत्य ते द्वयीप तिर वह भा शावना ।३ य ते पूर्णे पिता द्वे प्रत्यन्तम् भावातः तुविप्रति
 भौर मनु दुव— विव दुव भौर विव न तुक्ताता वा वह ते
 पितीति भौर प्रवक्षन वर्ते यापु भौर तुक्ताता युज्ञति वाऽहन् ॥
 वाऽह इत्य वीरलाङ्ग मै तु लाहौ ।४ भौर्य रथ विषयम् तात्पुर्य धूप्ण दूष्यादूसा
 काम्या हरी युज्ञति— इत्य रथ वाऽह भौर वाऽह
 या वाऽहै न वाऽहात वर्ते यापु भौर वाऽहै५ भौर्यवे तुक्तु इवपद्— भौर्याद वाऽह वा भौर
 वर्तम देवा है ॥ ५ ॥

६ भौर्यस पदः इवपद्— इवपदः वाऽह वा भौर

(सूक्त २९)

इवपदः (मध्यारथ) वैदा वैवाहा (पवृ यद वस्त
 वर्तु इवपद्) विव वस्ता भौर वाऽहै ॥ ६ ॥ भौर्या

शिर्षेयमस्मै दिसेत् श्रवीपते मनीषिणे	। यदुह गोपति ॥ साम् ॥	॥ २ ॥
धेनुरुद्ध इन्द्र सूर्या पर्वानाय सुन्तुते	। गामये पिष्युषी दुहे	॥ ३ ॥
न ते बर्तास्ति राख्यस् इन्द्र देवो न मत्येः	। परित्पर्ति सुतो मुभम्	॥ ४ ॥
सुव इन्द्रमवर्षयद्यग्निम् अवर्तपत्	। चक्राण ओपुष्ट दिवि	॥ ५ ॥
प्रापुषानस्वं ते वृष्य विश्वा धनीनि त्रिगुणः । ऋषिमिन्द्रा वृणीमहे		॥ ६ ॥ (१७२)

[सूक्त २८]

(कल्पिः — १ ४ गोपूष्टप्राप्तसूक्ष्मिन् । देवता — इन्द्रः ।)

(क ७ १४७-१०)

वृषुन्तरिष्यमतिरुन्मधु सोमस्य रोचना	। इन्द्रो यदमिनद्वलम् ॥ १ ॥
उद्गा ओमदक्षिरोभ्य आविष्कृत्यनुहा सुरी । अर्द्धाश्वं तुदुद वृलम्	॥ २ ॥

होइ तो (मे स्वोता योपज्ञा स्यात्) देह द्वादा दीर्घो अ
सारी हाया ॥ १ ॥

यत् यद्यो गोपति स्याम् । यदि मैं योज्ञा कामी
होइ है (शर्वीपते) उक्तिए जामी इन् । (असौ
दिव्यर्थ) इहो चन और (मनीषिणे विरसेय) मनव
बोहडो मी है ॥ २ ॥

हे इन् ! (सुख्यत यज्ञानाशय) दोमवाची वज्रानके
द्विषे (ते सूर्या अनु) ऐरी वज्रपिणी थोहो है । (पिष्युषी
या अव्यु दुहे) यह वृष्य देवर और दोहा है ॥ ३ ॥

हे इन् ! (मदेषः स मर्त्ये) व देव भार वा ही मर्त्य
(त राप्यम वर्ती भस्ति) हेरे वाम्बला उभेजाका और
है (इत्युतः यत् मर्त्ये दिवसमि) वह रुहि वर्तेनर त
भन देना चाहता है ॥ ४ ॥

(पथः इन्द्रं अवर्षयत्) वहने इन्द्र यज्ञात्मवदाना
(यग् भूमि व्यपर्तयत्) जो इन् भूमिये वज्रानक वज्राना
है (विषय मापदी चक्राण) और यज्ञावें भनना सामर्यं
प्रद देता है ॥ ५ ॥

हे इन् ! (शानुपालरूप) वर्तेनर और (विष्वा
चनामि तिर्युपाः) यह चोहो लोनेवास देहे नेहि (ते
कर्मे) तु चा इये लिने कैया (या तृष्णीमहे) इन मार्गों
है ॥ ६ ॥

इन्द्र यज्ञ नीबेह लोनामिके वर्त होता है —

इन् । त राप्यते पर्ती भस्ति
देव और जामी वस भैरे
वर्तेनर विष्वामि वज्र

२ यह इन्द्र अवर्षयत् — वह इन्द्री महिमा वदायारे
३ भूमि व्यपर्तयत् — इन्द्रने भूमिके अविष्व वर्षाम
प्राप्ताना है

४ दिवि गोपति वदायारा — इन्द्रने तुलेत्वे अवा
सामर्यं प्रद दिवा है ।

५ हे इन्द्र ! विष्वा भनामि तिर्युपाः पाषुपत्यस्य
ते कर्मि मा तृष्णीमहे — हे इन् ! सब चर्वांधे विष्वसे
अस वर्तेनामे और अली महिमाव वहतेवामे देह रथं देव
जस हो वह हाया मींग है ।

प्रथम भार दिवीय वंशमें ते वसा मैं बहि वन्दे क्य असी
वन् ता मैं वसा वाम कहेणा देवा कहकर इमरों मत्य इन्द्री
कर रहा है । वह माझेत्वा एक वत्तम वदायार है । वह
स्त्रीता गीर्भेष्य रामी होता । वह चाक्ष भी इन्द्री वर्षीयी
वर्तेनरका वज्रान वज्र है तुलीय मंत्रमें पुष्प वाम और
चेता है । इसमें गामके वर्तमें योगा विष्वा है ऐसा
वसक्षमा योग्य है ।

[सूक्त ८८]

(इन्द्रः) इन्द्रने (सोमस्य मदे) योदेव वंशेव वत्तम
एव वदायारे (वर्षतिर्त्य) अवलीधु तवा (राप्यता)
प्रशालित लामोध्य (वर्षतिर्त्य) पा लिया (यत् वर्ती
ममितत्) और तप वक्षपे दोहा दिवा ॥ १ ॥

(भंगिरात्याः) अवेदोह लिने (शुदा सटीः गा
मापिष्वर्षवन्) युहामे रामेवामी वामी वाम विष्वर्ष
(उत् भा वामत्) वर्तम दिवा और (यत् मर्त्यों
तुमुरे) वर्तमें योग्य गिता दिवा ॥ २ ॥

इन्द्रेण रोचना युवो इहानि हितानि च । स्थिराग्नि न पराणुदे ॥ ३ ॥
अपामूर्मिमदभियु स्तोमे इन्द्राजिरायते । वि ते मदा अराजिपुः ॥ ४ ॥ (१७३)

[शक ६९]

(शाया — १-५ गोपूर्वक्यम् वस्तु किम् । इवता — १४३ ।)
 (अ ॥१४२-१५ ।)

(इम्प्रेण विद्या) इम्प्रेण पुढे स्वानन्दे (राधमाह इन्डोनेशिया इन्डोनेशिया में यह) चम्पलेस के बहुत पुढ़े वर खारिद विद्या रेते (स्प्रिटार्मि न पराण्युदे) रिपर रिम आर रेते इत्यादी या संस्कृते ०३ ॥

देख। (धर्मी ऊर्मि इव) यत्तेषी तारे दमान
 (स्त्रामः मदव इव) पर लोक आनन्द बहाता हुआ
 (भित्तिरप्ते) वै प्राप्त शार भा रहा है, और उससे (ले-
 मदा: हि भरात्प्रियः) दें आनन्द निषाप्त है ॥ १४ ॥

प्रीसेन्स एंड स्टैट-

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

• इसे सर्वांगीन उच्चते = इसे एकांगीते शिरा ।

३ वसन्ताच्छवियुग—हरेन वाराणी प्रदेशादि।
४ अंतिमोदया गुहा सती गा आपिष्ठक्षवद् भाव
भजत—[वहने गोरे पदां दर जर्मी गुहामे दें दरहें
रथी थीं] तज मानोदा भोमरा कावथा देके लिम इन्द्र
गुहामे उमडा पहर निकाला भट्ट भागराहे पाव स बरेहो
लिमे दंताय।

४ इन्द्रजित रोपना रम्भामि रहिनामि स्थिरा
पि न पराषुदे— इन्हें क्षेत्रमें वसतीरा रहना राजा-
मि मि ति उनके द्वया हैं दया ही यता। [बड़ा व
पर भवाना ही है।]

(संक्ष ४१)

४३। (ये हि लाम्यधनः) सोमो ह्राम विद्युत
पद्म वरण्हे देषा तु दे भर (उक्तव्यधनः) शुभिं व
विद्युत वस्त्र वरण्हे देषा है। और तु (सामूहीक उत्त
पद्मधनः) संतानो द्वाम्याव वरेष्याम् है ॥ १० ॥

(चेत्याना हरी) बालपने था जहे (इन्द्र सोम
पेयाय धक्षतः) इन्हे सामग्री किय ह बाटे है।
(सुरापाल यह दप) बाल याता इन्हें महजे पाप से
बचाया ह ३।

हे श्रद्ध ! (नमुक्तः सिरा) तुमने नमुक्तिहासिर (यर्पा
फेनत) बचोड़ी जागे (डृष्टवत्यः) रखाड़ रिया ।
(यह विभाषा: स्मृप्तः अथवा) एव एव सत्यनामे
जोटा ॥ ३ ॥

हे ४३ । (यां भावद्यसता) पुमादपर पद्मेभा इष्ट्य
कर्मेषाम भर (मायामिति) उपर्योगे (कारित्युप्सत) किंचन्द्रेभी इत्याक्षेत्रे (इत्युपर्य) एवुभेदे तदे (भय
भयुपनिधाः) मे च तिरा दिशा ४४

५ एवं । (भयुम्भां संसद्) मोहदान न रत्नेश्वरी
समाप्ते (विद्युर्धी रथवाण्याः) दूषि तिष्ठ वर्क
पितृ दिसा भार (सामपाः उत्तरा भपन्) शोमरु
दीप्त दुष्प्रियी हा पक्षा ॥ ५ ॥

१३ अस्यां स्वर्णे विष्वे संवत्सर ५ है ।

१८ रात्रि । स्लोकाणि भद्रहत्—६ रात्रि तु जाता
पर्वते विश्वास विद्युते ।

१ स्तोमवधन उक्तव्यनाम— साक्षिणी इति वधन
प्राप्ता है।

१ सरापा— वाय एव रेता

४ नमुन्ये। दिएः अपां पत्रेन हम्म ! उद्यतयः—
नमुनामा पुर वस्त्रे जाहने हम्मने वकार ऐह दिए।

[घट्ट ३०]

(जपि — १- एवं सवहरिष्वा । देवता — इहि (इम्बा) ।)

(ग्र. १०३३।१-५)

प्र ते मुहे विद्यें श्रसिप् इरी प्र ते वन्वे बुनुपो इर्युष मर्दम् ।

घृत न यो हरिमिथाहु सेचतु आ त्वा यिष्वन्तु हरिवर्षसं गिरः ॥ १ ॥

हरि हि योनिमुमि ये सुमस्वरन्दिन्वन्तो इरी द्विष्यं यथा सदः ।

आ य पृथग्नितु हरिमिन्ने षेनम् इन्द्राय पूष्प हरिवन्तमर्चत ॥ २ ॥

सो असु वज्रो हरितु य आप्सो हरिनिकामो हरिरा गमस्त्वोः ।

पृथग्नी सुभिष्ठो हरिमन्त्युमापक् इन्त्रे नि रूपा हरिता यिष्विष्ठे ॥ ३ ॥

द्विष्यि न कुतुर्विष्य धायि इर्युषो विष्वचुदज्ञो हरितु न रसो ।

तुदद्विं हरिमिष्ठो य आप्सुसः सुहस्त्रोक्ता अमवदर्मिमुरः ॥ ४ ॥

ग मुखि - वह रोग वा दोषदृष्टि वा अस्त्री भरणी वह लोकता नहीं । अपां केना - उम्रुत आप अस्त्री की आप वह लोकत है यिष्विष्ये पूर्णोष रोग वह होता है ।

५ यिष्वा स्वप्ना सवहय — वह उम्रुतमोष्ये वीरोक्तिया ।

६ इम्बूष्प वह उम्रुत्या — वक्तव्योष्ये लीजे यिष्य दिवा वह निष्या ।

७ अप्युम्भा सवहय विष्वर्ती अप्यवायवा — वक्तव्योष्ये उम्रुत्ये निष्वद कर दिवा ।

८ सोमपा वक्तव्य भवत् — येषमवायव वह स्ववलपर वहे ।

अपां केना उम्रुत आप वह लोकत है, उपरे तमुखि नामक हैं वह होता है । वह लोकत प्रवर्त है । येषोष्ये इत्या विष्वार अना वा होते ।

(सूल १०)

(ते हरी) ऐरे योनो योदेष्ये (यो विष्विष्ये प्र असिप) वहे वहमे मैं परेषा भरता है । (ते वनुषः इर्युषं मर्दं प्र वहमे) दुष्टे इ अवश्ववती रसमे मैं तेवार भरता है । (पृथग्न) वो के उम्रुत (या हरिमिष्यि वार लेचते) वो लेचते वक्तव्य येषदे वक्तव्ये धीतता है (हरिवर्षस्त्वा यिष्या वा यिष्वन्तु) ऐरे उम्रुत इत्यामे दुष्टे हमारी द्युतिना प्रवेष्ये हो ॥ १ ॥

(इहि योनिष्ये हि अमि समवायव) वो अमि

इन्द्रके व्यामनके मूल वक्तव्य वह लेचते सुहि वहे ये (यथा दिव्यर्ष सदः हिष्वग्नु वहरी) क्षमोऽहि दिव्य वह स्वामके वाप इत्यो ये ही लोके जाते हैं । (ये हरिमिष्ये व येवता वा यीर्याति) यिष्विष्ये लेचते उम्रुत ये वह वहती है उव (इम्बाय हरिवर्षसं उम्रुत मर्दत) इत्ये उत्तोषके लिये लोकेनामे वक्तव्ये पृथग्न वहो ॥ २ ॥

(सः अस्य वक्तव्य) वह इ इम्बा वक्त (हरितः या आपस) नीवा और औवायव है (हरित लिहाया) ये प्राय इत्य इत्येवाता वह उम्रुत्ये वह यारा है (यहि वा अमस्त्वो) मुक्तानीमि वह इत्य इत्य वज्जे वक्तव्यता है । (उम्रुती द्युषिष्या) तेवारी उम्रुत हुव वा लोकेनामे इत्य (हरित-मस्तु-सायवः) उम्रुत प्राय इत्य वरेषाके लेच उम्रुत वालये वार वरेषाके (इत्येहि हरिता यापा यिष्विष्ठेरे) इत्येहि और उम्रुती इत्य लिये हैं ॥ ३ ॥

(विष्यि इर्युषः केद्वुः यमि यायि व) उम्रुत्ये उम्रुत वक्त लैसा व्यापते हैं वेषा वह (वज्जा हरितः रंडा या यिष्ववतु) उम्रुत्ये कव वालो लैसे वक्तव्य है (या आपस) हरिवर्षिष्य महिं द्युवद्) यिष्य औवरके लिये उम्रुत्ये लालेषे वक्तव्य वरेषाके इत्ये याहि वामक उम्रुत्ये यारा । तत् (हरिमिष्यरः सुहस्त्रोक्ता अमवदव्) इत्ये वह वह उम्रुत लैवायामा हो गया ॥ ४ ॥

स्वर्वमहर्यं उपस्तुतुः पूर्णमिरिन्द्र इरिकेश्च यन्मिः ।
स्य हर्षसि तव विश्वपूर्वय् मसामि राखो इरिवात् इर्षवम्

[सूक्त ३१]

(जपिः — १-५ वरः सवहरित्वा : देवता — इति [इत्यः])
(ज्ञ १०४५६-२०)

ता त्रिष्णे मुनिद्वं स्तोम्यु मदु इन्द्रं रथे वहतो हर्षता हरी ।

पुरुष्यस्मै सवेनानि हर्षत् इन्द्राय सोमा इरयो दधनिरे
॥ १ ॥

अर्त कामाय् इरयो दधनिरे स्थिराय हिन्दुन्हरयो हरी मुरा ।

अर्वद्विर्यो इरिमिर्जोपमीर्यते सो अस्तु कामै इरिवन्तमानमे
॥ २ ॥

२ (हरिकेश इत्यः) मुनहरी वासोवत्त वन् ! (पूर्णमिः)
परम्परिः उपस्तुतः) पूर्ण समवके वासद्वाने रथति दिवा
हमा (रथं स्य महर्यंया) तू दी स्तुतिके लिये वेष्य वा ।
(तथ विश्व उपस्तुतः) वही उप स्तुतिके लिये (स्वर्वमहर्यसि)
तू सीम्य है । ३ (हरितात्) वे हुए हरय वरेवत्वात्म
परिद । (हयत राघः मसामि) तेवली वन लेता ही
है ॥ ५ ॥

३ एव सूक्ष्मे इत्यो वासतादा वनव वन इतिम—

४ इत्याय हरितात् शूरं भवत— इत्येव एवुभ
स्तो वाही धूमा वही ।

५ भव्य राघः हरिता भायसः हरिः निकामः—
६ इत्यथ वन मुक्तवे सुपा मित औपरवत्त ह वन एवुभे
एव वरेवता वे इव वरण विव है ।

७ इति॒ या गमस्त्वो— वह एवुभा हरय वरेवता
वन वामो (वामो वह वहित्वा है ।

८ पुर्णी सुमित्रः इरि मध्यु-सायका— वह इत्य
वरेवता वाम वाय वाल वरेवता एवुभे प्राप्त हरय
वरेवता क्षम्या वाम लिलू वह एला है ।

९ इत्येव हरिता रूपा निमिमिभिरे— इत्येव
पर्वते स्य रहे है ।

१० दिविः हयतः वहुः म भविः घायि— वामादेवे
मुख्य वन वन एव [वेता हरया वह वन वह वहा है ।]

११ दिरितः वगः राता म विष्यवस्तु— गुरुर्वचा वह
वेवते वना ।

१२ दिरिमित्रः यः भायस भावि तुरदत्— मुरा ॥
वामा वायवनान् एवुभ वने ऐताव वनव भवितव्य
वरेव एवुधे वामा ।

१ दृरिमित्रः सहस्रशोकः ममवत्— मुरादे मधु
हुमा वह वह वह वेवते वमवनेवामा तुमा ।

२० त्वं त्वं व्यवहर्यंया— तू दी स्तुतिके लिये वस्त है ।

२१ स्य हयसि तथ विश्व उपस्तुतः— तू स्तुतिके
लिये वायम है वह स्तुति तुमहारी है ।

२२ हे हरितात ! हयत मसामि राघः— देवता
त्राप हरय वरेवताओंसे प्रक्षिद् इत्यः ! वेता वन वर्वतीव है ।

२३ एव सूक्ष्मे इत्यः के लिये इरि-केश वहा है ।
मुक्तवे एवके लियेवामा इत्यः है । मुक्तवे वामोवाम सेवा वहा
हाते है वहां वह वीर है । वामादीव उदितावामोंसे हिन्दूप
केली वहते है । वही भाव इति केश में दीक्षा है ।

(सूक्त ३१)

(ता हयता हरी) व वामों लिय वाड (यज्ञिर्य
मनित्वं स्तोत्र्य इत्यः) वरवारी आवाह मुक्त स्तुतिके
बोध इत्यः (मद) मानन्द प्राप्त वरेवते लिये (रथ यात्रा)
वहमे व वाते है । (मस्तै दृपत इत्याय) वह इत्या
वरेवता एवुभे लिये (मुक्तवे स्वपनानि) वहते वनव
भीर (हरयः सामा) वेतव्यी वीमर्ष (वर्षगिर्य)
वहते है ॥ १ ॥

(कामाय दरयः वर्त वधिगिरे) इत्येव वामानुकार
वामव वृत्तवा वहे । (स्विताय हरया हरी मुरा
दिम्बन्) लिय इत्येव वेवता वेवतीव वेवतीव वेवतीव
वहां वामा । (वर्षगिर्य हरिमिः या जाप हयते)
वेवते वहोवे वा वामाव वाय है । (साभव्य हरित्यन्न
काम वामाना) वह वहे इव एवुधी वीमर्षी वामाव
वामा ॥ २ ॥

हरिं दमशा रुद्धि किंशु आयुस स्तुरु स्पेये यो हरिपा अर्वधत ।
 अर्वेन्द्रियों हरिभिर्विनीविसुरति विश्वा दुरिपा पारिपृद्धर्ती
 सुवैव यस्य हरिणी विप्रेवसुः शिष्ठे वाज्ञायु हरिणी दर्विभवतः । || ३ ॥
 प्र परस्कृते चूप्ते मर्मैद्वदर्ती पीतवा मदस्य हर्यतस्याच्चतः
 उत्त स्म सर्व हुर्यतस्य पुस्पाऽरत्यो न वाङ् हरिवां विषिकदत् । || ४ ॥
 मही चिदि खिषणा हर्येदोर्बंसा ग्रुहदयो दविषे हर्यतस्ति । || ५ ॥ (११०)

[सूक्त ३२]

(क्षमिः — १ ३ वदः संवेदरिताः देवता — हरिः [इत्याः] ।)

आ रोदसी हर्यमाणो महिसा नवपनव्य हर्यति मन्मु नु प्रियम् ।

प्र पुस्त्यमिहुर हर्यत गोत्राविष्टुष्टि हरयु धर्याम्

॥ १ ॥

(हरि-स्मशानः) पीढी मूळेशामा (हरि-केशः)
 फैलेवालोनामा (आपस) घैलादामा देशावाना (तुरुस्पेये
 प) हरिपा अवधत (लक्षणे पीढी भी लोकां पालनश्ची
 अवधते वदता है, अर्वदिः हरिमिः प) देशाद्
 लोकां भी (वाविनी-वसुः) खेलो वदता है वा (हरि)
 रोनी लोकां (विष्णा तुरिता अति पारिषद्) परी
 छठिनाइकों पर ते पथ ॥ १ ॥

‘ युदेव यस्य हरिणी विपेततुः । १ । सुवैव यमात
 विपेते होनी वदते अकग अमग वदते हैं । (शिष्ठे हरिपी
 वाज्ञाय विष्टुता ।) रोनी वदते फैले लिये वह वह
 लंगाता है (पहुँचे जामसे) विष्ठे लिये वयव तैयार हुए
 इस (मदस्य हर्यतस्य आपसा पीतवा) वातेवरक
 विष अवधतके लोक वह जगते (हरी मर्मैद्वद्) रोनी
 लोकोंको लौकता है ॥ १ ॥

(वह हर्यतस्य पस्त्यो । सद्य य) वह इसक वरने
 वाले इन्द्रा भर यो और पुरिलिये हैं, ले लाल (अख्या
 यांत्र स) लोडा देशा तुरुवे बाया है देव य (हरिवाद
 अविकदत्) लोकाला इन लाया है (मही खिषणा
 विष्) वही सुविष्टि (लोडासा माहर्यत्) वहमे लज्जी
 हवत बाया है । लोर (हर्यतः विष् इत् इत् वयः या
 हरिये) इस इसक वरनेले वही अनु बायन की ॥ १ ॥

इस इष्टमे इन्द्रके भी यहमे हैं—

१ हरी विष्टि हर्यत् हर्ये वदता— दीर्घेव इवत्तये
 इन्द्रये इष्टमे विष्टकातर मे जाते हैं ।

१ स्त्रियाय हरी तुरा हिम्बद— मुद्यमे विष्टर्ते
 वाले इन्द्रये तो लोडे लाये ले वकते हैं ।

२ मर्वदिः हरिमिः पः ज्ञोर्य हर्यते— वक्तव्य वाले
 वह सत्तर बाया है ।

३ मर्वदिः हरिमिः पः वाविनी-वसु— लोकां
 लोकां भी खेलाए वक्तव्या है ।

४ हरी विष्णा तुरिता मवि पारिषद्— यो भैरो
 उप संवेदीये गर वरते हैं ।

५ अरयः धार्म न हरियाय अविकदत्— लोग
 उपये बाया है बह ताह इम बाया है ।

इसका वर्णन—

१ हरिस्मशान— लोकेके (वहे मृहितेनामा

२ हरिजेशः— लोकेके (वहे वासनामा)

३ आपसः— लोकालक वज्र वाल बाया है

४ हरिपा— लोकोंका पालन करते हैं कुहक

५ वाविनी-वसु— लैभेंको लज्जी तरह लोकेनामा

६ वहात् वयः— यही बायु वायन बतत है ।

(सूक्त ३२)

७ (महित्वा) अमी विष्टारे (दोदसी भा हर्य
 मात्रः) पुष्टेक और पुरिलीकी भर देता है । लो (वर्ष्य
 वयव विष्टं मात्रम) नरील नवीन विष स्त्रीनक्ते द (इर्वति)
 बायत है । ८ (यसु र) भीवन जूक देवेनामे इर् ।
 (हर्ये सूर्योग्य) हृ जीव हर वरनेलाल सुष्टुपे विषे
 (गोः हर्यती पस्त्यव्य) गोधिं सुहृतीव वासुं (प्र वावि
 भक्ति) महार भर ॥ १ ॥

आ स्याऽहुर्यन्तं प्रयुज्ञो बनान् रथे यदन्तु हरितिशमिन्द्र ।

पितृ यथा प्रतिभृतस्य मध्ये हर्येन्द्रश्च संभूमादे दशोगिम् ॥ २ ॥

अप्याऽप्येषां हरिः सुवानामयोऽहु सर्वतः केवल ते । ।

मुमुक्षि सोमुं मधुमन्तमिन्द्रं मुक्त्रा यैष ज्ञात् आ धृपत्स ।

॥ ३ ॥ (१३)

[सूक्त ३३]

(प्राप्ति — १-३ मध्यः । देवता — ईर्ष्णः ।)

अप्यु पूरुषस्य हरिः पितृहनुमिः सुतस्य ज्ञात्यैष पूण्यम् ।

मिमिसुपमर्त्यं हन्तु हन्तु सर्विर्विन्द्यं मर्दसुक्षयाः ॥ १ ॥

प्रोग्रां पीति वृष्ट्य इयमिं सुत्यां प्रैष सूतस्य हर्येन्द्रं हन्त्येन् ।

हन्तु धेनोमिहिं मादयस्य धीमिविश्वामि धृष्ट्या गृणानः ॥ २ ॥

कुनी धृचीषुक्तव्ये धृयेन्द्रं पयो दधीना तुष्टिष्ठ अनुग्राः ।

प्रवावेदिन्द्रं मनुषो दुरोण तुस्युर्गृगन्तः सप्तमायाः ॥ ३ ॥ अ. १०१६।११ ११ (१०७)

॥ इति वृषेषोऽनुवाकः ॥ ३ ॥

महिषाया रोदसी भा दयमाणः— वीर भर्ती महि
माने विद्युते भर्त ५ ।

मत्प्रयिय मम दयसि— नरीन विष कुटीके रथेत्र
पावे भान है ।

दृष्ट्य स्थैर्यं गोः दृष्ट्यत परस्ये प्र भाविष्ट्युष्टिः—
भावोदे ता रो तु वै प्रदावते गुणा वर । तुम्हे प्रदावते भावे
विषो देता वर ।

हे ईर्ष्ण ! (जामार्त्र प्रणुडः) तावड यहडे प्रदेष
(हरितिप्रत्या) तुन्हरे छाँचन्हत्वाते (रथ भा पद्यतु)
त्वने विवाहर ले ज्ञाने । (संयमाद) ताव ताव बढार
तामात दामेड तर तामें (दामालिं यमं ईर्ष्ण) एव
भृत्यवदेव विषेह दृष्ट्यव व दवा वा । एव तु वैठ भर
(प्रतिभृत्यव मात्रा) ताप रथे ईर्ष्ण युज रथम् (यथा
विष) वराप्त भान वर ॥ ३ ॥

हे ईर्ष्ण ! ई (हरि वा) विद्युते वीर । (दृष्टेन
सुनानो व्या) एव भवदेव वाहतोद्यो त्वे विषा है ।
(मध्ये ईर्ष्ण रथ त वैष्टते) वीरव वाहतव ती त
विषे हो वेन वेवर विषा है । हे ईर्ष्ण ! (मधुमन्ते सोम्ये
मधुक्षिः) वैठ वाहतोद्यो वाहते वा । एव वा वैठ हे ईर्ष्ण ।
(जटो) भान वेने (वृष्टि सदा भा धृपत्स) वैठव
ता वै वैठव वाहत वाहत है ॥ ३ ॥

१ (वर्तमान वर १ ।)

जनानो मधुमः हरितिप्रत्या रथे भा पद्यतु—
क्षेत्रेके वैठव रथा रथमें विवाहर उच्च त्वान् पर व व्याप्ते ।

सप्तमायादे— लाय लाय लाय वीठे भीर भावेह वाहत वर
भीर भाने वर ।

हरिः— भावेनामे वीर हो ।

(सूक्त ३३)

हे (हरि वा) विद्युते वीर । (धृपत्स पूरुषस्य)
क्षेत्रेके विषये योमरवदा (हरि विष) वीर भान वर ।
(वृष्टिः सुनस्य) मात्रावने विवाह वाहत (जटो
धृपत्स) वेन वर ॥ ३ ॥

१ (हरि-सम्य) भान वेनोदाह ईर्ष्ण (कृष्णे तुम्हे
सुनस्य) वाहत वैठ वर विष (मार्त्री उमी
वीति) व्येषाहत्वपद वाहतवैठ भाव (वैष्टे प्र ईर्ष्णिः)
वाहत विष मै वृष्टेह वाहत है । हे ई ! (घेमामिः
हरि भावद्यव) एव वीठेव वाहत भाव । वै वृ
(प्रियामिः धीमिः) भान वैठ वीठेभाव (दामाया गृप्रावाहा)
वैठव भाव वैठव वाहा ॥ ३ ॥

(वर्त १ । १५६ वर्षे)

हे (दामाया) वैठव ईर्ष्ण (तप जनी) वै
वैठव वाहतवैठ (वैष्टविष्टव) वैठव (वैष्ट द्यावा)
वैठवे वाह वर वर वैठ (वैठिवा वैठवा) वैठवे वर ॥

[सूक्त ३४]

(पूर्णिमा — २-१८ एतासमाहः । देवता — इन्द्रः ।)

यो भात पुष्ट्रं प्रस्तुमो मनस्वान्वेषो देवान्कर्तुमा पूर्णभूपद् ।
 मस्यु शूष्माद्रोदैसी अस्येसेषा नूम्यस्ये मुहा स अनासु इन्द्रः ॥ १ ॥

यः पूर्णिमा अथर्वमानुमर्द्दुष्टः। पैतां प्रकृपितौ अरम्णात् ।
 यो अन्तरिष्ठ विमुमे वरीयो यो यामस्तेभास्त स अनासु इन्द्रः ॥ २ ॥

यो हुस्याति मरिणत्सु सि-भून्यो गा उदाबृद्धुषा बुलस्ये ।
 यो अश्वेनो रुन्धर्मि चुजाने सुवृक्षसुमस्यु स अनासु इन्द्रः ॥ ३ ॥

येनेमा विश्वा अथर्वना कृतानि यो दासु वर्णमधर्म गुहाकः ।
 श्रुमीषु यो विगीर्षा लुष्मादृदुर्पृष्ठः पुष्टानि स अनासु इन्द्रः ॥ ४ ॥

हाती लोक मिथे । हे इन्द्र ! (प्रकाशद्) प्रवस्ते तुष देवर
 (स्वधमाद्यास शूष्मात्) एकत्र आत्मसे रहेक्षमाते होते
 स्फुटि करते हुए (मनुष्यः तुरोचे तत्त्वः) मानवके एवे
 वर्णेन चरते हो ॥ १ ॥

हरिताः— लोहीके धात्र रामेश्वरम् वीर
 शारीरीयः— धामव्याशान् वीर

तत्र ऋती तत्र वीर्येन वयः वधानाः— हे रुद्रक्षसे
 प्रसृष्टिं वीर ऐसे पालक्षण्ये विभिन्नाम होतेक्षमे वीर हो ।

विभिन्नाम जाताकामः— येनेष्व तत्र वेदवर्म भेदं कर्म एवे
 वाते हो और वेदवर्म तत्र जातनेक्षमे हो ।

प्रकाशद्— पंचांसे तुष हो अहे पंचांसीय न हो ।

स्वधमाद्यासः शूष्मात् मनुष्यः तुरोचे तत्त्वाः—
 एकत्र हृदय जानेद वामेश्वरे रहेक्षमे वर्णेनक्षमे योग
 मानवके यहेन वोग चरते हो । उत्तम लोक वयं आत्मसे
 हो ।

॥ पार्षी दत्तीय अनुवाक समाप्त ॥

(मूल ३४)

(यः मनस्याम् प्रथम् देव) यो तुरियान् परिका
 रेव (जाता एव) प्रकट होते हो (क्षत्रुता देवाम् एव
 शूष्मात्) अप्येवं कर्म एव देवीये प्रमूलिष्ठ भरता हे, (पथ्य
 शूष्मात्) विमुमे क्षमे और (नून्यस्य महा) कीर्मेव
 माहिमाते (रोदसी अस्येतता) शोनी भैषं करते हो हे

(अनासा) खेतो । (स इन्द्रः) वह इन है ॥ १ ॥
 (कृष्णात्)

(यः अथर्वमाना पूर्णिमी अर्द्दपद्) विमुमे इनि
 पूर्णिमीको शुष्म वनाता (यः प्रकृपिताम् पैतां एव
 अन्तरिष्ठ) विमुमे प्रकृपित वर्णोमे इमीकी वनाता, (कृ
 ष्णतरिष्ठे वरीयः विमुमे) विमुमे अन्तरिष्ठे एव
 वनाता (यः यो अताक्षरात्) विमुमे पुष्टोऽप्य रित
 वनाता हे खेतो । वह इन है ॥ २ ॥
 (कृष्णात्)

(यः अर्द्दे इत्या सप्त सिस्त्यूम् अरिणात्) विमु
 मे वर्णे मार कर सात वारेनोक्ते वनाता (यः एकहृष्य अप्यामा
 गा उदायात्) विमुमे सप्त्ये पुष्टोमे वीरोमो वर्म विमुमे
 (यः अस्माम् अस्तु अर्द्दे अनाम्) विमुमे पर्णर्मो
 वर्म वर्मिको इत्याच विमा जो (समस्तु शूष्मात्) यो
 वीरमामोमे शूष्मे भैषं है हे खेतो । वह इन है ॥ ३ ॥
 (कृष्णात्)

(येन इमा विश्वा अथवा शूष्मानि छातानि) विमुमे इन
 मुनि इत्येषामे वाते हो (यो दासी वर्ण अर्द्दे गुहा
 हो) विमुमे वास कर्मो लोक और पुष्टामे रहेक्षमा विमा
 है, (यः अर्द्दे विगीर्षाम्) यो भैषं विमाहे हैर (अर्द्दे
 एव दासी पुष्टानि भावात्) व्यावके समात वर्णेन और
 देवक वीरोमो शात्र भरता है हे खेतो । वह इन है ॥ ४ ॥
 (कृष्णात्)

य सो पूच्छन्ति कुह सर्वे प्रेरमुवेमाहुर्नपो अस्तीर्येनम् ।
 सो अर्थः पुटीर्विन् इषा मिनाति भद्रसै घर् स ज्ञनासु इन्द्रः ॥ ५ ॥
 यो रुग्रस्य चोकुवा यः कृष्णस्य या प्राणाणो नार्षमानस्य कीरः ।
 पुक्कग्रीष्मो येऽपि विता सुशिग्रः सुरसोमस्य स ज्ञनासु इन्द्रः ॥ ६ ॥
 यस्याशासः प्रदिवि पस्य गाष्ठो पस्य प्रामा पस्य विष्टे रथासः ।
 यः सूर्य य उपसै सुभान् या अपां नुवा स ज्ञनासु इन्द्रः ॥ ७ ॥
 यं कन्दसी सप्ती विष्टेति परेऽवर उभया अमित्रा ।
 सुमान विद्यर्थमात्रस्थिरामा ननो इष्टु स ज्ञनासु इन्द्रः ॥ ८ ॥
 यस्माम ऋषे विकर्षन्ते ज्ञनासु य पुर्वमाना अवसु इवन्ते ।
 या विद्यस्य प्रनिमानं पूर्वू यो अष्टुपुस्त्रसंज्ञासु इन्द्रः ॥ ९ ॥
 यः दध्यता मध्यनो दधानुनमन्यमानालवी जुपाने ।
 यः अर्चते नानुददाति नृष्णो यो दस्योर्हन्वा स ज्ञनासु इन्द्रः ॥ १० ॥

(यं पोट) विष मनामहे विषये (पृच्छस्ति) एते हैं (सः इह इति) यद वरा रता ह (इति यस मात्रा) भार इष्ट विषये यद यते हैं (य यस भस्ति इति) यद हैं (या अर्थः) यद भित्ति (विष इय पुरीः आमिति) वर्तीः वाम वाम वर्तीः उहि वापि नित वी रता है (अस्मै भूत घत) इतर भदा पाप इति है लेख ॥ यद है ॥ ५ ॥ (अ. १११५)

(य इष्टस्य) या वामस्या (य इष्टस्य) या इष्ट (या प्राणाणा) या कर्त्ता या भार (आपमानस्य वर्तीः) वाम इतेवान विता (वारिता) इति हैं ॥ (पुक्कग्रीष्मा) तुत्सामस्य या अविना या इष्टावे वाम विद्यर्थमन्यता इति है या (तुत्तिग्रा) इति वापि वर्तीः है ॥ भीवा यद इति है ॥ ६ ॥ (अ. १११६)

(अ. १११६)

(यस्य प्रदिवि) विष वाम वाम (भस्ति) एते हैं (यस्य वापि) विषये ये (यस्य प्राणाणा) विषय (यै) यस्य विष्ट इयासः) विषय यद यद है या यस्य इयास वाम (विषये दूषण वाम) विषय वाम है (य अपां नुवा वाम) विषये दूषण वाम है ये यस्याः ॥ ७ ॥ (अ. १११७)

(अ. १११७)

(स्मृति काम्दसी यं विषये) आप्तमे तुदक नियमेष्ट तुई वेष्टादे विषये तुकानी है । (यदे भयरे उभया अमित्रा) भेड जोर बिन्द दोतो वामहे अनु विषये तुकाते हैं (समान इय विष वामहिष्यामा) वाम इवर वर्ती विषये वीर (लाला दवेने) विषये वाम वामहे तुकाते हैं दें लोगो ॥ यद है ॥ ८ ॥ (अ. १११८)

(यस्मात् यत्त ज्ञानात् य विजयत) विकीर्ण वामवाने विष वापि विषये यहि वाम वाम (युपर्य यामा) विषये य दूषण) तुद वामवान ज्ञान इष्टावे विषये तुकात है (य विष्टस्य प्रनिमानं पूर्वू) या विषये वाम इय यद इय इष्टा है (य अस्तुत इतुन) या न विषये वाम विषये वाम है ॥ विषये वामहे ॥ ९ ॥ (अ. १११९)

(य शार्पा) विष वाम वाम वाम (दाम्पत्याः महिति इति) वामहे वाम (दाम्पत्यान्) वाम वाम है (अपमानस्याकामा) विष्टविष्ट या (तुत्याम) यामा । (य इष्टस्य) ॥ य इष्ट (यौवाय वामहानि) विषय वर्तीः वाम (य इयास इया) ॥ य इया वामवामहे दें लोगो ॥ यद है ॥ १० ॥ (अ. ११२०)

(अ. ११२०)

षः शम्वरं पर्वतिपु खियन्वै चत्वारिंशयोऽसुरघुन्विन्दत् ।
ओज्ञायसान् यो अहि भुधानु दानु भयानु स बंतासु इन्द्रः ॥ ११ ॥

पः शम्वरं पुर्युरुत्कसीमियोऽधोक्षास्मापिवसुवस्य ।
अन्तर्गिरो पद्मामाने युहु जनु यस्मिन्मासूर्णस बनासु इन्द्रः ॥ १२ ॥

यः सुस्त्रशिम्बृपमस्तुविभानुवासुस्तुतिर्वे सुप्त सिपून् ।
यो रौद्रिकमस्तुरद्वलवाहुर्यापारोहन्तु स बनासु इन्द्रः ॥ १३ ॥

याता चिदसे शुपिदी नमेतु शुभ्याचिदस्य पर्वता मयन्ते ।
पः स्त्रौमुपा निचिरो वज्रवाहुर्यो वज्राहस्तुः स बनासु इन्द्रः ॥ १४ ॥

यः सुन्वन्त्मवति यः पर्वतं यः श्वसन्त्य यः श्वसमानमृती ।
यस्य मङ्गु वर्षेन् यस्य सोमो यस्येद राष्ट्रः स बनासु इन्द्रः ॥ १५ ॥

ब्रातो व्युम्भस्यिश्रोहपस्ये श्वो न वेद शनितुः परस्य ।
स्त्रुतिप्यमाणो नो यो भुम्भद्रवता देवानां स बनासु इन्द्रः ॥ १६ ॥

(या पर्वतेषु छियस्त्रं श्वरं) विद्युते पर्वतम् इहे वासे देवो (अस्यादिश्या श्वरवि) बालीत्वे वर्ण (अग्नव विश्वत्) ईर विश्वाम (या ओज्ञायसान् अहि) विद्युते एव वदनेताहे अहिदो-मेष्यो लो (वार्तु श्वसार्य) बाली और विजाम वदेवाता वा अप्यथे (तप्यात) माप्त हे लोगो । यह इन है ॥ ११ ॥ (कृ. १११११)

(या श्वसीमि श्वीर्वत् पर्वतस्तु) विद्युते वज्रादे कंपरथे-मेष्यो लीत विद्या (या अचाक्ष-मस्ता) लो द्वृष्ट द्वृष्टे (सुरस्य अधिवत्) योमरक्षे पीता है (वहु वासं यद्यमानं) यह वदेवाते वहुत लोको (अग्नः पितो अस्मिन् वा मूर्हत्) विद्या पर्वतम् इहन वदाना हे लोगो । यह इन है ॥ १२ ॥

(या सत्तर्दिष्मा दूष्यम्) लो सत्त विरोद्वाता वस्याम् (द्वृष्टिमात्र) वामरक्षाद् वेद (सत्त उत्पूर्वू) उत्त वदियोग्ये (धर्तुते अवासुसद्) वहुक्षे विद्ये लोक देव दे । (या वज्रवाहु) वित वज्रवारीने (यो जारोहस्त दोहित्र अस्मृतस्तु) कृष्णेवर पवदेवाते दीदिवसो अप्यहै, हे लोगो । यह इन है ॥ १३ ॥ (कृ. १११११)

(याया दूषिदी अस्यी चिद नमेते) दुष्टोत्र और पूषिदी इहे वासे वन्द दोहू है (अस्य शुभ्यात् चिद्

पर्वता मयन्ते) इहे वज्रे पर्वत वन्मीठ इति है । (या चोमपात्रा) लो चोमपात्र वर्वेवाता (या वज्रवाहु) यह इहस्त निविता । लो द्वजे वदान वाहुवाय और हातमें वज्र वर्षन वर्वेवाता अधिक है हे लोगो । यह इन है ॥ १४ ॥ (कृ. १११११)

(या सुरवाते अवति) लो दोप्रथ लिङ्गादेवतेष्व एव वर्ता है (या पवस्तु) लो अव वदेवातार्ये लो अवता है (या श्वसांते) लो द्वज-बोत्वेवसेष्यो (या ब्रह्म श्वसामात्र) लो अवते रक्षके साथ शाव देता है उठी लो अवता है (व्रज वस्य वर्षव) शाव विद्युते वस्य वर्षव वर्षव वर्षव है, (सोमां वस्य) दोम विद्युते वर्षव वर्षव है (इव रायां वस्य) यह इव विद्युते वर्षव वर्षव है हे लोगो । यह इन है ॥ १५ ॥ (कृ. ११११४)

(आतु) प्रस्त्र होते ही (पितोः उपस्थे इवपत्पत्र) वामरक्षिदी योद्ये इहर लो प्रस्त्र होता है (या भुवर) लो भूमिको और (परस्य वसित्रा त वेद) भेद अन्तर्म लो भी नहीं वाचता है (या नः इत्तदिष्म्यमाणाः) लो इमे लक्षणी होनेवर (अस्मत् देवानां भ्रता) देवरे देवों पूर्व वर्ता है हे लोगो । यह इन है ॥ १६ ॥

यः सोमकामो हर्षीयः सुरिष्यस्माद्रेखन्ते शुभनानि विश्वा ।

यो ज्ञान शम्भरं यश्च कुण्डा य एकवीरं स वैनासु इन्द्रः ॥ १७ ॥

यः सुन्नुते दुष्ट आ विद्वाऽव ददीर्यि स किलापि मृत्युः ।

सुप तं इन्द्र विश्वह प्रियासु सुवीरासो विद्युमा वंदेम ।

॥ १७ ॥

॥ १८ ॥ (११५)

(यः सोमकामो) या गोम वाहता है । या (हर्षीय) मेरे (रोगे वेणुगोला (सूर्यो) हाली है , (पश्चात् विश्वा शुभनानि रेतान्ते) विश्वे यश्च शुभन अन्ते हैं (यः शम्भरं ज्ञानात्) विश्वे विश्वो माता (यः य शुभ्ये) विश्वे शुभ्यो माता (या एकवीरात्) यो एक मात्र वीर है वे अगो । यह इन्द्र है ॥ १७ ॥

(यः दुष्टः विद्) यो दुष्ट देवेश भी (शुभ्युते पश्वते वाऽम या वदीर्यि) सोमरस विक्षमनेतापे भीर अथ पश्चात्वाक्षे विश्वे वह तता भव देता है (सः सर्वा विश्व अस्ति) पह विदेश उम है । है इन्द्र । (वर्यते विद्वद्वा प्रियासु) इन देशे सर्वा विद्व देश (शुभीरासु) अर्थे भीर दुर्जोंके उमेत (विद्युत् या वदेम) हैं वीर पाते रहने ॥ १८ ॥ (कृ. ३११२१५)

इष सूक्ष्मे इन्द्रके गुणों और बातोंका बनन विश्वा है वो युध देवता इन्द्रको मुख पश्चात् उठते हैं । वे युध है—

१ य ममस्वाम् प्रथमा वेद्या— या उद्दिष्टान वर्दिष्य वह है । यह परिका देव है । इष्ये पूर्वे दर्शि देव वही है । यहमें यो आदिम देव है वह यह है । यह ममस्वाम् ममन पूर्वच पूर्व प्राया वाचात्मक यश वाहं वर्ता ह ।

२ या जात एव भस्तुमा देवाय पर्यंभूत्— यो वह दृष्ट होत ही (सब देशोंमा दातार अक्षे) अपने प्रायस्यमें उन यह दशोंमें प्रवृत्त शुभ्युपित रहता है । यह (प्रथमा वद्या) विद्विदेश है इन्द्रे पूर्वे दर्शि देव वही यही इष्येवे इष्येवे परिका देव यह ह । इष्ये यश एव अप्यव विद्व भीर वर्तों प्रुपर भी बनता । प्रुपूपि भी विद्वा । अर्थात् यह देशमें इष्य परिके देवही वाहि ही वर्यं वर्ती रही विद्वत् यश वर्त देव यादिमान वीक्षन तथ ।

३ यस्य शुभ्याम् नृणास्य मदा रोहसी अस्य देशो— इष वेद्यं वाऽप्येऽप्यैर्वदीर्यि महिम से यन्मह वे । भूमेष भावे अपने वार्द्ध वार्द्धमें रत्तिका रहते हैं ।

ममस्वाम्— या वाहं वार्द्धात् यही वाहं वर्ता । प्रुपूपर वर्ता वाचात्मक वार्द्धात् वे वही होते रहते हैं । विद्युत्पूर्व

वाहं होते रहते हैं सूर्योग वशात् वाहुका वहा वाचात् देशा वाहि यो व्यापे व देवार दो ऐ है वे एव आदिरेष्वी विश्वोवासे ही हो रहे हैं । भीर वाहे रहते ॥ १ ॥

४ यः व्यथमात् पूर्यिवी वद्यात्— ये तु वीं हूर्द पूर्यिवी वद्व वशात् है । इष्ये लाल होता है वि पूर्यिवी प्रार्थमें वश देवावी वीं । वश पूर्यिवी वद्व देवन (भर्त् वह् वह्) वाहा वनावा । वह पूर्यिवी आवेद वशम वद वही वीं । वींपे वद हूर्द है ।

५ यः प्रकृपितान् प्रथमाम् अरम्यात्— ये प्रकृ पित पर्यंतेष्वे रमनोम वनावा है । यज वासुर्वा पर्यंत वे रमनोम वाहं वहा रमनोव वही देवने वनावा ।

इष वनावे भूमि प्रथम परमात्मदी वर्तत ज्याम वै इन वाके वींपे भूमि और पश्च वशम वश्यव हुए । दरिकावल विद्विदेहुर्द रशा वीक्षन है ॥ २ ॥

६ यः यहि इत्या सत्त्विष्यू अरिण्यात्— विद्वने विद्विदेहो माता भीर वाह विद्योद्ये वकावा । यहि देवद्य नम है यहि वाम एव वाही वीं वीं । यहि—४४ वह वहेनेवात् । यहि—४५ पर्यंतर वहे वह वीं वीं वाम है । इष पर्यंतर वहे वर्ष्णा विद्वाद्व विद्विदेहो महातुर वाहा । इष्येवा वा वहात् वर्तह ।

७ यः वद्यस्य अप्यद्वा या उद्यात्— विद्वने कले विद्वाद्व वीं वीं वाहर विद्वावी । वह वींने इष्यादी कोप वार्द्धी वार्द्धी । वीं वही वर्यं विद्विदेहै एव वर्यीत होता है । वह वार्द्धमें वार्द्धा विद्वने भूमि वर्ती है वे वकाव वार्द्धी हैं । वह अप्यवर्त वहा । वहने वार्द्धा विद्वने वीं वही वीं वनावे वह देवता त्रृत्येवे वार्द्धावी वह हृष्ट वर्तहाव वही द्येता ।

८ या वद्यमात् अर्थात् विद्विदेव वहे भूमि वर्तव विद्वा है । वीं वर्तर एव वद्वेत वाचान वर्तेवर वहे विद्वन वर्तव हैं । वीं वेष वाय वह वा वनमें विपुल अप्यद्य वश एव देव है । वह वह विद्वे वेषव वार्द्धव है ।

१ समर्थु सकृद— यह परिका देव सप्तमोंदे सत्रुघ्नोंभे
बेर कर उनका नाश करता है। सप्तमोंदे औरोंदे वह बदरच
करता है किंव वहसे भी रात्रुभे भेरते जाए। सप्तम नाश कर
सकते हैं ॥ ॥

१० यह हमा विश्वा इपथना कुताति— विस्ते के
इस सूर्य चम्प भूमि आदि पूर्णतया बनाये हैं। इस देशकी
आत्मविकासे यह सब विष निरत वरिष्ठे एम रहा है।

१८ पा। दासं वर्ज्यं अप्तु गुहा का— विष्णुने साथो
भीवं भौति गुहा निकाली लाना है। याएँ ब्रह्माणि हैं इस
भौति नीचे हैं। वंसप्रतीराम दीनेके पारम् ग्रामें पड़ा है।

१५ विभीषण— यामने विभीषण का है। यहो
वार्ता और वास का वर्णन है। व्यार्थ विभीषण है और
वास गीत होते हैं। यामने वर्णन का वास है एवं
यहो उसकरीक व्यारथ वामेवासे गुप्त है।

१४ एवं इस पुहारि आहत— याचे समाज असे अस्तपर मन रक्षा हे और पोल पदार्थ आप दरता हे। यादी ऐत वर्तमेय रपाय हे असे अस्तपर भाव रखता और पोल यत्र मास घरता। इससे प्रकल्प कर्तव्यात ऐत दरता हे तिक्की वर्षता हे।

१४ ये घार पृष्ठस्थित स कह इति— इस मान
मन्दिर शामरचनाके निवार्णे पूछते हैं कि यह क्या बाहा है।
प्रश्नकर्ता कहती पद मन्दिर प्रवेष्ट बुला भेज क्या रहा है।
इसीप्रिय विचार उत्तर दाते हैं।

१५ एक पर्व माहु। एषा न अस्ति इति— ये
अविद्यारी दोय अद्वेष ह ति वह प्रथम प्रश्न बुझा ऐसा भोग
देव वी ही वर्णी।

१५ अस्ति अत् यत्—इस नामिकेपर भवा वारप
क्षेरे इष्टे ऐष्टवा प्रस दीप्ति है।

१० स अर्थः— यह भेद हीय है जो इस अवस्था देवतर
भवति रखता है यह भेद हीता है जो—

१८ विज द्वय पुरी। भास्मिताति— पर्यन्ते समान
वह वैष्णव कल प्रस अरता। विज् एकी परी भस्मिते
अपने विके विद्युत्परक अब प्रस अरता है ऐसा प्रकरणीय
समान अपने लिये वीरवक्ते याचन प्राप्त भेदो ॥ ५ ॥

१९ प: रभस्य कुशस्य नाष्टमालय वद्यम्
कीर्ते बोधिता— वी दपासद कुश प्रकृता कर्मेनाहे
गृही विक्षो देवता कर्मेणाथ है । रभ— वी दपास

पिर्वत उपासक । साधमाला- उपासक प्राप्ति करनेवाला ।
कीर्ति- सोता कृषि । प्राप्ति प्राप्ति करनेवाला ।

१० सुधिप्रः— वर्तम इत्यास्मा वर्तम साक्षा वीर्येष्वस्म।

२१ युक्तप्राप्त्यः स्मृतसोमस्य यः भविता— यह
पर्याप्ति दरख़त। पर्याप्ति सीमरण विस्तृत कर डाक्टर बो यह
पर्याप्ति है अपनी दरख़त। देखें यह अपने दोस्तों की दरख़त ॥ १ ॥

सोमवारमें भर्यधना होती है और उसमें बलवानामें
साधारण विचार होता है। इस बात सोमवारधन में प्रभु
होता है। साथी एवं उसके बलवानामें जल्दी होता है।

२५ यस्य प्रशिदि मामः विश्वे रथासा भवात्।
गतः— विश्वी वाक्यमें रथ रथ एव वेर वेर वेर
पर्ती है। विश्वी आहा सर्वो मात्राची पर्ती है। एमा
विश्व धार्म्य है।

२३ यः सूर्य उत्तर ज्याम— विष्णुमें उत्तर और
सूर्यमें उत्तराम

१४ पा। अपाँ देवा— यो बड़ोंसे चलनेवाल है
किसी आँखों नरियों पह रहा है और दूँहे दोहा है त
सारिये है ॥ ॥

१५ वं छम्भसी सप्तवी विहायेत— शत्रुग्नि
अनेकाम्पे लेखाप विषये अर्थात् अनेकाम्पे लिखे गयाई हैं।

२६ परे वहारे वभया अमिता (पं विद्युतेः) —
अहे वीर अनेह दोनो प्रकारे वनु विद्युते असारी उद्घाटने
विषे साप्तो हौं।

२७ समार्थ एवं आदित्यवीता ताना हवेठे-
घासां एवज छुलेवाले गीर किउये भारी घासांको खिमे
उमठते ॥ ४ ॥

१८ परमाणु ज्ञात गनातः न विजयते— किंपि
सामया न याई तो गौर घेयेमे वज्र प्राप्त वही होय ।

१५ युधमाना अवसे थे हवने— उद्ध अवेश
पीर लिक्ष्ये प्राप्तजड़े लिखे युधहो है ।

१० या विश्वस्य प्रतिमानं बमूल— तो विश्व
प्रतिमा रहा है।

३१ पा. अर्थात्-अपुत् — वो कमी व दिक्षेत्रात्मेये
की सामग्री हो रही है।

११ पः शुर्वी शशवात् महि एव। दधानाम्
अमस्यामनान् अपास— ते चक्राद् सरसे वा पाप
प्रतिष्ठाने विश्वासी वादिष्ठेभ्ये गृह प्राप्त कर्ता है।

१४ या शार्यते शूलयो त अनुषदाति— लोकं वर्षीयं
वर्षीयं नहीं सद्गुरु उपर्युक्त उपर्युक्त उपर्युक्त उपर्युक्त उपर्युक्त

३५ यः वस्त्रोऽहस्ता— जो तु दोषा विकारा वस्ता है प० ॥ ३

३६ पर्वतेषु क्षिप्यमत् शवर चात्यार्दिष्यां शरदि-
प्रश्वविन्दित्— पर्वतोंमें रहनेवाले मेवदो—वर्णमय वास्तुसमें
वहमें विद्मे प्राप्त किया ।

वहा चात्यार्दिष्ये वर्ष मेवदों प्राप्त किया । इष्टमा उपर्यु-
भासमें मही माता । विद्मानभी रहिए इष्टमी वीर ऐश्वर्यिक
हैं । शबर घ अर्द्धे देव द्विष्ट वर्ष आदि ग्रहिण
हैं परन्तु इष्टे महीकुल भी शोष नहीं प्राप्त होता है । वीरेष्वद
विद्मानभी रहिए इष्ट विद्मानी चोब चर्हे ।

३७ यः अंतर्वायमाद दानु शायार्थ अर्हि शयाव-
विद्मन लक्ष्मन् दोमेवामै दानी । देवनामें वर्हिष्ये मापा । अर्हि
घ अर्द्धे— एवं सेव वक एनु है । बासनु लक्ष्मन वक वदाया
त्वा वा वक्ष्म इन्हने मारा । अहि एव वानव वातीष्य
मी वाम है । अहिके विद्मयमें भी बोब होनी चाहिये ॥ ११ ॥

३८ यः कस्तीमिः शंखर्द पर्यटतात्— विद्मे वज्रोले
संवर्षमें मापा । वरि शबर देव है तो लक्ष्म वक तद्वके
मारेके सिवे विष वात्म वधते हैं । (३५ वीं दिव्यावी-
देविके ।)

३९ यः अध्यावकाशमा छुतस्य अपिवद्— वा
मुनर मुखे सोमरस वीता है ।

४० यस्मिन् रीती मातुः यज्ञमानं वाहृष्म अमू-
र्चत्— विष पर्वतके अमर वेठमर वह वर्तेवाके वृत्त
मनोंमें विद्मने वदाया । मृष्ट— अर्हि ग्राम वदाया वदाया ॥ १२ ॥

४० यः समरादिमः शूष्ममा शूष्मिभाव् लस सिन्धून्
सर्वते सावाश्वत्— वीं वाप विद्मोवाके वदाया, वाम
पर्वतान्ते वात नदियोंमें वहनेके लिये अव दिया । लस
रदिमः— एवं वात विद्म विद्मते हैं । (दिव्यावी १५-१७ देवा ।)
एवं प्रशास्त्रा है और वहाँ यमीषे वर्ष प्रिष्ठवदर नदियों
मही हैं ।

४१ यः वद्मवाहुः यो मारोहस्तं रीढिष्य अमुकुरत्—
विष प्रशास्त्रान्ते एुबोद्वर वद्मेवामें सर्वते सुरुच वदाया ।

रीढिष्यः एवं वह अवि वारि ॥ १२ ॥

४२ वद्माशूष्मियी भस्मे लित् लमेते— याता वृदिवी
एवं वामवे वक्त है । इष्टके वामवे वक्तिहृ वीरों हैं ।

४३ वस्य शूष्मात् पर्वता मयगते— इष्टके वक्ते
अव वद्मवाहु होते हैं ।

४४ यः सोमपादः वद्मवाहुः वद्मद्वाता । मिवितः—

जो सोमरस वीरेवाम वद्मसमान वाहृष्माना वज्र वाममें वक्ते-
वामा विद्मत है ॥ १२ ॥

४५ यः शुश्वस्त पवस्त इंसस्त शाश्वमानं अवति-
जो वामक पालक, रुद्धि वर्तेवामे वात वदाया रहन
वर्ता है ।

४६ यस्य इष्ट्य सोमा रापः वर्धम— विषम वक्त-
माम वाम वह और वहि वर्तेवन करते हैं ॥ १५ ॥

४७ वातः पितोः उपस्ये शूष्मपत्— वा प्रद इते
ही वातविराजा वीरेवं वीरितान वीरा है ।

४८ यः मुषः परस्य अवितुः त वेदे ॥— वा भूमिष्य
और भेड वद्मवाहुमा मी मही जानता है वद्मस्य वामता है ।

४९ नः स्तविष्यमाप्यः यः अमृत् देवानीं प्रता—
विद्मी इष्टरे दारा रुद्धि दोमेवाम वक देवोंके ग्रीष्मों वह परि
पूर्ण करता है ॥ १५ ॥

५० सोमसकामाः हर्यन्ता: यूरिः— जो सोमनर व्यार
करता है विषके भूरे रुद्धि वोहे हैं वा जानी है । वहा जोहोंके
वर्ष विष वेवा विद्मत है ।

५१ यः शंखर वामाम यः शूष्म्य— जो संवरमें और
हृष्मके मारता है । (दिव्यावी १५-१७ देवा ।)

५२ यः एकवीरा— जो एक वीर है ॥ १५ ॥

५३ यः तुष्मः वित् शुश्वते पवस्ते वात्म मा इष्ट्य-
जो इष्ट्ये प्रवत और हीं और वहर्ता भीर वद्मवाहु वर्तेवामके
विषे वक्तव्यमें वक देता है ।

५४ सु: स्तस्यः दिस अस्ति— वही एक वद्मवाहु एवं है ।
वही एकल वमी प्रवेष्ट वही होता है ।

५५ वर्ष ते विष्वाहा: मियासः शूष्मोरासः विद्मं
वा वरेस— इम भेदे शुमुके-वाम विष हीं लक्ष वीर
उत्तीर्ण तुल हीं और दरे वीर याते रहें ॥ १५ ॥

इस सूक्तकार विशेष मनन

वह सूर्य हे वद्मासः । स इष्ट्या हे लोके । वह
इष्ट वह है । इष्ट तद्व इष्टक वक्तव्य वद्मवेवाम है । इष्टमें
इष्टके पुन वदाये हैं और इष्टव्य वर्षम वीरों वीरिता है । इष्टव्य
वद्म विद्मत वर्तेवने वह तुल वही वद्मवाहु वद्मवाहु है ।

१ पद्मिष्टा देव इष्ट्य है ।

मनस्तान् व्याप्तमः देवः (म १) उद्विष्ट, वद्मम
एव इष्ट है । उष देवीये वा वद्मव व्रद्ध इष्टा वह इष्ट
है । इष्टसे पूर्ण और योद्धे देव वद्म वहीं दुष्म । वहीं वारिमे

वह देव प्रकृति हुआ है इपसिने इम इसमें आदिदेव भी मर
फलते हैं।

जात एवं कर्तुमा देवान् पयमूर्षद् (पं १)
 प्रथम होते ही अनेक उदाहरणे बायं देवोंधे उत्तम वर्णे द्वय
 देवोंधे सुमूर्षित भी इतीने किंवा अग्निका तेज वस्त्रमें पार्श्वित
 वायुमें गौवनसभि सूर्यमें तेज चक्रमें लालादशामक दास्त
 और रथपील ब्रह्मास रथाद्वय देवोंधा सुमूर्षित हुए आदि
 देवने किमा है । वे देव इन युक्तों का एक उपवेष्टी तथा
 सुमूर्षित हुए हैं ।

पस्य शुभात् नमस्य महा देहस्थी अम्बुदेता
 (मे १) — इहोंके बावे भार पीड़ियों सहिते औ और
 भूमि अपने अपने कावे बारेकार उठीके निवासेहैं राहत छरते
 राहत हैं। यथा काँई किंतु विषवध अम्बात बरता है वैषा ते
 वैष जाने बापने अपने अम्बुद अम्बात बरते हैं। बारेकार वही अर्वे
 बरते थाए हैं।

ध्यायमानी पृथिवी अद्वैत, प्रकृतिरात् पर्वतात्
अस्मात् (मे ३) — प्रवस पृथिवी भवा देवपात्री भी
 काव वैदो जीत है दैही मही ची और पर्वत भी ज्ञानामुखी
 बैठे थे। इष भारि रेते पृथिवीये द्वार और ध्यात वना ची
 और पर्वतोंको काढी उत्पन्न करके रमनीव बनाया। ऐसा होनेके
 लिये किसी वज नहीं होते इसी इसका अनुसार विज्ञानेता ही
 कर सकत है। पर्वत प्रदुरित पे वे रमनीव दुर हैं। वह वज
 भारि रेते ही बनाया है। ऐसा ऐसे दृष्टा वजी कर सकता।

मर्हि इत्या सप्त सिंगून मरिपाट् (मे १) —
महिमे मरकर वास सिंगूमे महारू व्या । नविंची बरकर
वहेत लाई । मेहो शुद्ध करडे वा वर्ष्यो विष्वकर मरिनोंची
व्यावा ।

बलास्य अपापा गा बद्धात् (मे १) — एके
छिंगाई पीरे इगके बाहेये तावशर फ्लर म्हणा । सुरंगी दिल्मे
मे गावे हैं । बद्धात्तमै दूर्वे दिल्मे भार भावय है ।
तलवृं व नीने रहती हैं । बद्ध चुन धरेकमे वह दद्द अधिक
सुर दीक्षिता है । एक अस ३ दिवतक रहता है । एक बम्ब
प्रशाप दिल्म भार भावयात्ता तुद हा रहा है और अपारोक्ते
वह बद्द प्रश्नाए दिल्म बाहर जा रहे हैं । वह एक मुद्रा
ही दोषा है । पाते वारा दिल्मे हैं ।

अद्यता। अस्तु: वर्गि जग्नाम् (५.१) — पश्च
रीमि भवेत्तदा है। या पश्च एव स्मृत्युं वासने भवेत्त
वासना द्वया है। या भवेत्ते विशुभि वक्तव्या है। यह तत्
वार्थोऽपि वाक्यं है।

समर्पण संपूर्ण (५१) — उप्रामोदे बहुतेकपे भरता है। वीरोंके अन्तराम शामर्यं इन्द्रेषे शार दृष्टा समर्प्य ॥ इन ऐसा स्थिता है।

इमा पिंडा व्यपता कुतालि (म-४) — वे सब
विष पूर्णताके बनाये में इष भारि देखने ही चाहे हैं। वे
सब विष जाने निमत गतिष्ठे चूम रहा है वह भारि देखने
बोहनाके अनुचार ही है।

दासे वर्षे गुहा अपर्यंक। (म-४) — रात्रेमें
नीच सामानमें रहनेवाला बनता। दास वर है कि यो जल्द
अपर्यंकमें बाटन लाको प्राप्त होता है। इष बाटन को अबानी
होता है वह युंगमें रहत है। वहे वर बना कर दस्ता में
इसके चिना नहीं हो सकता। इच्छिये दासको उठने पाने
रखा है। यो अबानी होने वे नीचे ही रहें।

॥ ४ ॥

प: सूर्य वपसं ज्ञान, पः मर्पा नेता (५ ७)-
दिवसे सूर्य और वपस्पे क्षमाका द्वी बड़ोंहो चमत है एवं
जौधे अता है ।

या विष्वस्य प्रतिमास वभूव (५१) — जे विद्वन् किं वास्तवं नमस्य तुला है। ता ममपुत्रस्युग्मं विरुद्धम् यो उत्तराभ्यु उड़ रेता है रेता यो सामर्पणम् है।

या सत्तराहिम: पृथग् ग्रुषिभाष्म सप्त सिंहूर्द
संतरे व्याप्तिरूप (म १) — वे सप्त ग्रिहोन्मेष
व्याप्ति और व्याप्तिरूप है उन्हें सात नदियों के मध्यमें भिन्न
ज्योति दिया। ग्रिहोन्मेषे से सप्त नदियों की व्याप्ति हो
रही है। मल्ल देशमें दो ज्योति दो काल दो वाह और एक
त्वचा के सात ग्रिहोन्मेषी सात व्याप्तिरूपों के प्रयत्न हैं। वाहा
व्याप्ति व एक व्याप्तिरूप है। उन्हें सप्त दिव्य हैं और उन्हें
के सात प्रवाह वह देते हैं। सप्त व्याप्ति स्वप्नों को देते
हुए। तब व्याप्तिरूप स्वप्नों स्वप्नसदों के देते हैं।
(वस्त्र १४८५) — सात नदियों सामेंके प्रयात् लोगोंमें
व्याप्ति कीमती बाती है वह सप्तव वा देव प्राण और व्याप्ति
वो एक व्याप्तिरूपें— एक व्याप्तिरूप— वहके रहनम सिंहे दिव्यता
व्याप्ति है। इसका अस्तव व्याप्ति प्रवाहोंपर व्याप्ति आता है वह की
वहाँ देखने चाहत है। व्याप्तिरूप क्रियाएं व्याप्ति के
प्रयात् व्याप्तिरूप वहने व्याप्ति है।

या वाराणसी या माराठमर्त दीक्षिण्यं वसुत्
(नं ११) — विव वाराणसी इण्ड गुलामर वारेन्हं
संस्को द्युष्म रिसा दे । रेतिं निमा है ।

‘यावा पूरिकी मसौ मसेते’ (मे १४) — उन्हेके बीर इच्छी इस भावि देखके लासने ब्रह्म होन्हर थाए हैं । उवा अस्य मुष्पात् पर्वता मयस्ते (मे १४) — इस अविरेतक भवति पर्वत मी महसीत होते हैं इस बरकर थाए हैं ।

उसपर अनुमा रसो

इस तथा इस भावि देवता वर्णन इस शब्दमें है । इस भावि देखके विषयमें सेप पूछते हैं कि ये घोर पृथग्गमिति स कुह हति (मे ५) इस भवेन्द्र लक्षिताम अवि देखके विषयमें पूछते हैं कि यह कहा रहता है । ऐसा ब्रह्म करता थोड़ा है, पर इस विषयमें भद्रा रहनी चाहिये । मसौ अहू घट (मे ५) — इस भावि देखन्हर भद्रा रखिये । भद्रा रखेते अवश्य वह मता थोड़ा । वर्द्ध मासिन्द फलते हैं कि उठ पर्वत माहूः पप व मसित हति (मे ५) — इस भावि देखके विषयमें इह गतिह फलते हैं कि यह है ति नहीं । ऐसी अध्यात्म रहना योग नहीं है क्योंकि वह—

स रम्भव्य हुशाय नाप्रमात्रव्य ब्रह्मणः कीरि
चोदिता (मे ६) — वह निर्बन्ध हुस ग्रामेनादरतेवते
हानी अधिकै जिवे उत्तम भेत्रा देवेत्तुता है । उत्तमी भेत्राए
पर यही है उत्तमे भद्राये द्वितीय चाहिये ।

स रम्भी (मे ५), विर्गीषाम् (मे ४) — वह यह है और उत्ता जिवनी है । जिव इव पुरीः या मिमाति (मे ५) — पर्यु वेता जाने जिवे तुष्टिग्रहण अव शत रहता है, उस तरह उक्ता मत तवयी हुमभेत्रये अपनी इच्छिके सामने अस जलता है । अग्नी इव सहस्रे पुष्टानि भवत् (मे ५) — व्यावके सामान अपने कल्पन्हेत्र वर्ते इष्टते वह जाने पोक अव भास्तुर् प्रस अर्पता है । व्यावा अस ठीक तरह अपने सामने रहता चाहिये और वहाँ प्रवास करता चाहिये ।

वह अविता (मे ६) — उवा संरक्षहे वहावतीका वह असन उत्तम वरता है । इसमें वस्य प्रदिविधि प्रामाणः पिष्ये रथासः अव्यासः गायः (मे ७) — उपके अवेलमै वह पांच रथ जो और मीड़ ज्ञात् वृक्ष विष इत्ता है । इसीमें ये व्यावस्ती संपर्ती पिष्यमेदे (मे ८) — उनी तुष्टप्रसन्न देवता व्यावी उत्तमकर्म इच्छी

तुम्ही है तथा ‘परे अवरे अमिताः (ये विहयगते) (मे ९) — उपके और पापके एतु विच्छी अरणी उहावतार्थ दुष्टते हैं । उमामै रथं भावतस्यिष्योत्ता नाना इवस्ते (मे १०) — उमामै रथपर भेत्रेवानै नाना प्रश्नाके और कुदमे उहावार्थ विषये दुष्टते हैं । ‘युद्धमानाः यं अथ इवस्ते’ (मे ११) — उपक वर्तेवाले वैत अपनी त्रुप्राके जिवयसे प्राप्ता बतते हैं । यमात् यत्त ब्रह्मासः न विषयस्ते (मे १२) — विषद्वी उहावता न मिली हो त्रुप्राके वर विषयी महा होते हैं । देवा वह भाविम देवता उमर्वते हैं । इस काल उत्तर विषय रहता न है ।

पापीयोंको वह मारता है

या शार्या शाम्भवतः महि एवः इष्पामाम् अमन्य
मामान् अव्यान् (मे १) — वो व्यावान् हमेंका पापी
आवरण वर्तेवाकोधे और अविष्यादियोंको मारता है ।

शार्येति द्वृष्ट्यां स अनु द्वाति (मे १), — पर्याप्तीमि
वैष्ट मही उत्तम वैष्ट दत्तार देता है । वह वस्योःहस्ता
(मे १) — द्वैष्ट्यमितात्क है ।

वैष्टर्व अस्वविष्टत्, महि उपान् (मे ११);
‘वैष्टर्व पर्यन्तरत् (मे १२) — वैष्टर्व और अविद्यो इसी
माय । इस वह दुष्टोंमें वो मारता है ।

भरय ग्राम सोमा राधः पर्यंत (मे १५) —
इसम्ह हान वह और ही उंचर्वन बतते हैं व्यावान मत्तो
बताते हैं । स्तविष्यमाणः या अस्तु देयानां वृत्ता (मे १६) — इसर द्वारा स्तुति हुई ही इमार बन्दके उप
देवीके वर्णीय पात्र वह रहता है । हमरे देवोंके देव हैं
इनमें इमारी उव्वतियें आवश्यक सहावता प्राप्त होती है भाव
उपरे इमारी विष्योरु उव्वति होती है । वह अविर देव स
सर्वयः विष्ट असि (मे १८) — वह उपा निर्वंदेह
है । इस काल्प ‘यद्य ते विष्ट्यहः विष्यासा सुपीतासः
पिष्यद्य या वदेव (मे १९) — यह वह सर्वं वे जिवे
जिव हीवर रहेये भाव उत्तम वीर पुष्टीवीकै वाह त्रुप्राकै ही
मीत पर्वे रहेये ।

वह अविर देवद्वी असि बतते । इस तथा इस शब्दमें वह
अविर देवता वर्ष्य अवन बतते जीव है ।

वह ऐस प्रथम हुआ है इष्टिमे इम इष्टिये आदिरेष भी अब सक्ते हैं ।

खात एवं खतुसा खेदान् पर्यग्नूह् । (मं १) —
प्रथम इसे ही अपने पुराणार्थे अन्य देवोंधे वासन अर्थे उम देवोंसे सुभूतित मी इसीमे किंवा जनिधि तेव ब्रह्मे कपर्णि शाशुमे शोकवर्णि इसीमे तेव ब्रह्मे व्याहादादावक शाश्वत और रमणीय प्रकाश रक्षण इम देवोंसे सुभूतित इष्ट जारि देवने किंवा है । ऐसे ऐस इन पुराओंके कारण उपवेसी उत्ता सुभूतित हुए हैं ।

यस्य गुण्याद् सूर्यस्य भग्ना देवती अप्यवस्थां । (मं १) — इसके बदले और पौष्ट्रधे महिमावे पु और भूमि अस्ते भग्ने वारिवार वर्णीके निमिमे इतर अर्थे रहते हैं हैं । ऐसा होते ही किंवा विषवश्च लक्ष्मीष्व अव्यय है देवा ने ऐस अपने अपने अर्थोंमें अस्माक अव्यय करते हैं । वारिवार वही अव्यय करते रहते हैं ।

व्यथामार्दी गृहिणी भर्त्ताद् प्रकृपितान् पर्वतान् वारिवार् । (मं १) — प्रथम गृहिणी भग्ना देवेशादी भी जात वेदी लीठ है तैसी नहीं बी और पर्वती भी ज्ञानासुखी बैठते हैं । इष्ट जारि देवने इन्हींमें सुरुद और अंत वना भी और पर्वतीमें ज्ञानी यस्य अर्थे रसनीव भग्नाया । ऐसा होनेके किंवा किंतुमे भर्ती मने होने इष्टका अमुग्नान विज्ञानेवादी अव्यय है । पर्वती प्रकृतिमें वे रसनीव हुए हैं । वह इष्ट जारि देवने ही भग्नाया है । ऐसा ऐसे हुएरा वही अव्यय है ।

गृहिणी इत्या संस विश्वून् भरिवार् । (मं १) —
गृहिणी भरिवार तत्त्व सिंघूधे भग्नाप्त भग्ना । नदिना भरिवार रहने चाही । भेदों इष्टि अर्थे वा वर्षोंमें विश्वाप्त भरिवारों भग्नाया ।

वस्त्रस्य भग्नाया वा उद्दात् । (मं १) — वहमे किंवा वीरी इसके बादेभे तोवार अन्न भग्ना । सूर्यो दिल्ले वे गाते हैं । ब्रह्मादामें सूर्ये किंवे तार भग्न भग्नती है । अर्थात् वे वीरी रहती हैं । ब्रह्म अप्त विश्वामें वह रात्रि अव्यय कुरुत वीराणा है । वह अप्त इवितक रहता है । इष्ट यस्य प्रथम भग्नाया विश्व और वारिवारका अुद ही यह है और अपनेवेद्ये वह अप्त अप्यहो विश्व वाप्त भग्न भग्न हो रहे हैं । वह एक दुरुद्या ही देखत है । वीरी यही भग्नते हैं ।

वादममः भग्नाया वाप्त भग्नात् । (मं १) — कब ऐसे अव्यय होता है । वा प्रथम एक दुरुद्योपर भग्नते भग्नते वाप्त होता है । वा भेदोंमें विश्वमें भग्नता है । वह सब जारि देवना भग्नते हैं ।

समस्तु लंचूह् । (मं ३) — लंगमोरोंमें अनु भरता है । वीरोंके अस्त्राद्य आपात्ये इन्द्रोंप्राप्त हुए । इष्ट ऐसा भरता है ।

इमा यित्वा अप्यवत्ता छुतामि । (मं ४) —
विष पूर्मेवाके बनावे मे इष्ट जारि देवने ही बनावे हैं सब विष अपने नियत यसिंहे पूर्म रहा है यह जारि देवनके लक्ष्मार ही है ।

वास्ते वर्णं गुहा अप्तं का । (मं ५) —
वीर लाम्बे इवेशाना भग्नाया । वास वह है कि वे भग्नानके कारण ताक्षमें प्राप्त होता है । इष्ट भारत वो होता है एवं गुहामें रहत है । वहे वर बना अर्थ भग्नादे विषा नहीं हो सकता । इष्टिमे वासमे उत्ता है । वो भग्नानी हांगे ते नींहे ही रहते हैं ।

यः पूर्वे उपस भग्नात् यः अप्ता मेता
विलोमे घृते और भग्नमें भग्नाया वो भग्नोंमें भग्नाया
बैठते भग्ना है ।

या विषवस्य प्रतिमाने वगूव (मं
विलोमे विले वार्त्तव अमूल्य हुआ है । वो अमूल्य
विलोमे वी उदाहरण लेकर रहा है, देख या या

यः सप्तसति॒ बृ॒प्तमः तु॒यिप्ताम॑ उ॒
संत॑ये भवासृ॒तत् । (मं ११) — वो उ॒
भवासृ॒त और सप्तसति॒ वे प्रथमे लात वर्णिनी॑
अव्यय दिवा । वितके यामर्थते॑ मे लात नरिय
ची है । मामव देवमें वी लात ही लात वो
लक्षा मे लात वर्णिनी॑ मी लात वारिवारिके॑
भवासृ॒त और सप्तसति॒ है उपमें लात ।

उपमा॑ तत्त्व लाप्ततो भवासृ॒ती॑ ॥
(अ॒८४४५) — लात वर्णिनी॑
भवासृ॒ते लोकमें जाती है उपमा॑
वो इष्ट विषपूर्मिते॑- एव वरीते॑
जापते हैं । देवा अप्यव जात
वहो देवने लोक है । लात
प्रवाह भवित्वक वर्णे वा॑

‘या वद्यात्तु॑
(मं ११) — वि
सृंहे दुरुत ।

अस्येदु मातुः सर्वनेत्रु सुयो महः पितृ पंशिवा चार्वाका ।

॥ ७ ॥

मुपायदिष्ट्युः पश्चिं सहीयानिच्यद्वाह तिरो अद्विमस्ता

अस्मा इदु पादित्वेवत्तीरिन्द्रायापर्कमहित्ये ऊवुः ।

॥ ८ ॥

परि पात्राशपिकी लंब्र उर्ध्वा नास्य ते महिमान् परि एः

अस्येदुष प्र रितिष्व महित्व दिवस्युपिष्वाः पर्यन्तरित्थात् ।

॥ ९ ॥

भूरालिन्द्रो दमु आ विश्वगौर्त्वः स्वरित्येत्रो बधेषु रथाय

अस्येदुष श्वर्णसा श्रुपन्तु विमृष्टद्वेष्वं शुश्रिमिन्द्रः ।

॥ १० ॥

गा न ग्रामा अवनीरमुखदुमि अवो दुष्टेनु सचेताः

अस्येदुष त्वेषां रन्तु सिंचन्तुः परि यद्वेष्वं सीमर्यक्षद् ।

॥ ११ ॥

ईशानकरुद्धृत्ये दमुस्पन्दुर्वीर्तये ग्राघ तुर्विनिः कः

अस्मा इदु प्र भर्तु दमुमानो वशाय वशमीशानः किपेषाः

॥ १२ ॥

गोर्नं पर्वं वि रदा तिरुप्युभगीस्तुपां चुरस्यै

(हिवेषाः ईशानः) अवेष नूपिष्वामोमे रवेषते ईशर
स्वर्तये (येन तुष्वता तुष्वत्) विष वज्र्ये देवेषेषे रथम्
(शूषस्य मम्ब विषद्) इत्यक्षमं रथम् वाहावा वाहावा
(क. १११११)

(अस्य इत् त मातुः सर्वनेत्रु) इष्वे मायादे वदोवि
(सद्या) लक्ष्य ती (महः पितृ पंशिवाम्) वो योग
एष्वे इष्वे वीवा लेत (वाय वस्ता) वायम भव वाये ।
(सहीयाम् विष्वाः) अविष्वाम् विष्वुमे (पश्चर्तु मुपा
यत्) वायेषामेष्वे इष्वा विषा (अद्विमस्ता) वज्र्यो
देवेषामेषे (वायादं तिरो विष्वायत्) वरव्यो-पैष्वो
वीवमेषे वाया ॥ ७ ॥ (क. ११११०)

(अस्यै इत् त इत्याय) इष्वे इष्वे विषे (देव
परमी द्वा विष्वा) देवपली विषेषे भी (अहिहत्ये अर्हं
द्वृतः) अहिहत्ये अर्ह इष्वेषे अस्य वोले । (चाला
पुरिष्वी) अुष्वेष और अुष्वेषर (असी परि वज्र्ये) इष्वेषे
वण वाय विषा (ते भव अविमानं व परि एः) व
वोले लेत इष्वी अविमाको वेष सर्वते वर्णी ॥ ८ ॥

(क. ११११०)

(अस्य इत् एव महित्वे) इष्वी वरिमा (विषः
पुरिष्वाः अवित्यिकाम्) अुष्वी और अवित्यिकामे भी
(परि प्र रितिष्वे) वर वा है । (विष्वगौर्त्वः वायाव-

इत्युः) वरके शाय द्विष्विवा तुष्वा यद वायां इत्यु (इत्ये)
वरव्ये वरव्ये (स्वर्तिः वायाम्) अविमान भी (अवित्यिकाम्
इत्युर् (रथाय भा वरव्ये) मुष्टे लिषे तैमार वाया
(क. ११११०)

(अस्य इत् एव वायसा) इष्वे वायेषे वरव्ये (वज्र्येण)
वज्र्ये (शूषपत्तु तुर्वी) वरव्येहुए इष्वके (इत्युः वि वृष्वाय)
इष्वे इष्वे वर वाये । (वायाम् वाय) वोली तुर्वी लैलेषो
वेषे वृष्वी वर्ते है उत वाय (वायेषाः वायसे) वेषेष
वद्वार वष इष्वे (अवा) वरके लिषे (वायनीः अभि
वमुशात्) वरिष्वोषे वायामा ॥ १ ॥ (क. १११११)

(अस्य इत् त वेष्वासा) इष्वे वर्ते (सिंघ्यवः
रस्य) वरिष्वा रप्तीव वनी (यत् वज्र्येष सों परि
वायच्छद्) वर वर्ते उत्ती लैलेषे वायामा वायामी ।
(ईशानकृत्) वायामोषे वायामेषके (वायुये वृष्वास्पद्)
वायामी वन वेषेषे (तुर्विनिः) वरपुषे वायं वर्तेषामे
इष्वने (तुर्वीनिये वायप कः) तुर्वातिषे लिषे वरपुषे वाय
वायामा ॥ ११ ॥ (क. १११११)

(ईशानः विषेषाः) वायामी और वायामान (द्वा
वायामाः) वाय वायामे वर वर्तेषाम त इत् (अस्या इत्
त वृष्वाय) इष्वे इष्वके वर्ते (वर्तं प्र मर्) वरव्य वायाव
वर । (गो व पर्व) वरके लैलेषी वर (अपा वरर्तै)

अस्मेदु प्र भूहि पूर्णांि तुरस्य कर्माणि नव्यं उक्षैः ।

युधे यदिष्णान आपुचान्वयमाणो निरुषाहि शशैन् ॥ १३ ॥

अस्मेदु भिया गिरयं इच्छा यावा च भूमा उनुपूर्णुत्वेते ।

उपो षेनस्य चेनुवान शोणि सुधो द्विद्वीर्याणि नोधाः ॥ १४ ॥

अस्मा इदु स्यद्गु हाय्येषुमेको यद्वज्ञे भूरीष्वानः ।

प्रैत्सु द्वये पश्चानं सौवद्ये सुविमावृदिन्द्रः ॥ १५ ॥

एषा ते हारियोवना सुपूकीन्द्रु प्रकाणि शोर्तमासो बक्तु ।

ऐरु विष्वेष्वसु विवे षाः प्रात्मूर्षु विषावसुर्विगम्यात् ॥ १६ ॥ (११०)

वर्णोक्ते प्रवादित होनेके लिये (मणिति इष्वन्) वर्णोक्ते इष्वा भरता हुआ ए (तिर्या वि एव) इष्वे विर्या। इतपर मार ॥ ११० ॥ (क ॥ ११११११)

(मध्य तुरस्य इत् ए) इष्व तरुते इष्वे विर्याके इनके (पूर्णा कर्माणि) पूर्वे लक्षणके वीरताके लक्षणोक्ते (प्रभूहि) द्वाते वर वी (रुपयी लक्ष्या) स्वोज्ञोक्ते स्वयं इष्वे दीर्घ दीर्घ है। (युधे पद् इष्वान्) युधमें वर इष्वा वरता है तब (आपुचानि लक्ष्यापमाणा) लक्षणोक्ते प्रैत वरता ए वर वर (शक्त्रू वि रिताति) शक्तुओक्ते नामें निराता है ॥ ११ ॥ (क ॥ ११११११)

(मध्य इत् ए भिया) इष्वे कवये (गिरयः च इच्छा) पूर्व शुरू द्वार भूर (यावा च भूमा) पुणां भार भूलेक्षणे (क्षमुप द्वृजेत) वरमें ही द्वाते होते हैं। (येष्वय व्याप्ति) इष्व द्वितीयकी रक्षाकिंचि (देव ए ज्ञानुयान) द्वयि इत्येवाका (लोधा सदा वीर्याय शुपत्) लोधा विराम वीरताके इव विनेद लिये शोभ्य हुमा ॥ १५ ॥ (क ॥ १११११४)

(मध्य इत् ए) इष्वेभिव ही (दया त्यन् अनुवाप्ति) इष्वेव वर ए ए शोभ्य दिया ववा ववा नामा। (भूरे पद) इष्वान् यद् वतो ववृष्ट ववके एह लाली इष्वे ववधु त्रुषा लोधाना। (इष्वा) इष्वने (सुर्विव एत्यश) ववाम भवाव लियावनाम एत्य वी (प्रभावान्) एय ए (सौवद्ये सूर्ये पश्चृष्टापाने) वर लक्षी वैद्यम सुर्वं रवापा वर रही थी ॥ १६ ॥ (क ॥ १११११५)

(इत्यिवेद्वन् इष्वा) वर्णोक्ते वेदेष्वत्वं इष्व। (गात्रमास) ए पव द्विद्वीर्याणि प्रकाणि भवान्) वातामें

भेद लिये ही इत्यमात्रमाणी प्रवर्णाते ही हैं। (प्रभु विश्व विष्वास विव वाया) इवमें संव व्रायरथे वर्णोक्ति वाया। (विष्वावस्तु मात्रा मात्रा मात्रमप्यात्) इत्यिति वर्णेवान् इष्व प्रात्मकत वीयही व्य वाय ॥ १६ ॥ (क ॥ १११११११)

१८ यूक्ते इष्वका वर्णन इन वर्णोक्ते व्याह है—
१ तवसे तुराय महिमाय लक्ष्यापमाव विविये इष्वाय तातुमा व्रायापित्र वर्त्ति (मे १)—मत्ताव त्वरा इत्येवाके महिमाकुण लक्षणोक्ते वाहनेवाके वावे वर्णे वर्णे इत्येवे लिये इम स्तोत्र बतते हैं।

२ प्रसामाय पस्ये भल्ल इष्वाय वाये सुपूकि लांगूप प्रभरामि (मे १)—प्राणीय वायी ऐपे इत्येवे लिये इष्व मित्ताव द्वर वर्णेवे लिये द्वैत्र बतता है। इष्व द्वैत्रके एवमे वाठेके सर्वमें तरवेवाके वर दुष्ट द्वैत्र ही वर्णे हैं वीर वर्णेवे विचार द्वैत्र के मनवें वा वर्णे हैं। वैद्यके वीरामि एव विचारपूर्वक वीरामित्र वर्णेवी विवि है।

३ द्वाव मनसा मर्मीपा विया मवद्यत्त (मे १) इष्व वर वर्णी इष्वा भूर त्रुष्टेवी वेदेष्वत्वं विष्व बतते हैं।

४ मर्मीती मंहिष्टु द्विरु सुरुक्तिमिः वर्णाविभिः प्रभुपूर्वये (मे १)—द्विवेषावीद भेष विश्वर द्विये द्वुवाहन वर्णवेवे इम वीठिष्टा वहते हैं। वर लक्ष्य इष्वे द्वुवाये एह बतता है भूर इष्वार वर्णे वर्ण वर्ण द्वर ववाना है।

५ तदा रथे लतिसमाय व (मे १)—द्वुवार वैद्य वर्णेवे लतामें लिये एव ववाय दे एव ववर वव (विर्या

इसे मेघिराप इन्द्राय सुवृक्षि विभूति इन्द्र स्तोर्म पिण्ड स दिवोमि) — सुविषेषं बुद्धिमान् इन्द्रके लिये उत्तम वचोवासा उप देवेशाम्ब स्तोत्र हम अपनी भाषणे बोले हैं। इन्हस्तु विष्णु स्तोत्र मनुष्यमें विचारीकी छुटकारा है, इसकिए उसके पाठके मनुष्यक लाभ होता है।

६ वीर वानोक्तस गृह्णमध्यसु पुरुष इर्माण वस्त्रये वर्षं सूक्ष्मा समये (म ५) — वीर वानी वस्त्रसी भृशुके नवर्णोऽन्नादेवात्मे इन्द्राय इन्द्राय दर्शनेके लिये स्तोत्र हम अपनी विद्याये बोलते हैं। ऐसे उप वोक्तेए इमरेमें आठता वीरा जाती है।

७ दिव्येषापाः इशामः तुष्टा तुष्टन् तुष्टस्य मर्म पिण्डत् (म १) — अनेक स्तनोंमें इशेशामा इन्द्र वज्रो बहुर वैक्षेपे समय उसका मर्महत्याक वालता है और उस मर्मस्त्रात्पर वज्रा वज्र कहता है। इसी तरह बृहुके मर्मस्त्रात्पर ही वीर वाना उप रैक। यात्रुओं यारेतों पर विचा है।

८ मात्रि भस्ता वराह तिरो विष्णवत् (म ०) — एव वैक्षेशामा इन्द्र वराहस्ती यात्रुपर विज्ञा वज्र कहता है।

वराह (वर्णनामार) — तदके वक्तव्यामान मेव। यात्रु। यात्रुर अपेक्षा स्वरूप वेदव विद्याके बोलते जातिवे।

९ ते द्यापा पृथिवीय मस्य महिमाते न परि क्षा (म ५) — युक्तोऽप्य वाया भूवृक्ष इस प्रभुवी महिमाको नेत्र नहीं कहते। इसका महिमा वाया यूक्तिवाले बुद्ध वाया है।

१० भस्य महिमां दिवा भस्त्रतिसात् पृथिव्यापा परि प्रतिरिष्ये—(म १) इव प्रभुवी महिमा पुरुषस्त्रियों और युक्तिवाले वाया है।

११ द्यापसा इन्द्रा वक्षेप युरुं विद्युत् भ्राया यद्यनी प्रभिमि सुश्वत् (म १) — वक्षेप इन्द्रने वज्रके इन्द्रपै वज्रा और वराहा वज्रा बन्द्रवाहोके लिये इन्द्री वज्र लेता।

वेदवाले विनष्ट किया और इन्द्रिक द्यापा नदिवा वज्रने कही। यहीं युरुष यज्ञ है। वेदके मुद्दसे उप वक्तव्यों लोकि वज्रा नहीं है।

१२ भस्य स्पैष्यसा सिस्पवा इत्य (म ११) — एव वस्त्रमें नदिवा वज्रने कही।

१३ ईशानहृष वायुषे वशस्यम् तुष्टिः तुर्वी तये वार्षं काव्यं काव्यं वक्तव्याम् प्रसु वालता यज देता है तराये काव्यं वक्तव्यामें लिये पर वजे वाला वजव्राह वनाता है। अर्थात् पुराव वक्तव्यामें लिये काव्यं तुर्वी सार्वं होक्ष रहता है।

१४ अस्य तुरस्य पृथ्वी कर्मणि प्रधृष्टि (म ११) — इष तराये काव्यं वक्तव्यामें इन्द्रिके पूर्व वस्त्रम् वर्षव वज्र।

१५ युधे इप्पामा भायुधानि भायापमाया शाक्तन् लिति प्रियाति (म ११) — पुरावी इप्पा वक्तव्यामा वीर भायुधान्ये वज्ञापर इप्पा युधा भायुधोंगी गिराता है। पुराव ऐसे अपेक्षा जातिवे।

१६ वेसस्य भायिं दद योगुष्टात् भोधा सद्या वीर्यायि युवत् (म १४) — वर्षस्तीव वीरवी उत्तम उक्तिका वर्षव वक्तव्यामा वीर उसके स्तोत्र वायसे उत्तम वीरताके कर्म वक्तव्यों लिये योग वोक्ष होता है। वीर इन्द्रके व्याप्तम् वह प्रमाण है वीर वज्र वज्रा वज्र वज्र वज्र वीरे वित काव वक्तव्य लिये।

१७ इन्द्रं सुविदि एतश्च प्र भावत् (म १६) — इन्द्र वज्रवादी युवता वरता है। वह यजदर्ता सीवस्ये स्वर्ये पृष्ठपृष्ठात् (म १५) — सूर्योंके दाय वस्त्री वरता है। सूर्य वैषा नियमामुखार वज्र वर्षव वर्षव वरता है वैषा बो वार्ष वरेया उपवी द्युका प्रभु अवश वरेया। सूर्यहाता भारते हैं।

१८ गोत्रमासः ते युवृक्षि प्रायानि अक्षम् (म १६) — गोत्रवाले लेती वज्रम् भावामाली लिये ही हैं। वज्रके योक्तेसे लालेशामेके गतमें उत्तम वज्र विवर होते हैं और वह वावक भेद वजता है। इस तरह वंशवाल वंशवाले वज्रामासा है।

१९ एव विभवेशासं विवरं च॥ (म १६) — इन वैत्रीमि वज्री उप वज्र वक्तव्यामी वृक्षिको लिवर रख। इसके वावव वजतिमे प्राप्त होता।

२० विषापसुः प्राता मधु भाजगम्यात् (म १६) — युक्तिको दाय वक्तव्याम् वज्रात् वज्री वज्रे और काव वज्रके लिये वज्रे। वज्र वज्र वज्रे। वज्रामास वज्री उत्तम वज्रेमें लिया वज्रता जातिवे।

२१ एव विभवेशासं विवरं च॥ (म १६) — इव सूच्ये वज्रेमें वज्र वज्र वज्र वज्रे। वज्र वज्र वज्र वज्रे।

त थो दिवा नम्यस्या शविष्ठ प्रस प्रत्यनप्तिरितसुयच्चै ।

स नो वषदनिमानः सुबद्धो दिव्यान्यति दुर्गाहौषि

॥ ७ ॥

आ चनाय द्रुहणे पार्थिवानि दिव्यानि दीपयोऽन्वरिषा ।

तपा वृपनिवृथतः शोभिषा तान्त्रिकृदिवे शाचय शामपर्य

॥ ८ ॥

सुवो अनेस्य दिव्यस्य रात्रा पार्थिवस्य अगतवस्त्रेपसरक् ।

विष्व वज्र दक्षिण इन्द्र हस्ते विषा अशुर्व दयसु वि ग्रायाः

॥ ९ ॥

(स्वोऽवा) अपनी वक्षिष्ठे वक्षान् (विरादिन्) महान्
पार्थिवान् एव । तमे (मध्युता वित् वीलिता इम्हा) ।
न हितेनादी वामादी और इव क्वांशी वृत्तियों (भूपता)
पर्वत क्विष्ठ भग्ने विन विन ॥ ६ ॥

१ है स्व-तथा ! मनोजुषा पर्यंतम् व्यथा वक्षुपान्
त्य वि ददा— हे विव दामर्थवान् एव । यदेव इमाव
वक्षान् वेष्टे लकुम ग्रहाव वक्षेवाते वक्षान् वक्षेव वक्षेव
वक्षेव क्वर्व वक्षेवाते वक्ष लकुम द्वमे नामा विना ।

स्व-तथा ! अपने निव दामर्थसे तुष । पर्वत —
(पर्याम्) विष्टये पर्व है ऐसा वज्र विष्टये वडे भेदे
तथा वाराएँ असेव होती है वह वज्र । वारावाना एव ।

२ है स्वोऽवा विरादिन् ! मध्युता वीलिता इम्हा
भूपता विददा— हे अपने वक्षे वक्षान् और वक्षुपानी
इव । न हितेनादी द्वितीय वक्षान् और द्रुह द्रुमेनापरिक
वीलितो अपने वर्वत दामर्थसे द्वमे तोह विने ।

इव प्रदर्शये दुर्गाति वर्षी है । द्रुह अटिरीत वक्षेव
मात्रा वेष्ट है । उक्ता द्रुह द्वमितो भी तोहना तथा
अपने आरीत वर्षा विनि है । इव मंत्रेव पह वीरवै विक्षिपा
वर्तत वक्षेवाते है ।

(मर्यादा विया) इव अहे द्रुहिष्ठेव वी गई लुप्ते
द्वापा (शोभिष्ठ प्रस्तै या । त) अस्त्रव वक्षान् पुरातव वक्ष
इम्हा (प्रत्यनवत् परितसपर्ये) प्रत्याव ऋषिके अवतार
और वक्षा विक्षाव कर्लेके विन मै प्रश्न वर्षा है इव्ये
द्रुह वर (अविमाना सुवद्वा) अपार महिमावाना द्वितीय
वाहवाना (सा इन्द्र) वह एव (विभ्यानि दुर्गाहौषि)
सप्तस्त वीरवै (वा अति पश्चत्) इव्ये वार ले वारे ॥ ७ ॥

३ मर्यादा विया त शोभिष्ठ प्रस्तै या । प्रामवान्
परितसपर्ये— वार्त और द्रुहिष्ठ विव इव लोकमे

त्वप वक्षान् पुरातव इम्हा वक्ष प्राचीतो वैष्व वक्ष वैक्षेव
विने मै काम्भित्र वर्षा है ।

४ इव स्वोऽवा तुलवर अविमाना सुवद्वा सा
इन्द्र । विभ्यानि दुर्गाहौषि वा अति वक्षान् — वक्ष
महिमावाना और द्रुमर एवासम वह इव वक्ष प्रकारके लोकमे
हैं मै वक्षावर पार के जाने ।

५ है एव । (द्रुहिष्ठे वक्षाप) वज्रोऽव वैव वक्षेव
उद्दोषे इवामेवे विने (पार्थिवानि दिव्यानि) इतीवे
उवाक (अस्त्रिता) और अस्त्रितिके स्वानोषे (वा
वीपया) वक्षन्त वक्ष करे । हे (भूपत) वक्षल वैव ।
(विभ्यान: ताम्) वारी ओरेव वन द्रुहीष्ठि (शोभिष्ठ
वर्ष) अपने वेष्टे लातो । (द्रुहिष्ठि वारी व वर्षा)
जानक वीरवैष्ठि इव वक्षेवे विने द्रुपिणी और वज्रो वै
एवामो ॥ ८ ॥

तु वह वर्षा है वह विव वक्षी इवामेव प्रश्न वर्षा विनि ।
और वक्षो द्वेष वर्षा विनि वे वही न रहे ।

(त्वेषसंहरू व्य-हृष्य इन्द्र) वीतिमान वर्षाएवी
इव । (विष्वव वक्षाव्य) विव वीरवैष्ठि और (पार्थि-
पर्य वक्षाव्य) इतीवरके वीरवैष्ठि भी (राता सुवा) एव
वर्ष है । (विष्टये इस्ते वक्ष वीरवैष्ठि) वीरवैष्ठि वार्षे
वक्षये वारव वर । और (विभ्यानि माया) वि वप्ते
सम द्रुहीष्ठि क्वर्वामेव वार वर ॥ ९ ॥

६ त्वेषसंहरू व्य-हृष्य इन्द्र— वेष्टुष वैक्षेवाना
वर-एव वारि विव इव है ।

७ विष्वस्य वक्षाव्य पार्थिवव्य वर्षावा देवा
मुष— पुरोषमे वक्ष मूलोषमे इवामेवे वीरवैष्ठि एव
वर्षा द्रुहा है ।

८ विष्टये इस्ते वक्ष वीरवैष्ठि— अपने वीरवैष्ठि वक्ष
वक्ष वारव वर और वक्षे—

जा सुपर्तमिन्द्र यः खर्सिं शुद्रुपाणीय शृंहतीमसृधाम् ।
 यथा दासान्वार्यीभि बुद्धा करो विविन्द्युतुका नाहृपाणि
 स नौ नियुक्तिः पुरुषव वेषो विश्वारमिरा गंहि प्रयच्चयो । || १० ||
 न या अदैवो वरते न देव व्यामिर्याहि तूयमा मंद्रशुद्रिक्
 || ११ || (१४१)

[छन्द ३७]

(अर्थात् — १-११ वसिष्ठ । देवता — इन्द्र ।)

यस्तिगमशृङ्गे वृपमो न मीम एकः कुटीश्वारवर्यति प्र विश्वाः ।
 यः शश्वतो अदीश्वपो गर्वस्य प्रयन्तासि सुविनिराय वेदः ॥ १ ॥

४ विश्वाः मायाः यि दयसे— उत्तुके सर वपट
 वर्षेऽनापा कर ।

यह एक राजव्यापत्त्य वपटेषु कर रहा है । अपने पास
 कलालोध झोलम संघर्ष करता और उत्तुके वपट वर्षोंसे ऐ
 एक वरना आहिये ।

५ (इन्द्र) इन् । (शुद्र-शुपाणीय) शुद्रुमिकि नाम
 वर्षेऽने किंवे (शृंहती य-मृद्धां) वरी अविनाशी (संयर्तं
 स्वर्तितं) संवर्तमे रहेवासी और कलाल वर्षेवासी वर्तिति
 (यः या मार) इमें हे । ६ (विश्व) वर्षवारी इन् ।
 (पथा दासामि भार्यायि वर्तु) विसुरे दासींकी आर्य
 वर्षावा वादा है और (नाहृपाणि) मनुष्यकि (बुद्धा)
 वर्षेवासी उत्तुको (शृंहुका) वर्षवीषे वह-भ्रष्ट किंवा
 वादा है ॥ १ ॥

७ पाण्डुपाणीय शृंहतीं असृधा संयर्तं स्वर्तितं मा
 य भर— उत्तुकोंका नाप वर्षेऽने किंवे विश्वास अविनाशी
 स्वावान रहेवासी और वर्षवासी संपत्ति इमें हे दो ।

८ पथा दासामि भार्यायिति कर— विसुरे दासींकी आर्य
 वित्ते वास्ते है । वास— दास वेषव रसु तुहु । इन्द्र
 लेह वर्व वार्यिति वर्षावा वादा है । राजव्यापत्त्य व्यवस्था
 और वर्षव व्यवस्था ऐसी वास्ते कि विसुरे तुहु मनुष्य लेह
 आर्य वार्यिति वह वादा ।

९ मायुपा बृद्धा शृंहुका— मायालोके वर्षेवासे उत्तु
 एष वित्ते वासि । वे विरेषे मनुष्योंकी वह व हे दो दीर्घी वर्ष
 वर्षेमे हे पाण्डुपाणीय वादा ।

१० उत्तुके समव वर्षावेका वादा है वह मनव व्यव वेषव
 है । वर्षव वह प्रवल विश्वा वादा । वर्षमे वर्ष न विश्व वा
 उत्तुके रुप वेषा वेषव है ।

८ (वरी वाय वर्ष ३)

११ (पुरुषूरुष) वृहुठ लोबीषे तुक्तमे वेषव (वेषव)
 विवाता (प्रयच्चयो) विवात वृवीय इन् । (स) द
 (विश्ववारामिः नियुक्तिः) सर और्मेहि प्रवेशित अर्थोंसि
 (यः या गाहि) इमर्ते वाय आमो । (वर्षेवाः) अप्रूर
 (यः न वर्षते) विन लैंगोंका रोक नहीं वर्षता (वेषव) न
 ओर रोक मो नहीं रोक वर्षता (वामिः तुर्य या) वर्ष
 लैंगोंसि गोप ही (मश्यद्रिक्ष या याहि) मेरे पास आमो
 ॥ १ ॥

एवं वीषे अव्यक्ते हो । उत्तम विवित हो विसुरे वर्षमें
 वर्षम प्रवंसा होती रहे ।

(छन्द ३८)

(यः तिगमशृङ्गो वृपमो म मीमः) वे लंगे उमि-
 वार्ये लैंगे वर्षाव सर्ववर्ष (एक) विश्वाः । हृषीः म व्या-
 वयति (वर्षेवासी) लैंगे ही सभी उत्तुकीका वर्षमें प्रवृत्त वर रैता
 है । (यः अद्वागुपः शृंहवतः वयवस्थ) जो वान न देने
 वाकें लैंगे वर्षेवासी स्वावान्द्र वर रैता है वह (द्युप्ति
 तराय वेषव) प्रवंता भसि । दू यह वर्षेवासीके किंवे वर्ष
 देता है ॥ १ ॥ (अ. ४१११)

मालवधर्म— और दीर्घ विवाते वैषके समान वर्ष-
 वार् और सर्ववर्ष है । वह वर्ष उत्तुकीपै स्वावान्द्र करे ।
 वह उत्तु वर्षोंके स्वावान्द्र विवर न रह जाए । ईश्वर वर्षा उत्तु
 वार् लैंगोंके स्वावान्द्र मी विवर न हो । एवं लैंगे वर्षमें वर्षाव
 न होने पावे । जो वह वर्षता है और वान वर्षा है वहमे
 प्रवंसा वर्ष वर्षता है ।

१२ पक्षा भीमः विश्वाः हृषीः म व्यावयिते—
 लैंगोंसु वर्ष और वर्ष उत्तुकोंको अपने स्वावान्द्र उत्ताव देता है ।

[पृष्ठ १६]

(व्युषि । — मरणातः । देषता । — रम्भः ।)

(द. १९९१-३)

य एक इदव्यष्टिर्पणीनामिन्द्र तु शीमिरम्यर्थं क्वाभिः ॥

यः पर्युति वृपमो वृष्ण्यादान्सत्यः सत्यो पुरुषायः सारस्मान्

ਰहु नः पूर्वे पितरो मर्वन्नाः सुस विप्रासो अमि शाश्वन्तः ।

न विहाम् ततुरि पर्वतेष्टामद्रौपदाण्ड मृतिमिः शर्विष्टम् || २ ||

तर्मीमहृ इन्द्रेमस्य राष्ट्रः पुलवीरस्य नृपत्वः पुलव्योः ।

यो अस्तु चोपुरवरः सुप्रियन्तमा मेर हरिको मानुषर्ज्ञी

(पृष्ठ १५) शोराहित गायत्र इवेष्टाणा । नव च ।

(मुक्त ५)

(या इन्द्र) जो इन् (एक इन् आमिः शीर्षिः हस्या) एक ही लिप्तरथे इन स्तुतेस्त्रिये प्रार्थना करने वो रव है। (तं इन्द्रं अस्मद्ये) वह इन्द्रकी वर्तना करत है।
 (यः बृप्तम् बृप्तपादान् सत्या) जो वह देवेशाका सर्व वक्तान् और समिति है और (सत्या पुढ़माया स्त्रादस्यान् परपते) उपर्युक्त वक्त्वे घोषणात् करने करने वाला और अनुबोला परामर्श करनेवाला है वह इन्द्रकी रक्षित की जाती है ॥ १ ॥

१ एकः हम्मा हत् भासि: गीर्भिः— एक ही प्रयु इस स्वतिर्योदे प्रावना उरने बोग है।

२ ते इन्हीं अवधिये— वह इन्हीं में अर्थना करता है।

३ या वृत्तम् वृत्त्यावाद् संस्था— यही अदिलीय वकार तथा सामर्थ्यात्मकी है और वही वक्त है।

४ सत्या पुरुष-मायः सहस्राद् पातयते— वह जल
जाह जनेह देव० क्षेत्रे तु य, दक्षुष्म पराजन करेताका होमेदे
परम यही सदग्ध रायी तुम्हा है । यही स्थानि करे बैठन है ।

मनुष्य वस्त्रान् साक्ष्यान् उपरिः चतुर्वर्णं तथा
ज्ञाने दीप्तान्ते शर्मा अदेहान् त्वे।

(पूर्व विवाह) उत्तरान तक महिलेष यह वरदेशीके
 (सप्त विवाहाः) बाट शुद्धिमात्र छारी (याज्ञवल्मी)
 दृष्टिमात्र हिंदू वरदेशी (मः पितराः) इको तेजोरोनि
 (शस्त्-दाम्भ अत्युर्ति पर्येत्तेष्ठा) अनुगामी वाक अभिप्प
 पात्रेष्ठ रद्देशी (अद्योप-वाचं अप्यप्युर्त उ त) दीर्घ
 रहित वासन वरदेशीन अधिष्ठ वासन देखे यह इन्द्री
 (मनिषिः अधिः) उपर्युक्त अभिप्प थी थी ॥

महात्-दाम आत्मवर्णी पृथुषे दश-नला ।
तत्पुरि - दाम दामवर्णा । अ-प्रोट-दाम -

द्वैराहित गायत्र इवेशाणा । नव एव । - जी ये
मिस्टो पाप हैं वो मात्र तब वह इवेशाण्य हो बनता
हिंसा होता है । १ मात्र सूर्य प्रकाश के और प्रारम्भ होना
और अनितम चालकाले प्रवाह के २ मात्र मिहर व्रत के ३
महिने तत्त्व भूल के पाप होते हैं । ५ मात्र सूर्य मिस्टो होने से ४
बहिर्वत व्रत तत्त्व साथ इवाहित विना सूर्य से प्रियमर १० दिनों
वह करनेके प्रयत्नोंमें नव-एव इवाहोंमें । इसी तरह
वृषा-एव जी ये जो इस मात्र पढ़ परते हैं । ब्रह्मदृश
पढ़के ज्ञाती और एक मात्र विवित प्रधानाय सौख्यर बहते हैं ।
और एव मात्र वह करते हैं । नव-एव और वृषा-एव
में ऐसे पढ़ के वह विवित वृत्तियाँ । प्रधानायी सैमान्यता एव
परिवेक्ष हो जी । इसके प्रवाह पूरे दो मात्र दोर्स्वन-व्रत
व्यवहार रहता था । इस कल्पमें पानीय प्रवाह वैर दोर्स्वन
द्वारा भूमि आण्डादित होता जाति वज्र होता था । यह वज्र
धमन था । यह अनाहाय धमन था । इस धमन वैरी वज्रहें
वैर रहती थीं । तब जलके वज्रहें धाव यौंद दूसी जी जाती
थीं । यौंद इसी धमन तुराती जाती थी विवेदों रावर्मन्तीरी
जीरोंसे धाव आते थे । कै वज्र वाटे कम्भोंमें पाठ देव रहते
हैं । नव एव । - जी जी ये विनके पाप हैं वृषा-एव
दृश घीरे विनके पाप हैं ।

‘बहात्-दाम रत्नरि पवते स्थि भद्रोपमार्द
घयिषु लं मतिमिः अभि वर्ष— एतु इतेऽन्ते
वारक पर्वतां इतेऽन्ते शोदृशित भास्य इतेऽन्ते ॥५३॥
वह बीर्ध्यु उद्दिर्णक इतावता वह। इसे बीर्ध्य याद्य एव
चाहिए।

(पुण वीरस्य सू-यता पुण द्यो भस्म) ॥
वीरस्य तुष्ट वृष्ट वाहानमेष्टे तुष्ट वृष्ट भवते तुष्ट ॥
(दाया) वामदो (त इत्यन्न इमदे) वृष्ट त्रिक्षेत्राण ॥

उसो मि बोचो पदि ते पुरा चिङ्गिनिर आनन्दः सुमनिन् ।

कहते भागः कि वयो दुष्ट खिडः पुरुहूत पुरुसोऽसुरः ॥ ४ ॥

त पृथग्नी वज्रहस्तं रयेष्टुमिन्दु देही वक्त्री पस्य नू गीः ।

सुविग्रामं तुविकुमिं रमोदां गुरुमिषे नष्ठेषु सुमुमन्छ ॥ ५ ॥

अया ह त्यं माययो वावृषान मनोजुरा स्वतवः पर्यंतेन ।

बम्बुदा चिद्वीलिता स्वोचो लुखो मि हृष्टा धृपुरा विरपिन् ॥ ६ ॥

मानोहै है । हे (दिवि) अप्तुल इन्द्र । (या अस्तुयोगुः अद्वान् स्वयंवर्) जो वन अविनाशी हीन व होवेतावा और द्वृष्ट देनेवास है । (ते माययये भा भर) वह वन हमें बनायोगे क्षेत्रे मरपूर मर है ॥ ३ ॥

१ त हर्ष्व पुरुचीरस्य शृणतः पुरुषोः प्रस्य रायः
हैमद्वे— उष्ण प्रभुके वात इम ऐता मांपते हैं कि विचके वात
पृष्ठ और एकमें क्षिते रहते हीं को अवेक दहाव्येंको अप्ते
पाप एकता है और विवक वात पर्वत वन शोठा है वर्षाय
इने वन चाहिये वन चाहिये दहाव्यक चाहिये और इनके
पर्वतपके विवे देवताओं और मी चाहिये ।

२ वह वन (अ-स्वामीपुः) विनान होवेतावा, (अ-
वरः) दीन न होवेतावा और (स्वा-वान्) द्वृष्ट वनमें
शाश्व है । एव वनदे (माययये) रामरा अस्तु वहता
पर । हमें विद्यि वह दु व न हो । ऐता वन हमें चाहिये ।

हे (दिवि) इन्द्र । (यदि ते वरितारा पुरा चित्) चा ऐसे स्तोतामें पर्वते वनवर्म (सुर्म आनन्दः) प्रृष्ठ
प्रस दिवा वा (तत् मः मि लोचा) यो वह शृणता मांप
हमें वनाको । हे (दुष्ट) हृष्टर (विद्वा) शुक्रोदाम वाव
एतेवाके (पुरुहूत) वक्त्रीषे तुवां व होवेताते (पुरु-
षसो) द्वृष्ट देवर्यामे दृष्ट । (अस्तुर-द्वाः ते) अपुरोक्ता
पाप वरेतावा क्षेत्र (को मायः वयः किं) वर्षप्यवा
धीनम् माप है तथा वनस्त्वय भाप मी जीवन है । वह
भी व्याह ॥ ४ ॥

२ ते अवितारः सु-स भानशुः— ऐसे स्तोताम
वनम् वन भात बरते हैं । अमुषी सुविति पांचै दीनम् विचार
वाय मन शोठा है ।

२ दु व वित्-या पुरुहूत पुरु-वसो । अस्तु-
मा ते को मायः । — एकके विवे वनवर्म एवुगाह,
पृष्ठोंपै वर्षप्यवि, द्वृष्ट वनवर्मे वर्त । ऐसे वाप वो अनुपोद्य
वाप वरेतावा वार्षप्य भाप है वह शीवास है । दृष्ट विव
वार्षप्यके अवुरोदा वाप वरते हैं वह दुम्हारा साम्य
वारदा है ।

३ के वयः किं । — ऐसी भावु क्षा यी तेह समाप्त
चैत्य-सा वा विवेतुम लकुम वन्दा भरते हो ।

मनुष वनता वम शुम विवाकास के शुमुका माव
वरेतावा वासर्व व्रस वरे वहुत वन क्षाये अमुरोदा वाल
के ।

(वद्वास्त रयेष्टु तुविमामं तुविकुमिं रमोदां
त इन्द्रः) हाव्यमें वन वात वन वरेतावे रावात द्वृष्ट लकुमोंपे
पड़तेवाके वहुत वर्म करेतावे वन देनेवामे दृष्ट इन्द्रः (पृष्ठग्नीघेवी)
अर्पता वरेतावमी यापादि वर्म करेतावमी
(वक्त्रीघी गीः) युवोक वनम वरेतावी इस प्रवार स्तुति
(प्रस्य) विव वनवामी होता है । वह (गारुद इपे)
द्वृष्ट वाप होता है और (तुम्हे अष्टु नम्हते) अमुका
सामाना वरता है ॥ ५ ॥

१ वज्रहस्त रयेष्टु तुविमामं तुविकुमिं रमोदां तं
इन्द्रं पृष्ठग्नीघी वेपी वक्त्री गीः पस्य सः गारुद इपे
तुम्हे अष्टु नम्हते— वह दृष्ट वात वरेतावा वनवर्म
काह देवता लकुमोंको एक ही समवये
पवरेतावा वरेतावे वर्म करेतावा वन वरेतावा
वह इन्द्र है इस तरह वह इन्द्रीघी अर्पता वो वर्ती है तथा
वाप वाप वह वर्मयो वर्ती है ऐसी स्तुति विवेतावी
वर्ती है वह द्वृष्ट वातिदे मार्वदे भाता है और द्वृष्ट प्रव
वरता व और अनुप वनवर्म वरेतावा वार्षी यी ठाक तरह
वामता है । तथा अनुप वनवर्म भी वरता है ।

वह वरेतावे युवोदा व्याव वरेते वे तुम मध्ये वनवर्म
भाते हैं वह दृष्ट वर्मयो तुम शोठा है और वह दृष्ट वह दुष्टः
शोठा है और अनुप दृष्ट वर्म विवत है या है । दृष्ट वेतुमीषे
मध्यप्यवी वर्ती है वह तरह शोठी है ।

२ (व्य-तयः) वरेते वनवर्मे तुम इन्द्र । (मनो-
कुपा पर्यतेन) वरेतावी वरेते अनुप वनवर्म (वया
मायया ववृपान स्य) वरेते वनवर्म वरेतावे तरह
शुम दुष्टने (वि यजः) विवेत वर्मयो वन विव । दे-

त खो प्रिया नम्यस्या स्वर्विष्ट प्रस्त्र प्रत्यनवस्तरितस्यच्चै ।

स नो वषदनिमानः सुब्देन्नो विश्वान्यति दुग्धाणी

॥ ७ ॥

या जनापु द्रुद्गे पार्थिवानि द्विष्पनि दीप्तोऽन्वरिका ।

तपा वृपनिवृथतः श्रोक्षिपु तान्त्रिष्ठिवे शोषम् शामुपच्च

॥ ८ ॥

सुवा धनेस्य द्विष्पस्य रात्रा पार्थिवस्य ऋग्वेदस्वेपसरकः ।

प्रिय वज्र दक्षिण इन्द्र इस्ते विश्वा अरुर्य द्यसु वि मायाः

॥ ९ ॥

(स्वोदा) अपनी काँडिले बलवान् (विपरिशाम) मायां
सामर्थ्यवान् इत् । दणे (मध्युता वित् वीक्षिता इम्हा)
व हितेवानी वलवानी और इव बनुद्धि उत्तिवेदी (सूपता)
वर्षक सक्षिले मप दिवा तोड दाता ॥ ६ ॥

१ हे स्व-तापः । मनेतुवा पर्वतेम अया वक्षुधानं
त्यं वि दद्धः— हे निव सामर्थ्यवान् इत् । यनके बलवान्
भगवत् तेगेषु सत्रुघा प्रहार बलेवाते पर्वतात् बद्रये अपेय
काढके काल बद्देवाते वष बनुद्धि दृग्मने नाता किना ।

स्व-तापः अनेन निव सामर्थ्ये तुक्ष । पर्वत—
(पर्वताम्) विद्मेष पर्व है ऐसा वज्र विद्मेष काठे नोंदे
तथा चाराएँ अदेष होती है वह वज्र । चाराताका वज्र ।

२ हे स्वोदा विपरिशाम । मध्युता वीक्षिता इम्हा
सूपता विद्महा— हे अनेन बड़े बलवान् और यहातापी
इत् । न हितेवाने द्विवर बलवान् और द्वादश द्वुद्धेन तापरिक
शीलोंके अपेय वर्षक सामर्थ्ये दृग्मने तीर दिने ।

इव मन्त्रये दुर्दानीति चही है । बनुद्धि अविर्तित अपेये
मात्रा भीम है । उठा बनुद्धि नगरिकों भी लोहवा तथा
अपेये जारीन बला करित है । इस मंत्रके पर नीरेवे दक्षिण
वर्षक बलेवाते हैं ।

(मध्यस्या पिया) इव जहाँ द्विद्धिरूप ये गई त्वाति
हाता (शब्दिष्ट प्रार्थन या त) भगवत् बलवान् दुरात्र वष
इम्हा (भगवत् परितंसयच्चै) ब्राह्मी उठिके बनुद्धा
और बलवा विहार बलेके लिने वै भगवत् बला है, इपों
द्वन्द्व (अविमाना चुवद्धा) जनार अद्विवाताना उत्तर
बाह्यवाना (स: इम्हा) वृह स्त्र (विभावि तुग्धापि)
उपर्युक्ते (स: अविप्रपत्ता) इमे गार में गारे ॥ ७ ॥

१ मध्यस्या पिया त शब्दिष्ट प्रार्थन या भगवत्
परितंसयच्चै— जहाँ और द्विद्धिरूप दिने इव स्वोद्धे

एव बलवान् दुरात्र वुद्धि प्रस्त्र प्रार्थनो लेता वह द्विद्धि
दिने में वाम्यवान् करता है ।

२ इव स्वोदा द्वन्द्व अविमाना चुवद्धा चा
इम्हा विभावि तुग्धापि ता अविप्रपत्ता — वह
मद्यवाना और द्वन्द्व रखवाना वह इव एव प्रशान्ते र्षिवीं
हैं वज्राद्धि पार ले जाते ।

३ इव । (द्विद्धे जनाप) सज्जनोंगा द्वेष वलेवाने
द्विद्धि द्वादेषे लिने (पार्थिवादि दिव्यादि) द्विवीं और
प्रकाश (ब्रह्मरिका) और अवलिके लक्षणोंमे (वा
कीपिया) भगवत् तत्त्व और । इ (बृपत) बलवान् देव ।
(विभावा ताम्) चारी ओरेहे जन द्वादेषी (शोकिया
त्यप) अनेन देवधे लक्षणों (प्रद्युम्पिय सी व लक्षण)
जनके द्विवीं दृग्मने करनेके लिने द्विवीं और द्विवीं
होताहैं ॥ ८ ॥

तु वर्षा हैं वह दिव वर्षये द्वादेष्ये प्रस्त्र वर्षा वर्षीये
और वज्राद्धि दृत्तु बलवा चाहिये लिनेहै वही न थे ।

(त्वेषंसंदृढ य-त्वयै इम्हा) द्विवीं वर्षीये
इत् । (दिव्यवत् तत्त्वादि) दिव्य वाम्यवान् और (पार्थि-
वस्य अवगता) द्विवींपके द्वेष्यां भी (राता भुवा) द
रात्य है । (दक्षिणे द्वादेषे वर्षी धीप्त) दक्षिणे दात्ये
प्रकाश वारव घर । और (विभावा माया) वि दृग्मे
तत्त्व द्वादेषे करवाक्षेम नाल कर ॥ ९ ॥

४ त्वेषंसंदृढ य-त्वयै इम्हा— त्वेष-द्वन्द्व द्वादेषाना
भरा-तु जाहि दहित इत् है ।

५ द्विव्यस्य चतुर्य सार्थिवस्य जयता राता
भुवा— द्विद्धिरूप तथा भूमोद्धमे द्वादेषके औदेषा दृ
राता हुआ है ।

६ दक्षिणे द्वादेषे वर्षी धीप्त— अनेन दक्षिणे दात्ये
वर्ष वारव घर और हाते—

वा सुपर्तमिन्द्र वा: स्वस्ति शुश्रुतूर्यांय शुद्धीमश्वभाष् ।
यथा दासान्यार्थाणि शुश्रा करो वस्त्रिन्सुतुक्ष्मा नाहुपाणि
स नौ नियुक्तिः पुरुष वेषो विश्वारामिरा गंहि प्रयन्यो ।
न या अदेवो वरते न त्रेष आर्मिर्यांहि तुष्मा मंद्रप्रिक्

॥ १० ॥

॥ ११ ॥ (१४१)

[सूक्त १७]

(खण्डः — १-११ वस्त्रिः । देवता — इन्द्रः ।)

पस्तिगमशूलो शृप्तमो न मीम एकः कृष्टीष्यापर्यति प्र विशाः ।
यः शुश्रुतो अदाशुपो गर्वस्म प्रस्त्रनासि सुधितराय वेदः ।

॥ १ ॥

४ विश्वा: यायाः विश्वसे— शुश्रुते लग वट
वस्त्रेष्व नात कर ।

५ वैत्र रात्रवासपक्षा उपरेष्ठ कर रहा है । अपने पास
क्षमालोक्ता शुश्रोत योग्य करता और शुश्रुते क्षम वस्त्रेष्व
एक करता आहिते ।

६ (इन्द्र) इन्द्र ! (शुश्रु-तुष्माय) शुश्रुतोक्ते वाच
परनेके विषे (शुद्धीय अ-शृप्तां) वही विश्वार्थी (संयर्त स्वर्ति)
संवर्तमे रात्रेवाक्य और क्षमाल करनेवाक्ये संवर्ति
(ता आ मर) इमें के । ६ (विश्व) विश्वार्थी इन्द्र !
(यथा दासानि आर्याणि करा) विषेष शार्णोकी आव
वक्षाय आता है और (नाहुपाणि) मनुष्योक्ति (शुश्रा)
वेषेषात्र शुश्रुतोक्ते (सुतुक्ष्मा) विश्वाये वट-प्रव विषा
आया है ॥ १ ॥

७ शुश्रुतूर्यांय शुद्धी शमुभ्यो संपर्ते स्वस्ति मः
या मर— शुश्रुतोक्ते वाच करनेके विषे विश्वार्थी विश्वार्थी
साक्षीत एकेवाक्ये और क्षमाल करनेवाक्ये संवर्ति हीं हैं दो ।

८ यथा दासानि आर्याणि करा— विश्वे वासेवे कामे
विषे वहो है । वास— वाष वेषक वष्टु, इह । इन्द्र
वेष वासे वायरिक वक्षाय आता है । रात्रवासपक्षे क्षमाल
और वक्षाय क्षम रही आहिते कि विषेषे शुद्ध मनुष्य वैष
अर्थे वायरिक वन बाब ।

९ नाहुपाणि शुश्रा शुतुक्ष्मा— शालवैक्ते शुश्रु
एक विषे वहो । वे विषेषे मनुष्योक्ते वट व देवे देवी वक्ष
वक्षामे वृष्टामे बाब ।

१० वैषेषे वक्षम वक्षमेष्य वन बाब है वह मनुष्य क्षम योग्य
है । वक्षम वह प्रक्षस्त विषा आत । वक्षमेष्य वन व विषा ही
हैं वैषेषे एक देवा क्षेत्र है ।

८ (अबौ वाप्त वाच ३)

६ (पुरुषत) वृष्ट लोगोंसे तुष्मने वेष्व (येषा)
विश्वाता (प्रपञ्चो) विषव पूर्वीय इन्द्र । (सा) व
(विश्वारामिः नियुक्तिः) वह लोगोंसे प्रवृत्तित अभ्योदय
(ता आ गंहि) इमारे वाच आतो । (वरेष्वः) वृष्ट
(या) ज घरते विन वैदोक्ता रोक नहीं वक्षता । (देवः त)
जो रहे वीर्वाही रोक वक्षता (विमिः तुष्म आ) वह
वेषोंसे लीव ही (मध्यप्रिक्त आ याहि) मेरे पास आओ
॥ ११ ॥

एवे वीर्वे अभ्योदय हो । उत्तम विक्षिप्त हो विषेषे वक्षमेष्ये
वक्षम प्रस्त्रेषा हीर्वी रहे ।

(सूक्त १८)

(यः विश्वमुग्गो शृप्तमो न मीमाः) वे लंगे उभिः
वाङ्गे वैत्ते वासान मनुष्य (पक्षः विश्वा: शुद्धीः) म वक्षा
वक्षति) अलगा ही उभी शुश्रुतोक्ते वासाने प्रवृत्त वर देता
है । (यः विश्वाशुप्तः शुद्धीता वयस्म) जो वास व देवे
वालेके अनेक वरनेके भी व्यावस्था वर देता है वह (सुधित
वक्षाय वेषः प्रवृत्ता वक्षति) वह करनेवाक्योंसे विषे वन
देता है ॥ १ ॥

(अ. ११११)

मासवपर्यम— और दीप्त विषवाक्ते वैक्ते समान वक्ष-
वान् और मनुष्य हा । वह एक शुश्रुतूर्यांये स्ववासपर्य करे ।
वैषेषे शुश्रुतोक्ते वासे वक्षमान दिवर न रह रहे । दीप्त वक्ष वृष्ट
वार वैक्ते स्वाम वीर्वित वन हीं । एव मन्य रात्रैये वक्षमान
व वैषेषे वक्षम वन वस्त हीं । वे वह करता है और वास देता है वैषेषे
वक्षम वन वस्त हीं ।

११ (वक्षः) मीमः विश्वा: शुद्धीः म वक्षायवति—
वक्षम वह वीर्व वक्ष शुश्रुतोक्ते अपने वक्षमेष्ये वक्षात देव ।

स्वं ह स्यदिन्द्र इत्संमाषः पुभूपमाणस्तन्दा ॥ समर्थे ।

दास बद्धुप्पु कुर्यात् न्युस्मा अरेभय भार्हनेयात् शिष्ठन् ॥ २ ॥

स्वं पृष्ठो इपता वीरहेष्यं प्रादो विश्वामित्रतिर्मिः सुदासंय् ।

प्र पौरुषस्ति वृसदस्यामादः वेष्टसाता प्रहस्येषु पूरम् ॥ ३ ॥

त्वं नूर्भिर्नूर्मणो देष्वर्तीति मरीणि युधा हर्यम हंसि ।

स्वं नि दद्यु बुझिते शुनि चास्त्राप्यो दुमीतये सुहन्तु ॥ ४ ॥

३ अद्याशुपाः शाष्टिः पापस्य व्याप्तिः— कहुस-
के भरोड़े उद्धारेवामा भीर हो। कहुस राघुमें पर हों।

१ सुभितराय ऐहः पर्यता— वडप्रतिको चन हो ।

એવ લોય બહુધરીઓએ બનાવ દાન કરતે રહેં। પણ કે જમાનાને
ફરજ મળ વિદ કરતા ન પડે। રાદું દાખ સાચ રાદુંમે વહ
દોઠ રહે શકતા દાન મહાર્થીનોંથી રહેં।

ते रह ! (तथ ह स्यद् तम्या शुद्धप्रमाणा) ते तद
भनने प्रतीक्षा शुद्धा भरके (समये कुरसे माव) उद्देशे
शुद्धी दूरका थी । (यह आवृत्तिपाप असौ शिस्तम्)
वह अर्हुंगी उत्तु इसको यन दिला और (वास्तु शुद्ध
कृत्य मि अर्तधाय) वास्तु शुद्ध और कुरसप्राप्त नाप
दिला ॥ ३ ॥ (कृ ४१११)

दास बनको बहुत है जिको (दस सप्तमये) बाब
इराम है जागरात बरता है जोकोप्पे मानवाव बरता है । समाजमें
बरत भवाता है । शुष्ण यह है कि जो जोप्पेके घनों
भीजो और हुगोप्प लेन बरता है । जनने तुम्हें जिसे शुष्णोप्प
नाए बरता है । कु पद यह है कि जो अपने हुए उप्पे
जोड़ बरत बटार जोप्पोचा रहा है । इहें बनावाहीके
नारपत्रा बिषाट हाता है । इसका समाजके हितके जिन नान
बरता चाहिए ।

१८ तस्या शुभ्रप्राणः समये कुरसं व्यापः— नवं
अनेक व्रतमें बुद्धे अनेक भूताशी कुरुत्वच्च इति ची। व्यपन
च। भूताशी हीमि दशही दुर्लभा पर्वी पाहिष्ठे।

*** दास गुप्ते कृष्ण विरचया—** पाताली दोष
दत्त तथा तु रीढ़ तादृक् भास्यम् अवश्यर कर्मेवतोष नाता
पर। समाप्तं इत्येषु पर।

३ शिष्यम्— इति वात्म प्रिणा हो। उवाच एव
नीतिर्वर विद्वेदैष वात्मस्ते वत्त न वर स्ते ऐता
पु।

ऐ (भूम्पा) उत्तरवार्ष द्वादशी । तो (भूपता वीरवद्य
सुधासंच) अपने बड़से भाजका बाब परनेहाले उत्तरवार्ष
(विश्वामिः ऋतिमिः प्र भाष) बोले और सबके पाप
नोंचे दंडण किया । (वृहदस्त्वेषु सेव्रसाता) इन एव
इनके मुद्दमें तथा ऐतिथं यात्राएं करके उत्तरव (योकुर्तिं
वदस्त्वेषु युरुं च प्र भाषा) । उत्तरवार्ष के मुख उत्तरवार्ष तथा
उत्तरवार्ष किया ॥ ३ ॥ (कृ. अ१११)

१ शूपता विभागिः करितमि। प्राप्तः— वृषभे
व्याहरेत् वस्ते वस्तु शूपतो लाबनो हारा प्रवाप्तं संतरप
ददे। अर्थात् वृषभं व्याहर दो और भरहनके लाबनों
प्रवाप्तं संतरप ददे।

ऐ (नू-मान) मदुभोके मरोकी आप्पर्वित करतेहाते है। जबका जिका मम मदुभोका हित करनेमें ममा है ऐसे है। (देषवीती एवं सुमि सुरीयि शब्द इंसि) उर्मे व अपने बीके हाथ बहु छुमोका मारता है। ऐ (इर्यथ) इर्दिस्तें चोरीबाले इन। तुमे (वमीतये सुराग्नु) इम्भिले जिने वज्रे हाथ रखु, उम्री और बुधिये (गि वस्ता प्रथः) स्माना मापि ॥४॥ (क. ३११५)

मु-मां - मग्नियोदा प्रवासीोंका हित वरने के
प्रियता मन बलर रहता है इसकिये प्रवासीोंका मन लिनार
क्षम है जिसमें प्रवासीोंका मन आकर्षित किया है। **बेद-**
वीटी - यहाँ देशेभ्य गताप्तर होता है अस्तर बलनेमें
यहाँ एकत्रित होते हैं वहाँ वहाँ एकत्रित होते हैं। वह तभा
अधिक पुढ़। हयात लाल रखें थोड़े जितने हेतु रखें
होते हैं। तु इन्हुंने दिलचस्प अप्पी तार लाडे बाटे हैं एवं
इन्हें उत्तराधिकारी प्रथा। वहाँ - कालात बरेदार॥

एवं उपर्युक्ताना देवा । वृषभा - भवतिवाचनम् ।
यु मुहिः - उम उमरर वह के देवर लाल बरेश्वरा
सुधिः दिक्षेत्रादा भग्नयेवम् भा अप्ने भिरात् स्वर्ण
धन्वं रहने वही रेता ते पूर्ण लक्षण भ्रष्ट हैं । इनमें ए

तर्व ष्पीतानि पञ्चहस्तु तानि नव यस्मुरो नवर्ति च सुधः ।

निषेद्धने शत्रुमादिवेपीरहं च धूर्त नहृचिमुताहन् ॥ ५ ॥

सना ता ते इन्द्रु मोदनानि रुतहस्याय द्वाशुपे सुदासे ।

वृष्णे ते इरी वृष्णा युननिम व्यन्तु प्रदाणि पुरुषाकु माजेष् ॥ ६ ॥

मा ते अस्या तंहसावन्यरिटावुपायं मूम हरिवः परादै ।

त्रायस्व नाऽङ्गुकेभिर्वर्षयैस्तवं प्रियासौः सुरिषु स्पाम् ॥ ७ ॥

एतना आहिए । 'इ-मीतिः - इमनेके काल चो भयमीत हुला है ।

१ शू-मता— पशुभ्योध हित करनेके लिये अतना मन आया । प्रवाडा हित करनेमें तत्पर हो । प्रवाडे मनोन्मे आकृतिं चर ।

२ देवघीतो शुभि शूरीणि हंसि— मुख्येमें घमने वीरी हाता वहुत कठुमोडा ताम चर ।

३ वस्यु शुमुरि शुभि लि अत्यापय— पात्तारी इत्यानी भीर वराहादृ उत्तेजसे उठुर्मोध वप चर । ते दिरेमें न वडे देषा चर ।

४ दमीतये शूरीणि हंसि— इमनेके काल चो भय भीत हुला है उठधी शुरका उत्तेजे लिये वहुत इर्होका वप चर । वराहां काहै इतन न घेरे देषा चर ।

५ (वशहस्त) वशारी इत ! (तप तानि चौस्याति) तरे ते वशिद वत है ति चा (यत् सप्त मया तर्ति च पुरा सधः) तुमे तत्तके तो भार न घ्ये तत्तमोध भेद तत्तात ही दिया चा भीर (निषेद्धाने शततमा विपर्योगो) भनेते ठारेमें लिये बब तवी वपटीमें तुमे व्रेष दिया वीरी एवत (धूर्त च प्रहस्त) इत्या तुमे वरा भीर (इत नहृचिम भद्रन्) नहृचिद्या भी मारा ॥ ५ ॥

(ज. ११५)

प्रावयप्रम— उङ्गुके दिनो, प्राचारी तता वगाँडा वरा वरना चाहिये भीर वरपर अतना स्वामिद स्वारव इतना च दिये । तपा वरनेचा वसना हरोमें इव देवेशन यतु इत ही वरना । च वरना आहिए ।

५ यज्ञ इत्या इत्यमें इव तीर्तं भाराचा यज्ञ वराय उत्तेजसम वीरा । यज्ञ वीर वय च वपति पुरा । उठुर्म्यानेव वरदियोदा भद्र वराता दे तत्तदेव वाहाते तिन च तपा वरनेके शकारोध वाय वरदे दिवदी हातर वय वरदर

बोमे प्रेषेष वरत्य ह और खव दौवी नवमिमें प्रेषेष वरदे वही रहता है । 'भूत्र' (भावूपोति) चा भेदक इतना चरता है भीर च मुखि (न मुश्चति) चो प्रस्तन वरेपर भी छोटा नहीं दिली च दिली स्पर्में वही रहत्य है भीर इव देत्य ही रहत्य है यह ममुखि है । ते चर चकु है । इतका वाय इव रहता है ।

६ इत्य । (ते रातहस्याय द्वाशुपे सुदासे) तुमे इत्य भेदाले शारी द्वाशुपके दिये (ता मोदनामि सना) चो दुमे भागादे दोग घम दिये ते चरा दिहमेवात्तमे । दे (पुरु द्याक) वहुत उत्तिमाद वीर । (धूर्प्ये ते) वक्तव्याली ऐसे उत्ते तत्तेके लिये रपर्ही (धूर्प्या दीरी युननिम) वसणाती योदे चोत्य हू । (प्रहाणिं याज व्यग्नु) ज्ञान वक्तव्याली ऐसे लेने पाप वर्तुमे ॥ ६ ॥

(ज. ११५)

७ द्वाशुपे सना मोदनामि— शारादे दिये वरनेव तुमे चोम चाप्त दिहमेवात्तमे चोप चा ।

८ पुरु द्याक— वहुत उत्तिमाद वन । अतनमे वहुत वायप्य वरात्ता । पुरा— वक्तव्याद वैठ देषा चाप्तिमाद ।

९ वातां प्रदाणि व्यग्नु— वक्तव्याद वीरदे वात प्रप्तिवा ते वरन वर्तुमे । वक्तव्याद वीरी प्रप्तिवा दीरी रहे ।

१० धूर्प्या दीरी रहे चुमिम— वक्तव्याद वाह मै इत्या चोपरा हू । इवमे वक्तव्याद वाह भाव चाहिए ।

११ (सदसायन् इतिया) वक्तव्याली भव चेदोहमे इत । (तप भव्या परिद्यो) ती इव वर्त्यमें (पायद स्वापय मा भूम) द्वितीय वराय भेदा च य इवो च हो । (म धूर्क्षादि यद्या वायत्य) इवे वाया च उत्तेजादे वर्त्यमें वाहाम (प्रहित तप वियातास्वाम) इनिमें इव तप भावह दिव वन वर्त्य ॥

(७ ११)

ग्रियास् इति भवत्तुमिष्टौ नरो मदेम श्रुते सखायः ।

नि तुर्वस्तु नि यादै शिशीषितियिगवाप् छस्त्रे कुरिष्यन्
सुधिष्ठितुं ते भवत्तुमिष्टौ नरोः भवन्त्युक्तप्रशासि तुक्षा ।

ये ते इतिमिष्टि पुर्वोरदौष्टशुभान्तुक्तिष्ठु भुन्याप् तस्मै
एते स्तोमा नरो तुलम् तुम्यमस्तुम्यश्चो ददतो मुष्ठानि ।

तेऽमिन्द्र वृत्रहत्ये शिशो भूः सखा शु शूरोऽविवा च नृपाम्

॥ ८ ॥

॥ ९ ॥

॥ १० ॥

मात्रवधम्— यदुपर अधिकारां बते । उत्तरेष्ठी सदामत्ता
से ही एव कार्यं करेदा पापं लेखं न देहे । अपनी शत्रुघ्ने
बन्ने शर्वं दरे । शाश्वतेनावधीम् बने । कूरता रहित उत्तरक
साक्षात्तो व्रेष्ठावर्णोदय व्राता होता रहे और व्रातिसंविधि भी
अधिक विद्यात् व्रातर गुणे पक्षे प्रथा बते ।

१ सहस्रावान्— परिवस करेदी विधि, तुल्य प्रथा
करेदी विधि ऐसी जैवक विधिओंसे तुष्टि । इतिविधि—
जोहे पाप रक्षनेता नहै ।

२ पराये व्यायाम भा भूम्— इसारावे प्राप्तमता लेख
ही अपने पाप करेदी विधि (पर-भा दा) यह व्यायाम
मिहृष्ट विधि है । अतः पर वासी व्यायाम है । ऐसी विधिओंमें
इसे रक्षा न पड़े । अवृद्ध इम अपनी विधिओंही अपने दृष्ट
प्रथमं दरे इसी हासी विधि वह तुष्टि हो ।

३ भवुकेमि वदयोऽपायत— इह कूरता दृष्ट
है । व्युक्ते तृष्णा रहित वीरताका बोव दीत है । वृष्ट
कर्तव्यके विधिओंमें बन है । कूरता रहित लाते व्रातवेदि
इत्याप लात है ।

४ एतिषु तद् ग्रियासः व्याम— इम व्रातिसेवै
विधिं शानी बने और इव दमो शनी व्यविधत्तके व्याय
इम गुणे पक्षे बन ।

५ (मप्रपद्) वनवाद इत् । (ते ममिदी) देवी
सुति दर्ते दुर (वर स्यायापः ग्रियासः दारये इत्
महम्) इम धर वता वनाव वाव वनवानेते दुर्दृष्टि विव हृदर
बन्ने वाये वामदर्ते रहे । (मतिविधियाय द्वार्ष्यं करि
प्यम्) अविवाहार (वनवानेते विवे प्रत्यक्षानाम् तुष्टि
भावात् विवाह दर्ते (तुष्टि पादै नि नि विधिदी) तुष्टि अ वर इन तुष्टिभेदे भावन वतामे वर ॥ १० ॥

(अ. ११५)

प्राप्तवायय— प्रवाद वाव करेदी पक्षे वर वाव
है । अन्य रैप्यं दृष्णा रहा भवन दी राम इव भेदये

नेता व्याप्तर व जावे । अतिविस्तार कहे । तुष्टिभेदे वर्णे
रहे । उनमें वरने व रहे ।

६ मध्यवम्— वनवाद वनाव वायिवे क्योंकि वर्णेही
वर वर्णं हीते हैं । मध्यवम् इति ही वनवाद वैद्यो
वर्णं करेवाका होता है ।

७ स्वायापः ग्रियासः भरा श्रुते मदेम— इति
एव कार्यं करेवाके परस्पर प्रतीति करेवाके बेता व्याप्तार्थं
हीकर व्याप्ती वंशव करेवाके हातर वर्णे स्वायापं जावरे
है । इत्यमें न रहे । इमें अपने देखमें दुर्व लोपना न रहे ।

८ अतिविधियाय द्वार्ष्यं करिष्यम्— विधिवाक
वर्णेवेद्य दिति कहे ।

९ तुष्टिर्हो यादै नि विधिदीहि— वाये वक्ते इत्येवे
तद् तुष्टिभी तुष्टिभेदे दुर कहे । यादै (यादेवाद्)
वर्णेवे विवाह स्वाम है द्वाप्तेवे रखेवाम लहु ।

१० (मध्यवम्) वनवाद इत् । (ते मु भमिदी) भी
सुति द्वारुक व्यवेदे (व्यविधायासः ये मरा) रहित वामेवे
वाये बो बेता (स्यापः विव उक्त्या द्वासति) व्यवत ही
रहेवेभ्य बोसते हैं । (ते हेमिः पवीत् विव व्यायाम्)
व्याप्तेन भावे वालोधि पक्ष व्यविधायामी वाम वर्णेवेवे
वना दिका है । (तमी तुष्ट्याय वनवाद तुष्ट्याय) वर
विवानेवे विवे दमावा व्यवदार वर ॥ ११ ॥ (अ. ११६)

११ यज्ञी व हीते हैं कि वा पक्ष करते हैं । व तुष्टा वर्ण
विवप वरते हैं । व्यवाद—वनवाद वर्णेवेवे दोते हैं । वे
व्यवता वर वनवा वाहते हैं । ऐसे लीलाये भी (पर्वत
विव वनवाद) वर व्यवदार वर वामोदी भी वाया वरा
दिका । वह वरिवाम तुष्टिके वाय वर देते हैं दुरा । इत्येवे
इत्यकी तुष्टि वरनी तुष्टा पक्षी वाहिते ।

१२ (मूलम इत्यद्) वर्णाभेदे वस्त्र वर्ण दृष्टि । (तुष्ट्य
पक्षे वनवादः व्यवादि दृष्टाः) तुष्टै वै पक्ष वर देत दृष्टि
(व्यवाय वाः) इकाई भी वा रहत है । (तेवरी तुष्टवाये

न् इन्द्र धूर स्तुवमान द्रुती प्रद्युजूरस्तुन्वा॑ चाकृष्ण ।

उप नो वाजान्मिमीषुप॒ स्तीन्युप पात॒ लुस्त्रिभिः॑ सदा॒ नः ॥ ११ ॥ (१५३)

॥ इति चतुर्थोऽनुषासः ॥ ४४ ॥

[सूक्त ३८]

(काणि । — १-३ इतिमिथिः ४-६ मधुष्टम्नदा ।) देवता — इन्द्रः ।)

आ याहि सुपुमा हि तु इन्द्र॑ सोम॑ पिमी॑ दुमम् । एदं प्रहिः॑ संबुद्धे॑ मर्म॑ ॥ १ ॥

आ स्त्वा॑ प्रद्युपुमा॑ हरी॑ वहवामिन्द्र॑ केशिना॑ । । उप॑ प्रद्याणि॑ नः॑ मृण॑ ॥ २ ॥

शिष्यः भूः । उन्हें किमे चतुर्थ वापि कर्त्तव्ये मुख्ये दृप्त
प्रभाव॑ कर्त्तव्यात्मा हो तथा उप॑ (मृण॑ स्तुवा॑ च शूरः
अविता॑ च) मानवोऽन्ना॑ तित्र॑ और एष॑ उंडरदृष्ट हो ॥ १ ॥
(कृ. ४११११)

मानवधर्म—मनुष्योंमें यह॑ वर॑ । वसना॑ दान॑ वर॑ ।
कुट्ठें समय॑ मनुष्योंमें छहावता॑ करके उनका॑ कल्पना॑ कर॑ ।
मनुष्योंका॑ उंडरदृष्ट वर॑ और उप॑ किमे॑ शूर॑ वर॑ तथा॑ मनुष्योंके
पाप॑ मित्रवद॑ कल्पना॑ वर॑ ।

१ शूरमा॑— नेता॑ दूर हो॑ भी न हो॑ ।

२ मधुष्टम्नदा॑— इन्द्राजूतः— सुविष्ठ॑ और इन्द्रे॑ इन्द्रे॑
प्रेता॑ किमे॑ । प्रभाव॑ कर्त्तव्ये॑ कर्त्तव्ये॑ प्रेता॑ उप॑ (स्तुवा॑
ईर॑ सुतिष्ठ॑ किमे॑ । ईर॑ सुतिष्ठ॑ मैं ईर॑ वहा॑ वर्त्त्या॑ ईर॑
मानवे॑ स्तुव्यात्मा॑ प्रत्या॑ मित्री॑ है॑ । मैंही॑ प्रेता॑ किमे॑ ।

३ तत्प्या॑ द्रुती॑ चाकृष्ण— अनन्ता॑ एवैर॑ और अपैरे॑
अवर्गी॑ ईर॑ (वर॑ कर्त्तव्यी॑ उप॑ वहावी॑ वापि॑ । देवता॑ ची॑ सुविष्ठ॑
और इन्द्रे॑ अनन्ते॑ करीके॑ उंडरदृष्टके॑ व्याव॑ तथा॑ उंडरदृष्टी॑
उप॑ वहावी॑ उप॑ विरुद्ध होते॑ हैं॑ ।

४ याजान्॑ नः॑ उप॑ मिमीहि॑— वह॑ और वह॑ हमे॑ प्राप्त॑
हो॑ । तात्पर्य॑ वह॑ याजेता॑ के॑ वह॑ हमे॑ किमे॑ और वह॑ मित्रेता॑
वह॑ से॑ इमोर॑ वह॑ वह॑ । अवश्य॑ उप॑ देवा॑ किमा॑ वह॑ किमि॑
प्राप्तिर॑ वह॑ वह॑ पर॑ कही॑ न चह॑ ।

५ स्तीम॑ वह॑ मिमीहि॑— ईर॑ किमे॑ वह॑ हो॑ । किमा॑
कर्त्तव्ये॑ विवित॑ इन्द्रा॑ पह॑ देवा॑ कही॑ न हो॑ ।

६ स्वस्तिभिः॑ न पात॑— कल्पना॑ कर्त्तव्योंके॑ सावनोंमें॑
हमारी॑ छुट्टा॑ हो॑ । ऐसा॑ न हो॑ कि॑ हमे॑ मुर्हित॑ हो॑ ही॑ पर॑
हमारी॑ इन्द्रि॑ ही॑ हानि॑ होती॑ वापि॑ । तात्पर्य॑ हमारा॑ कल्पना॑ भी॑
हो॑ और हमारा॑ उप॑ उंडरदृष्ट भी॑ हो॑ ।

७ यह॑ चतुर्थ॑ मनुषाक॑ समाप्त॑ ॥
(सूक्त ३८)

मानवधर्म— मनुष्य॑ यह॑ है॑ । देवतावी॑ सुविष्ठ॑ और
कल्पना॑ कर्त्तव्ये॑ उप॑ उंडरदृष्ट कर्म॑ कर्त्तव्ये॑ प्रेता॑ किम्बा॑
हो॑ । उंडरदृष्ट वहावी॑ और कल्पना॑ वह॑ और वह॑ वह॑ पर॑
वह॑ कर्त्तव्ये॑ यापार्थ्य॑ हो॑ । वह॑ ऐसे॑ प्रस्तुत हो॑ कि॑ विवित॑ वह॑
हो॑ । ईर॑ किमे॑ विव॑ उप॑ वह॑ हो॑ । मानवोऽन्ना॑ कल्पना॑ हो॑ और
वह॑ उंडरदृष्ट मी॑ हो॑ ।

१ शूर— नेता॑ दूर हो॑ भी न हो॑ ।

२ स्तुवमानः॑ इन्द्राजूतः— सुविष्ठ॑ और इन्द्रे॑ इन्द्रे॑
प्रेता॑ किमे॑ । प्रभाव॑ कर्त्तव्ये॑ कर्त्तव्ये॑ प्रेता॑ उप॑ (स्तुवा॑
ईर॑ सुतिष्ठ॑ किमे॑ । ईर॑ सुतिष्ठ॑ मैं ईर॑ वहा॑ वर्त्त्या॑ ईर॑
मानवे॑ स्तुव्यात्मा॑ प्रत्या॑ मित्री॑ है॑ । मैंही॑ प्रेता॑ किमे॑ ।

३ तत्प्या॑ द्रुती॑ चाकृष्ण— अनन्ता॑ एवैर॑ और अपैरे॑
अवर्गी॑ ईर॑ (वर॑ कर्त्तव्यी॑ उप॑ वहावी॑ वापि॑ । देवता॑ ची॑ सुविष्ठ॑
और इन्द्रे॑ अनन्ते॑ करीके॑ उंडरदृष्टके॑ व्याव॑ तथा॑ उंडरदृष्टी॑
उप॑ वहावी॑ उप॑ विरुद्ध होते॑ हैं॑ ।

४ याजान्॑ नः॑ उप॑ मिमीहि॑— ईर॑ किमे॑ वह॑ हमे॑ प्राप्त॑
हो॑ । तात्पर्य॑ वह॑ याजेता॑ के॑ वह॑ हमे॑ किमे॑ और वह॑ मित्रेता॑
वह॑ से॑ इमोर॑ वह॑ वह॑ । अवश्य॑ उप॑ देवा॑ किमा॑ वह॑ किमि॑
प्राप्तिर॑ वह॑ वह॑ पर॑ कही॑ न चह॑ ।

५ स्तीम॑ वह॑ मिमीहि॑— ईर॑ किमे॑ वह॑ हो॑ । किमा॑
कर्त्तव्ये॑ विवित॑ इन्द्रा॑ पह॑ देवा॑ कही॑ न हो॑ ।

६ स्वस्तिभिः॑ न पात॑— कल्पना॑ कर्त्तव्योंके॑ सावनोंमें॑
हमारी॑ छुट्टा॑ हो॑ । ऐसा॑ न हो॑ कि॑ हमे॑ मुर्हित॑ हो॑ ही॑ पर॑
हमारी॑ इन्द्रि॑ ही॑ हानि॑ होती॑ वापि॑ । तात्पर्य॑ हमारा॑ कल्पना॑ भी॑
हो॑ और हमारा॑ उप॑ उंडरदृष्ट भी॑ हो॑ ।

७ यह॑ चतुर्थ॑ मनुषाक॑ समाप्त॑ ॥
(सूक्त ३८)

१ शूर॑ (आ याहि॑) का॑ (से॑ हि॑ मुण्डमा॑) हमे॑
हो॑ किमे॑ उप॑ उंडरदृष्ट किमोवा॑ है॑ । (ईर॑ सोम॑ पिव) ईर॑
किमये॑ ही॑ । (मम ईर॑ यहिं॑) भैर॑ यह॑ वहा॑ है॑ (आ
सदा॑) ईर॑ वर॑ भेद॑ ॥ १ ॥
(कृ. ४११११)

२ ईर॑ (केशिया॑) वायेवाक॑ (इन्द्रपुष्टा॑ हरी॑)
इत्तोसे॑ सुवेदोवा॑ हो॑ । भैर॑ (वा॑ आ॑ यहावा॑) ईर॑ वह॑ के॑
वामे॑ । (मा॑ प्रद्याणि॑ उप॑ शूरु॑) ईमारी॑ मानवोंमें॑
हो॑ ॥ २ ॥
(कृ. ४१११२)

प्रसार्णस्त्वा षुय युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः ।	सुतार्वन्तो हवामहे ॥ ३ ॥
इन्द्रमिश्रायिनो वृहदिन्द्रमुक्तमिरुक्तिः ।	इन्द्र वाणीरनूपत् ॥ ४ ॥
इन्द्रौ इदर्योः सचा समिश्ल आ वैयोयुजा ।	इन्द्रौ वृभी हिरण्यपतः ॥ ५ ॥
इन्द्रौ द्वीर्षीय चक्षसु आ षुर्ये रोहयदिषि ।	पि गोमिरिद्विमेरपत् ॥ ६ ॥ (११)

[सूक्त ३१]

(कथि । — १ मधुष्ठम्भा १-५ गोपूष्टव्यध्यस्तुकिनो । वेष्टा — इत्याः ।)

इन्द्रौ वो विष्वतुस्परि हवामहे चैन्यः ।	अुमाकमस्तु केवलः ॥ १ ॥
अ्युन्तरिष्मतिरुमदु सोमस रोचुना ।	इन्द्रो यदमिनद्वूलम् ॥ २ ॥
उद्ग्रा भूलदिर्गिरोम्य अदिष्कृष्टन्युहा सुरीः ।	अर्धार्द्वं नुदुदे प्रलम् ॥ ३ ॥
इन्द्रेण रोचुना त्रिषो दुव्वानिं रुहितानिं च ।	स्थिरायि न पराषुदे ॥ ४ ॥
अपामूर्मिर्दधिषु स्वोमै इन्द्राविरापते ।	पि ते महो भराविषुः ॥ ५ ॥ (११)

१ इत् । (वर्ण सोमिनः व्याप्ताः ।) इम सोम कलेवते नमः (सुतावस्त्वा ।) सोमस निष्कलेवत (स्वा सोमपा युजा हवामहे ।) दृष्ट सोम विनियोगे वर्णने इवके वाच दुष्टारे ॥ १ ॥ (क. ११.१)

कोई व्याप्तिः अदा तो (इवं वर्ति । मे ।) यह वाचन वाक्ये विष्ट है ऐसा वेष्टपत्र वर्णने छेष्टों विष्टे वाचन देना चाहिए ।

कथिता व्याप्तुया इती (क. २) — वर्ण वाचामै इत्यार्थे इवके वाच दुष्टारे वोहों । वेष्टे वेष्टे विष्टामै वाच ।

(गायिनः इत्याद्य ।) वाचा वदेवते इत्यका ही (युद्ध) इवं वाचे यत् वर्ते है । (अर्हिणः अर्हेभिः इत्यै) मेत्रात्म वर्णनामै इत्यार्थे इत्यर्थी ही सुर्यो वार्ते है । (वाची इत्यै अनूपत्) इत्यार्थी वाचियो इत्यर्थी ही सुर्यो वाची है ॥ २ ॥ (क. ११.२)

(इत्येवं वर्ती हिरण्यपतः ।) इत् वह वाच वर्ता है और सुन्दरी वोचाव वर्ता है । पर १५ (वर्षोयुजा या संमिश्रतः) वाचीहे वाच सुन्दरेवामै (हव्योः सचा इत्) वो वाचीका वाची ही है ॥ ५ ॥ (क. ११.३)

इत्येवं (वीर्याय वस्तुसे) इत्यथ वेष्टेवे विष्टे (सूर्ये विष्टि वा दोहयत्) सूर्येवे विष्टामै (अर्द्वि वि वेष्टपत्र) वर्णत्वो-वेष्टवो वह विष्टा ॥ ६ ॥ (क. ११.४)

१ इत्यार्थः वर्ती हिरण्यपतः — इत् वह वाच वर्ता है और दुष्टारे यूक्त वाच वर्ता है वा सुर्यो वेष्टा वर्णने वाच वोचाव वर्ता है ।

२ इत्यार्थः इत्योः सचा — इत् वोचोऽपि विष्ट है, वेष्टोऽपि वाच दुष्टारे है । वर्षोयुजा या संमिश्रतः — इत्येवं वाचनेवामै वेष्टोऽपि वाच वह इत्या है ।

वेष्टे पाठनेवामै वेष्टोऽपि वाचो वाची वाचये । वेष्टोऽपि विष्टिकरे वेष्टे विष्टोरेवे इत्यार्थे इत्येवं वाच तुहं वाच ।

३ इत्यार्थः वीर्याय वस्तुसे सूर्ये विष्टि वा दोहयत् इत्यन्ते सूर्या इत् वर्णनेवे विष्टे सूर्येवे युक्तार्थे वर्ण वाचामै है । इत्येवं इत्यसे इत् युक्त है वह विष्ट होता है । इत्येवं वीर्याय वाचापत्र विष्टा है । सूर्येवे इत्यार्थित विष्टा है । वेष्टोऽपि इत्यार्थित विष्टा है ।

४ गोमिः अर्द्वि वेष्टपत्र — विष्टोऽपि वेष्टवो वह विष्टा । गौ—विष्ट वह भूमि । अर्द्वि—र्वत वह वेष्ट । इत् वेष्टवामै अर्द्वि वाचावामै विष्टावामै है । इत्यार्थात् वीर्य वह मंत्र नहीं है ।

(सूक्त ३२)

(विष्टामै वर्ती वस्तुस्य) वह जोते लेवायि युक्त वर्णे (वा इत्याद्य हवामहे) तुम्हारे विष्टे इत् तुष्टेहै । (केवलः वाचाकमस्तु) वह जेवल इत्यार्थ वोम्प देव ॥ १ ॥ (क. ११.५)

३ ५ (१११-११४) मंत्र वर्षां ३ १३६१ ४ वेष्टो ।

[सूक्त ४०]

(क्षणिः) — १-३ मधुच्छम्भाः । देवता — इन्द्रः। महात्म २-४ मरुतः ।)
इन्द्रेण् सं हि एषसे संसारमानो अविमियुपा । मृत्युं संमानवर्षेसा ॥ १ ॥
अनवपैरुभिद्युभिर्मिसः सहस्रदर्शसि । गुणैरिन्द्रस्य फालयेः ॥ २ ॥
वाहै सुशामनू पुनर्गुरुत्वमिसुरे । इचोन्ना नामे युद्धिवैषम् ॥ ३ ॥ (१४७)

[सूक्त ४१]

(क्षणिः) — १-३ गोत्रमः । देवता — इन्द्रः ।)
इन्द्रो दधीचो अ॒स्पर्मिव॑प्राण्यप्रतिष्ठतः । स्थाने नवुरीनैव ॥ १ ॥
उच्चलभैर्सु पश्चिमैरभित्तृः । पर्वतैर्मधुरभित्तृ ॥ २ ॥
अत्राहु गोत्रमन्पत्तु नामू त्वद्युरुपीच्युम् । त्रुत्या चुन्द्रमेषो गृहे ॥ ३ ॥ (१४८)

(सूक्त ४०)

(अविमियुपा इन्द्रेण संसारमानः) निर इन्द्रके
साथ जागीरात् (एवं इससे हि) एव देवता है । (मृत्युं
संसारवर्षेसा) आवश्यक और समान कानिकाने द्वय
प्राप्त हो ॥ १ ॥ (क. ११६७)

(अविमियुपा) दोष रहित (अभिमियुपा) पुलेशो और
देवतेषामे (इन्द्रेण कामये गणी) इन्द्रके विष वज्रेषों
साथ (मक्षः सहस्रदृष्ट्यत्वंति) वह एव वज्रेषामे गीत
करता है । वहामे एव वज्रेषामे स्तोत्र विष बहिः ॥ २ ॥
(क. ११६८)

(मातृ भृत्युपना) इन्द्रके भेतर उपना (स्वधी भन्नु)
जगती भारत शाखिर्भुवार वे (एषियं नाम इन्द्राना)
पूर्व नाम भारत भरत हुए (गर्भस्त्वं परिष्ठर) यर्म सम्भवे
भारत हुए ॥ ३ ॥ (क. ११६९)

१ अविमियुपा इन्द्रेण — निर इन्द्र है । देवा निर
भी हो ।

२ अविमियुपा संसारमानः — निर वज्रेषो साथ जागी
र वेष्टता है ।

३ मृत्युं संसारवर्षेसा — इर्वित भृत्य तेजसी वीर हो ।

४ अविमियुपा गणी — विद्वां और तेजसी
मित्रवर्षेषो साथ इन्द्रा केरहे हैं ।

५ मक्षः सहस्रदृष्ट्यत्वंति — वज्रेषो वज्रुष गीत करे
प्राप्त हो ।

६ एषियं नाम इन्द्राना — पवित्र नाम भारत इन्द्रके
रामा वत्तम है ।
न यस्याम वर्तम है । यस्य इन्द्रके साथ एवेहै भौत
दे कुशादि करते हैं ।

(सूक्त ४१)

(इन्द्रः वप्रतिष्ठतः) विषका दोहे सामना नहीं कर
एवता ऐसे इन्द्रो (वर्षीयो भारियामिः) इवाप्य इवायेषि
(नवरी : नव इवायि वायान) विषामने इवायेषि
माता ॥ १ ॥ (क. ११६९११)

(पर्वतेषु वप्पिष्ठिते) वर्षीयेषं पवा त्रुता (पवा भारतस्य
विष इन्द्रेण) वा जोरेष्य विष वा वज्रेषो जात वज्रा
वाहा (तथा वार्याण्यावति विद्वत्) वज्रो वज्रवानामिसे
पापा ॥ २ ॥ (क. ११६९१२)

(इत्या वज्रमसो घृते) इव तथा वज्रमामे भर्त्ये
(भर्त मह) गीरी (स्वपुः अभिष्ठये गोः साम) त्वद्वारी-
स्त्रीयो गीरी (विषय) वे (भर्तवत्) वह है रेता
पापा ॥ ३ ॥ (क. ११६९१३)

१ वज्रेषो द्यौपोष एव वज्रवत् निवासदे द्यौपोषी वारा ।
दधीत्व (विष-वज्र्) वही विषये होता है एव एव है ।
पूर्व वज्रेषामेषी ही वेष्टय निवासदे द्यौपोषी दूरभासी है । एव
वज्रेषामेषी ही वारा एव भवत्येषो वज्रेषी वारा वारा है । विष-
भवे एव वे निवासदे द्यौपोषी वेष्ट नहीं हैं । इसीमे भी वज्र वज्र वज्री

[सूक्त ४२]

(ज्ञापि : — १-३ कुरुस्तुतिः । देवता — इन्द्रः ।)

वाचमृष्टापदीमृष्ट नवज्ञकिमुत्तुस्तुतम्	। इन्द्रास्पर्ति तुन्वेऽममे	॥ १ ॥
अतु त्वा रोदसी उमे क्रविमापमहोत्तम् । इन्द्र यदस्युहामेः	॥ २ ॥	
उचिष्ठमोदसा सुह पीत्ती शिष्मे अवेपयः । सोमिन्द्र चमु सुरम्	॥ ३ ॥ (१५)	

[सूक्त ४३]

(ज्ञापि : — १-३ विश्वोऽह । देवता — इन्द्रः ।)

मिति विश्वा अप द्विषुः परि वाचो ज्ञाही सूर्पः । वसु स्पाई वदा मर	॥ १ ॥	
यद्वीलाविन्द्र यस्त्विरे यस्त्विन्ते परामृतम् । वसु स्पाई वदा मर	॥ २ ॥	
पस्ये ते विश्वमानुषो मूर्दुक्षस्य वेदति । वसु स्पाई वदा मर	॥ ३ ॥ (१५)	

सद्गता । वह और वह विभिन्ना विवरक कंत्र है । देवोंसे इनमें विचार अनु जाहिने ।

१ पर्वतीने वहा लोहेका धिर हर्षवाचादिमें मिथ्या । वह मी हैरी ही गृह विद्या है । इसकी ओर होती जाहिने ।

२ वस्त्रमधाः पूर्णे तदप्युः अपीच्यं गोः नाम अम स्तुत — वस्त्रमधे वह तदात्म दृश्य वहा विरुद्ध मिल जगा । उत्तरेका धिर वस्त्रमधामें पूर्णता है और वह धिर वस्त्रमधे वह मिथ्या है ।

वह सूक्ष्म गृह अर्थे वत्तेवत्तम है अठ इसके विचारमें ओर विदेष दोही भास्त्र वास्त्र वास्त्रकृ वर्णनकर ।

(सूक्त ४२)

(वाचापर्वी) बाठ परवानी (वद-वस्त्रिः) वो ज्ञानी-वाची (वक्त-वक्त्रा) वस्त्रको स्वर्व अनेवाची (तत्त्व वाचं) उत्तम वाचीवी (इन्द्रात् पीर ममे) इनमें एक ओरसे वह वीरें माता है ॥ १ ॥ (कृ. ८०५१११)

हे इन् । (यद् वस्त्रुहा अमवः) वह तु वस्त्रुबोत्ता वास्त्रेवत्ता हुआ तत् (उभे दोहीसी) दोहों पुरु और भूक्त (तदा) तत् (वक्तमाणी अनु वक्तव्येताः) वक्त वीरें वैष्णो वाप गये ॥ ० ॥ (कृ. ८०५१११)

हे इन् । (घृतं सोम चमू पीत्ती) ओरपथे चम दोहों शाहे हुएपी वक्त (वोक्तसा तत्त वक्तिष्ठन्) वक्तके वाप छोड़े एव तुमने (विष्मे वक्तेपय) दोहों हुएपी वक्तव्येताः क्षमाता ॥ ३ ॥ (कृ. ८०५१११)

१ वाचापर्वी मव-वस्त्रिः अत्तस्तुत्ता वाचे परि मम-बाठ वास्त्राली भी प्रश्नात्मे वस्त्र वस्त्र वत्तेवत्ती वक्तिष्ठाकी वाची-वाच्य एकत्री मापवर वत्तमा है । कविज

इह दरह वोर वापसे क्वाली जाहिने । वर्णोंमें लक्ष, वक्त-वीर्य वाचा वर्णोंमें वैष्णवा इनमा विचार पवत्तवन्ते वरण भास्त्रकृ होता है ।

२ यद् वस्त्रुहा अमवः वक्ते दोहीसी स्वा वक्तमाणी अनु वक्तव्येताः — वह इन वस्त्रुबोत्ती वारमें जगा एव तत्त उपरेके परवानको वेदवर वाचा दृष्टिवी वक्तव्येताः । यह दीर्घे पराम्य इह दरह करने जाहिने ।

३ घृतं सोमं चमू पीत्ती वोक्तसा तत्त वक्तिष्ठन् विष्मे वक्तेपयः — वोक्तसे वक्तव्येती वीक्त वह उत्त वक्ते छोड़े जगा तत् तत्तें दोहों लक्ष वीर वीरेहेतु काले छोड़े जाएं दें ।

विष्मे वक्त वक्त इह और साल वे जो है । यह वक्ते विष्मे दोहों विष्मे है इह अरन वहा विष्मे वक्त वक्त इह वहा है । देवोंहें छोड़े वक्तवा वा दृश्य करते हैं ।

(सूक्त ४३)

(विचार द्विषुः वक्त विभिन्न) वह वस्त्रुबोत्ती वाची लोहेषे देव वहा । (पापः सूर्पः परि वक्तिः) वाचा वक्ते वक्ते वक्तुबोत्ती वाचापर इत्या (तत् स्पाई वसु वा मर) इनम्य वक्ते वाच वक्त वक्त वर दी ॥ १ ॥ (कृ. ८०५११२)

हे इन् । (यद् वीसी) वो वक्तव्याली वक्तव्येतें (यद् विष्मे) वो विष्मे वक्त वाचमें (यद् वाचाने) वो वृक्तिवी वाचा (परामते) हुआ है वह इत्या वर्णे वैष्णव वक्त वक्त वर दी ॥ २ ॥ (कृ. ८०५११२)

(वस्त्र ते वृष्णे वस्त्रस्य) वो तेरे दिखे योहे वहे वक्तव्यी (विश्वमानुषः वेदति) वह मवुम वरनाता है । वह इत्या वर्णे वैष्णव वक्त वक्त वर दी ॥ ३ ॥ (कृ. ८०५११२)

[सूक्त ४४]

(ऋषि — १-३ इटिमिठि । देवता — इष्टः ।)

प्र सुग्रावै चर्षणीनामिन्द्रं स्वोता नर्व्यं गीर्मिः । नर्वं नृपां महिष्म् ॥ १ ॥
 यस्मिन्मृक्यानि रथ्यन्ति विश्वानि च अवसार्ज । अपामवो न संमुद्रे ॥ २ ॥
 त सुपुरुषा विवासे व्येष्टुरात् भर्ते कृत्स्न । महो ब्राह्मिनं सुनिम्बयः ॥ ३ ॥ (१७९)

[सूक्त ४५]

(ऋषि — १-३ शुभोदयो देवतातापरतामा । देवता — इष्टः ।)

अपद्मै ते समेवसि कृपोते इष्ट गर्भिष्म् । पञ्चस्तुविष्म ओहसे ॥ १ ॥
 स्वोत्रं राघाना पते गिर्विहो वीरं पस्ये ते । विभूतिरस्तु सूनृता ॥ २ ॥

१ विष्वा॒ द्विष्य॑ अप्य मिलिष्य॑ — एव एतुर्वोधे काट
वासो ।

२ विष्वा॒ वाया॑ मुद्य॑ परि अहि— एव वाया॑ भर्ते
पाते हुप कुरुतोधे पातित कर्ते हु वाया॑ थो ।

३ पत् वीलो॑ स्थिते पश्याते॑ परामृत॑— वीर
वायावी॑ स्वामै॑ द्विविर॑ व्यावमे॑ वीर॑ मुर्मिं रथा॑ है ।

४ तद् इष्टां॑ पश्य॑ वा॑ भर्त— एव सूर्यीन॑ भन॑ वायाव
मर्ते॑ है ।

५ वाय्य॑ ते॑ भूर्ते॑ वाय्यस्य॑ विष्वमातुष्य॑ येश्विति—
विष्य॑ ते॑ दिवे॑ वेद॑ वन्देव॑ एव मनुष्य॑ वायाते॑ है कि एव वन
मिला॑ है । वैषा॑ वन॑ है॑ अकर॑ भर्ते॑ हो । वन॑ इष्टा॑ कर्ते॑
मेम्प॑ वज्रिति॑ वर्तेवास्म॑ है । विष्वावारी॑ न है ।

(सूक्त ४४)

(चर्षणीना॑ सज्जावै॑) प्रवाहावै॑ उभाद्॑ (नृपां॑
महिष्म॑ भर्त॑) कुरुते॑ वीरोधे॑ वृत्तेवाक॑ वृत्ति॑ सामर्प्याव॑ वीर॑
(नर्व्य॑ इष्ट॑) वाया॑ इष्टाव॑ (गीर्मिः॑ स्वोता॑) वायावै॑
च्छाते॑ भो॑ ॥ १ ॥ (अ॑ ११११)

(पदिमद्॑) विष्य॑ इष्टमे॑ (व्यवस्था॑ विष्वानि॑ वक्यानि॑)
एव॑ देवतावै॑ वीर॑ स्वोता॑ (इष्टाव॑) एव्याव॑ वाया॑ है॑
(अपा॑ भवो॑ समुद्रे॑ वृत्त॑) वेदे॑ वायावै॑ प्रवाह॑ इष्टमे॑ वाया॑
न्देव॑ मिलो॑ है॑ ॥ २ ॥ (अ॑ १११२)

(त सुपुरुषा॑) एव॑ वृत्त॑ एवा॑ (भर्त॑ कृत्स्न॑) दुर्यो
द्युष्म॑ (उमिष्म॑ महो॑ वायिन॑) इतीहि॑ विष्य॑ वृत्त॑
वज्रिता॑ (ते॑ सुपुरुषा॑ विवासे॑) एव॑ इष्टमे॑ इष्टम॑
स्थिते॑ वज्रित॑ कर्ते॑ है॑ ॥ ३ ॥ (अ॑ १११३)

१ (भवेत् भव्य॑ भाष्ट॑)

इष्ट सूखमे॑ स्वर्के॑ ये शुभ रहै॑ ॥

१ चर्षणीना॑ सज्जावै॑— बोगोदा॑ उभाद्॑

२ मृ-पाई॑— सत्रुके॑ वीरोदा॑ परामव॑ कर्त्तव्याका॑

३ महिष्म॑ नर्वं— वया॑ नेता॑ वीर॑

४ व्येष्टि॑ राम— ऐष्ट राम॑

५ भर्ते॑ कृत्स्न॑— मुह॑ भर्ते॑ वृत्त॑ उत्तर॑

६ महो॑ वायिन॑— वाया॑ वक्याव॑

७ पदिमद्॑ विष्या॑ वक्यानि॑ आवस्था॑ इष्टानि॑—
इष्टमे॑ वीर॑ मी॑ सूतिभी॑ वाया॑ रह॑ वहा॑ उपर॑ वस्त्र॑ वक्या॑
कर्त्तव्याकी॑ होमेह॑ वायाव॑ वह॑ रहोन॑ रथ्याव॑ हो॑ है॑ ॥ १ ॥
८ एव॑ इष्टमे॑ वाय्य॑ देष्टे॑ है॑ वैष्टे॑ (अपा॑ अयो॑ समुद्रे॑ वृत्त॑)
वज्रित॑ प्रवाह॑ इष्टमे॑ जपित॑ नही॑ होते॑ । वै॑ प्रवाह॑ इष्टमे॑
विष्य॑ वाये॑ है॑ वैषी॑ वीर॑ इष्टवी॑ लुकित॑ इष्टमे॑ वायी॑ वाय॑
वाये॑ होती॑ है॑ ।

(सूक्त ४५)

(भवेत् भव्य॑) वृत्त॑ देवा॑ देवा॑ है॑ (सं भवति॑) इष्टमे॑
वाया॑ वा॑ । (क्षेत्रोदा॑ वायमिष्य॑ इष्ट॑) वेदे॑ कृत्तव॑ भवती॑
वीर॑ वाया॑ वाया॑ है॑ (अ॑ १११४) इष्टो॑ इष्ट॑ वृत्त॑ वक्याव॑
(ओहसे॑) दृपाव॑ कर्ता॑ है॑ ॥ १ ॥ (अ॑ १११४)

२ (वायावी॑ वृत्त॑) वृत्त॑ वायाव॑ (गिर्विहो॑) सूतिक॑
लीष्म॑ वेदाव॑ (वीर॑) वीर॑ इष्ट॑ । (पस्यते॑ स्वोत्र॑) विष्य॑
देवा॑ वृत्त॑ (मृत्तुता॑ विभूतिः॑ भस्तु॑) देवा॑ विष्य॑ वृत्त॑
वायावी॑ विभूति॑ हो॑ ॥ २ ॥ (अ॑ १११५)

ਕੁਰਬਾਨਿਆ ਨ ਲੁਹਾਡਸਿਨਵਾਬੇ ਬਹਫਗੇ । ਚਮੁਨ੍ਯੇਪੁ ਪਥਾਥੈ

॥ ३ ॥ (१८)

[सूक्त ४५]

(प्राप्ति — १-३ दरिमिहिं। देवता — इष्टः।)

प्रणेतार् वस्यो बन्धु कर्त्तर् ज्योर्धिः समसु । सासदांसं पूषामित्राम् ॥ १ ॥

स नः पर्मिः पारपाति स्वस्त्रिं नावा पुरुषृत् । इन्द्रो विश्वा अति द्विष्टः ॥ २ ॥

स त्वं ने इन्द्र वार्षमिर्द्धस्या च गातुया च । अच्छो च नः सुम नैषि ॥ ३ ॥ (१८)

[सूक्त ४७]

(संपिं — १-३ सुक्षमः ४-६ हरिमिक्तिः ७-९ १०-१२ मधुचक्रवाहः १३-१५ प्रस्त्रपत्ता ।
देवता — रामः १६-१८ सूर्यः ।)

षष्ठिन्द्रै वाचयामसि महे पूर्णाय इन्तेष्वे । स शूपा शूपमो संवद् ॥ १ ॥

हे (शतकतो) ऐसो कर्म बरमेवले इति । (असिमन्
वार्ते) एष पुर्वम् (त छतये) हमारी रकार्ह किंच (उत्तमः
तिष्ठ) वरा य (मग्नेत्रुं सं ध्यावद्यै) अस्मोप्य एष
किंचित्किं मी इति लेणी ही प्रसंगा वर्तये ॥ ३ ॥ (का. ११३. १५)

१ राष्ट्राली परिः— पर्वतोऽप्य सामी एव ते

१ थीर ! पस्य ले स्तोत्रं पूज्यता विमुक्तिः पश्च-
रे थीर एव ! क्षेत्र स्तोत्र इमारे लिये उच्ची विमुक्तिके स्फर्मे
इमारे सम्मने हो ।

५ घुतक्कयो— देवदो कर्म घरमेहाते इन्द्र ।

४ अर्थात् वाहे मा झतये झव्ये। तिए— इषु
बुद्धें इमारी रक्षा करवेके लिये बहा रह और इमारी रक्षा
करवेके लिये बोंच करता रोम है तर यह भर।

५ बाल्यपु से प्रवाहौ— मन को उपरित ही
तो मी हम ऐसा ही हो रिवरमें आरं गापके बच्चा ही
बोही।

(संख ४)

(वस्त्रो मम्पत् प्रपेतार्द) वा उत्तम पक्षीया और वै
वस्त्रा है (समरसु श्योतिः कर्त्ता॑) समर्मदि उत्तोषिं
इत्तरा है, भीरा (मुखा मन्त्रिकाण् सासाहारं) तुरुषे इत्तु
ज्ञोंको परामृत करता ॥ १ ॥ (कृ. ११११)

(स) पुरुषों द्वारा प्रार्थित हुआ (परिमाण इन्हें) प्रतिपादित है (वाया) गीथाएँ (जैसे स्थानिक पारंपराएँ) हमें असाधने के लिये पार के लाया है (विद्वान् श्रिया) अति घर कनूमों के द्वारा बता है ०३७

है इम। (सः स्वं) यह द् (मः) हमे (वाचेपि व
गाहुपा व) जांचे और नहो (वशस्य) परिएर्व दा
(मा अप्स्तु द्वारा लेपि) और हमे जानकी नो है
वा नहीं। (कृ. ८१३॥)

१८ वस्त्रो भवति प्रपेतारं— इति उपमवाच्ये बोधनाशक्तिः ॥

२ समस्तु व्योति कराई— कुछोंमें व्योति बदल दियका थारा पर्याप्त है।

३ शुष्ठा असिष्टाद् सासदात्— कुरते कुर्वन्ते
प्रसामय चक्राण ॥

४ स पुराणा— यह सब क्षेत्रोंमें इस परिस्थि
तीमें है।

५ परिः इत्यादि— वह सबा प्राप्त है ।
६ साचा वा स्मस्ति पारपाति— ऐकाएं ऐसे कह-

७ विष्णु विष्णुः सति— सर सत्त्वोमे एव एव।

८ सा त्वं बालेभिः पातुया च वशस्य— एव
बर्दीषे तथा महसे हमें परिपूर्ण भर ।

१० ग्रन्थ सुन्नन्वयि — हमें जात्य आर्तरम्भ नहीं
हो सकता।

(खंड ४५)

(महे वृद्धाय इत्येचे) वहे इत्येके मारेके दिये (ते इन्हें बत्तपामलि) वह इत्येह यह गतो हैं (स वृद्धा भूषणम् भुवत्) वह अधिकारी गौर देखे ॥ १ ॥

इन्द्रः स दामने कृत ओकिष्टुः स मदे हित । धुमी लोकी स सोम्यः ॥ २ ॥
 गिरा वज्रो न समृद्धः सर्वलो भनपन्धुतः । बृहस्पति अस्त्वरुः ॥ ३ ॥
 इन्द्रमिद्वायिनो बुद्धिन्द्रमुक्तेभिरकिंचः । इन्द्र वार्णीन्द्रिपूत ॥ ४ ॥
 इन्द्र इदयोः ससा समित्सु आ वैचोपुवा । इन्द्रो धुमी हिरण्ययः ॥ ५ ॥
 इन्द्रो द्विर्धाय वैष्णवु आ धर्मे रोहयहिवि । वि गोमिरादिमैरयद् ॥ ६ ॥
 आ याहि सुपुमा हि तु इन्द्र सोमुपिमा इमम् । एव धुमीः संदु भर्मे ॥ ७ ॥
 आ त्वा प्रश्नपुन्ना हरी वैद्वामिन्द्र केष्ठिना । उप्र प्रक्षाणिन नः शृणु ॥ ८ ॥
 मुमार्चस्वा वृथ युवा सोमुपामिन्द्र धुमिनः । सुवार्वन्दो इवामहे ॥ ९ ॥
 मुखन्ति मुमर्त्तुप चरन्तु परि सुस्थुवे । रोचन्ते रोचना त्रिमि ॥ १० ॥
 युक्त्वान्त्यस्य काम्या हरी विपैष्वसा रवे । शोणा धृष्णू नुवाहसा ॥ ११ ॥
 केतु कुञ्जभक्तुर्वे पेष्वो मर्या अपेशसे । समुपद्विरजायथा ॥ १२ ॥
 उद्गत्वं भारत्वेदस देव वैष्णवन्ति केतवः । तुषे विष्णायु धर्मेम् ॥ १३ ॥
 अप्य त्य तुष्वो यथा नक्षत्रा यन्त्यकुमिः । द्वाराय विष्ववैष्वसे ॥ १४ ॥
 भ्रात्यभस्य केतवो वि त्रिमयो बर्ना भर्तु । भ्राजन्तो भ्रामयो यथा ॥ १५ ॥
 तुरगिंविष्वदर्दर्शवो ज्योतिष्ठदसि गूर्ध । विश्वमा भौमि रोचन ॥ १६ ॥
 प्रस्त्रद्व दुषाना विश्वः प्रस्त्रहुदेवि मातुपीः । प्रस्त्रद्व विश्व सुर्दिवे ॥ १७ ॥

(इन्द्रः स दामने हृता) वह इन वानके लिये ही प्रपित है (ओकिष्टुः स मदे हित) वह बनशान और लाकर्म में रहता है। (धुमी लोकी स सोम्यः) वह प्रेष्वसी वराही और धोमके वरत है ॥ २ ॥ (क्र. ११२१.८)
 (गिरा वज्रः स भग्नः स) स्तुनिवेदन वैता वह वैतवत हुआ है (स वज्रः भग्नपन्धुतः) वह वहे बनशान और न विवेदवधि इ (ऋप्ता भस्त्वरुः यवसे) वह वसा न बीए हुआ और देखा है ॥ ३ ॥ (क्र. ११२१.९)

१५ देवो ११२४.६ । ५-६ देवो ११२१.३ ।
 १-११ देवा ११२४.६ ।

(कनका स्व आत्मेदस देवे मूर्धे) विश्व वह वहे हुए वरदो जामनेसे तृष्णू देवो (यिष्वाय दवो) वरमन देवो (देवेन लिये) उत उपद्विति) वह वानमे प्रकाशित वरत है ॥ ११ ॥

(क्र. १५.११, मह. ७४.१; भर्तु ११२१.१५)

३

(यथा त्य तायथा) वैष्व वै चोर (कनका भफुमिः भयप यवित) वै यद्व रात्रें साप भाव जात है भार (विष्ववैष्वसे सूर्याय) विश्वो प्रवाहित वरनेशमे धूर्धे लिये त्वान करते हैं ॥ १४ ॥

(क्र. १५.१२; भर्तु ११२१.१७)

(यथा भावस्तुः भस्य) वैष्व वैष्वकोने भग्नीहैते है (भस्य कवया रदमया) इधे वह तीर्ति विश्व (ज्यात्वान भर्तु यि भाग्नन्) देवोंके भीति करते हैं एवा दीवाना है ॥ १५ ॥

(क्र. १५.१३; यद. ११८; भर्तु ११२१.१४)

६ (देवयन मूर्धे) है व्यवह धूर् । दृ (तत्त्विः विष्वद्वात) तात्व भर विष्व वैष्विनिः ॥ ६ ॥ वा (ज्यातिष्ठत भवित) प्रवाप वरतेवाना है । (पिभ्ये व्यामासि) दृ व्यवह प्रवापित वरता ॥ १६ ॥

(क्र. १५.१४)

(देवानी विश्वा प्रव्याह) देवोंसे व्यवह की भीति और (मातुरी प्रस्त्रद्व वैष्विः) वराही वरमनसे भवितु वरद

येन। पाषङ् शब्दसा मुरुष्मन्तु बन्नो अनु
वि पार्मेषि रवस्पृथिर्मानो अक्षमिः । त्वं धूरणं पश्यति ॥ १८ ॥
सुप्त स्वा हृतिः रथे पर्वन्ति देव शर्य
अपूर्क सुप्त प्राप्युवुः सुरो रथस्य नप्त्युः । पश्य बन्नानि सूर्य ॥ १९ ॥
। श्रोचिष्ठेष्ठ चिष्ठेष्ठ ॥ २० ॥
। वाभिर्पाति स्वपुक्षिमिः ॥ २१ ॥ (१०)

[सूक्त ४८]

(अधिः — (१-३) विलम् ४-५ सर्वदाही । देवता — सूर्यः गोः ।)

अभि त्वा वर्षसा गिरः सिश्वन्तीराच्चरूपवै । अभि पुस्स न घेनवैः ॥ १ ॥
गा अर्पन्ति शुभ्रियः पूर्वन्तीर्वर्षसा प्रियः । जातं जात्रीर्यां हृदा ॥ २ ॥
वर्षापवसाध्यः क्षीरिंश्चियमाणमावहन् । मध्यमाप्युरुषं पर्यः ॥ ३ ॥
आय गौः पूर्भिरक्षमीदत्तदन्मात्रपुरा । पितरै च प्रयन्तस्तु ॥ ४ ॥
अन्तर्वरति रोचना अस्य प्राणादेपानुतः । अप्यस्पन्नमतिपः स्वः ॥ ५ ॥

होता है तथा (स्वः विज्ञे पित्रा प्रत्यक्षः) इन्द्रसे इर्षवक
सिरे तु विष्टे प्रति तु जाता है ॥ १५ ॥ (क. १५ । ५)

८ (पाषङ् शब्दः) वर्षेषामेष भृत देव । (येन
शब्दसा) विष्ट वारेषे (त्वं तमान् मुरुष्मन्तु अनु
पश्यति) तु पशुपोमेष भाष्य-पश्य वर्षेषामेष मधुपथे
इष्टाना दे तुम्हे मुहे देन ॥ १६ ॥ (क. १५ । ६)

तूर्य । (मक्तुमिः वट मिदामः) विष्टेषु विष्टो
माप्यन् हृषा (पृष्ठ रजः यो एषि) विसुरुष अस्तिरिष
माप्यन् आर युत चो इत ताना है भीर (जाग्मानि
पश्यतः) वट तम तेत्वामेषो देवका ॥ १७ ॥

१८ (क. १५ । ७)
हे पूर्व रथ । (सप्त हरित) आत विष्ट (शाश्वि
ष्टान् विष्टवर्षान् त्वा) इत इतवत्त विष्ट तथा इतह ऐसे
हुम्ह । (पृष्ठ वहान) इत्वं वकाने ॥ १८ ॥

(क. १ । १४)

(माता वायद) वायद इवा (वायदः सप्त तु गुप्तयु
पशुकः) गा द्वा व वायन विष्ट भावे होते । (ताप्तेः
वायदान्तमिः याति) इत्वं वायनी वायन भावे वह वाय
दे ॥ १९ ॥ (क. १५ । ९)

(क. १ । १५)

१० विष्ट १ १२ विष्ट इत इतवत्त हे भर ११-१२
त्वं विष्ट तुर्य देवान्त है ।

(सूक्त ४८)

(आश्वरण्याः) वारेषात् प्राप्त होतेवाती (गिरः)
इमारी स्तुतिवा (वर्षसा त्वा सिंघस्तीः) तेवात् भृते
पाप विष्ट वर्तती है (वर्षसे चेतया अभित व) वहाते
वाप वैती वीते व रंगात् जाती है ॥ १ ॥

(आत जात्रीः पृष्ठ हृषा) इतप्त हुए विष्टेषु भृती
माताए इतप्ते ज्ञ विष्टाती है इत तात इताती इतिरा
(वर्षसा तुक्ष्यतीः) तेवात् शुक्ष्य होती है (प्रिया
शुभ्रिया ताता अप्यन्ति) भीर विष्ट तात तात वाय
पश्ट वर्ती है ॥ १ ॥

(पश्यायपसात्त्वः) गत लक्षात् तथा लादि (काति)
तथा वीते (विष्टमार्प भावदम्) मत्वामेषो वाप वीते
है । (मातं भाषुः पूर्वे वपुः) मुह लीच भानु वी भीर
त्वं विष्ट ॥ १ ॥

(आप गोः) वह विष्टात् वायदा (मातरं पुष्ट
मधस्तद्) भावो वायद भृतिवा जापे वर्ता ॥ (विष्ट
प्र प्रयम्) आत वकाने विष्ट भावी लवे प्रवापी तुर्यी वापी
भीर पृष्ठा हृषा (पृष्ठिः भावदपात्) लालाने वर्ष
व ता है ॥ १ ॥

(पश्य वोषना) विष्ट वपुः (प्रलात् वायदा)
त्वं वर्ष भाव वर्षेवामेषो व (वस्तः वर्ताति) वर्ता

श्रिवदामा वि राजसि पाच्युसुक्ष्मो अश्रिभिष्ठु । प्रसि वस्त्रोरुपुभिः ॥ ६ ॥ (११२)

[सूक्त ४९]

(श्रविः — १-७ छिलम् । ८-९ मोघम्; ३-७ मेष्यालिपिः ।)

पच्छुक्ष्मा पाच्युमारुहस्तुन्तरिष्ठ सिपासपः । सं बुषा भूमदुन्वृपा	॥ १ ॥
शुक्ष्मो पाच्युमधुरुष्योरुक्ष्माचो अश्वृणुहि । भृहिषु आ मैतुर्दिवि	॥ २ ॥
शुक्ष्मो पाच्युमधुरुष्युहि शामैश्वर्मन्विराजति । विमदन्त्युहिंशुसरन्	॥ ३ ॥
त यो दुस्ममूर्तीपृष्ठु वसोर्मादुनमधसः ।	
अृभि वृस्थ न व्यसीरेषु खेनषु हृद्रै गीभिन्नेषामह	॥ ४ ॥
पृष्ठु सुदामु ताविषीमिरारूपृष्ठु गिरि न पूरुषोजैषम् ।	
षुमन्तुं वाक्ये शुलिन सहस्रिणे मृशु गोमन्तमीमहे	॥ ५ ॥
सप्त्या यामि सुवीर्ये वद्राम्भं पूर्वचित्तये	
येना यतिम्यो भूरेषु धने हिरे येनु प्रस्तुष्वमाविष्ठ	॥ ६ ॥
येना समुद्रमसूनो मृहीरप्स्तदिन्दु सृष्टिं तु शष्ठः ।	
सृष्ठः सो अस्य महिमा न सुनश्च य खोजीरतुष्क्रदे	॥ ७ ॥ (११३)

पंचावरी हे भोर वह (महिमा या वि अव्यवह्) वहे
अथे प्रथमी सृष्टये ॥ प्रतिशिष्ठ वर्ती हे ॥ ५ ॥

(सूक्त ४९)

(पत् शास्त्रा पाच्युमारुहन्) वह उक्षितेवे वाचीपर
आरोहन किया (भातरिष्ठ सिपासपः) अन्वरिक्ष्मे
शीतामा चाहा तष (तुषा देवाः स वमदन्) वक्षात्
दर्शयेव भावम् मतामा ॥ १ ॥

(पत्तोः श्रिवात् चाम) वक्षात्रके तीव्र चाम वक्षाद्
सहान् (वहा तुष्यिः प्रति यि राजाति) विष्वक्ष इष्ठके
विष्वयेव विष्ठित होते हैं । उक्षी प्रदानादे त्ये (पाच्यु
पतहुः भृगिभिष्ठु) दशारी वाची एष्वदा भावम् वर्ती
हे ॥ १ ॥ (क । ११५११)

(क । ११५१२)

वक्ष भूक्षिते वाची भोर व्यवह वक्षाद् इ भर भूषि उक्षित
वक्ष मूर्त्ये वाची भोर वृक्षता है । इष्ठ प्रथर भूषि उक्षित
वक्ष मूर्ती प्रदिष्ठिया वरता है भोर वक्षने वामद वाक्षाये
मत्ताव वर्ता है ।

इष्ठे दिष्ठ वह व्यावह वक्षात्रके व्यावह वक्षायित देते हैं
भरे तुष्य प्रथमके मदरुहा व्यक्त वर्त है ।

वक्षात्रके तीव्र मूर्त्योंमे एषीय व्यावह व्यवह वेत्रायी
व्यवहा है । इष्ठिय इष्ठ मूर्ती वक्षात्र दशारी वाचीया वक्षी
देता है ।

(दशारी व्यावह व्यप्तुष्युहि) उक्षितात्मे वाचीय प्रवत्त
व्यवहा (भामप्यमद् विराजति) वहि व्यावह वह
व्यावह वर्ता है । (विमदन् वर्तोः भामदन्) भावम्
व्यवहा दशा वह वावक्षत देता है ॥ २ ॥

२ २ देता (। १३ ५)

१ दशारी व्यावह व्यावहन्— दशारी वर्तत वाची ।
वर्तीये यक्षित दशो वाक्षित । वक्षलिह वक्ष वर्तवर वक्ष
वही दी वर्तीये व्यवह वाची वक्ष वर्त देता है ।

येनै पात्रक चर्षिता भूम्पन्तं ज्ञनै अनु
वि द्यासैपि स्वस्पृष्टवृहिमितानो अकुमिः
सुत त्वा हरितो रथे वहन्ति देव रथ्य
अद्युक्त सुत शुभ्युः सुरो रथस्य नुप्त्युः ।

स्वं वैरुण् पश्यति		१८	
पश्य वन्मानि रथे		१९	
श्रोचिष्ठेऽस विष्वलुणम्		२०	
तामिर्याति स्वयुक्तिभिः		२१	

[सूक्त ४८]

(नृपि : — (१-१) विष्वलुण् ४-५ सर्वराती । देवता — सूर्यः गोः ॥)

अभि त्वा चर्षिता गिरः सिंचन्तीताच्छ्रुण्यदः । अभि पुत्स न भेनवः ॥ १ ॥
ता अर्यन्ति शुभ्यिः पुश्चन्तीर्षिता प्रिपः । लाव जात्रीर्यथा द्वृदा ॥ २ ॥
वज्रापवासाध्यः क्षिरित्तिभ्यमाणमातृन्
आप गोः पूर्भिरक्तमीदसदन्मातर्व पुरा
अन्तर्वरति रोचना श्रस्य प्राणादपानुरः ।
मध्यम्बन्महिपः स्वः ॥ ५ ॥

होता है उता (स्व : विष्वे विष्वलुण् पश्यतु) पश्यते इर्तनके
निमि उत विष्वे प्रति त् जाता है ॥ १० ॥ (कृ १५ १५)

हे (पात्रक चर्षित) पवित्र वर्णेवाके भेष देव । (येन
चर्षिता) विष्व लाङवधे (त्व ज्ञातान् भूरपण्यतं अनु
पश्यति) त् मनुष्योम् मात्र-पौष्प वर्णेवाके मनुष्यो
देवता है उत्तरे शुष्टे देव ॥ १५ ॥ (कृ १५ १५)

मूर्ख ! (अभितुपिः भवा : मितात्मा) रथित्वेति दिवदो
मापदा हृषा (पूरुष रथः या॒ पवि॑) विसृत वस्त्रिति
मेवदो और तुष्टेक्ष्ये भास इता है और (जग्मानि
पश्यत्) तत् वस्त्र लेवत्वात्मेदे देवता है ॥ १५ ॥

(कृ १५ १५)

हे रथे रथ । (सत् हरितः) जात विष्व (शोधि
प्रेतो विष्वसर्व त्वा) द्युष वर्णेवाक वित्त तथा वर्ते देवे
द्युष (रथ यद्यित) एवम् चकाते हैं ॥ १६ ॥

(कृ १५ १६)

(भूरः इत्यस्य) जातमव एवो (वदय सत्त्वं तु गुणपुषुः
भयुक्त) यात द्युष वर्णेवाके विष्व भोड़े हैं । (तामिः
इत्याक्षिप्तिः पात्रिः) उत्ते वर्णी केवलाभिः पृथ आपा
है ॥ १७ ॥ (कृ १५ १७)

(कृ १५ १८)

एव दूक्षे १-१३ मेव इत्य देवताके हैं और ११-११
दृष्टे वैष्व तुष्टे देवताके हैं ।

स्वं वैरुण् पश्यति		१८	
पश्य वन्मानि रथे		१९	
श्रोचिष्ठेऽस विष्वलुणम्		२०	
तामिर्याति स्वयुक्तिभिः		२१	

(सूक्त ४८)

(आपरत्यवः) वार्तार वृष्ट दोषेवाती (पिरा)
इमारी शुतिया (वर्षसा त्वा सिंचत्तीः) देवता भै
पाप लिङ्ग वर्त्ती है (वर्षसे देवता भैमि न) वर्षारे
पाप देवी तीव्रे वर्तार जाती है ॥ १८ ॥

(आतं जात्रीः पवा हृषा) वर्षार वृष्ट वर्षेवे वैरी
मतारं वर्षनके ताव यिताती है रथ ताह इमारी शुतिया
(वर्षसा एश्वर्तीः) तेवरे शुतुष दोषी हैं (पिरा :
शुतिया ताः वर्षस्तित) और विष्व द्युष वार्ता
प्रस्त वर्ती है ॥ १९ ॥

(वलापवसात्पतः) एव वलाप देवा वार्दि (कीर्ति)
तता वीर्ति (पियमाप मावदाव) मर्तेवाके तत् वर्ते
हैं । (मद्यं भायुः द्युतं पवा) मुते रोर्य भातु चै वैर
रथ मिते ॥ २० ॥

(आप गीः) वह एविष्वोम वग्रवा (मातर्तु पुरा
वसदद्) वर्णी माता भूमिको आपे वर्ता है (विर्ते
त्व प्रयन्) और जन्मे विष्वा वीर्य वर्षावी दृष्टेवे वर्णी
और द्युषा हृषा (पूरिः भाकमीत्) वर्षावी वर्ष
वर्ता है ॥ २१ ॥ (कृ १५ १८)

(भूर्य देवता) एव योदी (प्राणात् मपावता)
द्युष भार वर्षाव वर्णेवाक्षेति (भातुः वर्तिः) वर्ष

विशदाम् वि राजति वास्तुतङ्गे अविभिषत् । प्रति वस्तोरहयुमिः ॥ ६ ॥ (१११)

[सूक्त ४९]

(अथि — १-७ खिलम् । ८-९ नोधाः १०-१२ मेष्यातिथिः ।)

पञ्चका वासुमारुहस्तन्वरिष्ठ सिपासयः । स देवा भैमपुन्वृपा ॥ १ ॥
 शुक्रो वासुमधृष्टायोरुचाचो अर्घ्युहि । महिषु भा मंकुदिवि ॥ २ ॥
 शुक्रो वासुमधृष्ट्युहि वामीर्वर्मन्वरोवति । विमदन्वहिरासरन् ॥ ३ ॥
 त यो दुर्ममृतीपद वसीमन्द्रानमध्यसः ।
 शुभि पृत्स न स्वस्तेषु द्वेनवु हर्त्रे गीमिनवामहे ॥ ४ ॥
 पृथु सुदानु तविषीमिरावृत गिरे न पुरुमोद्देशम् ।
 शुमन्तु वार्ज शुरिन सहस्रिण मुशु गोमेन्वमीमहे ॥ ५ ॥
 वर्षा यामि सुवीर्ये तद्वक्ष पूर्वचित्तये
 येना यतिम्यो शुग्रये धन्ते हिते येनु प्रस्कण्युमार्यिथ
 येनो समुद्रमसुजा महीरुपस्तदिन्द्रु पृथिं तु शवः ।
 सुधः सो अस्य महिमा न सुनयेऽय क्षणीर्त्तुचक्रदे ॥ ६ ॥ (१११)

वंचार करती है भौत वह (महिमः त्वः वि भवत्) वहे
 तमें प्रधानी एकमें (प्रकाशित करती है ॥ ५ ॥
 (च. १ । ११५१२)

(पक्षोः विशाल याम) अदोरके तीस वाम वर्णाद
 धार्म (भावः युमिः प्रति वि राजति) नियमसे इक्षे
 प्रधानी विशिष्ट धार्म है । उसी प्रधानीके लिये (याम
 परहृष्ट यामीर्विषत्) इवारी वारी एकमात्र वर्णी
 है ॥ ५ ॥ (च. १ । ११५१२)

एवं शुभिके वारी ज्ञाते भ्रम वर्णा द वैर भूषि उदित
 एवं पूर्वी वारी भार एकता है । इव प्रधार शुभि उदित
 एवं पूर्वी प लिया वर्णा है भार उपने मात्रव वामायने
 वंचार वर्णा है ।

इवे विषय पर व्यावर व्यवस्थे द्वारा प्रकाशित होते हैं
 एवे शुभ प्रधानीके महाद्वयो व्यक्त वर्त हैं ।

विशिष्टके तीस मुहूर्नोमें इच्छा प्रधान वर्णा तत्त्वी
 वर्णा है । इव विषय पूर्वी प्रधान इमारी वामीका वर्णी
 है ॥ ६ ॥

(सूक्त ४९)

(पत् दाक्षम् यामं भावद्वन्) वह यक्षिकोवै वामीच
 वारोहण दिवा (प्रवतिरिष्ठ सिपासयः) भगवतिरेष्ठ
 वीठना वाहा तव (वृथा देयाः स व्यपदम्) वक्षन्
 द्वोवै वानेऽन मनामा ॥ १ ॥

(शामः याम भपूषाय) यक्षिकात्मे वामीको ऐर्व
 वामी वामा, (वक्षयायः भपूषुदि) वही वामीको वक्षन
 वनाया । (मंडिष्ठः दियि भा महा) वहेने दुनादमें एवं
 वनाया ॥ २ ॥

(शामो याम भपूषुदि) यक्षिद न्मे वामीच वक्षन
 वनाया (भामपदम् विरातति) वही वक्षन वह
 वामा वर्णा है । (प्रिमद्वद् वट्ठः मामद्वन्) भाम
 वामा दुधा वह वामवर वग ॥ ३ ॥

४-५ देवा (३ । ११ ४)

१ दाका यामं भावद्वन् — यक्षी वर्णना वामी
 वर्णी प्रधानी वामीवै । वामावह वक्ष वर्णन वह
 वामी तो वामीमें वहा वामी वामव दोगा है ।

[सूक्त ५०]

(अथिः — १-२ मेघातिष्ठिः । देवता — इन्द्रः ।)

कस्मयो भ्रुत्सीनौ तुरो गृणीतु मर्त्यैः ।
 नुही न्वस्य महिमानेमिन्तिय स्वर्गिष्ठिन्तं जानुश्चः ॥ १ ॥
 कदु स्तुवन्तं प्रतयन्तं देवतु अपि को विश्व ओहते ।
 कदा हर्व मघवभिन्नं सुन्तुष्टः कदु स्तुवत या गमः ॥ २ ॥ (१११)

[सूक्त ५१]

(अथिः — १-२ प्रस्तव ३-४ पुष्पिणिः । देवता — इन्द्रः ।)

अमि प्र भैः सुरार्थसुमिन्द्रमर्च यर्था विदे ।
 यो अरिष्टमयो मुषवा पुरुषसुः सुख्लेणेषु शिष्ठिः ॥ १ ॥

४ अन्तरिक्ष सिपासद्य— अन्तरिक्षे वीतनेत्रे
यति वाचि वर्तते है ।५ शुष्टा वेषा एव अग्नहन्— अग्नाद् देव इस्ते हर्व
वर्तते है । दिवीय वाचि में शुष्टि उत्तम हुई तो देवता उपसे
दीर्घित होते है और ये वेषा वहावता वर्तते है । उपसी वाचि में
देवी शुष्टि उत्तम होती है ।६ शुष्टा पार्थं अपूरण्य— शामपूर्णात अपनी वाचीमें
एकिष्ठीय बनता है ।७ उष्टवापः मधुष्टुदि— वाचीय अपनी शुष्टि है
उत्तमा तो बनता है यह एकिष्ठीय होता है ।८ मंदिष्ठ निवि आमदः— एकिष्ठात्री शुष्टेष्ठेय
दृष्टीय वर्तता है । अपनी शामपूर्णात्री वाचीमें तुलोद्धेमें
हर्व बनता है ।९ शुष्टा वाचं अपूरण्युदि— शामपूर्णात्रे अपनी
वाचीय वर्तती बनता ।१० अपामधन् पियाजतो— उपर्युक्त स्तुति रथावर
पूर्व अपाम यात्रव बनता है ।११ विषदन् वर्दिं आसदम्— आवर्तित दात्र यद
रथावर बठता है यह रथावर विराजता है ।

(सूक्त ५०)

(त्रुटा मात्रा) रथावर यात्र बनेवाता मदुष्ट (मध्या)
वर्षोन गत (क्ष अन्तसीनौ गृणीत) विष दात्रे विर्तहोते हुए याकेगा । (अस्य महिमाने इन्द्रिय दृष्ट्यस्तु)
इस्ती महिमा भी उचित्य पात्र वर्तते हुए थीन (सा वाची
मात्राशुः) जाग्राम मही पात्र ॥ १ ॥ (स. ४११)तथावे कर्म रथेवात्य भूत अपनी तुलिष्ठोसे नदीं वैर्य
पात्र है और उप्र प्रमुख महिमाव्य पात्र वर्तते हव भूत वैर्य
पात्रमें प्राप्त बनता है । शुष्टि प्राप्त बनता है । वैर्यम वाय
कर्त्तेसे यदुष्ट मुखी होता है ।(कदु उ स्तुतिवर्तता) कदु स्तुति बनेवाते (क्षतयस्तु)
शुष्टेय वाचात्या अपनावे (देवता अपि) देवा और
शुष्टि (क्ष विषः भोद्दते) दीन विषेय वाची अप्ते द्वये
उत्तमते है । हे इन । हे (मधवन्) पथवद् । (कदु
स्तुतिवर्ता द्वये) कदु योग्य विषेवावेषी लर्वश इन्द्र
(कदु उ स्तुतिवर्ता आगमः) कदु दृप्त स्तुति बनेवाते
पात्र भान है ॥ (स. ४१११४)

(सूक्त ५१)

(पा) दृप्ताहे विषेये (स्तुतापस इन्द्रः) वो
सारी इन्द्रा (पथा विषः) देवा मात्रप है वह इत
(अपि प्र वैर्य) रथोत्र गायेते । (पा) पुरुषसुः मध्यवा)
या वृत बनेवाता इत (अरिष्टमयः सदृश्या इन्द्र
दिवसति) रथेवात्या गदय गुणा देता है ॥ १ ॥
(स. ४१११)

भूतानीकिषु प्र किंगाति भृष्णुया हन्ति वृत्राणि ब्राह्मणे ।

गिरेरिषु प्र रसो अस्य पिन्विरे दवाणि पुरुमोनेसः

॥ २ ॥

प्र सु शुत् सुराच्चसुमच्चा भ्रक्तुभिर्हृये ।

यः सुन्युते स्तुवुते काम्यु वसु सुहस्तेजेव महते

॥ ३ ॥

शृतानीका हृत्यो अस्य दुष्ट्रा इन्द्रस्य सुमिपो महीः ।

गिरिने भूज्ञा मुज्ञा मुधवैसु पिन्वते यदीं सुरा अमन्दिषुः

॥ ४ ॥ (११५)

[छल ५२]

(अथि — १-४ मेघातिपिः । देवता — इन्द्रः ।)

प्रय थं स्वा भृतापन्तु आपो न भ्रक्तुभिर्हृयः ।

पुष्टिप्रस्य प्रमुख्येषु भृत्रहृन्यर्ति स्वातारं आसते

॥ ५ ॥

(शृतानीक इव) उक्तो उत्तिक विश्व शब्द है ऐसे वौके शब्द (भृत्रहृया प्र किंगाति) भैरवे वह जागे रहता है और (वृत्राणि वृत्राणि हन्ति) शृतादेविये भ्रु भौदो मारता है । (गिरेरि इवा इव) पर्वतसे अम जाता है वह तरह (अस्य पुरुमोनेसः दवाणि प्र पिन्विरे) इव भृत्र मौगा देवताके इनके दाव भैरवे है ॥ १ ॥ (अ. ४५११)

(भूतं भृतापस्त शार्ङ्ग) पर्विद शार्ङ्ग इनकी (अमि पर्ये) विवरणे लिये (प्र सु अव्य) अर्जना इत्यम अव्याप्ति । (य) को (सुष्टुप्ते सुष्टुप्ते) योगरूप विवरणकोसे और सुष्टुप्ते देवताके (काम्यु वसु) इष्ट वन (सहस्रेष्ट इव मंडेषु) इत्यम दुरा देता है ॥ २ ॥ (अ. ४५११)

(अस्य इन्द्रस्य) इष्ट इन्द्रस्य (महीः तुष्ट्रा) वरी वना तुष्ट्रा (समिपा) इक्षाए वना (शृतानीका इत्यतः) उक्तो देवोवाक इसके वन्द है । (यत् र्हं सुत्या अम पिन्विरे) वन् इष्ट इन्द्रका योगरूप अव्याप्त भैरवे है वह (गिरिति न) पर्वतके स्थान वह (मध्यस्तु भृत्राणा पिन्विरे) वरीवाके माता देता है ॥ ३ ॥ (अ. ४५११)

४ भृतापस्त इन्द्र यथा पिये अमिप्र अव्य— तत्त्वं यथा देवताके इन्द्रस्य वैदी जाती है देवी सुष्टुप्ति यानो । इसम्प्र पुरुषस्तु वैदी ।

५ पुरुषस्तु मध्यवा अरितम्पः सहस्रेष्ट इष्टा विष्टति— वृत्र वनवाक्यं इव है वह स्तोत्राओंमें प्राप्त अव्याप्ति वन्द है । जहा इष्टमी सुष्टुप्ति वरता जामदानवहै ।

६ शृतानीक इव भृत्रहृया प्र किंगाति— उक्तो उत्तिको जनने वाल इत्येवाका वीर भैरवा भैरवे शृतुभैरवमें उपला है जैसा वह इन दुदमें उपला है ।

७ वृत्रहृये वृत्राणि हन्ति— शृतानीक इवा भैरवे लिये भ्रुक्तुभैरवो मारता है जौर शृताकी इष्टा बरता है ।

८ गिरेरि इवा इव अस्य पुरुमोनेसः दवाणि प्र पिन्विरे— पर्वतसे देवा वन्द विक्ता है इष्ट तरह इव भृत्र मौगा देवताके इन्द्रसे प्राप्त होनेवाले वाम जातो जोर भैरव हैं ।

९ भूत सुत्यापस्त शान्त अमिप्रये प्र सु अव्य— भृत्राणि इव वन्द देवताके इनकी जनने अमापके लिये उत्तम अर्जना कर ।

१० यः सुष्टुप्ते सुष्टुप्ते काम्यु वसु सहस्रेष्ट इव महते— जो इष्ट सोमरूप विकासेवाके शृताके लिये इष्ट वन वहम प्रस्तुते देवर वरको वन्द मारत भवता है ।

११ अस्य इन्द्रस्य मही तुष्ट्रा समिपः शृतानीका हेतय— इष्ट इन्द्रके वैदी तुष्ट्रा योगामाल है जौर उक्तो उत्तिको वाम इत्येवाके इव मौर भैरव है ।

१२ यत् र्हं सुता अमन्दिषु। गिरिति न मध्यवस्तु भृत्राणा पिण्यपते— वह इष्ट इन्द्रका सोमरूप अव्याप्तित करते हैं वह यह देवताके स्थान वामशोदो भैरव दोष देता है । वरत भैरव इष्ट मूर कूक देता है जैसा वह इष्ट वी गता भैरव देता है ।

(भूक ५१)

(वय सुतावामाता भृत्रहृदिःपः) इष्ट सोमरूप लिये आसन विभाग इत्यातारा (भौतातारा) भैरव शृतापत्र (पवित्रस्य

स्वरनिति स्वा सुरे नरो वसो निरेक त्रुक्षिणः ।

कुदा सुव दृपाप शोक् आ गंगु इन्द्र स्वम्भीवु वसंगः

॥ २ ॥

कष्मेभिर्भूषणवा व्यपद्मावें दपि सहुक्षिणम् ।

पिश्चाहृष्टप मधवन्विष्वर्षणे मुक्षु गोमन्तमीमहे

॥ ३ ॥ (१५)

[घटक ५३]

(क्राणि — १-३ मेघातिणि । देवता — इन्द्रः ।)

क है वेद सरे सचा पिवन्तु कदयो दधे ।

अथ यः पुरो विभिन्नस्योर्बसा मन्दुनः स्मिष्य-चसः

॥ १ ॥

दुना मूगो न वारुणः पुरुषा चर्ये दधे ।

नक्षिणा नि यमुदा सुरे गेमो मुहावरस्योर्बसा

॥ २ ॥

य चुग्रः समनिष्ठुत स्तिरो रथायु सस्तुतः ।

यदि स्त्रोतुर्मेषवा शृणुदृष्ट नेन्द्रो योपस्था गमत्

॥ ३ ॥ (१६)

प्रश्नव्येषु) पवित्र अन्तरारं वहा वहा है वहा है
(चुवहम्) इत्येष मारेषामे । (आपः न) वसोंके वहान
(स्वा य परि आसते) वेरे वासा लोर वैठते हैं ॥ १ ॥
(ज्ञ. ८१३१)

दे (वसो) निशाषक ! (उक्षिणाः एके लहर) ऊपर
पठ वरनेमे कई मनुष्य (चुरे) धोमरथ विश्वले पर
(स्वा नि ल्लारिति) दुर्से पेषये दुराते हैं । दे इन !
(कुदा सुत दशाण) अन लोमपर्यान लार व्यापा होवर
(क्षम्भी वंसगः इव) इन्द्र धन्त वरनेमे वैष्णो लहर
(शोक् आगमः) वर्ती त जा वानावा ॥ २ ॥ (ज्ञ. ८१३२)

दे (धृणो पूषद्) लोरोंके लाव वार ! (कवयेमिः
सहजिष्ये वाऽमी भा वर्यि) कम्भोद्दहारा प्रविष्ट हीमेवर
त् धरम युवा लहर न रहता है । दे (विश्वरेण्ये मधवद्)
जागी राजिनाव इव । इम (पिश्चाहृष्टप गोमस्तु) वैष्णे
रंतमें लोरोंके लमत योग्यते तु य य (मसु ईमहे)
र्यग्र मिते ऐका वाहने हैं ॥ ३ ॥

१ प्रृष्णो पूषद् — लोरोंके लाव वीर इव ।

२ विश्वरेण्ये मधवद् — त्रिमेषाव वरवाव इव ।

३ पिश्चाहृष्टप गोमस्तु मधु ईमहे — लोरा और
वैष्णे इये योग्य मित ऐका वाहन हैं । पिश्चाहृष्टप — वैष्णे
(वरवाव) गुरुन् इमे वर्तिते । वैष्णे भी चार्वाहे ।

(घटक ५४)

(चुरे सचा पिवन्तु है क वेद) धोमरथ लाव वैउर
वीमेविष्ये लैन दीड लहर वानाव है । (कदू यवा देव)
वसते दिव उक्षिणे वारम लिता है । (अथ यः लोकसा
पुरुष विभिन्नति) यह जो वसते चमुहे परतोंके विष्येषे
तीवरा है वह (यिष्मी अग्नपति मन्दुनः) इन्द्रावा लोक
सते मानविद्वत होनेवामा है ॥ १ ॥ (ज्ञ. ८१३३)

(वारणः मूर्धाः न) यवा हानीये लहर (लाव)
मूमता होनेके लाल (पुरुषा वस्त्ये दप्ते) इन्द्र वैर
प्रवन्त वरता है । (चुरे भा यमा) लोमपर्ये स्वानाव दृ
भा यवा लो (लाव न कि या मि यमत्) दुर्से कोई ऐह
मही लहरा । (महाव लोकसा वरसि) यवा योग्य
रहते त चुरता है ॥ २ ॥ (ज्ञ. ८१३४)

(यः उपाव सद्) वो उपर्यि ह, (मनिष्वता) नहे
स्वानी योड इवावा नहीं जा लहरा (स्तिरा ल्लाव
संस्कृता) लिर इवर लंगवेष्मे तेकाव है । (मध्यपा)
यवाव इव (यदि स्तेतु इय शृणवत्) वरि य
स्तेतावी लर्कना गुरुता है (इन्द्रः व योग्यति) ता इव
ए नहीं रहेय (भा यमत्) यम लोकेणा ही ॥ ३ ॥
(ज्ञ. ८१३५)

[मूल ५४]

(ज्ञापिः — १-३ रेमा । देवता — इत्यदः ।)

विश्वा: पूर्तना अभिभूतरुं नरे सुज्ञस्तुरुषुर्लिंगं लभ्नुव्य राष्ट्रसे ।

क्रस्वा वरिष्ठं वरं आमुर्तिमुखोग्रमोक्तिष्ठ तवसे तरुस्तिनंम्

॥ १ ॥

सर्मीं देमासो अस्वरुपिन्तुं सोमेस्य पीत्वर्मे ।

स्वर्पिति यक्षीं धुधे धुतवृत्तो द्वोक्षेसु समापितिः

॥ २ ॥

नेमिं नैमन्त्यु वक्षेसा सेप विप्रा अभिसरो ।

सुदीतयों वो अद्वाहुतिः कर्णे चरुस्तिनः समृक्षिः

॥ ३ ॥

(३४४)

१ वाच् यथा: वधे— वह इत्य तिथि तरहान् नामर्थं नाम इत्य है वह (कः भेद) बैठ जाता है । उसके नामर्थप्रे कोई वही जाता ।

२ अथ भोजसा पुरा विभिनति— वह इत्य वरने पायर्थप्रे वायुदी वरिष्ठो धोड़ा है । उसपर नरना प्रभुत्व रखना करता है । उसके वायुदी नरियों की वायुदा परामर एके बनके तिथि इत्य हैं तोहे ।

३ वाचाणः न पुद्याव वरथ्य वधे— इत्यति नामव वह इत्य वाहे भार पूर्णता है ।

४ वाया न किः वा मि यमद्— वहे कोई रोक नहीं गता ।

५ महान् भोजसा वरसि— त् वदा धरित्ये विचरता ह । वीरी ऐसी वाक्य वाहिये । विरो वेह वह एक न रहे ।

६ यः द्वया सन् अनिपत्ता— वा वीर है और वहे चर्दे होने वही वाहा ।

७ विष्वा: इण्याय संस्तुतः— वह वीर वुद्यवे रिवर इत्य वुद्य वरने वेष्टाहर तुव्य है । कुछनकाहे वुद्य इत्य है ।

८ परवा इत्यदः स्तोतुः इत्य शूष्यवृत्त योपाति वा गमत्— इत्य रक्षनां है । वह वह तिथिदी वुद्य इत्याहा वह इत्य वरना वही लक्षण वहके वाह पूर्वता है । वह इत्य इत्य वाह ।

(दूस ५४)

(पित्ता वृत्ताः भामिमूलर नर) एव वृद्धिवेदा- भीष्म परावर वरनान् भेता (इत्य लज्जः वत्तमुः) इत्यसा देवो वित्तदर उपर विदा और (राजसे ज्ञानुपाय) विष्वणान् वरन्दे निषेत वाहा । (वरं करया परिष्ठ) भूत वार्तोवे वही रहे भूत (भामुरि) दुर्वेष्ट १० (भवेद वाय वस्त १)

वायुशो मालेषामे (वह उपर्ये) अप्तीर (भोजिष्ठं तयस तरस्तिनं) वस्तान् नामर्थवान् और वास्तव वुद्य ऐसा वह इत्य है ॥ १ ॥ (कृ. ३४४)

(दूस स्वर्पिति इत्यदः) इत्य वर्णके वित्तिहरी (सोमस्य वीतये) वायाव यीके लिहे (रेमासः सं अस्वरम्) वीकामें वित्तदर तुव्य ही । (यत् वृत्तवया भोजसा उत्तिमि । स वृष्टे) तद निष्ठमें वित्तदर वस्तेवाला वहके और वृत्तदर वायावामे वाये वहा ॥ २ ॥ (कृ. ३४४)

(भमिस्यय विप्रा) एव लगे वायाव लेग (वायसा) भानी दृष्टे (भेदं नेमि ममग्निं) एव वीरके वायाव वृत्तदर वहाते हैं । (सुरीतया भद्रुदः) वीकिसमे वित्तदरित (तरस्तिनः समृद्धामिः) वस्तान् वायामें वाय (यः कर्णे) वाय वायमें वृत्तोवे ॥ ३ ॥ (कृ. ३४४)

वीर इत्य इत्य वृत्तोवे वुद्य है—

१ विष्वा: पृतना: भामिमूलर मर्द इत्य वस्तमुः तत्तमुः— वह वित्तदराभोद्य वायाव वायेषामे वित्त इत्यसी वह देवो वित्तदर इत्यनामे भरना वायामी वहा दिया ।

२ राजसे ज्ञानु— राजक्षणान् वरन्दे वित्त निष्ठिति विदा । वुद्यव वरन्दे वरन् एवमने वर्दे विदा ।

३ वाच्या वरं परिष्ठ भामुरि भूत भोजिष्ठं तयस तरस्तिनं तत्तमुः— इत्यावे भूत वरं वरन्देवामे वर्दे वित्त वृत्त वरं वरन्देवान् वर्दीर वायावान् वर्दाव वृत्त वरन्देवान् वित्त वुद्यव इत्य ।

४ पत्तमतः भोजसा समृद्धामिः दूस विष्विति वृत्त वित्तदी वित्तदर वह वामे भायामी वायाव वाय वे

[सूक्त ५५]

(अधिः — १-३ रेमः । वेष्टा — इद्यः ।)

तमिन्द्रे बोहरीमि मुष्ठानमप्य सुत्रा दधनुमप्रतिष्ठुते श्वर्णसि ।

महिषो गीर्भिरा च सुशिर्यो शुष्ठैश्वाये नो विश्वा सुपथा कुणोतु बुझी ॥ १ ॥
या हनु शुभु आमृः स्वर्जुः अस्तुरेष्यः ।

स्त्रोतारुमि मूर्यवस्त्य वर्षयु पे त्रु स्ते वृक्षवर्षिष्यः ॥ २ ॥

यमिन्द्र दधिष्ये स्थमश्च गा भागमव्ययम् ।

यज्वमाने सुन्युति वर्धिणायति तस्मिन्तं वेद्हि मा पृष्ठी ॥ ३ ॥ (१०)

पुरुषे लग्ने उत्तमे लासनपर अपनी इदि हो इव इत्याखे
देवाने एकमत्ते इत्यको नियुक्त किया ।५ यमिस्वरा विष्या यस्तसा मेष्य नेमि नमिति—
एक लग्ने लानी लोप अपनी इरिष्ये काम नेताक्षे एक
नियुक्त वर्तते हैं ।६ शुक्षीतया भृत्याः तत्यस्त्वनः समृक्षमिः या
क्षमे— वत्स वत्सी आपद्ये शोह व कर्तव्याके वेष्टात्
एव वत्साभेत्स आपके वात्म में वर्तते हैं कि वह इत्येष्य है ।

(सूक्त ५५)

(१ मध्यवार्ता) इव प्रसादः (उप सत्रा श्वर्णसि
दध्यात्) उपर्यात सत्रा वसीश्च प्राप्त वर्तनेताक्षे (अप्रतिष्ठुते
शुतुते) पृष्ठे न इत्येवाक्षे (इद्यं बोहरीमि) इत्यक्षे
मे वार वार तुष्टया है । (मंडिष्ठ) विप्रसादः (प्रतिष्या)
पृष्ठनीय इन् (ता राये) ५५ उत्तरि इवेष्ये तिष्ये (गीर्भिः
या यवत्स्) खुलिष्ये इत्याधी भार या वाव । वद (यस्ती)
वत्सपाति (स विष्या सुपथा हृष्णोतु) इत्यो एव मार्य
वत्स वत्से ॥ १ ॥ (कृ. ११८११)६६ (विष्यनि इद्यः) तेजना इव । (या भृत्या भसु
रंय भास्त्रा) चा भोग तृते अनुरोधे वाय है रे (मध्य
यन्) वत्साद इव । (स्तातार्द अस्य यद्यप) रत्नोत्रात
वर्तनेतात तिष्ये इन भोगोदा वर्तन वरा तथा (ये च स्ते
वृक्षवर्षिष्या) चा देव तिष्ये वत्साद देव है ॥ २ ॥

(कृ. ११८११)

६७ दे इव ! (य र्यं) विष्वद तिष्ये त् (मध्यं गो भव्यतय
भागी वायप) चाता ये तथा अस्त्र भाग वायप इत्या
दे (तमिम् वर्धिणायति सुग्यति वत्सात) विष्यादेवेषाम् दोमरस निकाष्टेवाक्षे वत्सात्य (क्षे वेद्हि) एवत्ते
दे । (मा पृष्ठी) पर्य अवहार कर्तव्याक्षे न दे ॥ ३ ॥
(कृ. ११८११)६८ तं रम्य श्वर्णसि सत्रा दधात्य अप्रतिष्ठुते इद्यं
बोहरीमि— उप वत्सीर एव वसीश्च सत्रा वाव
वर्तनेताक्षे वीठे न इत्येवाक्षे इत्यक्षे वारवार मै तुष्टया है ।
उपस्ती मै वारवार तस्मिं वर्तते हैं ।६९ मंडिष्ठा विष्या ता राये गीर्भिः या ववर्तद—
महाद दृश्यनि वह इद्य इमे वत्र देवेष्ये तिष्ये इत्यारी स्तुतिष्ये
इत्यारी और ता वाव ।७० वृष्णी मा विष्या सुपथा एषोमु— एव वत्साधी
इत्य इमारे वत्सिक्षे एव मार्य वत्स विर्यक्ष इमारे तिष्ये तुष्ट-
वर वत्सते ।७१ स्वदानि इद्य । या भृत्या भसुरेष्यः भास्त्रा—
दे तेजसी इव । चो भोग तृते अनुरोधे वाय है । स्तोतार्द
वत्स अस्य यर्थय— स्तुति वर्तनेवाक्षोऽसे मार्य अविष्य वत्सात
तिष्ये एवा वा ।७२ ये च ये वृक्षवर्षिष्यः— ये ते तिष्ये वावन देवे
दे उपस्ती मै वाव अविष्य प्रमात्रमें तिष्ये ।७३ रात्रोदा वत्साद वर्ते वत्सा इव तृते और ती भोग
तिष्ये के भाव अपने अनुष्टाविष्योंको देव ।७४ ये च ये वत्साद यार्यं गो वार्द्य विष्ये ते वत्स
मामे वेद्हि मा पृष्ठी— विष्य वावदो यो वत्स वर्षिष्ये
दधात्य इत्या है एव वाय वत्सात्य ही द दो । वृक्षवाव
व दो । वान देवेषात्यैर्दो दो वाय व देवेषात्यैर्दो देव वत्सात
वत्सात्य ही न दे ।

[सूक्त ५६]

(ज्ञापि : — १-५ गोत्रमः । देवता — इम्म ।)

इन्हो मदाय नावृष्टे श्वर्वसे वृश्चिन्ता नृमिः ।	
तमि मुहस्याविपूर्वमें इवामहे स वार्षेय प्र नौडविष्ट्	॥ १ ॥
असि हि वीरु सेन्योऽसि भूरि पराकुदिः ।	
असि दुग्रस्य चिद्गोपो यज्ञानाय विष्णुसि मुन्तुते भूरि ते पद्मु	॥ २ ॥
यद्गदीरत आज्ञयो वृष्णवे वीयते घनो ।	
वृश्चिन्ता भंडुच्युता हरी क हनुः कं वसौ इघोऽसौ इन्हू खलौ दधः	॥ ३ ॥
मदेमदु हि नो दुरिर्यथा गवामृजुकहुः ।	
स गुमाप पुरु श्रुतोमयाहस्या पद्मु चिद्गीदि ग्राय आ मर	॥ ४ ॥
मादर्यस्य सुसे सच्चा श्वर्वसे श्वर् रावसे ।	
विषा हि स्तो पुरुषुषुपु कामान्स्सुजमहेऽथा नाडविषा मैव	॥ ५ ॥
पुरु ते इद्र लन्तस्तो विर्यु पुष्पान्तु वासेम् ।	
अन्तर्हि स्यो वर्नानामूर्यो वेदो अदीश्वपु तेषां नो वेदु आ मर	॥ ६ ॥ (१४१)

(सूक्त ५६)

(नृमिः) मनुष्योनि (इम्महा इम्मः) इत्यो मारणेवाके पत्रमें (शब्दसे महाय वा वृष्टे) एव वीर आवश्यके लिये वर्णना है । (एव इत् महात्मा विष्टु) वर्षो हम एवे कुर्यामि (उत इ गम्मे) वीर तदे लेने कुर्यामि (इवामहे) वृष्णते हैं (स वार्षेय प्र विष्टुत्) वह पुरुषोंमें इमारी या वरता है ॥ १ ॥ (कृ १५१११)

दे वीर । ए (सेष्यः पसि हि) वरेण्या देनाके वरतर है । (सूरि पराकुदिः) ए वृष्टु पुरुषोंमें ए इत्येवाक्य है । ए (वद्यस्य वृष्टु विष्टु विष्टि) लेनेवे वरानेवाक्य है । (वद्यमानाय विष्टुसि) वद्यमानके लिये ए वद्य देता है । (सुष्टुते ते सूरि वृष्टु) लेनेवे विष्टुतेवाक्यके लिये लेने वाय वद्य वद्य है ॥ २ ॥ (कृ १५११२)

(पृष्ठ वाज्ययः वदीरत) वद्य वंगाम एक दोते हैं (पना पुष्पाके विधियते) एव वद्य वीरके लिये रखे रखते हैं । (मद्यस्युता हरी वृश्चिन्ता) वद्य विष्टुतेवाक्य दोत (कृ इमः) लियो दोते वाता । (कृ वसौ वद्यः) लियो वसौ वद्य । ए इत् । (अम्मादूषी वद्यः) इत्ये वद्यते वद्य । (कृ वद्यः) (कृ १५११३)

हे (वाज्यकहुः) वाय इत्यन । (मदेमदे) प्रपत्त होने पर ए (यायो एषुया न । इहि हि) गौरेके वृष्टुओंमें देता है । (वद्यमा हस्या) दोतो वायसि (पुरु शता) देनेवे प्रवर्त्यम् (वृष्टु) वद्य (एव गुमाप) इत्या एव (विष्टी हि) इत्ये वीरेन दुरियाम् एव वीर वीर (एया आ मर) वद्य वाक्य वे ॥ ३ ॥ (कृ १५११४)

(सुष्टुते वाद्यपल) सोमरु विष्टुतेवाक्य वर्पेद्यो इत्यन एव दे । हे ए ! (वायसे राष्ट्रसे सच्चा) एव आर एव देनेवे लिये आव वाय तेवार इत् । (स्ता पुष्पस्युषु विष्टा हि) इम दुसे वरानाका एवके वायते हैं । (कामात् एव समृ वद्यहै) वर्नानी कामानाएं तेरे वाय रही हैं । (अय वा विष्टा भव) वद्य इमात् एक है ॥ ५ ॥ (कृ १५११५)

हे इत् ! (ते देते अस्तवा) वे देते वायके लिये (विभव कर्यं पुष्पमिति) एव लक्ष्मीर वाने दोन्य पदाद्ये वद्यते हैं । (वायामी भयः) ए वायामी लायी है । (वायामुष्ट वनानां वेदः) वायुष्ट वायवोंके वायव्य वद्य (वायसा वद्यः हि) इत् विष्टुत (तेषां वेद न वा मर) वाया वद्य इत्यो लिये जर दे ॥ ६ ॥ (कृ १५११६)

[सूक्त ५७]

(क्षीणिः — १-३ मधुष्ठम्भः । ४-७ विश्वामित्रः ८ १० गृहसमवा, ११-१६ मेघातिष्ठिः ।
देवता — इन्द्रः ।)

सुरुपकृतुमृतये सुदुर्धामित्र गोदुर्दे । झृहमसि यविद्यवि ॥ १ ॥
उपं नः सवुना गंहि सोमस्य सोमपाः पित्रः । गोदा इत्रेततो मदैः ॥ २ ॥
अथो ते अन्तिमानां विद्यामै सुमतीनाम् । मा नो वर्ति उपु भा गंहि ॥ ३ ॥

१ मूर्मिः सृजदा इन्द्रः शब्दसे मधाय चाकुये—
मधुम शुदुवास्त्र इन्द्रये वह और भावार वहलेके लिये
मधिमा बातेहैं । जो इव इन्द्रये सुति पाते हैं उपव वह
वहता है और वह वहलेहे एवं भी वहता है ।

२ त महात्मु याविपु उत ममे इवामदे— उत
इन्द्रये ऐसे इव वह उम्भीये तुष्टते हैं उठी ताह छोटी स्वरमें
सी वहताहै लिये तुकाते हैं ।

३ सा वापेषु वा प्रविवदत्— वह उम्भीये इमारी
रक्षा बताते हैं ।

४ हे वीर ! सेष्या वसिः— हे वीर ! त असेष्य देवता
हुमा देव्य देवा प्रवाप्ती है । वह ऐस्यदी वक्ति तुमारी
वहलेहो विविके वहतर है ।

५ भूरि पराहविः— वहु वतुलोको वह दृष्टता है ।

६ दशस्य वृष्णः वसिः— तेऽप सामर्प्यालोक्य वामर्प्य
वहतेवता दृष्ट है ।

७ सूर्यते पदमामाय भूरि वसु विश्वसिः— वह
वहलेवतो दृष्टुत वह देता है ।

८ वय वाज्याः वर्तीरत भवा वृप्यते वापत्त—
वह तु इति वाते हैं वह वह वृत वीरके लिये ही एका वाता
है । व्याप विवद देता है इत्यमें व्याप ही वह मित्या है ।

९ क्व इता ?— विष वतुये तुमे मारा ।

१० क्व वसी दृष्ण ?— विष्ये वहमें रक्षा है ।

११ हे इन्द्र ! भरमाम् वसी दृष्णः— हे इन्द्र ! देवे
हमें वहमें रक्षा है ।

१२ हे जगुकृतुः ! मदेवदे गवी धूया भा वदिः—
हे वह इवदेवे इम । प्रवत वीरेव वीरके तुष्ट देवे
हमें दिये ।

१३ वमया इस्त्या पुरुषाता वसु सं प्रमाय—
रात्री हातीते वैकरी प्रवाते वह इन्द्रा वहके हमें है ।

१४ विश्वीहि, राया भा मर— हमें तीहम तुरियत
कर और हमें वह भावार मर हे ।

१५ शब्दसे राधस लक्षा— वह और वहलेके लिये हूं
देवता है ।

१६ राया पुरुषस्तु विष्य— दुष्ये वह वहतम इम
वालते हैं ।

१७ भासाम् वय सुखमदे— इमरी इत्यारे द्वमो
वामें रक्षते हैं ।

१८ न विविता मत्त— इमारा रक्ष है ।

१९ ह इन्द्र ! ते पते वस्तवा विश्वे वार्यं पुरुषत्वं
है इन्द्र । ते वे वाराह तत्र प्रवाते वहमें वालते हैं ।

२० वक्तामां वर्यः भद्रात्मुर्या देवा । वस्तः वा
तेष्य देवा भः मर— त वसीव लक्षाती है । वृत्तोव वस्त
है इत्यन्त और वह वह हमें है दो । इव इव वहमें वह वह
वह वहमें विविते वहत्या वस्तवा वहते हैं विषे
तुष्टते हैं ॥ १ ॥

(सूक्त ५७)

(गोदुर्दे सुदुर्धाइव) वैहन वहलेके उपव लिय इव
उपाय इव वहतामी गोलो तुकाते हैं वह तत्त्व (वायि
वायि) विवितिन इम (सुरुपकृतु ऊतये झृहमसि)
तत्त्व कम वहलेवाके इन्द्रको इम भावी त्रुक्ता वहते हैं लिये
तुष्टते हैं ॥ १ ॥

(नः सत्यना दृप भा गंहि) इमारे वहमें वामे । उ
(खोमयाः) लीम वीरेवत्वं है वह (लीमय विष)
वीरपत वी । (वैवतः भवा गोदा इव) दृप है वहतम वह
हमें गीतोद्यो देवतवा है ॥ २ ॥

(विष लें भरमामां सुमतीला विद्याम) वह इव
है वीर भवती तुष्टतिवोद्यो इम वह ज्ञात है । (भा वा वर्ति
वय) हमें वे न इव (भा गंहि) वारे पव भा ॥ ३ ॥

(नः गोदा)

पुमिन्तं न ऊर्ये शुभिन्नं पाहि आगृविष् । इन्द्र सामै शतकरो ॥ ४ ॥
 शुनियार्णि शतकरो या ते बनेषु पश्चसु । इन्द्र तानि तु भा षृणे ॥ ५ ॥
 अग्निन्द्र थवो पूर्वप्ल दधिष्ठ द्वारम् । उच्चे शृण्मि तिरामसि ॥ ६ ॥
 अर्वाकरो नु आ ग्रहयो शक्त परुषतः । तु लोको यस्ते अदिव इन्द्रेऽतु भागदि ॥ ७ ॥
 इत्री अक्ष महाक्षयमुमी पदवं शुच्यत् । स हि स्तुरो विचर्षणिः ॥ ८ ॥
 इन्द्रस्य मूलयाति नु न नः पुष्टादुष नैष्वर । मुद्र मंकाति नः पुरः ॥ ९ ॥
 इन्द्र आशम्यस्तु रस्थौम्यो अभ्यं करत् । ऐश्वा शशुन्निर्वर्षणिः ॥ १० ॥

क है पद सुवे सच्चा पिरेन्तु फद्यो देषे ।

अप्य यः पुरो विभिन्नरपोज्ञेसा मन्त्रानः श्रिय-चंडः ॥ ११ ॥

दुनाम् शूगो न वृत्तुणः पूरुषा चरथे देषे ।

नक्षिष्ठा नि यंमदा सुवे गमो मुहावरस्योज्ञेसा ॥ १२ ॥

प उग्रः समनिष्ठृत स्तुरो रणापु संस्कृतः ।

यदि स्तुरुमृषवां गृणवृद्व नेन्द्रा योपत्या गमत् ॥ १३ ॥

पूर्य धे स्वा सुखावन्त आपा न वृक्षर्वहिपः ।

पुवियस्य प्रश्वर्वेषु वृक्षापरि स्तुतार आसत् ॥ १४ ॥

स्वरन्ति त्वा सुवे नुरो वसो निरुक्त तुक्षियनः ।

कुदा सुव वृणुण ओकु भा गम् इन्द्र सुम्दीवु वर्षगः ॥ १५ ॥

कर्वेभिष्ठृण्वा पूपदाज दर्शि सुक्षिणेष् ।

पिश्वाहर्वन्म भवनन्यिर्वर्णे मुक्षु गामेन्तमीमह ॥ १६ ॥ (१५)

[छन्द ५८]

(मत्ता) — १-८ वृष्णः ॥ ४ जमश्चिः । इवता — १-९ इवः ॥ ४ शृण ॥

भायन्त इति धर्मं विशेदिन्द्रस्य मधुव ।

पूर्वनि ज्ञात बनमानु भोजेसा प्रति भाग न दीधिम

॥ १ ॥

१ १ ८ ॥ अवद २ १३-४ ।

११ ११ देषा अवद २ ८५३-१-१ ।

१२ १८ इवा अवद ८५३-१-१ ।

१३ इव एव वृद्वयाद्यु — इवा एव वृद्वयाद्यु ।
 १४ वृद्वया दे अवृ वृद्वया भा वृद्वया दे वृ वृद्वया
 दे वृद्वया ।

१५ इव एव वृद्वयाद्यु— इव वृद्वया दे वृ
 वृद्वया दे वृद्वया ।

१६ इव एव वृद्वया ।

१७ देषाद्या भागाः— वृद्वया दे वृद्वया

दे वृद्वया ।

(मत्ता ५८)

(पूर्व भायन्त इव) इवा भायन्त भैव वृद्वया

(इव वृद्वया विश्वा पूर्वनि इव वृद्वया) इवै इव इव

इव वृद्वया दे । (आत वृद्वया) इवै इव इव इव

पूर्व वृद्वया इवै इवै (वृति भागी व) पूर्वेऽवृद्वया

(वृद्वया विश्वा) ॥ १५ इव इव इवै इवै ॥ १६ ॥

(पूर्व वृद्वया विश्वा) ॥ १७ ॥

अनंशीराति वसुदामूर्खे स्तुहि मुद्रा इन्द्रस्य रातयः ।
सो अस्य कर्म विष्टुतो न रोपति मनो ब्रानार्थं चोदयन्
षम्महां असि सूर्यं ब्रह्मदित्यं मुहां असि ।
महस्ते सुरो भृगिमा पैनस्पतेऽद्वा देवं मुहां असि
ष्टं सूर्यं भवेत्सा महां असि सुत्रा देवं मुहां असि ।
मुहा दुषानामस्तुर्युः पुरोहितो विष्ट ज्योतिरकाम्पम्

॥ २ ॥

॥ ३ ॥

॥ ४ ॥ (११)

[सूक्त ५९]

(काणि — १-२ मेष्टपतिष्ठिः १ ४ वसिष्ठः । देवता — इन्द्रः ।)

उदु स्ये मधुमत्तम् गिरं स्वामाप्तं ईरते ।

सुत्राविष्टा चनुसा अस्तित्वेतयो वासुमन्तो रथो इव

॥ १ ॥

फण्ठो इव मूर्गेषु सूर्यो इव विष्टमिद्वौसमानम्भुः ।

इन्द्रं स्वोमैमिर्मुहृष्टेन्तं आयतः प्रियमेषासो अस्मरन्

॥ २ ॥

उदिष्टवस्य रित्युतेऽस्त्रो घनं न मित्युर्युः ।

य इन्द्रो इतिषाम ईमन्तु उ रिषो दर्शे दधावि सुमितिं

॥ ३ ॥

(मर्यादीराति वसुदो रथं स्तुहि) विष्टके दानतो एवं
दानि वही पूर्वी उव चवतात्ति स्तुति वर । (इन्द्रस्य
रातयः मद्राः) इन्द्रेष्ट दाने वरता है । (मनः दानाय
चोदयन्) अन्ते दाने वर दानं विष्टे भ्रेति वरता है
इष्ट वात (अस्य काम विष्टता) इन्द्रे इष्टाके भवुतार
वार्त्त वरते दाने वर वर (म रोपति) ओव वही वरता है ।

(क ११४)

११४ ! (वर महां असि) उ विष्टवम् वरा है । ११४
भास्त्रम् । (षट् महां असि उ विष्टसे वहा है । (ते
स्तः मदा मदिमा) तुष वर्षा भवेत्वा वहान् (वरविष्ट)
वहा वाता है । ११५ ! (मद्रा महां असि) उ विष्टवम्
वरा है । । । । (क ११३ । अर्थ ११११११)

११५ ! वर (वधसा वर महां असि) वर्ष त वरा
है । ११६ ! (मद्रा महां असि) उ गाता मदादै । (मद्रा)
वरविष्ट (वधसा असुष्य पुरोहित) उ देव उ एविष्ट
वात दृष्टा अवरत है लेता (उत्ताति) तवामता (अदाक्षय
विष्ट) उ वरवाती भाव व्याप्त है । । । ।

(क ११५)

११६ ! जात अनिमाने प्रतिमाता न वावसा इविष्ट-
वाप्त तृष्ण वरा वरता है । अप्त वरेष भावही वरमे लेता

वात वरते है लेता इव वरमे वरमे वातय वरेष । वरमे वर
वरमी वाता ही वरमी है ।

११७ ! अस्तीर्याति वसुदी उप स्तुति — विष्टके दाने
कर्म भी वही वही वाती वेण वरवाता इवमी स्तुति वर ।

११८ ! इन्द्रस्य मद्राः रातया — इन्द्रेष्ट दान वर्ष
वरते वरते है ।

११९ ! मनः दानाय चोदयम् — मन दानके विष्टे भ्रेति
वर ।

१२० ! अस्य कामं विष्टता म रोपति — इष्ट इन्द्रेष्ट
एव वार्त्त वरते वर वर वरता विष्ट वही वरता ।

१२१ ! मदादै असि — उ वरा है ।

१२२ ! वेयामा वसुया पुरोहितः मद्राक्षय विष्ट
विष्टोतिः — वेयाम वर वरवात अवरत है वडातेष्ट
वरवातम भोव वाही वेया है ।

(सूक्त ५९)

१२३ ! वेया (अर्थ २ । ११ ११-१) (क १११५ ११)
(अस्य भेदा उत्त रित्यते इत्युनु) इत्य वरम
वाप वरता ही वाप है ना । (विष्टुष्या वरमे न) विष्टी

विष्टे वरमे वरात । (या इन्द्रा दृष्टिवाद) नो या
वरवाता है (सं दिवा न इमार्थित) वर वरमी वही

मन्त्रमखं च सुचित सुपेष्टु स धर्मात् पुक्षियेष्वा ।
पूर्णभूत प्रसितपत्तरन्ति त य इन्द्रे कर्मणा सुवर्तु

॥ ४ ॥ (१६०)

[सूक्त ६०]

(श्लोकः — १-२ सुष्ठुपा सुष्ठुपाक्षो वा ४ ३ मधुष्ठुष्ठुपाः । देवता — इन्द्रः ।)

एषा धर्मात् वीरयुतेषा धूर उत्त स्थिरः । एषा तु ग्राम्य मनः ॥ १ ॥

एषा रातिस्तुवीमधु विद्येभिर्घीयि धातुभिः । अधा चिदिन्द्र मे सच्चा ॥ २ ॥

मो पु प्रसेव तन्त्रयुष्मां वाक्षानी पते । मस्त्रा सरुषु गोमतेः ॥ ३ ॥

एषा धर्म्य सुनृती विरप्त्या गोमती मुही । पुषा गाखा न द्राष्टुपे ॥ ४ ॥

एषा हि ते विमूर्त्य उद्यर्य इन्द्र मार्ते । सुपथित्सन्ति द्राष्टुपे ॥ ५ ॥

एषा धर्म्य काम्या स्तोमे तुक्ष्य च धास्या । इन्द्रायु सेमर्तीत्ये ॥ ६ ॥ (१६१)

१ एषा इन्द्रः । एष (सोमिती दर्शन धर्माति) वीमाणम्
वर्तेवत्तेऽपि रक्षा है ॥ १ ॥ (श. ४१३.१५)

(धर्म्य सुचित सुपेष्टु मर्ते) वर्तम लंका और
क्षम्भुत वर्तमाना मैत्र (विद्येयुषु वा धर्मात्) महाभूमि
मुक्त है । (ये इन्द्रे काम्या भुवत्) जो इन्द्रमें अप्ये
विभिन्न होते हैं (पूर्णीः प्रसितयः वर्त तत्त्वित)
वृक्षादेव वर्तमनीयो वार करते हैं ॥ १ ॥ (श. ४१३.१५)

२ विद्युपुः पर्वते वर्त्य वर्त्य वर्त्य वर्त्य—
विभिन्नी वीरय वर्त वर्ता है । इष्ट वर्त हृष्ट वर्ता वर्ता
ही वर्ता है । वर्तोऽपि वर्त इष्ट वर्त विभिन्नी वर्ता है ।

३ त रिपः न इमत्ति— लंके एष वर्ती इन्द्रे
स्मर्तोऽपि वर्त विभिन्न वर्त है ।

४ ये इन्द्रे कर्मणा भुवत् पूर्णीः प्रसितयः तत्त्वित—
वे इन्द्रमें सुप्र कर्म व्याप्त वर्तते हैं । वर्तम वर्त पूर्वे वर्तम
पर्वते हैं । एष इन्द्रय वर्तम है ।

(सूक्त ६०)

(एष वीरयुः हि असि) ऐसा त वीरय वाव रहने
वाला है । (धूर उत्त स्थिरः एष) त एष और द्रुत है ।
(एषा ते मनः धर्म्य) ऐसा त्य वर्त वारावत्तोद
है ॥ १ ॥ (श. ४१३.१६)

५ (तुर्षीमय) एष वर्तमोह । (विष्वमिः धातुभिः)
वर्त वाप्त वर्तमानोऽने (एषा धर्म्यः धायि) तेति इन
वार्ता वी है ॥ २ ॥ (वर्ता मे सज्जा वित्) त वर्तमेरो
वर्त एष ॥ २ ॥ (श. ४१३.१७)

६ (वाजानी पते) वर्तोऽपि सामित् । (प्राह्णा इष)

वाजाक समाव (वाज्ञयुः मा चु मुषः) वाजानी न हो ।

(गोमतः सुत्वस मत्त्व) इन्द्र मित्र वीरवर्ते वालमित्र
ए ॥ ३ ॥ (श. ४१३.१८)

(एषा वाजाना व) एष व्योमावी वाजानी वाइ
(वाज्ञये) वाजीके लिये (धर्म्य सुमृता विरप्त्या मही
गोमती एष) इष्ट वर्तमी तुक्त वर्तम, मरिमावी और
वर्ती गीजीवावी दोनों हैं ॥ ४ ॥ (श. ११८.८)

७ इष्ट ! (मायते) भेर वेग (वाज्ञये) वाजीके लिये
(ते विमूर्त्यः ऋत्यः) लंकी विमूर्त्यो वीर वर्तार्य (एषा
ते वर्त्या वित् वर्तित) वित्सर्वैह वर्तम वात होवेतावी
है ॥ ५ ॥ (श. ११८.९)

(सोमपीतये इन्द्राय) वामाण वर्तेवत्ते इन्द्रे लिये
(धर्म्य काम्या स्तोम उपर्य व वाया एष) इष्ट विन
स्त्रेन और गीत गाने दोन्ह है ॥ ६ ॥ (श. ११८.१०)

८ वीरयुः वाय वर्त स्थिर मसि- इष्ट । दूरीतोऽ
वाव वर्तमाना धूर और द्रुत लिये वर्त एवर तुव करते
वाल है ।

९ एषा त मना धर्म्य— ऐसा वेरा मन वाजानीव है ।

१० ये तुर्षीमय ! विष्वमिः धातुभिः एषा धर्म्य
धायि— हे वर्तमाने इष्ट । वर्त वारावत्तोद ती वार्ता
वाला वी है । वारावत्तोद ती वाव वार्तिग विवाह है ।

११ वर्तमे सुप्ता वित्— वर्त में वित्र वार
वर्त ॥ १ ॥

[सूक्त ५१]

(प्राप्तिः — १-५ गोपूस्मास्वद्युक्तिनी । वेदता — इत्यः ।)

त ते महे गृणीमसि वृष्टं पुस्तु सासुहिष् । उ लोकाहुभिरिषा इतिभिर्यस् ॥ १ ॥
 भेनु व्योर्तीप्यायवे मन्त्रे च विवेदिष । मन्त्रानो वृस्व वृहिषो विराजसि ॥ २ ॥
 वदुषा किंच उक्षिणोऽनु दुष्टिं पूर्वया । पूर्वपत्रीरयो ज्येष्ठे विवेदिषे ॥ ३ ॥
 तम्भिं प्र गोपत तुल्यतु पुरुषस्म । इन्द्री गीभिस्त्विपमा विवासव ॥ ४ ॥
 पस्य त्रिशैसो वृहस्तां द्राघार रोदसी । गिरीरजी अपः स्वर्वृष्टिना ॥ ५ ॥
 स राजसि पुष्टुर्तु एको वृश्चार्णि विम्बसे । इन्द्रु भेत्रा अवस्थाऽच मन्त्रे ॥ ६ ॥ (५७)

५ तत्त्वयुग्मा मा भुवः— भास्त्री च वन । वस्यवी हेत्व
 अ ।

६ एका शाका न वाशुये वस्य सूकृता विरत्यी
 मही गोमती एव— एके वासे पुष शाकां च उमाल
 शाकां विषे इत्युपाय वरी भवत्यावद और गौडे भेत्रे
 वाणी होती है ।

७ हे इत्य ! मावते वाशुये वे विमूलया ऋतयः
 सद्य विषु समिति— हे इत्य ! ऐ भेत्रे शाकां विषे तेरी
 विमूलिना और भेत्रे उत्तम उत्तम शाक होते हैं ।

(सूक्त ५१)

८ (विद्विषः) वापारी ! (ते त महे गीभिसि) इम
 हेत्रे वस्त्र भास्त्रादी प्रतीक वर्ते हैं विषे (वृपतं) वस्त्रादी,
 (पूर्वु सासदि) तुल्यो विवेदी (लोकाहुर्तु) इन्द्रेषे
 विषे वापत वेत्वाना भीर (इतिभिर्य) वृहस्तां वृष्टिना-
 वाना है ॥ १ ॥ (क. ४१५४)

(येन उत्तर्तीपि) विषे हेत्र (वापये ऋतय व्य
 विवेदिष्य) भातु भर भवुके विषे रिषा वा (मन्त्रानो)
 त भावीत होता (वस्य पर्विषो विराजसि) तत भावन
 पर विष्वावद हा ॥ २ ॥ (क. ४१५५)

(तद् अथ) वी भाव (उक्षिणः पूर्पया भनु
 रसुपतिः) इम गृहिणाहु वृशी उद्धुति गते हैं तू
 (द्विषे द्विषे वृपतनाः भवा भव) विवेदिन विषानोंके
 वाच वर्तोऽ वाच वर्त वा वर्त ॥ ३ ॥ (क. ४१५६)

(त त पुष्टुर्तु वृष्टिने) वन अन्तोऽ वृष्टा वृत्येष्वा
 अन्तोऽ वाच व्योगेन (इत्यः) इत्यर्थं (वामिं लविषं)

स्वेतेषि स्तुति विषे इत्य वी (वा विवासव) इत्य
 वर्ते ॥ ४ ॥ (क. ४१५७)

(पस्य त्रिवर्द्धसः इत्य चाहा) विषे विषुकिं वस्त्रे
 इत्यके वडे वास्त्रमें (दोषसी दापार) पुषेष और
 भृत्योऽक्षा पात्र विषा है और (तुपत्वना) विषी वर्ते
 (गिरीर वस्त्रादी) वर्तों और वैद्वतोंवे (व्याहा)
 वडो और तेवद्ये वात्र विषा है ॥ ५ ॥ (क. ४१५८)

(स राजसि) वह त वक्षेषा चासन वर्ता है । ते
 (पुष्टुर्तु) वृशी वाच स्तुति विषे वरे (एका वृश्चार्णि
 विम्बसे) त वक्षेषा इत्यो वारता है । हे इत्य ! (वीरा
 अवस्था च यत्तद) विषव और वस्त्रे विषे ही य द
 वर्ता है ॥ ६ ॥ (क. ४१५९)

इत्य सूक्ते इत्यके वे गुण आदेह—

१ विद्विषः पूर्पये वृष्टु सासदि, सोकाहुर्तु
 इतिभिर्य— वत्तवारी भस्त्रादी वृष्टिर्वी विषवी लेपेष
 वापत्वाने वेत्वाना भीर क्वचिं वृष्टिलाभ इत्य है ।

२ वस्य वृष्टु साहा रोहसी वापार— विषे
 वर्ते वुमाह भार मूलकादा वात्र विषा है ।

३ वृपत्वना गिरीत् वस्त्राद लवः लवः— विषे
 वास्त्रेषं वर्त वैश्वत वस्त्राद भार उक्षिणा वात्र
 विषा है ।

४ स राजसि— वह इत्य त वासन वर्ता है ।

५ पुष्टुर्तु ! एका वृश्चार्णि विम्बसे— हे अभीरात्रा
 प्रष्टिष्ठ इत्य । तुल्यरेता ही भव त्वं वृष्टेषे वैद्वतोंवे
 वात्रा है ।

६ वीरा अवस्था च य यत्तद— विषव भीर वह भवा
 वर्ता है ।

[मुक्त ६२]

(ज्ञापि — १-४ सोमरी; ५ ७ नृमेघः; ८ १० गोपूष्यश्वसूक्षिमी । देवता — इन्द्रः ।)

वयम् त्वामेष्वर्थं स्यु न कश्चिद्गृह्णन्तोऽप्युत्स्यवेः । वार्जे चित्र ईशामहे ॥ १ ॥

उपे त्वा कर्मेषु तये स नो पुणोप्रधकाम् यो धूपत् ।

स्वामिदर्थयितारे वयमहे सखाय इन्द्र सानुसिम् ॥ २ ॥

यो ने इदमिद पुरा प्र वस्ये आनिनाय तस्मै व स्तुपे । सखाय इन्द्रमूर्वये ॥ ३ ॥

ईर्यैश्च सत्यति चरणीसह स हि एमा यो अमन्दत् ।

आ तु नुः स वैष्टु गच्छमहर्वे स्तोहुम्यो मुघवा शुरम् ॥ ४ ॥

इद्रायु साम गायत्रु विप्राप वृद्धे पुहव । प्रमहूर्ते विप्रिते पन्नस्पवे ॥ ५ ॥

स्वमिद्रामिभूरसि स्व दृष्ट्यमोचयः । विश्वर्कमा विश्वदेवो महां असिः ॥ ६ ॥

विभ्रातु न्योतिंगा स्वैरुर्गंलो रोष्टुन द्विषः । देवसर्व इन्द्र सुख्यार्य येमिरे ॥ ७ ॥

सम्मुभि प्र गायत्रु पुरुहूत पुरुहूतम् । इन्द्रं गीर्मिस्त्विपमा विवासत ॥ ८ ॥

यम्ये द्विषहसो पुरासहो द्वाधारु रोदसी । गिरीर्णज्ञे अप स्वर्वृपत्वना ॥ ९ ॥

स रात्वसि पुरुहूत एको वृप्राणि जिमसे । इन्द्रं जेत्रा भवस्याऽच्च यन्तवे ॥ १० ॥ (३८)

[मुक्त ६३]

(ज्ञापि — १-३ मुक्तमा सापत्तो वा ३ (द्विं०) मरणात्मा; ४-५ गोत्रमा; ७ १ पवता । देवता — इन्द्रः ।)

दुपा तु कु मध्येना सीपधामेन्द्रिये विष्वे च देवाः ।

युष्म च नस्तुन्व्य च प्रकाश चाकुस्त्वैरिन्द्रः सुह चाकुस्त्वाति ॥ १ ॥

(मुक्त ६०)

१ व देवो अवर्त २ ११४१-१ ।

(इन्द्राय साम गायत्र) इन्द्रके भित्रे सामवान करो ।
(पृष्ठे तप्याय) वडे झाँवीं (अमर्तने विप्रिते पन्न
स्पव) पमका व्यवहरण करनकाल झाँवीं तपा स्तुष्टिक वस्यवे
निर (पृष्ठ) इन्द्र नामक गाम गामो ॥ ५ ॥

(कृ ११४१)

दे इन्द्र । (त्य अमिम् असि) त् विष्वाहे है (त्ये
मूर्ये मरात्मयः) त् त्यै पुर्वे व्यवहित विषा है त् (विष्य
अर्मा) त् त्यै व्यवहारण (विष्वदेवो महाम असि)
त् इन्द्र विष्याहे वह आर वाह है ॥ ६ ॥ (कृ ११४१)

(यातिवा विभ्रात्मा) उत्तामेव व्यवहर इन्द्र (विष्य
देवर्व च्च । व्यवहारण) तीके व्यवहरणमे ठेवसी व्यवहरो
त् इन्द्राहे है । दे इन्द्र । (देवो त् त्यै व्यवहारण येमिर) इन्द्र
येमी विष्वदेव विष वाह वहते है ॥ ० ॥ (कृ ११४१)

११ (अवर्त नम्य वाह २)

८-१ देवो अवर्त २ ११४१-१ ।

इन्द्र ये तुष है—

१ अमंहते विप्रिते पन्नस्पवे विष्याय— व्यवहा
रण करनकाल झाँवीं स्तुष्टि विष्वाह ।

२ अमिष्युः विष्वदेवम् विष्यवदेवा महाम असि—
त् विष्वदेव विष्वाह निर्वाह व्यवहारण व्यवहरण वह आर
वह इन्द्र है ।

३ देवाः से त्यै व्यवहारण येमिर— त्यै ती विष्वदेव
वाहते है ।

(मुक्त ६३)

(इन्द्रः विष्य च देवाः) इन्द्र आर तह देव ताह ८५
(इमा मुक्तमा त् त्यै व्यवहारण) इन मुक्तोदा आरंद्रुच
व्यवहर वहते है । (इन्द्रः व्यवहारणैः सह) इन्द्र आर
कोहे वाह (वाह) वहती (तः त्यै) इन्द्रे व्यवहरो

आदिस्वैरिन्द्रः सर्गेणो मुहूर्क्षिरसार्ह भूत्विष्णा तुमूनाम् ।

इत्यार्थं देवा अस्तुरान्वदायन्देवा देवस्तर्पमिरध्मामाणः ॥ २ ॥

प्रत्यश्चमुर्क्षेनयु छवीभिरादित्स्वामिपिरा पर्यपश्यन् ।

अथा वाऽनु देवहितं सनेम मदेम छातहिमाः सुवीराः ॥ ३ ॥

य एकु इतिदयते वसु मर्तीय द्वाष्ट्वेण । ईश्वानो अग्रविष्णु इन्द्रो अङ्ग ॥ ४ ॥

कुदा मर्तीमरामप्से पूदा द्वृष्ट्यमिष्ट स्फुरत् । कुदा नः द्वृष्ट्यमिष्ट इन्द्रो अङ्ग ॥ ५ ॥

यश्चिदित्वा बहुम्यं जा सुनावौ आविषासति । द्वृग्रहत्वस्यतु द्वृष्ट्य इन्द्रो अङ्ग ॥ ६ ॥

य हृद्र सोमुपारुमो मदैः द्वृष्ट्यमिष्ट वेतत्वि । येनाहसि न्युत्विष्णु समर्मिहे ॥ ७ ॥

येना दद्वन्वमविष्णु द्वृष्ट्यमिष्ट स्वर्णिरम् । येनां समुद्रमाविष्णु तर्मिहे ॥ ८ ॥

येन सिंचुं प्रहीतो रथी इव प्रक्षोदयः । पञ्चामुतस्य वातवे तर्मिहे ॥ ९ ॥ (११५)

(प्रज्ञा च) नार प्रवाप्ति (शीक्षणाति) समर्प
वताये ॥ १ ॥

(च । ११५१)

(आदित्यै) आदित्योऽपि दात (मरुद्विदि सत्यवः
इन्द्रः) मरुलेन पत्नौ दात इति (अस्तार्ह तनूमी अ
विता भूतु) इत्योर्दीर्घ रथक देवोऽपि (देवा भवुराद
हस्याय) देवोने भवुराद्य मात्रकर (यदा यायत्र) अव
जाये तद (देवत्वं अभिरक्षमाणा : देवा) देवोने अप्त्ये
देवपापी रथा च ॥ १ ॥ (च । ११५१)

(दावीभिः प्रत्यश्च मर्क्ष सद्यन्) अप्ती शक्तिः कृ
पाप च तृप्त्य इवत्व चाये (आत् इत् इपिर्त्ती स्वधी
पर्यपश्यन्) इत्येवं पथात् विव सदाचो लक्ष्मि देवा ।
(अथा देवहितं वाऽनु सनेम) इत्येवं देवों रथे हुए
वस्त्रे वर्ष्येन शत विना (सुवीरा छातहिमाः सेवेम)
अथ पुरोर्वेदिः दात ची रथे आनेदेष्ये ॥ २ ॥

(च । ११५ ॥ १)

(दावीप मर्ताय) दातो भवुष्टके विवे (या : एकः इत्)
वा वरेत्य ची (वसु विद्यते) वन देवा है (अप्रति
कृतः इवान्व इन्द्रः यग) देविय । वही विचारे चर-
त्वं न दीनेत्वं इव इत दीहे ॥ २ ॥

(च । ११५१)

(मंग) विव । (कुदा यरापासं मर्ते) च वान
न इनार्थं भवुष्टये (पदा द्वृष्ट्य इप रुक्त) वर्ष्ये
वर्ष्ये तद वद वा वेषा ? (इन्द्रः कुदा नः गिरा
द्वृष्ट्यत्) इत वद इमादी द्वृष्टिः दुनेम ॥ ५ ॥

(च । ११५१)

(यः विद् दि) जो कार्य (बहुम्या) पृष्ठमें
(सुतावाद् त्वा या भाविष्यासति) एव अपापादे
क्षेत्री सेवा अता है (तद् तद्य शाय इन्द्रः पत्पते)
तद् वस वक्ता वामी वह इत होता है (मंग) विव ॥ १ ॥

(च । ११५१)

ऐ इत ! (या सोमपातम् द्वृष्टिः मदः वेतति)
जा देवा दीपयान चनेते ववादाती आवद् प्रवृत्त दीपा है
(येव अविन लि इसि) विवेदे तृ वानेवाते वक्तुये यात्प
है (तं इमह) एव वापर्यमेव इम यात् वरते है ॥ ३ ॥

(च । ११५१)

(येव वश्याते विद्युत्) विवेदे ववाय अविलम्बे
(वेषपर्यं स्वः मर्ते) दुष्टये चनेते ववादाते वेता वर्ष्ये
तदा (येव सप्तुर्म भाविष्य) विवेदे वक्तुदो द्वाकाची
(तं इमहे) एव वापर्यमेव इम यात्पते है ॥ ४ ॥

(च । ११५१)

(येव विन्दुं महीः अपा) विवेदे विन्दु तदा वक्ता
प्रवाहोऽप्य (रथाम् इत्य) रथोऽप्य चापाम् (भूत्रस्य वर्णया
यात्वे) एवके मार्यस्त चनेते विव (प्रवोद्याः) भैरव
विव (तं इमहे) एव वक्तिः पाप इम वरते है ॥ ५ ॥

(च । ११५१)

१ इन्द्राः मः पदे तत्प्र प्रवाही च शीघ्रपाति— इत
द्वारा वही इतो चनेते नार प्रवाहे वसवं ववाता है ।

२ इन्द्राः भवार्ह तनूमी अपिता भूतु— इत इन्द्रा
वरीय वरीय चनेते ।

३ भवुराम् दद्याय देवत्वं अभिरक्षमाणा वेवा

[सूक्त ६४]

(प्राप्ति : — १ ३ नुमेभः ४-५ विश्वमनाः । देवता — इन्द्रः ।)

एन्द्र नो गथि प्रियः संत्राविदगीषः ।	गिरिर्न विशर्तस्युपुः परिर्दिषः ॥ १ ॥
भुमि हि सरय सोमपा उमे बुम्यु रोदसी ।	इन्द्रासि मुन्दतो बुधः परिर्दिषः ॥ २ ॥
त हि वशीनामिन्द्र बुर्णा पुरामसि ।	इन्द्रा दख्योर्मनोर्बुधः परिर्दिषः ॥ ३ ॥
एदु मन्त्रो मुदिन्द्रं सिंहवान्द्यो अन्वसः ।	एवा हि वीर स्वर्वते सुदाबुधः ॥ ४ ॥
इन्द्र स्वार्थीरीणा नक्षिए पूर्वस्तुरिप् ।	उदानेन्द्रु छवेसा न मन्दना ॥ ५ ॥
व बो वाक्षाना पतिमहूमहि भूम्यम् ।	मन्द्रायुमिर्हमिर्वायुवेन्यम् ॥ ६ ॥ (४०४)

पदा आपद्— भूतोंमे मार दर देवताके लोक भूतेषामे देव वह जा दें ।

४ वर्षा इन्द्रहितं वर्त्तं सनेम— इसवे देवताका वर्ष आपत दें ।

५ मुविदाः शतहिमा मदेम— इसम वाक्यबोधे वाच दी हर्व वालहै इस दी ।

६ वायुर्वे मत्तापि य एकः ब्रह्म विदयते— एवा मानवोंके लिये वह वर्षाका ही इन्द्र वर्ष देता है ।

७ वर्षतिस्तुता इत्यातः इन्द्रः— वह किसीपे परा वित न होतेवत्वा इन्द्र है ।

८ वदा वरापत्तं मर्ते पदा रुद्रत्— वह इस न देवताका वासनामें वार्षे वह वर्षाका है ।

९ इन्द्र वदा तः गिरः शुभ्रवद्— इन वह इसारी वासना द्वारा है ।

१० इन्द्र वर्षं शावा पर्यते— इन वर्ष वह व्रत अवल्य है ।

११ या वाक्षिष्ठः भद्रा वेवति येष वाक्षिण मिहासि त हेमो— वो वामवैदावा वामद व्रद्ध वर्षा है विल्ले वासनामें उम्बुचे वह माराता है वह वह इस मीठे है ।

१२ य वाक्षिष्ठं हेमो— विल्ले उम्बुचा व्रत है वह वह इस माह वाहते हैं ।

१३ य वाक्षिष्ठं हेमो— विल्ले उम्बुचा व्रत है वह वह इस माह वाहते हैं ।

१४ देव वृत्तव्य वन्ध्या पातवे प्रवादव्यः हं हेमो— विल्ले वह माह एवं वर्षे वेत्ता वह बोक्षीये देता है वह वह इस वाहते हैं ।

(सूक्त ६५)

हे इन् । (जा गहि) इवरे पाप जा । तु (विष्यः) इम विष है (सत्त्रा वित्) तु उता वीत्वेवत्वा (वापोदा)

फिफ्टर म इत्येवत्वा (विति) न विश्वतः वृषुः) पर्वते उपाव वारी भोवे पुरा (विषः पतिः) पुरोऽक्षा पति ह ॥ १ ॥ (च ४१८८)

हे (सत्य सोमपा) वजे सोमके पीतेषामे इन् । (उमे दोहसी भमि वभूय हि) दृष्ट वामो वृ वार नू लंकोंको परिवित करता है । हे इन् तु (विषः पतिः) पुरोऽक्षा पति भीर (विश्वतः वृषुः) लोपवाय भूतेषामे वर्षावे वाका है ॥ २ ॥ (च ४१८९)

हे इन् । (वृ वामवैदावा वुर्त वर्ती भसित हि) व भूतेषामे विल्ले लोहोवाका है (वस्या इत्या) लंकु लंके भासेवत्वा (भलो वृषुः) मुव्यसी वहानेवत्वा भीर (विषः पतिः) वुडोऽक्ष पतक है ॥ ३ ॥ (च ४१८१५)

हे (वर्षपो) वर्षतु । (वर्षसः वाम भविष्यते भा विज्ञ इन् तु) भद्रा वीमरसके अविक मंडे भामधे इसमे वाम । (वदावृषुः वीरा वदा हि वाहते) वदा वर्षाका वीत्वेवत्वा भीर इन वीर वर्ष व्रद्धीत होता है ॥ ४ ॥ (च ४१८१६)

हे (वीरीली व्यातः इन्द्र) हे लीलोंके लाली इन् । (वे पूर्वस्तुरिति) लीले उपानी लृतिका (म किं वामसा वृप्तनामा) वर्षते वीरी वा वर्षत (व मम्दना) व मम्दनि वा वर्षाका है ॥ ५ ॥ (च ४१८१७)

(वर्षस्याः) वदा वर्षेवत्वे इन् (वदावृषुः वर्षेविः वामवैदेष्य) वला वक्षेवत्वे वामवैदेष्य (त वामवैदी पति) इन वर्षेवे लाली इन्द्रा (वदावृषुः) तुम्हे है ॥ ६ ॥ (च ४१८१८)

[संक्ष ६५]

(अधि: — १-३ विष्णुमत्ता : वेष्टा — इदं ।)

एतो निवन्त्रं सर्वाम् सरखाय स्वोम्यं नरम् । कृदीयो विशा अम्पस्येक इत् ॥ १ ॥
 अग्नोरुधाय गुविचे द्युष्माय दस्मृत वचः । प्रुतास्त्वार्दीयो मधुनष्ठ बोचत ॥ २ ॥
 यस्यामितानि दीर्घांशु न राघः पर्येतव । उपोर्तिर्व विश्वम्पस्यस्ति दक्षिणा ॥ ३ ॥ (४०)

[छक्क ५५]

(अपि) = १-३ विश्वसनी (देवता — इष्ट ! !)

स्तुहीन्दै अपशब्दहर्नमि वाक्षिन यमेष् । अर्पो गम् महामान् पि द्रुक्षुरेण ॥ १ ॥

સાહેય ગ્રંથ એવા સંખ્યો હોય—

१५४ विषय संज्ञावित् अगोद्धा विष्वरुः पृष्ठा विष्व
पति— इन्ह उपवा मिद वर्जना विष्वरु न रहने
मात्रा चारों ओरसे पुष्ट बुकोलम्ब स्थापी है। अ-गोद्धा
विष्वी लक्ष विष्वरु व राहेंद्रका वर्जना विष्व दोनोंका इन्ह हैं।

२ शाश्वतिना पुरो द्वर्ता स्वं जसि— शाश्वत गप्त
रिक्षेभे ब्रह्मेभे फिर्खेभे होम्येभाष्य है ।

१ वस्योः इमता— चतुर्थे मारणेशाण

४ मतोचुयः— यत्तर्हात् पात्रोऽम संपर्वत् कर्मे
प्राप्त्वा है।

५ सदाशुभा वीर एव लक्ष्मे— जो सदा एवमे
प्राप्ति के अपनी नीति लक्ष्मे है ।

५ द्वितीयो स्पाता इम्बुः— यार्देष्य एव इति है।
प्रत्येकी व्याप्ति यार्देष्ये विष एव इति है।

उत पृथ्वसुति न किं पादसा उदानश म
मरुमा—भे त्रैरी सुतिरो गो एवं यही प्राप्त व
सद्य न मुखे प्राप्त वर मरुत है। तरी त्रैरी वर्णा प्रकृ
त्या विस्मये भी लक्ष्य है।

८ अवस्था: वाकासी पर्ति स महोमहि— यह
वाकानवल दून सब वर्षे लायी रखदी ही अपनी मुख्यता
तिथे बहुते हैं।

(खंड ६५)

१६८
१७० ए (सत्ताया) है विशेष। (या इत् तु) आमी।
(स्नोऽप्य मर सत्तायम्) स्मृतिर्वाच वीर इष्टप्री स्मृति
र्वे। (या पक्ष इत्) मे सदेश ही (विश्वा इती।
भृष्टप्री) क्व ब्रह्मोऽस रिक्षता है ॥ १४

(श. १४८१५)

(अ गो रुपाय) ओ करी पांडोदा ऐस्या वही ओर
(गुलिये) नोमोडे वृंद निष्ठालेहका है (एसाय) वृंद

बुद्धेश्वर रहस्याश्रमे दिवे (पूर्वात् मधुवा एव सारीया) भी और हस्ते भाष्मि सातु (हस्तम् चक्र लोकत) स्वरूपाश्रिते इत्यर्थोऽस्मि ॥ (कृ. ४३४)

(अम्य भर्मितानि दीर्घा) विष्णु भर्मित परामर्श
हे (यश राष्ट्र य पर्यंतवे) विष्णु भन राष्ट्र भे नीर्मी

बाटे विषयमें (दक्षिणा ज्योतिः स) बाध्यन् ज्योतिः
समान (विश्वा मम्पति) सरके बार ज्योतिः ॥ १ ॥
(अ. ८५५३)

१ हे यज्ञाय ! स्तोत्रम् वर्त क्षयाम्— हे मिश्र !
लालो प्रसंगमी वीर्यो ही प्रवेश इप यात है दुम ए
उसमें बाहिक हो जाओ ।

३४। एक इति विभाः कुरीः अस्यस्यति— वे लोमा ही सब वासदेवि ज्ञार रहता है ।

५ अगो रुधाय गविने पुसाय— जो यात्री
दिक्षा वही परतु गीतोंमें बोक्तव्य करनामें आत है। वह
गीतोंमें रुदा है।

४ दस्य यज्ञः वोचत्- रथधि स्तुति द्विरत्र वाचयेत् ॥
प्राप्ति विनिमी विनिमी विनिमी विनिमी विनिमी

५ वस्य मामताने बाया— हर इन्हें परिमित है।

बाने इन्हें भवित्वित है।
उद्दिष्टा ज्येति म यित्ते अम्यस्पति - एवं
ज्योतिर्विद्या विद्या तेज सूक्त विद्या है।

(मृत्यु ५६)
 (इपम्भवत्) भूषणे तदा (भन्नूमि वासिनीं पर्म)
 वीष रहित वस्त्राद् लोरि शिक्षा (इत्येतद्युहि) इप्पे
 खुड़ि च, तो (दायुषे) वासिनीं (भूषणे) प्रकृष्ट (मंह
 ताम् वासिनीं) एव एव (प्रिया) तेज ३-५-३।

(No. १२३८९)

एषा नूनमुपे स्तुहि वर्येय दग्धम नवैम् । सुविद्वासं चक्षुर्ख्यं भूरणीनाम् ॥ २ ॥
 वेष्या हि निश्चेतीना वज्रहस्त परिवृज्मम् । अद्वैराहः कुच्युः परिपदामिन ॥ ३ ॥ (४१०)
 ॥ इति पञ्चमोऽनुवाकः ॥ ५ ॥

[सूक्त ६७]

(लक्षणः — १-३ पदार्थोपाः ४ उपर्यसमदः । वेष्यता — ? इन्द्रः १ मध्यत् १ मात्राः ।)
 वृनोति हि सुन्मध्यु परीणसः सुन्वानो हि एषा यद्वृत्यव द्विपो देवानामवु द्विपेः ।
 सुन्वान इरिसपासाति सुद्वासो वाच्मवृत्तः ।
 सुन्वानायेन्द्रो ददात्याद्वै रयि ददात्याद्वैम् ॥ १ ॥
 मो पु चो अमदुभि तानि पौस्त्रा सनो भूवन्युम्भानि मोत आरियुस्मस्पुरोत आरिपुः ।
 यद्विष्ट्र युगेयुगे नम्य घोपाद्यन्तर्त्यम् ।
 अमासु तन्मंकुतो यर्व दुष्टर्व दिभुता यर्व दुष्टर्व ॥ २ ॥

हे (वेष्यम्) अप्यथके पुत्र । (मध्य वशाम्) जो नववा वा
 रज्ञा है त्वा वा (सुविडासं वर्णीनां चक्षुर्ख्य) उठम
 विहारं है वर ग्रवलक्षणं मानवोऽहे रुद्धते योग्य है (एवा
 नून वप स्तुहि) इष्टभि निष्ठव्ये स्तुति कर ॥ ३ ॥

(अ ११३१३१)

हे (वज्रहस्त) वज्र रात्रे नरेषाके इन्द्र । दू (निश्चेतीना परिवर्त्त वेष्य हि) आपत्तिनोद्य परिवर्त्तन वरनेके
 अपाक्षे वाचका ही है (परिवर्त्त भावः भावः शुभम्युः
 इव) पास्त्रो ध्वे वर्षो विषय तद्व अविद्य द्वय करते
 है ॥ १ ॥ (अ ४१४४)

२ मनूर्मिं वाचित्वं यद्ये इन्द्रं स्तुहि— विष्ट्रे वर
 रिक्षके समान द्वीप नहीं जो वस्त्रान् जीर निवासक है उष
 एवये स्तुति कर । अम्-अमिः— विष्ट्रे लहरितो नहीं
 चे शुभ नहीं होता जो शास्त्र रखता है ।

३ दामुषे महामात्र वर्ये । वर्य द्विः— वौ दायोऽद्विः
 अप्यथ वसा चर देवा है । अर्योः— वर्य = वरु । अर्योः—
 वरुता ।

४ वर्व वशाम् सुविडासं वर्णीनां चक्षुर्ख्य उप
 स्तुहि— वशम वा रथम वशम (१ वै वा १ वै वश)
 ये विष्ट्रवान उषम विहारं और कर्वन्तान्तर्वे रथम प्रस्त्रावीक
 वो है उष्टवी स्तुति कर ।

५ हे वज्रहस्त ! निश्चेतीना परिवर्त्त वर्य— हे
 एवार्थी ! हे आपत्तिनोद्य द्वय वरेषा वपाव वानते हो ।

५ परिवर्त्त भावः भावः शुभम्युः— पास्त्रपर मध्य वप
 वो वैष्या प्रतिविन द्वय करते हैं वेष्य प्रतिविन प्रवन वरेषाके
 वपवर्य द्वय कर रक्षते हैं ।

॥ यहाँ पञ्चम अनुवाक समाप्त ॥

(सूक्त ६७)

(सुम्भव द्वि परीष्ट्रसः द्वय वर्तोति) शीमयाप
 वरेषाका वन मुख वरको प्राप रक्षता है । (सुम्भावः द्वि)
 शीमयाप वरेषाका ही (द्विपः वर्व वर्यति वा) सुम्भ-
 लोच द्वय करता है (वेषानां द्विपः वर्व) रेशोऽहं लभु
 ओचे द्वय करता है । (सुम्भावः वर्तुतः वाङ्मी) शीमयाप
 वरेषाका वाङ्मुखे भैरा न जाता वृक्षा वर्यता वर्यवर (साहमा
 सिष्टासति इव) उष्टों प्रश्नरके वर्णों चोका जाता जाता है । (इवद्वा सुम्भामाप आमुष द्वय इवाति) इव
 शीमयाप वरेषाकेवो वृक्ष वन देवा है (आमुष इवाति)
 पर्वत वन देवा है ॥ १ ॥ (अ ११३१३०)

(अस्मत् अमिः) इमरी लाक्षणे (वा ताति पौर्णा)
 वापके वै पोर्व इव (सत्ता मा वा सु सुवन्) पुरामे व
 ही (वर्तुतुम्भानि मा आरिपुः) और हम्भारे तेव वीर्ये
 व ही । (अस्मत् पुरां तत् जातिपुः) इमरे वापके वीर्ये
 व ही । (यत् वा चित्वं युगं युगे नम्य) वो आप्य
 आवर्यवाक कर्म पुण्यवीर्यं वना देवत रखता है, (अस्मर्ये
 योपात्) वद्वम्भारे वेष्याकी वाक्य बर्ते हैं । हे मर्यो ! (यत्

अुपि होठारं मन्ये दासन्तं वसुं सूरु सहसो भावेदसु विप्रं न भावेदसम् ।
य कुर्वया सम्भुरो देवो देवान्या कृपा ।

मृतम् विभ्राइमतुं यदि शोचिपाश्चानस्य सुपिंः ॥ ३ ॥

यद्योः समिश्राः पूर्णीभिर्भृष्टिभिर्याम लुभ्रासौ अलिपु प्रिया उत ।

आपयो गृहिमैरतस्य सूरवः पोत्रादा सोमे पित्रादा दिवो नरः ॥ ४ ॥

आ वैष्ण देवो त्रुट विप्रं यज्ञे चोशन्होतुनि पंक्तु योनिपु प्रिपु ।

प्रति धीहि प्रसिंत सोम्य मधु पितामीभ्रातवे भागस्त्र दण्ड्युहि ॥ ५ ॥

एष स्य ते तुन्यो नृण्युष्मैनः सह बोद्धः प्रविष्ट वाहोहित ।

तुम्ये सुहो मधुवन्तुम्यासूरुतस्वर्यस्य आद्यणादा सूपत्तिपम् ॥ ६ ॥

यमु एवंमधुषे तमिद दुषे सेदु इन्यो तुविर्यो नाम पर्यते ।

अञ्जुर्पुमिः प्रसिंत सोम्य मधु प्रोत्रासोमी द्रविष्टोदुः पित्रं अतुमिः ॥ ७ ॥ (४१०)

य तु पर अस्मात् विभूति) वो तु तार वस्त्रे है वह इसमें
स्थानित होता (यत् य तु पर) वो इन्यापि है वह इसमें
होता ॥ १ ॥ (अ. १११५८)

(अपि होठारं सम्ये) अपित्रे मै होठा सातता है ।
(दासन्त वसुं सहसा सूरु) वह दास देवेशाका वह
दास देवशु त्रुत वातयेदर्श) दास त्रुप्ये जानने
वस्त्र (वातयेदस विर्ये म) जानी लिखेव प्राप्त हैसा
वह है । (पः द्वार्त्या देवाद्या कृपा स्पस्यतः वदः)
वो देवे वही दासपर्ये त्रुप्य तास वह देवेशाका देव है ।
(या तुदासस्य सूर्यिपा शोचिपा) इतन लिखे वही वही
ऐवहे (त्रुपत्यविभ्राइ मनु यथि) वही देवप्रियतामें
श्राव करता है ॥ २ ॥ (अ. १११५८)

(पहों समिश्राः) वहीमै अथ इए (पूर्णीभिः
स्तुष्टिभिः यामन्) विभ्राइ वहीपैर विभ्रोक्ते साव
प्रियत्वं वापयते (अक्षिपु शुभ्रासः) भामूखोमै यामनै
पामै (दास प्रियाः) वार वार मित्र (मरतस्य सूर्यः)
मातेऽपुवी । है (विदुः मरा) रित्य नेत्राभो । (वर्हिः
यामस्य) भावत्वर्त्तर (पोत्रात् सोम्य मा पिपतः)
पोत्रके वापये सीवत्वको धीमा ॥ ३ ॥ (अ. १११५९)

(देवात् इह या वस्ति) देवोना वहो से आओ । है
(विष्ट) जानी । (विष्ट य) वहात् वस्त्र वह । है

(होठ) होठ । (विषु योनिपु या सियद) तैयो
स्तलोमै बेठ । (प्रसिंत सोम्य मधु प्रति धीहि) देवर
किमे वही वही देवप्रियत्वं स्तीकर कर । (भासीभ्रात पित्र)
वहीप्रेत पात्रवे केम वी और (वह यागस्य त्रुप्युहि)
वहमें भाष्टे त्रुप हो ॥ ५ ॥ (अ. १११५९)

(पपः वह) वह वह (ते तत्वा त्रुप्यवर्यतः) ऐ
स्तरात्ता पौरव वदानेवाय है (सहाः योजः प्रहिति
वाहोः इहतः) वह भार दामन्ये त्वा तेही वाहुद्वेषे त्वा
है । है (मप्रवत्) वदानाव इह ! (त्रुप्य सुता) वह
वोम्यते तरे किमे विचाय है (त्रुम्यं वासुता) त्रुम्ये
किमे वदत्वर रका है । (याम व्रात्यामात्) इह वहमें
पात्रहे (त्वं या दपत् पित्र) वह त्रुपी होपेक वी ॥ ६ ॥
(अ. १११५९)

(प त पूर्वे त्रुप) विष्टवे विष्टे वहिते त्रुकाया वा (त
दरे त्रुप) वही इह उपव मै त्रुलात्य है । (स इत् उ
इप्यः) वही त्रुताने बोध है (वृदिः) वह दाता है (या
या याम पर्यते) वह प्रियद लिखे यापाव वदत्वा है । (अव
सुमिः सोदर्यं मधु प्रसिंते) भामूखोमै वह मधु सोम्य-
रव देवात दिल्ल याम है । है (द्रविष्टोदुः) वहके दाता ।
(कात्युमिः पोत्रात् सोम्य पित्र) लतुमूर्खी वाव वोक्ते
वापये ताम वी ॥ ७ ॥ (अ. १११६०)

[सूक्त ६८]

(अस्मि — १-११ मनुष्यस्त्वाः । देवता — इत्यः ।)

मुरुपकुलमत्तुमे सुदुषाभिष गोदुर्हे	। लहूमसि घविषयि	॥ १ ॥
रथे: नः सवुना गंहि सोमस्य सोमपाः पित्रः । गोदा इत्रेष्वत्रो मद्दः	॥ २ ॥	
अथा त्वे अन्तर्मानां विधास्तु सुमतीनाम् । मा नो अति स्यु आ गंहि	॥ ३ ॥	
परेहि विग्रमस्त्वतुमिन्त्रे पृच्छा विपुष्वितम् । पस्ते सुखिम्यु आ वर्तम्	॥ ४ ॥	
तुव मुवन्तु नो निष्ठो निरुन्यतविदारत । दधाना इन्द्रु इतुवः	॥ ५ ॥	
तुव नः सुमग्नो अरिम्बेषुर्दस्म कृष्टयः । स्पामेदिन्द्रस्य श्रमेणि	॥ ६ ॥	
एमासुमास्त्वे भर यश्चाभिष्व नुमादिनम् । पृत्य मन्त्यस्तस्त्वम्	॥ ७ ॥	
ज्ञस्य पीत्वा शवकरो धनो धुत्राणाममवः । प्राणो वाजेषु वाकिनेप्	॥ ८ ॥	
व त्वा वाजेषु वाकिनें वास्त्वायामः ध्वसकतो । चनानामिन्द्र सुतवे	॥ ९ ॥	
यो राष्ट्रोऽवनिर्भृहान्त्यसुपारः सुन्तुतः सक्षा । वस्त्रा इत्राय गायत्र	॥ १० ॥	
आ त्वेता नि विषुवेन्द्रमुभि प्र गायत्र	॥ ११ ॥	
पूरुत्वमें पुरुषामीष्वानं वायोणाम् । इन्द्रु सोमे सक्षा सुते	॥ १२ ॥ (४११)	

(सूक्त ६८)

१ ऐसो वर्तम २ ५८१-३ ।
 (विष अस्त्वत परा इहि) हानी अपराहितके पाव
गा । (विषविर्त इत्यौ पृच्छ) हानी इत्यते पृच्छ । (त
स्विद्वप वर वा) जो तेष्व विषोमि भय है ॥ ४ ॥
 (अ. ११४४)

(मा निष्ठा वत इत्यस्तु) इत्यारे इत्य तोहि कि
(अप्यतः विद् निः वारत) वासि निष्ठम वाका (इत्यौ
एत् तुष्प इत्यानाम) क्वोऽपि इत्य इत्यमें भूतिष (क्वे
ही ॥ ५ ॥) (अ. ११४५)

हे (एस) इत्यानाम । (कुप्तयः) मत्यम वता (अरिता)
पृतु यी (वत वा सुमग्नो वाजेषु) हैं सोमावस्त्वमें
धैर, तपाति (इत्यस्य शार्मिष्व इत् त्वाय) इत्यत्वते ही
भवत्वमें होते ॥ ६ ॥ (क. ११४६)

(पृच्छिष्य) वाही दोषा वदेष्वात्म (गुमादित्वं)
विषेषो वामेतत् वदेष्वात्म (पत्तयत् ममद्यस्त्वर्त) विषे
वदेष्वात्म भूति विषोमि वानव वदेष्वात्म (है भासुं) इत्य
वदेष्वात्म वामेष (वायोमि भर) तेष्वत्वी इत्यते विषे वर
है ॥ ७ ॥ (क. ११४७)

हे (शतकतो) तेष्वत्वी इत्य वदेष्वात्म इत्य । (अस्य
पीत्वा) इत्य शोमवा पीत्व (वृत्रायां धनः अमयः)
तेष्वत्वी त् वामेवात्मा द्वाष्वादे वर (वाजेषु वाकिने प्राया)
संप्राप्तेष्व वोक्तव्य रक्षा वर ॥ ८ ॥ (क. ११४८)

हे (शतकतो) तेष्वत्वी इत्य वदेष्वात्म इत्य । (त त्वा
वाजेषु वाकिनें वादवायामः) वष्टु तुष्वत्वी संप्राप्तेष्व वदमान
वदते हैं । हे इत्य । (धनानां सातवे) भवोऽपि वात्मके
विषे वर इत्य वर्तते हैं ॥ ९ ॥ (क. ११४९)

(यः याया महात् अवधिः) जो वदेष्वात्म वाया इत्य है
(सुन्यतः स्फुपारः सक्षा) वैष्वामीष्व तु वदेष्व वर वदेष्व
वाम विष है (तस्मै इत्राय गायत्र) इत्य इत्यते विषे
वदेष्वात्म वाम वर्त ॥ १ ॥ ४ ॥ (क. ११५०)

हे (सोमवाहसः सक्षायाम) न्तोऽपि वदेष्वात्म विषा ।
(मा तु पत् वामो (विष वाहत) वैष्टि (इत्य अविषि
प्र गायत्र) इत्यव वामवत् ॥ १ ॥ ५ ॥ (क. ११५१)

(पृष्ठार्था तुष्वत्वमें वामी (वायोणी इत्याम)
सीष्वात्म वदेष्व वाम वस्तु वोक्तव्य वामी (इत्यते) इत्यते विष
(सोमे सक्षा वर्त) वोक्तव्य वेष्टा दीनपर वामेवरदा ॥ ११०

[सूक्ष ६९]

(जागि) — १-१२ समुच्छवाः । इवता — इष्टः ।)

स चो नो योगु आ सुवस्तु राये स पुरन्याम् । गमद्वयेभिरा स नः ॥ १ ॥
वस्य सुख न वृश्वते हरी सुमसु छत्रवः । वस्मा इन्द्राय गायत ॥ २ ॥
सुवपाते सुता द्वये शुचये यन्ति वीतये । सोमासो दध्याष्ठिर ॥ ३ ॥
त्व सुवस्य पीतये सुयो द्वद्वा अवायथाः । इन्द्र वैष्टपाय सुकरो ॥ ४ ॥
मा त्वा विश्वन्त्वाप्रवृः सोमास इन्द्र गिर्वणः । ए ते सन्तु प्रवैतते ॥ ५ ॥
त्वा सोमा अवीपृष्ठन्त्वाप्रवृ धृतकरो । त्वा वर्वन्तु नो गिरः ॥ ६ ॥
अविवोतिः सनेत्रिम वायुमिन्द्रः सहस्रिष्ठम् । यस्मिन्विश्वानि पौस्ता ॥ ७ ॥
मा नो मतो अभि द्वृहन्त्वापिन्द्र गिर्वणः । ईशानो यदया दृष्टम् ॥ ८ ॥
प्रुजन्ति प्राप्तमर्थं चरन्तु परि तुश्युपः । रोचन्ते रोचना त्रिवि ॥ ९ ॥
यज्ञान्तर्यस्य काय्या हरी विप्रवस्त्राये । षोणी चृष्टू नवाहसा ॥ १० ॥
केतु रूपमनेत्रे पेष्ठो मर्या अपेष्टसे । समुपद्विरजायथाः ॥ ११ ॥
आदर्द सुचामनु पुनर्गर्मेत्वमेत्ति । दधोना नामे युक्तियम् ॥ १२ ॥ (४४)

(सूक्ष ११)

(सा च मा योगे भा सुयत) एह इतो वयामये वाय हो (सा राये) एह चक्रे तता (स पुरन्याम) एह वी मात्राकालोंमि एहरि वाय हो (सा वायेभिः ना मा गमत्) एह विविवेति वाय इमार वाय मा वाये ॥ १ ॥
 (च ११५१)

(शत्रवः) एतु (समर्तु) दुर्वामे (प्रस्त्र संख्ये हरी म वृश्वत) विष्ट योते चेतोना नहीं रोड लक्ष्ये (तस्मै इद्वाय गायत) एव इमके वीत वाये ॥ २ ॥
 (च ११५२)

(इत्ये वायाविद्वा शुचयः सोमास सुता) ये वही विलम्बे द्वय वायेते द्वृप्र संभाव (द्वयपाता धीतये विति) तीव्र विवेति इन्द्रके भावक लिपे योते हो ॥ ३ ॥
 (च ११५३)

४ (शुचतो इष्ट) वायम पम वर्तमाने इष्ट ! (विष्टप्राय) वेष्ट इमके लिप भार (द्वयपाता पीतये) तीव्र विवेति लिपि (सद्य द्वय समाप्तया) वायम वाय हो वया हो वया हो ॥ ४ ॥
 (च ११५४)

हे (गिर्वणः इष्ट) स्तुतिके वोय इष्ट ! (व्याहारा सोमासः त्वा विश्वाम्) द्वये सोम लेते अवाय प्रवेषदै । (ते प्रवेषदै थो सत्यु) द्वय प्राप्तमानके लिपे वे वयाम वर्तमाने हो ॥ ५ ॥
 (च ११५५)

, (सोमासः त्वा अवीपृष्ठम्) स्तोत्रोनि द्वये वयाम हो (शतकरो) वैष्टवो चृष्टू अप्तवेष्ट इष्ट (तुक्या त्वा) चक्रामे भेत वयाम किमा हो । (ना गिरः त्वा वर्षम्) इमारी स्तुतिको द्वये वयामे ॥ ६ ॥
 (च ११५६)

(पस्मिन् विश्वामि पौस्ता) विलम्बे लो वील हो (इम सद्विवियो याहं) एह वह द्वयो वर्तमानम् सोमर्प (विश्वतोतिः इष्टः सत्येत्) विष्टप्र इम वहो चम नहीं रोटा वह सम सीतार को ॥ ७ ॥ (च ११५७)

हे (गिर्वणः) वस्तुतोम्ब इष्ट ! (मताः सा वृष्टम्) मा विष्टदृह्म वायर इमो वायेत्वं वैष्ट वैष्ट वर्ते । द (इष्टाम) वैष्ट हो (वैष्ट वायप) वय इमारे एह इष्ट हो ॥ ८ ॥
 (च ११५८)

९ ११ देवो वर्ते २ १२६१४-६ ।
 १२ दमो वर्ता २ १४ ११ ।

[सूक्त ७०]

(ज्ञापि : — १-१० मधुसुखम् । वेयता — रुद्रः ।)

ਪੀਛ ਚਿਦਾਰੁ <u>ਸ਼ਬਦ</u> ਮਿਗੁਹਾ ਚਿਦਿਨ੍ਤੁ ਬਹਿਮਿ:	। ਅਵਿਨਦ ਤੁਸ਼ਿਆ ਜਤੁ	॥ ੧ ॥
ਦੇਵਪਨਤੇ ਯਥਾ ਸੁਤਿਮਚਾ ਪਿਵਦੰਸੁ ਗਿਰੇ:	। ਮੁਹਾਮੰਨਪਰ ਭੂਰਮੁ	॥ ੨ ॥
ਇਨ੍ਦ੍ਰੇਣੁ ਸ ਹਿ ਰਖੈਸੇ ਸਖਗਮਾਨੋ ਅਖਿਮੁਧਾ	। ਮੁਨ੍ਦੁ ਸੰਮਾਨਬਰੰਤੇਸਾ	॥ ੩ ॥
ਅਨ਷ਟੈਰੁਮਿਧੁਮਿਰੁਸ਼ੇ: ਸਹੈਸਵਦਰੰਤਿ	। ਗੁਜੇਰਿਨ੍ਦ੍ਰੇਸੁ ਕਾਮੈ:	॥ ੪ ॥
ਕਰੁ: ਪਰਿਜਮੁਭਾ ਗੱਹਿ ਕਿਉਥੋ ਆ ਰੋਚਨਾਦਵਿ	। ਸਮੰਸਿਆਜੁਤੇ ਗਿਰੇ:	॥ ੫ ॥
ਤੁਲਾ ਵੀ ਸਾਤਿਮੀਮੇਹੇ ਕਿਉਥੋ ਆ ਪਾਰੰਵਾਹਵਿ	। ਇਨ੍ਦ੍ਰੇ ਸੁਹੋ ਕਾ ਰਖੈਸ਼ੇ:	॥ ੬ ॥
ਇਨ੍ਦ੍ਰੁਮਿਝਾਧਿਨੋ ਪੁਹਦਿਨ੍ਤ੍ਰਮੰਕਮਿਰੁਕਿਣੇ:	। ਇਨ੍ਦ੍ਰੇ ਵਾਣੀਰਿਨ੍ਦ੍ਰਪਰ	॥ ੭ ॥
ਇਨ੍ਦ੍ਰੁ ਇਦਹੋਃ ਸਚਾ ਸਮਿਸੁ ਆ ਕੈਚੋਧੁਆ	। ਇਨ੍ਦ੍ਰੇ ਤੁਝੀ ਹਿੰਦੁਧੰਧੇ:	॥ ੮ ॥
ਇਨ੍ਦ੍ਰੋ ਦੁਰੀਧੁ ਪਵੰਸੁ ਆ ਥੱਧੈ ਰੋਹਧਰਿਵਿ	। ਗਿ ਗੋਸਿਰਾਦ੍ਰੇਮੈਰਧਰੁ	॥ ੯ ॥
ਇਨ੍ਦ੍ਰੁ ਵਾਚੇਪੁ ਨੋਡਵ ਸੁਹਜੈਪਥਨੇਪੁ ਚ	। ਤੁਗੁ ਤੁਸ਼ਾਮਿਝੁਤਿਮਿ:	॥ ੧੦ ॥
ਇਨ੍ਦ੍ਰੇ ਵਧ ਸੰਹਾਧੁਨ ਇਨ੍ਦ੍ਰੁਸਮੇਂ ਇਵਾਮੇਹੇ	। ਯੁਖੇ ਪੁਤੇਪੁ ਬੁਤਿਣੀਮੁ	॥ ੧੧ ॥
ਸ ਨੋ ਹੁਪਸੁਮ ਚੁਲ ਸਤਾਦਾਖੁਸਤਾ ਬੁਧਿ	। ਅੁਸਮਧੁਮਸੰਤਿਪ੍ਰਕਰਤਃ	॥ ੧੨ ॥
ਉਝੇਤੁਝੇ ਚ ਦਰਖੇ ਸ਼ੋਸਾ ਇਨ੍ਦ੍ਰੁਸ੍ਯ ਥਖਿਣੇ:	। ਨ ਥਿੰਥੇ ਅਸਥੁ ਸ਼ੁਣਤਿਸੁ	॥ ੧੩ ॥

(सुक्त ४०)

(पृष्ठ ३०) (वीरुद्ध वित्त भारतस्थानुभिः वहिमि।) प्राचोदी भी
लोकेश्वरो और बड़ा ले बड़नवासे मस्तके पाव रहनेवाले
ए ! (विषया शुहा भनु अविष्ट्) पीजोचे प्राचं
ऐ शाव निवा ॥ ॥ (पृष्ठ २१५)

(देवयम्ता : गिरा) इतनाची मर्हि करवेलानोची वाचि
 यांने (विद्युत्सु महा प्रूप) वष व्रत घटेलांने वडे
 याची शब्दी (पथा मर्हि घट्सु घनुपत) वाचामति
 घुसि वडे । १४ (ज १११५)

३१ एवा अर्थ २। ४। १- । (पं. ११६३-८)
 ऐ (परिक्षम) पूर्णेवो । (अतः आ गहि) पाहो
 आ (ऐच्छात् द्विवा वा अधि) अवशा तेवकी पुरुषेवो
 क्य (प्रसिद्ध गिरा संस्कृते) वाऽ इमारी स्थितिः
 एवम् गीत्येव वा अन्ते ॥ ५- ॥ (पं. ११६४)

(२१६१) एवं उक्ति पर ही है ४५७ (क्र. २१६१) (इन पारिवाकात् अधि) वहा पुरियांते लगवा (दिवा-
ण) पुरेहो लगवा (महा दस्ता वा) वहे अग्नाताक्षे
(एक सामैं हंसहे) इनसे जब पोर्गत है ४५८ (क्र. २१६२)

४५ देशी अर्थात् १३८८-१। (अ ११७९-१)

(हे वाह हात्र) अमार इम। (उमामि कृतिमि) शीराके पाटकोसे (साधाप्रभेषु वाहेषु न वाह) पाट्सो प्रकारे कल बिस्मे बिलो है उन सौंदर्ये अमारी रात्रा

(इर्द्ध वर्य महाप्रसे) इमधे इम वो प्रपातमदे
 (इर्द्ध ममै इच्छामहे) इमधे छडे बुद्धमे सी प्रवाचनार्थ
 पुकारे हैं (पुकेपु पुके लिपिणी) इत्योधे प्रसीदे मार्गेनाले
 हारे मित्र इर्द्धे इम बुकारे हैं ॥११५॥ (प्र ११५)

(ੴ ਸਤਿਗੁਰ) ਇਸ ਰੀਤ ਵਿੱਚ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਦੀ ਮੁਕਾਬਲਾ ਹੈ ਕਿ ਜਾਨ ਕਰਨਾ ਅਤੇ ਜਾਣਾ ਕਰਨਾ। (ਪੰਜਾਬੀ)
 ਹੈ (ਸ : ਸਾਡਾ ਕਾਨੂੰ ਕੁਧਰਾ) ਇਸ ਰੀਤ ਵਿੱਚ ਹਾਥ ਦੇ ਬੇਵਾਸ਼ ਵਾਸ਼ਾਲ ਬਾਲ ਹੈ। (ਸ) ਵਹ ਤ (ਅਭਿਆਸੀ) ਇਸ ਰੀਤ ਵਿੱਚ (ਅਭੁਵੰਤ ਮਧਾ ਕੁਧਰਾ) ਇਹ ਯੋਗੀ ਕਾਨ ਦੇ (ਅਭਵਤਿ ਕੁਹਤਾ) ਤੇਪ ਪ੍ਰਤਿਕਾਰ ਕਰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਵਹੀ ਹੈ ਪੰਜਾਬ। (ਪੰਜਾਬੀ)

(का. १०७६) (विषय इन्द्रस्य) वज्राती इन्द्री (तुमें तुम्हें ये उत्तर लोगोंमा) रसें तुम्हें लोंगे रहोगे बनाने (अस्य सुपुत्रि न रिख्ये) इके लोग रुदित्य में जान नहीं करता ॥ १३ ॥ (का. १०७७)

दृष्टि भूयेव वसंगः कृषीरियुर्योद्युषा	। इष्टाना अप्रतिष्कृतः ॥ १४ ॥
य एकवर्षणीनो वसूनामिरुन्पति	। इन्द्रः पर्व खितीनाम् ॥ १५ ॥
इन्द्र यो विश्वतुस्पति इवामहे वनेभ्यः	। अमाकमस्तु केवलः ॥ १६ ॥
एन्त्र सानुर्सि गुर्यि सुविस्ताने सदुवासद्म्	। वर्षिष्ठमृतवै मर ॥ १७ ॥
नि येन सुषिद्विष्यया नि ब्रुत्रा उषधामहे	। स्वोदासो न्यर्वेता ॥ १८ ॥
इन्द्र त्वोर्वासु या वृष वर्ज्ञ पुना ददीमहि	। वर्षेम् स पुषि स्पृष्टः ॥ १९ ॥
वृषं व्यर्वेभिरस्तुभिरिन्द्रु स्वया ब्रुम्	। सुसुशाम् पृथन्पृष्ठः ॥ २० ॥ (४१)

(पृष्ठा वसंग वृषा इव) वैषा विकान वैष वीजोंके
मुख्ये होता है वैषा यो (योवसा हर्षीः इपर्ति) लाम
र्घंसे वृष व्यर्वोपर रहता है वृष (अप्रतिष्कृतः इष्टानः)।
प्रतिष्ठाविकान तदी होता वैष यह इष्टव इव है ॥ १४ ॥
(कृ. ११४१)

(या इवा) यो अवेषा इव (पश्च वितीमानो) पात्रो
प्रस्त्रके मानोंका (वर्षेभीवा वसूना इरुन्पति) वृष
मात्रामें व्यर्वोपर स्वामित्व इत्या है ॥ १५ ॥ (कृ. ११४१)

१५ देखो अर्थं २ ११४१ । (कृ. ११४१)

हे इन् ! (सावसि) लाम देवेषावे (सवित्त्वात्
सदासद्व इपि) विषी एवुदो परामृत वर्तेषावे (वर्षिष्ठु)
भेद वस्ता (इत्येवा या मर) इष्टाही द्विषाके विषे वाहर
मर ॥ १६ ॥ (कृ. ११४१)

(येन सुषिद्विष्यया) विषके सुषिद्विषे (ब्रुत्रा नि
रुप्यामहे) व्यर्वोपर इव ऐते हैं (इवा लक्षातः
वर्षेभानि) द्वाष्टे लक्षाता रिषे वेषेषे इव व्यर्वुषे ऐते
हैं ॥ ७ ॥ (कृ. ११४१)

हे इन् ! (ल्लोकातः वर्षे) लेषा हारा द्विषिद्विषु इव
(पना वस्ता या ददीमहि) मारक वृष वर्षाते हैं और
वर्षे (पुषि स्पृष्टा सं जयेम) पुष्टे व्यर्वोपर
वीरेषे ॥ ८ ॥ (कृ. ११४१)

हे इन् ! (वर्षे वस्तुमि व्यर्वेमि) इव वृष कैवल्ये
वासे वृषेव वास वर्षा (व्यया ब्रुत्रा वर्षे) वर्षे वास इव
इवर (पृथन्पति सासदाम) वैषावे वास वर्षाद्व वर्णेषावे
व्यर्वोपर वृषत वर्षे ॥ ९ ॥ (कृ. ११४१)

इव वृषके द्वाष्टे वृष वर्षात विष है—

१ देवयन्ता गिरा विद्वद्वु मटा भूते यथामति
भृष्ट भृत्युपत—वैषावी विषी इवा वर्णेषावी इवावी
विषियो वर्षी मौर वृष विष ही वीर इष्टवी वर्षावी करते हैं।

२ हे उप इव ! उपामि ऊतिमि। सदावप्रथ
नेतु वाक्येषु न भय—हे वीर इव ! वीरद्वे उपवप्त
वाक्योष वाक्यो प्रथरके वृष वृष मिष्टे हैं वृष वृषमें
इष्टानी रहा वृष। सदावप्रथमे वास—वृषमें इष्टानी
प्रथरके वृष मिष्टे हैं ये वृष वृषमें वाक्येषे मिष्टे हैं। वृष
मिष्टे वृषमें वास वृष यो ही वीर महावर भी है।

३ वर्षे वृषेषु युत विषिल इर्व भद्राप्ते वर्षे व
इष्टामिहे—इव वृषुक व्यर्व वृष वेषेषावे इष्टो वृष
वीर वृषे वृषमें लावतावे जिष्टे तुषते हैं।

४ सत्रावावन वृषपृष् । अप्रतिष्कृतः भस्मम्यं व्यु
वर्द्व वास वृषिय—हे इवा वास देवेषावे वाक्याव वीर । वृ
प्रतिष्ठाव वीर वृष वृषरे जिष्टे वृष योष वृष वर वृषो ।
विषेषे इव उपवप्त प्राप वृषके उपवप्त उपमाय वृषो ।

५ वृषा वसंगः पृषा इव अप्रतिष्कृतः इष्टानः
योवसा हर्षीः इपर्ति—सम्बान वैष वैषा वीजोंके
हृष्टमें जाता है उच्च वृष विषका प्रतिष्ठाव वृषी विषा वा
लक्षा वैषा इवर वृष इव इव वृषी विषी वृषुके विषियोंका
परामृत वर्षा है।

६ या इवा पश्च वितीमान वर्षेभीमान वसूना इव
व्यर्ति—यो अवेषम वीर इव यो मानवोदि वैषावा
स्वामित्व इत्या है । सद्वे वर्णेषाव इष्टी वैषेषावा विषियर है।

७ हे इव ! सावसि सवित्त्वात् सदासद्व वर्षेव
वर्षिय वर्षये या वृष—हे इव ! अप्रवाव विषी वृषु
वर्णाव वर्णेषावे विषियों वर्षये इष्टानी वृषहोके जिष्टे
वृष वर वृष । वृष देषा है कि यो विषव वैषावा पृथन्प
वासाव वर्णेषावा वीर वृष ही वीर वृष इष्टानी रहा वर्षे
वासा है ।

८ यम सुषिद्विष्यया वृषामि र्यथामदे इवा
लक्षातः वर्षेभानि—विषेषे इव सुषिद्विषये वृषुके मारवे

[सूक्त ७१]

(ज्ञानिः — १-१६ मधुच्छम्दः । वेष्टा — इत्यः ।)

मुहौ इन्द्रः पुरश्च तु मंडित्वमेस्तु विग्रिणे
 सुमाहे वा य आश्वेत् नरस्तोकस्तु सनिनी
 यः कुषिः सोमपारंभः समुद्र ईशु पिन्वते
 एवा ईस्तु सूनूर्ता विरुद्धी गोमर्ती मही
 एवा हि ते विशृतय ऊस्तु इन्द्र मार्वते
 पुषा ईस्तु काम्प्या स्तोमे उक्षय च ऋस्ता
 इन्द्रेहि मरस्त्यन्वसु विवेभिः सोमपर्वभिः
 एवैन सूबता सुते मन्दिभिन्द्राय मन्दिने
 मत्स्वा सुविप्र मन्दिभि स्तोमेभिविश्वर्षणे
 असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रतिस्थासुदृहासत

। दीने प्रथिना लक्ष्मीः ॥ १ ॥
 । विप्रासो वा विष्णायाः ॥ २ ॥
 । उर्वीरापो न काङ्क्षदः ॥ ३ ॥
 । पुका शारुणा न दाश्वये ॥ ४ ॥
 । सुष्ठित्वसन्ति द्राश्वये ॥ ५ ॥
 । इन्द्रायु सोमेपीतये ॥ ६ ॥
 । मुहौ विमिटिरोद्वसा ॥ ७ ॥
 । चक्रिं विरानि चक्रये ॥ ८ ॥
 । सचेषु सवनेष्वा ॥ ९ ॥
 । अजोपा वृपुमं परिम् ॥ १० ॥

१६ और उपरे वेष्टा दिये जानेहि इम चतुर्थे एव करते हैं । ऐसी विधि इमार पाय हो ।

१७ हे इत्य ! वेष्टासः वर्ण वेष्टा वज्र भा वदीमहि पुषि हृष्टा । च अयेम — हे इत्य । ते वारा विश्विष्ट हृष्ट इव मरक वज्र पक्षते हैं और उपरे उद्धवे चतुर्थे चतुर्थे भीलते हैं ।

१८ हे इत्य ! वस्तुभिः शूरेभिः वर्ण लक्ष्मा सुजा पृष्ठपतः सासाधाम — हे इत्य । अज्ञ चेत्तेवते वीरोद्ध पाप इत्य इम भीरु वज्रये चतुर्थे पापमृत भरते ।

(सूक्त ७१)

(इत्यः महाम परः च तु) इत्य महात है और भेद भी है । (विधिये महिस्यं वस्तु) वस्तायां इत्यके लिये वात शाप हो (चौं म लक्ष्मा प्रथिना) पुकोदके लक्ष्मा वर्ण वर्ण लक्ष्मी है ॥ १८ ॥ (क. ११४९)

(च समेहे भाद्रत) जो उद्धर्मे जये रहते हैं (लोकस्य सनिनी वा ये मरत) वस्तापुत्रोदी बीत्तमें चौं लक्ष्मी वर्ण (विश्वायाः विश्वासः या) वा विक्षे वर्ण लक्ष्मी भरत है (वेष्टये रक्षति रहते हैं) ॥ १९ ॥ (क. ११४९)

(या सामरात्म द्रुषिः) जो विष्ट वीम लीवे वर्ण रहते हैं (चमुद्र ईशु पिन्वते) चमुद्रे उमान वा

पूष्या है (काङ्क्षदः लक्ष्मीः व्यापः त) विष्टमेंसे वहे वक्षपत्र वेष्टे भाते हैं ॥ २० ॥ (क. ११४९)

२१-२२ वेष्ट च ॥ २१-२२ ॥

हे इत्य (या द्रुषिः) वाजो (वस्तुभिः विष्टेभिः सोमपर्वभिः) और शोके भासेहे (मरिस) आनंदित हो । ए (भोजसा महाम भमिदिः) भरती विलेहे वहे चतुर्थे वज्राभाला है ॥ २३ ॥ (क. ११५१)

(चुते) एव निकलते पर (मरिसे इत्याय) भान विद्व देवेशाते (विश्वायि वक्षते) एव कांक्षय कलेशाते इत्यके लिये (एव मन्दिं चक्रिं है या सूक्ष्म) इत्य वासेदत्यात ताप उच्चारवृक्ष रसो दे दो ॥ २४ ॥ (क. ११५१)

हे (चुषिष्ट विश्वायर्णो) उत्तम इत्यके और वह मनुष्योंसे भासित इत्य । (वेषु सत्त्वेषु या सत्त्व) इत्य व्योम वाकर संविभित हो । और (मन्दिभिः स्तोमेभिः मरस्त्व) हृष्ट देवेशाने स्तोमेंसे भासित हो ॥ २५ ॥ (क. ११५१)

हे इत्य । (ते गिर वस्त्रम) ते लिये रक्षत रहते हैं । (त्या प्रति उद्धर्यसत) ते वारा व भान है (भोजसा चूपमं पति) वेदा अपूर वर्णो वक्षत् व भीतो व व वारा है ॥ २६ ॥ (क. ११५२)

स चोदय विष्वमुर्द्धांश्च इन्द्र वरेष्यम्
असान्त्सु तत्र चोद्येन्द्रं गुणे रमेस्वतः
स गोमदिन्द्र वार्वदुर्मे पूषु भवो शूद्र
बुस्मे भेदि भवो शूद्रयुजे संहस्रसात्मम्
वस्त्रोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृष्णन्त अग्नियम्
सुरेसुरेऽप्युक्ते पूढृष्टत एदुरिः

। असुदिते विष्व प्रसु ॥ ११ ॥
। दुर्विष्व यज्ञस्वतः ॥ १२ ॥
। विष्वायुष्येष्विष्वम् ॥ १३ ॥
। इन्द्र ता रुचिनीरिप्तिः ॥ १४ ॥
। होम् पन्तोरमूरवे ॥ १५ ॥
। इन्द्राय पूषपर्वति ॥ १६ ॥ (२०)

॥ इति वष्टोऽनुवाकः ॥ १ ॥

१७ इति । (विष्व वरेष्यं राघः) विष्वम् भेद वन
एसोरे (मवाहू सं चोदय) पाप भवति हो । (ते विष्व
प्रसु असान्त्सु इत्) भेदे पाप वह पर्वत ओर सात्मवाम
है ॥ ११ ॥ (क. १११६)

१८ (तुविष्वम् इन्द्र) वहे तेवसी ॥ १८ ॥ (रमेस्वता
यशावातः असान्त्सु) प्रवल्लीक और वत्तकी इमओ (तब
राये सु चोदय) वहा वह वास करते किंते भेदित
है ॥ १९ ॥ (क. १११७)

१९ इति । (असो शूद्र पूषु भवति) इसे वहा विष्वय
वहते हों (गोमद् पाववत्) जो भवि पूढ़ते वहा
वहते पूर्ण है । (विष्वायुः असिति चेदि) जो क्षुर्द
भाषुक रामेवाका और सात्म न होनेवाका हो ॥ २० ॥
(क. १११८)

२० इति । (संहस्रसात्मम् उद्ग्रं शूद्र भवति) इसो
सात्म रामेवाका तेवसी वहा वह वहा (रथिनीः ताः इत्)
वर्वाके वाच रामेवाके वे वह (सस्म चेदि) इसे है ॥ २१ ॥
(क. १११९)

(वसा पसुपति) वहके जामी (अग्नियम्) क्षुटि
वीर्य (ऊतय ग्रहतां इत्यै) राम रामेवाके किंते वामेवाके
इन्द्रो (गीर्भिः शूद्रात् होम) सुरि करते हुए इस
दुर्वते है ॥ २२ ॥ (क. ११२०)

(मुने उते) प्रवल्ल वामेवाके (पूढ़ते भोक्त्वे
इत्याप्त) वहे परतमे इमके किंते (शूद्र शूद्रं) वहा
चोप (भविति वहा भवति इत्) मण वाका है ॥ २३ ॥
(क. ११२१)

इस उक्तमें इमके वे गुण वर्णन किंते हैं—

१ इन्द्रः महाम् परा वह— इत वह भेद है।

२ विष्विष्वे महिषय भस्तु— वज्रवाती इन्द्रम् महत
प्रकट हो ।

३ वौः स वाचः प्रथिना— तुवेषके वहाव वह
वह भैरव है ।

४ वोक्तवा महाम् अग्नियमि— ये वरते वहसे वहुमे
वहावा है ।

५ विष्वाति वाक्ये वाहित्वा अमहात— वह
पुष्पार्व रामेवाके किंते सुषुप्ति वह वहावे ।

६ सुषुप्तम् विष्ववर्वते— वहम् इन्द्रवाका वह वह
वाप्त वामेवाका ओर मानवोंका दित रामेवाका वाही
हम है ।

७ शूद्रम् पतिः वलवाक् स्वामी ।

८ ते विष्व प्रसु विष्वं वरेष्यं राघः असान्त्सु
मवाहू सं चोदय— भेदे पाप व्याप्त वस्तु विष्वम्
भेद वह है पह इमरे पाप भेदो ।

९ वस्मे गामत् वामेवाक् शूद्रत् प्रसु भवति विष्वायुः
अग्नियमि चेदि— इसे वीर्यवाका वामवाक वहा भेद वीर्य
वं वं भाषुक रामेवाका वाच वह वह वह भेद हो ।

१० संहस्रसात्मम् वाच शूद्र भवति रथिनी इता
वस्मे चेदि— इसो आर्मेवाका वहा वलवाकी एवा
एवे वाच रामेवाका वह हैं है ।

११ यहाँ पछ अनुवाक उमात ॥

[सूक्त ७२]

(जापि: — १ १ परम्परेषः । देवता — इन्द्रः ।)

विश्वेषु हि स्ता सर्वनिषु तुज्ञते समानमेकु बृंहमण्डवः पृथुक्स्वर्णः सनिष्पवः पृथक् ।
वं स्ता नाषु न पूर्णमि पूषस्य चुरि चीमहि ।
रुद्रे न यज्ञेष्वितयन्त आयव स्तोमेमिरिन्द्रमायवः ॥ १ ॥
वि स्ता वत्से मिष्युना अवस्थवो ब्रह्मस्य साता गठयेत्य निःसृजा सधैन्त इन्द्र निःसूर्यः ।
यद्रूपन्ता दा बना स्वर्णेन्ता सुमूर्दसि ।
आविष्टकरिकृदृपैर्ण सच्चापुष वज्रमिन्द्र सच्चामुर्दम् ॥ २ ॥
उतो ना अस्या उपसो चुवेत द्युर्क्षस्य घोषितुषिषो इवीमभिः स्वर्णसु इवीमभिः ।
यदिन्द्र इन्तवे मूर्दो वृषो वज्रिं चिकेतसि ।
शा मै अस्य देवसो नवीपिसो माम भूषि नवीपसः ॥ ३ ॥ (४८०)

[सूक्त ७३]

(जापि: — १-३ चतुर्थः ४-५ पञ्चमः । देवता — इन्द्रः ।)

हुम्पिमा सर्वना धूर दिशा तुम्पु म्राणाणि वर्णेना रुणोमि । त्व नृमिर्हिषो विश्वासांसि ॥ १ ॥

(पृष्ठ ७३)

(विश्वेषु सर्वनिषु) एव दोम वडोम (स्ता समार्थ पर्ण) एव एसो ही (पूर्णशु पूर्णशु) वज्रम वज्रम (दूष पम्पवः) वज्रुक्त वसावाले (स्त सलिष्पवः) वाले प्राप वरेवाले लाप (तुज्ञते) प्रणवित चर्ते हैं । (त स्ता) एव तुज्ञते ही (पर्णमि नार्व इष) पार के वालेवाले वेदाके वामान मावहर (शूपस्य शुरुं चीमहि) वज्र केव चर्ते ही अवे घासे छिन्ने चर्ते हैं । (आयवः यज्ञः चित्यत्वा) मनुष्य वडोमे रेता ऐते द्युर (इन्द्रः न) इन्द्रवी ही चेतो स्तुते चर्ते हैं । (आयवः स्तोमेभिः इन्द्रः चित्यत्वा) मनुष्य वैत्रेषे इन्द्रवी ही चेतो चर्ते हैं ॥ १ ॥ (अ. १११११३)

(अवस्थवः इमेषामा) संरक्षणची इष्वा वरेवाले पर्ति वर्णो लोहे वज्र (स्ता वितवदेषो) दोमे खुलिते लोहवित चर्ते हैं । (अप्पस्य वज्रस्य साता) गीव के वालो चाहते वज्र हैं । वज्र (निः सृज सप्तसो) चंद्र रेते वज्र (निः एव) दोमे चंद्र रेते हैं । (पृथ गम्यता स्वयम्भाषा या वसा) वज्र गीवे वामवाले जागी प्राप वरेवाले दो वैत्रेषे (समूर्दसि) दहस्ता वरता है । वज्र (तुर्वर्ण सवा)

सुरं वज्र) वक्षाभी शाव रद्वेषाके वज्रये (सप्तामुद) शाव इतेवाके वज्रये दृ (जापिः चरिष्पतु) प्रदत वरता है ॥ २ ॥ (अ. १११११४)

(अवाः इषमा) एव उवाच (उत उ नः सूरेत) एव हमे त्रेव चो, (इवीमभिः इविषः मर्दस्य वौषिः) इमोर तुलावोके शाव इवि और स्तोवो दृ इवीकर। (इवीमभिः इषपत्ता) तुलावोके शाव लांडी प्रापिते छिन्ने दृ दोप्रापो स्तीकारे । हे (विश्वा इन्द्रः) वज्रवारी इव । (यदु तुषा सूर्य इतत्वे चिकेतसि) वज्र वज्रे यदु भोजो मालेवो छिन्ने दृ इतिकाः है वहा (मे भरव वर्णी यसा वेदसः मध्यम भूषिः) मेरे इव तीनी चापिके लोकव दृ उव (सबीयस्यः) वज्रये दृ तुल ॥ ३ ॥ (अ. १११११५)

(पृष्ठ ७४)

दे धर इव ! (इमा सर्ववा) वे वज्र (तुर्वर्ण इव) लोहे छिन्ने ही हैं । (विश्वा व्रद्धाभिः) वज्र शाव (तुर्वर्ण वर्णेता हृष्णोमि) तुषावी महामा वहामेहे छिन्ने वरता है । (त्व विभवापा मुषिः इव्यः अभिः) एव वज्रवारावे माम वोहे इतां तुलावे योग्य है ॥ ४ ॥ (अ. १११११७)

न् चिन्मु ते मायमानस्य बुस्मोदभुवन्ति महिमानेष्ट्र । न वीर्यमिन्द्र ते न राखः ॥ २ ॥
 प्र वों मुहे महिवुधे मरम्बु प्रथेतसे प्र सुमुर्ति हृषुप्तम् । विश्वः पूर्वः प्र चरा चर्पणिप्राः ॥ ३ ॥
 युद्धा वज्र हिरण्यमिदया रथं हरी यमस्य वर्णुतो वि सुरिमिः ।
 या तिष्ठुति मुख्या सनभुवु इन्द्रो वार्षस्त्र द्वीर्जभृत्सुस्त्रतिः ॥ ४ ॥
 सो चिन्मु वृष्टिर्यूप्याऽु स्वा सच्चौ इन्द्रः स्मभृणि हरितुभि पुष्पुते ।
 अर्थ वेति सुष्ठवे मुत मधुदिद्वनोति वातो यथा वनेषु ॥ ५ ॥
 यो वाचा विवाचो मृद्धवाचः पुरु सुहस्ताक्षिवा लुपाने ।
 उत्तुदिदस्य पौस्ये गृणीमसि पित्तेव यस्तरिपी वाकुधे वर्वः ॥ ६ ॥ (४८)

१६ (इस उपर इन्द्र) इर्वनीव उप इन्द्र । (ते मम्य मामस्य) ऐरी इष्टुति होतेव (तु वित्तु) नियतसे (महिमान इन्द्र अस्तुतुभित) क्षेत्र महिमाको दोहै भास नहीं होते (न वीर्ये) ते परममये भीर (न ते रापः) न लेते भवतानये दोहै उत्तरे पुष्पते है ॥ १ ॥ (क. १२२८)

(वा महे महिवुधे प्र मरम्बव) आपके वज्र वज्रे महात्मे स्त्रेत्र वर्णेत्रात्मे विदे भाव वान देवे दो (प्रथेतसे सुमुर्ति प्र हृषुप्तम्) विदेव बुद्धिवाद इन्द्रके विदे स्त्रेत्र वाहाते । (व्याप्तिप्राः) वावेत्रात्मे वर्णेत्रात्म इन्द्र (पूर्वः पित्ता प्र चर) पित्तिः प्रवानोहै पाप उमर्य रथके विदे भावा है ॥ २ ॥ (क. १२११)

(यदा हिरण्य चर्पं इत्) वज्र सीतेके वर्णके इन्द्र वर्तय वाहा है (वाचा यमस्य रथं हरी वहत) तत् वज्र नियावदके एवये दो भोहै न वात है । (वाचस्य वीर्यं भ्रयसः पति) वरम्ब भीर वज्रे वाचा लाभी (समस्तुतः मरयवा इन्द्रः) विवात लाभी वरवाद इन्द्र (सरित्यामा वि तिष्ठुति) वताभेदे वाच उप रथवर वहतर देता है ॥ ३ ॥ (क. १२१२)

(कृषि वित्तु तु) इषि (पुष्प्य) पूर्व वाचान लाभी है इव (इन्द्र वा इरिता इमपृष्ठि सच्चाँ) इन्द्र असे हो इप्पुलोग भावसंतान वाच वाच (भित्र प्रण्गुते) वहिता वित्ता है । (सुन् छुस्ये वर्णयेति) वावध इव नियावेतर वज्र वान वहवये इवत्वात्मे- वावता है (मधु इन्द्र एकाति) इव मधु रथवा इव विवाता है (यथा वाता वन) तेव वाकु वनसे दिवाता है ॥ ४ ॥ (क. १२१४)

(वाचा विवाचा) विस्व वोक्तेवाते (सूप्रयाचा) वस्त्र मापन वर्णेत्राते (पुक सहाचा भाविता) व्युत्त वहतो विद्युत मै-क्षेत्रात्मेभ्ये (यः लक्षण) विद्ये वाय है (तत् तत् इत् वीर्यैष्य) वज्र इवता वीर (पूर्वीमसि) इव प्रक्षेत्रित वर्ते है (यः) को (पित्ता इव) विद्ये विद्या (विवर्यी वाचः वाकुधे) विद्यिते वाचान वहता है ॥ ५ ॥ (क. १२१५)

इत् एष्ये इत्येवे युव वर्वन विद्ये है—

१ हे इस उप इन्द्र ! ते महिमाले वीर्यं रापः व एत् अस्तुतुप्रिति— हे इर्वनीव उप इन्द्र ! ते महिमा परमम वाच भवतानये क्षेत्र वहतरी नहीं वर उपत्ता ।

२ चर्पणिप्राः । पूर्वः पित्ता व चर— हे प्रवस्त्रा ! वृ पूर्व प्रवानोहै वाच भावर अस्त्र विरीक्षण अल्प इव ।

३ यदा हिरण्यं वज्रं यमस्य रथं हरी वहता भवतुतः वावस्य वीर्यं भ्रयसः पति, भरवा इन्द्रः पुरिमिः वा वि तिष्ठुति— वज्र तुर्वन्देव वज्र वावध वरता है तत् वज्र नियावदके एवये दो भोहै भोत वाहे है तत् प्रसिद्ध वज्र भीर वर्णय लाभी वरवाद इव विविते वाच वज्र इवतर वहतर वेत्याहै ।

४ वाचा पित्ता वाचा सूप्रवाचा पुक सहाचा भविता यः भ्रयाम तत् इत् भ्रय वीर्यैष्य गृणीमसि यः पति रथ तिष्ठीत वाचः वाकुधे— भवतानये इवत्वा विद्ये वाचा वज्र इवत वीर इव वर्वन वर्तते है । ५५ विनाक वाचान व्यक्ति भाव वामर्य वहता है ।

[सूक्त ७४]

(प्रायः — २-३ श्लोकाः । दण्डा — इन्द्रः ।)

यद्विदि सत्यं सोमपा अनाद्वस्त्वा ईशु जासि ।	
आ तू ने इन्द्र शसयु गोप्यवैषु मुग्रिषु सुहस्रैषु तुवीमध	॥ १ ॥
शिरिन्वामानां पते श्वर्चिवस्तर्व बुसना ।	
आ तू ने इन्द्र शसयु गोप्यवैषु मुग्रिषु सुहस्रैषु तुवीमध	॥ २ ॥
नि व्याप्या मिष्टृष्ट्वा सुस्तामद्वृष्ट्यमाने ।	
आ तू ने इन्द्र शसयु गोप्यवैषु मुग्रिषु सुहस्रैषु तुवीमध	॥ ३ ॥
सुसन्तु त्या अरातयो वोचन्तु शूर रातयः ।	
आ तू ने इन्द्र शसयु गोप्यवैषु मुग्रिषु सुहस्रैषु तुवीमध	॥ ४ ॥
समिन्द्र गर्वुम मृण नुभन्ते पापयामुया ।	
आ तू ने इन्द्र शसयु गोप्यवैषु मुग्रिषु सुहस्रैषु तुवीमध	॥ ५ ॥
पताति इष्टृष्ट्वान्यो दूर वातो चनादधि ।	
आ तू ने इन्द्र शसयु गोप्यवैषु मुग्रिषु सुहस्रैषु तुवीमध	॥ ६ ॥
सर्वे परिक्रोशं चहि ख्यमया कुष्ठुमुष्मि ।	
आ तू ने इन्द्र शसयु गोप्यवैषु मुग्रिषु सुहस्रैषु तुवीमध	॥ ७ ॥ (६९१)

(सूक्त ७५)

१६८ (सत्यं सोमपाः) एवे सोम लीनेवाते इन् । (यत् विदि हि) वा मी (अमायस्ता इव शसि) इम निराप देह ईरहे । दे (तुवीमध इन्द्र) वहूत वनवाते इन् । (योपु मग्नेषु सहस्रैषु मुग्रिषु) लीनो वीर लीनेव तया वातो वैस्तवी परोमे (मा तू आ शसय) इमे तू वलाह दूर वातो ॥ १ ॥ (क ११२११)

१६९ (विदिव वाजानां पते शापाय) वर्णम तुवासे वैष्टवी पराप्यवात इन् । (तय इस्ता) देवे भवतुन वहौ ॥ २ ॥ (क ११२१२)

१७० (मिष्टृष्ट्वा नि व्याप्य) वर्णर वैरामवे वैरव एवेषा वैवामा (मिष्टृष्ट्यमान सक्षा) देव वातो ईश के वातो ॥ ३ ॥ (क ११२१३)

(सामरातयः सक्षा) देव मुख्ये वैराम (रातयः वोप्यतु) वात वैरेवात वाते ॥ १७१ ॥ (क ११२१४)

(मुमुक्षा पापया तुपस्त) इव वामावध इति वर्णेवाते दे इन् । (गर्वम से मृग) वातो वीर वातो ॥ १७२ ॥ (क ११२१५)

(इष्टृष्ट्वान्यो दूरं पताति) उपिम वात दूर वाते (वातो वैसात भवि) वातु वैषा वैव दूर वात ॥ १७३ ॥ (क ११२१६)

(सर्वं परिक्रोशं चहि) वात भावेण वैरेवाते तु वहौ वर (इष्टृष्ट्वा भवतय) विवर वैरेवाता वैव वात ॥ १७४ ॥ (क ११२१७)

१७५ (वाते वैवामिव वर विवामो वैव दूर वर)

[सूक्त ७५]

(जपि — १-४ पुरुषोपः । देवता — इष्टः ।)

वि स्वा सर्वे मिथुना भवत्स्यवो भूतस्य साता गत्यस्य निःसृष्टः सधैत्व इन्द्र निःसृष्टः ।
यद्गृह्णन्ता श चन् संर्पेन्तो सुभूद्दसि ।

आविष्करिकृद्यपौर्ण सचामुख बज्जिन्द्र सचामुखम् ॥ १ ॥

विद्वै अस्य पीर्यस्य पूरुः पुरो यदिन्द्र आरदीरुषाविरः सासदानो अवाविरः ।
शास्त्रमिन्द्र मर्त्यमवैज्ञान्यस्य विवरणः ।

मुहीमधुष्णाः पृथिवीमिमा लृपो भन्दसान इमा अपः ॥ २ ॥

आदित्ये अस्य धीर्यस्य चक्रिन्मदेषु वृत्तभूषिष्ठो यदाविष्य सर्वोयुगो यदाविष्य ।

वक्ष्यै कारमेष्युः पूर्वनाम् प्रवैन्तवे ।

ते अपामन्यां नुष्टि सनिष्ठम अवस्थन्तः सनिष्ठव ॥ ३ ॥ (४१)

[सूक्त ७६]

(जपि — १-८ वसुका । देवता — इष्टः ।)

वने न शा या न्येषापि चाक छुषिष्ठो स्तोमो भूरणामनीगः ।

यस्येदिन्द्रः पुरुदिनेषु होतो नृणां नर्यो नृतमः ख्यातान् ॥ १ ॥

(सूक्त ७७)

१ देवा वर्ष २ । ७३२ । (क. १११११२)

हे इष्ट ! (पूरुषः त अस्य धीर्यस्य विदु) तत्त्वे इष्ट वीरताव वर्षम वानेहै । हे इष्ट । (शारदीः पुरा भवाविर) तो यत्कै दिलोपा दृपे वाय दिवा (सासदान भवाविर) दिवन वर्षे हुए यदुका वाय दिवा । ८ (शयस्तस्पते इष्टः) वर्षाद इष्ट । (त अवर्यम् मर्त्ये शास) उष वह न वर्तेदै मनुष्यको दृपे हुए दिवा । (मर्ही पृथिवी) वही वृषिष्ठो भार (इमा वाय वसुष्णा) । ९ वक्षावाहोष्ये (मसुष्णा) भाने भारिन वर्षिता । हे (मन्दसान) भानेदै रहने वहै इष्ट ॥ १ ॥ ८ ॥ (क. १११११४)

हे (पूरुषः) वर्षाद इष्ट । (त अस्य धीर्यस्य वर्षिता भात् इष्ट वर्षितर) भैरे इष्ट वीरे वायी दृपि जा दृपे वायी है । (पूरुष भवाविष्य) वर्ष दृपे वर्षी व्राता वीरी (मल्लीवतः पूरुष भवाविष्य) विवरा

वाहवालोके वर्ष दृपने द्वाधा वी वी । (पूरुषामुख वर्ष न्तवे) उषीमे भीतेक मिवे (एष्यः वार्त वक्ष्यै) इष्ट दिवेषु विवर्यावर्ष दिवा । (ते अस्या अवर्यावर्ष सतिष्ठत) उषीमे अस्य वर्षावाहोष्ये प्राप्त दिवा (अवस्थत सविष्णत) वर्ष वर्तेदैवाने जात दिवा ॥ १ ॥ (क. १११११५)

(सूक्त ७८)

(पूर्य इष्ट) विवेद विवर्ये (मूर्खा मर्यः) नर्म लोमे मुख वेता (मूर्खमः) वीरिमे मुख (सपावाद) वृषिष्ठो भवितवि (पुरुदिनेषु हाता इष्टः) पुरुदिवतक इष्टम वर्तेदै इष्ट वाय वर्षा है १८ (मूर्खिवा स्तोमः) वह इष्ट वीरे दै (मूर्खी) उषिदेवानने वाय देवा (वी भवीग) दृप्तारे वाय वर्षा है तुम्हे वर दिवा है । (य यमे व वायः व्यव्यापि) विवेद वर्षै इष्ट वर्षा होता है इष्टवे भार देवा वाय रवा होता है ॥ १ ॥ (क. १११११६)

प्रते अस्या उपस्तु । प्राप्तरस्या नुतो स्याम् नृत्यमस्य नुष्णाम् ।

अनु क्रिष्णोऽकं शुरुमावद्बुद्ध्युन्कुर्सेन रथो यो अस्त्वसुवान् ॥ २ ॥

कस्ते महु इन्द्र रथ्यो मृदुरो गिरो अभ्युश्चो वि धीव ।

कृष्णाहो अर्जुगुप्त मा मनीपा आ त्वा इष्यामुपमं राष्ट्रो अर्जैः ॥ ३ ॥

क्षु धुम्नमिन्द्र त्वावतो नृन्कयो धिया कर्त्तु क्षण भाग्नैः ।

मित्रो न सुख उल्लाय मृत्या अर्जे समस्य यदस्त्वन्मनीपाः ॥ ४ ॥

प्रेरय द्वरो अर्जु न पारं ये अस्य कामे जनिषा इन्द्र रथन् ।

गिरेष्व ये ते तुविजात पूर्वीनरे इन्द्र प्रतिष्ठिष्ठुन्त्यमैः ॥ ५ ॥

माये तु ते सुमित्रे इन्द्र पूर्वी द्यौमृद्धमना धृष्टिकी कार्येन ।

पराय ते पुरवन्तः सुवासुः खाएन्मदन्तु पीठये मधुनि ॥ ६ ॥

या मन्त्रो असा असिष्ठमभेत्रमिन्द्राय पूर्णं स हि सुस्वरोपाः ।

स वौवृष्ट दरिमुका पृथिव्या अभिकृत्या नर्यः पौस्त्यैः ॥ ७ ॥

(अस्या उपस्तु प्र) इव तथाके (अपरस्या प्र)
यो (पूर्वी उपस्तु) वात्मेन्ये (मृत्या मृत्यमस्य
स्याम) वीरोऽहे वीर इन्द्रके इम हो । (या सप्तवान्
रथत्) यो विद्वा वा वह (क्रिष्णोऽकं रथा) तीन
आर्जितामा रथ (कुरुतेन) अस्तुके साथ (यत् नम्
महु मावहत्) यो वीरोऽहे साथ के जाते ॥ १ ॥

(अ । १११२)

हे इन् ! (या महु ते रथ्यो भूत) वीतवा अन्तर
भै भिन्ने इपश्च आप्य हृष्ण दे ॥ त (उम) अमीरहि ।
(तुर गिरा भनि वि याव) इमो दारो वीर लुति
ये ते वाप दोष्टा जा । (मा मनीपा क्षु अवीरि उप
याह) अ मैन लाव तुष्टे भेरो लोर सारेष्य । (अम्भे
उपम रथाय रथा भा शापयो) मै इमित्यावोद्देश वाप भेरे
रथ वन्दनाम्भो प्रसाद वह क्षु ॥ २ ॥ (अ । १११३)

हे इन् ! (कृष्ण धुम्न त्यावता भूम्) वह उपम
एव ते भै योद्देश भिन्नेय । (कृष्ण धिया कर्त्तु) दिष्ट
उदिष्टे त् अर्जु रथा । (कृष्ण न भागद्) वह त् इमो
रथ वन्नेय । (सरायः भित्रः न) वहे भिन्नके समव
८ (वकागाय) वही पवित्रात् इन् । (यत् मनीपाः
सप्तव्) यो तुविष्टो है (मृत्या अन्ते समस्प) इवता
वात्मेन्यदेहु वात्मेन्य रथ ॥ ३ ॥ (अ । १११४)

१३ (अवर्द भाष्य काम ।)

(प्रेरय) अन्तर्भुक्ते देवणा दे (मूरु पार अर्जु न) वाप
सुर्य परे दिष्टत स्वन्त्रे पदुचता है । (ये भस्य कामं
वातिष्ठा इव भूमन्) यो इवाये इपकै वाप पति-वत्तीर्ण
वाह भिन्ने है । ह (तुविजात इन्द्र) अनेह प्रशारके वाप
वात्मेन्यके इन् । (ये ते) वीर जो दे (पूर्वी भारा गिरा
क असीः प्रतिसिद्धसमिति) पूर्व वीर अन्ता सुरुदेवों
वीरोंके वाप याते है ॥ ५ ॥ (अ । १११५)

हे इन् ! (ते मात्रे तु सुमित्रे) भै वहे दो वाप अर्जु
भिन्न हूप है । (याँ पूर्वी भगवाना) यो प इवो भै वाप
वीर (कार्येन धृष्टियी) तीन वाप धृष्टियो । (धृष्टियम्
सुतासः ते वराय) वाचे भिन्ने तुर दोमरण वीर स्तीवाके
भिन्ने दो जाव (मधुनि पीठये लाग्नद् भवत्यु) महु एव
परे वीरोंके भिन्न भैठे हो ॥ ६ ॥ (अ । १११६)

(महा पूर्ण भमर्द) मधुमा धृष्ट वाप (अस्या इम्नाय)
हे इन्द्रके भिन्ने (या असिष्ठम्) वह वह रथा ।
(सः हि सप्तवान्यापाः) यदी वाप दानी है । (स पूर्णिष्ठा
यदिमधा अभि याप्तुष्टे) वह पूर्विष्ठी भेदवाप वारी
वीरोंके वाप (पौर्वीये य अस्या मयः) वारामे भौमे
वीर वापव वह वात्मेन्य दिनकारी है ॥ ७ ॥
(अ । १११७)

पुष्ट इन्होंने अभिरमुदीप्युः मे आ पंग्री रोदसी महित्वा ।
 अर्थादस्य महिमा वि रेष्युमि यो विश्वा मुखना पुम्भव
 विश्वानि शुको नर्यौलि विद्वानुपो रित्व सक्षिभिर्निक्षमैः । || ५ ॥
 अश्वान विष्ये विभिर्दुर्बचेभिर्वृद्ध गोमन्त्वमुषिष्ठो वि वंदुः
 अपो पुत्र वंशिरासु पराहन्त्रावसे वंशे पृष्ठिदी सचेताः । || ६ ॥
 प्रार्थीसि समुद्रियाण्येनोः पतिर्मत्र छवेसा धूर धृष्णा
 अपो यदद्विं पुरुहृत ददेशविस्तुतस्तुरमा पूर्व्यं ते । || ७ ॥
 स नो नेवा पात्रुमा दर्शि भूरि ग्राप्रा कुम्भजिरोभिगृष्णानः ॥ ८ ॥ (५११)

आ (मूर्खः विश्वास) मात्राके देवताके लिये (अभिष्ठी मूर्खमः) विश्वासे देवाको भड़ते (वायुषा तमांसि तु विश्वा चक्षार) के वशधरत्वे एह लिया है ॥ (क ४।१।१४)

(क्षमीपी इन्द्रः अमित यदवास) शोभित इन्द्र वप रिमित एह यावा । (महित्वा उम दादी वा पंग्री) वरने व्यावरे दृढ़ रोगो वंशेभ्ये भर दिया । (अतः विश्व अस्य महित्वा वि रेष्यि) इस्ये इस्ती महिमा एह वयी (यः विश्वा मुखना भमि वमूर्द) लिये घारे मुखोंको अप्त्व लिया ॥ ५ ॥ (क ४।१।१५)

(याः विश्वाविल नर्याजि विद्वान्) दामर्यवत्स इन्द्र एव मात्राके दित्येभ्ये वार्ष वापता है । (लिङ्कायिः सक्षिभिः यपाः रितेष्य) वपन निकाम भित्रो— मल्होंहै शाव वक्ष-मध्योंको छमे लोक दिया । (ये वक्षेभिः अद्वानं विश्व विमितुः) लिङ्कोंने धर्मोंहै परामध्ये विभित्व लिया और (विधिः गोमन्त्र व्रद्धं वि वशः) उव इन्द्रा एकोपके [मक्षतोंते] बोयोवत्स वार्षोंहै लोक दिया ॥ ६ ॥ (क ४।१।१६)

(यपः विविवास तु वं पराहन्) उपरे वर्णोंके अप्त्वेष इत्येव इत्येव यारा । (सर्वेऽता पृथिवी ते वयम् पावत्) वेता पुक्ष वयवाली त्रिक्षिनी लेत वज्रां रक्षां ये । है (पृष्णा धूर) लकुमा परामय वर्णेष्वाते इन् । (वायुसा पात्रः भवन्) धामर्यवत्से पात्र इन्द्र (समुद्रियाण्य वक्षीसि प देवाः) उमुखी वक्षोंहै वशादित लिया आये वापता ॥ ७ ॥ (क ४।१।१७)

है (पुरुहृत) वृत्तों द्वारा प्राप्तित इन् । (यद् यपः अद्विं वर्ष्य) वन वक्षोंक पहाड़को त्रुमने ताव तप (सरमा ते पूर्व्यं व्यावि भुम्भत्) सरमा हैरे वामे प्रकृत हुई । (अगिरोमिः धूषामः) विक्षिरोधे स्तुते लिया तुमा (गोवा तम्भम्) पहाड़ोंको तोड़ता इत्वा (सा न वेता) एह इमार भेता इन् (भूरि वार्ष वा वाप) धूत वह विवाता है ॥ ८ ॥ (क ४।१।१८)

इस उक्तमें इनके ये तुल आहे है—

१ विक्षिरोध मस्तुर्याय मम्म— शारी सक्षिभिर्वक्षे वह सूच है ।

२ महित्वा उम रोदसी वा पंग्री— वपन महत्वे वायुवृक्षोंको भर दिया ।

३ अद्व अद्विमा वि रेष्यि— इन्द्र अद्विमा एह यावा ।

४ य विश्वा मुखना भमि वमूर्द— लिये सप्त मुखोंके पात्रभूत लिया ।

५ धूक्षा विश्वालि भर्यायि विद्वाद— उमर्य इन्द्र यमवाके दित्येभ्ये उप वार्ष वापता है ।

६ पृष्ठ्यो धूर । वायुसा पतिः भवद्— धूत्य वायुमय वर्णवाके धूर । अस्य त वामी देवा है ।

७ गोवा वज्रन्— वज्रोंके लेवा ।

८ सः वः भता भूरि वाम वा वर्यि— एह इमार वेता वृत्त वामर्य वनावा है ।

[सूक्त ७८]

(ज्ञापि — १-१ श्लोः । वेष्टता — इष्टः ।)

वहौ गाय सुरे सचो पुरुषाय सत्वने । ए यद्वेन शक्तिने ॥ १ ॥
 न शा बसुर्नि यमते दुर्वनं पाच्चस्य गोमतः । यस्तीष्प अवृद्धिरः ॥ २ ॥
 कुविस्सस्य प्र हि अम गोमन्त दस्युहा गमद् । शप्तीमिरपे नो वरत् ॥ ३ ॥ (५१८)

[सूक्त ७९]

(ज्ञापि — १-२ ज्ञापिष्ठः शक्तिर्वा । वेष्टता — इष्टः ।)

इदु कहु न आ मर पिवा पञ्चम्यो यवा । ॥ १ ॥
 द्विष्ठा जो अस्मिन्तुरहृष्ट रामनि द्विवा ज्योतिरश्वोमहि
 मा नो वहाता दूराच्छ्यो त्रुमिकासो जवे कहु ।
 स्वया पुय प्रवतुः शुद्धीतीरुपोऽति श्वर वरामसि ॥ २ ॥ (५१९)

(सूक्त ८०)

(सुरे) धायस निष्ठनेपर (पुरुषाय यः सत्वने)
 वहौ द्वारा दुकारे वे आपके वस्त्रान् वीरके लिये (सत्वा शं
 तत् गाय) पाप वाव वह शामिष्ठ वा दुखवानी स्तेव
 पावा (यह शक्तिने गये न) वसा उत्पितामी वहके लिये
 पापा वाया है ॥ १ ॥ (क १४८५२३)

(यह सीं गिरा उप अवत्) वह वह इमारी शुद्धि
 वहो दुकारा है तब यह (गोमतः वाचस्य वाने) वीरोंके
 वरदे वामप लवा (वहुः य न नियमते) वरवा नहीं
 देखता ॥ २ ॥ (क १४८५२४)

(दस्युहा) द्विष्ठो भारेनामः इन् (कुविस्सस्य
 गोमन्त द्वज) कुविस्से वीरोंके वाहके पाप (हि प्र
 गमत्) वावना भीर (शक्तीमिः म अप वरत्) वहनी
 शक्तिर्वा इमोरे लिये अन वलेय ॥ ३ ॥ (क १४८५२५)

१ यह सीं गिरा उपम वहु गोमतः वाचस्य वाने
 वहुः या नि यमते— वह वह इमारी शुद्धिर्वा
 दुकारा है तब गोमोंके वहके वामपे वरवा वरका देना वह
 वह मही देवा ।

२ दस्युहा गामन्त दहन य गमत् शक्तीमिः मः
 अप वरत्— एवत्वाप्त इन वीरोंके वाहके वाव
 वहनी एवे रवाना इमोरे लिये वोक्ता है ।

(सूक्त ८१)

३ इद॑ । (मः क्षु वायर) इमोरे लिय कृत्यवुद्धि
 वह (पथा विता पुरेष्य) वेता विष्य वुद्धोंसे वेता
 है । हे (पुरुषत) वृद्धे द्वाप्र प्रदीपित इद॑ । (अस्मिन्

पामनि नः शिष्म) इप वर्यामें हमे लिय है (जीवा
 र्वोति वशीमहि) शीरित रहेनेपर इप ज्ञोतिको जी
 वर्यामें ॥ १ ॥ (क १४८५२६)

(जीवाता दृजना तुराप्यः) जीवात तुरा वाहनेमें
 इपोरे लक्षु (मा नः) हमे मत वर्यामें (अविवासः मा
 मव क्षमुः) भाष्म लक्षु इमपर भाष्मन व वरे । हे वर्या॒
 (स्वया पथ) ऐरे वाव इकर इप (शश्वतीः प्रवर्ता
 अपः) वामप वहेनाके वक्त्रवाहोंपे (शति तरा-
 मसि) ऐरे वर वरे ही वाव ॥ २ ॥ (क १४८५२७)

१ हे इद॑ ! मः क्षु ना भर— हे वाव ! हमे कृत्य-
 वर्यामें लुडि भरपूरे हे । लिये इप दुस्मार्थ वरत वर लूः ।
 २ तथा पुरेष्यः विता कहु— वेता विता वुद्धों
 दृजनेवे वृद्ध वरवा है । लियाप वह वर्याम है कि वह
 अपने वुद्धोंके वृद्धत्वाकृति वृद्ध है ।

३ अस्मिन् पामनि नः शिष्म— स्वप्न वरेके वाव
 वहके विषमें हमे वोव लोर वामप वाव वे लिये इप
 वामप वरेके वृद्धपे वराव वर लूः ।

४ जीवा र्वोति वशीमहि— शीरित र्वेष्य ले देष्य-
 लिता प्राप देवे ।

५ जीवाता दृजना तुराप्यः अविवासः मा
 मव क्षमुः— वीरे जीवात तुरुष लक्षु इमपर भाष्मन व
 वरे ।

६ इपया यवे जीवती प्रवतः अपः शति तरा-
 मसि— दृग्हरे वाव इपर इप वायत वीरे वहेनाके वह
 वराहोंके हैर वर पर देंगे ।

[पद १०]

(अनि — १ लाल १९६० — १०१)

त्वं विहु तु या यो आर्थ वृत्त यत् ।

स्वम विद वगद्य यदग्नी याम गुदिषु या

॥१॥

वादुदद्यम पर्वत्यग्न यत् इत्यु हम ।

विद्यु य च विद्यु विद्युता वस्त्रा मिश्विद्युता इति

॥२॥, १

[पद ११]

(अनि — १ लाल १९६० — १०१)

दृष्ट यात इति त्वं पूर्वित एव ।

य यो विविष्यत्य एवा एव व इत्यु यादेवी

॥३॥

या विष्य विवा विवा इत्यु यादेवी विविद्यु विवा ।

वादा अंत विविद्यु यादेवी इति विविद्यु विवा

॥३॥, १०

प्र० ११

त्वं विहु तु या यो आर्थ वृत्त यत् ।

स्वम विद वगद्य यदग्नी याम गुदिषु या

वादुदद्यम पर्वत्यग्न यत् इत्यु हम ।

विद्यु य च विद्यु विद्युता वस्त्रा मिश्विद्युता इति

॥३॥, ११

त्वं विहु तु या यो आर्थ वृत्त यत् ।

स्वम विद वगद्य यदग्नी याम गुदिषु या

वादुदद्यम पर्वत्यग्न यत् इत्यु हम ।

विद्यु य च विद्यु विद्युता वस्त्रा मिश्विद्युता इति

॥३॥, १२

त्वं विहु तु या यो आर्थ वृत्त यत् ।

स्वम विद वगद्य यदग्नी याम गुदिषु या

वादुदद्यम पर्वत्यग्न यत् इत्यु हम ।

विद्यु य च विद्यु विद्युता वस्त्रा मिश्विद्युता इति

॥३॥, १३

[शूक ८२]

(क्रिः — १-२ वसिष्ठ । देवता — इन्द्र ॥)

यदि द्रु मार्गतुरस्त्वमेवावदुहसीषीय ।

स्तोवारुभिर्भिर्येय रदाप्रसु न पौपत्वाय रासीय

शिवेयुभिन्महापुरु द्विवेदिवे राम आ झुइचिदिवे ।

नुहि त्यवुन्यन्मध्यवन् नु आप्य वस्यो अस्ति पिता चुन

॥ १ ॥

॥ २ ॥ (५१)

[शूक ८३]

(क्रिः — १-२ शंख । देवता — इन्द्र ॥)

इद्रु प्रिपातु चुर्जं प्रिवर्क्ष लस्तिमत् ।

छुर्दिर्येच्छ मुषवर्ज्यम् मर्म च यामवा द्विषुमेम्यः

ये यम्प्रता मनसा छुक्षुमादुभुरभिप्रसन्ति पूष्युमा ।

अर्थ सा नो मध्यमिन्द्र गिर्वणस्तनुपा अन्तमो भव

॥ १ ॥

॥ २ ॥ (५२)

१ हे इन्द्र ! शत यावः शत शूमीः सदर्थं सूर्या
स्वा वात त चनु यष्ट— हे इन्द्र ! ती ती हो या ती
भूमिका हो या यात्र सूर्य दो भेदे बद्ध होनेपर तेती यावरी
दीर्घ वर नहीं चलता । ऐसा तेता यावर्य वरा विलाप है ।

२ हे चूपन् ऋषिषु मध्यवद् विजित । विश्वा
प्रायसा चूप्या महिता मा प्रायाय— हे बद्धान् यामर्थ
यामी वनवान् वनवार्य रुद्ध ! त अनली यामर्थदुष्क महि
मासे उद्धो भरपूर मर रिता है ।

३ गोमति व्रजे विजामिः द्वितिमिः मसान यथ-
मोमोने वाहेदै हप रौ भौ यहा इमारी हुरधा द अपने
मित्तन तुराके यावर्योंसे वर । इन्हे जा मिले और इमाय
ठाक्य मी हो ।

(शूक ८१)

४ इन् । (यत् यावतः यत्) वित्तेष्य त् (यतावत्
यहं इंशीय) इतेष्य मे कामी होड़ता तो (स्तोतारं
इत् विभिर्येय) स्तुति वरेषाहेद्ये मे वाप्य देख, हे
(रदाप्रसु) यत्त याता इत् । (यावर्याय म यासीय)
यत् वरेषे तिते ती वाहिंग ॥ १ ॥ (क ५१२११५)

(दिये दिये महायते) वित्तारन स्तुति करनेवालेहा
मे (राया या गिरेष्य इत्) यत् देखा हो (तुह
यित् दिये) दी भी बह हो । हे (मध्यवद्) वनवान्
इत् । (यत् यामर्थ याम्ये वहि) तो विवाद इतरा अर्थ

बन्ध नहीं है (वस्यो) वनवान् (पिता चन न वालि)
विवा भी दृश्ये वनवान् नहीं है ॥ २ ॥ (क ५१२११५)

(शूक ८४)

दे इन्द्र ! (विधातु विवर्क्ष) तीव चातुर्वाक् तीव
चत्तोराका (लक्ष्मिमत् वार्यं) चात्प्र रवनेवान् चात्प्र
स्वान् (उद्दिः) चर (मध्यवद्यप्य च मध्य च) चरी
लोगोंके द्विती भौति मुसे (धर्षण) है तो । (यस्या) विद्यु
यावर्य) इन्हे चल दूँ चर हे ॥ १ ॥ (क ५१२१५)

(ये यावर्या मनसा) जो बीबोंके चाहे हुए मनव
(याप्त या दम्पु) दम्पुधे मारते हैं चार (भूष्युपा
भमि ग्रामिणि) भर्वेषे चार चरते हैं हे (मध्यवद्
गिर्वण्या इन्द्र) चनवान् रुद्धियो दृश्येवाले इत् । (यथ
ना यथमास तनुपा यथ सा) इसो यारीदीप त व्याप
दित इन् हो ॥ २ ॥ (क ५१२१५)

५ विधातु विवर्क्ष स्तुतिमत् वार्यं उद्दिः मध्य
मध्यवद्यप्य यत्त— तीव चातुर्वाक् चात्प्र विवादे द्विती
हे तीव वरे चात्प्रस्वान् विवादे हे चात्प्रस्वान् देखा हो
स्वान् हे वह रवनेवा चर दृष्ट भौति वालेहा ह हो ।

६ यावर्यता यमसा याकै या दम्पु— नवे चात चरे
कामी दुष्किं या चतुर्वा दकाते हैं भूष्युपा यथमि
ग्रामिणि— भैरवे दम्पुपर या चातर चरते हैं चल यथा ना
यथमास तनुपा यथ— इसो चर्वन् (कर वर्षण
करनेवान् त हा ।

[सूक्त ८४]

(ज्ञानिः — १-३ मधुच्छस्त्राः । देवता — इन्द्रः ।)

इन्द्रा याहि विद्रमानो सुता इमे स्वाययः । अर्चीमिस्तना पूरातः ॥ १ ॥
 इन्द्रा याहि विषेपितो विप्रज्ञतः सुतावतः । उप प्रशाणि वापतः ॥ २ ॥
 इन्द्रा याहि ततुत्तान् उप प्रशाणि इविषः । सुते दंषिष्ट नुभनः ॥ ३ ॥ (५१८)

[सूक्त ८५]

(ज्ञानिः — १-२ प्रगायः १-४ मेष्यतिथिः । देवता — इन्द्रः ।)

मा विदुन्यद्वि शैसत् सखायो मा रिपण्यत ।
 इन्द्रमिस्तोत्रा भूयं सचा सुते भूदूरुक्षया च उत्त
 विक्षिप्ते वृप्तम् यथात्मुर्गा न चर्पणीसर्वम् । ॥ १ ॥
 विवेषण सुवन्ननो मधक्तरं महिष्टम्भयाविनम्
 यत्तिदि त्वा बना इम नाना इव तुतये । ॥ २ ॥
 अमाक्ष अल्लदर्शित्र भूतु ऐहा विष्टा च वर्षनम्
 वि तर्तुर्यन्ते मधवन्निवपुष्टितोऽयो विषो बनानाम् । ॥ ३ ॥
 उप क्रमस्त्र पुरुषपुमा मर्त्र मात्र नेविष्टमूर्तये ॥ ४ ॥ (५१९)

(सूक्त ८६)

(विद्रमानो इन्द्र) ह वायवेष्टक तेवस्त्री इन् ।

(मा याहि) आ (इमे सुता त्वाययः) वे वीरप्र

मे विवेषण्डे (अर्चीमिस्तना तना पूरातः) और अंगु

विष्टे द्वान् वर परिष विष्टे है ॥ १ ॥ (ज. १११४)

है इन् । (विष्टा इविषः) उपिषे विष्ट तुता (विष

ज्ञतः) विषानोत्ते विष्टविष तुता (सुतावतः वापतः

विष्टापि) वीरप्र विषावेषाते स्वेष्टक विषोत्रे (उप

वा याहि) वाम आ ॥ २ ॥ (ज. १११५)

है (इविषः इन्द्र) वोहोत्रे है ॥ (ततुत्तान्)

एव वरता तुता (विष्टापि उप वा याहि) विषोत्र

विष्ट वापत ॥ (वा सुते वना इविषः) इमारे वीरप्र

(वेष्ट वायवेष्ट वाम ॥ ३ ॥ (ज. १११६)

(सूक्त ८५)

है (सखाय) विषोत्र (विष्ट विष्ट माय वापतः)

विषोत्र वायवेष्ट वाम वर्ता न वर्ता (मा विष्टविषः) वाम वर्ता

वर्ता ॥ (वृत्ते) वायवेष्ट विष्टविषः वर (सखा) वाम

वैत्तर (भूयं इन्द्र इत स्वोत्र) वामवेष्टवाम इन्द्रवी ही
 द्विषि वरा । (सुदूर इक्षया च शत्रत) वायवेष्ट वरके ही
 स्वोत्र वामो व ॥ १ ॥ (ज. ११११)(मधवन्निवण) उपिषे वीरप्र विषेषाते (भूयम)
 विषान् (अतुर्द) इन् न विषेषाते (गीर्वया)
 गीर्वय वाम वल विषेषाते (अर्चीमिस्तन) उपिषोत्र वरा-

वर विषेषाते (विषेषण) उपोत्त वैष विषेषाते (सख

वाम-विष्टविषः) भूतोदी वायवेष्ट विषेषाते वै दोनो वाम

विषेषात (विष्टिष्ट) वैष वेष (विष्टविषः) दोनो विष

विषेषाते इन्द्रके वायवेष्ट वामो ॥ २ ॥ (ज. १११२)

(इमे वामा वर्ता) वे वामा प्रवर्तवाम (वर्तय)

विषोत्रे विष (वर्त विष दि स्वा इविषः) वा इष देवी

ही वामा वर्त है ॥ ३ ॥ (अमाक्ष इन्द्र वर्त) इमारा

वर स्वोत्र (इन् ते विष्टा च वर्तन भूतु) वा वा

वर्त विषेषाता हो ॥ ३ ॥ (ज. ११११)

है (मधवन्न) विषेषात इन् । (वामानो विषेषिणः

विष वर्त) विषेषात वीरवे वा वामी वा वर्त (वि

[सूक्त ८६]

(कथि — १ विश्वामित्रः । देवता — इष्टः ।)

प्रश्नाणा ते प्रश्नुमुखो युनविमु द्वी सखाया सुधमार्द आशु ।

स्थिरं रथं सुखमिन्द्रापितिष्ठन्मत्तानन्विद्वाँ उर्प याहि सोम्य ॥ १ ॥ (५१)

[सूक्त ८७]

(कथि — १३ वसिष्ठः । देवता — इष्टः ।)

अध्वर्योऽरुणं दुग्धमंसु ज्ञाहातन वृभार्य शिरीनाम् ।

गीरादेवीयो अवपानुमिन्द्रो विशाहेयाति सुवसेममिच्छन् ॥ १ ॥

यर्थिष्ये प्रदिवि चार्वर्षे दिवेदिवि यीतिमिदेव वष्टि । —

उत हदोत मनसा ज्ञापाण तुष्टिनिन्द्रु प्रस्तिवापाहि सोमान् ॥ २ ॥

सुक्तानः सोमं सहसे पपाय प्रते माता महिमानेष्टुपाच ।

एत्र प्रश्नोर्षेष्टुन्तरिष्य युधा दुष्टेभ्यो वरिवधकर्य ॥ ३ ॥

यथोष्टया महातो मन्येमान्नासाधाम् तान्काहुमिः शास्त्रदानान् ।

यद्गा मृपिर्वृत्ते इन्द्रामियुम्पास्ते स्तपादि सीधवुस ज्येम ॥ ४ ॥

तदुर्ध्वंगते) विदव रुद्धिं गते हैं । उनके (उप इति) पाप वा । (ऋतये) उनके संरक्षणके लिव (भेदिष्ठु पुरु एव वाय) पापवाका अनेक हावोंमें विदेशका वापिवर्षण वर्ष (मा भर) मरणे मर है ॥ ५ ॥ (कृ. ४१४)

इष्ट त्रृप्ते द्विषोन्म में इष्टके त्रुपोष्य वर्षन वरता है ।

(सूक्त ८८)

(इष्टाप्ता) इष्टते (यद्युम्पा सखाया ते द्वी) इष्टानें तुष्टेशाखं पित्र एव इसो तोहे (माता) यीप्र वामवासे (सध्यमादे तुम्पित्रम्) नानेव देवेशानें एवं वापत्य है । दे इष्ट । (स्थिरं सुक्तं रथं) उत्तर तुष्टिवापी रथर (अ पितिविमु) उत्तर (प्रश्नान् प्रिदान्) वामता दुष्टा शारीर तृ (सामे उप याहि) धामके पर्याप्त वा ॥ ६ ॥ (कृ. ४१५४)

(सूक्त ८९)

६ (अस्त्रयवः) कार्युपान् । (शिरीनो त्रृप्तमाय) एव त्रुपोष्ये त्रृप्तं इष्टके लिव (त्रृप्तं वर्षलं वर्जु) वेद त्रृप्तं वात रथा (त्रुप्तेत्वम्) इष्ट वरो । (गीरात् अपायां यदीपान्) वो यज्ञा अविष्ट वर्षी वरह वाने जीवेष्ट वामवासा । वामवेशका इष्ट (तुष्टसामे इष्टहन्) वेद इष्ट विदेशेन्मधी इष्टा वरता दुष्टा (विभादा इष्ट यापि) वितिविष्ट वरहे वात वाता है ॥ ७ ॥ (कृ. ४१५५)

(कृ. ४१५५)

(प्रदिवि वर्ष त्रृप्तं वाय वर्षं वधिष्ये) वितिविष्ट द्विष्ट द्विष्ट वरता द्वी इष्टा द्व रथता है और (द्विष्ये द्विष्ये वर्षव वीति इत वर्षित) वितिविष्ट द्विष्ट वरता वरता है । दे इष्ट । (उत हृषा उत मनसा ज्ञापाच) हरत वरता वरता मनसे ग्रीति वरता दुष्टा और (उपाम) इष्ट वरता दुष्टा द्व (प्रस्तिवाव सोमान् याहि) जीवेष्ट वामवासी पी ॥ १ ॥ (कृ. ४१५८)

(शहातः सोमं सहसे ग्र पपाय) वरते ही जीवेष्टे वरते लिव वीरा वा । (माता ते महिमाय वायाच) भैरी मात्य— भवितिने द्वैरो महिमाय वरत द्विवाय । दे इष्ट । (उत भवतिरिष्म वा पपाय) विस्तोन भवतिविष्टे द्व वर दिवा और (युधा देववधः यरिवः यक्षय) त्रुप्तं रेषोष्टे द्विष्टे भेदुनव वात द्व दिवा प ॥ १ ॥ (कृ. ४१५९)

(यत महातो मध्यमानान् योधय) वर द्वे वाते वामवासे वामवासे द्वी त्रुप्तं वात दिवा (ताव यास वामान् पादुमिः सात्त्वाम्) इष्ट वर्षद वामवेशकां द्व वाने वादुपोष्टे वामवासे द्वैरेव । (यत वा) द्विवे द्व । (स्थिरं त्रृतः भविष्युपाया) वीरोष्टे द्विवा दुष्टा दुष्ट वरता द्व (ते भविष्ट रथया सोध्यम जीवेष्ट) दुष्ट वरता द्व वर वरता वरता वरती (उत वीरोष्टे ॥ २ ॥ (कृ. ४१६०)

प्रन्तस्य वोच प्रथमा कुतानि प्र नृत्ना मुपमा पा चुकार ।

युदेदेवीरमहित माया अपामधुक्षवलः सोमो वस्य

॥ ५ ॥

तुषुद विश्वमितेः पश्चम्यु यत्तत्प्रिति चक्षुसा चर्येस्य ।

गर्भामिति गोपतिरेकं इन्द्रं मधुमिहि च प्रवृत्तस्य वस्वः

॥ ६ ॥

शृहस्ते युशमिन्द्रभ्य वस्वो त्रिव्यस्तेऽपाये तु वायिंस्य ।

पुष्टु गुणे स्तुयुते क्षीरये चित्युप पात्र सुस्तिमिः सदा नः

॥ ७ ॥ (५४०)

[श्लक ८८]

(ऋषि । — ३ वामदेवा । दृवता । — इन्द्रसति ।)

यस्तुस्तम्म सहस्रा वि ज्ञो अन्तानुहस्तर्विष्वप्युमो रवैण ।

वं प्रजासु श्रपयो दीप्यानाः पुरो विप्रा दधिरे मन्त्रविद्वम्

॥ १ ॥

पुनेत्यः सुपकेतुं मदन्तु युद्धस्ते अभि ये नेत्स्तुत्ते ।

पृष्ठं त सूप्रमदन्प्रमुखं युद्धस्ते रथेतादस्य योनिम्

॥ २ ॥

(इन्द्रस्य प्रथमा कुतानि) इन्द्रके पृष्ठे किमे हुए
पृष्ठेष्य (प योद्ध) मैं वस्ते वरता हूँ (मध्यवा नृत्ना
वा प चकार) भी इन्द्रे वा नृत्ने कर्म्म किमे हैं ।
(पश्च व्यदेयोः माया : इन्द्र व्यत्प्रिति) वत्र अपुरोहि
प्रथम्य प्रथम् निका (अय वस्य कवचः सोमः अम
पृष्ठ) वत्र वैष्णव इत्योऽप्य तोम दुक्षा ॥ ५ ॥ (अ ४५८१५)

(इन्द्र विश्वं प्रथम्यं अमितः वत्र) तेष व व व
प्रथम्य वारो भवे है । (यद्युपर्यं व्यदेयसा प्रथमिति)
वे दृष्टये लोकुते देवता है (इन्द्र ! वत्रो एकः
गोपति : असि) हे इन्द्र ! दृ गोपेय वत्रा गात्रावह है
(ते प्रथमस्त वस्वः मधुमिहि) स्ते विव वत्रा हम
वेत्र वैष्णव ॥ ६ ॥ (अ ४५८१६)

तेषो वत्र ३ । १५७११ । (अ ४५८१७)

इन्द्र सूप्ते सूक्ष्म विदेव वर्तन वह है—

१ यद्युपर्यं वस्यमात्मन् योपय तात् शास
प्राप्ताद् वाहुमिति साक्षात्— वर वह वत्रो वीरेष्य तु द
इन्द्र वत्र लाभो वाहुमिति हमन प्राप्तुते किमा ।

१ मुमिः कुत्रु भग्नियुध्या त आर्जित्वया सीम
वर्त्य अपेम— वत्र वृ वीरेष्य तात् तु द वर्ते वत्रा वत्र वस्य
उपर्ये लोक इन्द्र इन वत्रो वीरेष्य विवत्री हीने ।

१ इन्द्रस्य प्रथमा कुतानि प्र वार्त— इन्द्रे पृष्ठे
प्रथमोय वर्त्य भैरो दिवे किमा ।

१४ (वत्रो वस्य वत्र ३)

४ मध्यवा नृत्नाया व चकार— इन्द्रे वत्रे प्रत्यय
विव वत्रा भी वत्रन किमा ।

५ यदा अद्वेषी माया मसहिष्ठ— अद्वेषी वत्र
निका वत्र वैष्णवे वत्रात्म किमा ।

६ इन्द्र ! वत्रो एकः गोपति : असि ते प्रथमस्त
वत्रा भग्नीमिहि— हे इन्द्र ! व वौकोम्य एक तामी है
भैरो दिवे वत्रा इन भैरो वैष्णवे ।

(श्लक ८९)

(विप्रथलः प्रद्यस्तिः) वीत लालोमै रत्नेशान वृद्धस्य
तिमे (अमा भग्नाम्) वृद्धतिर्विवरोम्ये (रपेण सहस्रा
वि वत्रात्म) पर्वताके वत्र विव किमा । (त मन्त्र
तिहि) वृष आर्जित वत्रान वैष्णवाके वृद्धतिर्विव (प्रत्यासा
दीप्यामाः विवा । आया ।) ग्रामीन भास वैष्णवे विदेव
आर्जित लालोमै (पुरा वैष्णवे) लाले लाल किमा ॥ ७ ॥
(अ ४५८१८)

१ तु वृद्धते । (तु वृद्धते वृद्धते वृद्धते) वृद्धते
द्वन विम्होषे भार्जित वैष्णवाके (ये वा : अभि वत्रात्म)
विम्होने वृद्धते वृद्धते वृद्धते है वैष्णव (वृद्धते) विष्व
वैष्णवाके (वृद्ध वृद्धते वृद्धते) वैष्णवात् वृद्धतिर्विव भैर
विवत्री (वस्य वैष्णवे) ऐसे इन्द्रे वृद्धतिर्विवत्री है
वृद्धते । (वृद्धता वृद्धता वृद्धता वृद्धता) वृद्धता वृद्धता वृद्धता ॥ ८ ॥ (अ ४५८१९)

हृहस्यते या पंरमा पंरावदसु आ ते ऋतुस्पृष्टो नि वेदुः ।	॥ ३ ॥
तुम्ये ख्रापा वैदुता विद्रिग्नश्च मन्त्रे षोडश्यमिती दिरप्लम मृदुस्पतिः प्रथम अव्ययमानो मुहो ज्योतिषः परमे व्योमिन् ।	॥ ४ ॥
सुप्राप्त्यस्तुविक्षातो रवेण नि सुप्राप्तिमरणमुच्चमांसि	॥ ५ ॥
स सुटुमा स ऋक्षेणा गुबेन वृलं ध्रोज फल्गुग रवेण ।	॥ ६ ॥
मृदुस्पतिरुक्षियो हस्यद्वुः कनिकदुष्टावैष्टुरुद्धीन्द्रियत् एवा पित्रे विश्वदेवायु वृष्णो युद्धेभिर्वेसु नमस्ता हुविर्भिः ।	(४४)
पृहस्यते सुप्रभा वीरवन्तो वष स्याम पर्वतो रवीणाम्	॥ ७ ॥

[सूक्त ४९]

(क्रमि) — १-११ रुप्य। देवता — इन्द्रः ।

अस्तेवं सु प्रतिर लायमस्य भूपश्चिव प्रभरा स्तोममन्त्रै।
 ब्राह्मा विप्रास्तररत्नं ब्राह्मणो नि रामय वरितुः सोम इन्द्रस् ॥ १ ॥
 दोहन गाहुषे शिष्ठा सखायुं प्र ब्रोदय वरितव्यरमिन्द्रस्।
 कोश्च न पुर्णं दद्दुना न्येष्टमा व्यावय मषदेवाय प्रतिरम् ॥ २ ॥

हे वृत्तस्थै । (या परमा) वो एक लान है (सेफ़ातस्पृशा) वे सबसी एवं अलेक्सो (परावर्ष भवा भा मियेदु) एक एक स्वल्प वाहर नहीं ठिठे हैं । (दूर्मध्य काता भवता) दर किंवि चोरै कूलेक उपाव (आक्रितुर्पा) फ्लरारि फ्लरारि गिक्सी (मध्या विरप्ता अभितः ओतमित) मधुर रसदी नहरे चर्दी भोर व रसी दे ॥३॥ (प. १५ । १)

ब्रह्मस्थि (प्रथम) वहिके (महो व्योतीतया परमेष्ठे
व्योगमन्) वही ज्ञोतीते परम जाग्रात्मे (ज्ञायमात्रा)।
करत हुआ। (सप्त मात्रा) लात मुकुलाता (तुदि
जाता) बहुतीते इद हुआ इव (सप्तरातिमा) करत
धिक्षोत्तमे (त्वेष तमसिं भप्पमन्) वहे वस्तुत्त्वे
भगवान्नदे दृष्टि ॥ ५ ॥ (क. ४५ । ५)

(स सुपुर्मा) वर्षे दत्तम् शुक्लिमे (स ज्ञानता
पर्येम) वर्षे स्तोत्रोदं वर्णोदं (रथेष्य फलिर्गं पर्वते
दराज) वा इते दुष्ट वर्षये तोषं दिवा । (पूर्वस्पति) ।
दृश्यात्रेन (दृश्यसूदृशं क्षिप्यात) । एव्यो लाकु वर्षावेदनीयीं
(वायवातीं क्षिप्यदृशं उद्भास्तु) वर्षम् वर्षेनावेदीयीं
वायोमे नवंवा वर्षे दुष्ट हृष्ट दिवा ॥ ५४ ॥ (कृ. ४५-५६)

(पवा तृष्णे विषेदिष्टवाय) इस तरह विष्टव्य
विषेदवाय (यहीः ब्रह्मसा इविष्टिः विषेदम्) वह
ब्रह्मधार और विषेद साधार वहै। है गुरुस्ते। (मुग्रां
वीरिष्टव्यः वयं स्थाम्) उत्तम प्रवा और उत्तमीत्रोऽपि उत्त-
म ही तथा इम (र्हीष्णो पतयः) वनोंके स्थानी-
योंमें। ३० (४५ ११)

(সূক্ত ৫১)

(अस्तु इव लाय प्रतरं सु अस्यम्) दैता एव
अद्वेशादा वाष्पो धू कैष्टु है योर्मि किरीधं वेता (मूर्यम्
इव) प्रमुचित वरता है उप उप (अस्मै स्तोर्मि प्र परं)
इस इन्हें लिखे लौत्र जर्वं चौरी । हे (यित्राः) हरियो !
(वाष्पा अर्थः वाष्प तरत) अर्थो छुमालीये कुरुपी
इव वाष्पीयं तेर कर परे जामा । हे (यरितः) शुष्टि वरे
जामो ! (इस्ते सोम ति रामय) इन्हों शोमये रक्षण
याम् ॥ २ ॥

(दोहे म गा) सोटव परम्परे हैं नाड़ी पुकारे हैं
उत्तर उठ (सलाप उप शिख) विष इन्द्रध अनें पाठ
पुकारा । हे (अरिता) स्त्रीय ! (जार इन्द्रध प्रोफर)
पाक वर्षायामे इम्हो बयाना । (पृथ्वी कोश न) वर्षा

किमद्ग स्वा मधवन्मोमाहु द्विश्वीहि मा शिश्रुप स्वा शुषोमि ।

अर्मस्वती मम चीरसु शक शुशुविदुं भग्निन्द्रा मेरा नः ॥ ३ ॥

त्वा जनो ममस्त्वेष्ठिन्द्र सरस्याना वि हृष्णते सम्भिके ।

भग्ना युधे हृष्णते या इविष्मामासुन्वता सुल्ख वैष्टि शूरः ॥ ४ ॥

घन न स्यन्द्रं धृलं यो अस्मे तीप्रान्तसोर्मा आसुनोमि प्रयत्नान् ।

तस्मै शब्दन्सुतुष्मान्ग्रावरहु नि स्वप्रान्वुष्टि हन्ति पुत्रम् ॥ ५ ॥

परिमन्त्रम् देखिमा घसुमिन्द्रे यः द्विश्वार्थ मधवा कामेमस्मे ।

आराषित्सन्मेवतामस्य शशुर्व्युस्ति शुभा वन्या नमन्ताम् ॥ ६ ॥

आराष्मद्गुर्मय वापत्त दूरसुप्रो यः समर्थः पुरुषू लेन ।

अस्मे चेहि यज्ञमद्गोमदिन्द्र कुपी दिये अतिश्रे वावरताम् ॥ ७ ॥

प्र यमन्तर्वृपसुवासो अग्नेन्तीव्राः सोमा वृलान्तीस इन्द्रम् ।

नाई दुमानै मधवा नि यैसुषि द्वन्द्वते वैहति शूरि शुमम् ॥ ८ ॥

ऐसे देखेके उपरात (वृषुपुर्व शूर्) उनके बोझेसे
ऐसे देखे एव इत्याचो (मधवेवाय भा व्यावध) उन
मेंमें देखे दिया हो ॥ १ ॥ (क. १ ४१२)

ऐसे (यंग मधवन्) यित्र वापत्त इत्र । (कि त्वा
मोव माहुः) स्वा दुष्टे वापत्त वापत्त चर्ते हैं । (मा
यिर्याहि) सुरे तीर्थं कर । (त्वा यिर्यार्थ शूलोमि)
देखे लैव वावरताम् अर्के उपरात हैं । ऐ (शूक) स्मर्य
वर्य । (मम धीः यमस्तुती वस्तु) मेरी शूदि शूर्म
वर्यमें यैव रहनेवाली हो । ऐ इत्र । (वृषुविर्व मग्न मा
वा मर) उन देखेवासा मधव इसारे यित्र बारे ॥ २ ॥

(क. १ ४१२)

ऐस्त्र । (जनाः ममस्त्वेषु संवत्स्याना) जाग
देखेवारे ऐ (सर्वीके त्वयि विहृप्यस्ते) कुरुते दुष्टे
उपरात हैं । (भव यः वृष्यिष्मात्) यदा तो हृष्णवापत्त
उत्तरात है (पुरुष हृष्णते) एव इत्र उपरी यित्र वापत्त
ते (वृषुविर्वता सर्वये शूराः श विष्टि) शोम रथ न
विद्युत्तेवाक्तं शाव शर इत्र यित्रता नहीं उत्तरा वावरता
एव ॥ ३ ॥ (क. १ ४१४)

(यः व्यावधान्) वा व्रद्वन इत्येवात् (वृहुत्ते व्यावधं
पम् म) एव रुपुष पत्ती तथा (तीयाशु सोमाम्
वा सुषाति) तीव शोमत्व निकावता है (तस्मै भद्र

प्राता) उहके सिमे दिवके सुरेषेदे समव (सुतुकान् च
प्रान् शश्वन् मि युषति) उत्तम उंडावामे और उच्च
वापत्तामे संतुष्मोदो मी वह इत्र इत्र रहता है और (वृष
वाहित) इत्रवै-वैतेवासे संतुष्मो-मारत्य है ॥ ५ ॥

(क. १ ४१५)

(परिमन्त्र इत्ये वर्य शूक विष्टि) यित्र इत्येष्टे इम
वर्यान् शूक चर्ते वा गारे हैं (यः मधवा अस्मे व्याव
यिर्यार्थ) वा इत्र इसारे यित्रमें यैव रथता है (अस्प
वाहुः आरात् वित् सन् भयतो) उत्ता यत्र दुष्टे मी
इत्रे रथता है (अस्मे शुभा व्यावया नि नमस्तो) इत्र
वामने मामवोडे दंपत्तेके दारे तेव यित्र होइ रहेहैं ॥ ६ ॥

(क. १ ४१६)

(शूरुष आरात् दूर्त) एतुषो द्वैषे इत्र है (पुरुद्वृत)
पुरुषे इत्र उपरी यैवेवासे इत्र । (यः व्रद्व शश्व-
तेव) तो दृष्माण उत्त पत्त है उपरी (यः व्यावध) मार
वर इत्र है । ऐ इत्र । (प्रद्वम यवत्त गोमद्व भेदित)
इत्रे तो और यैवेवासे शाव रहनेवाला यैव है । (अतिथे
यित्र व्यावधान्ता इत्रि) न्योग्यो यित्र वर्यावी कुटिथा
वर वर इत्येष्टे पुरुष इत्र ॥ ७ ॥ (क. १ ४१६)

(वृषस्वासः य भग्नः) वृषाव इत्रैषे भग्नः
(तीयाशु सोमा वृहुत्तात्तासः) तीव य वृहुत्तात्ता

उत् प्राहमर्तिदीवा सपति कृतमिष्प श्रमी वि विनोदि कृत्वा ले ।
यो देवकामो न चर्ने ल्यादि समितं रायः सुवति खचामिः || ९ ||
गोमिभिरेमामिं दुरेषां यजेन था शुर्वं पुराहत् विद्ये ।
सुप राज्ञसु प्रषुमा घनान्मरिदासो वृक्षनीभिर्भयेम || १० ||
सृहस्पतिनः परिं पातु पुषादुलोचरस्मादचरदप्तायोः ।
इन्द्रोः पुरस्तादुत मैष्यतो नः सखा सखिम्यो वरीयः कृणोतु || ११ || (५५)

[सूक्त १०]

(श्लोक — १-३ भवावा । वेदता — शृहस्पतिः ।)

यो अद्विभित्येष्मद्वा अतावा शृहस्पतिराङ्गिरसो इविष्मान् ।
द्विर्मैज्ञमा प्राप्तमूसित्पिता नु आ रोदेसी वृप्तमो रोरवीति || १ ||

(प्रथमन्) गवे । (पथया दामार्तं म यह वि पत्तत्) पत्ताव इन्द्र वर्णे इन्द्रो वृद्ध येव्या (सुखमें भूरि पाये नि यहति) शेवरव विद्यमनेवासेके विने वृहत वन देता है ॥ ४ ॥ (क. १ ४११८)

—१ देखो वर्ष ४१६ (५१) ॥ ५-७ ॥

११ देखो वर्ष ४११ (५१) ॥ १ ॥

इस सूक्तमें इन्द्र वे गुण विवरिते हैं—

१ प्रसुमा नृष्ट शुर्वं प्रश्नद्याय याप्त्याप्त्य— यम वाद इन्द्र इन्द्रभ यम देखेके लिने वरित वर ।

२ यथा विभित्येष्मद्वा अट्योमि— न तीर्त्य वरन्वाना इ एवा मैं दुवाहा हूँ ।

३ प्रमुदिष्य भर्ते मा भर— वनसे भीत्यूर्वं भाव देये ला द ।

४ ममसर्वेषु संत्याना जना समिक्ति त्वा विद्य प्रथ— तुदीमें यह है वाव तुदीदे वर्ष तुम उदावनार्थ दुपत है ।

५ युध वृष्टते— यह विव वरता है ।

६ प्रतुक्षाय खप्ताय् (पु भ्रम्यान) यात्रन् वि गुवति— उत्तम व र उत्तमात्म और उत्तम उत्तमात्मे यह भा भी वह ए वरता है ।

७ शुर्वं इवित— इत्या वारता है वेदेवासे यहुदे वारता है ।

८ वस्य शुभुः भारात् विग् सन् मयता— १० स्वरके शुभु एके सी इस्त्वे दरते हैं ।

९ भस्मै शुभ्मा जन्म्या नि समर्था— इसके सम्मेवानवेदों को वेदसी इवान नम होते हैं ।

१० हे पुराहत् ! या उद्या यामद्वा लेव भारात् शुर्वं दुर्व अप वाप्यय— दे वृद्धों इत्या उद्यावे जोतेवाहे इत् । या तुम्हारा रम वर्ष है इस्त्वे दुर्वे ही एवुदों परामृत वर ।

११ भस्मै यवमत् गोमत् भेदि— हैं वो भी दुर्व वन द ।

१२ वरित्ये विष्य यावरत्वा शुभि— लेवत्ये उपित्ये भव भीर एवेत्ये तुष्ट वर ।

१३ मयवा दामार्तं म नि यैसद्य— इव इन्द्रो वाजा नहीं ।

१४ सुख्यते भूरि पाये नि यहति— याप्त्याप्त्य ४३५ वत्तम वन देता है ।

(सूक्त १०)

(या अद्विभित्) या वाती विद्यो लेवेवाना (प्रथमवा) वर्ष इवाव (जन्माया) वानवा है ५५, (द्वितीयाव) इवेते तुष्ट (भौमित्यसः वद्यपतिः) भौमित्य तुष्ट वृद्धति (विवाहया) वो वावेवाना (प्रमेसद्) वरवान्वानमें लेवेवात्म (मा विना) इवा विना (तृप्तया) वरवान् (रोदेसी भा रातपाति) वो भीर तुरांद व रमे वाव ताव वरता है ॥ १ ॥ (क. १ ४११९)

बनीय चिद ईर्ष्य उ लोक बृहस्पतिर्भवहृष्टी खफार ।

मन्त्रुत्राणि वि पुरो दर्दीति चय लक्ष्मिन्नाम्नसु साहन् ॥ २ ॥

बृहस्पतिः समभयद्वर्थनि महो त्रिवान्गोमंतो द्रुव पृष्ठः ।

बृपः सिपासुन्स्वरुप्रीतो बृहस्पतिर्भवहृष्टमङ्गेः ॥ ३ ॥ (५३०)

० इति सप्तमोऽनुषाका ॥ ७ ॥

[श्ल ११]

(कथि : — १-१२ अयास्या । देवता — बृहस्पतिः ।)

इमां चिये सुसक्षीप्तर्णि पिता ने ऋतुप्रेवार्ता बृहत्तीमविन्दद ।

त्रुरीये स्वज्ञनयद्विश्वर्वन्योऽपास्य उक्ष्यमिन्द्राय पर्वते ॥ १ ॥

ऋतु पर्वते ऋतु दीप्त्याना द्विवस्युत्रासु असुरस्य वीराः ।

वियं पुदमङ्गिरसो दधाना युष्मस्य धामे प्रयुम मनन्तु ॥ २ ॥

(या बृहस्पति । ईर्ष्ये ज्ञाय चितु खोक उ) यह
प्रतीति इतम बोलोदि किमे इत्य इत्य (देवद्वातौ चकार)
ऐसे है इत्य इत्य एकमें इत्य में भरता है । (त्रुत्राणि प्रथा)
ऐसे है मारता है (पुरा वि दर्दीति) इत्युक्ते किमोद्ये
देवता है (यात्रम् चर्यत्) इत्युक्ते बोलता है और
(अमितान् पूर्वम् चाहम्) उप्राप्तोंमें अमितोंके परामृत
भरता है ॥ ० ॥ (अ १०३१)

(बृहस्पति । वृष्णुति समव्ययत्) बृहस्पतिर्भवहृष्टे
योग्यं चिन्मा । (एव देवः महो गोमता चत्वार्) एव
देवते वहे गोमांशके वाहनोंमें भरता । (अयः सिपासक्)
योग्यं मातृ चरणा चाहा और (स्व) प्रदायाशो प्राप्त करना
यथा (अपर्णितिः बृहस्पतिः) विष्णु न इत्येवं बृहस्पतिर्भवे
(वहे) अमितिं दक्षिण्) स्तोत्रोद्देवोद्देवोद्देव-पृष्ठोद्देवाय ॥ १ ॥
(अ १०३१)

इत्य अप्तिर्भवे तु एव इत्य उक्तमें वहे हैं—

१ अप्तिमित् ज्ञातावा पर्वतस् इविप्याद् बृपमः
दिवस्याप्तिमित् ज्ञातावा पर्वतस् इविप्याद् बृपमः
योग्यं चरेव यहे वहे तेजेवामा द्विवेषु प्रक इत्याद् तेजो
योग्यं चरेव यहे तेजेवामा द्विवेषु प्रक इत्याद् तेजो
योग्यं चरेव यहे तेजेवामा ।

२ बृत्राणि प्रथ— इत्योहो मारता है ।

३ पुरा दर्दीति— इत्युक्ते किमोद्ये बोलता है ।

४ यात्रु चर्यत्— उक्तमें बीतता है ।

५ अमितान् पूर्वम् चाहन्— इत्युक्ते उक्तमें परामृत
भरता है ।

६ बृहस्पतिः वृष्णुमि समव्ययत्— बृहस्पति भवेत्यों
बीतता है ।

७ एव देवः महो गोमता चत्वार् समव्ययत्— एव
देवते वहे गोमांशके वाहनोंमें भरता ।

८ अप्रतीतिः बृहस्पति भवेत् अमितिं दक्षिण्— वहे
न इत्येवं बृहस्पति भवते तेजस्ती चाप्तामें उक्तमें भरता
है । अप्ते— दक्षिण् तेजस्ती चाप्ता ।

९ याहा सप्तम अनुषाक समाप्त ॥

(श्ल १२)

(मा पिता) इमरे विताने (इमां सप्तमीप्तर्णि ऋतु-
प्रवार्ता बृहत्ती पिर्य) इव तत्त्व चितेवामी ऋतु-
प्रवार्ता बृहत्ती लक्ष्मिते (अप्तिमित्) प्राप्त किमा । (अयासः
इत्याप्त इत्य योसद्) यत्तास्मै इत्येवं चित्ये लक्ष्मिते
चरण (विभवत्ययत्) तत्त्व चालीय इति इत्येवं इत्याप्ते
(त्रुरीये चित्य ज्ञातयत्) चाप्तमो विर्यात् किमा ॥ १ ॥
(अ १०३१)

(ऋतु द्वंसता) कृतो इत्येवं (कृतु दीप्त्यात्मा)
दर्श इत्येवं योग्येवं (असुरस्य वीरा) वर्तमाने
वीर (दिवस्युत्रास) युक्ते उप (वियं पर चाप्ता)

हैंसेरिंग सद्विभिर्बाह्यदक्षिणम्भानि नहींना व्यस्तन् ।
 पृष्ठस्पतिरभिक्ष्मनिकदुद्धा उत्र प्रास्त्रोदुर्व विद्वां अगायत्
 अथो द्वाभ्यां पर एकपा गा गुडा विष्टुन्तीरनृस्त्रय सेवो ।
 पृष्ठस्पतिस्तम्भसि ज्योरिंगिष्टुमुदुस्त्रा याकुर्वि हि तिस्त्र आवः
 विभिण्या पुर्व छ्रयेमयोधी निख्यायि सुकम्भुभेरकन्तर् ।
 पृष्ठस्पतिरुपस् सर्पं गामुर्क विवेद स्तुनयेभित्र थोः
 इन्द्रो वृल रथिवार दुघीना क्षरेष्वेषु वि चकर्तु रवेष ।
 सेदाङ्गिभिराश्चिरभिष्टमानोऽरोदमस्त्रियमा गा वृमुष्णात्
 स हि सुखेभिः सद्विभिः शुचद्विग्नोधीयसु वि धनुसैरदर्दः ।
 ग्रद्याणस्पतिर्वृष्टिर्भिर्वृत्तैर्भृत्यस्तेदभिर्विभिं व्यानिद्
 ते सुखेन मनस्त्रा गोपति गा ईयानासै इपत्यन्त धीभिः ।
 पृष्ठस्पतिभिर्योजवयेभिरुद्धस्त्रीयो वसुम्भव छ्रयुग्मिः

अगिरस!) विप्रम पर यात्र वर्णेदाम भोगत्सेने
 (यद्यस्य धाम प्रथम मनस्त) वहेद विदम प्रवस मनव
 दिले अक्षा माते ॥२॥ (क. १ १५३)

(दूसे: इ) दोनों समाज (वायव्याक्रिया संस्थानिया) वोल्टेजसे मिलते ही ताप [पर्सनल ताप] (भद्रमग्नियालिंग नहमा वयस्यन्) परवाहे बग्गनोंपरी कोलकार (पृष्ठस्पतिति गा: भार्मिकनिकृत्) इहस्तेतें गीर्भी और बर्बना की (दृष्ट प्रासौरित्) और रुटि की (पिचाम, उत्त भाषा यत्) आश्वत द्वार उधीने तथ लार्डे काबन दिया ॥ १ ॥

(यथा द्वारायां) नीवे देखोकि बात (पर एक या) और पर एडेंट बात (शुद्ध निष्पत्ति: मनुतरस्य सेता) प्रदर्शन करता है देखेगा। (तिथा: या) तीव्र सौभाग्य (चूहरस्पति: तमसि उपतिः इच्छा) दृश्यतिन जाप बात लेकर १ वा २५ (माया वि भास्त्र) ग्रन्थ दिया ॥ ८ ॥ (अ १ १६४)

(मायार्थी पुर विभिन्न) विभिन्न विकास लाभदार (हा
शायय) पाह इच्छा (मायार्थीलि उद्देश्यः अस्तुत्तम्)
लाभ वाप सोन वा बहुमते विभिन्नात् (या) इव स्वामयन्
द्युष्ट वस्त्रं सर्वं हृष्टं प्रसरण्ति । विभिन्ने (उपर्युक्ते

मूर्ये गाँ) जा सुर्ये गा वोर (अक्षे लियेह) निरुपये
जास लिया ॥५॥ (क. १ १०८)

(इम्दू तुपानी रसितारे वक्त) इन्हें यो बड़ी रहन
वरेवासे वराधे (करेप इव रथेण वि वर्षता) इन्हें
एवा वर्षता से अवगत। (स्वेदाक्षिभिः शास्त्रियर इष्टप्राप्ताः)
आम् वृत्तोंताले मरुपांके शब्द तुपानाही इष्टा करनेवाले इन्हें
(गाः ममुपाणात्) यो भोक्ता छिन विद्या और (परिं ज्ञा
भरोदयत) पवित्रो ममथा ॥ १ ॥ (अ १ १५०५)

(सः है) उल्लेख (संरेपिति शुचिद्धि) अनुसे
संखिप्तिः इस छापि वक्ते इन उल्लेखों की विज्ञो [वस्तो]
के साथ रहकर (गा-घायस वि अहै) नीतोंसे एवं
एव उल्लेखों [कल] का आठ रिका । (ब्रह्मपरम्परिः
परम्भद्वयेष्विति पराहै शूष्यमिति) मध्यपरम्परिते वर्तमे एव
रिकरत आवा है ऐस वस्ताव वस्तवाहू [वस्तो] के इस
(श्रूपिते श्वासमट) वस्ता मात्र रिका ॥ ५ ॥

(त गाः इयानासाः) व गोलोऽग्न वरते दुर
 (स्वयनं ममसा) वग्ने वरवे (धीमिः गोपति इच्छ
 यात्) भृतु कुपिके गोलोऽग्न वरिती इच्छ वरते दुर
 (पूद्दशपति: सप्तश्चेमिः इच्छुमिः) दृष्टिलिपिर्वेष
 शन वर्णेनान् विनोदे वाच (उत्तियाः भारतज्ञ) वीभाद
 पात्र दिवा ॥ १ ॥ (५८)

त वृष्टयन्वा पुनिभिः यिषामि सिहमिष नानेदत् सुघच्चे ।

पृहस्पति पृष्ठेण शूरसात्रौ मरेमेरे अनु मदेम त्रिष्णुम् ॥ ९ ॥

पुरा वाज्मस्तनदिश्वरूपमा यामरुषदूराणि सर्वे ।

पृहस्पति वर्यण वर्षये तो नाना सन्ता विभ्रंशो ज्योतिरासा ॥ १० ॥

मुस्यामात्रिः कृषुपा ययोर्वे क्षीरि चिदपर्वत स्वेमिर्वैः ।

पुष्पा मृघो अपे भवन्तु पिशालद्रोदमी जगुत् विश्मिन्ने ॥ ११ ॥

१८५ इन्द्रो मद्वा मद्वते अर्जिवस्य वि मर्षानेमाभिनदर्शदस्य ।

અદમહિમરણાત્તસમ સિધુન્દેવૈધીયાપથિવી પ્રાર્થના: ॥ ૧૩ ॥ (૫૩)

(संप्रदये सिद्ध नामदत्त हय) समावेश के समान
प्रयोग हुके रहाया। शिवायमि मतिभिः सं प्रथमतः ।
एव नोरोते वृषभा वदत् हय (पूर्ण किरण्यं पूर्वस्पृहितं)
व्यार वदयन्ति वृशतिष्ठे (मर भरे शूरसाती अनु-
पूर्व) ॥ यह हुके रहीय विद्व देवाक गायबो आवाह
प्रोक्षा थो ॥ (स. १ ५७)

(परा विष्यवस्था पांडी भसमत्) एव उपेन पर
भगवेदं वसो लोका आदि (बहुराति सम्बन्ध पांडी भसमत्)
एव एव एव एव एव एव एव (भूषण वृद्धिप्रति
वृद्धिः) वसानो वृद्धिवृद्धिः वृद्धन द्वृष्टे (आत्मा
वृद्धिः विद्युतः सम्भासाना) मुतुष्व उक्तिप्रवाचन
एव ॥ १ ॥ ४

(का १ ५१) (वाटिय संयोग्यता) आधरादेश गवा ही॥
 (संयोगः पर्ये पर्योग्य कीरि इयत् हि अपय) वापु
 एष वाप वर्तेन्द्री अतनो यात्येव विदिर रक्षा ददो।
 (विभ्या गृह्या पश्या लप अपयत्तु) पश लप शोउ अप
 ॥॥ (विभ्ये इप राहम्भी) पश्य व लप्त्वा पूर्वा
 ॥॥ (अपयत्तु) वहि प्रत्यना पुने ५ ११६
 (८) (५१)

(प्रदानमदा) रामवत्ता विश्वामित्र (महाकाल
यज्ञ प्रदानम) वह न है यह एक विश्वा
(प्रदानमेव मध्यिकात्) विश्वा वा (विश्वामित्र)
एव (विश्वामित्रमध्यिकात्) विश्वा वा विश्वा
विश्वा (विश्वामित्रमध्यिकात्) विश्वा वा विश्वा
विश्वा (विश्वामित्रमध्यिकात्) विश्वा वा विश्वा

इह दूसरे विद्युति आर इम्पेक्टे के गुण इनमें हैं—
 १. सीपिएटी इम्पेलिप्टी स्ट्रोमलास्टी बहुतीय
 अधिक्षम्भुत्ता— इसका विना-प्रूफर्टिं-वा शान फिरी
 जानी सामग्री के प्रतिक्रिया दरी कुछ बहुत थी। सम-
 ग्रीष्मा थी— मात्र सिरोदर्शी कुछ इम्पेटि वा आवा-
 य वाला दा थाई एह मुख्य प्रिवेट यन्त्रणालादे शान दिल-
 ा। इह यन्त्रणा अविहावन दोनों विधियाँ। एह वह वही
 अब विद्युतिका नहीं है। इसमें या गुणाएँ वह विद्युतिके
 दो विधियाँ हैं। विद्युती व छठ अपिव वाय दो।

इस सूत्राः कृष्ण वदते । अवाप्य चागिरसाः
पात् एव लक्ष्मीमात्रा गेत् वर्णिताः । इन वचनोंमें
पिता देवा तिन हेता पर्वतः च वहितः च च
त्रिमुखोऽपि देवाः प्राप्ताः ।

४ पाददाता विविध भवनावदि वहन
देश— देशेन | यो या व वहनावदि +
या = वहनावदि ता विविध वहन

[सूक्त १२]

(ज्ञायिः — १-१५ ग्रन्थमेष्टा, १६-१८ पुरुषास्त्रा । देवता — राम(१)

अमि प गोपति गिरेन्द्रमर्थं यथा विदे	१
आ हरयः समृज्जिरेऽरुद्धीरविं वृहिवि	२
इन्द्राण्य यावे वाश्चिरं दुद्वारे वृजिणे मधुं	३
उघदमभस्त्वं विष्टैर्य गृहमिन्द्रम् भन्वहि	४
अर्चेत् प्रार्चेत् विष्मेवासो बर्चेत्	५
सूरुं सूखस्य सर्वतिम्	
वश्रामि सुनवामहे	
यस्तीष्वपद्मे विदत्	
मस्त्वः पीत्वा संचेष्टहि विः सुस सस्युः पदे	
मर्येन्दु पुत्रका उत पुर न धृष्टवर्चित	

पूरस्यामि वर्षना वर्के पीलोंचे तुवाचा । अर्थात् अहुदेहि
पीलोंचे तुराचर पालटेहि क्वळे दिलेसे रशी पी । पूरस्यामि
मध्येहि हाप दे घेऊ सुहो शंकर पीलोंचे तुवाचा ।

५ अब द्वारा स्पृष्टि पर एक या शुद्धा तिष्ठती अनुवस्थि
सेतो तिक्षणा गा। बृहस्पति स्मरेति। इच्छन् आवा-
दि आका— दो ज्ञे एक वरे देशो अस्तवाये शुद्धम् एवै
यस्ती उत्तमायादि दुहके विविधाये दीप जीवे भी बृहस्पतिने
उपेतीये इत्या द्वे ओर तल दीपोंको विवर लियाता।

महा प्रकाश किमें नीचे प्रतीत हो रही है। इसके सूर्य वर्ष
पर रहा है और प्रकाश किमें स्थी पौरी अनुभवात् अरथ
किसी रहती है। एवं यह हीते ही जन्मगमन। किमा एवं
आता है और प्रकाश की किमें बाहर आती है। यह जागृत-
किमि वर्षम् भावों के द्वेष जलत हो रहा है।

१ पूर्वपति उपर्युक्तं सूर्यं गां नमः चिवेद—पूर्व
तिमे रथा एवं या (चिव) और चिपुराये प्रातः किला।
इसके प्रथम चिर्मे थीं तो है प्रातः प्रतीत होया ॥

३ इन्हे वही दि बहुत सा असुखात्, परं
आदेशप्रत्— इन्हें कहे माए जैवोंचे हृषका विका-
सन्न।

इस बीर परिव में पोलोधे चुरानेवाले हैं इनमें सभ्ये
मात्र गोरे प्रकाश की ओर विद्युत की स्वरवा । गोरे इन्होंने प्रकाश की
इच्छिक विधि देने लगे ।

८ स: संखियः गो धायर्त वि भद्रः— इष्टे
इत्यनेकाने मित्रो-मक्षीये हाता दीर्घो विद्वद् रुपे
वाक्येष्ये मात्र दिष्टा ।

१. शुभमि द्रविर्य व्यावह— एकाम् भक्तोंदे इष्ट
पत्रसे इष्ट शान्त चित्त। यत् वीर परि है तत् है इनको

पद्मभूत करेके उनमध्य वह इन्होने वा वृत्तस्थितिे जपते ब्रह्मीन
मिला। यशस्व यजु यजु वा वा वृत्तस्थितिः विभव ही है।

१० बुधव विष्णु वृत्त्याति मरे भरे शूसती
अनु मरेम— वल्लाद वीतनेवार्थ वृत्त्यातिका प्रकैक अमर्त्ये
वहा धर पुरुषोंका ही भ्रम होता है इष्ट मुख्यमें इष्ट वृद्धिमोर्च
हो।

१७ ब्रूपर्वं दृष्टस्यति वर्धयन्ता।— अमारुः ब्रूपर्विति
ये इप स्थापित भूरेष उच्ची महिमादो वदते हैं।

१२ हन्द्र महा वर्षास्त्य सूर्योति वि अमिनत्—
इत्तमे अरणी महा वर्षास्ते वर्षास्ते विरक्षे काट ।

१५ बाहुः महान्— जहिसे मारा ।

१४ सप्त सिष्यम् अरिष्टात्— वह वर्षानि
व्याप्ता ।

कानुभे मारा और निर्दोषे व्यापा । इन नर्मदोंते वे क्यु
में वा पहाड़पर बड़नेहाका वर्ष है ऐसा प्रतीत होता है ।

(सूक्त ११) ।-१ देवो लभ्यते १२११४ ६ (अ. ११११४-६)
 (पदु प्रस्त्रय विषय पूर्वे) एव अन्तर्भेदात् तृष्णि
 द्वै सामग्रं (सम्मान च) एव भीर मै (उड गम्भाहि)
 एव (मात्रा वीरता) मपुर शोमरव वीरा (सक्षमा चि
 सप्त पदे सामेहाहि) एव दोनो सुवाक्षे सामग्रं हीन एव
 क्षमा ३१ अ. १२११४ ५ (अ. ११११४)

(अर्क्षत मार्क्षत) व्यापका की वह ज्ञातना की।
 (प्रियेमधारा : मर्क्षत) हे यिम केवो व्यापका की (उत्त पुष्टका : अर्क्षन्तु) लेरे व्ये दी ज्ञातना की। (बृह्ण पुरु न मर्क्षत) वह अवेद फिला हे देगा मावदर व्यापका की। (अ. १११८)

अर्थ स्तुराति गरीरो गोचा परि सुनिष्पण्टु । पिङ्गा परि चनिष्कुदिन्त्रायु प्रसोष्टवम् ॥ ६ ॥
या पत्पत्तन्स्तेन्त्वः सुदुचा अनेपस्फुरः । अपुस्फुरे गृभायतु सोमुमिद्रोयु पात्रे ॥ ७ ॥
अपादिन्द्रो अपादुमिविष्टे क्रेषा अमस्तु ।

८४३ इदिह श्वयुचमावौ लुम्यग्निष्ट वृत्त्स सुषिखरीरिव ॥ ८ ॥

सुदुचा असि वरुण यस्य से सुत्त सिंचेव । अनश्वरन्ति काहुदं सुम्प्यु सुप्तिरामिष
यो व्यस्तीरक्षोपत्सुक्ष्मो उप दाशुरेव । तुको नेता वदिष्वपुरुपमा यो अमुष्यत ॥ ९ ॥

मरीरु सुक ओहत इद्वो विश्वा अति द्विवेः । मिनस्तुलीन ओदुन पञ्चमीन पुरो गिरा ॥ १० ॥
वर्मणो न हुमारकोडधिं विष्टुम्पुरं रथम् । स पष्ठन्महिष्य मूर्णं पित्रे मात्रे विमुक्तुम् ॥ ११ ॥

आ त् सुषिप्र दंपते रथं विष्टा हिरुण्ययम् ।

बधे प्रथ संचेवाहि सुहस्तिपादमलुप स्तस्तिगामीनेहस्तम् ॥ १२ ॥

८ वैर्मित्या नेमस्त्विनु उप स्तुराज्ञमासते । अर्थे विदस्यु सुवित्तु मदेत्वं आवर्तयेन्ति द्रुवने ॥ १४ ॥

(परा अव त्वराति) बोचा अव रही है (गोचा परि सुनिष्पण्टु) त्वरेने भार मिलाया है (पिंगा परि चनिष्कुदिन्त्रायु) भूतुर जातवेवे भासाप मिलाये हैं (इन्द्राय पथ वद्यतम्) इन्द्रेवे लिये स्तोत्र यादे जा रहे हैं ॥ १ ॥
(कृ. ८४३११)

(पृष्ठ एवं पुरुषाः अमपस्फुरा) अव रोदात्मी रथ इव देवात्मी न विक्षेपात्मी (अवपस्फुर या पत्तिविष्टुत्) अवत व द्वीनेवात्मी योर्म भासर इव मिलायी है (इन्द्राय पात्रे सोमे गृभायत) इन्द्रेवे लिये विष्टे वाप्ता पाप रहे ॥ २ ॥
(कृ. ८४३११)

(इन्द्रः अपात्) इन्द्रेवे विष्टा है (अस्ति अपात्) अप्येवे लिया है (विष्टे देवा : अमस्तुत) उप देवात्मी वाप्तम इवाय है । (वदाया : इह इह सप्तत्) अव तोऽपि (तो) है । (यापाः हं अवप्यनुपत) अव एव रहते हर अव रहीव विष्टा है (सतिष्मितीः वस्ते इव) योर्म वैद्य वदेवे वाप वाप्ता है ॥ ३ ॥
(कृ. ८४३११)

१६ (वदाया : सुरेयः अस्ति) वदाया । त् रथव देव है ।
(सप्त सिष्पण्टः यस्य ते काहुदं अनुस्तराति) आत यीर्ता विष्टये लाहुदी भोर वाती है (सूम्य सुप्तिरायु) वैद्य वद एव सुरेयात्मी होती है ॥ ४ ॥
(कृ. ८४३११)

(या : इन्द्रायु रथ) यो वाक्ये वात (सुपुकाम् पत्तीद अकायवत्) उत्त तुं देव द्वीनेवात्मी वाप्तात्मी ।

१७ (वदेव मात्र वाप २)

वाता है, (सकः लेता) वह देव लेता है (तदृष्ट वपुः इपमा) वह एक दम्पा रथे यस्त वीका धारी है (या : अमुष्यत) जो तुरोके द्वारा द्वारा वाता है । इप वदेव वद नहीं वक्ते ॥ १ ॥ ४ ॥ (कृ. ८४३११)

(शकः इन्द्रः) लामदर्शत् इत्र (विभ्वा विष्टः) सप्त अमुष्योऽवे (भवति इत् भवति माहसे) रथ वाता है । (कृतिः) जाते होते हुए उम इत्वा (गिरा पद्यमात ओदर्सं पत्ते मित्तत्) इन्द्रेवे वदनेवात्मा लोहव-पैद-पैद लाप दिया ॥ १ ॥ ५ ॥ (कृ. ८४३१२)

(अर्महः कुमारकः म लव रथं भविति तिष्ठत्) वहुत तोता वाप्त हावेत भी वह नहे रथव वाप्ता । (सः) वहो (विष्टे मात्रे) अव विष्टा भार मात्रात् विष्टे (विमुक्तुर्महिष्य मूर्ण) वही विष्टात्मी मैत्र वहे सप्तमे (पष्ठम्) वाप्ता [वाप्ते वेष्टा वाप्ता विष्टा] ॥ १ ॥ ६ ॥ (कृ. ८४३१२)

१८ (उत्तिविष्टे लविति) इत्वा इत्वा रथ । है (इत्वा) इत्वा वद वद विष्टे लविति । (दिरुष्यत रथं आ विष्टा) वह वद वद (अप) भी वदायादृष्ट (यु ई लवदृष्ट वाप्त भवते) पुरोद्वै इत्वात्मी वाप्तो विष्टोत्मी वाप्त (अस्तिगाः अवेहसं लवयदिति) वदवदवद वाप्तात्मी विष्टात्मा [वूर्त्ते विष्टेवे] ॥ १ ॥ ६ ॥ (कृ. ८४३१२)

(त लवात्मी यु ई लवया उप मात्राते) इव लवा यु देवी वाप्तात्मा वहत है (अमविष्ट) भू वदही वदवद

[सूक्त ९२]

(क्राचि — १-११ प्रियमेषा, १५-११ पुरुहस्ता । वेषता — इन्द्र ॥ १ ॥)

अभि प गोपति गिरेन्द्रमर्च यथा विदे	। सूर्यु सूस्यस्य सत्पतिम्	॥ १ ॥
वा हरेः ससृतिरेऽर्थीरपि बहिति	। यश्चामि सुनवामहे	॥ २ ॥
हन्त्राय यामि आश्चिर्व दुदुरे विभिन्ने मधु	। यस्सीमुपहुरे विदत्	॥ ३ ॥
उपद्वृप्रस्त्वे विष्णुं गृहमिन्द्रस्य गन्वहि	। मध्यः पीत्वा संचेष्टहि श्रिः सुप्त सस्मृः पदे ॥ ४ ॥	
मर्चेत् प्रार्थेत् प्रियमेषामो मर्चेत्	। अर्चेन्दु पुष्टका उतु पुरु न पूष्ट्वर्चते ॥ ५ ॥	

पुरुहस्तिने वर्षता वर्के योगोधे तुवाता । वर्षात् वस्त्रोमि वेषति तुवात् वस्त्रोमि वेष विलेपे रथी थी । वृहस्तिने परस्ति द्वारा वेषिते तेजे और योगोधे तुवाता ।

५ अब श्राम्यो पर पक्षया तुवा तिप्पुर्वी अमृतस्य सेतो तिष्ठा पापा तुवाहस्ति । अपोति इष्टदृष्ट वावा विभावः— दो थे एक वे ऐसी वरस्तामें आते हुए वाही व्यवसायी तुवाके विभावये तीन योगे वा वृहस्तिने घोटाये इत्या थी और उन योगोंको बाहर निष्पत्ता ।

वहां प्रकाश विलेपे योगे रथीत हो रही है । इनके एक वर्ण और रहता है और प्रकाश विलेप की नील वर्णवाके वरस्त विली रहती है । व्यवस्त द्वारे ही व्यवस्ताका विला तुव वावा दे और प्रकाशकी विलेप वावा आती है । वह वार्षेय विवरण वहां है ऐसा प्रतीत हो रहा है ।

६ तुवाहस्ति वप्तसं सूर्यं गां वर्चे विवेद— तुवात्प लिमे तथा, तुवं गा (विष्णु) और तिष्ठुरुमे यह विला । इससे प्रकाश विलेप योग है ऐसा प्रतीत होता है ।

७ इन्द्रः विव वावते पाः अमृत्यात्, परिव वारोदयत्— इन्द्रे वक्तो मारा गौमोधे तुवात् विलेप स्वयम् ।

८ वह वीर विव के योगोधे तुवात्वाले हैं इन्द्रे वक्तो मारा योगे वापस भी और विलेप स्वयम् । योगे इन्द्रे वापस भी इस्तिने विव हैं लहे ।

९ स्तः सवित्रि गो धायस्त विव अवर्त— तुव इन्द्रे विलेपे विश्वो-मर्चति द्वारा योगोधे व्यवस्त त्वन् विलेपे यह विव ।

१० तुवाहस्ति व्यवस्त— व्यवस्त विलेपे तुवाता विला । वह और विलेप विला है ऐसा मारवर व्यवस्ता

परामृत वर्के व्यवस्त वह इन्द्रने वा वृहस्तिने वर्के वार्षित विला । तुवात् वह इन्द्रा वह तुवातीतिवा विलम ही है ।

१० तुवात्प विष्णुं तुवाहस्ति भरे भरे शूरसाती अमु वर्केम— व्यवस्त विलेपाते वृहस्तिका प्रलेप तुवात्प वह और तुवात्प की अम होता है उस तुवात्पे हम तुवातीत वर्के ।

११ तुवात्प तुवाहस्ति वर्षयस्त— व्यवस्त वृहस्तिं थे हम तुवात्प करके विलेप वाय ।

१२ इन्द्र भद्रा अमृतस्य सूर्योर्च विव अमिवत्— इन्द्रे वक्ती भद्रा विलेप वर्के विलेप वाय ।

१३ वावः भद्रम्— विलेप मारा ।

१४ सत सिंधूम् भरिष्यात्— वह विलेपे वावा ।

तुवात्पे मारा और विलेपे वावा । इन विलोते वे वर्के में का प्राक्षर विलेपाका वर्क है ऐसा प्रतीत होता है ।

(सूक्त ९२)

१-२ वेषो वर्चते १ १२३४ ६ (कृ. १११४ ६)

(यह वृहस्त्य विष्णुं गृहे) वह विलेपाते तुवात्पे वर्के व्यवस्त विलेप (व्यवस्त) इन और मैं (तुव व्यवस्ति) वहे (मर्चतः पीत्वा) पूर्व वोमत्व पीत्व (सस्मृः विव सप्त पदे सवेष्टहि) हम योगे विलेपे व्यवस्त तीन वर्क सात-११ वह इन्द्रे हृष प ४ ॥ (कृ. १११४ ६)

(वर्चते प्रार्थत) व्यवस्ता वहो वह व्यवस्ता करो । (प्रियेष्वासातः वर्चते) हे विव वेषो व्यवस्ता वहो (तुव तुवात्पका वर्चतेरु) वेषे भी व्यवस्ता वहो । (तुवात्पे पुरु व वर्चते) वह विवेप विला है ऐसा मारवर व्यवस्ता वहो ॥ ५ ॥ (कृ. १११४ ६)

गायनमें स्वरके साथ

१ गाया। मध्यस्तराति— योवा सर दे रही है गाने के बहुत साथ बोलाका बार मिलता रहे।

२ गोपा परि समिष्टस्त्— कंठरा जारो भोजे कर रहे हैं। चर्माप स्वरवे जार मिलते।

३ विंगा परि वनिष्टदत्— मधुर कारवाक वास्त्राप मिलते और जारमें सर मिलते।

४ इन्द्राय वृष्ण उथर्न— इन्द्रके किंवे खोत्र गाये आय। इस सम्म बोला तंधरा चुरैप (बर्माव) आकाश देवेशाका निरे शब्द हो। खोत्र देखे गये जान।

५ योजाका दृष्ट शोभसङ्क साव विकापा बाय और पवात् ग विना बाय। इन्द्राय पातखे सोम चुकुप्ता। आय उपि— इन्द्रके किंचे किंवे शोभसङ्कमें योनि जाती है, और इस देखी है। शामरसमें जीमोका दृष्ट विकापा बाता है।

६ इन्द्र विम इन देव वरम् इन यज्ञमें शोभसङ्क विना है। (५५ ४)

७ पद्मा। चुवय— वस्त्र वरम् देख है। सप्त विष्णवः। मध्य काङ्क्षे चतुर्स्तरमिति— बाहु नदियों किंचे क्षुक्त चुवयती है। बाहु नदियोंका वस्त्र शोभसङ्कमें मिलता जाता है। वह एव पिंवा जाता है वहके साथ नहीं बल नै वहके सर्व चरता है।

८ चुपुकान् व्यतीन् अकाप्यप्यत् तक् नेता वृष्ट विपामा चमुक्यत्— कृतम गिरित बोहोंकी शोलाना हृष्ट चम्पता है एव वस्त्राद् नेता है वहका लहीं द्विर दे सप्त दृष्ट चतुर्स्त्र छात देते हैं नार्द एवु जटें सदमने नहीं घरता।

९ शादा इन्द्रा विश्वा। द्विपः वति योहृष्ट— अमर्यान् इन्द्र सप्त चतुर्भावो दृष्ट बरता है।

१० वक्तीवा। विरा पद्यमाते योद्दने पात्र विवर्त— इन जोड़ी होता दुखा मी एवु दृष्टे विवित लकड़ धूमे दीक्षा विवर जाता है। वहां जल मूलत है। पा विक्षे विवर इत्य ह। पद्यमाते योद्दन— वहवेशाक्य जल। वेष विवर इत्य होनेवाली ही।

११ मध्यक लव रर्य भविति इष्टन्— वालहोते दुर्व की एव रप्त उत्तम विषेष वहर देखत है। वहवेशे ही वह रप्त है।

१२ चुशिप्र— वरम इन्द्राका उत्तम शाक्ताका इष्ट।

१३ विरक्षयं रर्य आ विष्टु— धूपके रप्तर देख।

१४ चुलं सदास्तापादं अवर ल्लक्षितां अनेहसे संवेषहि— युक्तोंमें इनेवाके इवांतों विरक्षयाके आम इन्द्राका देवेशाकी विवाही गति है। विष्टाप सुर्वये प्रात इर्ये।

१५ स्तराक उप आसते— अव तेवक्षीर्य उपायना दरते हैं। ज्ञातद्वी उपायना दरते हैं।

१६ अस्य चुधित अर्य वावमे आवतयर्ति— इन्द्रके उत्तम उत्तिष्ठे प्रात किंवे बहका दान इत्तेवे किंवे उत्तदे प्रेरित करते हैं। भन उत्तम उत्तिष्ठे प्रात किंवा जाय और वहन्य विभिन्नोप उत्तम शापमें है।

१७ चुक्षकहिंपा वित्तप्रयसा। विष्टमेधासः प्रत्यस्य अवोक्तस चतु धूर्द्ध प्रसिति चतु आशात— आकाश इम्पर बहकी ईताकी वर्मेशास विष्टमेधासे— विष्टो वह बहका विव इ चुम्हें पुराने बहकी उत्तली रीतिके अनुष्ठान वर्षे बहका भरते किंवा। धूर्द्ध प्रतिके अनुष्ठान एव बहना शुरू किंवा।

१८ अर्यवीतीं राजा अधिग्रुः रघेभिः पाता विष्वासीं पुरुषानां लक्ष्या अप्युः पृष्ठां धूपे— योगीकृष्ट राजा इत्यति वर्मेशाका एवं वेठर वर्मेशाका एव उत्तुवोका प्रशस्त वर्मेशाका उपदे भेद भार इत्ये मावेशाका दर्श है। वहरी रुपति हो रही है।

१९ अप्यते ते इन्द्र धूमम्— जपनो धूक्तों किंवे उप इन्द्रार्थं सुप्ति कर।

२० वस्य विष्टतरि वित्ता— विष्टो वात्प्र वात्प्रे दो युव हैं। युवये दृष्ट बहका और वर्मा वैष्टक बहका।

२१ वृद्यता। वित्ता। इस्ताप प्रति भाविः— युवर वह वह वाक्ये लिंग है।

२२ सदाकृष्ट विष्वार्ते लक्ष्यपरम पृष्ठु योजस अधूर्द्ध से इन्द्र चमेणान किंवि वर्मान— वह वर्मेशान वर्मेशा सुप्त वह वर्मेशाने धूम्य प्राप्त वात्प्र वात्प्र सामर्य विवर है। विष्ट विष्टो उप इन्द्राय वात्प्र वात्प्र विवर वर्मेशान वह वर्मेशान।

२३ वर्मान्दर्द उप दृष्टसद्य सासदि वही उप वाया— वर्मेश वर्मान युवाने प्रथम वात्प्र वात्प्र वर्मेश वर्मी वही स्विता हो रही है।

मनु प्रस्त्रस्योऽसः । ग्रियमेषास एषाम् । पूर्णमनु प्रयत्नि बृक्षवैहिषो इतिप्रयस आश्रव ॥ १५ ॥
 यो राक्षो वर्षभीना याता रवेभिरधिंगुः । विश्वासो उल्लता पूर्वमानां ज्वेष्टो यो वृक्षहा गुणे ॥ १६ ॥

इन्द्रं तं झूमं पुरुषन्मुमर्षेऽयस्य द्विता विष्वर्तिरि । ॥ १७ ॥
 इस्ताय वृश्चः प्रति वापि दर्शनो महो द्विते न दूर्यैः ।
 नक्षिट इर्मीका नशुद्धयकारं सुदातृष्टम् । ॥ १८ ॥

इन्द्रं न पुर्वविश्वर्तिर्मम्बैसुमज्ञैष्ट पृष्ठोऽस्तिसम् ।
 अपात्मसुग्रं पूर्णनामु सामुहिं यस्मिन्महीकुञ्जयः । ॥ १९ ॥
 स देनयो वावेमाने अनोनशुर्यामः वामो अनोनशुः ।
 भवत् धावे इन्द्रं ते भूतं भूतं भूमीत्वं स्युः । ॥ २० ॥
 न स्वा विनिस्तात्म दर्शनं अनु न बातमष्टं रोहसी
 आ प्राप्त महिना वृष्टयो वृष्टुनिवारो विष्टु वृत्तेसा । ॥ २१ ॥ (५३)

करते हैं विद्वे (अस्य सुचितं यद्ये वित् परत्वे)
 इन्हें द्वाम अर्थात् प्राप्त करनेके लिये और (वाचने वावर्त
 परम्परा) दान देनेके लिये वक्ष्य इच्छ रोति करते हैं ॥ १४ ॥
 (क. १५११७)

(बृक्ष वार्त्यिः) विन्होने वाचन लैकर है (इति-
 प्रयसः) इन्हें विन्होने लापन किया है वक्षना दित्यर
 मक्षन लिनेके है ऐसे (वियमेषासः) विद्वेशीने (एवा
 प्रस्त्रस्य योक्षसः मनु) इनके पुरामें वरेण अनुसूक्ष (पूर्ण
 प्रयत्नि अनु वाशत) पूर्ण प्रविक्षा प्राप्त किया ॥ १५ ॥
 (क. १५११८)

(यः वर्षणीमां राक्षा) वो यज्ञोद्ध राक्षा है (अधिगुणः) वो आपे वक्षता है, (इयेमि याता) एवोहि
 गो वक्षता है (विश्वासो वृक्षवामी लक्षता) वारी वक्षु
 देनामो वीतेवाम (यः वृक्षहा उपेष्टः एवे) वो इनको
 मारेवाम लिये है वक्षती सुविदी वी वारी है ॥ १६ ॥

(क. १५११९)

हे पुरुषम् । (अवसे त इन्द्रं शुम्म) अपवी पुरुषाके
 लिये इरक्षी रुद्धि कर । (अस्य विष्वर्तिरि विता)
 विष्वर्ति वात्म वाक्षिमे वोती प्रस्त्रर्त्य वक्षना है (विद्वे
 महः मर्त्यां न) वैषा वृक्षामे वृत्त है एव तद् (दर्शनः)

वक्षता) वर्षणीय वक्ष (इत्याप्त प्रति वापि) विद्वे
 इन्हें किया है ॥ १५ ॥ (क. १५११९)

(यः वृक्षाक्ष) विद्वे यह किया है, उष (उदाहृत्य)
 वक्ष वृक्ष वर्षेवाम (विष्वर्तिरि) वर्षे प्रवेशित (वृक्ष
 परम्) वक्ष वर्षे वर्षेवाम (घृष्णु मोद्वर्ते) विद्वी
 परम्परा वर्षेवाम (व वृद्धे) विद्व, (तं इन्द्रं) उष
 इत्यर्थ (वष्टे वृक्षणा) वडोहे वक्षना वर्षेवे (व विद्व
 वक्षता) वर्षे वी वाच वर्ती कर सकता ॥ १६ ॥
 (क. १५१२०)

(अ-वाक्षी उपर्य) अवेद उप (पृष्ठनामु सासादिं)
 उपर्यम वीतेवाम (विश्विन् महीः वृक्षवाप्ता) विद्वे
 वी वक्ष द्विलिं वी वारी है (वायवाने) विद्वे वर्षम
 उपर्य (विश्वदा सं वक्षेवामु) वर्षेवाम विश्विवे द्विलिं
 वी है (वाप्तः व्यामा अमोमतुः) वी और इन्हें
 विद्वद्य द्विलिं वी ॥ १७ ॥ (क. १५१२०)

२-३-११६को वर्षने ॥ १५११-२ (क. १५१२०-१)

इस दृश्यमें नीचे लिखे रखने विद्वेव मनीव है—

१ वक्षत प्रार्वत घृष्णु पूर्ण व वर्षत— वक्षना
 करो द्विलिं वक्षी विद्वी वर्षेवे वमाप उष विद्वी
 मनीव द्विलिं वक्षी ।

२ वृक्षाक्षा वर्षण्टु— ओटे वाम्ह वी वर्षता है ।

[सूक्त १४]

(अथि — १-२१ हस्तः । देवता — इत्याः ।)

या ग्रात्मिन्दुः स्वप्तिर्विर्दीय यो वर्षीया मृतुभानस्तुविष्मान् ।

प्रत्यक्षाणो अति विश्वा सहौस्यपारेण महुता वृष्ट्येन || १ ॥

सुष्टुप्ता रथः सुष्टुप्ता हरी ते मिष्यष्टु वज्रो नृपते वर्षस्तौ ।

वीर्ये राजन्सुपप्ता योद्युर्वाह वर्षीम ते पुण्यो वृष्ट्यानि || २ ॥

एन्द्रवाहो नृपति वज्रवाहुमुम्बुग्रासंस्तविष्यास एन्द्र ।

प्रत्यक्षस वृप्तम् सुस्यद्वृष्ट्येमस्तम्भा संचमादो वहन्तु || ३ ॥

पुषा पर्वि द्रोणुसाचं सचेतसमर्च स्फुर्म भ्रस्तु आ वृष्टायसे ।

वोम्बः छप्तु स गृमायु त्वे अप्यसु यथा केनिपानामिनो वृष्टे || ४ ॥

१ हे इत्य् । त्वं वद्यात् सदासः वोक्तासः अथि वाताः— हे इत् । त् एव सामर्थ्यं और साहस्रे कर्त्तव्यं वर्त्तने ते विष्य वस्त्रव इत्या है ।

२ वृप्त्य! त्वं वृष्टा असि— हे वद्यात् इत् । त् वस्त्रव है ।

३ त्वं वृष्ट इत्या असि— त् वृष्टेषो मारतेवान् है ।

४ वस्त्रीर्वसि वि अतिरिक्तः । वोक्तासा धां उत् वद्यातः— एवे वस्त्रीर्व विकावा है और वृष्टो अवर विकर लिना है ।

५ हे इत्य् । त्वं वद्य वोक्तासा विद्यान् सज्जो पर्वतं वर्षे वाहोः विवर्षिः— हे इत् । तु अप्ये वद्याये वस्त्रे दीक्षा लिना और जरने भिन्न वृष्टेषो दधान तेजसी वस्त्रे वाहुशोदि वारप लिना है ।

६ हे इत्य् । त्वं विश्वा ज्ञातानि वोक्तासा अथि यो— हे इत् । त् वद्य वस्त्रव द्वृप्तं प्रत्यक्षेष्वप्य प्राप्तव अप्ये वस्त्रयेषु वरत है ।

७ विश्वा: मुखः भाष्मव— त् वद्य स्वानोऽसि वृष्टा वृष्टा है ।

(सूक्त १४)

(अथविः इत्यः) वनदा व्यायो इत् (महाय या यात्) वनम् वास वर्त्तेन लिने वहा जाने । (यः पर्वतो तृष्णान् तुविष्मान्) वीर्ये वामवर्त्ते वर्त्तने एवं वर्तेनाम्भा और वस्त्राद् है । (वपारेण महता

वृष्ट्येन) अपार वद्य वस्त्रे (विश्वा सहौसि) एव सामर्थ्योऽसि वद्य (अति प्रत्यक्षाप्तः) वृत तीव्र वद्य रेता है ॥ १ ॥ (क. १ १४११)

२ (वृष्टेषो) महुष्येषे लायी । (ते एषा द्वृ-स्यामा) वेता एव वृत्तम् इत् है । (ते इती द्वृष्ट्यामा) वेते वद्ये वद्यम् व्याहीन इत्येवाते हैं । (यमस्तौ वद्या विम्बयस) वेते वद्यम् वद्य इत्या है । (हे राजन् । (द्वृष्ट्यामा धीर्यं वर्षावृष्टि पाहि) वद्यम् वार्षिषे वस्त्रव इत्यारे पाप इत्यर भा । (पवृष्टः ते द्वृष्ट्यामि पर्वतिः) विनेदो इत्या वर्तेनाते वेते वार वस्त्रव इत्यहम् इत्यहम् वर्षेषो है ॥ २ ॥ (क. १ १४१२)

(वद्यासः तुविष्यासः इत्यद्वयाहः) वद्य वक्तिर्वाही इत्याये के वातेवाते (सप्तमादः) वद्य इत्येषे द्वृष्टेषो मोह (एव द्वृष्टपति उत्त्रं वद्यवाहुः) इत्य द्वृष्ट्येषे वातेवाते (प्रत्यक्षसं द्वृप्तम् सप्तमशुष्प्ये) दीक्षा वद्यात् एवे वस्त्रयेषो (द्वृष्ट्यान्नाभा वहन्तु) इत्य द्वृष्ट्येषे इत्यारे पाप ले लाये ॥ ३ ॥ (क. १ १४१३)

(व्रोक्तासाक्ष सचेतसः) पात्रेषे रहनेवाते द्वृदेवर्षेष (कङ्गः द्वृक्षम् पर्वतः) वलडे वावात्सर्तन वेते वद्येषे वातेवाते वीमर्वते पाप (अहम् एवा या वृष्टायसे) वहनेवात वावात वावात वद्य वर्षे वृष्ट्याय (महाय या यात्) वहनेवात वद्य वर्ष (यद्या लेनिपातार्य इत्यः द्वृष्टे असि वद्यमा) विष वद्य द्वृक्तिर्वामेष्वप्य वावा वन्ने वंशवर्त्तने लिने एव वद्य वर्षाय है ॥ ४ ॥ (क. १ १४१४)

[सूक्त ९३]

(अथि — १-३ प्रयाप ४-८ देवदामप्र। देवता — इन्द्रः ।)

उत्था मन्दन्तु स्तोमाः हुणुष्ठ राष्ट्रो अद्रिवः । अवे प्रश्नादिष्ठो बहि	॥ १ ॥
पुदा पुर्णीरुचसा नि चापस्त्व मुहूँ असि । नुहि स्ता कष्टुन प्रति	॥ २ ॥
त्वमीक्षिष्ये सुवानामिन्द्र त्वमसुवानाम् । त्व राष्ट्रा अनानाम्	॥ ३ ॥
ईक्ष्वयन्वीरपुस्तु इन्द्रे ज्ञातहृषीसवे । मेज्जानासैः सुवीर्यम्	॥ ४ ॥
त्वमिन्द्र उत्ताप्ति सहसो ज्ञात आवेसः । त्वं हृपुन्तुपैर्दसि	॥ ५ ॥
त्वमिन्द्रासि वृत्रह व्युन्तरिष्यमितिः । तद् यामस्तुप्ता ओवेसा	॥ ६ ॥
त्वमिन्द्र सुवोपेसमुक्त विमर्यि मुहूः । वज्र विश्वानु ओवेसा	॥ ७ ॥
त्वमिन्द्राभिपूर्षि विश्वा ज्ञातान्योवेसा । स विश्वा हृषु भामेवः ॥ ८ ॥ (१०५)	

(सूक्त १४)

(स्तोमा त्वा उत्त भद्रन्तु) एमारे स्तोत्र हुम्हे जाने दित दर्ते । हे (अद्रिवी-या) वर्तवारी इन्द्र । (रापः हुणुष्ठ) दाव ऐप्पे चित्ताव दर्त । (प्रश्नादिष्ठो अव बहि) ज्ञातवा ईप एवेवाक्षोभे मार इया ॥ १ ॥ (अ१६३१)

(अराधसः पश्चीम् पदा ति वापस्त्व) दाव च देवे यस्ये पविष्योक्तो वाससे इक्षुव (महाम् असि) दू ददा है । (कः चन त्वा प्रति नहि) नीं हेवे वरावर वही है ॥ २ ॥ (अ१६३२)

हे इन्द्र । (त्व सुतानां ईषिष्ये) त् सोवत्सोका जामी है जो (त्वं अस्तुतानां) त् एव त विकाले थोमध भी जामी है, (त्वं ज्ञातामी राष्ट्रा) त् प्रवात्सोम्य राष्ट्रा है ॥ ३ ॥ (अ१६३३)

(ईक्ष्वयन्वी अपस्तुवा) वलेवावै उत्ता प्रवात्सोम [वत्तवारी] (इन्द्रे उपासते) इम्हर्व उपासना करती है । (सुवीर्ये मेज्जानासैः) उठके उत्तम प्राप्तक्षमे भाव खेती है ॥ ४ ॥ (अ१६३४)

हे इन्द्र । (त्व उत्तात् सहसा भोजसः अधि ज्ञातः) त् च उत्त जोर धावपूर्वक जिवे उत्तम हुआ है । हे (वृष्टम्) विभान् इन्द्र । (त्वं वृष्टा इद् असि) त् मि दीर्घ वर्षान् है ॥ ५ ॥ (अ१६३५)

हे इन्द्र । (त्वं वृष्टहा असि) त् उत्तम सर्वेषामा है । (अन्तरिस वि अतिरा) दूरे अन्तरिक्षमे ज्ञाता है ।

(भोजसा यो उत् भजतामा ।) वामपूर्वे तुलोद्धरे दिव चिन्हा है ॥ १ ॥ (अ१६३६)

हे इन्द्र । (त्वं) त् (भोजसा वर्ष विश्वाम) एवे यस्ये वीस्त दर्ता है (सज्जोपसं यद्य वाही विमर्यि) और यस्ये दिव देवसी वज्रमे वाहूव्येषे जाम दर्त है ॥ २ ॥ (अ१६३७)

हे इन्द्र । (त्वं विश्वा जातावि भोजसा अपिमूर्य असि) दू उत् भगवारी पविष्योम्य अस्यी इक्षुवे जाम दर्तनामा है, (सः विश्वा मुहूः भ्यामवः) च दृ चू च्यानोन्मे देव दर्त रहा ह ॥ ३ ॥ (अ१६३८)

इष सूक्ष्मे नीके दिये वर्षन मनन दर्ते जोम है—

१ हे भद्रिवः । रापः हुणुष्ठ— हे वरावारी । राष्ट्र रेवा चित्ताव दर्त ।

२ विश्वाविष्यः अव बहि— ज्ञाते हेव एवेवाक्षोभे याव ।

३ अराधसः पश्चीम् पदा ति वापस्त्व— रास च देवासै इन्द्र एवेवाक्षोक्तो वाससे इक्षुव चाव ।

४ महाम् असि । कः चन त्वा प्रति नहि— एवा दै । केर्त जी देरे उत्तम वही है ।

५ त्वं ज्ञातामी राष्ट्रा— त् ज्ञातामी ज्ञाता है ।

६ ईक्ष्वयन्वीः अपस्तुवा इम्हर्व उपासते सुवीर्यमे ज्ञातामासैः— पविष्योम्य वर्षलहीन जोग इक्षुवी ज्ञातामा करते हैं और इसे दे उत्तम वीर्यम यक्ष दर्ते हैं ।

[सूक्ष १५]

(क्रिया — १ गुरुसमव्यः ३-४ स्त्राः पैदावतः ॥ देवता — इन्द्रः ॥)

श्रिकृष्णेषु महिषो यक्षाशिर तुष्टिश्चमस्तुपस्सोमं परिषुद्धिष्ठुना सुव पथामेष्टत् ।
साईं ममाकु महि कर्म कर्त्तव्ये मुहामुरु सैनै समहेतो दुष सुस्यमिन्द्रे सुस्य इन्द्रः ॥ १ ॥
प्रो व्यस्ते पुरोर धमिन्द्राप नपमवैतु ।

ममीके चिद लोकहरसगे समस्ते पश्चात्साकै थोखि चाहिला

नमन्तामन्यकेषां ज्याक्षा अषि घनसु

11 9 11

यः प्रापतिः इस्त्रः अमव्या तृतीयानः तु विप्राद्— दो तर्ये पातक अप्ये स्वभावस्य त्वरणे कार्यं करने च एवं और उपरान् है।

१ व्यापारेण मद्दता बुद्ध्यन विभ्वा सहायि भवि
म्बवहाय— व्यापार वडे व्यापारसे सर वडोदी अधिक
प्रयत्न भरता है।

‘हे शूपते ! ते रथः सुस्थापा ले हरी स्थयमा—
हे प्रभुओं प्रकाश ! तेरा रथ शुरू और तेरे बोधे इहारे
यशपूर्वक बनेगाहे हैं ।

४ गमस्त्री वज्र। मिम्यज्ञ — से इष्टमें वज्र है।

४ उपासः नविपास सप्तमाद्। इन्द्रियाः सप्त
महाशुद्धिमुपाति मत्यध्वसंयुगम सत्यशुर्पं भजन्ता
मा वर्गतु— पथ वसाय, साप आवृद्धै रामेणात् इन्द्रिये
पथे वसन्त वर्षायामुकुपं पाक्ष तीर्थं वक्षात् सचे साहृद
यम संस्थापे इमरो पापे ले अवे ।

१ अमृति अस्ते मा गमत्—
भे,

४ ये रहिये— तू सामी हे ।
 ५ आश्रिय दू प्रसिद्ध— आर्तिक उत्तम आश्रिति ही ।
 ६ भवस्यामि दुष्टरा भहस्त्रत— एक देनाके दुष्टर
 ७ वर्णन किये थे ।

५० ये पहिर्या ताथं आशृत थोकुः तं कपय
ईर्षा स्पष्टिकास्तु— जो वहां बीचपर उठ नहीं सकते—
जीव वही उठ सकते— वे पाणी लगाने ही रहते हैं।

१३ ये वापसे भरित ते पुढ़यि मोड़ना घटुआमिसि
भरित— वा वाम देखे हैं वहां बहुत कपील मिलेके
धूंग गां होत हैं। वाम इक्षवाके उपनीस प्राण करते हैं।

१२ भजान् देखमान् गिरीम् भवारयद्— विस्ते
हिलेकाहे पर्वत और मिशन स्ट्रिंग किए। पाहुंचे भूकाळ होते
हे। पाहुंचे भूमि घास दुई और पर्वत जी रेहर दुपे।

११ घो क्षम्यत् । भगवतिक्षापि कोपयत् । समा
क्षिने विषये विस्तक्षमायति — पुस्तेऽगर्बतः इत्तदा वा
भगवतिक्षुपित द्वारे ये । निते यादा पूर्विकाः स्तम्भ विशा
गता । परिहे यह सब भारेव वे पद्मानु द्विपर हुए ।

१४ शकारुण्यः आरुजासि— तु च हेतेषासोऽसे द
द्रुतं इता है।

(माला १)

(तुप्पिण्याः महिषः) वह सामर्थ्याले महाबली इन
में (पश्चात्तिर सोम) गढ़े जाटहे मिठाका सोम (त्रिक
द्वुषेषु भविष्यत दपद्) तीन पात्रोंसे विश्व और वह
तस दुक्ता (विष्णुगायथा भवशत्) वो विषुवे अन्नों
इष्टकुण्डा (कुत्रु) मिठाका था । (महि कम करते)
यह काम करेके लिये (सः ई मामाद्) वह इष्ट भावित
दुक्ता । (मही ढंडे एवं सत्य देप इष्ट्वा) वहे महिष-
याले इष्ट सत्य इष्ट रेतम् (सत्यः इष्टु दृष्टः सत्यत्)
दुक्ता सोम देव यात दुक्ता ॥ १० ॥ (कृ १२३१)

(मरमे इन्द्राया) एवं इन्द्र विने (पुरार्थं शूष्प
प्र षु भर्यत त) उपरे इयो लाये बड़ीताता वस्त्रेत
स्थाप गामो । (भर्मीके सागे खोकहत् विन त) अमीरिके तुम्हें लाता बड़ानकाता (समरद्धं चबदा) पुरीमे
इन्द्रुका मारनेकाम (अस्माकं खोदिता खोधि) एवं
हमार प्रेरण हो । (अस्यकार्या धावसु अपि ज्याता
नमस्ता) अग्र छात्रभोली बदुपारारी होरिदौर शब्द ॥

गम्भीस्ते बसून्या । हि शसिप स्वाक्षिप् मरुमा याहि सोमिनः ।
 स्वमीषिषे सास्मिभा संतिसि मुदिष्पत्नासूप्या शबु पाश्रोऽपि धर्मेण
 पृथुक्प्राप्य प्रशुमा देवहृष्टोऽकृष्टव भवुस्प्रज्ञिनि द्वृष्टरा । || ५ ॥
 न ये क्लेष्टुष्टिया । नावमुराहमीर्मेष से न्यविष्वन्तु केरयः
 एवैवापागपरे सन्तु दूरोऽस्मा येषां दुर्युक्ते आयुयुजे ।
 इत्था ये प्रायुषे सन्ति ब्राह्मने पुरुषे यत्र अपुनानि मोर्खना
 मिरीराज्ञायेवामानो बधारयुव थोः क्लन्ददुन्वरिष्वाणि कोपयत् ।
 समीचीने चिप्पे वि व्यक्तमापति शुप्तः पीत्वा मदे उक्षानि स्त्रसति
 इम विमर्शि शुक्तृते वस्तुष्व येनोऽन्वासि मधव छफारुदः ।
 अविनिष्टु ते सवने वस्त्वोऽप्यु शुत इदौ मेववन्योप्यामेगः
 गोमिष्टेमार्मति दुरेका येवेन शुचे पुरुषु विश्वाम् ।
 दुर्ये राम्भमिः प्रशुमा चनान्युक्ताकेन दूरनेना वयेम
 मृहस्पतिनः परिं पातु पुश्चादुतोरस्मादधरादप्तामोः ।
 इन्द्रः पुरस्तादुत मेष्युषो नः सखा संविम्पो वरिं च चोतु
 || ६ ॥ || ७ ॥ || ८ ॥ || ९ ॥ || १० ॥ || ११ ॥ (५११)

(व्यक्ति अस्ते वा गमन् हि) अन इमरि पाप वा
 वापि । (आविष्प शु व्यसिप) वा भावीवाद मै उत्तम ऐतिषे
 मांगता है । (सोमिनः भर्त वा याहि) शोभवाय व्यक्ते-
 वाक्ते यक्तम वाचो । (स्वे इतिषे) त वासी है । (सः
 अविन्द विहिपि वा संतिः) वा त् इस वाचापर वैठ ।
 (घट्येषा तव पापायि वासासूप्या) लिक्षमे देवे पाप
 रुप्ता दीर्घ व मही वक्ता ॥ ८ ॥ (स. १ । १४५)

(प्रथमा देवहृष्टयः पृथक् प्राप्यम्) इमाती यीक्षी
 प्राप्यमाए देवे वाप वृष्ट वृष्ट गमी है । (अवस्थानि
 दुप्तरा भवत्यवत्) इन्द्रे वह पाप व्यक्ते किं द्वार
 कृष्टि वृष्ट किं देव । (ये विष्टां नावमारहेन येकुः)
 वो वहकी नीक्ष वर व्यक्ते वाप दुप (ते केपयः
 ईर्मा एव व्यविद्याम्त) वे पापी व्यक्ते ही देवे है ॥ ९ ॥
 (स. १ । १४५ ।)

(एव एव अपरे वृहयः वापाण् सम्मु) इसी प्रथम
 एवे दुर्युक्तिसे भीते ही रहे । (येषां दुर्युक्ता व्यक्ता
 वायुयुक्ता) विष्टे विष्टांसे भीते व्यक्ते कृष्टे वृष्टे
 वृष्टे है । (इत्यां प्राप् रुपे व्यक्ते संतिः) इस
 प्रथम वो द्वृष्टे वा वाचे किं देवे होते है । (वह पुरुषि

मोजता व्युवानि संति) वहा वृष्ट वेष प्रस व्यक्ते
 वृष्ट होते है ॥ १० ॥ (स. १ । १४५)

(व्यक्ताद् देवमामाद् मिरीन् अधारपत्) विष्टे
 वापते वैद्यमो और पर्वतोद्ये विष्ट विष्टा (दीः क्लवृत्)
 पुरुषोद्ये रेवावी वालवा वीर (अन्तरिष्वाणि कोपयत्)
 वस्त्रिष्टोद्ये प्रकृतित विष्टा । (समीचीने विष्टे वि
 ष्टमापति) विष्टे दुर्यो और शीक्षीये पृष्ठ विष्ट विष्टा ।
 (शुप्तः पीत्वा मदे उक्षानि वासति) वक्तव्य दीप
 वाप वह भावेवामै स्त्रीत व्यक्ता है ॥ ११ ॥ (स. १ । १४५ ।)

(इम ते द्वारुत्तं भक्त्या) इष्टे व्यक्ते देवे वृष्टे
 स्त्रीत्रये (विष्टांसि) मै वक्तव्य करता है । हे (मध्यवद्)
 वनवत् इष्ट । (येव व्यक्तवदः वावद्वासि) विष्टे
 तु व देवावै दुर्युक्ते त् दुर्युक्ते होता है । (अविन्द सब्दे ते
 व्यक्तव्य वस्तु) इष्ट स्त्रीत्रये तेवा विष्टां ही हे (मध्यवद्)
 इष्ट । (सुते इदौ) वेषव्यक्ते और व्यक्ते वामाण
 वोषिष्ट) वेषवीन वाप वो ही व्यक्ते वस्तु है ॥ १२ ॥
 (स. १ । १४५ ।)

१०-११ देवा अविनेद ३ । १४५ । - ११

इष्ट वृष्टमै भीते किं देवे इष्टे वृष्टे वस्तु वामीव है—

[सूक्त १५]

(अस्पि: — ? पुरसमदः ३-४ संख्या पैज़िष्ठन ।। देवता — इम्मदः ।।)

शिंकुद्रुकेपु महिषो यवाचिर तुविशृप्तस्तपरसोमंमविषदिष्ट्युना सुस यथावैस्त ।

साईं ममाणु महि कर्म फर्वीव महामुरु सैन उभाइनो भेव सुत्यमित्रै सुख इन्द्रः ॥ १ ॥
प्रो प्वस्मै पुरोरथमिन्द्राय प्रपर्वति ।

અમીકે ચિદુ લોકુટરસગે સમરસુ પુશ્રહાસ્માકે ઘોખિ ઘોડિતા

नमेन्सामन्यकेपौ ज्याका अवि घन्वम्

11 2 11

१३। लक्षणिः इन्द्रः अमर्या तुतुआनः तुवि
पाह— वे नर्व पाह अनेस स्वभावसे तुरापे धार्य इने
पाह और वद्यान् हैं।

भाषारेण महाता बृप्प्यम् यिभ्वा सहासि भवि
भव्याम्— भाषा वहे सामर्थ्यसे सब वहोंके अविक
प्रत एक है।

। हे दूपते ! ते रवा मुश्यासा से हरी मृग्यमा—
हे गांडों पकड़ ! देह एवं घुट भार तेर धोई इशारे
मर्हं हुए बालाकाने हैं ।

^४ प्रस्तो यज्ञः मिष्यत्वा — देरे इष्टमें यज्ञ है।

५ दमासः नवियास सधमावा इम्ब्रिकाहुः उभ
प्रशार्हुः नृपति प्रत्यसुरं चूपम सधमगुप्तम भस्मामा
या वहगु— एम रवान् साव लक्ष्मदेवं प्रेनेशां इन्द्रो

१८ अमरीका का समूह पालक दीप्ति प्रवास एवं सबे साहुद
एवं नियोग इसरे पाप से बचते ।
१९ समृद्धि सभे भा गम्भ— वह इमारे पाप का

१० ते रहिये— दूसरामी है।
११ आपेहिं पुश्च सिप— माहीर्वाद उत्तम नामर्वाद ही।

१० ये यशोर्पाणी नार्थ आठवां ता. शेषाः वे कृपयः
ये अन्तिम निवेदिते ।

रमी प्रधिकार— को बहकी वौधार वह नहीं छठे-
के यह यही इस स्थें— दे पारी जागे ही रहते हैं।

समिति— वा दाव होते हैं बालों बहुत छपरीय मिलनेके अभी भी होते हैं। याक इन्हाँसे उपरोक्त प्राप्त करते हैं।

१२ वज्रान् रथमान् गिरीश् अग्नारपत्— चित्तमे
हितवाहके पर्यंत और मैदान दिवर किए। पाँच भूकाल हाते
हैं। जोड़े भूमि धान्त हृषि और पश्चत मी दिवर है।

१४ यौ कन्दव् । भस्तरिक्षाणि कोपयत् । समी
क्षिने धिरये विस्कमायति — पुष्टेष गर्भा भरता वा
भासिरिक उत्तित हुए थे । मिल दाशा पुर्विको स्तम्भ किया
गया । पीड़ित सब अस्तित्वा वे प्रधान दिव्य हए ।

१४ शकारब्दः भारवासि— तु च ऐश्वर्योऽसी प्र
द्युष्मेष्टो है ।

(सूक्ष्म १)

(तुष्टिशुप्तम्: महिषः) वहे सामर्थ्यवाले महावली इन्हें
 नै (पवाणिर सोम) बहे जटते पितॄया सोम (किंक
 द्रुकेषु भृपिषद उपत्) दीन पात्रोंसे विषा और वह
 तस दृशा (विष्णुना यथा भवशत्) वो विषुवे जन्मनी
 इष्टानुपासा (चूत) विष्का वा । (महि चर्मं करते)
 वहा काम करते वहे (स: ईमाद) वह इन जागरित
 दृश्या । (महा दर्द एवं सत्य देव इश्वर्) वहे विद्यम-
 ाले इह उत्ते इन देरेका (जस्ता इन्द्रु: दृष्टः सम्भृतः)
 दृश्या सीम देव प्राप्त हुवा ॥ १ ॥ (ज्ञ ११३१)

(मस्मी इन्द्राया) इस इन्द्र के लिये (पुरोत्तरं शूष्प
य सु वर्षत त) उपरे इन्द्र को आये बदलेवाला वर्षत
स्थोव पाणा। (मस्मीके सभे छोकहृषि वित त) इन्द्रियों
तुहमें स्वाम बनावशाळा (समस्तु चबहा) तुदियि
तनुका मारनेवाला (मस्माक चोंडिता चोंडि) इन्द्र
तमापि भेष हो। (वर्षतवार्या वर्षतसु वर्षित वर्षाका
तमस्ता) नव तनुओंसे तनुपरती वर्षिताहृषि वित ॥

त्वं सि वैरवांसुमोऽप्तराष्ट्रो महापदिश् ।

अृष्टवृत्तिन्द्र बहिषु विष पुष्पसि वार्षे त स्वा परि अवामहे
नर्मन्ताम् युक्तेष्व अधिष्ठन्ते सु ॥ ३ ॥

विपु विश्वा अरीतयोऽर्थो नेष्वन्त नो विषः ।

अस्तोमि इत्रेष्व अृष्ट यो नै इन्द्र विषोपति या ते गुरिष्वदिवेसु
नर्मन्तामन्यकेषां ज्याका अधिष्ठन्ते सु ॥ ४ ॥ (१११)

[सूक्त ९६]

(विषः — १-१ पूर्वम्); ६ १० यज्ञमात्राम्; ११-१५ एतोहा; १७-२१ विष्वाः २४ प्रवेता ।
इवता - १-५ इन्द्रः; ६-१० यज्ञमात्राम्; ११-१५ गमसंसाधावः; १७-१९ यज्ञमात्राम्; २४ तुष्पसप्रम् ।)

तीव्रस्तुभिवयसा अृष्ट पाहि सर्वरूपा वि हरी इह सुश ।

इन्द्र मा स्वा यज्ञमात्रासो अन्ये नि रीरमुन्तुम्बिमि दे सुसाधे ॥ १ ॥

(त्वं तिष्ठूष्ट यज्ञमात्राः) तने वरिष्ठो वहावा ।
(अहिष्ठ अवराचः अहाव्) अहिष्ठे मार अर नीके गिरावा ।
(इन्द्रः अहाव्) अहिष्ठे) हे इन् ! ए ब्रह्मरिष्ट इत्य
इवा है । ए (विष्वं वार्षे पुष्पसि) एव सोक्तर अने
वेष्व अवो वरिष्ठ करता है । (तं स्वा परि अवामहे)
अथ तुष्पदी इस वाकिन देते हैं । एतुष्पीयो विष्वोंको वेष्विका
इव वाव ॥ १ ॥ (अ । १११११)

(ना विश्वा अरातयः) इमो एव अनुभोः (अथः
पिषः विषु मध्यात्म) ओ एवुद्वी विष्वोंका वात अर ।
(वात्वे वष्ट अस्ता अस्ति) एवुपर एव एवलेवावा तु
है, हे इन् ! (या ना विष्वोसति) ओ इवे मारावा वाहावा
है (या ते रातिः वस्तु वहिः) ओ ऐता वन है अथ एव
देव है । एवुभोऽप्त विष्वोंप्रथ वीरिनो इव वाव ॥ २ ॥
(अ । १११११)

एव शुक्षमे इनके वे वर्षन वर्षनीव है—

१ महि कर्म कर्त्तव्ये स है भमाव— वे वर्ष इनके
विषे वह वालविष होता है ।

२ अहमै इन्द्राप्य पुरोर्य शूष्ट एव अर्वत— एव
इनके विषे एव वान वहे देमा स्तोत्र वालो ।

३ अमीक संगे छाकहतु— अपीष्ठे तुष्टवे वह इनो
विषे रथाव वना देता है ।

४ समर्प्तु वृषदा— तुष्टोंमें विषा वह वरता है ।

५ अस्तार्क वेदिता— इसप वह भेद है अन्ये
वेष्वों वेष्वा वह देता है ।

६ अस्त्वकेष्व अव्याप्तु मध्य अवाका तपस्ती—
एवुभोंके विष्वोंपराव्ये दोरियो दूर जाव ।

७ अहिष्ठ अवराचः अहाव्— एवुपरे वाले विष्वाम
मारा ।

८ इन्द्रः अवाचः अहिष्ठे— इन ब्रह्मरिष्ट इवा है ।
९ विष्वं वार्षे पुष्पसि— एव सोक्तरने बोल वाल
पवावा है ।

१० ना विश्वा अरातयः अर्योः पिषः विषु
मध्यात्म— इमो एव अवुपरा एवुपर अवेष्वों एव विष्वों
विष्व हो वाव ।

११ वात्वे वष्ट अस्ता अस्ति— एवुपर वह एवे
वाके हाव ।

१२ या ना विष्वोसति— ओ देमे मारावा है इवा
वाव अर ।

१३ ते रातिः वस्तु वहिः— देमा वाव वन देव है ।
(अृष्ट १६)

(तीव्रस्तु अभिवयसः अृष्ट पाहि) एव एव
एषो वी । (सर्वरूपा हरी इह विषु अव्ये रथिः
वैषे वही अव्य । हे इन् ! (अस्त्वे पवस्तामात्रासा त्वा वा
नि रीरमल्) एवे ववताव तुष्टे व रथापाल वहे (इमे
सुतासः तुष्टप्र) वै एव देव विष्वे ॥ १ ॥ (अ । १११ ॥)

तुम्हे सुवास्तुभवेत् सोत्वासुस्त्वा गिरः शाश्या आ हृयन्ति ।

रत्नेदम् य सर्वन शुपाणो विश्वस्य विद्वां हुह पांडि सोमेषु ॥ २ ॥

व ठंसुता मनेत्सा सोमेष्वे सर्वहुदा देवकामः सुनोति ।

न गा इन्द्रस्त्वं परा ददाति प्रशुस्तमिदार्हमस्मै कृषोति ॥ ३ ॥

अनुस्तप्यो भवत्येवो अस्य यो अस्मै तेषाम् सुनोति सोमेषु ।

निररुत्ती मुषवा त देवाति प्रशुद्धियो इन्द्रयनोनुदिष्ट ॥ ४ ॥

व वायन्तो ग्रन्थन्तो वाज्यन्तो इवामहे स्वोपेगन्तुवा ते ।

शामूर्पेन्वस्ते सुमुदो नवायां तुर्यमिन्द्र त्वा शुन हृषम् ॥ ५ ॥

मुखायामि त्वा हुविषा वीर्वनायु कमङ्गातयुद्मादुव राज्युक्षमात् ।

प्राहिर्ब्रह्माह येषुष्वदेवं तसा इद्रास्त्री प्र मुमुक्षमेनम् ॥ ६ ॥

यदि खिलापुर्यदि वा परेत्वा यदि मुस्योरन्तिक नीति एष ।

वदा इरामि निर्भीतेच्छस्यादस्त्वार्षिमेन शुलश्चारदाय ॥ ७ ॥

सासादेवं श्रुतवीर्येण श्रुतापुर्णा हुविषाहर्षिमेनम् ।

इन्द्रो यथैन श्रुत्वो नयास्यति विश्वस्य दुरितवस्य पारम् ॥ ८ ॥

श्रुतं चीव श्रुत्वो वर्षेमानः श्रुतं हेमन्तान्तुरहु वसन्ताम् ।

श्रुतं ए इन्द्रो अधिः संविता शुस्त्वति श्रुतापुर्णा हुविषाहर्षिमेनम् ॥ ९ ॥

वारार्षियविद त्वा पुनराग्नाः पुनर्जेषः । सर्वोऽन् सर्वे ते चक्षुः सर्वमायुषं तेऽविदम् ॥ १० ॥

(हुर्ये सुता) ऐर तिरे तोमरप तेवार तिरे है

(हुर्ये व सोरावास्त) तेरे तिरे ही जागे रस विकाम्बने

है । (श्वादापा) गिरा रवा या हृयन्ति । शीप्रता घरम

पर्यं इयाही स्त्रीतो तुले तुलाती है । हे इन ! (इह भय

उठाने श्रुत्यामा) इह ज्वलाओ त्वीजार वर्ता हुआ

(विश्वस्य विदाक्ष) एषा कामी त । (इह सोमे पादि)

या देवी ही ॥ १० ॥

(क. १ ११९ ।)

(यः देवकामः) जो देवमन्त्र (लक्षणा ममसा

सर्वहुदा) अनिकावात्मन ननके और सब हृदके भावपे

(पत्त्वे सोम सुवोति) इह हृदके तिरे तोमरप तिकालगा

है । (इहा तत्प या : न परा ददाति) इह वर्ता

मीर्वेष्टे ए वीवी घरता और (अस्मै प्रश्वस्ते वायं हृय

कृपति) इह तिर वर कुछ इतम ग्रहणीव और सुरर

वाया है ॥ १ ॥

(क. १ ११९ १२)

१५ (वर्तम भाष्य वाच १)

(पदः अह्य अमुरपष्टः ममति) एव इत इनके

तिरे अनुहृष्ट ही जाय है (य भरमे रे-पार्व त सोम

सुनोति) जो इवके तिरे वत्तानके वसान तोमरप निर्य

त्वा है । (मयावा वरत्वा तं तिः वशाति) एव भरमे

हातोंमें वृष्ट्ये चाल्य अस्ता है । एव (श्वादुत्तिक्षेपः प्राप्त

द्विष्ट) भावहि तिरा ही वशात्येष्वेष्व मारका है ॥ ११ ॥

(क. १ ११९ १२)

(अश्वादातः गद्यातः) लोकों भी मीलोंधे वाहने

वाहे भाव (याज्ञवल्क्य) एव वाहनेते इव (त्वा उप

ग्रामते व हृष्यमहे) लेते वात वातेदे तिरे तुल तुलते

है । (ते जवायां द्युपतो वामूपतः) तुले वाते वत्तम

मतिरे द्युमुक्ति तुले तुल, व इव । (त्वा शुनं हृषेम)

तुल वृष्ट्ये तुलते है ॥ ५ ॥

(क. १ ११९ १५)

१-५ देवोः वरद १११११ । (क. १ १११११-)

१ देवोः वर्तम ११११२ । (क. १ ११११२-)

प्रदृष्टामिः संविदुनो रसोहा पापवामितः । अमीता यस्ते गर्भं दुर्जामा योनिमाष्वर्णे ॥ ११ ॥
 यस्ते गर्भमवीका दुर्जामा योनिमाष्वर्णे । अमिट प्रदृष्टा सुह निष्कृत्यादमनीनश्व ॥ १२ ॥
 यस्ते हन्ति पृथग्नत्वं निपुस्तु यः सरीसुपृष् । आत् यस्ते विषोसति तमितो नाशयामसि ॥ १३ ॥
 यस्ते ऊरु विहरत्युत्तरा इम्बरी श्वरे । योनि यो अन्तरारेति तमितो नाशयामसि ॥ १४ ॥
 यस्त्वा ग्राता परिमुखा चारो मूला निपथ्यते । प्रुम्बा यस्ते विषोसति तमितो नाशयामसि ॥ १५ ॥
 यस्त्वा खमेन तमेसा मोहित्वा निपथ्यते । प्रुम्बा यस्ते विषोसति तमितो नाशयामसि ॥ १६ ॥

अश्विम्बी तु नासिकाम्भा क्षीम्भा छुट्टादार्थे ।

यस्मै शीर्षुण्यं मुस्तिष्ठालिङ्गाया वि वृहामि ते ॥ १७ ॥

ग्रीष्माम्बेत्तु चिण्डीम्भः कीक्षसाम्भो अनुष्माति ।

यस्मै दोषण्युमसोम्भां वाङ्म्भा वि वृहामि ते ॥ १८ ॥

हृदयात् परि छोमो हलीष्यात्यार्थम्भाम् ।

यस्मै मरुस्ताम्भां प्लीडो यक्षस्ते वि वृहामि ते ॥ १९ ॥

आन्त्रेम्भस्ते गुहाम्भो चनिष्ठोल्हरादर्थे ।

यस्मै कुषिम्भां प्लाषेनोम्भा वि वृहामि ते ॥ २० ॥

उरम्भां ते अहीष्वम्भा पापिम्भा प्रपेकाम्भाम् ।

यस्मै मसुर्भुं भोगिम्भां मासेतु मसेसो वि वृहामि ते ॥ २१ ॥

अस्तिम्भेत्तु मुखम्भः भ्नावेम्भो भ्रमनिम्भः ।

यस्मै पापिम्भाम्भुलिम्भो नुखेम्भो वि वृहामि ते ॥ २२ ॥

(रसोहा अग्निः) रात्सोधे मारनेवाका अग्निः (व्रह्मणा द्वारा देते वस्त्र तु एव्याप्ते वारता है (तं इतः नाशयामसि) संचिदाता ।) इमरे रत्नत्वे भिक्षम् (या अमीता द्वारा देते वस्त्र तु एव्याप्ते वारता है ॥ १३ ॥ (कृ । १११११) दुर्जामा ते गर्भं योग्यं भावाये) वा हुक्षिता रोप धेरे वस्त्रे और वारत्वे है (इतः वापत्ता) वाहाये वस्त्रे विकाढ है ॥ ११ ॥ (कृ । १११११)

(या दुर्जामा अमीता) वो दुरु वामदाका रोग (गर्भं याति भावाये) यर्में तथा वानिमें इता है (अग्निः व्रह्मणा सह) अग्नि स्तोत्रके ताव विकार (क्षम्याद्य निः अनीत इत्) वह मीठमध्ये दोष करे ॥ १२ ॥ (कृ । १११११)

(या ते वर्तयन्ते इमिति) वो देते ज्ञेष वर्ते हुए वर्दें वारता है (या लिपार्दुं सर्वात्मप) वा रिक्त रहें वो हित्ये दुरता (वात यः ते विषोसति)

जो देते वस्त्र तु एव्याप्ते वारता है (तं इतः नाशयामसि) वस्त्रे वाहाये वार दरते हैं ॥ १३ ॥ (कृ । १११११)

या ते ऊरु विहरति) वा ते ऊरुलोके वक्षय वस्त्र वारता है (दृष्टपती अस्तरा दाये) इमर्तीके वस्त्रे वेदता है (योग्यं यः अस्तरा अरोग्यित्) वीक्षितो अस्तरहे वह इता है । (तं इतो नाशयामसि) वस्त्रे वाहि वार दरते हैं ॥ १४ ॥ (कृ । ११११२)

(यः त्वा भाता पतिः भूत्या) जो दृष्ट भर्त वीति देते (भातः भूत्या विपथ्यते) वा भात वनवर्त प्रभ दोष है (यः ते प्रजाः विषोसति) जो देते वस्त्रके वारता वारता है (तं इतो नाशयामसि) वहां वाहाये विनाश दरते हैं ॥ १५ ॥ (कृ । ११११२)

स त्वं नैषिं वग्गहस्त शृण्युपा मुह स्तवानो अद्विषः ।
गामर्थं रुध्यमिन्दु चं किर सुशा शास्त्रं न लिङ्गयुपे

॥ २ ॥ (५७)

[सूक्त ९९]

(ज्ञापि — १-१ भेष्यतिषिद् । देवता — इन्द्रः ।)

अभिं त्वा पूर्वपीतिवृ इन्द्रु स्तोमेभिरायवृः ।
समीचीनासं श्रुमवः सर्वसरलङ्घ्रा शृणवन्तु पूर्वीय
श्रस्येदिन्द्रो वामुपे बृ॒प्यं श्वो मर्दे सुरस्तु विष्णवि ।
शृणा वर्मस्य महिमानं मायवोऽनु दुष्टन्ति पूर्वया

॥ १ ॥

॥ २ ॥ (५८)

[सूक्त १००]

(ज्ञापि — १-१ नृमेष्य । देवता — इन्द्रः ।)

अप्या हीन्द्र गिर्वेत् उर्वं त्वा कामान्मिहः संसूज्महौ । सुदेह यन्ते तुदमिः ॥ १ ॥

क्षुभोदे देवेन्द्र (नदा त्वा) वीर पुस्त दुष्टो (अर्वतः
काषाया) दुरदेवये वीराक्षोमे कुम्हते है ॥ १ ॥

६ लिङ्गयुपे वार्ते म — विष्णवी वीरदो वन विलत है।
विष्णव हीने पर वक्षुपा वन वृद्धा वात है वह विष्णवी वीरये
प्रात होता है। वीर विष्णव मिष्ठेन्द्र वक्षुपा वन वृद्धा वर्तते हैं।

(सूक्त ११)

(अ॒ १४६११)

७ (विष्णववदाद्वात) वावर्वतम वन वावर्वते वेवाके
हम । ८ (अद्विषः) वन वावर्वत वर्वेवाके । (शृण्युपा
महः वावर्वात) वावर्वत वर्वन वर्विते वना शृ॒णि विना
हुणा (वा त्वं तः) वह तु एमो विने (गो वावर्वत वर्वन
वना सं किर) वीर वृद्धे वीराने वन वना दे
(लिङ्गयुपे वार्ते तः) विष्णवी वीरदो लिङ्गे वैदा वन विलता
है ॥ १ ॥ (अ॒ १४६१२)

(वायवः पूर्वपीतिवृ) मनुष्योने प्रवद लोक लोभे
विने है इन् । (त्वा स्तामेभिः अभिं समस्वरत्र) भी
सुषि स्तोमोते भी है । (समीचीनासः वावर्वा सम-
स्वरत्र) परस्त्र प्रव ववनेवाके वक्षुभोमि वन वृद्धे वनम
विना । (कृष्णा पूर्वये गृद्वस्त) जीने तुम पुराव वुलये
सुषि भी है ॥ १ ॥ (अ॒ ११)

१ कावर्वत वावर्वतम सावाता — स्तवा वना इन्द्र
परमेवाके होते हैं । वावर्वत — वन वन वन वैदेवतः ।

(इन्द्रः) स्तवे (विष्णविभव्य शुल्कस्य मदे)
ववने इव लोमरप्ते दृप्यवे (शृण्यवं वावर्वत वालुये इव)

२ दुष्टेषु त्वा सावर्वति इवामोहे — वेवाक्षे वालु
वीरपे वैरा वदेवेव ववनामो हुवे वृकाते हैं । व्योमि तु तत्त्व
वावर्वत ववेवाता है ।

(वायवः वक्षु पुरुषिति) वक्षु लुति वर्तते हैं ॥ १ ॥
(अ॒ १४६१३)

३ नदा त्वा सावर्वति अर्वतः काषाया — वीर पुस्त
दुष्ट वन वावर्वते वुर्वीवये वीरामे दुष्टहै । व्योमि
दुष्टहो वावर्वते होते हैं वावर्वते वेवाक्षे ववने वावर्वते ।

(विष्णववदाद्वात अद्विषः) विष्णववदाद्वात । (वायवा
महा कामाम्) वन देवे वावर्वत वावर्वती वावर्वतावै (वन
संस्करण्ये हि) वेवते हैं । (इन्द्रिः वदा इव वन)
वेवे ववनामोहे ववनामा वनते हैं ॥ १ ॥ (अ॒ १४६१४)

४ विष्णववदाद्वात अद्विषः — वै विष्णववदाद्वाती
वन वावर्वते वेवाक्षे इव ।

५ गो वावर्वत वर्वन सावा सं त्वं तः सं किर — वी
वेवा वर्वन वेवाक्षे वेव है वा ।

वार्ष त्वा युध्यामिर्बिन्ति शूर भ्रमणि । ध्रुवूभासं चिददिवो द्विवेदिवे ॥ २ ॥
पुष्टन्ति हरी इपिरस्य गायेपुरो रथे उरुपुरो । तुन्दुषाहा पञ्चोपुरो ॥ ३ ॥ (६५०)

[सूक्त १०१]

(अधिः — १-३ मेघातिथिः । वेषता — भग्निः ।)

अृग्मि दूरे धूर्णीमहे द्वोतार विश्ववेदसम् । अृस्य पुष्टस्य सुकर्तुम्
अृपिमिर्पि इर्षीमिभिः सदा इवन्त विश्वतिम् । इृश्यमाह पुष्टप्रियम्
अर्थे द्वेराँ युहा वै जम्मानो त्रुप्तवर्हिये । असि द्वोता तु इृष्यः ॥ ३ ॥ (६५१)

[सूक्त १०२]

(अधिः — १-३ विश्वामित्रः । वेषता — भग्निः ।)

त्रिलोके नमस्यनित्यस्तमौसि इसुरः । समपितिव्यते द्रुपा ॥ १ ॥
पूर्णे अृग्मि समिष्यते इस्यो न देव्यवाहनः । त इविष्वन्त इच्छे ॥ २ ॥
पूर्णं स्वा धुव द्वृपुन्वृपणः समिचीमहि । अस्मे दीर्घत धूहत् ॥ ३ ॥ (६५२)

(पश्यामि या । न) जेसा नदीकोषे बड़प्रदाह चलता
२ एव इव हे (शूर भ्रमिव) वौर वज्रारो इव ।
(वज्रारोसं त्वा दिवेदिवे) बडेकाले तूँड़े प्रतिरिद
(भ्रमिभिः पर्यन्तिः) इमारे स्तोत्र बढ़ाते हैं ॥ १ ॥
(अ ४९८५)

(विश्वस्य) विष इव देवके (गायया) परम्परा
(वा वाय (उरुपुरो रथे) वोड जुलोकाल रथमे (वचो
इव इस्म्यकादा हरी) वर्णनते तुलेकाले इवके रथके
वीरेष्वे वा वोड (युखामित) बाले बाले हैं ॥ २ ॥
(अ ४९८६)

(सूक्त १०२) (अ ४९८७)

(वर्य पद्मस्य सुकृत) इव वहो वर्तम रीतिवे
रीतिवे (विष्व-वेदस) तद वर्णोऽकामीके रसामी
(द्वारार्द दूरं) रीतिवे तुलेकाले दृष्ट (अृग्मि धूर्णीमह)
धूर्णी इव तुलये ॥ १ ॥
(अ ५११२१)

(विश्वतिः) मात्रालोके स्तामी (इृश्यमाह पुष्टप्रिये)
इवये के वामेवाले दृष्टोऽसा विष (अृग्मि भग्निः) स्तामी
स्तामो इव (इृश्यमिति सदा इृष्यत) स्तेवत्राठोऽसे
इव इवान्ते हैं ॥ २ ॥
(अ ५११२२)

दे अभि ! (वदामः) प्रद होते हो तु (बडपर्यन्तिः)
प्रयन वैवेष्वामे वज्रारोके लिये (देवान् इद भा वद)
रीतिवे वाले वा । (न इृश्य द्वाता भ्रमिति) इमारा

स्तुति वीरव देवोरो तुलेकाल दृष्ट है ॥ १ ॥
(क ५११११३)

१ विष्वस्य सुकृतु— वहो ततम रीतिवे तुलेकाल ।

२ विष्व वेदाः— सद वर्णोऽसा वोडे पुष्ट च भग्नी
सामी ।

३ विष्वप्रिया— वज्रालोका वामद ।

४ पुष्टप्रिया— वहोरो विष । धूर्णीरो विष वनम ।

५ वेदाम इव भा वद— देवोरो भद्री वना । भित्तानोरो
वदाले भा । देव वर्णमे कुष्टन विषवीपु व्यवहारक्षम
वर्णन ।

(सूक्त १०३)

(इलेख्यः) स्तुतिके वीरव (समस्यः) नमस्तार वर्णे
वामव (तमामिति तिरः द्वारातः) भवत्तारो दृष्ट वर्णे
सद इृष्य वीरेकाला (धूपा) वज्रार्द भग्नि (इृष्यते)
भवती दृष्टा है ॥ १ ॥
(क ५१११३१३)

(वृष्य अृग्मि समिष्यते) लक्षित भग्नि भवती दृष्टा
है (वेष्वामिति भ्रमिः न) देवोरो के वामेवाले भद्रीरो लाद
(इृश्यतिः ते इद्वने) देवाने इृश्यत दृष्टी दृष्टि
भवते हैं ॥ २ ॥
(क ५१११४१४)

६ (धूर्णी अभि) वालेकार अभि । (वृष्यता यथे)
लक्षित वामेवाले इव (या धूर्णी) तु वा प्रदानो
(प्रदान दीर्घते) वोड अविष वज्रारामानवा (सामधी
महि) प्रदीप वर्णते हैं ॥ ३ ॥
(क ५१११५५)

[सूक्त १०३]

(ज्ञापि : — १ सुदीतिपुदमीढो २-३ सर्वा । वेवता — भस्ति ।)

अदीपमीङ्गुप्तार्वसु गायामि॒ पूरिष्ठोऽधिपू॒ ।

अभिंग् रुमे॒ पुरुषीष्व भृत नरोऽपि॒ सुंदीर्वै॒ छुर्दिः॒ ॥ १ ॥

अप् आ॒ याद्युषिभिर्होतार॒ स्वा॒ वृणीमहे॒ ।

आ॒ त्वामनकु॒ प्रयंता॒ हृषिष्मती॒ यस्मिष्टु॒ हृहिरासदे॒ ॥ २ ॥

अष्टु॒ इ॒ स्त्वा॒ सहसः॒ स्तो॒ अङ्गिरः॒ सूच्चमर॑ स्वज्वरे॒ ।

उर्वो॒ नपोत॒ भूतकेष्मीमङ्गेऽपि॒ सुष्टुष्टु॒ पूर्व्यम्॒ ॥ ३ ॥ (५९९)

[सूक्त १०४]

(ज्ञापि : — १ २ मेघ्यातिपिः ३ ४ सुमेघः । वेवता — इष्टा ।)

इमा॒ उ॒ स्वा॒ पुरुषसो॒ गिरो॒ वर्षन्तु॒ या॒ मसे॒ ।

पावकर्वर्णः॒ शुच्यो॒ विपुलिष्टोऽपि॒ स्तो॒ मैरन्तु॒ पत ॥ १ ॥

अप् सुहस्रमूर्धिः॒ सहस्रकृतः॒ समुद्र॑ इव॒ प्रयते॒ ।

सुत्यः॒ सो॒ अस्य॒ महिमा॒ गृणे॒ लक्षो॒ युष्टेषु॒ विप्रान्त्ये॒ ॥ २ ॥

१ इष्टाया॒ तत्त्वमस्यः॒ दर्शतः॒ चुपा॒ तत्त्वात्तिविरा॒—
तत्त्वमस्त्वर॑ बोवा॒ दर्शनव॑ वक्तान्॒ वक्तान्तवक्तव्ये॒
पूर्व॑ वेवताना॒ भस्ति॒ है । इम॑ प्रयते॒ चुपा॒ मकुपा॒ मने॒ ।

२ चुपायः॒ अप्य॑ चुपाय॑ स्वा॒ दृष्ट्य॑ शीघ्रते॒ समिष्टी॒
महि॑—वक्तान्॒ वक्तव्ये॒ इष्टायाते॒ इम॑ दृष्टु॒ वक्तान्॒ बोर॑
हो॑ तेवसीये॒ चमकाते॒ है । वक्तान्॒ वक्तव्ये॒ इष्टायाते॒ वक्ता॒
न्॒ तेवसीये॒ ही॒ अप्य॑ चाप॑ रहे॒ ।

(सूक्त १०५)

(अद्वने॑) अप्य॑ सुरासां॒ लिष्टे॑ (शीर॑-शोऽधिप॒)
तीर॑ वद्यायाते॑ (भस्ति॑) वरिन्द्री॑ (गायामि॑) ईङ्गित्वा॑
वायाव॑ लिष्टे॑ स्तुति॑ चर॑ । (ई॑ (पुरुषीङ्गद॑) चुपो॑ इता॒ स्तुति॑
केऽः॑ । (भस्ति॑ राये॑) वनके॑ लिष्टे॑ वरिन्द्री॑ स्तुति॑ चर॑ है॑
(मरा॑) ममुपो॑ । (सुदीतये॑ भृत॑ भस्ति॑) वत्तम॑ वक्तान्॒
है॑ लिष्टे॑ विवात॑ वरिन्द्री॑ लुप्ते॑ अप्य॑ वद॑ इमाप॑ (छहिं॑)
पै॑ ही॑ है॑ ॥ १ ॥ (कृ. ११११४)

दे॑ अप्य॑ । (भग्निभिः॑ वा॒ याहि॑) अप्य॑ वनके॑ चाप॑
भा॑ । (स्वा॒ होतार॑ चुपीमहे॑) दृष्टे॑ इम॑ होता॑ वरके॑
चुपते॑ है । (स्त्वा॒ यस्मिष्टे॑) दृत॑ वक्तव्याते॑ (वहिं॑
वासदे॑) वास्त्वर॑ वेठनेके॑ लिष्टे॑ (प्रयता॑ इष्टिप॑)
वाती॑ है॑ ॥ २ ॥

इष्ट लिष्टानी॑ मुका॑ (त्वा॒ मा॒ ममक्तु॑) दृष्टु॑ भै॑ तुर्व
भै॑ ॥ ३ ॥ (कृ. ११११५)

है॑ (सहस्रा॑ स्तो॒ अंगिरा॑) वन्दे॑ उप॑ अंगिरा॑
(अप्य॑ चुका॑) वन्दे॑ चुकाए॑ (स्वा॒ ममज्ञा॑ हि॒
चरिष्टि॑) दे॑ लिष्टे॑ चमिष्टे॑ लिष्टती॑ है॑ । इम॑ (ऊर्ध्व॑
नपात॑) वन्दो॑ न॒ गिरावेदाते॑ (पूरुषसं॑) तेवसी॑ विष्ट
वन्दे॑ (युष्टेषु॑ पूर्व्ये॑) वक्ता॑ मै॒ परिह॑ (है॑ भर्तिं॑ इष्टह॑)
ए॑ वरिन्द्री॑ वायावा॑ करते॑ है॑ ॥ ३ ॥ (कृ. ११११५)

(सूक्त १०६)

है॑ (पुरुषसो॑) चुपु॑ वक्तान्॒ इन्॑ । (या॒ मम॒ इया॑
गिरा॑) जो॑ मेरी॑ व॒ स्तुतिवा॑ है॑ व॒ (त्वा॒ उ॒ वर्षन्तु॑) छै॑
वायावा॑ । (पावकर्वर्णः॑ शुच्यतः॒ विपुलितः॑) वरिन्द्री॑ वक्तान्॒
तेवसी॑ छुद॑ वायिवो॑ (स्तो॒ मै॒ भृत॑ पत॑) स्तो॒ वै॑
है॑ स्तुति॑ की॑ है॑ ॥ १ ॥ (कृ. ११११५)

(अप्य॑) वद॑ इन्॑ (भर्तिभिः॑ सहस्र॑ साहस्रकृता॑)
भर्तिभिः॑ द्वारा॑ एहस्युजा॑ अप्य॑ वन्दे॑ वदाया॑ च्या॑ (समुद्र॑
इव॑ विष्टते॑) सुष्टुके॑ चमान॑ कै॑ है॑ । (सा॒ अस्य॑ महिमा॑
सत्यः॑) वद॑ इन्द्री॑ वरिन्द्री॑ चर॑ है॑ । (युष्टु॑ विप्रान्त्ये॑
शाप॑ एषा॑) वन्दो॑ लिष्टे॑ राज्य॑ वै॑ वक्तव्ये॑ विष्टी॑ वृत्ति॑ वृ
वाती॑ है॑ ॥ २ ॥ (कृ. ११११५)

१४ गिरिषाणु दम्भ १३ः गमग्नु भूषतु । उपे पद्मोलि गरनावि पश्चा पात्र-या दर्पीदम्भः ॥१४॥
१५ शुक्र वैदुमा गर्वनावृत्यार्थं सुस्य इगानुहृद । गुरुत्रिपुष्ट्रिपुष्ट्रिया वैर्तीदम्भं पश्चाप वृत्या मदा ॥१५॥

[गज १०५]

(क्रमांक १३४५ द्वारा प्राप्ति क्रमांक १३४६)

‘मार्ग इन्द्रियमि विषा अग्नि चूष ।

ଶ୍ରୀମତୀ ପ୍ରିଣ୍ଟିଂ ରିପ୍ରୋଡ୍ଯୁକ୍ଷନ୍ ମୁଦ୍ରାପତ୍ର ॥ ୧ ॥

କେବଳ ପାଦ ପାଦ ଏହିତିରେ ଧାରା ଲିଖିବା ମାତ୍ର ।

ପିଲାଇ ରୁହି ମାତ୍ରା ଏଥିରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା

१३४। अद्य । हु व्यरु।

१०३. श्रीमद्भागवतम् २४

त्रिपुरा राज्यान्वयनम् त्रिपुरारपि

ଶ୍ରୀ ମହାପତ୍ରାନ୍ତିକା ସାହୁ ମ୍ୟାନ୍ଦୁ ।

॥५८॥ तरुणा दृष्टिनामो वद्यता दा वद्यता ॥

କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

[सूक्त १०६]

(अथि — १-३ गोदूकस्यभूतिकी । वेष्टा — इत्थः ।)

सद् स्पदिदिग्निय पूहत्पु छृष्मंसुत कर्त्तुम् । पर्वते विश्वाति विष्णु वर्णमधु ॥ १ ॥
तद् पौरिन्द्र वौस्मै पृष्ठिर्वर्षति भवतः । स्वामापुः पर्वतासुष्म हिनिरे ॥ २ ॥
स्वा विष्णुर्मृहस्यो मित्रो गृणाति वर्षतः । स्वा वर्षो महुस्यनु मारुतम् ॥ ३ ॥ (१३)

[सूक्त १०७]

(अथि — १-३ यत्सा । ४-१५ इत्यहिपुः । १४-१५ कुत्सा । वेष्टा — इत्थः ।)

समस्य मन्यतु विश्वो विश्वो नमन्त रुष्यतः । सुमुद्रार्वेषु सिन्धेषः ॥ १ ॥
आमुखदेस्य वित्तिपु रुमे यस्त्वमवर्तयत् । इन्द्रधर्मेषु रोदसी ॥ २ ॥
वि विद्वद्वस्य दोर्वतो वज्रेष्व प्रतवर्षणा । विरो विमेह मुष्णिना ॥ ३ ॥

इस सूक्तमें इत्येष पुरुष वर्तम लिखे हैं—

१ त्वं प्रत्यतिषु विभ्याः स्युपा अभिः असिः— एव
मुखमें तद् एवुमोक्ष सामग्रा अर्थे इत्येष इत्यादा है ।

२ अहरिति-द्वा विभ तु— तुरुष्यते एव एवेषाम्
अर एव एवुमार्त अतिरैताता है ।

३ त्वं तद्यत्पत्ता तुर्वा— विनाशक एवुमोक्षे अर्थमें
वाता है ।

४ शोलीते तुरुष्यते तुरुष्य अनु रूप्यु— एवा
पुरीती अवृत एव विभ तर विभा एव अनुभूते होता
एवत है ।

५ त भ्रम्यव विभवा स्युपा सम्पत्त— लेते एव
द्वाम एव एव विभित विभत है ।

६ तृष्ण तृप्यसि— वेषेषामे एवुमोक्ष वा वाता है ।

७ योः ऊनी अर्जत् प्रहेतार्त् अप्रहित आशु
ज्ञेतार द्वातार एवीतमें अनूत् तुरुष्यवर्ष्य— एवमें
प्रेष्ट्वान्ते लिखे आर्त ज्ञेतारित विभक्ती लिखे एव इत्येषाम
वन्न एवन्न विभ एवेषामें आर्त विभेषो लेता एवन
द्वाम एव भेद एवी वाती विभित व इत्येषाम अन्तीता
विभावाता इत्यादा आर्त वातावर्ष प्राप्त वर्ती ।

विभिते एवुम इत्येष वाता ।

(सूक्त १०८)

(तप स्पद् इत्यन् इत्यित्य) एव एव एव एव
(तप तुरुष्य उत अर्जु) एव वातावर्ष और वर्षविभिता

(येषवर्य वज्रे) लेते भृत वज्रा (विष्णु विश्वाति)
विष्णु विष्णु वर्णव इत्यादी है ॥ १ ॥ (अ. ४१५७)

देव । (योः तद् वीर्यम्) एव लेते वज्र (पृथिवी
वज्रा वर्णति) इत्यिती वर्णव वज्र एवी है । (आपा पर्व
वासा वा) वज्रप्रवाह और वर्णव (वज्रा विभिते) वज्रे
वज्रादित एव रोहे है ॥ २ ॥ (अ. ४१५८)

(वृद्ध भया विष्णुः) वज्र आभ्र वज्रा विष्णु विभ
वज्र वज्र (वज्री वृष्वाति) वज्री द्विति गते हैं । (मासद
वर्णः) वल्लेष्व अमूर्त (वज्री अमुमदति) लेते वात
वामगत्ये इत्यादी है ॥ ३ ॥ (अ. ४१५९)

[सूक्त १०९]

(वज्र मासपदे) इत्य वापेषे वज्रम (विभवा
विभाः कृष्णः) एव वज्रावन एव इत्य (लं तमस्त)
भृषी वज्र वज्र दोरर इत्येष है । (सिंध्यः समुद्राप
एव) नदिवा वज्रेषे वज्रमें लिखी सुधी है ॥ १ ॥
(अ. ४१५९)

(तत् भ्रम्य वोजा विभितपाः) एव इत्य वज्रावप्य एव
वज्र हृषा (यद् एवमे दोहसी वज्र इव इत्यावत् समपत्त-
यत्) एव दोहो वज्रा वृष्वाति वर्णवे वज्राव इत्येषे लेते
विभा ॥ २ ॥ (अ. ४१६१)

(वेषेषतः वृक्षस्य विभाः) वेषेषो इत्य विभ
(वृष्विना भ्रमपर्वता वज्रव) वज्रावन दोहो वज्रावै
वज्रवे (विभु विभिते) इत्येषे इत्य एव वज्रा ॥ ३ ॥
(अ. ४१६१)

विदिशा सुबनीय च्येष्टु मतो भृष्ट उग्रस्त्वेष्टनूम्हा ।
सुधा वैश्नो नि रिणाति छवूनन् यदेन मर्दन्ति विषु रमाः ॥ ४ ॥

वायुषाम् । वर्षा भूयोऽग्नः द्विद्वृष्टिगते विषु दण्डित ।
वर्षनेत्र व्युत्तु सस्ति स ते नवन्तु प्रसृता मेदेषु
ते क्रदुमविषु विषु दिवेषु विषु विषु विषु ॥ ५ ॥

खादोः खारीयः स्वादुनो सृज्ञा समदः सु मधु मधुनामि योधीः
यदै विषु त्वा भना वर्षत् रणेरणे अनुमदन्ति विषाः ।
वोरीयः शूभ्रनिस्त्वरमा तंत्रुप्त्वा मा त्वा दमन्तुरेवासः कुणोक्तो
तर्या चुप शाश्वदहे रवेषु प्रपद्यन्तो युवेन्यामि भूरित ।
प्रारपमि तु आरुषा वचोमिः सं ते विषामि व्रजेणा वर्णासि
नि वृद्धिपेऽवृद्धे परे च वस्त्रियाविधावसा दुरोगे ।
आ त्वापपत्र मातृतरं विग्रहमते इन्द्रत् वर्षवरामि भूरित ॥ ६ ॥

स्तुत्वा वर्षन्युत्पत्तीन् समुम्भायसिनतेममासुमाप्यानाम् ।
आ दर्शति वर्षा भूयोऽग्नः प्र संषष्ठि प्रतिमानं पूषिष्माः
प्रमा वर्ष वृहदितः कुण्डिन्द्राय वृपमधियः स्वर्णीः ॥ ७ ॥

मुदो गोत्रस्य वर्षति स्वराज्ञा तुर्मिश्रिष्मर्षवत्पत्तान्
पृष्ठा पृष्ठान्युहर्तिरो भयुर्वारोत्तस्वा तुन्वृमिन्द्रेसेषु ।
स्त्रियारी भाषुरिम्बरी वर्षिते हिन्दन्ति वैने वर्षवसा वर्षवेन्ति च
क्षित्रे देवानां कुरुनीकं व्योरिष्माप्रदिक्षुः वर्षे उपन् ।
दिवाकरोऽविषु वृष्मेष्वमासि विषातारीवुतितानि शकः
क्षित्रे देवानामुद्दग्नादनीकं वृष्मिवस्य वर्षवस्यामिः ॥ ८ ॥

आप्ताद् वाक्यापृष्ठिवी अन्तरिष्टु वर्षे आस्मा जगतस्तस्तुपृष्ठ
वर्षो देवीमुपसु रोचमाना मयो न यापोमुख्येऽविषु वर्षात् ।
पत्रा नरो देवृपन्तो युगानि विषन्वते प्रविष्ट मुद्राये मुद्रम्
॥ ९ ॥ (३८)

* १० रैतो वर्ष ५१२३ १२ १११२१४-१५
(क. १ १२३ ११ ५, ज. १११२१४-)

योपां त) वैता मदुप्य ज्ञाके वैते वाता है। (वर्ष वर्ष
याता वर्) विषु वर्ष देवता वात वर्लेही इष्म एवं
वैते वर्षन (मद्राय भई) वस्त्राय वर्लेहे विषु वस्त्र
वातेवाते वर्षे (भुगानि वित्तवते) वहडमोंके वर्ले
१० (वर्ष वाप्त वात ३) (क. ११११ ५)

[सूक्त १०८]

(अथि — १-३ सुमेघः । देवता — इन्द्रः ।)

स्व ने उन्नदा भीरुं ओचो नूमा श्वतकतो विर्षये । आ भीरुं पूरुतनापहम् ॥ १ ॥

स्व हि नेः पिता बसो त्वं मासा श्वतकतो पुभूर्विष्य । अचो तु सुम्भवीमहे ॥ २ ॥

त्वा श्विभिन्नुरुहृष वाऽप्यन्तमूष्टे भुवे श्वतकतो । स नौ रास्व सुवीर्षम् ॥ ३ ॥ (११)

[सूक्त १०९]

(अथि — १-३ गोतमः । देवता — इन्द्रः ।)

स्वादोरित्या विपूष्टो मध्यः पितन्ति गौर्येः ।

या इन्द्रेण सुपावैरीर्वृष्णा मदन्ति श्रोमसे वस्त्रीरुदु स्वराज्यम् ॥ १ ॥

ता अस्य पूरुतनायुक्तः सोर्म भीजन्ति पृष्ठयः ।

प्रिया इन्द्रस्य वेनवो वज्र हिन्द्यन्ति सापेक्षं वस्त्रीरुदु स्वराज्यम् ॥ २ ॥

ता अस्य नमसा सहा सपुर्यन्ति प्रचेतसः ।

प्रतान्यस्य समिरे पुरुषां पूर्वविचये वस्त्रीरुदु स्वराज्यम् ॥ ३ ॥ (११)

(सूक्त १०८)

१३० । (स्वं त ओचो आ भर) त इमो तिये
सामर्थ्य मर दे । १४० (विषयमे शतकतो) इयल ईचो
पावै शतकात इन्द्र । (नूमके) वीष्म भी इमो रास्व मर
ए । (पूरुतना-सर्व भीरुं आ भर) वानुभिये वातेवाका
भीरु पुरु भी इमे दे ॥ १ ॥ (अ ११११)

१५० (यसा) विषयक इन्द्र । (स्व हि तः पिता) तु
इमादा रिता है । १६० यत्की । (स्व माता वभूविष्य) तु
इमादे मता दुर्व है । (मध्या त सुन्न ईमहे) भय इम
पुष्ट एक भागते है ॥ २ ॥ (अ ११११)

१७० (शुभिम् पुरुहृष शतकतो) वक्षाद वष्टी
हाता तुताते वये ईचो वये वर्तेवामे इन्द्र । (त्वं वाद
प्रत वयवत्ते) तुता वस्ताते पाप भीरु प्रार्बद्धा देहि (स
मा सुर्यीय दात्र) वह त इमे इतम प्रार्बद्ध कर्तेवी सविः
॥ ३ ॥ (अ ११११)

(सूक्त १०९)

(गौय) पाते (विपूष्टा स्वादोः मात्रा) ऐन
मात्रा पुरु भास वता (इत्या पितन्ति) इव तात वीरी
है । (या पूर्णा इन्द्रस्य सप्तावती) आ वस्तात इन्द्रके

शय वयम वर्तेवाका (श्रोमसे मदन्ति) तेवसिकान्त
मिये व्यानिष्ठ इती है वा (स्वराज्ये भन्तु वस्ती)
स्वराज्यके मिये वस्ती है ॥ १ ॥ (अ ११४१)

(ता पुरुषय) ए विलक्षणे वीरे (स्वराज्या युक्तः)
सर्व वर्तेवो इय वर्ती हृष्ट (सोर्म भीजन्ति) वीर्य
वय मिलती है । (इन्द्रस्य प्रिया वेनवा) इवीरे प्रिय
वीरे (सायक वर्ती हिन्द्यन्ति) पशुका वर्तेवाते वय
वीरिय वर्ती है वी अने स्वराज्यके मिये वस्ती है ॥ २ ॥ (अ ११४११)

(ता प्रचेतस) वेशानी (वस्ताता वाह) वर्तेवाते
वय (वस्तु सवयवित) इती लीक्षण वर्ताव वर्ती है ।
(मध्य पुरुषि विषयाति) इतके वृक्षते वर्तेवो (पूर्व
वित्तये सवित्ते) सुख देवपूर्वके मिये व्युतरती है वी
भाने स्वराज्यके मिये वस्ती है ॥ ३ ॥ (अ ११४११३)

इव संतोम वासेवातिक वर्तत है—

१ गौयः स्वादोः मात्रा वितन्ति— वीरे पुरु भास वय
वीरी है । श्रोमसेवी वीरो दृष्टि विषया आता है ।

२ वृत्त्या इन्द्रेणा सप्तावती— वक्षाद इन्द्रके वय
वीरी है । लेपस्त्रे गोदुष मिये वह वह इव वीरे

[घट ११२]

(अधिः) — १-३ सुकृतः । देवता — इष्टा ।)

यदुप्र कर्त्तुं पृथिव्युदगो भूमि दूर्पे । सर्वं उदिन्द्र ते बहुं
यज्ञो प्रवृद्ध सप्ततुं न भौत् इति मायसे । उत्तो वत्सुत्यमित्यव
ये सोमासः पराष्ट्रिये भवीष्टिं सुनिरो । सर्वास्ताँ इन्द्र गच्छसि

॥ १ ॥

॥ २ ॥

॥ ३ ॥ (५०)

[घट ११३]

(अधिः) — १-३ मर्त्तः । देवता — इष्टा ।)

उभयै शूणवेष न इन्द्रो अर्थागिद् वचः ।
सुप्राच्यो मुप्राच्यो सोमपीतये चिया श्वर्णिषु या गमत्
ते हि श्वराज्ये वृप्तमं तमोब्दसे चिपये निएतुधर्तुः ।
उत्तोप्रमानी प्रप्तमो नि वीदसि सोमकाम् दि ते मर्त्तः

॥ १ ॥

॥ २ ॥ (५०)

[घट ११४]

(अधिः) — १-३ चोमर्त्तः । देवता — इष्टा ।)

अभ्यातुष्यो अना त्वमनीपिरिन्द्र लुनुपा सुनादसि । युषेदपित्तमित्यसे ॥ १ ॥
नक्ती रेवन्तं सुस्याय विन्दसे पीर्वन्ति ते सुराष्ट्री ।
यदा कृष्णोपि नदुन्तु समृद्धस्वादित्प्रित्येषु वृप्तये

॥ २ ॥ (५५)

(घट ११५)

(पृथिव्य) दे इन्द्रके पात्तनाल । दे दूर्पे । (पृथि भय
कर्त्तुं च भूमि दूर्प भया) या काक दृक्षिती तद वदन
दृष्टा है दे इन्द्र । (तद् सर्वं ते वयो) पर चाहे वदने
दे ॥ १ ॥ (ज्ञ ४११४)

(पृथि भय) भिया (पृथिव्य सर्वते) दे वहे चलने
पाक । (स मर्त्ते इति मायसे) मै वही परम्पा ऐसा
मायता है (वह व तद् तद् सर्वं दूर्) नि देह वह
ऐसा चक्र मायता है ॥ २ ॥ (ज्ञ ४१५)

(वे सोमासः पराष्ट्रिय) या चोमस दूर् है (वे
मविष्टि शुभिष्टे) वे विष्टि विष्टि हैं । दे इन्द्र ।
(ताम् सवान् गच्छसि) तत् वदने वक्त त् बता है ॥ ३ ॥
(ज्ञ ४१५ ५)

(घट ११६)

(वदयं) रोमी वासे है (इष्टा : भवीष्टि दूर् न
पद्मः स्वरूपत् च) ५६ ले इन पात्त भास्त्र इस इपरि
वदनमयी द्वारेषा और द्वारा (सवान्या चिया) विष्टि
दूर्प इपिष्टे (वाषिष्ठः समवा) सवान् इन् (सोम

पीतये या गमत्) चोमर्त्त वीनेके लिये आवेदा ॥ १ ॥

(ज्ञ ४११५)

(विष्टि) वो और विष्टिमे (ते वृथम् स्वराज्ये)
इस वदनान् स्वर्त्तनं वायकमे (ते ओजसे) वदने वाय
वदने किये वक्त वदने विष्टि (विष्टिष्टु) वायता । (वह
वदनमानी प्रथमः) दूर्पमा वाये वेत्यायै पदिष्टि होत्य
(ते पीर्वन्ति) वैला है (ते मर्त्तः सोमकाम् दि)
तेह पन सोमसे इष्टा वदेवता है ॥ १ ॥ (ज्ञ ४१५)

(घट ११८)

(व-चानुष्यः) व देह काई दूर् है (व-वासः) व
वेदेवता है दे इन्द्र । (त्वं वामपापिः) वैरा वेदेवता किया यी
वही (ज्ञुता सवान् भसि) वदने व वदा ऐसा ही है
(पुषा दूर् भावित्य इप्तसे) वुद्देव व विष्टि वायत
है । या तुले दुखते है वदनम् व विष्टि होता है ॥ १ ॥

(ज्ञ ४११५)

(रेवन्तं सम्याय मकि विन्दसे) वदनामये विष्टि
वदने किये व नही वाय बता (ते सुराज्य) ले इन
वीनेके लोग (वीष्टिति) विष्टि होते हैं, (यदा वदन

[सूक्त ११५]

(ऋषि: — १-२ वरसः । वेष्टा — इन्द्रः ।)

अहमिदि पितुपरिं मेषापूत्रस्य जग्रम् । अह सर्वे इवाज्ञनि
वृत्त प्रलेन मन्मेना गिरः शुभ्मामि कण्ववद् । येनेन्द्रः शुभ्मिद्वे
ये स्तामिन्द्रु न हुषुक्षीपयो ये च हुषुः । ममेष्वर्षस्व सुषुवः ॥ १ ॥
॥ २ ॥
॥ ३ ॥ (७०८)

[सूक्त ११६]

(ऋषि: — १-२ मेष्यातिथिः । वेष्टा — इन्द्रः ।)

पा धूम निष्ठा तुष्टु त्वदरणा इव । यनानि न प्रज्ञिता यद्विवो दुरोपासा अमामदि ॥ १ ॥
पर्म्मुरीद्वाप्त्वोऽनुग्रासेष वृत्रहन् । सुकृत्सु ते महावा शूर राघुसानु स्वोमेषुदीमदि ॥ २ ॥ (७१०)

[सूक्त ११७]

(ऋषि: — १-२ वर्णिष्ठः । वेष्टा — इन्द्रः ।)

सिंह सोमेष्वन्द्रु मन्देतु स्वा य ते सुपाव॑ ईर्युशादिः । सोरुष्टुहुभ्या सुषुवो नावी ॥ १ ॥
पत मदो युज्युषातुरस्तु येने वृत्रानि ईर्युश्च हंसि । स त्वामिन्द्र प्रभूसो ममचु ॥ २ ॥

(इन्द्रिय) वर त वन्द वरता दे वर (आत् इव सम् इन्द्रिय) वरये रथा वरता दे वर (यिता इव हुष्यसे)
तेज्ञे वराम तुष्टा वरता दे ॥ ३ ॥ (क. ४१११४)

(सूक्त ११८)

(पद इन्द्र इ) येन निष्ठवस (पितु वरि) वित्ते
(वायव्य मेष्यापत्रम्) यस्मन्प्रियुक्तिप्रवृत्तिः ।
(वर्त्तमय एष मन्मेनि) ओर मे सूक्ते वराम इष्ट
एष ॥ १ ॥

(क. ४१११५)

(वर्त्तमय मन्मना) मे उष्टे विषाक अनुवार
(इष्टवृत्त वित्तः तुष्टामि) वर्त्ते वराम लप्ती वर्त्त
ईप्त वृत्तेवान वरता ॥ १ (पम इन्द्रः शुभ्म इव वर्त्ते)
वित्ते वर्त्त वर्त्ता वरता ॥ २ ॥ (क. ४१११६)
ते इव ॥ (ये खो न तुष्टुवु) वित्ते तेरी शुभ्म वर्त्त
५ (वर्त्तमय तुष्टुवु) भार वित्त वृत्तिमें र ते
५ (पम चुप्ततः इव यप्तस्य) मुक्ता रुते वित्ता
एष ॥ ३ ॥ (क. ४१११७)

(सूक्त ११९)

(विहया इव) वर्त्तो ताद (वर्त्त वर्त्ता इव)
तेरी वित्त वृत्तो ताद दे इव । (मा भूम) इव
एष ॥ १ ॥ (वर्त्तिव) वर्त्ताती इव । (प्रवृद्धिताती

वर्त्तामि य) तोड तुए वराम ताद (दुरोपासः यम
ममदि) दुष्ट वरते इतो ती ताद इम न हो ये दो
एवा इम वर्त्तेवो यस्मन्प्रियुक्तिः ॥ २ ॥ (क. ४१११८)

३ (वृत्तहन) इवता मालेवन । (भवायप भव
यामाय) इष्टतेवावेन इवतेवाम व वर्त्तो (ममममिद
इव) इम वर्त्तेवावाम लप्ती है । ४ (शूर) वृत्तहन ।
(त महाता राघवा) तोड वे इवते (महात्) इव
वर्त्तो (त स्तोम) ते वित्तवा (यु यन मुरीमिदि)
वृत्तहन इवता इम वार्तेवाम रहे ॥ ४ ॥ (क. ४१११९)

(सूक्त १२०)

५ इव ॥ (साम वित्त) वोय वी । (इव ममत्तु) तुम
वर्त्त वारित वर्त्त ॥ ५ (वर्त्तमय) भूर इव दे वृत्तहन इव ।
(वर्त्त मन्मेनि) याया य ते वित्त वर्त्त
वर्त्त वित्तामि दे । (मुक्तामि भूमाय) वारे तुए वे वर्त्त
वर्त्त (सामुः वादुर्भाय) यन वित्तेवामे वर्त्त
वर्त्त वित्तामि दे ॥ ६ ॥ (क. ४११२)

(ये ते यह युप्त वाराम अलि) या ता वर्त्त
वर्त्त वित्त है । ७ (वर्त्तमय) वर्त्त वर्त्त वर्त्त ॥ ७ ॥
(येन वृत्तामि इति) वित्त वर्त्त वर्त्त वर्त्त है । ८
(प्रवृद्धमो इव्यद) दे वर्त्त वर्त्त वर्त्त ॥ ८ ॥ (मा भूम)
वर्त्त वर्त्त वर्त्त वर्त्त ॥ ९ ॥ (क. ४११२)

सोधा सु मे मध्यवन्याधुमेसां यां तु वसिष्ठो अर्चति प्रश्नस्तिम् । इमा प्रश्नै सधुमार्दे ज्ञपत्ति ॥ ३ ॥ (७१)

[सूक्त १८]

(जापि — १-२ मात्रा ३-४ मध्यातिपि । देवता — इन्द्रः ।)

षगन्ध्यौपु ष्ठीपतु इन्द्रु विश्वमित्युतिमि ।

मगु न हि त्वा पश्वसे वसुदिकुमनुं ष्ठूर चरामसि ॥ १ ॥

पौरो अर्थस्य पुलुहद्वामुस्पुरसो देव इत्युपत्तयः ।

नक्षिहि दाने परिमर्भिपुरुषे यथुषामि तदा भैर ॥ २ ॥

इन्द्रुमिदेवताऽत्यु इन्द्रै प्रपृत्युभ्युर ।

इन्द्रै समीके वृनिनो इषामह इन्द्रु धनस्य सुराये ॥ ३ ॥

इन्द्रो मुहा रोदसी पश्युच्छु इन्द्रः पर्यैमरोत्पत् ।

इन्द्रै हु यिष्या यज्ञनानि येमिरु इन्द्रै सुवानासु इन्द्रवः ॥ ४ ॥ (७२)

[सूक्त १९]

(जापि — १ मात्रा २ उत्तिग्रु । देवता — इन्द्रः ।)

अस्तीति मन्मे पूर्व्यं प्रश्नेन्द्राय वोचत । पूर्वीत्युत्त्वं इत्यतीर्तन्तव स्तोतुर्मेषा असृष्टत ॥ १ ॥

हे (मध्यवद्) वत्तान् इन्द्र । (इमा मे वाचे) मेरी
इष्युत्तिग्रु (मुखाय) बहुम (तितिवाम) । (या प्रश्नातिति
से वसिष्ठः अर्चति) वित्त तेरी पर्याप्तो वसिष्ठ उत्तामता है
(इमा इष्युत्त्वं सप्तमार्दे ज्ञपत्तय) एव सत्तेषोमे वाचेन्द्र
आदेव वर्तने देवता देवता ॥ १ ॥ (च. ८११२१)

(सूक्त ११)

हे (प्रश्नापते इन्द्र) विदिके वासी इन्द्र ! (विभागामि
द्वितीयिमि) एव एवद्व विदिकेप (तु युधाग्रिष्य) इमे
समर्व वत्तामे (मर्त्यं त) मात्रके गते लक्ष्मेन्द्र वत्ताम दे
(ष्ठूर) गते इन्द्र । (त्वा पश्वस वद्युविद्यं) एव वद्युवी
वैर वत्तामेवे (गते भद्रु वत्तामसि) भद्रुवाही इम
प्रस्तुते है ॥ १ ॥ (च. ८११२५)

(अथर्व गौण) त लोकोमे पूर्व वत्तामै रक्षेवत्ता
(वात्ता तुरुहत्त) वैतोमे पूर्व वत्तामै रक्षेवत्ता है हे
हे एव ॥ त (इत्यप्यतः वत्तस्य वत्तिसि) वात्तेष्य लोक है ।
(त कि त्वे वात्तं परिमर्भित्यत्) लोक वत्तको भी इति
वरी पूर्वा वत्तता । (यत् वत् वात्तिसि) लोके मे वात्ताम
है (वत् वात्तमार्द) वह मुक्ते वत्त देव ॥ १ ॥ (च. ८१११९)

(वेवतात्येव इन्द्र इत्) वहेवे विदेव इन्द्रो (अथर्व
प्रपत्ति इन्द्रं) वह वात्तदोमेव इन्द्रो (समीके) उद्यवे
(इन्द्रं वत्तामोहे) इन्द्रो इम तुकारे है । (अथर्व सात्येव
इन्द्रं) वहेवे वात्तेवे विदेव इम (विभागामोहे)
सत्तेवाप्त तुकारे है ॥ १ ॥ (च. ८११२५)

(इन्द्रः महा वात्ता देवद्वी प्रपत्तय) इम्ने वत्तामे
मत्तिमासे और विदिके वा और पूर्विको तेजसा है । (इन्द्रा
सूर्यं परोत्तयत्) इम्ने सूर्यको विदिकित तिना । (इन्द्रः
ह विभागामूलात्मि येमिरे) इन्द्राये एव भूतोमे तिन्ममे
वत्ता है (इन्द्रेव युधाग्रिष्य इन्द्रवा) इम्ने लोकरूप वृद्ध्यमे
है ॥ २ ॥ (च. ८११२५)

(सूक्त १११)

(पूर्व्यं ममम वत्तामै) पुण्या लोके वत्ता वत्त
(अथर्व वत्त वोत्तत) वत्तके विदेव लोक वत्तो । (वत्ताम्य
पूर्वीः वृहत्तीः अनुपत्त) वत्तमे वत्तामै सुत्तिवी वात्ती वत्ती
है । (स्तोत्राः मेष्या) मस्युत्तत लोकात्ती लोकी है । (स्तोत्राः
वत्तत वृहत्तत) स्तोत्राकी तुकिकेसि स्तोत्र
वत्तत है ॥ २ ॥ (च. ८११२५)

गुरुप्यवो मधुमन्त घृतभूतु विप्रासी अर्कमानृच्छुः ।
अस रुपिः पंप्रथे घृण्णु शशोऽसे सुखानासु इन्द्रवः

॥ २ ॥ (७११)

[सूक्त १२०]

(ऋषि: — १-२ देवतिथिः । देवता — इन्द्रः ।)

पदिन्द्रु प्रागपागुदुर्भूत्यग्निवा हृयसु नृभिः ।

सिंहो पुरु नृपूर्वो अस्यानुवडसि प्रशर्वं तुवर्षे

॥ १ ॥

यदा रुपु रुपमि इयावके कृपु इन्द्रे मादर्यसे सचो ।

अभीसस्त्वा प्रसंभि स्तोमेवाहसु इन्द्रा येष्टुत्या गंहि

॥ २ ॥ (७१२)

[सूक्त १२१]

(ऋषि: — १-० वसिष्ठः । देवता — इन्द्रः ।)

अपि स्वा दूर नानुमोऽद्विष्ठा इव धेनवः ।

ईवानमृत्यु वर्तवः स्वर्णशुभीत्रानभिन्द्र तुस्थृप्तः

॥ १ ॥

न चावौ अन्यो द्विष्ठो न पार्थिष्ठा न ज्ञातो न वेनिष्यत ।

अष्टापन्तो मधवमिन्द्र वासिनो गुरुपन्तस्त्वा हवामह

॥ २ ॥ (७१३)

(त्रिप्यवः विप्रासी) इतात वाय वरेवत विग्रहे
(इत्युपुरु मह मानृच्छु) वी चूलेवाय स्वात्र वदा है ।
(वस विष्ठः पवस्य) इत्यौर विष्ठे वन वना (अस्य
स्वर्ण विष्ठः) इत्यात विष्ठे वीरता तुष्ट वन वेष्ठ है (अस्ये
मुग्धायाः इत्यष्ठः) इत्येवं विष्ठाते इत्युपुरु महात् है ॥ १ ॥

(च ८५१)

१ इत्युपुरु महे वामुच्छुः— वी चूलेवाय स्वात्र वदा
एवं इत्युपुरु महय लात्र वदा है ।

(सूक्त १२०)

१०३ (पव नृभिः) इत्युपुरु मह वामुच्छु इत्या ग्राम
वर्ष उद्य विष्ठ वा इत्यतः पूर्व विष्ठ वता
१०४ इत्युपुरु मह वामुच्छु इत्यात विष्ठ वता इत्यतः
विष्ठ विष्ठ (विष्ठातः) इत्युपुरु मह विष्ठ वता विष्ठ वता
१०५ इत्युपुरु मह विष्ठ विष्ठ वता विष्ठ वता इत्यतः
विष्ठ विष्ठ (विष्ठातः) इत्युपुरु मह विष्ठ विष्ठ वता इत्यतः
विष्ठ विष्ठ (विष्ठातः) इत्युपुरु मह विष्ठ विष्ठ वता इत्यतः
(विष्ठातः) विष्ठ विष्ठ विष्ठ वता इत्यतः

(च ८५१)

(स्वामादिव्यम) गाव इत्यत आनन्द वासना है विष्ठात
इत्यत । (स्वामयादिम) विष्ठायामा इत्यत विष्ठात
विष्ठ (विष्ठायाम) इत्यत विष्ठायाम हृषे
वीष्ठायाम विष्ठ (वा विष्ठायाम) इत्यत विष्ठायाम ॥ १ ॥

(च ८५१)

[सूक्त १२२]

१०६ इत्यत । विष्ठायामयादिव्य) इत्युपुरु वामुच्छु
वर्ष (विष्ठ विष्ठातः वामुच्छु) इत्युपुरु वामुच्छु वर्ष
विष्ठ (विष्ठायामयादिव्य) इत्युपुरु वामुच्छु वर्ष
विष्ठ (विष्ठायामयादिव्य) इत्युपुरु वामुच्छु वर्ष ॥ १ ॥

(विष्ठायामयादिव्य) इत्युपुरु वामुच्छु वर्ष ॥ १ ॥

(विष्ठायामयादिव्य) इत्युपुरु वामुच्छु वर्ष ॥ १ ॥

(विष्ठायामयादिव्य) इत्युपुरु वामुच्छु वर्ष ॥ १ ॥

(विष्ठायामयादिव्य) इत्युपुरु वामुच्छु वर्ष ॥ १ ॥

(विष्ठायामयादिव्य) इत्युपुरु वामुच्छु वर्ष ॥ १ ॥

(च ८५१)

[सूक्त १२२]

(कथि : — १-३ सुनन्ते पा । देवता — इष्ट ।)

रेवतीनिः सप्रमादु इन्द्रे सन्तु तविदामाः । शुमन्तो याभिर्मदेम ॥ १ ॥
 आ च त्वावान्तमनास स्तोहम्यो शृण्विष्यानः । अग्नोरखु न शुक्योऽ ॥ २ ॥
 या यादुर्दः प्रतश्कतुषा कामे ब्रित्याम् । अग्नोरखु न श्वर्वीमिः ॥ ३ ॥ (७१५)

[सूक्त १२३]

(कथि : — १-२ कुस्ता । देवता — सूर्यः ।)

तत्स्यैस्य देवस्य तम्हित्वं सुष्णा कर्त्तवित्तुं स ब्रमार ।
 युदेवयुक्त इरितः सुभस्यादाग्रात्री वास्तस्तदुर्वे सिममै
 तन्मित्रस्य वर्णस्याभिष्वेष्य दूर्यो रूप कुणुते घोलुप्ले ।
 कुनृन्तमन्यदुर्ब्रह्मस्य याऽः कुण्यामन्यद्विरितः स मरन्ति ॥ १ ॥
 ॥ २ ॥ (७१६)

[सूक्त १२४]

(कथि : — १-३ वायवद । ४-५ सुबद । देवता — इष्ट ।)

क्षणो न अश्रु या सुवदुर्ती सुदावृष्टः सर्वा । क्षणो वर्णिष्या वृगा ॥ १ ॥

(सूक्त १२५)

(सप्तमाद) वाय इवेवार्थ (तुवि वाज्ञा ।) वहुत
 वक्तार्थ (न रेवती । इष्ट) इमार्थी वक्तुष रुदिता
 इवके विषम्ये हो (शुमन्ता) वे इने वक्त रेवेवार्थी हो और
 (यामि वरदम) विषमे इमे वायवद हो ॥ १ ॥
 (क १११ १११)

११ (शृण्यो) वृत्ता पर्वत वरेवाने इव । (वाय वान्)
 ऐ वेषा (समावासः) तत्ये विष वन्दर (स्तोत्रभ्या
 इपाम) स्तोत्रभ्ये पाप वायेवाना (वक्तुषो । वस्तु न)
 वर्णोऽस्त्रेव उपान व्यत (या वायो ।) एवा हे ॥ २ ॥
 (क १११ ११२)

२१ (शातकतो ।) वेषदो व्यवे वरवत्ते इव । (वर्ति
 नुणी काम तुवा ।) स्तावान्तोऽनी वायवार्थी लोर वेषामयो
 (वर्तु वा वायो ।) तदूर्व वरता हे (वार्तीमिः वाहं
 त) वाक्तिवोऽवाय वक्तव्य वह वेषा विष एवा हे ॥ ३ ॥
 (क १११ ११५)

(सूक्त १२६)

(सूर्यस्य तत वेषत्वं) सूर्यो वर वेषत है (वत्
 माहित्व) वीर वायवा महत हि वो (कर्तोः)

मध्या) वर्वेषे मध्यमे (विषते च ज्ञान) ऐहे इर
 विषवामये छेष वेषा है । (वदा इरु सप्तस्याए
 हरिता वुल) वर वर वर्वेषे वायवेषे लेवेषो वेषा है
 (रात्री वायव) सिं अस्तु या तवुते) वर रात्री वरके
 विषे इरु वर वेषा देती है ॥ १ ॥
 (क १११ ११५)

(मित्रव वदवस्य वर्मिष्वसे) विष वीर वर्वेष
 रेवेषे विषे (सूर्य योः) इपस्ये तत् वर वृक्षुत
 पूर्व वुडे वर्मिव इम ववता है । (मध्य वायात् पार्व
 वरन्त वायवत्) इपस्य प्रवदवत वरन्त इम है वीर
 (मध्यत् वृक्ष्य) वृक्ष्रा इम वववार है वा (इरितः
 च मरन्ति) विषे वर्वेष वर्वेषे वेषे मर देते है ॥ २ ॥
 (क १११ ११६)

(सूक्त १२७)

(विषः ऊरी सदावृष्टः सदा) वर विषव वक्त
 वरेवाना सदा वरेवाना विष इव (वायातः वा मुख्य)
 विष वरिके वाय इवरे वर्मी वायवाना (वाय वायिं
 प्रवा वृत्ता) विष वायवेष वुक्त हीकर इमीर वर्मी व
 वायवा ॥ ३ ॥
 (क १११ ११७)

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ॥ ਕਾਲੋ ਪੜੀ ॥	੧੩੫
ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ਕਾਲੇ ਹੈ ॥ ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ॥	੧੩੬
ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ਕਾਲੇ ਹੈ ॥ ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ॥	੧੩੭
ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ਕਾਲੇ ਹੈ ॥ ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ॥	੧੩੮
ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ਕਾਲੇ ਹੈ ॥ ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ॥	੧੩੯
ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ਕਾਲੇ ਹੈ ॥ ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ॥	੧੪੦
ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ਕਾਲੇ ਹੈ ॥ ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ॥	੧੪੧
ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ਕਾਲੇ ਹੈ ॥ ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ॥	੧੪੨
ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ਕਾਲੇ ਹੈ ॥ ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ॥	੧੪੩
ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ਕਾਲੇ ਹੈ ॥ ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ॥	੧੪੪
ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ਕਾਲੇ ਹੈ ॥ ਕਾਲੇ ਹੈ ਰਾਮੇ ॥	੧੪੫

{ ८५ १३६ }

युध सुरामेमसिना नहृष्टावासुरे सप्तो । विषिपाना झूमस्पती इन्द्र कर्मसावतम् ॥ ४ ॥
 पुत्रमिव पितरावृथिनोमेन्द्रावयः कार्येन्दुसनामिः ।
 यस्तुराम् व्यपितुः श्वर्णीमिः सरेस्वती त्वा मधवमभिष्मक् ॥ ५ ॥
 इन्द्रः सुत्रामा स्वर्णं अवेमिः सुमृदीको मंष्ठु विश्वेदा ।
 वार्ष्णो हेषो अमर्यं नः छणोहु सुरीयेष्यु पतंयः स्याम ॥ ६ ॥
 स सुत्रामा स्वर्णं इद्रो व्रस्तुराविद् हेषः सनुवर्युयोहु ।
 तस्य युध सुमृदी युषिपुस्पायि मुद्रे सोमनुसे स्वाम ॥ ७ ॥ (४४)

[सूक्त ११६]

(जागिः — १-१३ वृषाक्षपिरिद्वामी च । देवता — इन्द्रः ।)

विदि सोहोरसुष्ठु नेन्द्रै देवमेमसत ।
 यत्रामदवृपाक्षपिरर्थः पुषेषु मस्संसा विश्वस्मादिन्द्रु उच्चरः ॥ १ ॥
 परा हीन्द्रु वार्षसि वृषाक्षपेरति व्याप्तिः ।
 नो वह प्र विन्दस्तु यत्र सोमपीतये विश्वस्मादिन्द्रु उच्चरः ॥ २ ॥
 किमुर्यं स्वा वृषाक्षपिष्टकारु हरितो मुगः ।
 यस्मा इरुस्यसीदु न्व॑यो वा पुषिमद्वसु विश्वस्मादिन्द्रु उच्चरः ॥ ३ ॥

१६ (शुमस्पति भवित्वा) युध चर्म अलोकादे अदि रेता । (युधं द्वृष्टाम् सत्ता विषिपाना) युध देवोन्मेष इत्यत आवेद देवोक्ते देवमरक्षे पीतकर (भास्तुरे नमुष्टो चर्मस्तु इन्द्र भावत) अस्तुर युध वृषिके मारेद चर्मसे इत्यती लक्षणा ची ॥ ४ ॥ (क. १ ११११४)

(पितौ युधं इव) याताभिता वेषे उक्तकी वस वरर (उमा अभित्वा) देवो वृषिके (कार्ये देवसामि इन्द्र भावतु) उक्तियो भीर कर्मये इन्द्री याप्ते हैं । (यत् द्वृष्टाम् वार्षीमिः व्यपिता) वह इत्यत वानर देवोन्मेष इत्यत अक्षी वृषिकोषे विषा । तब है (मधवम्) इव । (सरस्वती त्वा वभिष्मक्) दरकर्तावे लेणी सप्ता नो ०५ ॥ (क. १ ११११९)

५ ७ इवो वर्यं ११११९; १११११

(सूक्त ११६)

इमान्मै (सोतोः पि भवत्सत हि) देवमध रथ विषाल्या द्वृष्ट विषा । (इन्द्र देवं च भवत्सत) इमान्मै

देव मी नही माला । (यत् वृषाक्षपि अमश्व) व्या इत्यतपिने जावेद प्राप्ति भिता । (या पुषेषु मस्संसा) ये पुषेषु मेषा स्वामी वता देवह (इन्द्र विश्वस्मात् उच्चर) इव इत्यते जावित भेद है ॥ १ ॥ (क. १ १४५१)

देव ! (परा हि वार्षसि) द द द भावता है । (मति व्यप्तिः वृषाक्षपेः) भवति यह देव इत्यतपिने वाह द द भावता है । (अम्यव सोमपीतये) उठे व्यावर वाह पीतक भिते (नो भह प विष्टक्षिः) वही भिता । (विष्टक्षिः भावात् उच्चरः इन्द्रः) सप्ते इव जावित भह है ॥ २ ॥ (क. १ १४५१)

(मयं इरितः मुगः वृषाक्षपि) इस वाह एव देव इत्यतपिने (किं त्वा व्यक्तार) तुष्टे क्षा भिता है (यस्मै व्ययः वा) विषेद भिते भेदे व्याव (पुषिमद् वष्ट इरुस्यासि इव द) वह व्यक्तार भव द देता है । (विषो) वष्टवे इव जावित है ॥ ३ ॥ (क. १ १४५१)

षमिम त्वं बूपाकर्पि प्रिपमिन्द्रामिरधसि ।

या नव्यस्य भमिपुदपि कर्त्ते वराह्युविश्वस्मादिन्द्रु उर्चरः ॥ ४ ॥

प्रिया वृषार्थि मे कृपिव्यक्ता व्यज्ञदुपत् ।

शिरो न्वित्त राविपु न सुग्र दुष्कृते सह विश्वस्मादिन्द्रु उर्चरः ॥ ५ ॥

न मरक्षी सुमुखर्चरा न सुयाह्वेतरा सुष्टव ।

न मत्प्रतिव्यवीपसी न सक्षम्युद्यमीपसी विश्वस्मादिन्द्रु उर्चरः ॥ ६ ॥

उते वैम्ब सुलाभिके यचेष्वाङ्ग भेदिष्पति ।

मुसन्मै अम्बु सक्षिप्त मे शिरो मे वीर्व इष्पति विश्वस्मादिन्द्रु उर्चरः ॥ ७ ॥

कि देवाहो अम्बुरु पृथुष्टो पृथुष्टाघने ।

कि द्वैरपति नुस्त्वमुम्यर्मीषि बूपाकर्पि विश्वस्मादिन्द्रु उर्चरः ॥ ८ ॥

बुरीरामिदु मामुय शुरास्त्रमि मन्यते ।

द्वयाहमसि वीरिणीन्द्रेपसी मुखस्त्वेष्वा विश्वस्मादिन्द्रु उर्चरः ॥ ९ ॥

सुहोत्र से पुरा नारी समेत वाऽगच्छति ।

पैमा कुपस्य वीरिणीन्द्रेपसी महीयते विश्वस्मादिन्द्रु उर्चरः ॥ १० ॥

१८। (१८) तु (प हम बूपाकर्पि) विष इव इव
सीधे (प्रिय भमिरधसि) विव मालवर मुरलीत रक्ता
(वराह्यु आ) दूषका वर्णनेवाका कृषा (मस्य
इवे विषपत्) इवे अनन्ती पक्षोः । (विष) इवे
मर भेदे ॥ १८ ॥ (क १ १८६४)

(मे विषा वाप्रति) मे विष वर्के तेवा विषे वार्ष
(विषे व्यक्ता इपुदुपत्) इव इष्पति विषे सह विषे
विष इवे (मस्य विषा तु राविपु) इष्पा विषे विषे
इवी, (दुष्कृते सुग्र न भुव) इष्पावारीदो द्वै वर्के
विषे वीरी विषी । (विष) इवे इव भेदे ॥ १९ ॥

(क श्री मह मुखस्त्वरा) वर्क की द्वै विषक
विषावारी विष है (न सुयाह्वतरा भुवर्) न विषक
सेरे दो द्वै है (म यन प्रता व्यपीपसी) न मुखे
विष विषावी (म सक्षी विषावापसी) न द्वै विषक
विष है । (विष) इवे इव भेदे ॥ २० ॥ (क १ १८६५)

(इष भाव मुखस्त्वमिदे) हे वाता दे इष्पत नामाज्ञा ।

(इष इष वीर मविष्पसि) विष वाह है विषा वाता ।

हे (अम्ब) हे यता । (मे यस्तद्) वेरा लह, (मे सक्षिप्त
मे खिरा) मीरी है और वेरा तिरा (विष इष्पति इष)
संतप्ता हो रहा है । (विष) वष्टे इव भड़ है ॥ २० ॥
(क १ १८६५)

हे (सुषाहो) वातम वायुवारी (व्यग्नुरो) उत्तम वृद्ध
मिमोवारी वर्णम दायवारी (पृथुषा) विषाव वल्लिवारी
(पृथुषाघने) उषु वेष्वारी (शूरपीठ) वीरी वारी ।
(न) बूपाकर्पि कि अम्बमीषि इष्पो त्वारति पर ए
कवा वीर वर्ती है । (विष) वष्टे इव भड़ है ॥ २१ ॥

(अष शारादा) वह वातात वर्णनेवा इष्पति (मी
वीरी इष भमिमध्यते) द्वै अरीरा वर्के वातल है
(उत अह वीरिणी) एर मै वीरु तुवेवारी (इष्पावारी)
वर्की वारी (मयास्त्वरा) वर्के वात वारी है । (विष)
इष ए विषक वारी है ॥ २२ ॥ (क १ १८६६)

(तारी उरा) ही उराने वर्षमे (संहार लम्बन
वाऽग गच्छति व्य) वर्क वाऽग भर वर्कमे विषवन
वारी है । (कातप वप्ता) वर्का विषव वर्णनेवा
(वीरिणी इष्पावारी महीयते) वीरु तीरी वस्म देने

इन्द्राणीमासु नारिषु सुमगामस्मादिन्द्रम् ।
नृस्तिया अपर ज्ञन जुरसा मरते पतिविश्वस्मादिन्द्र उचरः ॥ ११ ॥
नाहमिन्द्राणि रारण सस्पुर्वपाक्षेष्ट्रिते ।
यस्तेदमप्यै हविः प्रिय देवपु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उचरः ॥ १२ ॥
तृष्णकपायि रेवति सुपूत्रं भादु सुस्तुपे ।
घसस्तु इन्द्रे उषण्ठः प्रिय फौचित्कूर हृविश्वस्मादिन्द्र उचरः ॥ १३ ॥
उष्णो हि मे पञ्चदश साक पञ्चन्ति विश्वस्मादिन्द्र उचरः ।
उठाहन्ति वीष इदुमा कुक्षी वृषन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उचरः ॥ १४ ॥
वृषभो न तिमवृत्तोऽन्तर्षुयेषु रोक्षत् ।
मुचस्ते इन्द्रं पृष्ठे य ते सुनोति मात्रयुविश्वस्मादिन्द्र उचरः ॥ १५ ॥
न सेष्वे यस्तु रम्बते अन्तरा सुकृष्ट्यादु कृष्टत् ।
सेष्वीषु यस्य रोमष निष्पुष्यो विन्दृमते विश्वस्मादिन्द्र उचरः ॥ १६ ॥
न सेष्वे यस्त्वे रोमष निष्पुष्यो विन्दृमते ।
सर्वाष्वे पस्तु रम्बते अन्तरा सुकृष्ट्यादु कृष्टिविश्वस्मादिन्द्र उचरः ॥ १७ ॥

वारी इमस्तीर्थी प्रवासी ये वारी है । (विं०) उत्ते इत्य
विष्ट भेष्ट है ॥ १ ॥ (कृ. १ । ४६११)

(इम्ब्राणी वासु नारिषु) इत्याचीको इन लिखोमें
(महं सुमगा भवत्यत्वं) मैले शैववादी चरणे कुपा
है । (यस्याः भवत्यत्वम्) इत्या लिखेन यह है कि (यस्याः
पतिः जरसा न मरते) इत्यक पति चराए मरता नहीं ।
(विं०) उत्ते इत्य विष्ट भव है ॥ ११ ॥ (कृ. १ । ४६११)

ते (इम्ब्राणी) इत्याचि । (यहौ कृष्टकरे उत्त्यु
ज्ञते) मैलि इत्याचित्वं किं (य इत्याच) रमता वही ।
(यस्य इत्य पिर्य वस्य हृष्टिः देवेषु गच्छति) विश्वपै
यह प्रिय और पवित्र हवि देवती वारी है । (विं०) उत्ते
विष्ट भव इत्य है ॥ १२ ॥ (कृ. १ । ४६११)

(वस्ति सुपुत्रे भात उ सुस्तुपे) इत्याचीकी वर्तम
पुत्रोत्तरो वर्तम स्तुपात्य (तुषाकपायि) तुषाकपिती
पती । (इम्ब्रः काचित्कर्त्त इत्यवा) पिर्य से हवि
प्रसरत इत्य स्तुपात्य देवोत्तरे इत्यको वारे ।
(विं०) उत्ते विष्ट भव इत्य है ॥ १३ ॥ (कृ. १ । ४६११)

(पंचदश) उत्ते विष्ट भावे मे (उत्त्या) विश्वाति भावे मे
पञ्चमिति वीष दोषमे वृद्धीते एक वाव मे विषे पक्षते हैं ।
(उत्त भावे भविति) भौमे मै वृद्धी वावा हूँ, (वीष इत्य)
वृष्ट पुष्ट वृद्धा हूँ (मे वृद्धा कुक्षी पृष्टमिति) मेरी दोषों
क्षेत्रे मरती है । (विं०) उत्ते विष्ट भेष्ट इत्य है ॥ १४ ॥
(कृ. १ । ४६११४)

(तीक्ष्णः शूणः चूष्मः य) तीक्ष्णे तीक्ष्णेवावा तेष्व विषे
(पृष्टेषु वस्तु रोक्षत्) पृष्टोमे यवता वरता है ते रे
इत्य । (मस्यः ते इत्ये य) दोप्रथय लेरे इत्यको लालम
देषे (य ते मात्रपुष्ट सुनोति) विष्टी लेरे विषे इत्यत्व
मात्रमात्रसे रस विषाक्षता है । (विं०) उत्ते इत्य विष्ट
भेष्ट है ॥ १५ ॥ (कृ. १ । ४६११५)

(यस्य सकृष्ट्या भवत्यत्वा) विषाक्ष विष्टविषे वस्यवै
(कृष्ट इत्यते) लिख विष्टका रहता है (स न ईयो)
यह यामर्यवाद वही होता (स इत्य ई) वही वस्य
होता है (यस्य लिषेषुप रोमशो विष्टमते) विष्टे
लोकेवर रामीवाय लिख वावा होता है । (विं०) उत्ते इत्य
विष्ट भेष्ट है ॥ १६ ॥ (कृ. १ । ४६११६)

(म स ईयो) वह समर्थ नहीं होता (यस्य लिषेषुप)
रोमशो विष्टमते) लिखे लोकेवर रोमशाल वावा है (सा)

अथमिन्द्र वृपाख्फिः परस्वन्त इति विद्वत् ।

अविसर्वा नवे चहमदेषस्यान आचित विद्युत्स्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ३८ ॥

अपमैमि विचार्कशद्विभूत्वन्दासमार्यम् ।

पिर्वामि पाकसुत्खेनोऽमि घीरमस्त्राकश्च यिष्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १९ ॥

ਪਨ ਚ ਧਰਕੁਨਤਪੰ ਚ ਕਸਿ ਸਿਵਚਾ ਧਿ ਧੋਡਿਨਾ ।

नर्दीपसो वृषाक्षपेस्तमेहि गहां उप विश्वसादिद्व उचारं ॥ ३० ॥

अनुरेति प्रपाक्षे सविता रूपप्राप्ते ।

४ एष स्वेमनस्त्रियोस्त्रिये विषया प्रश्नं विश्वस्तादि द्वा उत्तरः ॥ ३१ ॥

पद्मश्च वपाक्षे गमित्वा जगन्ति ।

क्रमस्य वृत्तिषु भवति नामान्तरम् ॥ ३३ ॥

पर्युद नार्म मानवी साक्ष संसष विनिमित् ।

ਮੁਦ ਮੈਲ ਸਿਸ਼੍ਚਾ ਅਸਥਾਨ ਸਾਡਾ ਸਾਹਮਣੇ ਵਿਖੁਲੇ ਉਚੰਗ। ॥ ੩੩ ॥ (੧੫)

(प्र०) वही कमर हाता है (यस्य स्फक्षणा भ्रष्टता
 प्र०) उसे संवादे बंधने लिन सकता है।
 (वि०) उसके अधिक अनु इन्ह द १३४

(ज० ८ १९७०)

(परम्परागत) दृष्टि दृष्टिकरण (परस्पर
दृष्टि विद्या) एवं प्रसा दुष्का भावों प्राप्त विद्या आव
(परम्परा-विद्या)

(शत् पूर्णो मर्य एवं मात् इष्टस्य आवित अन)

१५८ नवा साजा पर्यावरण आवृत्ति भारत भूमि (प्र०) भूमि भाष्यका भूमि
१५९ शास्त्र अंको। (प्र०) भूमि भाष्यका भूमि

(का १८६९)

४८६ (पिसाक-गत अथ पर्वि) भार वसु देवा

(पाठ्यक्रम अंकित किया गया है) (पाठ्यक्रम अंकित किया गया है)

१०८) तुम्हारा यह विषय है। (पार बना
एवं) तुम्हारा यह विषय है। (पिं) तुम्हारा अधिकार
है।

THE BOSTONIAN (Vol. 11, No. 11)

(**प्राप्ति यज्ञ वस्त्रं च**) इति अथ एव
(**प्राप्ति वस्त्रं यज्ञ च**) इति अथ एव

(सरायम् एवाच) लक्षणः वौले १५५
(सरायम् एवाच) लक्षणः वौले १५६

ପାଦେ ପାଦେ ଥାଏ । (୧୫) ୫୨୯
ପାଦେ ପାଦେ ଥାଏ । (୩୮) ୧୧

६ (पृष्ठाक्षरे) १४८। (पुनःप्रिदि) पुन भा।
 (सुविता कदरयायटी) इम रमी तो तिथ तुरेपा
 बाक्षरे (याएपा स्पष्टनामा) भा १५ ल तिथारु
 माग दे (पंगा पुनः भर्सलं प्रियि) इस मानव उम पंगा
 दूजाला दे। (प्रियि) तब्बे भर्सित १५१३२ ६ ४ १०
 (त ४४४ ११)

दे परामे हि राम । (यत् उद्दश्य) जब आर एवं
सामो (एह मात्रासम्बन्ध) भावेन परा भावेन (क्यों
पुरुष युवाक) वह परी कुम बहू ददा भर (जब
यापत ई भरी) सेवा दुर्ल देवता बहू ददा ।
(विद्) श्रीर भावद भर इह देव ॥ १ ॥

(पन्नुद लाम मायदा) ५६ शब्द समझो व इस
 (लाई विगति लगय) ५८ वर वन उडे लग-
 दिया (मद यन्त लगद्या लभून्) निषेद वाचा न।
 दुआ (परया उडे लायद्यु) ५९ वर वन उडे
 लिन दिया (दिय) ६० अवध उडे उडे लग-
 दिया (१३३)

100
100
100
100
100

॥ अथ कुन्तापसूक्तानि ॥

[सूक्त १२७]

(विलासि)

इत चना उप॑ भृत् नराश्वसु स्तविष्यते । पुर्णि सुहस्त्री नवर्ति च कौरम् आ हुश्मेषु इष्टे ॥ १
 उष्टा यस्य प्रवाहैः सुधूमेन्तो द्विर्देष्ट । बुर्धा रथस्य नि विहीडते त्रिवृत्यमाका उपुस्तृष्टः ॥ २
 एष क्रावच मामहे भूर्तं निष्पद्यन्तश्च स्वचः । श्रीबैं श्रुतापर्वता सुहस्त्रा दश्च गोनाम् ॥ ३
 वच्चस्य रेम् वच्चस्य वृष्टे न पुक्त शुक्रनः । जोर्ते त्रिहा चर्चरीति शुरो न मुरिर्वैरिव ॥ ४
 प्र रेमा सो मनीपा वृषा गार्वै इवेरते । अमोत्पुर्वका एपामुमोत्त गा इवासुरे ॥ ५
 प्र रेम् भीं मरस्य गोविदै वसुविदैम् । त्रेमत्रेमा वार्चै श्रीवैहीनुर्वैरुस्तारस्य ॥ ६
 राहो विश्वनीनस्त् यो त्रेमोऽभर्त्यैः भर्ति । वेशानरस्य द्वयुतिमा सुनोता परिवितः ॥ ७
 पुरिविलक्ष्मुः द्वेममक्षोत्तम् आत्मनमाचरेत् । छलायन्त्रकृपन्त्रकौरव्यः परिवर्दति खायर्या ॥ ८
 क्षुररु आ इरायि इषि मार्यां परि भृत्यै । जायाः पर्ति वि पृष्ठति रात्रे राहोः परिवितः ॥ ९

(भक्त १२८)

ए (अना) मोतो । (इवै उप॑ भृत) यह द्वारे ।
 (भरताश्वस स्तविष्यते) मनुष्यज्ञ रथेत् गता आवता ।
 है घोरम् । (वशमात्) इष्टमोत्ते (पर्ति सदाचामा सर्वति
 च) शाठ इवार भौत मने (आ इष्टहै) इष्टे विने है ॥ १०

(यस्य द्विर्देष्ट प्रपाहैष्ट वच्चमन्ता) विष्ट वीरै
 एत् वृश्मेन्ते रथे चकोत्तराते है (एषस्य बर्धा)
 एवरी चोतिवा (दिवै उपस्थृतः इंपमाया) पुरो
 स्वर्यै चरेत्तो इष्टा भर्ती हुई (मि विहीडते) चक्ती
 है ॥ ११ ॥

(एषै) इष्टे (मामहै इत्येते) मामहै ऋषिको
 (शार्ति मिष्टक्ष्म) भी मिष्ट (वशा इत्याः) एष याकारै
 (श्रीवै शतानि अर्वतां) यात्री योदे (योदो वशा
 सदाचामा) एष इवार भौत चौ ॥ १२ ॥

है (रेम) द्वयुति च नेशात् । (वच्चस्य वच्चस्य)
 योत चोत । (एष वृश्म शकुन म) योता पके हृष्ट दृक्षर
 पक्षी चेन्त्या है । (शोष्ट्रिया चिदा चर्चरीति) देष्ट्यै त्रिहा
 चक्ती चर्चरा चक्ती ए (मुरिका इष्ट सुरा म) योत
 देष्ट्यै त्रिहा चक्ती ॥ १३ ॥

(वृश्म गायै इय) येत भौत वामोद्यै तत्तद (रेमासा
 मनीपा य इरते) रामेत्तम सुविदो भैरित वरते है ।

(पुराका ममा चत एवां) इष्टे पुर चत्ते (गता मा
 चत इच्छा सासे) योते चर्चे एवे योते सातान योते है ॥ १४
 है (रेम) स्तोता । (वच्चुविदं गोविद) एष रे
 वारे भीर गैर्वे देवताते (विष्ट प्र भरतस्य) स्तोत्रो ते॒
 वर (इमा वार्चै वेष्टवा कृषि) इष्ट स्तोत्रये देवतात्म
 वाप वावन वर । (अस्ता भीर इपुम स) वाव ते॒
 वाचा भीर वेष्टा वाव चेष्टा है ॥ १५ ॥

(विश्वदावीवस्य विश्वानरस्य) एष वामोद्यै
 अर्देवाते, एष वनोंते जातक (परिविता राहो) इष्टा
 वित राहोत्ती (द्वयुति आ शृण्योत) चतान द्वयुतिये मु
 (योदेवै मस्यै भर्ति) भी रेष्टी तत्तद मलात्मे न
 है ॥ १६ ॥

(परिवितै उत्तम वासन माचरथ) यार्जित
 चताव राजसिंहाक्ष पर वेष्टक (न योते भक्ता) ॥ १७
 वशमान विता । (कौटल्यै शुक्रार्यै हृष्टदर) वाव उ
 अरवा वर वशावा दृक्षा (विति वायपा चक्ति) ऐ
 वित भवनी ज्ञाते वहता है ॥ १८ ॥

(क्षतरथ ते आ इत्तानि) भवा वृश्म लेते वा
 (द्विष्ट मस्यै परि चुते) इष्टी मठा वा एव (परि
 विता राहो यादे) वरिवित राहोक्त रात्रे (जाया यै
 वि पृष्ठति) भी वित्ते शृण्यै है ॥ १९ ॥

[सूक्त १२८]

१। सुमेयो विदुध्यः सुत्वा यज्वात् पूरुषः । द्वये चामु रिशादसु तदेयाः प्रागेकन्पयन् ॥ १ ॥
 २। साम्या अमेषयुक्तयन्सस्याय द्वर्षीपति । ज्येष्ठो पदेश्वेतास्तदाहुर्धर्षागिरिं ॥ २ ॥
 ३। पशुद्रस्य पुरुषस्य पुत्रो मंवति दावृपिः । तद्विप्रो अप्रवीढुदग् सद्वृ वृष्टः काम्यु षष्ठे
 पर्व पुणि रस्त्रियष्ठो यश्च दर्शां अद्वैश्वरिः । चीराणां श्वर्योतामह तश्चेष्टागिरिं शुभ्रम् ॥ ४ ॥

(यह पक खिल पट) वहा हुमा जो जो खिलते परे
इका है (हवा इस सभि म लिहाते) अबाल वह प्रका
रही मोर बाटा है। (परिस्थित राहा राधे) परिस्थित
राहो राधे (स जन मद्दें पथते) वह मनुष्य काय व
जल रहा है ॥ ७ ॥

(इन्द्र वायु मधुपथ) इन्द्र वायुमधुपथ व्यापा किं
 (उत्तिष्ठ वासे पि यर) उठ भार का मैं बा । (मम
 रमस्य इन् वायुपि) मम उपरी- इन् - की रमणि रम
 (सद्य अरिः त इत पणात) हय मक्षवत् तुम पण
 एव रहो ॥ ११०

(इह ताप प्रज्ञायत्वे) द्वारा पारे बो (इह ममाम्)
पीया आर (इह पूछा) । द्वारा उत्तर बो (इह
साध्यहसिन्द्र पूछा आप मि पीड़ित) द्वारा (आप
ए पुका इन्हें पूछा की देखते हैं) ॥ १३ ॥

१५४८ इन्द्राणी एका जा बढ़ा है १५४९
देखो ! (इसा गाय मा रिक्त) परन्तु दान न
म्हणो ! (मासी शोषिति मा उ रित्यत्) १५५० गायदान
पाव देखो ! इस्त ! मासी अभिष्टुः उम्) पाव
पाव इतर लग्दि इत वेरे (सब मा इत्यत्) पाव
१५५१ लिंगम् इन्द्र १५५२

(सर्वत्र यथा सर्वत्र तानुमसि) एवं ते एव
विद्युत् रुप रहते (यथा भूदेव यज्ञसा) एवं इन्द्रिय-
विद्युत् रुप रुपिते गते (अथ यज्ञः यज्ञ दीपितः)

ਇਸਾਰਾ ਪ੍ਰਤਿਕੇ ਸੁਨਨੇਵੀ ਹੈ ਇੱਥਾ ੧੫ (ਕਦਾਚਨ ਅਤੀਖੇਮ) ਇਸਾਰਾ ਜਾਪਾ ਵਸੀ ਨ ਹੈ ॥ ੧੪ ॥

(अक्टूबर)

(यः सम्प्रेयो विद्युत्यः) ता सम्मेव वाच्य आ सम्बन्ध
वाच्य (वाच्य सूच्या वाच्या पूर्वाः) ता वाचावत् निराशान
वाच्य वस्तु वर्णनेवात् तु इति देव उक्तो (ममुं दिवादर्थं
मूर्द्य) भारते तात्त्विकाद् गुरुश्च (तत् द्युया प्राची
सम्भव्यतयन्) इत्येवं वाच्य वर्णनेवात् वाचादा है ॥ ३ ॥

(पा. जाग्या धर्मयद्) ॥४॥ वह से भवित देखा
दे (तत् यत् समाप्तं दधूति) ॥५॥ भित्र साथ
पुकारा दे (यत् उपष्टि धर्मसत्ता) ॥६॥ उपेष्टि धर्मस
नी दुर दिनसाता दे (तत् धर्मयद् रति मादा) ॥७॥
भित्र वह दें ॥८॥

(पृष्ठ प्रदर्शन पुस्तक संस्कृति पुस्तक संस्कृति) विषय
भाषा उत्तर उत्तर विषय एवं विषय (पृष्ठ प्रदर्शन संस्कृति भाषा
विषय) विषय विषय विषय एवं विषय विषय (पृष्ठ
प्रदर्शन संस्कृति संस्कृति) एवं विषय विषय विषय विषय

(य यत्ति भ्रमु अह्य) या वाचन
ए रस्मै (या ए द्यान मरात्मिति) या द्या
नो शीर्ष (सम्भवा पीतला दग्ध मरान इनि
ष्टिप) या द्या केव वृद्धाद्य लिपि ।

ये च द्रुवा अर्यबन्नायो य च परादुदिः । दूयो दिवमिव गुत्वायं मुघवानो वि रस्याते ॥ ५ ॥
 यानास्ताषो अनभ्युक्तो अर्मविषो अहिरुण्यवः । अप्रेष्टा ग्रहणः पुत्रस्तोता कल्पेषु सुमित्रा ॥ ६ ॥
 य आकाशः सुम्पुकः सुमेषिः सुहिरुण्यवः । सुमेषा ग्रहणः पुत्रस्तोता कल्पेषु सुमित्रा ॥ ७ ॥
 अप्रेष्टा च वेष्टन्ता रेवाँ अप्रतिदिव्यवः । अप्रेष्टा कुच्याक्षरप्राणी त्रैता कल्पेषु सुमित्रा ॥ ८ ॥
 सुप्रेष्टा च वेष्टन्ता रेषान्तसुप्रसिद्विश्यवः । सुप्रेष्टा कुच्याक्षरप्राणी त्रैता कल्पेषु सुमित्रा ॥ ९ ॥
 परिवृक्ता च महिषी स्वस्त्याच्च युधिष्ठिमः । अनाशुरशायामी त्रैता कल्पेषु सुमित्रा ॥ १० ॥
 वावाता च महिषी स्वस्त्याच्च युधिष्ठिमः । वाशुरशायामी त्रैता कल्पेषु सुमित्रा ॥ ११ ॥
 यदिन्द्रादो दीप्तराङ्ग माल्युप वि गाहयाः । विल्पुः सर्वेषां आसीत्सुह युष्मापु कल्पते ॥ १२ ॥
 स्त्र वृषाक्षु मंषवुभवै मुर्याकरा रविष्ट । स्त्र रेतिनं व्याज्ञिरो वि पुत्रसाभिनच्छिरः ॥ १३ ॥

(ये च वृषा अथवात्) जो एतेष्व वक्तव्य वर्तते हैं । वार (ये च परादुदिः) जो इति वर्तते हैं । (सूधः दिव्य इष्ट गतवाय) वे सूर्य तुलोकमें वास्त्र (मध्याम वि रस्याते) वक्तव्याद् होते हैं ॥ ५ ॥

(य भासाकाश) विष्टके ज्ञात्वमें वक्तव्य वापाता नहीं है (मध्यामकः) वैष्णव विष्टके वक्तव्य वापाता वही (मध्यमिः अहिरुण्यवाद्) विष्टके वैष्णव वर्तन पही है वैष्णव वापाता भी वही (मध्याम वापाणः पुष्टः) जो वापाणम उत्तु इतेष्व वीर्या वही है (ताः वक्तव्याः) वे उष्ट (कल्पेषु सुमित्रा) वक्तव्यामें वक्तव्य रीतिः इतीव-माने थे ॥ ६ ॥

(य भासाकाश) विष्टके ज्ञात्वमें वक्तव्य है (भास्यकः) विष्टके वक्तव्य वर्तन उत्तम वक्तव्याः पुष्ट वही है (सुमेषिः) विष्टके वैष्णव वर्तन उत्तम वर्तन होते हैं (वैष्णववाद्) विष्टके वैष्णव वर्तन उत्तम वक्तव्याः पुष्ट वही है (वैष्णववाद्) विष्टके वैष्णव वर्तन उत्तम वक्तव्याः पुष्ट वही है (वैष्णववाद्) विष्टके वैष्णव वर्तन उत्तम वक्तव्याः पुष्ट वही है (वैष्णववाद्) विष्टके वैष्णव वर्तन उत्तम वक्तव्याः पुष्ट वही है ॥ ७ ॥

(वेष्टन्ता अप्रेष्टा) वाकाव विष्टके वीर्यवाय वही नहीं है (रेषान् वप्रदर्दि च यः) वक्तव्याम इतेष्व वीर्यवाय वही नहीं है (कल्पवायी वाप्त्या अप्रेष्टा) वृष्टवीर्यवाय वही नहीं है (ताः च ताः कल्पेषु सुमित्रा) वे उत्तम वक्तव्यामें वक्तव्य वही है ॥ ८ ॥

(रेषान्ता सुप्रमाणाः) वाकाव वाते भौव वक्तव्यामें

गरोदे (रेषान् सुप्रदर्दि च यः) वक्तव्याद् होतेर जो उत्तम वक्तव्य होता है (वैष्णवाणी वाप्त्या मुख्यम्या) इत्यर्थ कन्ता होतेर जो उत्तम होता है (ताः च ताः कल्पेषु सुमित्रा) वे उत्तम वक्तव्यामें वक्तव्य वही है ॥ ९ ॥

(महिषी परिवृक्ता) जो वैष्णवी वही हूँदे (तत्स्या च युधिष्ठिमः) वक्तव्य होतेर जी जो कुद्यमें वक्तव्य वही (भासामुः मध्यम वापामी) जो रेत जोड़ा वही वा वक्तव्य वापाता वही (ताः च ताः कल्पेषु सुमित्रा) वे उत्तम वक्तव्यामें वक्तव्य है ॥ १० ॥

(वावाता च महिषी) विष्ट वक्तव्याः (स्वस्त्याच्च युधिष्ठिमः) वक्तव्य होतेर जो कुद्यमें वक्तव्य है (स्वामी भासामुः सुपामी) उत्तम वक्तव्याम जोड़ा (ताः च ताः कल्पेषु सुमित्रा) वे उत्तम वक्तव्यामें वक्तव्य है ॥ ११ ॥

ते इति । (यत् यद् वायाताके वि गाहयाः) वा ए वायाम उद्योगे कुप यावा वा वह (भासामुर्ते) वह व्याप्तिः वह रुते विका वा । (सर्वेषी वैष्ट्य वासीत्) वर्तके विष्टे वह वायारवीव वा । (सः च यहसाय वक्तव्यते) वह रेत इत्य वक्तव्यके विष्टे समर्थ वाता है ॥ १२ ॥

(त्वं वृषाक्षाद्) त्वं वृष्ट विष्टके वक्तव्याद् है (मध्यवक्तव्य) इति । (मध्ये वातोका विष्ट वक्तव्यके) त्वैरे विष्टके वक्तव्य वक्तव्याम (त्वं ईतिः वृष्ट वक्तव्य) त्वैरे विष्टके वक्तव्य वक्तव्याम (त्वं ईतिः वृष्ट वक्तव्य) त्वैरे विष्टके वक्तव्य वक्तव्याम (त्वं ईतिः वृष्ट वक्तव्य) त्वैरे विष्टके वक्तव्य वक्तव्याम ॥ १३ ॥

या पैर्वतान्पदभायो भयो व्यगाहयाः । इन्द्रो यो बृंशुहा मुहान् तस्मादिन्द्र नमोऽस्तु ते ॥१४॥
प्रहि वावन्तु इयोरीतेः भवुसम्भूषन् । सुस्त्वयै जैत्रायेन्द्रमा वंह सुस्त्वयै ॥ १५ ॥

युक्ता सुवा वीथिः भवस इयो पैर्वतिन्ति दधिंणै ।
पैर्वतम् स देवान् भिन्नदिग्रें महीयते ॥ १६ ॥ (३१४)

[छन्द १२९]

एवा अया वा द्विन्दे	॥ १ ॥ प्रतीप प्रातिसुस्त्वनम्	॥ २ ॥
दासुमेष्य इरिकिका	॥ ३ ॥ इरिकिके किर्मिळसि	॥ ४ ॥
सुषु पुष्प हिरव्ययम्	॥ ५ ॥ काह त परास्यः	॥ ६ ॥
यन्नामृस्तित्रः शिष्पाः	॥ ७ ॥ परिश्रव्यः	॥ ८ ॥
पूर्वाक्षः	॥ ९ ॥ बृह चमन्त्व आसते	॥ १० ॥
भूयमिहार्गते लभी	॥ ११ ॥ स इच्छका सदापते	॥ १२ ॥
गोमयाद् गोगतिरिप	॥ १३ ॥ पुसा कुछे किर्मिळसि	॥ १४ ॥
पूर्वो श्रीहित्या इति	॥ १५ ॥ श्रीहित्या अंषु इति	॥ १६ ॥
अव्यग्र इवाकिका:	॥ १७ ॥ अर्थस्य वारो गोप्त्रफर्व ते	॥ १८ ॥
इयेनपर्यन्ति सा	॥ १९ ॥ अनामयोपजितिका	॥ २० ॥ (३१४)

(या पदानाम् व्यगाहयात्) विषये पर्वतोद्यो वसना
(या भयो व्यगाहयात्) वो वक्तव्योद्यो द्वित वदा ।
(इदम् या महान् बृशहा) इव वा वदा इत्येष मार्गे
वद्य है देवत । (तत्त्वात् ते यद्या वस्तु) इत्यन्ते द्विते
वद्यस्मर है ॥ १५ ॥

(इयोः प्रथि घावस्ते) इवान दोनो जातेह जाते दोहे
वद्ये (जो लोकवर्द्ध व्यहुवद्) ज्ञेभवासे वदा है (स्वकित
वद्य) वस्तव्यादी वद्य । (जो वाय सुखवद् इवद्य वा
वद्य) विषयके साथ वहेन इत्यको के वा है ॥ १६ ॥

(ज्ञेता युक्तवा) ज्ञेत जोशितो वोत्तर (इयोः
परिशिंण) वो जातेह इत्यिप मार्गम् (जीवेष्यवद्यस्ते
युक्तिन्ति) इत्येष वद्यो ज्ञेतहै । (ज्ञेतान् पूर्वतम्
इत्येष विषयत्वस्ते) ज्ञेतहै भृत इत्येष वारन वद्ये वह
(महीयते) वदा वदा वारा है ॥ १७ ॥

(छन्द १२९)

(पदाः वावन्तु) वेव वावितो (प्रतीपे प्राति-सुस्त्वनम्)
परीपे प्रातिसुस्त्वनमी लोर (वा द्विवस्ते) वीठो है ॥ १८ ॥
(वासी एवा इरिकिका) इवानेह एव वन् भूतो है
दे इरिकिका । (कि इच्छासि) त वासी वारा है ॥ १९ ॥
१९. (महीय वाय वद्यन् २)

(सार्व द्विवयय पुर्व) वासी द्विवही तुष्टव्ये ।
(क वावन्तं परास्यः) वदा वस्तो दौर शोद दिवा ।

॥ १०-१ ॥

(पर वस्तु तित्रः शिष्पाः) वहारे तान वीक्षमें
एव है (परि व्रयः) शीर्णेहि वात ॥ १०-८ ॥

(बृहाक्षः) वात (श्रूतं वस्तव्यस्ते) शीर्ण
ईक्षे यते है ॥ १०-१ ॥

(वर्य वर्वा इह वायतः) वह ज्ञेता वर्वा वाया है
(स इह यक्षा संकापते) वह गोवरदे जाना जाता है

॥ ११-१२ ॥

(गामयात् गोगतिः इव) गोवरदे जीवा मार्ग वेश
वद्या वारा है तुष्टी कुछे किं इच्छासि) मनुष्यों
इत्येष वद्य तुष्टा वद्या वादा है ॥ १२ ॥ १२ ॥

(पक्षी श्रीहित्यां इति) वह है वारन और वो ।
(श्रीहित्या वद्या इति) वारन और वो वा ॥ १३-१४ ॥

(महागतः वाविका इव) अवगत वीठा जेहोही ।
(मध्यवद्य वार ते योशाफात्य) जोडेव वार और वीठा
वह है ॥ १४-१५ ॥

(इयेनपर्यन्ति सा) वह वासी वद्योंके वद्योंवासी है

[सूक्त १३०]

को जपावहिमा दुरधारि ॥ १ ॥	को अठिक्षन्याः पर्यः	॥ २ ॥
को वर्णन्याः पर्यः ॥ २ ॥	कः काण्याः पर्यः	॥ ४ ॥
एव वृन्द इह पृष्ठे ॥ ५ ॥	द्वाः क पैक्षुक पृष्ठे	॥ ६ ॥
यत् नोपे तिष्ठन्ति कृषिम् ॥ ७ ॥	महाप्यन्तुः कुप्रायवः	॥ ८ ॥
अमणिका मणिलदः ॥ ९ ॥	त्रेवत्ता प्रति इर्यैम्	॥ १० ॥
एनी हरिकिका हरिः ॥ ११ ॥	प्रदुषुपूर्णवा प्रति	॥ १२ ॥
शृंग उत्सवे ॥ १३ ॥	मा स्वापि सस्ता नो विदत्	॥ १४ ॥
पुष्यायाः पुष्यमा यन्ति ॥ १५ ॥	इहा देवममदत्	॥ १६ ॥
जयो दुष्मियमिति ॥ १७ ॥	बयो दुष्मिति	॥ १८ ॥
वथाऽस्या अस्युरि नो मवन् ॥ १९ ॥	दुष्मिका श्वलाङ्का	॥ २० ॥ (१४६)

[सूक्त १३१]

आ मिनोति वि मिष्टते ॥ १ ॥	उत्सर्व कर्तु निमेष्टनस्	॥ २ ॥
रुणो याति वसुभिः ॥ ३ ॥	सुरं द्वायोरमीष्टवः	॥ ४ ॥

(अतामयोपतिकिका) पर नीरोपिताये अवेक्षणी है भूरे रूपावाही । (प्रजुमुकु भवा पर्यि) वर्तम हविके पर
॥ ११-२ ॥ भूरे रूपावाही ।

(सूक्त १३०)

(इसा दुरधारि का अवाहान) भैन इन एवके
मेष्टवे दे व्या । (का भर्यः वहुकिमा इष्टमि) यिष्ट
वाहने वहु इह वार्य दिवे । (का अस्तिक्षन्याः पर्यः)
भैन कामी वासके दृष्टको दे व्या ॥ १-२ ॥

(का भर्णन्याः पर्यः) भैन द्वेव वासके दृष्टवे और
(का अस्तिक्षन्याः पर्यः) भैन कामी वासके दृष्टको दे व्या ॥
॥ १-२ ॥

(परं पृष्ठे) व्यक्तो एव । (द्वाः पृष्ठे) व्या एव ।
(द्वाः पैक्षुक पृष्ठे) व्या किष्ट वहुव्यो पृष्ठ ॥ ०५-६ ॥

(यदा कुहिं न उपसिष्टमिति) भी देवते व्या नहीं ।
(द्वाः पैक्षुक पृष्ठे) द्वे एव द्वे होते हैं ॥ ०७-८ ॥

(अमणिका मणिलदः) यिष्टवे रहित और यिष्टवे
हरित (देव त्वा प्रति सूर्ये) दृष्टके वासके देवते
॥ ०९-१ ॥

(एनी हरिकिका हरिः) यिष्टवी शीर्षिष्ट और
१ ॥

(शृंगे उत्सवे) शीर्ष उत्सव होते पर (मा स्वा अपि
मा सक्ता विदत्) दृष्टे नहीं इमारा यिष्ट आवे ॥ १३ ॥ १४ ॥

(वथायाः पुर्वं मा पर्यि) येवे पुत्रके प्रति आवैरै
(इहा द्वे वसदत्) वासके देवते दिवा ॥ १५-१६ ॥

(मयो इष्टं इष्टं हरिः) वह पह है द्वा व्या (अयो
इष्ट) और वह वह ॥ १७-१८ ॥

(मयो अवा अस्युरि न मवन्) वह हवरे देवे
सुष नहीं दृष्ट (शालाङ्का इष्टतिका) एकार इती ही
है ॥ १९-२ ॥

(सूक्त १३१)

(आमिलोति वि मिष्टते) दृष्टे लेवत है, एवके
दृष्टे देते हैं (तत्य द्वे यिष्टवात्) वहका नाम
क्षीय ॥ २ ॥

(वस्त्रः याति वसुभिः) वहन वस्त्रोति साम व्या
(वायोः याति अमीहवा) वात्रुकी ही व्याहवी है ॥ ३-४ ॥

शुभमया दिरुप्ययाः	॥ ५ ॥	शुत रथा हिरुप्ययाः	॥ ६ ॥
शुभ कुथा हिरुप्ययाः	॥ ७ ॥	शुत निष्ठा हिरुप्ययाः	॥ ८ ॥
अर्द्ध इर्यवर्चक	॥ ९ ॥	शुके न पीते ओहन	॥ १० ॥
आपवेनन तदुनी	॥ ११ ॥	षुनिष्ठा नारे शृणत	॥ १२ ॥
इद मर्य मण्डूरिक	॥ १३ ॥	ते वृधाः सुइ तिष्ठन्ति	॥ १४ ॥
पाकशलि	॥ १५ ॥	शर्वसलि	॥ १६ ॥
शुप्रापा गंडिरो श्रवः	॥ १७ ॥	अरंदुपणः	॥ १८ ॥
वर्व इत ईश	॥ १९ ॥	वर्षासुः पूर्णः	॥ २० ॥
अर्द्धमित्र पीपूर्वम्	॥ २१ ॥	अर्द्धेष्वय पास्त्रवः	॥ २२ ॥
दा वं हुधितना इती	॥ २३ ॥		(१५८)

[मुक्त १२०]

शादुन्नायुरुमकरम्	॥ १ ॥	अलायुक्त निरातकम्	॥ २ ॥
हुद्धिरो निरातक	॥ ३ ॥	वद् वातः उभयायति	॥ ४ ॥
हुद्धाय कृष्णादिति	॥ ५ ॥	उप्र वनिष्टदातेतम्	॥ ६ ॥
न वनिष्टदातेतम्	॥ ७ ॥	क एषा वृहति निरात	॥ ८ ॥
एषा दून्मि इति	॥ ९ ॥	यडि इतेत् कथ ईति	॥ १० ॥

दुर्गी हनुत् छ्रहं हनत्	॥ १२ ॥	पर्योगारु पुनः पुनः	॥ १२ ॥
श्रीपूर्वस्य नामानि	॥ १३ ॥	हिरण्यमिस्येकमन्तरीत्	॥ १४ ॥
द्रे वा यस्तः शब्दः	॥ १५ ॥	नीलं शिष्पदा वा हनत्	॥ १६ ॥ coo

[सूक्त १३३]

पितृतौ किरणी द्वौ तावा पिनेटि पूरुषः । दुन्दुभिमा हननाभ्यम् ।			
न वै हृमाति रत्तया सयोः कुमारि मन्त्रसि	॥ १ ॥		
मातुष्टे किरणी द्वौ निवृत्तः पुरुषाद् र्तिः । क्षोश्चिले । न वै०	॥ २ ॥		
निग्रष्ट कर्त्तव्यौ द्वौ निरायच्छसि मध्यमे । रच्छुनि ग्रन्थेदानम् । न वै०	॥ ३ ॥		
उच्चानाभ्या श्वानाया विष्टुन्मत्त गृहति । उपानिति पादम् । न वै०	॥ ४ ॥		
स्त्रियांश्च शस्त्रिणकायां स्त्रस्यमेवाव॑ गृहति । उच्चराङ्गनीमादन्याम् । न वै०	॥ ५ ॥		
अवस्थामित्र अष्टुन्तर्लोमेवति हृद । उच्चराङ्गनी वर्तम्याम् । न वै०	॥ ६ ॥ (८०)		

[सूक्त १३४]

त्रुटेष्या प्रागपौरुदग्नभुरागासंभा उद्भिर्यथा । अलाखनि	॥ १ ॥
त्रुटेष्या प्रागपौरुदग्नभुरागासंभा उद्भिर्यथा । त्रुष्टाः प्रुष्टन्ते जापते । पुष्टात्कानि	॥ २ ॥

(देवी हनुत् छ्रहं हनत्) देवते वरावा अद्वा वरावा (पर्यम दिरायस्तुसि) पर्यम दिरायस्तु देव है । (पर्य-जापारु पुनः पुनः) पुनः पुनः जरके जारी और (एन्द्रुवि प्राप्तेष्या वार्ष) एसीष्यं प्राप्ती देवा ॥ १ ॥

(विभि वर्षस्य जामामि) वर्षके तीव्र जाम है, (हिरण्य इति एक वर्षावीत्) जीवा एक है ऐसा वर्षम् ज्ञा ॥ ११-१२ ॥

(विभि वर्षस्य जामामि) वर्षके तीव्र जाम है, (हिरण्य इति एक वर्षावीत्) जीवा एक है ऐसा वर्षम् ज्ञा ॥ ११-१२ ॥

(दैव वा यस्तः वावा) ये वर्ष और वर्ष देहौ, (वीष विष्टुन्तः वा हनुत्) वो त्रुटेष्या वर्षावेता ॥ १३ ॥

(भूल १३३)

(तीव्र द्वौ किरणी वितृतौ) वे दो किरण हैं हैं (पुरुषः द्वौ जापिताहि) त्रुष्ट ज्ञातो वितृत है (दुन्दुभि वा हननाभ्यम्) त्रुष्ट ज्ञाते वरावते हैं हनुमारि । (न वै तन् तप्या) न वै तना नहीं है हनुमारि । (यथा मन्त्रसे) जीवा त जापती है ॥ १ ॥

(ते मातृः द्वौ किरणी) देवी वरावते दो किरण वर्ष है (पुरुषात् र्तिति निष्टुता) त्रुष्ट ज्ञाते वर्ष वर्षा वर्षा है ॥ (कोशविले) वरावा और दिव ॥ ॥ १ ॥

(मिष्टाद्वौ कर्त्तव्यौ) देवी वरावते दो किरण वर्ष है (मिष्टाद्वौ कर्त्तव्यौ) विष्टुते हैं ॥ २ ॥

(पर्यम दिरायस्तुसि) पर्यम दिरायस्तु देव है । (एन्द्रुवि प्राप्तेष्या वार्ष) एसीष्यं प्राप्ती देवा ॥ १ ॥

(उच्चामायां वर्षावायां) वर्षे वा सेवके विष्ये (तिष्ठती वाद गृहति) वर्षती है वा पुष्ट वर्षती है । (वर्षा नहि पाद) ज्ञाप्तेष्यं पाद ॥ १ ॥

(इष्टवायां स्त्रिविष्टवायां) विष्टवायी, त्वेष वर्षे वर्षीये (स्त्रस्यं एव वर्ष रहति) वर्ष ही पुष्ट वर्ष है । (उच्चराङ्गनीं वर्षावायां) ॥ १५ ॥

(वर्षस्त्रस्यं एव वर्षावाय) पुष्ट वर्षके उमान भव देव है (इष्टे ज्ञातः ज्ञो वर्ष वर्षीये) हरवर्षमें वर्षभर ज्ञीय हैं उमान ॥ (उच्चराङ्गनीं वर्षावायां) ॥ १६ ॥

(भूल १३४)

(इह इर्या) वाद इह वर्ष (प्राप्त वर्षावाय वर्षावाय) पूर्व विष्य वर्ष और विष्टव्ये (वापावाय) हैं हैं (यथा वर्षावाय) वर्षे वर्षावते उमा (मिष्टाद्वौ) तुमिते ॥ १ ॥

(त्रुष्टाः पुष्टवर्ष वर्षावते) वर्षे वर्षी और वर्षी (पुष्ट वर्षावाय) विष्टुते हैं ॥ २ ॥

प्रुत्या प्रागपौगुदग्निरागासंभा उदमिर्यथा । भ्यालींपाक्तो विलींयत । अस्त्यपलाशम् ॥ ३ ॥
 प्रुत्या प्रागपौगुदग्निरागासंभा उदमिर्यथा । मा वै स्पृष्टा विलींयते । विप्रद ॥ ४ ॥
 प्रुत्या प्रागपौगुदग्निरागासंभा उदमिर्यथा । उष्णे स्त्राहे न लीप्सेयाः । चमसः ॥ ५ ॥
 प्रुत्या प्रागपौगुदग्निराग शिशिष्मु शिशिष्मते । विपीलिकायटः ॥ ६ ॥ (८०)

[सूक्त १३५]

शुगित्यभिर्वत । शा ॥ १ ॥ श्लित्यपकान्तः । पर्णप्रदः ॥ २ ॥ कलित्यपुमिहितः । गाश्रापः ॥ ३ ॥
 शीर्षे देवा वैक्मत्साच्चर्यो खिप्र प्रधर । सुपुदु मिदू गृष्मामस्ति प्र सुद ॥ ४ ॥
 पुरी पदद्यपते पुरी यद्यमाणा वरितुरोथामो देव । होता विर्णिमून जरितुरायामो दुष ॥ ५ ॥
 आदित्या है जरितुराङ्गिरोम्यो दक्षिणामनयन् ।

तो है जरितुर्ने प्रत्यापुस्तामू है जरितुर्ने प्रत्यगृष्मन् ॥ ६ ॥

तो है जरितुर्ने प्रस्यायन् तास्त्रु जरितः प्रस्यगृष्मन् ।

अहा नव सम्विचेतुनानि नम्ना नव सम्पुरोगवासः ॥ ७ ॥

उत्त श्वेत आशूपत्था उत्तो पद्यामिर्जितुः । उत्तेमाश माने पिपर्ति ॥ ८ ॥

आदित्या हृद्रा वसेवस्वेलत इद राष्ट्रः प्रति गृणीसङ्गिरः ।

इद राष्ट्रो विषु प्रुष्टु इद राष्ट्रो प्रुष्टु ॥ ९ ॥

इति देवतापर तद वै अस्तु सुचेतुनम् । युप्ते भ्रस्तु द्विदेवित्र प्रत्येय गृभायत ॥ १० ॥

स्वमिन्द्र श्वेत रिणा हृष्यः पारायतेभ्यः । विप्राय सुशुद्ध वृगुमनि दूर भद्रस वैह ॥ ११ ॥

स्वमिन्द्र फुपातोप लित्यपेष्याप वश्चत । इयामाह वृक पीतु श योस्मा अरुणापृष्टु ॥ १२ ॥

शुरुरा वौदीति प्रुषा वृदा वृत्रया । इर्मह प्रवैष्टुपर्यनिरामय सपति ॥ १३ ॥ (८१)

[सूक्त १३६]

परस्या अद्व भयाः क्षुपु स्पूलमूपावस्त्र । पुष्काविद्यस्या एवाता गाम्राप शुक्लार्दिष ॥ १ ॥

पदो स्पूलेन्त पसुसाणीं मुष्का उपावैष्टीत् । विद्येभ्रावस्या वृष्टेन्तः मिर्जिताविद् गदुमा ॥ २ ॥

वैदिक्या स्वनिक्षा कक्ष्युकेव पदेत । वासन्तिकमित्र तवेन्त भर्ते आत्मर्य विद्यत ॥ ३ ॥

पद इवासो चुलामंगु प्रविष्टी मित्रमार्पितु । पुष्कना देविद्यत नारी सुम्पस्यात्ति भृता यथा ॥ ४ ॥

(स्वार्तापात्य विलीयते) इत्यन्ते वादिक्षीत हीना (उत्त्य स्तोत्र म सर्वायता) एव ए इति ११३-१४

१ (अव्याय-प्रसादा) भैवा वै इत्या वा ॥ १ ॥ (गमग) वाचवा १५ ॥

(सा वै स्पृष्टा भीषण) वृक राष्ट्रो इद भैवा हीना (अव्यायिक्षमु शिवास्त्रेत एवीनिकावटा) ॥ १६ ॥

१ (विष्ट) भैवा वार्ता वृक ॥ २ ॥ (वाचवा वृक्षे वै वाचवा वृक्षे वै वाचवा वृक्षे वै) ॥ १७ ॥

(विष्ट) भैवा वार्ता वृक ॥ ३ ॥

महानग्न्येष्टपूर्व विषुक्तः क्रुदशा नासरन् । शक्ति कतीना सुद मच्यम सक्षयैठम् ॥ ५ ॥
 महानग्न्येष्टपूर्वलमिकामन्त्यप्रभीत् । यथा तर्व बनस्ते निष्पन्ति तथैवेति ॥ ६ ॥
 महानग्न्येष्टपूर्वे भ्रुते भ्रष्टोऽयाप्यप्यमुखः । यथैव ते बनस्ते प्रियिनितु तथैवति ॥ ७ ॥
 महानग्न्येष्टपूर्वे भ्रुते भ्रष्टोऽयाप्यप्यमुखः । यथा द्रुषो विद्युत्यज्ञानि मम दद्यन्ते ॥ ८ ॥
 महानग्न्येष्टपूर्वे भ्रुते भ्रष्टोऽयाप्यप्यमुखः । इत्य फलस्य त्रुष्टस्य शूर्णं शूष्पं मन्त्रमहि ॥ ९ ॥
 महानभी रुक्षाकु शम्ख्या परिष धावति । त्रुष्य न विषु पो मूर श्रीर्णा इर्णसि धार्णिकाम् ॥ १० ॥
 महानभी मंहानभं धावत्तमुन्तु धावति । इमास्तदस्य गा रथु यम मामुदयोदुनम् ॥ ११ ॥

सुदेवस्त्वा महानभी विष धावते महृतः साधु खोदेनम् ।

कृषित पीर्वरी नुशद् यम मामुदयोदुनम् ॥ १२ ॥

त्रुष्मा त्रुष्मा विनाकुर्ति प्रसुष्वत चन्तकरम् । महान् वै मुद्रो विस्तो यम मामुदयोदुनम् ॥ १३ ॥

विद्युत्स्त्वा महानभि विष धावते महृतः साधु खोदेनम् ।

कृमारिका पिङ्गलिका कार्ये कृत्या प्र धावति ॥ १४ ॥

महान् वै मुद्रो वित्ता महान् भेद्र उद्गम्भरः । मर्ही अमितो धावते महृतः साधु खोदेनम् ॥ १५ ॥

प इमारी पिङ्गलिका रुषित पीर्वरी लौर्मेत् । उलकुम्भा दिवोकुष्टं रदन्ते शुद्धसुदरेत् ॥ १६ ॥ (११)

॥ इति कुम्भापस्त्वाग्नि ॥

[पूर्व १३७]

(ज्ञायि — १ विद्युतिभिर्भिः २ त्रुष्मा; ३ वामदेवाः; ४-५ यथातिः ६-११ तिर्त्यारात्रित्याः
 त्रुष्मामो वा १२-१४ सुकामः । वेदवाता — १ भलकृष्मितात्रात्मम् । २ इत्याः । ३ वर्षिकाः
 ४-५ सोमः वषमातः ६-११ इत्यात्माः ।)

यम् प्राचीरक्षगुन्तोरे मण्डरधाविकीः । इता इन्द्रस्य शत्रुङ्गः सर्वे त्रुष्मदयोद्यवः ॥ १ ॥

कृष्मरः कपुष्मद्युष्मातन चोदयत सुदृत वार्षसातये ।

निदिष्युः पुष्ममा व्यावयोदत्य इन्द्रं सुवार्ष इह सोमपीतये ॥ २ ॥

(पूर्व १३७-१३४)

[वृजना — वै सुष्म अर्देत उरियन और जिह है । अद उनक नर्त वहा रेता अदकत है । जो विद्युत इसमें अच्छी दराह उत्तम चलते हैं । व इसमें अर्द स्त्रावीकरण के साथ विद्युत भिर्वये हैं । वर्षी कृष्मा हीरी ।]

॥ यदा कुम्भापस्त्वाग्नि समाप्त ॥

(पूर्व १३७)

(मण्डरधाविकी) वैसे वात्त वर्षेवाती (यत् (अत्यन्त) वृष्मकै विने (आक्षयावय) नौके अप्ते

द उरा प्राची वर्षमन्त) वै विद्युते तीवे जावे परी

(त्रुष्मदयामवः सर्वे इन्द्रस्य वायवः इता)

उद्गुरो उमान इन्द्र उर उमु मरे परे ॥ १ ॥

(अ १ १५५८)

है (उरा) मनुष्यो । (कृ-गृह्ण) इन्द्र उद्गुरे पर्व दे ।

(वामसातये) वर्षके वार्षके विष्ये (कृ-पूर्ण वायातव)

मृष्माता इन्द्र व्याली (चोदयत) भैरव व्यो, (शुद्धत)

वर्षिकत व्यो (विद्युत्या पुर्व) वर्षिके वुष्मके

वार्षिक विने (आक्षयावय) नौके अप्ते

दुषिक्षाभ्योँ अकारियं ब्रिष्णोरक्षस्य शामिने । सुरमि तो मुख्या करत्प्रण आयुषि तारिपद् ॥ ३ ॥
 सुवासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मुनिनेः । पुविवेवन्तो अवरन्देवान्नभृत्नु वो मदा ॥ ४ ॥
 इन्दुरिन्द्राय पवतु इति देवासो वस्त्रवन् । वाचसप्तिर्मर्यस्यते विश्वस्येशान् ओवेसा ॥ ५ ॥
 सुहस्तापारः पवते समुद्रो वीचमीक्ष्यतः । सोमः पर्ती रथीणा सखेन्द्रस्य द्विवेदिवे ॥ ६ ॥

अर्थ द्रृप्सो भैश्वमत्तीमतिष्ठिदिग्यानः कृष्णो दुष्टमिः सुहस्तः ।
 वावृत्तमिन्द्रः छन्द्या भर्त्तुपप्स्नेहितीनुमणा अपच
 द्रृप्समेपश्य विष्णुणे चरन्वप्यहुरेन्द्रोऽन्योः अमूलस्याः । ॥ ७ ॥
 नमो न कृष्णमेपवस्त्रिष्यासुमिष्यामि वो धृषणे पुष्पत्तुग्नौ
 अर्थ द्रृप्सो भैश्वमत्ती उपस्थेऽप्त्वा वर्षान्वेति तितिप्राप्तः । ॥ ८ ॥
 विष्णो अदेवीरम्पाऽचरन्तीर्ष्वद्विना यज्ञे-द्वृः सप्ताहे
 र्थं ह त्यत्सुसम्यो जायमानोऽशुश्रुत्यो अमवुः ऋष्विन्द्र । ॥ ९ ॥
 गृहे घावापृथिवी भैविन्दो विभूमद्वम्यो मुखनेम्यो रथं घाः ॥ १० ॥

(सत्यापः) वाचा व्यवेषणांसे दुरुक्तां लिखे (इह इन्द्रं
 चोपरितिष्ठे) वहा इन्द्रके घाम वीतेके लिखे मे जाओ ॥ १० ॥
 (क्ष १ ११ १११)

(विष्णोः वाजित वृथिकाण्यः अव्याप्त्य) विष्णवी
 व्याप्त्य वही लेखे उक्त वीतेकी सुरुति (अकारिय) वही
 (मो मुखा धृषणि करत्) एमो शुद्धीयो धृषणेत वही
 (व आर्योप प्रतारिपद्) इमारी जातुमोहो वहापे ॥ ११ ॥
 (क्ष १ ११ १११)

(मधुमत्तमा सोमाः) यीठे धर्मरथ (मन्दिनः
 इन्द्राय सुतासा) व भास्त्रम देवेषांसे रथ इन्द्रे लिखे
 लिखामे है । वे (पविवेवन्तो वस्त्रवन्) छान्वांसे छावे यथा
 (व भास्त्रा इवाय गवस्त्रस्तु) द्रृप्सों के भास्त्र देवेषांसे
 रथ लेखा पूर्वे ॥ ११ ॥

(इन्दु इन्द्राय पवते) वोम इमहे लिखे वाचा वाचा
 है (इति रथास भैविन्द्र) ऐता देखाये वहा है । (वाच
 स्पति सर्वेष्य इन्द्रामाः) वाचिता पवति वहां लायी
 (भोद्वसा) अर्पनी कृष्णेण (मवस्थते) वहां पूर्व
 वहा है ॥ १२ ॥

(सदृश्यथारः समुद्रा) वास्त्र वारांवाला वहुर
 (वाचे इन्द्राय) वाचीष देवत (रथीणा याति) यातीवा
 लायी (वाम) धोरपत (इन्द्रायस्य लक्षा) इन्द्रा लिख
 (दिवे दिवे पवते) भैवेदिन वातेत्र लिखा वाता है ॥ १३ ॥
 (क्ष १ ११ १११)

(ब्रह्मिः सदृशः) एष इवांते वैदेषिक लाव (हयानः
 हृष्णः) जनेवाला भमा (द्रप्सः) धोरपत (मधुमत्ती
 व्याप्त्यातिष्ठृत्) लेवेषितांसे वा छावा । (शृण्या धमस्त
 त) लापिते शाप धोरपताल वामी (वावन्) रहा थी ।
 (मृग्याणा) वीर वसासे इन्द्रामे (स्वेहिती) यथ अपत्य
 वाक्षीषे वो छाव ॥ १२ ॥

(ब्रह्मुमत्ता वधाः) भैश्वमती वर्षीक (उपहरे
 विष्णुये व्यरत्त) वहर लिख भास्त्रं वस्त्रेषांसे (द्रप्सं
 अपद्यं) धोम्ये भेदी वह (वायतस्त्रियांसं) योवे रहेवालेभो
 है (कृष्णण) वहावाल वीरो । (भास्त्री मुख्यत) वाय
 पुद्यमे पुद रह (व इन्द्रायामि) देखा भावके रितवद्यमे
 वाहा ॥ १३ ॥

(भय) भास्त्र (द्रप्सः) धोरपते (तितिविदापः) तेष्टसी होर (मधुमत्ता व्यरत्ये) वैष्णविनिषेद वस्त्र
 (ताम्यं भास्त्रायत्) भास्त्रे वास्त्रो वास्त्र लिखा । (इन्द्रः)
 इन्द्रे (पूर्वस्पतिना मुजा) तुर्वनिषेद लाव इन्द्र
 (भयया व्यरत्ती) अदेवी दिवाः (पुद वरेवाली भातुती
 लेवाना (भस्त्राह) वरापत लिखा ॥ १४ ॥ (क्ष १ ११ ११५)

हे इव ! (य वायामान) त वरद हात ही (त्वन्
 समस्यः वदावृद्याः) वन वास लिख यु गी रुप
 एवुद्वेषे लिखे (चाडु अमवः) यु इवा । (गृह्य-

त्वं ह स्पदप्रतिमानमोऽत्रो वर्जेण अभिन्नपितो ऋषयः ।

त्वं शृण्णस्यादतिरो वर्जेणस्त्वं गा इन्द्र शम्पेदविन्दः ॥ ११ ॥

वर्मिन्द्रं वावामसि मुहे वृश्चाय इत्येव । स वृषो वृषमो मुवत् ॥ १२ ॥

इन्द्रः स दामने फूत ओर्बिषुः स मदेहि विः । दुम्ही शोकी स सोम्यः ॥ १३ ॥

गिरा वज्रो न संभृतः सर्वज्ञो अनेपच्युतः । वृषव अष्टो अस्तुतः ॥ १४ ॥ (११९)

[सूक्त १४८]

(ऋषिः — १-२ वासा । दवता — इन्द्रः ।)

मुहां इन्द्रो य लोकेसा पुर्वयो वृष्टिमां ईव । लोकेष्वस्तसे वावृषे ॥ १ ॥

प्रवामुतस्तु पित्रितः प्र यद्गरन्तु वहमः । विश्रो ऋतस्य वाहसा ॥ २ ॥

कष्मा इन्द्रं यदक्षेतु स्तोमेष्वङ्गस्तु सावनम् । ज्ञामि त्रुतु आयुषम् ॥ ३ ॥ (१२०)

[सूक्त १४९]

(ऋषिः — १-२ वाशकर्णः । दवता — अविष्मौ ।)

आ नूनमधिना युव वृत्सस्य गन्तुमवसे । प्राप्तै यच्छत्वमवृक पुरुष्टिदीयुतं या अरातयः ॥ १ ॥

यावापूर्णिष्ठी भगवदित्य । प्रस रो यावा पूर्वतो दृपते
माप तिक्षा । (विमुम्भूयः भुवनेभ्यः एवं यावा)

भाप्त मुर्मनोद्देव लातेव तिक्षा ॥ १ ॥ (कृ. ११११९)

इ (यावाम इन्द्र) वर्जयती इति । (तदेह व्यत्
भगवतिमाम यावा) एव वृ वर्जयती वर्जयती प्रवृत्ति
तिक्षा उमय (वृष्टिपत वर्जयती वर्जयती) इति वृत्ति वर्जयती
वर्जयती यावा । (वृ शृण्णस्य वर्जयती भवाविष्ठा)
एव गत्तेषु वृष्टिपत्तो यावा । (ती शृण्णाइत्यगा भविष्ठा)
तु वृ वर्जयती वर्जयती गत्तो यावा तिक्षा ॥ १ ॥ (कृ. ११११९)

(महे वृष्टिपत्तो वृ वर्जयती मार्त्तके तिक्षे (तं
एवर्जयती वायामसि) तत्त्वत्तो इत्यापार्वती वर्जयती
है । (स वृषा वृष्टिपत्तो वृ वर्जयती इत्य वर्जयती
वर्जयती वर्जयती है ॥ १ ॥) (कृ. ११११९)

(स इन्द्रः वामते इता) वृ इत्य वर्जयती तिक्षे तेवार
तिक्षा । (मोक्षिः स महे इता) वृ तिक्षयाव वामत
में रक्षा है (यस्ती शोकी स साम्य) वृ वर्जयती
स्तु य और दोषक तोम्य है ॥ १ ॥ (कृ. ११११९)

(गिरा वज्रः न संभृतः) तिक्षे वृ वर्जयती समान
तिक्षा दुम्हा है (सवता अनेपच्युतः) वृ वर्जयती वृत्त
कली वर्जयती न दोमेवामा है (वज्रः वस्तुतः ववतः)

महात् भैर व वारलेवामा मार व्यात्त ॥ १५ ॥
(कृ. ११११९)

(सूक्त १५०)

(या इन्द्रा जोडसा महात्) यो इत्य लपती वर्जयती
महात् है, (वृष्टिमाप पर्वत्य इव) वृषा वर्जयती वर्जयती
समान वर्जयती है (वस्तस्य स्तोमा वायुष) वर्जयती वर्जयती
है वृ वर्जयती है ॥ १ ॥ (कृ. ११११९)

(ऋतस्य पित्रत प्रजाः) वर्जयती वर्जयती इन्द्रो
(विप्रा ऋतस्य वाहसा) विप्रा वर्जयती वर्जयती वाव
(यत् वहय प्र भरत) यत् वर्जयती वर्जयती वर्जयती
तेवर्जयती है तेवै है ॥ २ ॥ (कृ. ११११९)

(वर्जयती इन्द्र) वृ तिक्षे वर्जयती (स्तोमै यज्ञस्य
साम्यत्वं पृथ भवत) रत्नेष्वेष वर्जयती वृ वर्जयती
वर्जयती है (आयुर्व जामि त्रुत) स्तोमे वृ विप्र वर्जयती
है ॥ ३ ॥ (कृ. ११११९)

(सूक्त १५१)

है (भविष्ठा) भविष्ठो ! (वृष वर्जयती अवसे)
दुम वामो वास्तवी रक्षा तिक्षे (भूत भा गत्त) विक्षय
वामो । (भवती) दुमके तिक्षे (वृषक वृष्टिदीयुती)
विक्षयेष वर्जयती वर्जयती (प्र वर्जयती) है तो । (या
वर्जयती पुरुषत) यो वृष ही वर्जयती दुम वामो ॥ १ ॥
(कृ. ११११९)

यदुन्वरिष्ये यदिकि यत्पञ्च मानुपाँ अनु । नूमा उद्देश्मशिना ॥ २ ॥

ये ता दसौस्यशिना विश्रामः परिमामुशुः । ऐचस्काण्वस्य बोधवम् ॥ ३ ॥

त्रुष वीं चूर्मो अशिना स्तोमेन वरि पित्यते । त्रुष सोमो मधुमात्राविनविसू येन त्रुष चिकेतयः ॥ ४ ॥

यदुप्सु यदुन्स्पतीं यदोपचीषु पुरुषससा कूरुषम् । तेन माविष्टमशिना ॥ ५ ॥ (१३)

[सूक्त १४०]

(क्षायिः — १- वाशकाचः । वेषता — मध्यिनो ।)

यज्ञोस्त्या भर्णप्पयो यद्वा देव भिपन्नयतः ।

त्रुष वीं वृत्सो मुतिभिर्न विन्चते हुविष्पन्तु हि गच्छयः ॥ १ ॥

वा नूनमुशिनोर्भिपि स्तोमे चिकेत त्रामयो । आ सोमु मधुमत्तमं त्रुमे चित्रादर्थविगि ॥ २ ॥

वा नून रुद्वर्तनि रथं तिष्ठायो अशिना । आ ता स्तोमो त्रुमे समु नमो न तुन्यवीरत ॥ ३ ॥

पदुष वीं नासत्योक्तयेर्त्रुम्युभीमहि । यद्वा वार्षीभिरशिनेवेक्षाण्वस्य योधवम् ॥ ४ ॥

यद्वा कृष्णीवीं त्रुत पद्मन्त्र ऋषिर्यद्वा द्वीर्षतमा त्रुहाव ।

पृष्ठी यद्वा त्रैया सादेष्वेदतो अशिना चेतयेषाम् ॥ ५ ॥ (१३)

१ अधिरेतो । (यत् अस्तरित्वे) वा अस्तरित्वमै (यत् दिविः) बो युग्मोक्तम् (यत् पञ्चमात्रान् अनु) वा योक्तो यन्त्रियो है (तत् मूर्खं अर्थं) वह वीक्ता कर्तृ इयमें रहो ॥ १ ॥ (च ८११)

२ दे अधिरेतो । (ये विमासः) बो व्राह्मण (वा दंसासि) भास्ते क्तोऽस (परिमामुशुः) भावमें जरते है (पद्म इत्) देश ही (काण्ववस्य वा बोधवत्) क्षमात्रा भारय रथो ॥ २ ॥ (च ८१२)

३ दे अधिरेतो । (वा अर्थ यमः) आपन्न वह वह (स्तोमेष्व परि पित्यते) स्तोत्रते चीका वया है हे (वाविनीत्यसू) वहके कावी । (अर्थं मधुमान् सोमः) एव मीठा सोय है (येम त्रुष चिकेतयः) चिकेते इत्ये प्रत्यानते हो ॥ ३ ॥ (च ८१३)

४ दे (पुष्करवस्ता मध्यिना) भर्णप्त एव वसेषाते अधिरेतो । (यत् अन्तु) बो क्तोमे (यत् वत्स्याती) वीं वनसप्तिवे (यत् लोपधिषु) बो वाविनीते (इत्) चिना (तेन मा अविष्ट) इसके हाता येठी रहो ॥ ४ ॥ (च ८१४)

(सूक्त १४०)

५ दे (नासत्या) अधिरेतो । (यत् मुरण्यथा) वा त्रुष त्रुषी रहते हो (यत् ता देव भिपन्नयतः) अवश चिन्ही है रहो । त्रुष चिन्हिना बदले ही (अर्थ वर्ततः)

१ वह वह (मतिभिः वा म विष्टते) स्तोत्रोंमें आपदो वीं प्रात वाता कर्तृते (हुविष्पन्तु हि गच्छयः) इये देवावधीं बार ही त्रुम वात हा ॥ १ ॥ (च ८१५)

(अ॒यिः अधिनो स्तोमे) अ॒यप्ते अधिरेतो वस्त्रे (वामया नूमं ता विकेत) हुव त्रुषते विष्पन्तैऽ वात तिवा है । (मधुमत्तमं त्रुमे सोमे) अवश मीठे यावी वामया (अपर्याप्तं वा विष्टात्) अपर्याप्तं चिन्ह वही ॥ २ ॥ (च ८१६)

२ दे अधिरेतो । (एधुवत्तनि रथं) दीप अव्येषाते ॥ १ पर (नून वा तिष्ठायः) विष्पन्तैऽ धृते (नयः न) मोक्ते यामान (मम हमे स्तोमाः) भेरे ते स्तोत्र (वा वा मुख्यवीत्वात्) भावहो इत्यर वावे ॥ ३ ॥ (च ८१७)

३ दे (नासत्या अधिना) नापन्न अधिरेतो । (यत् अर्थ वीं ठक्कीये आकुट्युभीमहि) बो भाव इम हुम्दे स्तोत्रोंते इत्यर लाते हैं (यत् वा वाविभिः) अवश बो वाविनीते (इव इत् काण्ववस्य बोधवत्) देश ही कामदो वाप्ति ॥ ४ ॥ (च ८१८)

(यत् वीं वाविनीत्यान्) देश हुम्दे इत्यत्तने (उत् यत् व्यव्याप्तः क्षायिः) अवश भेरे व्यव्याप्त अधिरेते (यत् वीं वीर्यतमा त्रुहाव) भेरे भावहो वीर्यतमेव कुमया वा (यत् वीं वृथा वेष्यः) भेरे भावहो पृथी वस्त्रने (साद् वेषु इप इत्) वीर्यमेव कुमया वा है अधिरेतो । (वा)

[श्ल १४१]

(ज्ञापि: — १-५ शाशकर्षः । देवता — भद्रिवनी ।)

यात छार्तुप्या द्रुत नं परस्पा भूत ग्रंथा द्रुत नस्तनूपा । बुर्तिस्तोऽप्य तनयाय यातम् ॥ १ ॥
 यदिन्द्रेण सुर्वे प्रायो अभिना यद्वा प्रायुना मवेषः समोऽस्ता ।
 यदादित्येभिर्क्रम्युः सुबोधसा वद्वा विष्णोऽस्त्रिक्रमेष्व लिहुषः ॥ २ ॥
 यदुपाशिनोवहं दुष्ये वाज्ञातय । यस्पुत्रु दुष्ये सहस्रच्छ्रेष्ठमुशिनोरवः ॥ ३ ॥
 आ नूनं योउमशिनेमा हृष्णानि वां द्विता । इमे सोमासु अविं तुर्वष्टु यदाखिमे कण्ठेषु वामर्थ ॥ ४ ॥
 यमासस्या पराके अर्षाके अस्ति मेष्वम् ।
 तेन नूनं विमुदाय प्रचेतसा छुर्दिव्यसाय यन्त्रतम् ॥ ५ ॥ (१४१)

[श्ल १४२]

(ज्ञापि: — १-५ शाशकर्षः । देवता — भद्रिवनी ।)

अमुतस्यु प्र देव्या साक वाचाहमुशिनोः । अ्यावर्तुप्या मुति वि राति मर्त्येष्वः ॥ १ ॥
 प्र वौषधोपो अभिना प्र देवि चनुते महि । प्र यंक्षहोतरानुपक्रम मदायु भ्रमो वृहत् ॥ २ ॥

वतयेषां) देवे ही वहा भावेक लिखे आले ॥ ५ ॥

(अ. १४११)

(श्ल १४२)

(उर्दिप्या) एवावह (उत नः परस्पा) अवता इत्याच्छ्रुतोऽसे रत्नप वर्तेशाने (जगत्या उत्तमः तनूपा) पर्वतोऽरुद और इत्योऽरुद वर्तन (आ पात) आओ । (ताकाय तनयाय) उत्र-नीत्रोऽरुद वर्तके लिखे (याति आ यात) इत्यो वर आला ॥ १ ॥

(अ. १४११)

दे अभिनो । (इत् इत्येष सरयं पापाः) वरि दुष्ट इत्येष याव एव रत्नव वाते हा (यत् या प्रायुना समा वसा भवयथा) विवा वातुष्ट वाव एव वर्तमे रत्नेशाने इत्यो ही (यत् या विवयेभिः) वरि अरिश्वो और (प्रभुमुशिः सत्त्वोपत्ता) वातुष्टो वाय एव वात्वेव तप्तेहा (यत् या विष्णोः विकामण्यु विष्टुप्या) लिखा विष्टुके विक्षेपे द्वारे हो ॥ २ ॥ (अ. १४११)

दे अभिनो । (यत् यद्य मद्दे) वरि आवर्ते दुष्टे (पात्रसातय दुष्टय) विक्षिता वाव वर्तेवे लिखे दुष्टता द्वां (यत् यु दुष्टय लदा) वो तदावोने लिखने देशाला वावह दे (तत् अभिना वयः भ्रम्म) वह अविद्यता देव रुद्ध वह दे ॥ ३ ॥ (अ. १४११)

दे अभिनो । (नूनं या याते) लिखते आले । (वा इत्याच्छ्रुति द्विता) आपके लिखे इत्य रहे हैं । (इत्ये सोमासा) वे लेप (तुर्वष्टो अधिः) दुर्वष्टो (इत्ये यदी) वे वर्तमे (यथ इत्येषु याः) और क्षमोऽम दुर्वष्टो लिखे हैं ॥ ४ ॥ (अ. १४११४)

दे (मासस्या) अभिरेता । (यत् यताके वावकि येष्वं भस्ति) वो दूर वा वाच और वहे दे (प्रकृतसा) विक्षाल इत्याको । (तत्) वर्ते (विमदाय वस्तसाय) विष्ट वार वर्तके लिख (उर्दिः यस्त्वां) वर हो ॥ ५ ॥ (अ. १४११५)

(श्ल १४३)

(देव्या) लवेदीके वाव (भवित्वोः वाया साक) अभिरेतोऽस्तुतिके वाव (भद्र म भमुतस्यु) मै अ्या । हे (वदि) हे एव । (मति राति मर्त्येष्वः) त्युति लोर वाव वात्वेवे लिखे (आ वि आयः) दुष्टने लोल दिका ह ॥ १ ॥ (अ. १४११६)

दे (सूक्ष्मे महि द्वयी वाव) दुर्व वहो देवी वाव । (अभिना प्र योषय) अविश्वोऽव वाव हो । हे (यत् होता) वहो देवी । (मदाय आत्मुष्ट म) वावेद लिख वाव वाव वहा हो । (भवः सृष्ट) वह वह वह ॥ २ ॥ (अ. १४११७)

यदुयो यासि भ्रातुना स द्वयेण रोचसे । आ हायमभिनो रथो वृत्तियांति नपाव्यम् ॥ ३ ॥
 वदार्पीतासो अष्टको गावा न दुहू ऊर्ध्वमिः । यद्वा वाणीरम्पतु प्र देव्यन्तो अशिना ॥ ४ ॥
 प्र पुद्माय प्र द्वयसे प्र नुपाव्याय द्वयेण । प्र इष्टाय प्रथेतसा ॥ ५ ॥
 यमूलं चीभिरधिना पितृयोनो निपीदयः । यद्वा सुम्भेमिरकव्या ॥ ६ ॥ (१४३)

[घट १४३]

(कथा) — १ ७ पुरुषीहात्मीहो, ८ वामदेव ९ मध्यातिथिमेषातिषो । देवता — मनिनौ ।)

ग वा रथं पृथमुद्या द्वृष्टेम पृथुमर्यमभिना सगतिं गोः ।
 पः सूर्यो वृहति वा द्वृगुपृगिर्वैहस पृश्लुमे वसुपुम् ॥ १ ॥
 युष भिर्यमभिना द्वेवता ता दिवो नपाता वनपः द्वर्चीमिः ।
 पृथुवपूरुमि पृथृः सचन्ते वृहन्ति यत्कुद्धासो रथं वाम् ॥ २ ॥
 क्षो वामुद्या करते रात्रद्वयं तुर्ये वा सुत्पेताय वार्कः ।
 शुस्त्वय वा वृनुये पृथ्याय नमो येमानो अशिना वैवर्तव् ॥ ३ ॥
 हिरण्येवन् पुरुष रथेन्तम् युज्ञ नासुस्योप वातम् ॥ ४ ॥
 पितृश्च इन्मधुनः सोम्यस्य द्वयेण रथं दिष्टुते वनीय ॥ ५ ॥

(पद द्वा) वद इ तता । तृ (मानुमा यासि) वाम (पृथुमर्य वा तं रथ) द्वृष्टो विश्वत वस रथवा
 वापी चमद्वे साव वाही है (द्वयेण स रोचसे) दृष्टे
 वाप प्रथक्ती है देव (वामेवनो वाय रथः) अतिरोद्ध वद
 ए (नुपाव्य वर्तिं वा याति) मनुपाता एव वरेवाते
 व वर वाता है ॥ १ ॥ (च. ८१११४)

(यदा पीतासः वृद्धाया) वद वीरामरु देते हैं (गावः
 अथिमि वुहू न) तीव्रं वृद्धी जग्ने तुपावाये दृष्ट देती है
 (देवपत्नः अविवता) देवोऽस वृद्ध विवेकोद्ये (वद वा
 वाणी य वन्दूपत) वद वामिना खति दरती है ॥ २ ॥
 (च. ८१११५)

हे (प्रथेतसा) विष्ट लाभी अविवेनो । (पृथ्याय प्र)
 एवके लिये (शब्दसे प्र) वदके लिये (नुपाव्याय प्र)
 एवके परामरु वरद्व लिये (वामेण द्वयाय प्र) द्वृष्ट
 लिये वार वदुराईहे लिये इमे यातावा वं वो ॥ ५ ॥
 (च. ८१११६)

हे अविवता । (पद नून) वद विवदेष दृष्ट (भीमि
 पितृ योनी वा लिपीद्यप) उकिलों वाम पितृव वर्ते
 देते हो (उक्त्या) हे तुमिले वैम वापिरेहो । (पद
 वा सुमेमि) वद वर्तम वनामवालोंके धाव रहते
 हो ॥ १ ॥

(घट १४३)

हे अविवेनो । (गोः संगति) विर्लोचे दृष्टा वर्ते

वाम (पृथुमर्य वा तं रथ) द्वृष्टो विश्वत वस रथवा
 (वयं भयं वा द्वृष्टेम) वद वाम दुकोते हैं । (वा वामु
 दायुः पृथृ वृद्धाते) वो एव वदवा वामव देवेवसा
 सूर्यो वै वाता है । वद एव (गिर-वाहस) द्वितीय
 वदेवता (पुरुषतम वसुसु) वदा और वन्दे भय रथा
 है ॥ ३ ॥ (च. ८१११७)

हे अविवता । (युष देवता) द्वृष्ट वदता दोनेक वार्ण
 वीर (दिव लपाता) दुष्टेहो न मिरनिवै दामेन वार्ण
 (द्वर्चीमिः तां विष्य वनपः) अरपी विवेव रथ
 लामाश वास वरते हो । (दृशः वयोः युषु अयमि
 सव्यस्ते) वद द्वृष्टाव वृद्धिके साव मिलता है । (पद
 वृद्धासः वीर रथे वहमित) वद वाहे दृष्टे एवमे वन वाते
 है ॥ ३ ॥ (च. ८१११८)

(वा वातावृष्टयः वीर भय वा वरत) वन हवि देने
 वाम वाव दुमें वर चुच्छा है । (लमय वा) वन
 प्राप्ताते लिये (वा वर्तीं सुत्रपपाय) वदवा रक्षेवें
 दाया लोमरु वीरेवे लिये तुमाता है । (लमन्त्य पृथ्याय
 यनुप) वदके तुराम वर्तके लिये हे अविवेहो ! (लमो
 येमाव वा वर्णत्) वदस्तर वरते दृष्ट वन दुर्दे
 वर दुमते हैं ॥ ३ ॥ (च. ८१११९)

हे (मासत्वा) अविवेनो । (पुरुषः) वहु अवसर
 देवेवाये । (हिरण्यवद एवेन) तुमेवे वदके इमे वह

आ ना॒ यात् द्विषो अच्छा॑ पृथिव्या॒ हिंस्येन सुश्रूता॒ रयेन ।

मा॒ वृष्टुमन्ये॒ नि॒ यमन्देव्यन्तुः॒ स पृष्ठ॒ नामिः॒ पृष्ठा॑ वौम्॒ || ५ ||

नू॒ नो॒ रुपि॒ पूरुषी॑ पूरुष॒ इस्ता॒ पिमो॑ वापुमयै॒ पृष्ठो॒ ।

नरो॒ पद्मो॑ मधिना॒ स्तो॒ मुमार्वन्सु॒ पस्तु॒ विमावृ॒ ल्हासो॒ अग्मन्॒ || ६ ||

इह॒ पद्मो॑ समुना॒ पृष्ठे॒ सेम॒ मूला॒ सुमतिवीक्षरसा॒ ।

उ॒ रुप्यर्थ॑ खरितार॑ चुव॑ है॒ भित्र॑ कामो॑ नासत्या॒ मुद्रिक॑ || ७ ||

मधु॒ मतीरो॑ पृष्ठीर्वा॑ आपो॒ मधु॒ मधो॒ मधत्वन्तरिष्म्॑ ।

क्षेत्रेष्य॑ पृष्ठिमधुमाशो॒ बु॒ स्तविष्यन्तु॑ अन्वेन॑ चरेम॑ || ८ ||

पुनाय्य॑ उक्षिना॒ कृत॑ वौ॒ पृष्ठो॒ रवैस॑ पृथिव्या॑ ।

सु॒ द्वृत्॑ छंसा॒ उ॒ त ऐ॑ गविष्ट॑ सर्वाँ॑ इच्छाँ॑ उप॑ यासा॒ पिष्ठेऽन्ये॑ || ९ || (१५८)

॥ इति॑ तथमाऽनुषाकः ॥ ९ ॥ ॥ इति॑ विष्ट॑ काण्डं समाप्तम् ॥ ॥ वर्यंदेवकासिता॒ समाप्ता॒ ॥

मत्संख्या—

पद्मो॑ विश्वतिका॑ अष्टमाल्लपृष्ठस्ते—५०१३

विश्वतिमकाव्याद्य—१५

सर्वोगा॑ ५१३३

उप॑ यात्॑) इस वहके॑ नाम आज्ञा॑ । (सो॒ म्यस्य॑ मधुना॑
इत्॑ पिवाय्य) मदु॑ वामास॑ वीक्षो॑ । (पिष्ठते॑ जानाय
रत्वं॑ दृष्ट्यः॑) मण्डनके॑ विषे॑ इत्य॑ वा॑ ॥ ४ ॥ (कृ॒ ४११४)

(विषः॑ पृथिव्या॑ वर्या॑) पुरुषो॑ जन्मा॑ पृथिव्यर्थे॑
(हिंस्येन॑ सुपूता॑ रथेम) दृष्टवै॑ वर्ण॑ पृष्ठभेदो॑
रथेम॑ (मा॑ वा॑ यात्॑) इमो॑ वा॑ वा॑ आभो॑ । (मध्ये॑ देव॑
यामा॑) अत्य॑ देवमय॑ मा॑ वौ॑ सियमद्॑) दृष्टे॑ वौ॑ रोक॑
वै॑ । (धृत्॑ पृथ्या॑ नामिः॑) यत्॑ वृत्त॑ सर्व॑ (यो॑ सं॑ वदे॑)
इमय॑ दृष्टादा॑ हुता॑ है॑ ॥ ५ ॥ (कृ॒ ४११५) (कृ॒ ४११५)

हे॑ (दशा॑) वृश्च॑ वाक॑ वर्तनाम॑ विद्विता॑ । (वहसे॑
म॑ उमयेषु॑) इम॑ रात्रेषु॑ (पुरुषीर्वा॑ पूरुषत्॑ रथि॑)
वृहत्॑ वौ॑ पृश्च॑ वृष्ट॑ वा॑ वृत्त॑ (म॑ भिमाया॑) वै॑
वा॑ ॥ हे॑ (भ्रियनो॑) वापरेषा॑ । (मा॑ यत्॑ वौ॑ स्तो॑ म
भावन्॑) भ्रियनो॑ दृष्टहर्ती॑ सृष्टि॑ वी॑ है॑ । (भ्रात्यमीद्वासा॑
मध्यस्तुति॑ भ्रात्यन्॑) भ्रातीर्यन॑ वी॑ सत्ता॑ सृष्टि॑ वी॑
है॑ ॥ ६ ॥ (कृ॒ ४११६) (कृ॒ ४११६)

हे॑ (पात्राना॑) वहये॑ एव वात॑ वर्तनाते॑ विद्विता॑ ।
(एव॑ एव॑ वौ॑ समसा॑ पृष्ठो॑) एवा॑ एव वही॑ वै॑
त्रुष्टारो॑ गुति॑ वा॑ (सा॑ एव॑ भ्रस्म॑ सुमति॑) यत्॑ इमो॑

लिमे॑ सुष्टुप॑ सिर॑ हुई॑ है॑ । (पुरुष॑ खरितार॑ उठप्पत॑ वा॑)

त्रुप॑ स्त्रातारी॑ रहा॑ कहे॑ । वौ॑ (वासत्या॑) लिमेदो॑ ।

(कामा॑ वर्यद्रिक॑ विष्टा॑) दमो॑ इष्मा॑ दृढ़है॑ वृभवते॑

हो॑ है॑ ॥ ७ ॥ (कृ॒ ४११७) (कृ॒ ४११७)

(मो॒ पृष्ठी॑ वाव॑ व्याप॑ मधुमती॑) वावपि॑ पु

र्वर॑ जन॑ इपरे॑ विषे॑ मधुर हो॑ । (वा॑ मध्याद्यस्ते॑ मधुमत॑
मधुतु॑) इमो॑ लिमे॑ अवरिष्ठ॑ मीठाओ॑ महा॑ हो॑ । (सुत्रस्य॑
पतिता॑ वा॑ मधुमाल॑ मधुतु॑) लेन्द्रा॑ कामी॑ इमो॑ लिमे॑

मधुत्वके॑ विषेष॑ हा॑ । (मा॑ रिष्यमता॑ एव॑ मधु॑ चरेम)

लिम॑ वौ॑ होते॑ हुए॑ इम॑ इष्मा॑ वृष्टुपरन॑ हो॑ ॥ ८ ॥

(कृ॒ ४११८) (कृ॒ ४११८)

हे॑ (मधिता॑) लिमेदो॑ । (वौ॑ तत्॑ चृत॑ वर्याय्या॑)

वासत्या॑ लिमा॑ वा॑ वृम॑ रघुवीर्य॑ है॑ (धृप॑ रिष्वा॑ रव॑सः॑
पृथिव्याः॑) वृष्टुपृष्ठ॑ पु॑ अवराव॑ भार॑ गुभिष्ठ॑ (गविष्ठ॑
य सहस्र॑ वासा॑) त्रुष्टो॑ वी॑ वापरे॑ एव्यो॑ ग्रंथार्थ॑

हुई॑ है॑ (सवाद॑ ताम॑ पिष्ठेऽन्ये॑ उप॑ याता॑ इत्॑) उन॑

वहो॑ वाव॑ वाम॑ वामत॑ वी॑ विषे॑ वाम॑ ॥ ९ ॥ (कृ॒ ४११९)

॥ यही॑ तवम॑ मनुषाक॑ समाप्त ॥

॥ वीसपाँ॑ काण्डं समाप्त ॥

॥ वर्यपद॑ समाप्त ॥

